खोज में उपलब्ध

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों

का

बीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

संवत् २००४–२००६ वि० (सन् १९४७–४९ ई०)

प्रथम भाग

सपादक

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

सं० २०३४ वि०

प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी

प्रथम संस्करण—संवत् २०३४ वि०, ११०० प्रतियाँ

मूल्य :

वक्तव्य

खोज का बीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण पाठको के सामने प्रस्तुत है। खोज का यह त्रैवार्षिक विवरण विक्रम सवत् के क्रम से तैयार किया गया है। इसमे स० २००४ से २००६ तक (सन् १९४७ से १९४९ तक) के खोज कार्य का उल्लेख किया गया है। उन्नीसवे त्रैवार्षिक विवरण की भाँति इसका आकार भी बहुत बड़ा हो गया है तथापि अनुसंधान की उपयोगिता की दृष्टि से संक्षेपीकरण उचित नही प्रतीत हुआ, अतः इसे भी दो खडो मे प्रकाशित किया जा रहा है। इस विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक श्री डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने तत्कालीन अन्वेषको द्वारा एकत्र सामग्री के आधार पर सपादित किया था। पूर्व विवरण के अनुसार ही इस विवरण मे भी ग्रथो और ग्रथकारो का अनुक्रम हिंदी वर्णमाला के अनुसार हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन द्वारा दिए गए प्रथम १०,००० रु० के अनुदान से चार त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६–३७ ई०) छापे गए थे। उसके पश्चात् चार त्रैवार्षिक विवरणो (सन् १९२३–४९ ई०) के प्रकाशन के निमित्त राज्य शासन ने सन् १९५६ ई० मे कृपापूर्वक ७,००० रु० का द्वितीय अनुदान दिया। यह आशा की गई थी कि इस द्वितीय अनुदान से कम से कम तीन त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन का कार्य तो संपन्न हो ही जायगा किंतु दो ही (सन् १९३८–४० तथा सन् १९४१–४३) त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन मे प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय हो गया। फलत आगे के दो तैयार त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन का कार्य रुक गया। अतः सन् १९५६ से लेकर १९७४ तक के बीच उक्त दोनो त्रैवार्षिक विवरण प्रकाशन की असुविधा के कारण पाठको के समुख न आ सके।

अनुसधित्सुओ की आवश्यकताओ को दृष्टि मे रखते हुए सभा ने उनके प्रकाशन के कई प्रयत्न किए किंतु द्रव्याभाव के कारण सफलता न मिली। अत मे केंद्रीय सरकार की महती कृपा से उसके शिक्षा और समाजकल्याण मत्रालय से १२,६७६ रु० का अनुदान प्राप्त हुआ। इसमे उन्नीसवें त्रैवार्षिक विवरण के प्रकाशन का कार्य पूर्ण हो सका। बीसवें त्रैवार्षिक विवरण के लिये भी केंद्रीय सरकार के शिक्षा और समाजकल्याण मत्रालय ने दिनाक १०–५–७५ के एफ ५–१४७।७५–डी आई. (एल.) सख्यक शासनादेश द्वारा २४,००० रु० का अनुदान प्रदान किया जिससे प्रस्तुत त्रैवार्षिक विवरण का कार्य सपन्न हो सका। इसका दूसरा खड भी मुद्रित हो रहा है जो शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा। केंद्रीय सरकार की इस सामयिक कृपा के निमित्त हम उसके अत्यत आभारी है।

सुधाकर पांडेय
प्रधान मत्री
नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी

गुरु पूर्णिमा,
सवत् २०३४

विषयसूची

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज की बीसवीं त्रैवार्षिक-विवरणिका

सं० २००४-२००६ वि० सन् १९४७-४९ ई०

[निरीक्षक—श्रीयुत डा० वासुदेव शरण अग्रवाल]

खोज की प्रस्तुत बीसवी त्रैवार्षिक विवरणिका मे सवत् २००४, २००५ और २००६ वि० (सन् १९४७–१९४९ ई०) के कार्य का विवरण है। इस अवधि मे प० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र इस कार्य के निरीक्षक थे। अत यह विवरणिका स्वभावत. उन्ही की देखरेख मे लिखी जानी चाहिए थी, परतु संवत् २००७ के आरभ मे जब यह लिखी जाने को थी निजी कार्यों मे अधिक व्यस्त रहने के कारण उन्होने त्यागपत्र दे दिया। इस पर सभा ने मुझे उक्त संवत् के ज्येष्ठ मास मे निरीक्षक चुना जिसके फलस्वरूप यह कार्य मुझको करना पड़ा।

जिला बस्ती के अतर्गत बभनगाँवाँ, अमोढ़ाकोट निवासी ठा० रामसिंह जी ने 'सबलस्याम' के सबंध मे विशेष सूचना देकर सहायता की है, अत वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इस त्रिवर्षी मे दो अन्वेषको—श्री दौलतराम जुयाल और श्री कृष्ण कुमार वाजपेयी ने सुलतानपुर, जौनपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, लखनऊ और बस्ती जिलो मे कार्य किया जिनमे से प्रथमोक्त चार जिलो मे कार्य समाप्त हो गया है।

इस कार्यकाल मे समस्त ९४७ ग्रथो के विवरण लिए गए जो तीन वर्षों मे इस प्रकार विभक्त है—

विक्रमी सवत्	विवरणो की संख्या
२००४ (वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ)	१२६
२००५	४४१
२००६	३८०
समस्त	९४७

५०६ ग्रथकारो के रचे ६९४ ग्रथो की ८३९ प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। इनके अतिरिक्त १०८ ग्रथ ऐसे हैं जिनके रचयिता अज्ञात हैं। २०३ ग्रथकार और उनके निर्मित २४८ ग्रथ खोज मे बिलकुल नवीन है। १७८ नवीन ग्रथ ऐसे है जिनके रचयिता तो ज्ञात थे किंतु उनके इन ग्रंथो का पता नही था।

ग्रथों और उनके रचयिताओ का शताब्दिक्रम निम्नलिखित प्रकार से है—

शताब्दी क्रम	१४वी	१५वी	१६वी	१७वीं	१८वी	१९वी	२०वी	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	१	२	१०	४०	५९	१११	४१०	२३६	५०६
ग्रंथ	१	१९	१५	७२	११८	२०१	७८	४४३	९४७

नीचे ग्रंथों के विषय विभाग की सारिणी दी जाती है—

(१) दर्शन और अध्यात्म—३४, (२) भक्ति—१४५, (३) योग—३, (४) ज्ञानोपदेश और वैराग्य—१२४, (५) काव्य—६५, (६) शृंगार—८१, (७) अलंकार—१५, (८) साहित्य शास्त्र—१३, (९) पिंगल—२३, (१०) कोश—५१, (११) नाटक—१, (१२) व्याकरण—१, (१३) संगीत—३, (१४) भूगोल—१, (१५) पुराण और इतिहास—५२, '(१६) पौराणिक कथाएँ—६४, (१७) कथा कहानी—४, (१८) लीला विहार—२२, (१९) परिचयी और जीवन वार्ता—१३, (२०) नीति और राजनीति—६, (२१) ज्योतिष तथा गणित—४४, (२२) स्तोत्र और माहात्म्य—३४, (२३) वैद्यक—४२, (२४) कोकशास्त्र—१५, (२५) स्वप्नशास्त्र—२, (२६) शालिहोत्र—१३, (२७) प्रेमकथानक काव्य—१, (२८) धार्मिक—२१, (२९) वंशावली-विरुदावली-प्रशस्तिकाव्य—५ (३०) रमल और शकुन—१२, (३१) इंद्रजाल, तंत्रमंत्र और जंत्र—७, (३२) स्वरोदय—५, (३३) रसायन—१, (३४) यात्रा—१, (३५) वास्तुशास्त्र—४, (३६) शतरंज—१, (३७) सामुद्रिक—५, (३८) विविध—२६।

नवीन रचयिताओं मे १. आत्माराम, २. इंद्रजीत, ३ उत्तमदास, ४. उदोतकवि, ५. कासीदास, ६. कीर्तिकेशव, ७. गिरिधारी, ८. चतुर्भुज ९ चेटनदास, १०. जानकी बाई, ११. तारानाथ, १२. देवदत्त कवि, १३. देवकीदास कायस्थ, १४. धर्मादास, १५. नंद या नंदलाल १६. परमाणंद, १७. परिमल्ल, १८. पानपदास, १९. पुरंदरकवि, २०. प्रियादास, २१. बख्तावर सिंह (महाराज अयोध्या नरेश) की स्त्री, २२. भगनदास, २३ मदन साहब, २४. मोहन साईं, २५. रामेश्वर भट्ट, २६. सागरकवि और २७. साचार मुख्य हैं।

आत्माराम—इनके दो ग्रंथ 'परचुरणपद' और 'ब्रजलीला' नाम से मिले है जिनका विषय क्रमश. भक्ति और श्रीकृष्ण की ब्रजलीला है। दोनो ग्रथ आकार मे बड़े हैं और रचना भी दोनो की पदो मे ही है जिनकी भाषा पश्चिमी हिंदी है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी मे नही दिए हैं। प्रथम ग्रथ के आरंभ मे दूसरे ग्रंथ का उल्लेख किया गया है और साथ ही साथ दोनो ग्रथो मे रचयिता के नाम की छाप विद्यमान है इसलिये दोनो को एक ही रचयिता कृत माना गया है। प्रथम ग्रथ का आरभ का लेख इस प्रकार है—

'अथ परचुरण पद तथा श्री बाला जी महाराज ने नीत्यनांपद तथा ब्रजलीला लखी छे'

इन ग्रथो से रचयिता के सबध मे कुछ विदित नही होता। इनमे प्रयुक्त भाषा के आधार पर इतना ही पता चलता है कि रचयिता पश्चिमी राजस्थान के रहने वाले थे। वे अच्छे भक्त और प्रतिभावान् कवि विदित होते हैं। पिछली खोज विवरणिकाओं मे उल्लिखित इस नाम के रचयिताओं से ये सर्वथा भिन्न हैं।

इंद्रजीत—ये एक जैन रचयिता है। इनका रचना हुआ 'उत्तरपुराणभाषा' नामक ग्रथ मिला है जिसमे सुव्रतनाथ, कुंभनाथ, अरहनाथ और मल्लिनाथ जैन तीर्थंकरो का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८४० और लिपिकाल सवत् १८९७ वि० है।

रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है—

> **रंध्रद्विगुन सत चालीस संवत्सर गति जान।**
> **पौष कृष्ण तिथि द्वैज महि चंद्रवार परमान॥१४१॥**

रचना प्रधानत दोहा, चौपाई और सोरठो मे है, पर नाराच आदि छद भी प्रयुक्त हुए हैं। कविता जैसी कि इस प्रकार के ग्रथो की होनी चाहिए सरल और सुबोध है।

ग्रथ की पुष्पिका और एक दोहा द्वारा रचयिता का इतना ही पता चलता है कि इन्होंने इसकी रचना भट्टारक जिनेंद्रभूषण के उपदेशानुसार की। भट्टारक जिनेंद्रभूषण ने देवदत्त नामक एक अन्य कवि को भी उत्तर पुराण की भाषा करने को कहा था। फलत प्रस्तुत पुराण, जिसका मूल सस्कृत मे है, की कुछ कथाओं का अनुवाद देवदत्त ने और कुछ का प्रस्तुत रचयिता ने किया। भट्टारक जिनेंद्रभूषण श्री विश्वभूषण के शिष्य श्री ब्रह्महर्षसागर के पुत्र थे—

'इत्यार्षे भगव भद्रगुणाचार्यानुक्रमे श्री भट्टारक विश्वभूषण तत्पाबाभरण श्री ब्रह्महर्षसागरात्मज श्रीभट्टारक जिनेंद्रभूषणोपदेशित इब्रजीत कृते मल्लीनाथ तीर्थंकर प्रश्न चतुधर नंदि मित्र बलिदेवदत्त नाम वसुदेव वलीदाख्य प्रति बासुदेव व्यवर्ननो सपून लीषा ।।'

श्रीजिनेंद्रभूषण विदित भट्टारक मांहु माहि ।
तिनके हित उपदेस को रच्यौ ग्रंथ उत्साह ।।१३८।।

इस ग्रंथ के रचनाकाल से लखनऊ के प्रसिद्ध जैन विद्वान् श्री ज्योतिप्रसाद जी जैन (मेडिकल स्टोर, केशर बाग, लखनऊ) सहमत नही है । इसके लिय देखिए आगे देवदत्त कवि का विवरण ।

उत्तमदास (उमराव सिंह)—ये छंद महोदधिपिंगल नामक महत्वपूर्ण ग्रथ के रचयिता हैं । ग्रथ की पुष्पिका द्वारा इनका वास्तविक नाम उमरावसिंह विदित होता है । ये जाति के कायस्थ (चित्रगुप्त) थे । पिता का नाम धनिलाल था, जो कवि थे । बदाऊं (वेदामऊ) मे अगरिया नगरी के ये निवासी थे । इनके पिता बाहर से बदाऊँ मे आए थे । अपने छोटे भाई वसतराम, जो विद्वान् और प्रसिद्ध व्यक्ति थे, के अनुरोध पर इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की—

गंगा के तट बसत बदाऊँ प्रसिद्ध नाम ताकौं वेदामऊ हू पंडित बखानत हैं ।
चारों वेद षष्टसास्त्र अष्टादश पुराणन चतुरदश विद्याहू बालवृद्ध जानत हैं ।। १ ।।
नारिनर तहां के देख परत देवीदेव काशी तें अगरिया नगरीकू मानत हैं ।
सुकवि 'उत्तम जू' महिमा नहि जाय कहि शारद शेष नारद व्यास यों मानत हैं ।। २ ।।

चित्रगुप्त कुल में भये कवि धनपति सुजान ।
कर्म धर्म गुण सिधु बसे बदाऊँ आन ।। ३ ।।
तिनके उत्तमदास सुत भयो महा बुधि हीन ।
सुजन अजन करये कृपा जान दास को दीन ।। ४ ।।

वसंतराय मौर लघु भ्राता । जासु नाम चहुँ दिशि विख्याता ।।
अतिगुण ज्ञान शीलनिधि सोई । पूछ्यौ छंद कौन विधि होई ।।

पुष्पिका जिसमे इनका वास्तविक नाम उमरावसिंह दिया है इस प्रकार है—

इति श्री वृजभानजारमण चरणाविंद मुंगयालानंवित श्री कवि धनिलाल तस्यात्मज कवि उत्तमदास प्रसिद्ध नाम उमरावसिंह छंद महोदधिनामविरचिते वरण छंदस्य नवमो प्रकरम् ।।

ग्रंथ का रचनाकाल चौपाई मे इस प्रकार दिया है—

'संवत ऋतु नभें रसयाशि मीता । ज्येष्टमास रविवार पुनीता ।।
शुक्ल त्रयोदसि तिथि शुभ जानी । छंद महोदधि प्रगट्यो आनी ।।'

इसमें रेखांकित याशि शब्द स्पष्टत 'शशि' का अशुद्ध रूप है जो लिपिकार के हस्तदोष से हुआ है । अत इस चौपाई मे रचनाकाल के लिये प्रयुक्त सख्यावाची शब्द ऋतु, नभें (नभ) रस और शशि हैं । अब यदि रस की सख्या ६ माने तो सवत् १६०६ होता है । परन्तु ग्रथ की भाषा इतनी प्राचीन नही जँचती । इसलिये रस की सख्या ९ मानना उचित है जिसके अनुसार रचनाकाल संवत् १९०६ होता है । ग्रथ की भाषा को देखते हुए यह ठीक जान पड़ता है ।

प्रस्तुत ग्रथ मे नौ प्रकरण है जिनमे विषय का पूर्ण वर्णन किया गया है । इसकी प्रस्तुत प्रति सन् १८७७ ई० (सवत् १९३४) मे ज्वालाप्रसाद प्रेस, मेरठ द्वारा छपी थी ।

उदोत कवि—ये कोश विषयक ग्रंथ 'अनेकार्थमंजरी' के रचयिता हैं । ग्रथ के अनुसार ये काशी मे रहते थे । जन्मस्थान टीकमगढ़ ग्वालियर था । जाति के सनाढ्य (पाठक) ब्राह्मण थे । पिता का नाम स्याममिश्र (?) था । किसी रामसिंह ने इनको 'उदोत' कवि की उपाधि दी थी । औरंगजेब बादशाह (स० १७१५–६४) के समय मे वर्तमान और बिहार प्रात के सूबा श्री बुजुक के मन्त्री सथमल राम के पुत्र पूरनमल के आश्रित थे । जिनके लिये प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई । बिहार के पटना नगर के लिये उन्होंने लिखा है कि उसके समान दूसरा नगर न था—

बत्तमान रजराज को भूप चकत्ता वीर ।
पातसाह दिल्ली तखत राजत आलमगीर ।।२०।।
दई जेब जिनि जगत को औरंग साहि दिलीप ।
सप्त दीप नव षंड को संवत सदा महीप ।।२१।।
साहि आलिमगीर की सब देषी बुधिवान ।
पूरब पट्टन सो दूसरो नगर न देखो आन ।।२२।।
सुवा सरस विहार में श्री बुजुक उमेद ।
वेद पुरान कुरान के जाते बहुविधि वेद (? भेद) ।।२३।।
तिनके सथमलरामजू मंत्री मत्र प्रवीन ।
पूरनमल सथमल तनय राजत नवल नवीन ।।२४।।
बुधिवर सुकवि 'उदोत' सो कीन्हीं कृपा अपार ।
अनेकार्थ भाषा रच्यौ करिकैं विविध विचार ।।२५।।
ग्रंथ सुने ते पूछि हैं, कौन सुकवि 'उदोत' ।
रस जस कविता के सुने तनमन आनंद होत ।।२६।।

कासी बसियत सुरमार के तीर समीप निज वतन टीकमगढ़ ग्वालियर गाउ है ।
परम पवित्र पति पाठष हमारी मल्ल जाहिर जगत देस देस ठाउ ठाउ है ।
गीरवान बानी विदित षटदरसन भाषा कविताई सदा सहज सुभाऊ है ।
नंद स्याममिश्र के सनाढ्य सुकवि मनि दोनो रामसिंह को 'उदोत' कवि नाउ है ।।२०।।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है, तथा आरभ मे यह खंडित है ।

कासीदास 'जैन'—ये 'भाषा सम्यक्त कौमुदी' के रचयिता है । ग्रथ मे इन्होने अपना विस्तृत परिचय दिया है जिसके अनुसार ये आगरा के रहनेवाले थे । कोई जगतराइ इनका आश्रयदाता था जिनको इन्होंने राजा कहा है तथा जिनका परिचय इस प्रकार दिया है—

माईदास सिघल गोत्र के अग्रवाल वैश्य थे । उनकी स्त्री लक्ष्मी तुल्य थी जिसके उदर से रामचद और नदलाल नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए । ये शहर गुहाणा के निवासी थे । रामचंद के पुत्र जगतराइ हुए जिनके लिये प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई । जगतराई के टेकचद नामक पुत्र थे । ए सब लोग जैनी थे ।

गरु गुणसील प्रसादं जान । भई कथा यह सब परवान ।।
जगतराइ हित कविता करी । रवि ज्यौं भूमंडल बिस्तरी ।। ७ ।।
अग्रवाल है उत्तम जाति । सिंघल गोत जगत विख्यात ।।
माईदास महीमैं जानियै । ता तिय कमला सम मानियै ।।७८।।
ता सुत अति सुंदर वरवीर । उपजे दोइ गुण सायर धीर ।।
दाता भुगता दीन दयाल । श्री जिन धरम सदा प्रतिपाल ।।
रामचंद्र नंनलाल प्रवीन । सब गुण ज्ञायक समकित लीन ।।
साहिर गुहाणा वासी जोइ । पांसी पंथ आदि कै सोइ ।।८०।।
रामचंद सुत जगत अनूप । जगतराय गुण ग्यापक भूप ।।
तिन यह कथा ग्यांन के काज । बरणी आवं समकित साज ।।

:o: :o: :o:

जगतराइ सुत निपुण टेकचंद सुष रासि ।
गंग यमुन ज्यों चिर सदा कहि कवि 'कासीदास' ।।

:o: :o: :o:

सहर आगरे मैं जु यह ई कथा सुषथांत ।
जगतराय हित जय करो बढ़ी जु जीय कल्यान ।।

इन्होंने औरंगजेब का भी उल्लेख किया है। जिसने अपने पिता (शाहजहाँ) के जीवित ही राज्य ले लिया था। शाहजहाँ का विधाता ने जीवित ही मृतरूप (गतरूप) कर दिया था—

साहि जहाँ अवनी पति भूप। विद्यमान विधि कल गत रूप ।।
तासुत अवरंगसाह सुजान। विजयराज भूप्रति बलवान ।। ८ ।।

विदित होता है कि औरंगजेब से रचयिता को अच्छा सम्मान प्राप्त था। निम्नलिखित चौपाई से ऐसा सकेत मिलता है—

तासु प्रसादि भइ यह सही। ईति भीति कोई व्यापी नही ।।

ग्रथ मे अनेक जैन भक्तों की रोचक कथाओं का वर्णन है। अतः जैन कथा साहित्य की दृष्टि मे यह महत्वपूर्ण है। रचनाकाल स० १७२२ ई० है।

विक्रमार्क संवत ते जानि। सत्रह सौ बाइस (ब) खानि ।।
माधव मास उजियारो सही। तिथितेरसि भूसुत सौं तही ।।
तादिन ग्रंथ संपूरण भयौ। समकित ज्ञान सफल तब वयौ ।।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल सवत् १६०४ है। रचना दोहा, चौपाइयो मे है तथा कविता ललित और प्रसाद गुणायुक्त है।

कीर्तिकेशव या केशव कीर्ति—इनके रचे हुए 'सखी समाज नाटक' के विवरण लिए गए है। जिनमे नायक और नायिका विशेषकर कृष्ण और राधा के सखा और सखियो का विस्तृत वर्णन है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल स० १७६० वि० है। अत रचना यथेष्ट पुरानी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है, यह नाटक ग्रथ नही है, क्योकि नाटक का इसमे कोई गुण नही। सखा और सखियो का वर्णन हिन्दी के रीति ग्रथो मे देखने को नहीं मिलता, अत इसका सबध राधाकृष्ण की लीलाओं से ही अधिक है। ग्रथ मे रचने का एक विचित्र प्रसग दिया है जो इस प्रकार है—

'रचयिता को वृदावन मे एक स्वप्न हुआ जिसमे श्रीकृष्ण और गोपियो की रासक्रीड़ा का दृश्य उन्हे दिखाई दिया। उसमे सरस्वती वीणा का साज सज रही थी और केशवदास (महाकवि केशवदास) ताल दे रहे थे। इसी बीच केशवदास ने रचयिता से कहा कि उन्होने यद्यपि सुदर पोथियो की रचनाएँ की जिन्हे चारो ओर से नर और नरेश पढते है, परतु उनमे सखी समाज (सखा सखियो) का वर्णन न होने से उनके मन मे आशका रहती है। गृह और उपवन मे किन किन सखियो और कौन कौन से सखाओ के क्या क्या कर्म है, इसका ध्यान करके वर्णन करो। इसी प्रकार रचयिता को लगातार सात दिन तक स्वप्न होता रहा जिस पर विश्वास कर इन्होंने दो अध्याय (प्रभाव) इस विषय पर रचे।'

इसी प्रसग मे 'रसिक प्रिया' का भी उल्लेख है जिसको केवल रसिको के मननयोग्य बतलाया है—

वृंदावन विच स्वप्न मोहि कृष्ण रचित रसरास।
वीना सजं सरस्वती उघटत केशवदास ।। २ ।।

कीन्ही पोथी मै सुबेस, पढे नर औ नरेस बिस बिस बेस पुर पटनिन मैं।
रचिबे को सुभदिन प्रगटत छिन-छिन पै सखी समाज बिनु संक रही मन मैं।
कौन सखी कर्म्म कोन सखा उपबन भोन दोइ ध्याइ करो क्योंन कर मैं यो भवन मैं।
बिना लएँ निरति सों संग सखा औरतिसों कह्यौ 'मिश्र कीरति' 'सों' 'केसव' स्वपन मैं ।। १ ।।

सात दिवस लगि स्वपन मंहि दीनो सुभ दरसाव।
जो कछु कह्यौ सो मान मैं कीने दोइ प्रभाव ।। ४ ।।
नामग्रंथ को हेतु करि समुझि देखि मनमाह।
'रसिकप्रिया' रसवंत को मूढ़ जात को नाहि ।।१५।।

रचना अध्यायो (प्रभावो) मे है जिनकी कोई निश्चित संख्या नही। ग्रंथारंभ में दो अध्यायों का उल्लेख है और अत मे सोलह अध्यायों का। अंत का दोहा जिसमे सोलह अध्यायों का उल्लेख है, त्रुटित है।

रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि इनका नाम कीर्ति मिश्र, कीर्ति केशव, या केशव कीर्ति था। ये वृदावन मे जैसा उपर्युक्त रचना प्रसग से पता चलता है रहते थे। पुष्पिका मे इन्हें महाराज कहा गया है, अत. सभव है ये कोई राजा अथवा कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति रहे हो—

'इति मन्महाराज केशवकीर्ति विरचितायां.........संवत् १७६० वर्षे।'

गिरधारी—इनके रचे हुए दो ग्रथो 'सुदामाचरित्र' और 'भागवत दशमस्कध' या 'गिरिधारी काव्य' के विवरण लिए गए है। रचनाकाल इनमे से किसी मे नही दिए हैं। लिपिकाल 'सुदामाचरित्र' मे सवत् १९९५ दिया है और भागवत दशमस्कध की तीन प्रतियो मे, जो इस बार मिली है, क्रमश. सवत् १९११, १९९५ और १९९६ है। विषय इनका इनके नामो से ही स्पष्ट है। काव्य की दृष्टि से ये रचनाएँ मौलिक और उत्तम है तथा अपना विशेष महत्व रखती है।

खेद है कि कवि का इनके द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। अन्वेषक द्वारा पूछताछ करने पर पता चला कि ये रायबरेली जिले के अतर्गत लालगज स्थान के समीप सातनपुर ग्राम मे निवास करते थे। वहाँ इनके एक वृद्ध वशधर प० रामरतन दुबे, जो अपने को ८५ वर्ष का बतलाते हैं, अभी तक विद्यमान है। उनके कथनानुसार इनकी वशावली इस प्रकार है—

गिरिधारीलाल दुबे (प्रस्तुत कवि)
- सहाई
  - विदा प्रसाद
    - विशेश्वर
    - दुर्गाप्रसाद
    - रामरतन (वर्तमान ८५ वर्ष)
      - मनबोध

पडित रामरतन जी दुबे का कहना है कि एक दिन गिरिधारी और उनके पिता मे कुछ कहासुनी हो गई जिस पर गिरधारी रूठकर गाँव के समीप एक इमली के पेड़ के नीचे चले गए। वहाँ उन्हें निद्रा आ गई। स्वप्न मे देवी ने दर्शन देकर काव्य करने को कहा, अत: तब से काव्य करने लगे। ये अधे थे और लिखना पढना नही जानते थे, परंतु कवि के अतिरिक्त ये उच्चकोटि के भक्त भी थे।

उक्त विवरण की पुष्टि गाँव के सुशिक्षित लोग भी करते है। उनका यह भी कहना है कि प्रस्तुत रचनाओ के अतिरिक्त रचयिता ने 'रसमाल' ग्रथ और अनेक पद भी रचे हैं। रायबरेली के दक्षिण पश्चिम भाग मे इस कवि की विशेष चर्चा रहती है। वही कवि का भी निवास स्थान है। इनके प्रस्तुत ग्रथों को पढ़ने से विदित होता है कि ये निसदेह एक प्रतिभावान कवि थे।

शिवसिंह सरोज पृष्ठ ४०४ मे इनके संबध मे इस प्रकार लिखा है—

'गिरधार ब्राह्मण' बैसवारा गाँव सातनपुरवा वाले। संवत् १९०४ में उ०।

इनकी कविता या तो श्रीकृष्णचद्र के लीला सबधी है और या शात रस की। यह कवि पढ़े बहुत न थे। परतु ईश्वर के अनुग्रह से कविता सुदर रचते थे।

चतुर्भुज—इनकी पिंगल विषयक एक रचना का केवल आरभ का एक पत्र मिलता है जिसके द्वारा न तो रचना का नाम, न रचनाकाल और न लिपिकाल का ही पता चलता है परंतु

इसमें इनका और इनके आश्रयदाता अकबर बादशाह का उल्लेख होने से यह महत्वपूर्ण जँची, इसलिये इसके विवरण लिए गए हैं। इससे अकबर बादशाह के समकालीन (सं० १६१३–१६६२) और उसके आश्रय मे रहने वाला एक और कवि का पता चला।

रचयिता ने अकबर बादशाह के जगद्गुरु होने का उल्लेख किया है, जिससे उसके दीने-इलाही मत का पता चलता है—

'अकबर साहि जगतगुरु मानहु। इहइ बात मनहि अनुमानहु॥'

यह प्रसिद्ध है कि अकबर बादशाह ने अपने को जगद्गुरु मानकर दीनेइलाही मत का प्रचार करना चाहा था, परंतु स्वय उसके दरबार के व्यक्तियों मे ही कुछ को छोड़ कर इसे मान्यता न मिल सकी।

प्रस्तुत रचना अकबर बादशाह के ही आदेश से रची गई थी। इसमे पिंगल के प्राचीन छः आचार्यों—शंभु, भरत, सैतव, गरुड़, कश्यप और शेष का उल्लेख भी हुआ है जिनके ग्रंथो के आधार पर यह तैयार की गई—

अकबर साहि प्रवीण भुअ कह्यो कहहु सब छंद।
सुगम होहि महि मंगलह पठतहि बढ़त अनंद॥ ३॥
चतुर 'चतुर्भुज' सुनत यह कह्यो बुद्धि अनुमान।
सुनहु साधु सब सुचित होइ करउ ग्रंथ सनमान॥ ४॥
संभु भरत, सैतव गरुड कश्यप सेसु विचारि।
षट् पिंग ए विदिअ भुअ कहोव तिन्हहि निहारि॥ ५॥

'विदिअ' (विदित) और 'भुअ' (भूप) जैसे अपभ्रंश शब्दों से ग्रंथ की भाषा की प्राचीनता स्पष्ट है।

चेतनदास—इनकी 'प्रसगपारिजात' नामक एक रचना के विवरण लिए गए हैं जो अपने विषय की एक विलक्षण कृति है। इनकी रचना बाड़ी प्राकृत (देश बाड़ी प्राकृत) मे पिशाच भाषा के साकेतिक शब्दो के योग से अदणा छदों मे हुई है। इसमे स्वामी रामानंद का समस्त जीवनवृत्त दिया है। रचनाकाल सवत् १५१७ है और लिपिकाल सवत् १६६७ वि० रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

वास सिव अर्गसिण बुगी। दिति और साहित निह चुगी॥
छुप संग पारी जालुगी। हिहणेथु राम बु पालुगी॥

ज्ञान भूमिका चद शिव मुख सच्चिदानद अर्थात् १५१७ (पद्रह सौ सतरह) गुरु जन्म दिन माघ कृष्ण सप्तमी गुरुवार को यह प्रसग पारिजात रामनाम लेकर समाप्त हुआ।

रचयिता ने अपने संबध मे इतना ही लिखा है कि सवत् १५१७ मे स्वा० रामानद जी की जन्म तिथि पर एक वृहद् भंडारे की आयोजना हुई थी जिसमे स्वामी जी के शिष्यो और पर-शिष्यो के अतिरिक्त चारो ओर के अनेक सिद्ध महात्मा जुटे थे। उस अवसर पर स्वामी जी के जीवन के चमत्कारो की अच्छी तरह चर्चा की गई थी जिससे उपस्थित संत महात्माओ का समुदाय विशेष रूप से आनदित हुआ। उन महात्मागणो द्वारा रचयिता को यह आज्ञा हुई कि वह उस चर्चा को जिसमे रहस्य की और प्रकटन करने की अनेक बाते थी लिपिबद्ध करे, साथ ही यह आदेश भी मिला कि रचना विचित्र छद और विचित्र भाषा मे रची जाय जिसको बिना समझाए कोई न समझ सके, क्योकि कुछ वृत्तात ऐसे थे जो प्रकट नही किए जाने चाहिए थे और कुछ ऐसे थे जिनको उस समय तक छिपाना था जब तक वे घटनाएँ घटित न हो जाती जिनका निश्चय तत्कालीन सिद्ध द्वारा ही हो सकता। फलत यह वृत्तात माला देशवाडी-प्राकृत मे पिशाच भाषा के साकेतिक शब्दो के योग से अदणा छदो मे संग्रथित की गई। ग्रंथांत मे यह भी लिखा है कि जो इन प्रसंगो को समय से पहले खोलेगा वह पागल हो जाएगा, परतु प्रकट करने पर (रचना में वर्णित समस्त घटनाओ के घटित हो जाने के पश्चात्) जो इसका पाठ करेगा उसको तत्वज्ञान की प्राप्ति होगी और चतुर्वर्गजनित कामनाएँ सिद्ध होंगी।

यद्यपि इस रचना की भाषा हिंदी से भिन्न होने के कारण यह विवरण लेने योग्य नहीं थी तो भी इसका संबध स्वा० रामानद, कबीर, रैदास, खुसरो और पीपा से होने के कारण इसका विवरण लिया गया है। कबीर से तो इसका घनिष्ठ सबध है और यदि इस रचना में उल्लिखित बातें प्रामाणिक और सत्य सिद्ध हो गई तो इन सत कवियो के सबध मे भी बहुत सी विवादग्रस्त बातो का ठीक ठीक निर्णय हो जाएगा। इसमे एक भविष्य कथन भी है जो आगे कबीर के वृत्त मे दिया जाएगा। इनके सबध मे जो कुछ लिखा गया है, वह सक्षेप मे क्रम पूर्वक नीचे दिया जाता है—

स्वामी रामानंद—ऋषिकेश मे एक सारस्वत दंपति रहते थे जो भरतमदिर मे पूजा किया करते थे। उन्होंने बदरीवन (उत्तराखंड बदरीनाथ) मे जाकर विष्णु भगवान् की तपस्या की जिस पर भगवान् प्रसन्न हुए और उनको वर माँगने को कहा। उन्होंने कहा, 'आप हमारे पुत्र हो और हमे प्रसन्न करे।' भगवान् ने तथास्तु कह कर उनकी मनोकामना पूर्ण की। परतु केवल बारह वर्ष तक ही जीवित रहने का वचन दिया। कालातर मे ये दपति कान्यकुब्ज वाजपेयी वंश मे उत्पन्न हुए और प्रयाग मे रहने लगे। समय पाकर भगवान् इनके पुत्र रूप मे प्रकट हुए जो आगे स्वा० रामानद के नाम से प्रसिद्ध हुए। जन्म से ही इनके अलौकिक कार्यों का आभास मिलने लगा था। बारहवें वर्ष मे इनका प्राणात हो गया, पर स्वा० राघवानद के आशीर्वाद और प्रयत्नों तथा इनके माता पिता एव इष्ट मित्रो द्वारा अपनी अपनी आयु का कुछ अश दे देने पर ये फिर जीवित हुए। फलत अपने जीवनदाता स्वा० राघवानद के ये शिष्य हो गए। माता-पिता ने इनके लाख मना करने पर भी इनके विवाह का प्रबध किया, परतु जिस कन्या के साथ विवाह निश्चित हुआ था उसका विवाह होने पर वैधव्य योग था, अत उसने विवाह न कर जीवन पर्यंत कुमारी रहने का प्रण किया। स्वा० रामानद जी से उसने दीक्षा ले ली और तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगी तथा थोड़े ही समय पश्चात् स्वर्ग भी सिधार गई। इस प्रकार स्वा० रामानद जी की विवाह न करने की इच्छा अपने आप पूर्ण हो गई। वे काशी मे रहने लगे और बहुत ही शीघ्र चारो ओर प्रसिद्ध हो गए। उन्होने अपना अलग सप्रदाय चलाया जिसमे जात-पाँत, ऊँच नीच और छुआ छूत का कुछ भी भेदभाव नही था। ससार के सभी मनुष्यो के लिये वह खुला था। जो उसमे दीक्षित होता वह आनंद और शांति से जीवन व्यतीत करता। उसकी आध्यात्मिक शक्ति भी पूर्णरूप से विकसित हो जाती। कबीर जैसे जुलाहे और रैदास सरीखे अछूत स्वा० रामानद जी के प्रौढ शिष्यो मे से थे। पहले तो बडे बडे पडितो, विद्वानो और कर्मकाडियो ने इस विचारधारा का विरोध किया, परतु जब स्वा० रामानद जी ने उन्हे अनेक युक्तियो और चमत्कारो द्वारा निरुत्तर कर दिया तो वे लोग चुप हो गए। बहुत से उनके अनुयायी भी हो गए। दक्षिण के विद्यारण्य मुनि उनके समर्थक थे। इन विद्यारण्य मुनि पर स्वामी जी ने भविष्य की बातें प्रकट की थी (यह भविष्यवाणी और एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना जो हिंदुओं पर मुसलमानो के अत्याचार, तैमूर का हत्याकाड और लखनौती के उपद्रव से सबधित है आगे कबीर के वृत्त मे दिए जाएँगे)। कविवर खुसरो श्री स्वामी जी से मिलने आए थे। शिष्यो सहित समस्त देश का भ्रमण कर और दिग्विजय प्राप्त कर तथा दीर्घायु भोगने के पश्चात् स० १५०५ मे श्री स्वामी जी का साकेतवास हो गया।

कबीर—ज्योनिर्मठ के अधिपति (शकराचार्य) ने कैवल्य का लाभ कर ही लिया था कि इद्र के द्वारा अघटित घटना हो गई। प्रतीची नाम की देवागना ने विघ्न उपस्थित कर दिया। महात्मा उस पर मोहित हो गए और उसके साथ यथेष्ट विहार और रति क्रीडा की। अप्सरा ने भक्त प्रह्लाद को गर्भ मे धारण किया। उसने शिशु को जन्म देकर उसे कमल पत्रो में रख लहर-तालाब (काशी) मे तैरा दिया। जुलाहा दंपति नीरू और नीमा के आने तक वह उस नवजात शिशु की अलक्ष्य रूप मे रक्षा करती रही। यह बात सवत् १४५५ वि० ज्येष्ठ पूर्णिमा की है। दपति को सहवास के पूर्व ही पुत्र लाभ हुआ। उनके छूने से शिशु की द्युति मलिन हो गई जिस पर वे उसको मोमिन के पास ले गए। मोमिन ने कहा, 'तुम्हारे धन्य भाग्य है कि ऐसा पुत्र मिला।' उसने शिशु को उसकी ठुड्डी पकड कर पूछा, 'किसका बेटा है?' उसने कहा, "मैं वीरानंद के औरस और दिव्या के जठर से जन्मा शिशु हूँ।" माता पिता को इस पर दृढ़ विश्वास हो गया।

मोमिन ने अरबी भाषा की शब्दावली छानबीन कर उसका नाम कबीर रखा। यह बात सारे शहर में फैल गई। पड़ौस की कर्मा देवी ब्राह्मणी ने जिसकी जठर से उत्पन्न कन्या एक मास पहले मृत हो चुकी थी, दूध पिलाना स्वीकार किया। एक वैश्य ने बिआई हुई गाय भेज दी। परन्तु शिशु ने किसी के दूध को ग्रहण नही किया। तीसरे दिन शिशु की रक्षा और माता पिता की चिंता दूर करने के लिये स्वा० रामानंद जी ने प्रिय शिष्य अनंतानंद जी के द्वारा 'सुधामुखी' नाम की जड़ी भेजी जिसे शिशु मुख मे डालकर चूसने लगा। यह बूटी 'कबीर बूटी' नाम से प्रसिद्ध हुई। इससे कबीर की द्युति फिर ज्यों की त्यो हो गई।

:o: :o: :o: :o:

काशी के पडित स्वामी जी के पास गए और कहा, कबीर जुलाहे ने कंठी, तिलक, माला और छाप लगा लिया। वह अपने को आपका शिष्य बतलाता है। क्या यह सच है? यदि ऐसा है तो अनर्थ है। स्वामी जी ने शख बजाया। इससे सबकी द्वेषाग्नि बुझकर शात हो गई। तब स्वामी जी ने कहा, 'वह मेरा शिष्य है। भगवान् सबके हैं और भगवत शरणागति का सबको समान अधिकार है।' इतने मे कबीर भी आ गए। उनके मुख पर ऐसा प्रकाश था कि उससे प्रभावित होकर वे सब लोग खडे हुए और परदा भी जो स्वामी जी और अन्य लोगो के बीच मे लगा रहता था, हटा दिया गया। साक्षात् दर्शन ने उनके अंतःकरण को स्वच्छ और प्रकाशित कर दिया। स्वामी जी ने कहा, 'हुसेन वंशी माता पिता द्वारा शुद्ध सात्विक भोजन से पला जिसने तकी (शेख तकी) के प्याले को अनिच्छा पूर्वक लौटा दिया उसको केवल वस्त्र व्यवसाय के कारण हेय दृष्टि से देखना मिथ्या अभिमान का ही काम है। ऐसे सत्पात्र को जो शैशवावस्था में अपने माता पिता का परिचय दे चुका है, मोक्षमार्गीय दीक्षा से वंचित करना किसी भी समदर्शी जगद्गुरु के लिये उचित कार्य नही है।' 'हमने व्यर्थ ही महात्मा को कष्ट दिया?' ये बातें उन विद्वानों के शुद्ध हृदय मे अपने आप ही स्फुरित होने लगी, उन्होने क्षमा मांगी और विदा हुए।

:o: :o: :o: :o:

दिल्ली में तैमूर का हत्याकाड (१४५५ वि०) और लखनौती का उपद्रव (१३३८ वि०) होने के पश्चात् चारो ओर के श्रद्धालु स्वामी जी के पास आए। उस समय अज्ञान के साथ मौलवी और मुल्लाओ के कंठ बद हो गए। सब बडे विकल थे। उन्होने इसकी जड कबीर को समझा (ऐसा विदित होता है कि इन्होने कबीर पर अवश्य अत्याचार किया था) और उसकी ओर इगित किया। इब्वनूर और तकी आदि मौलवी राजाज्ञा के साथ भेंट और उपहार लेकर कबीर के पास गए। कबीर ने भेंट और उपाहर को गगा जी मे फिकवा दिया, परन्तु बहुत अनुनय विनय के पश्चात् वह उनके साथ गुरु रामानद के पास गया। स्वामी जी ने उपदेश दिया, ईश्वर मुसलमानों का ही नही, सबका है। वह किसी का पक्षपाती नही। यही मुस्तफा का आदेश है। केवल पूजा के विधान मे भेद होने मे दूसरों पर जजिया लगाना अनुचित है। मदिर बनवाने मे और उपासना करने मे प्रतिबध हटा देना चाहिए। मदिरो को ध्वस्त नही करना चाहिए। मसजिद के सामने वर को न उतारा जाय। यह पक्षतापपूर्ण और पुरानी धर्मनीति के विरुद्ध तथा पारस्परिक प्रीति को बिगाडने वाला है। गाय की कुर्बानी अनावश्यक है। जब आचार्य ने ही प्राणरक्षा के लिये उसे ग्रहण नही किया तो और मुल्लाओ को आम्नाय के प्रचार मे रुकावटें न डालनी चाहिए। धर्म पुस्तकें न जलाई जायँ, देवमंदिर न ढहाए जायँ और न किसी का जी जलाया जाय। मुहर्रम मे त्यौहार पर्व मनवाने मे प्रतिबध न रहे। स्त्रियो का सतीत्व नष्ट न किया जाय। कथा आदि मे शख बजाने का निषेध न रहे। कुंभादि पर्वों पर यात्रियो से कर न लिया जाय। कोई हिंदू किसी फकीर के पास जाय तो उसको उसी के धर्मानुसार उपदेश दिया जाय। यदि इन बारह प्रतिज्ञाओ मे से किसी का उल्लंघन होगा तो राजा नष्ट हो जाएगा।' उन्होने इन प्रतिज्ञाओ को उचित जानकर मान लिया शर्तों को लिपिबद्ध करके उसपर बादशाह की मुहर लगाई गई। तब सब ठीक हो गया।

:o: :o: :o: :o:

२

कांचीवरम (दक्षिण) के लोगो ने वर्ण द्वेष के कारण रैदास और कबीर की निंदा की। स्वामी जी की जमात का किसी ने भी स्वागत सत्कार नही किया। पुरी के उत्तर विद्याधर प्रजेश ने भोजन सामग्री की व्यवस्था की और स्वय भी सेवा मे उपस्थित हुआ। एक दिन उसके वापिस आने मे देर हो जाने के कारण उसकी स्त्री सीता अनुधीता स्वय पति की खोज मे जमात की ओर चली। सामने ही गुरुवानी गोदा देवी जा रही थी। उसने साथ ही स्त्रियो से रानी को इगित करके कहा, 'वह कबीर की जोय जा रही है। छू न जाना।' पतिव्रता को इसपर बड़ा क्रोध आया और उसने शाप दिया, तेरे इस भगवदपराध के कारण (जुलाहे के रूप मे भागवत की निंदा की, इस कारण) सारे देश मे वस्त्र निर्माण के उपकरण नष्ट हो जाएँगे। दरिद्रता का विस्तार होगा और तेरे समान विचार वाले म्लेच्छ योनि मे पतित होगे। नक्षत्र तिलमिलाते, वायु विषैली बहेगी। पृथ्वी फटे और तू खटे।' तत्काल पृथ्वी फटी और गोदा देदी उसी मे समा गई। हाहाकार मच गया। दूसरे दिन से धर्मदड चला। लोग जब रसोई बनाएँ तो चौके मे कबीरदास प्रकट दिखाई दें। कोई भोजन न करे। इस प्रकार दो दिन और दो रात भूखे रहने पर सबका अभिमान दूर हो गया। सब नमित भाव से स्वामी जी के पास गए। विद्यारण्य मुनि भी शिष्य वर्ग और राजमत्री सहित उपस्थित हुए। शापानुग्रह की प्रार्थना की। स्वामी जी ने कहा, 'यह धर्मदड भविष्य कल्याण के लिये था। अब ऐसा न होगा। पतिव्रता का शाप व्यर्थ न जायगा। भगवान् भी उसे नही टाल सकते। जब यह विष वृक्ष फलेगा तब देशवासी बड़े कष्ट में पड़ेंगे। शाप के प्रभाव से इसी किनारे से वणिक समाज आएगा और करघा चरखा घर घर से मिटा कर सब व्यवसाय हस्तगत करके देश को महाकगाल बना देगा। दरिद्रता के कारण. धीरज छूट जाएगा और धर्मग्लानि उपस्थित हो जायगी। ऐसे ही समय मे वैदेही के वरदान का फलीभूत होने का योग लगेगा। उस समय कबीर दास की ज्योति वणिक् कुल मे मोहनदास (? गाधीजी के) नाम से उतरेगी। चरखा का प्रचार करेगी और रामनाम के प्रताप से सब दुख दरिद्र भगावेगी—

तिच्चप कबीरा कारुआँ। छन्दासमोहन गारुआँ॥
विद्यांत सउपड़ फारुआँ। रामेति पुहुपुण पारुआँ॥

विद्यारण्य स्वामी ने प्रश्न किया, 'दरिद्रता सद्गुण का नाश और दुर्गुण की वृद्धि करती है तो क्या उस कठिन समय मे नि सीम धर्मग्लानि की रोकथाम करने के लिये 'कर्मसूत्रधार' की ओर से कोई विशेष आयोजन होगा।' स्वामी जी ने मुस्करा कर कहा, 'परित्राणाय साधूना के प्रमाण से आप ऐसा प्रश्न करते है सो आप जैसे सहृदय ज्ञानी पुरुष से छिपा नही रह सकता। पचनद देश मे विदेह (? नानक) और बग मे राधा जी के परम प्रेम का मार्ग जानने के लिये श्री यादवराज (गौराग महाप्रभु) स्वय अवतरित होंगे और धर्मरक्षा की व्यवस्था करेगे। इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों खूँट मे धर्मरक्षा का कटकाकीर्ण पथ कर्मसूत्रधार भगवान् ही प्रशस्त कर देंगे।' विद्यारण्य मुनि को परम सतोष हुआ। मन की मलिनता दूर हुई। रहस्यरक्षा की प्रतिज्ञा करके अपने व्यक्तित्व के विषय मे पूछा। स्वामी जी ने एक पुष्प दिया। विद्यारण्य मुनि ने दलो पर एकाग्र दृष्टि से देखा और सब जान लिया, भविष्य को भी देख लिया।

रैदास—इनका केवल नामोल्लेख हुआ है जो कबीर के वृत्त के अतर्गत है।

खुसरौ—ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ने अपने शिष्य कवि खुसरौ के हाथ एक विचित्र पत्र भेजा जो सुनहरे बेलबूटो से खूब सजा था। ध्यान देकर देखने पर उसमे अरबी भाषा का एक सूत्र लिखा था जो उनके पूज्य ग्रथ मे है—'इल्लाब जिक्र अल्लाह ततमैन उलकुलूब'—अर्थात्, भगवत के सुमिरन भजन से ही आत्मा को शाति प्राप्त होती है। सुचतुर कवि ने इसका परिचय दिया और टीका टिप्पणी सहित इसकी पूरी व्याख्या की जिसे सुनकर समुपस्थित सज्जन बहुत प्रसन्न हुए। भगवत भागवत की तन्मयता पर एकता भासित हुई। तब वह बहुमूल्य पत्र स्वामी जी के चरण कमलो मे इस प्रकार युक्तिपूर्वक परदे के भीतर पहुँचाया गया कि उसका कोई भी भाग या कोना दबा मुड़ा नही, गरद से धब्बा भी नही पडा। फिर प्रतीक्षा करते देर हो गई। तब कविवर खुसरौ ने एक कसीदा प्रेमरस से पूर्ण सुनाया जिसका प्रथम पद फारसी

भाषा में और द्वितीय चरण हिंदी भाषा में था। उसमे गुरुवर की दयालुता को नायिका मानकर उसके प्रति अगाध प्रेम प्रकट किया गया था। इतने मे स्वामी जी ने दर्शन दिया। कवि आत्मानुभव का सुख लूटने लगा। स्वामी जी ने खुसरो का आदर किया और पाटाबर का एक मत्र अंकित कर अद्भुत पुष्पलताओ से खचित अभ्रक की मजूषा मे रखकर उनके हाथ वह ख्वाजा जी के पास भेजा गया। पीपा जी को भी साथ मे भेजा गया।

पीपा—गागरौन के राजा पीपा स्वामी जी के पास देवी की आज्ञा से दर्शन को आए। बडी कठिनाई से अनतानद जी के कहने पर स्वामी जी की आज्ञा हुई कि कुएँ मे गिर जाओ। पीपा जी बिना विचारे कुएँ मे गिर पड़े। वहाँ अनेक प्रकार के दृश्यो को देखा। पश्चात् स्वामी जी के चरणदर्शन हुए और दीक्षा मिली। काशी मे उनकी बड़ी ख्याति हुई। कुछ समय पश्चात् पीपा जी स्वामी जी को जमात सहित अपने राज्य मे ले गए। चार मास तक उनकी सेवा की। पीछे राज्य त्याग करके उन्ही के साथ हो लिए। उनकी स्त्री ने भी उनका अनुगमन किया। द्वारिका जाकर ये दपति समुद्र मे प्रविष्ट हुए। वहाँ उनको राधाकृष्ण का दर्शन मिला और जब बाहर निकले तो शख चक्र की छाप उनके बदन पर विद्यमान थी।

:o: :o: :o: :o:

हस्तलेख के मुखपृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है—

"श्री रामोजयति
अथ प्रसग पारिजात
जिसमे
भगवान रामानदाचार्य के दिव्य चरित तथा सदुपदेश
प्रणेता
श्री श्री चेतनदासजीकृत श्रीमौनिक महाराजोक्त अनिल नामक
हिंदी अनुवाद समन्वित
इद प्राप्त.

श्री विनायक जी महाराज सवत् १९२८ वि०
श्री परमहस जी राममगलदास गोकुलभवन, अयोध्या ने स० १९८४ मे पाया।'
सवत् १९९७ मे मलूक जी (कंवल बहादुर,
ग्रथस्वामी) को मिला।"

विशेष—उपर्युक्त श्री मौनिक महाराजकृत अनिल नामक हिंदी अनुवाद के आधार पर ही प्रस्तुत ग्रथ का विवरण लिया गया है। अनुवाद मे उसका समय नही दिया है, पर उसकी भाषा को देखने से वह बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध का विदित होता है।

मध्यकालीन वैष्णवधर्मों ने अपने समय मे आर्य सस्कृति की बड़ी रक्षा की। उन्होंने सबको सुलभ होने वाली जिस भक्तिधारा को प्रवाहित किया उसने समस्त राष्ट्र को भक्तिमूलक एक आध्यात्मिक चेतना प्रदान की। यही कारण था कि कट्टर धर्म के प्रचार मे लगे हुए मुसलमानी विजेताओं की तलवारे, जो अन्य धर्मावलवियो के खून की प्यासी रही, अरब और भारत के बीच के क्षेत्र की सस्कृति को क्लिष्ट करती हुई भारत मे आकर कुंठित हो गईं। इसका सबसे अधिक श्रेय स्वा० रामानद और उनके अनुयायियो को है। स्वा० रामानंद युगप्रवर्तक के रूप मे प्रसिद्ध है। जात पाँत, ऊँच नीच और छूआछूत के भेद को वे नही मानते थे। उनके यहाँ हिंदू मुसलमान समान रूप से प्रवेश और आदर पाते थे। एक ओर उनके उच्च से उच्च वर्ण के शिष्य अनतानद जी थे तो दूसरी ओर नीच से नीच वर्ण के कबीर और रैदास सरीखे शिष्य भी विद्यमान थे जो गुरुभाइयो की तरह निष्कपट रूप से साथ साथ रहते थे। इनका चलाया हुआ रामानदी सप्रदाय सबसे अधिक उदार और प्रगतिशील विचारधारा को लिए हुए था। कबीर के गुरु होने के नाते निर्गुण पंथ के प्रचार का मूल आधार भी इन्ही को समझना चाहिए; क्योंकि कबीर के विचारों मे जैसा प्रस्तुत ग्रंथ से विदित होता है, वे सहमत थे। अपनी मृत्यु के समय शिष्य वर्ग को इन्होंने इसी प्रकार का संदेश दिया था जो ध्यान देने योग्य है—

अवतार अठमी पाहचिरए । दीवी बुमीवी आहरिए ॥
बिप्पा भुजंसा माहकिरए । तिसुधा मुधा था लाहालिए ॥

अष्टमी रविवार के दिन अनुष्ठान की समाप्ति पर शिष्यो, सतो और विप्रो को संबोधित करके महाराज ने कहा, सब शास्त्रो का सार भगवत स्मरण है जो सतो का जीवन आधार है। शिखासूत्र का आधार पादज और अत्यज हैं।

लहुवाच लुंपिग घासुम् । बतरवाछ भाडिस मासुभू ॥
एाबमी अयोध्या टासुमद्व । सेगा उगाढिह गासुभू ॥

भाई ! पैरो को कटाकर समाज को पगु मत बनाना । कलको रामनवमी है अयोध्या जी जाऊँगा । सब यहीं रहेगे और उत्सव मनावेगे ।

इसी तरह उन्होंने अयोध्या के राजपरिवार को जो मुसलमानो के स्पर्श से भ्रष्ट हो गया था प्रजा समेत शुद्ध किया । अस्तु ।

यदि ऐसा कहे कि सगुण निर्गुण और रामानदी विचारधाराओ ने ही मिलकर वर्तमान स्वतत्र भारत का निर्माण किया है तो कोई अत्युक्ति न होगी । जात पाँत, छूआछूत और ऊँच नीच को दूर कर उदार विश्वधर्म की जो लहर इस समय समस्त भारत मे व्याप्त हो रही है वह इस विचारधारा से किसी प्रकार पृथक् नही । प्रस्तुत ग्रथ मे वर्णित भविष्यवाणी के अनुसार तो आधुनिक भारत का निर्माण करने मे स्वा० रामानद और कबीर ही दृष्टिगत होते हैं, क्योकि उसमे महात्मा गाधी को कबीर का अवतार कहा गया है । फिर भी, इस युग को गाधी युग कहने मे कोई विरोध नही ।

प्रस्तुत ग्रथ की प्रामाणिकता सिद्ध होने पर स्वा० रामानद के छोटे बड़े सभी कार्य जनता के समक्ष आ जाएँगे । इससे स्पष्ट हो जायगा कि स्वा० रामानद ने प्राचीन दार्शनिक (विशेष कर वेदात के विचारो को) और धार्मिक ग्रथो के सिद्धातो को देशकाल के अनुरूप किस प्रकार उदार बनाया और उनको किस प्रकार कार्य मे परिणत कर दिखाया । वैसे तो सभी वैष्णव सिद्धात उदार ही है पर इसमे सदेह नही—जैसा प्रस्तुत ग्रथ से विदित होता है—ऐसे सिद्धातो को मानवमात्र के हित मे पूर्णरूप से कार्य मे परिणत करने वाले स्वामी रामानद ही थे । निर्गुण सप्रदाय का प्रचार किस परिस्थिति मे और क्यो हुआ ? इसके कारण भी धीरे धीरे स्पष्ट हो रहे है । अत मे यह कहना ठीक होगा कि मध्यकालीन सगुण और निर्गुण भक्तिमार्गो की सार्थकता अब ठीक ठीक समझ मे आ रही है ।

ग्रथ मे अनेक ऐतिहासिक विवरण भी है । जैसे, गगू ब्राह्मण और जफर खाँ; पारसियों के अग्निपूजको के गुरु कारोवियाँ जी, विजय नगर के राजा बुक्काराय, राणा हम्मीर का विश्वासपात्र पुहकरसी आदि के सबध की बातें । इसमे अनेक दार्शनिक और आध्यात्मिक उपदेश भरे पड़े हैं जो सर्वग्राह्य है तथा जिनसे तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक बातो की जानकारी प्राप्त होती है । स्वा० रामानद जी के परिभ्रमण मे पड़नेवाले अनेक नगरो के उल्लेख भी हैं । इसमे सदेह नही कि यदि इस ग्रथ का मूल ठीक ठीक पढा जा सका और वह अनुवाद से सर्वथा मिलता गया तो स्वा० रामानद कबीर, रैदास और पीपा के अतिरिक्त मध्यकालीन इतिहास के सबध मे भी इससे बडी सहायता मिलेगी । यद्यपि भविष्यकथन वाली बात पर इस वैज्ञानिक युग मे विद्वानो का सरलता से विश्वास करना सभव नही तो भी इसमे वर्णित अन्य प्रसगो की इतिहास के आधार पर छान बीन करना आवश्यक है ।

ग्रथ के अनुसार कबीर का जन्म सवत् १४५५ मे हुआ । कुछ लोग इनका मृत्युकाल संवत् १५०५ बतलाते है जो इस ग्रथ से गलत है । इस सवत् मे स्वा० रामानद जी का साकेतवास हुआ था ।

इस ग्रथ के विषय मे श्री शकरदयालु श्रीवास्तव एम० ए० का एक लेख विशाल भारत (नवबर १९३२ ई०, भाग १०, अक ५) मे छपा है जिसका उल्लेख डा० बड़थ्वाल ने दिल्ली रिपोर्ट (पृ० ८) मे स्वा० रामानद कृत 'रत्नतिलक' के प्रसग मे किया है ।

जानकी बाई—इनकी दो रचनाएँ 'जानकी प्रकाश' और 'जानकी प्रकाशिका' नाम से मिली हैं। प्रथम मे व्याकरण विषय का वर्णन है और दूसरी मे गीता की टीका है। ये दोनो संवत् १६३५ की छपी हुई हैं। इनका रचनाकाल भी जो दिया नही है, लगभग यही सवत् समझना चाहिए, क्योंकि दूसरी रचना के अनुसार लेखिका, जो परम विरक्ता और वैष्णवी थी, वृंदावन मे निवास करती थी। व्याकरण जैसे शुष्क, पर आवश्यक विषय की ओर भी रचयित्री का ध्यान गया इससे इनके सामयिक दृष्टिकोण का पता चलता है। अन्य विवरण इनका उपलब्ध नहीं। 'जानकी प्रकाशिका' की पुष्पिका इस प्रकार है—

"इति श्री जानकी बाई परमविरक्त श्री वैष्णव की बनाई हुई श्रीभगवद्गीता उपनिषदों की टीका जानकी प्रकाशिका में अट्ठारवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥१८॥ हस्ताक्षर प्यारेलाल सर्वानन्द सिद्धांती सम्वत् १६३५ ॥"

इस पते से यह पोथी मिलेगी श्री वृंदावन चन्द्र परमधाम मे जहाँ जानकी बाई का है अठखम्बा बाजार चौक मे लाला मक्खनलाल सराफ की दुकान पर मिलेगी मोल (२) जानकी बाई वेमोल देगी ॥' ··· ॥)

तारानाथ—इनका सगीत विषय पर रचा हुआ 'रागमाला' नाम का ग्रथ मिला है जिसकी एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमे छह राग और तीस रागनियो के वर्णन है। प्रत्येक राग की पाँच पाँच भार्याएँ बतलाई गई है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। पुष्पिका के अनुसार रचयिता सभवत सुप्रसिद्ध कवि नरहरि (अकबर के दरबारी कवि) के कुल के थे—

'इति श्री मन्महाराजधिराज रामसिंह प्रोत्साहितं नरहरिकुल प्रसूत तारानाथ विरचितायां मेघनाथ्यं निरूपणो ॥शुभम्॥'

ये जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार मे रहते थे और उन्ही की प्रेरणा से इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। आश्रयदाता के कुल का सबध उन्होंने महाराजा रामचद्र के पुत्र कुश से जोडा है—

लीन्हों सूर्ज वंश में रामचंद्र औतार।
निश्चर कटक संघारिके हरयो धरनि को भार॥
ताको पुत्र प्रसिद्ध जग कुस नृप परम प्रधान।
दीन्हों ताहि कुशावती रामदेव भगवान॥
ताके कुल में प्रकट भे कछवार रनधीर।
श्रीभगवत नरेशमनि सागर सम गंभीर॥
मानसिंह ताको तनय भयो प्रखंड प्रताप।
धोयो पङ्क समुद्र मह मेटयो अरि को दाप॥ ५॥
'गतसिंह' ताको सुवन प्रति प्रचंड भुजदंड।
जीत्योफोज इरान की लीन्हो बहुविधि दंड॥
महासिंघ जू तासुसुत दाता त्राता वीर।
नृप जाहिर रनभूमि में अरिगन धरत न धीर॥
ताकोसुत जयसिंघ नृप सकलगुनन को धाम।
लियो सवाई को विरद जीति दुष्ट संग्राम॥
रामसिंह ताको तनय दाता शील समुद्र।
जाकी धाक प्रचंड ते रहे न अरिगन क्षुद्र॥
औरंगजेब उदार बल दिल्ली को औनीश।
देखत जाके त्रास ते तुरत नवावे शीश॥
सों नृप तारानाथ सों भाख्यो प्रेम बढ़ाय।
रुचिर रागमाला हमें दीजे सुकवि बनाय॥ १॥

महाराजा रामसिंह का राज्यकाल सवत् १७२३–३२ तक माना जाता है, अत इसी समय के लगभग रचयिता का वर्तमान होना समझना चाहिए। इनकी प्रस्तुत रचना विषय

की दृष्टि से उत्तम है। इसमे राग का लक्षण, उसके गाने का समय और उसके स्वरूप आदि का ठीक ठीक वर्णन किया गया है।

देवदत्त कवि 'जैन'—ये उत्तरपुराण के रचयिता है। ग्रंथ के अनुसार इनका निवास स्थान अटेर था और ये दीक्षित ब्राह्मण थे। एक जैन भट्टारक जिन इंद्रभूषण के कहने पर इन्होंने प्रस्तुत रचना की। समय इनका अज्ञात है, पर भट्टारक जिन इंद्रभूषण ने इंद्रजीत नामक एक अन्य कवि—जिनका उल्लेख पीछे हो चुका है—से भी इस पुराण की कुछ कथाओ का अनुवाद करने के लिये कहा था जिसपर उक्त कवि ने सवत् १८४० मे उन कथाओ का अनुवाद किया। अतएव प्रस्तुत रचयिता का भी यही समय मानना उचित है यद्यपि लखनऊ के प्रसिद्ध जैन विद्वान्, श्री ज्योतिप्रसाद जी जैन इससे सहमत नही है। उनके विचार से देवदत्त सवत् १७५० के लगभग वर्तमान थे। अस्तु।

प्रस्तुत ग्रथ मे केवल आठ तीर्थंकरो—अजितनाथ, सभवनाथ, अभिनंदन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, पार्श्वनाथ, चद्रप्रभुनाथ और महाबीर स्वामी—की कथाओ का वर्णन है। यह दोहा चौपाइयो मे रचा गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८९७ दिया है। मूल ग्रंथ सस्कृत मे है जिसको पहले जिन सेनाचार्य ने लिखना आरभ किया था; परतु आदिनाथ चरित्र लिखने के पश्चात् उनका देहात हो गया। पीछे गुणभद्राचार्य ने उसको पूरा किया।

भट्टारक जिन इद्रभूषण का वृत्त इद्रजीत कवि के विवरण के साथ पीछे दे दिया गया है। रचयिता के वृत्त का उद्धरण इस प्रकार है—

इक समय देव जिनेंद्र भूषन विश्व के उपकार कौं।
उरचिंति करुना बाढ़ि मनमहँ मांडि विमल विचार कौं।
अटेरपुर वासी कवीसुर देवदत्त बुलाइयो।
श्री वाधमान पुरान भाषा पढनि सो बनवाइयौ ॥२८॥
उपदेश तिनकौं पाइ श्री कविदेवदत्त सुधारि कै।
श्री वरधमान पुरान इमि निरमयौ उमहि विचारिकै॥
भगवत श्रीगुनभद्र जो कछु कह्यौ निजकृति मै सही।
भाषा पढनि सोई अरथमे कह्यो उर सुषनिधि लही ॥२९॥

इनकी कविता उत्तम और प्रसाद गुण सपन्न है। प्रस्तुत ग्रथ इन्होने बहुत कुछ स्वतंत्र रूप से रचा है। मूलग्रथ की केवल छाया मात्र ही है—

आदि पुरान पुरान सिरोमनि सो जिनसेन रच्यो सुभ अंका।
उक्ति सजुक्ति भई बहुरत्न भरे गुन जोति महा अकलंका।
छाया कछू अब ताकी लये सुठि उत्तर ग्रंथ रचौं तजि संका।
छाया परं सुचरित्र धनीनु की होतु धनी मै प्रसिद्ध जो रंका ॥३०॥

देवीदास कायस्थ—इन्होने दो फारसी ग्रथो—'करीमा और मामकीमा'—का हिंदी मे पद्यानुवाद किया है। इनमे भगवद् प्रेम का बड़ा सुदर वर्णन है। दोनो अनुवाद एक ही हस्तलेख मे जो सवत् १९०६ का लिखा हुआ है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। मूल ग्रथ फारसी साहित्य मे प्रसिद्ध है जिनके रचयिता क्रमश. शेखसादी और अलाउद्दीन अवधी हैं। प्रस्तुत अनुवाद भी बहुत कुछ सरस और उत्तम है। इनकी पुस्तिकाओ द्वारा रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये जाति के कायस्थ थे और गाजीपुर उनका निवासस्थान था—

"......व तशनिफ हजरत मखदूम शेख शादी शीराजी की देवदास कायस्थ हिंदी तव तवाश मुफ्ता.........संवत् १९०६ मिति भादो वदी सत्तमी।"

"मामकीना मिन तशनिफ अल्लाउद्दीन अवधी की तवतनाश देवीदास कायस्थ गाजीपुरी हिंदी बयान करदा......संवत् १९०६......।"

धर्मदास—पैशाची भाषा मे रची हुई इनकी 'विदग्ध मुखमंडन' नामक रचना के विवरण लिए गए हैं। यह खडित है और इसके केवल दो ही पत्रे उपलब्ध हो सके हैं जिनमें न तो

रचनाकाल का ही उल्लेख है और न लिपिकाल का ही। विषय भी इसका ठीक ठीक ज्ञात नहीं होता। पढ़ने से यह कोई अलकार का ग्रंथ जान पड़ता है। पैशाची भाषा का ग्रंथ होने के कारण ही इसका विवरण लिया गया है।

रचयिता का पुष्पिका मे दिए हुए नाम के अतिरिक्त और कोई पता नही चलता--

'इति श्री धर्मादास कृते विदग्ध मुखमंडने तृतीय परिछेदः'

नंद या नंदलाल--इनके दो ग्रंथो 'सुदर्शन चरित्र और 'यशोधर चरित्र' का पता चला है इनमें क्रमश: जैन धर्मानुयायी सुदर्शन सेठ और यशोधर के चरित्रो का वर्णन है। प्रथम ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १६६३ है--

संवत सोरह से उपरंत। त्रेसठि जानहु वरिष महंत॥ ६॥

॥ सोरठा ॥

माघ उजारे पाष गुरु वासर दिन पंचमी।
बंधि चोपही भाष नंद करी मति सारथी॥ ७॥

दूसरे ग्रथ का रचनाकाल स० १६७० है--

संवत् सोरशे अधिक सत्तरि शावन मास।
सुकुल सोम दिन सत्तमी कही कथा मृदुभास॥ ६॥

लिपिकाल दोनो ग्रंथो का अज्ञात है।

रचयिता जैन धर्मानुयायी और आगरा के निवासी थे। गुरु का नाम त्रिभुवन कीर्ति था जो काम का नाश करने वाले सुखेमकीर्ति के शिष्य थे। सुखेभकीर्ति के गुरु का नाम भट्टारक जशकीर्ति था। रचयिता ने आगरा की बडी प्रशसा की है। उस समय जहाँगीर बादशाह था जो आगरा में ही रहते थे। बडे बडे धनाढ्यो का वहाँ निवास था। वहाँ के लोगो की भावभाषा अच्छी थी और वे गुणियो से प्रीति करते थे आदि। दूसरे ग्रथ के अनुसार ये गोइल गोत्र और अग्रवाल जाति के थे। पिता का नाम भैरो और माता का नाम चदन था--

गणधर पद पावन गुनकंठ। भट्टारक जशकीर्ति मुनिंद॥
ता पट पगह महिमे जसु जासु। लीला कियो वमन को भासु॥११॥
नाम सुषेम कीर्ति मुनिराइ। जाके नाम दुरित छय जाइ॥
तासु पद श्रुत सागर पार। त्रिभुवनकीर्ति कीर्ति विस्तारु॥१२॥
तासु समीप सुमति कछु लई। उकति बुद्धि मेरे मन भई॥
नैना नंदि आदि जो कही। ताहि विधि बाध्यो चोपही॥१३॥

:o: :o: :o:

अगम आगरो पतरु यरु उठ (?उच्च या ऊँच) कोट प्रासाद।
तरे तरंगिनि नदि बहे नीर अमी सम स्वादु॥५०१॥

॥ चौ० ॥

भाषा भाउ भली जह रीति। पालहि बहुत गुनिन सो प्रीति॥
नागर नगर लोग सब सुषी। परकीरत ते कर्म्म ते बुषी॥५०२॥
धनकन पूरन तुंग अवासु। वसहि निसंक धर्म्म के दास॥
छत्राधीस हत भाऊ वंश। अकबर नंद वैरि विध्वंस॥ ३॥
तषत वष पूरो परचंड। सुर नर वस नृप मानहि दंड॥
भाम काम गुन आनन वियो। रचि पचि आयु विधातां कियो॥ ४॥
जहाँगीर उपभावेऊ काहि। श्री सुलितान नूरंदी साहि॥
कोश देश मंत्री मति गूढ़। छत्र चमर सिघासन रूढ़॥ ५॥
करे असीस प्रजा सब नाहि। गुन वरने सु इती मति काहि॥

--सुदर्शन चरित्र

अरिल्ल

अगरवाल बरवंश गौ सुना गाँव कौ।
गोइलगोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठाँव कौ॥
मावेहि चंदन नाम पिता नयरौ मन्यौ॥परिहां॥
'नंद' कही मन मोद गुनि गन ना गन्यौ॥ ७॥
—जसोधर चरित्र

परमानंद—ये "ओषाहरण (ऊषाहरण)" नामक रचना के रचयिता हैं। रचना का विषय हरिवंश पुराण के आधार पर ऊषा-अनिरुद्ध-विवाह वर्णन है। रचनाकाल संवत् १५१२ दिया है और लिपिकाल संवत् १६१३ वि०। रचनाकाल का उल्लेख इस प्रकार है—

संवत् पनर बरमा अनेमास कारतीक जाण्य।
अष्टमीनेलवी वारे ग्रंथ संपुरण प्रमाण॥१८॥

रचना प्राचीन होने के कारण महत्वपूर्ण है। यह पच्छिमी राजस्थानी मे लिखी हुई है जिसमे गुजराती शब्दों का भी समावेश पाया जाता है।

रचयिता ब्राह्मण वर्ण के थे और बडोदा मे निवास करते —

बड़ोदरा मा छे विप्र प्रमाणव हरीनोवास।
एक चीते साभले मनधरी वीश्वास॥१९॥

परिमल्ल कवि—इनका "श्रीपाल चरित्र या श्रीपाल पुराण भाषा" नाम से एक बृहद्-काय ग्रंथ मिला है, जिसकी पाँच प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। यह जैन साहित्य का ग्रंथ है जिसमे श्रीपाल नामक एक राजा की कथा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रतियों में दिए गए रचनाकाल मे भिन्नता है। दो प्रतियों मे तो यह संवत् १६५१ है और दो मे संवत् १६४९ तथा एक मे अस्पष्ट है—

यथा—

संवतु सोरह सौ उच्चरौ। समयौ इक्याउना आगै परौ॥२९॥
मासु असाढु पहुचौ आइ। वरषा रितु को कहै बढ़ाइ॥
पछि उजियारौ आगै जानि। सुक्रवार वार परिवानि॥३०॥

:o: :o: :o:

संवतु सोरह सै उच्चरौ। समभो इक्यावन आगरौ॥
माठ असाढ़ पहौचौ आइ। वर्षा रितु को कहै बढ़ाइ॥३०॥
पछि उजारौ आवै आनि। सुक्रवारू वार परवान॥

:o: :o: :o:

संवत सोलह सै उनचास। मास असाढ़ चौमासौ भास॥
दिन अढाई पहुच्यौ आय। व्रत पूजा भवि करै उछाव॥२९॥

:o: :o: :o:

संवत सोलह सै उनचास। मास अषाढ़ चौमासौ भास॥
दिवस अढ़ाइ पहुच्यौ आय। व्रत पूजा भवि करै बनाय॥३०॥

:o: :o: :o:

संवत सोलह सै उचरौ। सावन इकौवन आगरौ॥
माड असाढ़ पहुचौ आइ। वर्षा रितु कौउ कहै बढाइ॥४०॥
पक्ष उज्यालि आठे जानि। सुक्र (? सुक्र) वार आठै परवानि॥

:o: :o: :o:

अंतिम उद्धरण में संवत् यद्यपि अस्पष्ट है तो भी उससे संवत् १६५१ निकलता है। अतः यह तो प्रथम प्रतियों के रचनाकाल के उद्धरणों से मिलता है। सबसे पुरानी प्रति संवत् १८०७ की लिखी है जिसमे रचनाकाल संवत् १६५१ दिया है। इसलिये इसी को वास्तविक रचनाकाल मानना उचित था परंतु पिछली खोज विवरणिका (२३-३०६) में गणना द्वारा रचनाकाल सं० १६४६ ठीक माना जाता है। लिपिकाल प्रस्तुत प्रतियो में क्रमशः संवत् १८०७, १८३५, १८५६, १६१३ और १८७४ हैं।

रचयिता अकबर बादशाह के समय में आगरा में निवास करते थे। मूल स्थान ग्वालियर था जहाँ राजा मान राज्य करता था। वहाँ (ग्वालियर) बरहिया जाति के एक चंदन नामक चौधरी रहते थे जिनके पुत्र रामदास थे। रामदास के पुत्र आसकरन हुए जो प्रस्तुत रचयिता के पिता थे—

बब्बर पाति साहि होइ गयौ। तासुतु साहि हिमाउ भयौ॥
तासुतु अकबर साहि सुजानु। सो तप तपै दूसरौ भानु॥३२॥
ताके राज न कहूं अनीति। बसुधा सकल करी बस जीति॥
जबू दीप तासु की आन। दूजौ और न ताहि समान॥३३॥
ताधूराज न कहूं अनीति। बसुधा सर करै सब जीति॥

:o: :o: :o:

गोपाचलगढ़ उत्तिम थान। सूरबीर तहां राजा मान॥
ताको वलबलु बहुत असेस। गढ़ पै राजु करै सु नरेस॥१॥
ताके आगै भुमिया सबै। संका मानि सहजहिं दबै॥

:o: :o: :o:

ता आगै चंदन चौधरी। कीरति सब जगमैं बिस्तरी॥
जाति बरहिया गुनगंभीर। अति प्रताप कुल मंडनधीर॥
तासुत रामदास परवीन। नंदनु आसकरनु सुवलीन॥५॥
तासुत कुलमंडन 'परिमल्लु'। बसै आगरै मै तजि सल्लु॥

प्रस्तुत रचना को पढने से विदित होता है कि रचयिता एक प्रौढ कवि थे। आगरे का उन्होंने बड़ा सुदर और रोचक वर्णन किया है। अकबर बादशाह की भी प्रशंसा की है जिसमें गाय के प्रति उसकी प्रीति का उल्लेख है—

बंदौ श्री अकबर सुलितान। महिमा सागर महासुजान॥६४॥
जाकै हृदै दया कै वासु। जीवनि कबहू देइ न त्रास॥
तामैं एक अपूरब रीति। सुरभी सौ अति राखै प्रीति॥६५॥
गाइ सिंघ जू बसै इकठौर। बैर भाउ नहीं राखै और॥
मृगमै जसु पीवै अनुपाई। अपनै मारग आवै जाइ॥६॥

:o: :o: :o:

आगरे का वर्णन

नादौ नगर आगरौ भान। जंबू दीप प्रगट परवान॥७१॥
चौहू धां उपवन अति वनै। नाना भाँति महिरुह घनै॥
अंबडार अति सुगम सरीर। कोकिल सुर बोलै गंभीर॥
सारो सूवा रूप अभंग। परस परस बोलै धुनि चंग॥
गाहा दोहा बालै कहै। विरमै नर नारी सुपु लहै॥७३॥
नाचै मोर छता धरि सीस। भूलै नर नागर धनरीस॥
पांडुक बोलै मधुरी भाष। आप आपनै मव अभिलाष॥

सुहके पारावत मवशोर । पिय्यत कामी के मन शोर ॥
जोगी जंगम के मन जिते । ब्याकुल होहि काम बस तिते ॥७४॥
भांति भांति के कुसुम अपार । पुष्पत सबल बासु अधिकार ॥
भ्रमर अनेक न छाडैं पास । बोलै सबहु कांम की बासु ॥
सदा हरित दीसैं द्रुप हंत । भवरे फूले सदा बसंत ॥
तरें कालिंद्री जमुना बहै । देषत पाप न तन मैं रहै ॥
उजिल नीर सीत की गेहु । अति सुरभी मनमथ को गेहु ॥
अबला जामैं करैं असनान । रूप आगरी परम सुजान ॥

प्रस्तुत रचना पहले भी मिल चुकी है, देखिए विवरणिकाएँ (२३–२०६, २६–२६१) परंतु इस बार कवि का पूरा वृत्त उपलब्ध हुआ है ।

पानपदास—इनकी निम्नलिखित आठ रचनाएँ मिली है, परतु उनमे न तो रचनाकाल, लिपिकाल ही दिए है और न इनका ही कोई परिचय । फिर भी उनके द्वारा ये एक प्रौढ विचारक और पहुँचे हुए सत (निर्गुणमार्गी) विदित होते है । हिंदू मुसलमानो के छद के विषय में इन्होने भी संतोचित विचार प्रकट किए है । रचनाएँ इस प्रकार है—

१. **इश्क गर्क ग्रंथ**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश । इसमे फारसी शब्दो का बाहुल्य है ।
२. **कड़खे**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय—निर्गुण भक्ति का वर्णन।
३. **पद**—रचनाकाल, लिपिकाल अविदित । विषय—निर्गुणभक्ति ।
४. **पदावली**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।
५. **वाणी या शब्दी**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात । विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।
६. **शब्द**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय—चेतावनी और उपदेश ।
७. **सोरठे**—रचनाकाल और लिपिकाल अविदित । विषय—ब्रह्मज्ञान ।
८. **होली**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय—ज्ञानोपदेश ।

प्रथम रचना से विदित होता है कि ये फारसी के भी ज्ञाता थे । डा० बडथ्वाल कृत 'हिंदी काव्य मे निर्गुण सप्रदाय' नामक पुस्तक मे इनका उल्लेख है जिसके अनुसार ये नगीना धामपुर (बिजनौर) जिला के रहने वाले थे । इन्होने अपने नाम से पानपदासी पथ चलाया था । इनकी और कबीर की रचनाएँ पंथवालो मे बडी श्रद्धा से पढी जाती हैं । सभवत विक्रम की १८वी शताब्दी मे वर्तमान थे ।

हिंदू मुसलमानो के सबध का इनका एक पद 'पदावली' मे इस प्रकार है—

राग कल्याण

भूला लोग भरम नहीं जानैं मरम न जानैं हो ।
भेद अभेद नाम उजियारा गुन बिना ना पहचानैं ॥टेक॥
हिंदु दौउ देहरा धावैं मुसलमान मसीता ।
दो कै मधैं धणी न सूझै आगैं बड़ी भरम की भीता ॥
जाकै भेटे परमपद पावैं कुछ कर मिलनैं की चिंता ॥ २ ॥
काया महजद में मन मुल्ला नमाज वजीफै बीध्या ।
द्वांवर तषत साह आलम का होवै जमकी तलब रसीदा ॥ ३ ॥
देह देहरा आलम देवा ग्रहनी ग्रह कर पूजा ।
तिन देव मिल जोती झलकै देव न दीसै दूजा ॥ ४ ॥
'पानप' कहै सुनो भाइ साधो षोज करो क्यों न कोई ।
तन मन षोजे ब्रह्म परगासैं परगट परचा होई ॥ ५ ॥ २४ ॥

पुरंदर कवि—इन कवि महोदय का नाम तो सुनने में आता था, पर अब तक इनका कोई ग्रंथ देखने मे नही आया था। इस बार 'रघुराज विनोद' नाम से इनके एक मुद्रित ग्रंथ से विवरण लिए गए हैं। इसमे इन्होंने रीवाँ के सुप्रसिद्ध महाराज रघुराज सिंह और जयपुर तथा जोधपुर के राजाओं के यशवर्णन के अतिरिक्त चित्र, पहेली और देवविषयक रचनाएँ की हैं। ग्रंथ द्वारा इनके सबध मे यह विदित होता है कि ये रीवाँ के राजा विश्वनाथ सिंह के कार्य से जयपुर में रहते थे। सवत् १९१० मे ये राजा रघुनाथ सिंह के विवाह मे रीवाँ आए जहाँ इनका संमान पहले से भी अधिक गुरु के रूप में हुआ। राजा रघुराज सिंह ने इनको मित्र तुल्य अपने पास रखा और पुरस्कार मे रहट नाम का ग्राम दिया तथा जयपुर एव जोधपुर के राजाओं द्वारा इनका संमान करवाया। राजा रघुराज सिंह का मृत्युकाल इन्होंने सवत् १९३७ दिया है जो ठीक है। प्रस्तुत ग्रंथ इन्होंने राजा रघुराज सिंह के ही विनोदार्थ रचा था और उसको सवत् १९१९ मे प्रारंभ कर संवत् १९४१ मे समाप्त किया था।

बांधवपति रघुराजदिय 'रहट' नाम बड़ ग्राम।
घड़ीमाल सो लसत है रैयत सुखी तमाम॥

:o: :o: :o:

विक्रम के उनविंश तीन मे बघेलभूप विश्वनाथ काज लागि आये जयपुर को।
सालदसकेमें राम सादी कियो रीमाजाय आप फिर मान्यो हमे जैसे निजगुरु को।
जोधपुर उदयपुर आदि सब नृपत ते मान को कराय राख्यो मित्र करि उर को।
ग्राम धन धाम विसराम त्यों अराम है कै सैतीस के साल आप राज लियो सुर को॥

:o: :o: :o:

चित्र किये रघुराजहित सिखन अनेक प्रकार।
हनुमत हरि अष्टक कियो निज हित पर उपकार॥ ८॥
शुरु भयो वनइस में बांधोपति हित मोद।
पूरन जयपुर मे भयौ यह 'रघुराज विनोद'॥ ९॥

:o: :o: :o:

पूरण भूमि में भयौ चैत्र चंद्र शुभवार।
धनइस स इकतालीसे विक्रमसाल विचार॥१२॥
सबही रस के कवित्त हैं चित्र आदि लिखि दीन॥
रामनरेश विनोदहित अंत पहेली कीन्ह॥१३॥

:o: :o: :o:

बांधव जयपुर जोधपुर भूपन के यश छंद।
चित्र देवरात और बहु किये पहेली बंद॥

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १९५६ (१८९९ ई०) मे नवलकिशोर प्रेस में छपी थी।

प्रियादास—इन्होंने मनु और याज्ञवल्क्य स्मृतियों के आधार पर 'व्यवहारपाद' नामक एक बृहद् एव महत्वपूर्ण ग्रथ की रचना की जिसमे व्यवहार धर्म का योग्यता पूर्वक विवेचन किया गया है। इसका एक विशेषता यह है कि यह गद्य मे लिखा हुआ है जो इस प्रकार के ग्रथों के लिये आवश्यक समझा जाता है। रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १९०४ है। परंतु ऐसा विदित होता है कि यही लिपिकाल रचनाकाल भी है। इसके साथ पुष्पिका मे अन्य किसी लेखक का नाम नही दिया है—

"इति मिति पुस बदि १३ भौमे का सः १९०४ के साल"

प्रतिलिपिकार अपने नकल किए हुए ग्रथो मे अपना नाम अवश्य लिखते हैं। प्रस्तुत ग्रंथ मे ऐसा न करने का यही अर्थ हो सकता है कि यह मूल प्रति है।

बख्तावर सिंह की स्त्री (? सुखदानि, अयोध्या नरेश की रानी)—ये अयोध्यानरेश महाराजा बख्तावर सिंह की रानी थी। इन्होंने सवत् १८८८ मे बद्रीनाथ की यात्रा की थी जिस में इन्हें तीन मास और एक दिन लगा था तथा जिसका इन्होने 'बद्रीयात्रा कथा' नामक एक पुस्तक में पद्यबद्ध वर्णन किया है। यात्रा विवरण की दृष्टि से पुस्तक महत्वपूर्ण है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है जिससे लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

ग्रंथारंभ मे रचयिता का नाम 'निज' लिखा है, यथा—

'बदरी जात्रा कथा 'निजेकृत' लिख्यते।'

परतु यह 'निज' शब्द रचयित्री ने स्वय अपने लिये प्रयुक्त किया है; क्योकि वह स्वयं महाराज (अपने पति) को पदवदना करती है जो एक भारतीय स्त्री का कर्तव्य है—

महाराज पद बंदौ जासु धर्म औतार।
धर्म्ममूर्ति दाता परम जसु गावत संसार॥ २॥
तासु रानि सुखदानि जगजात्रा कीन्ह उदार।
हरद्वार की मग कथा बरनौ हित संसार॥ ५॥

दूसरा कोई रचयिता अपने आश्रयदाता के पदो की इस प्रकार वंदना नही कर सकता। उपर्युक्त दूसरे दोहे के पूर्व पद मे आया 'सुखदानि' शब्द रानी का नाम विदित होता है।

भगवान दास—ये जाति के क्षत्रिय और आपा पथी साधु थे। गुरु का नाम गूगदास था जिनकी कुटी (कुटी गूगदास, पचपेडवा, जिला गोंडा) के ये महत थे। उक्त कुटी के वर्तमान महंत श्री अज्ञाराम दास जी ने इनकी और अपनी गुरु परपरा इस प्रकार दी है—

मुन्नादास
|
ऊधोदास
|
गूगदास
|
फ़कीरदास
|
भगवानदास (रचयिता)
|
परशुराम दास
शत्रुहन दास
|
लक्ष्मणदास
|
तिलंगादास
|
सगमदास
|
रामफलदास
|
अज्ञाराम दास (वर्तमान महंत)

आपा पथियो का प्रधान स्थान उक्त महंत के कथनानुसार मंडवा, जिला खीरी है। अन्य वृत्त नही मिलता।

रचयिता की, प्रस्तुत खोज में, पाँच रचनाएँ मिली हैं जिनका विवरण, विषय, रचनाकाल और लिपिकाल के क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. **गुरुगोष्ठी (पवन गुंजार)**—रचनाकाल—अज्ञात, लिपिकाल—संवत् १८६४ वि०, विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. **गुरुमहिमा**—रचनाकाल—अज्ञात, लिपिकाल—सवत् १८७६। विषय—गुरु का माहात्म्य वर्णन।

३. **नामनिधि**—रचनाकाल—अप्राप्त। लिपिकाल—सवत् १८७६। विषय—नाम माहात्म्य। यह पूर्व ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे है।

४. **भँवर गुंजार**—रचनाकाल—अविदित। लिपिकाल—संवत् १८६४। विषय—भक्ति-ज्ञानोपदेश।

५. **शब्दगुंजार**—रचनाकाल—अज्ञात। लिपिकाल—सवत् १८८४। विषय—भक्ति-ज्ञानोपदेश।

ग्रथों के लिपिकालो को देखने से पता चलता है कि रचयिता सवत् १८७६ के पहले वर्तमान थे।

आपापथियो को भी निर्गुणमार्गी सतों की तरह ही समझना चाहिए। इनकी भाव, भाषा, शैली और सिद्धात उन्ही से मेल खाते हैं।

मदन साहब—इनकी दो रचनाएँ 'नामप्रकाश' और 'साखीशब्द' मिली है जिनके विवरण लिये गए है। इनके अनुसार ये कबीर परपरा के कोई सत थे। गुरु का नाम राधापति था। अन्य वृत्त अज्ञात है। परतु प्रथम ग्रथ 'नामप्रकाश' के स्वामी (श्री जगन्नाथदास जी, मठाधीश, मठ बनेकगाँव, डाकघर–कादोपुर, जिला–सुलतानपुर) के कथनानुसार ये वही मदन साहब हैं जिन्होने मदन पथ की स्थापना की। यह पथ के ही अतर्गत है और इसकी कुछ गद्दियाँ करिया बजना (?) कुडवार (सुलतानपुर) और अमरगढ (प्रतापगढ) आदि स्थानो मे है।

प्रस्तुत त्रिवर्षी मे मोहन लाल (देखिए विवरणिका स० ३११) नामक एक व्यक्ति की लिखी हुई 'गुरु प्रनाली' के विवरण लिए गए है जिसमे प्रस्तुत सत की गद्दी के महतो का उल्लेख और इनके सबध मे कुछ विवरण दिया गया है जो इस प्रकार है—

मदन साहब (खरौना गद्दी जिला, जौनपुर)
दुलमपति (बढ़ैया गाँव, जौनपुर)
विवेकपति साहब
दीवान जवाहिरपति साहब

मदन साहब के विषय मे लिखा है कि वे उच्चकुल के रईस थे और जौनपुर जिला के अतर्गत खरौना ग्राम के निवासी थे। एक दिन कबीर साहब ने प्रकट होकर उन्हे 'सारशब्द' का प्रचार करने का उपदेश दिया। इसपर उन्होने सासारिक सुखोपभोग का त्यागकर दिया और उसी ग्राम मे एक कुटी बनाकर विरक्त भेष मे रहने लगे। 'सारशब्द' कबीर का मूल उपदेश था जिसको निरजनी लोगो ने छिपाकर निरजनी ज्ञान का प्रचार किया।

प्रस्तुत रचनाओ मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल और विषय के क्रम से इनका विवरण इस प्रकार है—

१. **नामप्रकाश**—इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल केवल एक मे सवत् १९१५ है। विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. **साखी शब्द**—रचनाकाल, लिपिकाल—अज्ञात। विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

'नामप्रकाश' मे गुरु और कबीर का उल्लेख इस प्रकार है—

राधापति गुरु धर्म है धनि हमारों भागि।
जेहि टुक नगर निहारिते भवा नाम अनुराग॥

:o: :o: :o:

सारभेद सोइ परचै दीन्हा। गुर कबीर जो निरमय कीन्हा॥

मोहन साईं—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनके सात ग्रथों—१. **अरसअइनिबानी २—अरस हरिल ककहरा ३—अरिस अरिलवानी ४—अरस नाम ककहरा. ५—अरसपियापाली ६. अरस भक्तिबोध और ७—मेल्हा** के विवरण लिए गए है, पर इनमे से किसी मे भी न तो रचनाकाल ही और न इनका वृत्त ही दिया है। 'अरस भक्तिबोध' के स्वामी (मु० देवनारायण श्रीवास्तव, टंडेई रामपुर; जिला–रायबरेली, अवध) से पता चला कि ये साईं मत के प्रवर्तक और पहुँचे हुए महात्मा थे। निवास स्थान जिला सुलतानपुर था। इस मत के साधु शरीर मे केवल लंगोटी और चद्दर या गूदरी धारण करते है तथा ठीकरे मे भी भोजन कर लेते है। ये लोग सदा जंगलों मे निवास करते है और न तो वैभव जोडते हैं और न भोजन ही बनाते हैं। शिष्य लोग जो कुछ बना बनाया भोजन भेज देते है वही खाते हैं।

साईं मुसलमान फकीरो को भी कहते है, परतु प्रस्तुत महात्मा ने इस नाम (साँई) से जिस पंथ का प्रवर्तन किया वह सत मत (निर्गुन) की तरह है। इसमे भी सुरति, निरति, सतगुरु, परमज्योति शब्द परिचय और निर्गुन आदि शब्दों के प्रयोग सतमत मे गृहीत अर्थों के अनुसार ही हुए हैं। इस मत मे अरस, आशिक और शाह (साह) शब्दो का अधिक प्रचार पाया जाता है। प्रत्येक रचना के आरभ मे 'अरस' और कही कही 'आशिक' शब्दो का प्रयोग होता है, इसी प्रकार प्रत्येक नाम के साथ 'शाह' शब्द लगा मिलता है।

नीचे रचयिता के ग्रथो का रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से उल्लेख किया जाता है—

१. अरस अइनिवानी—रचनाकाल, लिपिकाल—अज्ञात। विषय—निर्गुणतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. अरस अरिल ककहरा—रचनाकाल, लिपिकाल—अज्ञात। विषय—ज्ञान, वैराग्य और भक्ति।

३. अरस अरिलवानी—रचनाकाल, लिपिकाल—अविदित। विषय—ज्ञान वैराग्य, भक्ति।

४. अरसनाम ककहरा—रचनाकाल और लिपिकाल—अप्राप्त। विषय—ज्ञानोपदेश।

५. अरस पियापाती—रचनाकाल—अज्ञात। लिपिकाल—सवत् १९९३। विषय—ज्ञानोपदेश।

६. अरसभक्ति बोध—रचनाकाल—अज्ञात। विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश। इसकी दो प्रतियो के विवरण लिये गए है जिनमे से एक मे लिपिकाल सवत् १९९३ दिया है।

७. सेल्हा—रचनाकाल—अप्राप्त। लिपिकाल—सवत् १९९३ वि०। विषय—पूर्ववत्।

मोहन साँई के अनुयायी 'अहमकसाह' और 'महा आनदसाह' की भी रचनाएँ मिली हैं जिनके लिये देखिए विवरणिका सख्या ९, २९०।

रामेश्वर भट्ट—इन्होंने योग विषय पर एक ग्रथ की रचना की जिसका नाम स्पष्ट रूप से नही दिया है। केवल योग ० सा०' ऐसा लिखा है। इसमे योग विषय का प्रतिपादन किया गया है, अत इसी आधार पर इसका नाम 'योगशास्त्र' मान लिया गया है जो ठीक ही विदित होता है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, अतः रचनाकाल और लिपिकाल विदित न हो सके। रचयिता के विषय मे ग्रथारम्भ मे दिए गए विवरण से केवल इतना ही पता चलता है कि इन्होने पाचाल देश मे सुलतान गयासुद्दीन को यह ग्रथ सुनाया था। अन्य वृत्त उपलब्ध नही। दिल्ली मे गयासुद्दीन नाम से दो बादशाह हुए है। एक गयासुद्दीन बलबन जो सवत् १३२३–४४ तक था और दूसरा गयासुद्दीन तुगलक जो सवत् १३७७–८२ तक था। पता नही कि रचयिता ने इन दो मे से किसको योगशास्त्र सुनाया। अधिक सभावना दूसरे गयासुद्दीन की होती है, क्योकि उसकी माता एक हिन्दू जाट माता थी और पिता बलवन नाम का एक तुर्क। अतः माता के प्रभाव से उसका झुकाव हिंदू शास्त्रो की ओर रहा होगा, ऐसा जान पड़ता है। जो कुछ हो, प्रस्तुत रचना से इतना तो विदित होता ही है कि बहुत से मुसलमानी बादशाह हिंदू शास्त्रो के प्रति भी गहरी श्रद्धा रखते थे।

प्रस्तुत रचना (खडी बोली गद्य में लिखी गई है और यह गद्य इतना पुराना नहीं है कि उसको हम विक्रम की चौदहवी शती का मान लें। ऐसा विदित है कि किसी ने पीछे से मूल रचना का हिंदी मे रूपातर किया है।

निम्नोक्त उद्धरण मे रचयिता और सुलतान गयासुद्दीन का उल्लेख है—

"विवेक मारतंड की वाम पांचाल ग्रस्थान में सुलतान गयासुद्दी(न) प्रतें या भांति रामेश्वरभट्ट ने योग शास्त्रे निरूपन किये ग्रनेक संसा के सुख भोगवतें दुनिया का बिनोद देखि कें यथेछ सरीर रख्याजाइ ग्यान उपजें सो ऐसा राजयोग है॥

सागर कवि—इन्होने संस्कृत साहित्य शास्त्र के ग्राचार्य मम्मट के सुप्रसिद्ध ग्रंथ काव्य-प्रकाश के ग्राधार पर 'कविता कल्पतरु' नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १७८८ ग्रौर लिपिकाल सवत् १७८९ दिए हैं। ग्रतः ग्रसंभव नहीं कि यह मूल प्रति ही हो। रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है—

संवत् सतरह सत सुनौ बरस ग्रठासी गान।
नवमी ग्राठि ग्रषाढ़ पष रचना ग्रंथ प्रमान॥

रचयिता का केवल इतना ही परिचय मिलता है कि ये मालवा नरेश जोरावरसिंह के ग्राश्रय मे रहते थे। उक्त नरेश ने रामगढ किला के निकट भानपुर गाँव मे कवियो की एक सभा बुलाई थी जिसमे चद के पुत्र बाघोर भाट ग्रौर ग्रामेरगढ (?जयपुर)के वासी कवि नान्हूराम उपस्थित थे। इसी सभा मे इन लोगो ने इस कवि को प्रस्तुत ग्रथ रखने को कहा जिसका इन्होंने सहर्ष पालन किया। इसमे इन्होने ग्रपने ग्राश्रयदाता के वश का विस्तृत वर्णन किया है जो इस प्रकार है—

छंद पद्धरी

१ २
नृपईस धर्म ग्वालेर कीन। तिन पुत्र सोठ भय ग्रति प्रवीन॥
३
सुत दुलहराज जमनाइ भाइ। विय बउ गूजरमी नाउ ढार॥
४
कुलता सकल सकाकिल नरेस। सुत हनुराय हनमंत भेस॥
५
जगजान उदै तिनके सपूत। जिन मार लई धरनी ग्रभूत॥
जिन कंय जौन सामंत भेस। जीते कमद्ध कनवज्ज देस॥
६
ता पुत्र मलेसी वड ववेक। गिरनार ग्रादि नीते ग्रनेक॥
७
बीजल नरेस तिनकें गरूर। नृप राजदेव तिन संस सूर॥
कहि कील्हणदे भय तास नंद। सुत कूं तिल लीनैं ग्रति ग्रनंत॥
सुति जौनसिंह ता पुत्र मानि। वर उदैकरण ता पुत्र जानि॥
तिनकें नरेस नरसिंह गाव। भुजबंधु दुतिय स्यौ बंभराव॥
स्यौ बंभ प्रगटि स्यौ बंभ रूप। तिन जुद्ध जोरि जीते ग्रनूप॥
जिन बंस भोज घगदान संग। रणमल्ल तासकें रन ग्रभंग॥
रणमल्ल कूं नाथू भयो दुतिय पचाइण बीर।
१६
ग्रासल जी सुत तीसरौ जुटैं जंग तव धीर॥
पुत्र पचाइण को भयो बिनमनि बेईदास।
१८
सुत गुपाल तिनके भयौ जिमि गुपाल बृजबास॥१६॥

:o: :o: :o:

सुत गोपाल के ह्वै भयौ इक गनि भोपतिराव ।
कह्यौ खेतसी दूसरौ रिणसो तिनको चाव ॥
२१
भीमरूप भोपति तनय रावत राघोदास ।
२२
फते सिंह डूंगर प्रवल अरिकुल करनै त्रास ॥१६॥
:o: :o: :o:
२३
फतै सिंह के केसरी सिंघ सिंह के भाइ ।
चतुरसिंह ह्यलकरि प्रवल पुनि सुजान सिंह भाई ॥
:o: :o: :o:
फतेह सिंह के राव देवसिंघें देव प्रगट्टिव ।
नीदर पति बलभीम षग्ग बल बुजु घट्टिव ॥
:o: :o: :o:
देवसिंघ कें कवर त्रिव बषत सिंह जुझार ।
जोरावर सिंह गोखर अरि मारै गहिसार ॥२५॥
किलारामगढ़ निकट इक गाँव भानपुर चार ।
तहाँ कविन की करि सभा कीनो काषि विचार ॥
तहाँ आघोराभाट इक चंद नंद सुषधाम ।
वासीगढ़ आवेर को निज कवि नान्हूराम ॥
तिन कवि सों कीनो हुकुम सब सुषेद सुष पाइ ।
रस कविता भूषन वलित बरनौ ग्रन्थ (?ग्रंथ) बनाइ ॥
हुकुम सकति सम पाइकैं मंमटमत को पाइ ।
वरनौ 'कविताकलपतरु' ग्रंथनाम ठहराय ॥
:o: :o: :o:
जोरावर सिंह जोरवर लषि जयसिंह नरेस ।
राज्यभार सौंप्यौ सरस थप्यौ मालवादेस ॥

रचयिता ने अत मे ग्रथ की बडी प्रशंसा की है । उसके आश्रयदाता राजा जोरावर सिंह ने रीझकर इसकी एक प्रति नान्हूराम कवि को भी दी—

'बड़े कवि रीझि कैं कहैंगे कविराज तोहि जबै कवि कविता कलपतरु पढ़ैगो' ।
:o: :o: :o:
'नानूराम कवि को किताब कविसागर कौ जोरावरसिंह धीर रीझि करि दीन्हो है' ।

'वशावली' के अन्तिम दोहे मे पता चलता है कि राजा जोरावर सिंह को मालवा की गद्दी पर बैठाने में जयपुर नरेश जयसिंह द्वितीय (?) का विशेष हाथ था ।

सावार—'रसरत्न' नाम से इनकी एक उत्तम रचना मिली है जिसमे रस और अलंकारो का दोहो में वर्णन किया गया है । राजा जसवत सिंह के 'भाषाभूषण' की तरह इसमे भी लक्षण और उदाहरण एक ही दोहे मे दिए हैं । प्रमाणो के लिये इसमे सस्कृत के आचार्यों—कुवलयानद, मम्मट, श्रीहर्ष और कालिदास प्रभृति के ग्रथो से भी उद्धरण दिए गए हैं । खेद है इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही है । रचयिता के वृत्त के विषय मे प्रत्येक अध्याय की समाप्ति की विज्ञप्ति (पुष्पिका) से इतना ही पता चलता है कि इनके पिता का नाम तारानाथ था—

इति श्री तारानाथात्मज सावारविरचिते 'रसराथे' स्वकीयाभिधानं प्रथमोमयूखः ॥

ज्ञात रचयिता मे, जिनके नवीन ग्रथ मिले हैं अथवा जिनके संबंध मे नवीन बातें प्रकट हुई है, आनद या अनद, गिरिधारी, जगन्नाथ या जन जगन्नाथ, जिनदास पाडेय, गो० तुलसीदास,

दाराशिकोह, दौलतराम, नंद और मुकुंद, नददास, नीलकंठ, बालेदास, बुलाकीदास, भावन (भवानीदत्त), भूधरदास, मदनगोपाल, रामप्रसाद, 'निरंजनी', शंभुनाथ त्रिपाठी, शिवराज महापात्र, सबलसिंह चौहान और सबलस्याम प्रमुख हैं।

आनंद या अनंद कवि—यह अपनी कोकशास्त्र विषयक रचनाओं के लिये प्रसिद्ध हैं। इस विषय पर रची हुई भिन्न भिन्न नामो से उनकी कई रचनाएँ पिछली खोज रिपोर्टों में उल्लिखित हैं, देखिए विवरणिकाएँ (२–५, ६–१२६ ए, १७–७; २०–६ ए, बी०; २३–१३ बी से जे तक), २६–१० ए, बी० से के तक, २६–११; दि० ३१–७; प० २२–५ ए, बी०) तथा (४४–१६)। परतु अबतक इनका वृत्त अज्ञात ही था। इस प्रकार इनकी उक्त विषय पर लिखी हुई पाँच रचनाओ के विवरण लिये गए हैं। जिनमे से एक मे, जिसका नाम 'कोकसार भाषा' है, इनका थोड़ा सा वृत्त उपलब्ध हुआ है। अत इस दृष्टि से ग्रथ की यह प्रति महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार ये कोट हिसार (? पजाब) के रहने वाले थे और जाति के कायस्थ थे। संवत् १६६० वि० मे इन्होने प्रस्तुत रचना की जो १५ खंडो मे है—

> **कायथकुल 'आनंदकवि' वासी कोट हिसार।**
> **कोक कला इह रुचि करन जिन वहु कियो विचार॥ ६॥**
> **ऋतु वसंत सै सोरह अरु ऊपर हुए साठि।**
> **कोक सार कौ तब कियौ कर्म कर्म को पाठ॥**
> **खंड पाँच दस अति सरस रच्यो जो बहुविधि छंद।**
> **पढ़त बढ़त अति चोप बाढ़त अधिक अनंग॥ ८॥**
> **चतुर सुकवि पंडित सरस जो जानत छविछंद।**
> **अक्षर टुट संवारेहु विनती करत 'अनंद' ॥६॥**

इस उद्धरण की प्रथम पक्ति और अतिम पक्ति मे रचयिता के दोनो नाम 'आनद' और 'अनद' स्पष्ट रूप से दिए हुए हैं। राजस्थान मे 'हिंदी के हस्तलिखित ग्रथों की खोज', द्वितीय भाग के पृष्ठ १४ मे उल्लिखित 'वचनविनोद' नामक पिंगल ग्रथ के रचयिता आनंदराम या आनदराम कायस्थ भी यही जान पड़ते है। उक्त ग्रथ की पुष्पिका इस प्रकार है—

"इति आनंदराय कायस्थ भटनागर हिसारिकृत वचनविनोद समाप्त।"

उक्त राजस्थान के खोज विवरण मे पृष्ठ १४१ पर रचयिता के सबध मे इस प्रकार लिखा है—

आप सुप्रसिद्ध कवि काशीवासी तुलसीदास जी के शिष्य थे। आप के रचित 'वचन विनोद' की प्रति सवत् १६७६ की लिखित होने से उसका निर्माण इसमे पहले का ही निश्चित होता है। प्रति लेखक ने आपका विशेषण 'हिसारि' लिखा है अतः इनका मूल निवासस्थान हिसार ज्ञात होता है। मिश्रबधु विनोद पृष्ठ ३४७ मे कोकसार या कोकमजरी के कर्त्ता को 'आनद कायस्थ कोट हिसार के लिखा है। इस ग्रथ की प्रति अनूप सस्कृत लाइब्रेरी मे स० १६८२ लिखित उपलब्ध है। समय, निवासस्थान और नाम पर विचार करते हुए कोकसार रचयिता आनद 'वचन विनोद' के आनदराम कायस्थ ही प्रतीत होते है।

जैसा कि उपर्युक्त विवरण से विदित होता है रचयिता काशी वासी तुलसीदास जी के शिष्य थे। ये तुलसीदास मानस के रचयिता गो० तुलसीदास के अतिरिक्त और कोई नही। उक्त ग्रथ वचन विनोद से यह स्पष्ट ज्ञात होता है—

> **'नमो कमलदत्त जमलपग, श्री तुलसी गुरु नाम।**
> **प्रगट जान जानत सकल, जहाँ तुलसी तहाँ राम॥ २॥**
> **कासी वासी जगत गुरु, अविनासी रसलीन।**
> **हरिदरसन दरसत सदा, जल समीप ज्यों मीन॥ ३॥'**

इस सबध मे एक बात चिंतनीय है। वह यह कि गो० तुलसीदास जी का शिष्य काम-विषयक रचना की ओर किस प्रकार प्रवृत्त हुआ पर सभव है उन्होने शिष्यता प्राप्त करने के पहले ही यह रचना की हो।

नीचे खोज में मिली प्रस्तुत ग्रथ और प्रतियों के नाम रचनाकाल और लिपिकाल के क्रम से इस प्रकार है—

१. **कोकसार भाषा**—रचनाकाल—सवत् १६६० वि०, लिपिकाल—संवत् १८६८ वि० ।

२. **कोकशास्त्र**—रचनाकाल—सवत् १६६० वि०, लिपिकाल—अज्ञात ।

३. **कोकसार या कोकसार दर्पण**—रचनाकाल—अज्ञात, लिपिकाल—संवत् १६६७ । इस प्रति मे विषय का प्रारभ रणथभौर के राजा भैरवसेन और उसके मत्री कोकदेव के प्रकरण से हुआ है । इसमे पहले तारक राक्षस और महादेव पार्वती के विवाह का वर्णन कर कामशास्त्र का बीजरूप मे उल्लेख किया गया है । पश्चात् कामदेव की उत्पत्ति और उसके स्वरूप का वर्णन है । अत मे प्रत्येक देश की स्त्रियो की रति रुचि का उल्लेख है ।

४. **कोकसार**—रचनाकाल—अज्ञात, लिपिकाल—सवत् १८३१ । इसमे इस विषय का प्रथम रचयिता वात्सायन मुनि का उल्लेख कर काम प्रदीप, पचबान, रतिरहस्य, मदन विनोद, आनदरग (? अनगरग), रतिरजन और रति तरग नामक कामशास्त्र विषयक रचनाओ का उल्लेख हुआ है ।

५. **मदनकोक**—रचनाकाल लिपिकाल—अज्ञात । प्रस्तुत रचना 'नंद' और 'मुकुद' के नाम से भी मिलती है । इस सबध मे देखिए आगे 'नद' और 'मुकुद' का विवरण ।

गिरिधारी—इनकी 'भक्ति माहात्म्य' नामक रचना की तीन प्रतियो के विवरण इस बार भी लिए गए है जिनमे अनेक भक्तो का माहात्म्य वर्णन किया गया है । रचनाकाल केवल दो प्रतियो मे दिया है जो सवत १६०५ है । लिपिकाल इनका क्रमश १८५५ वि० और १६३४ वि० है । तीसरी प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल दोनो नही दिए है। पिछली खोज विवरणिकाओ मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है. देखिए विवरणिकाएँ (६–६४; २३–१०५; ४१, ४८६) । उक्त रिपोर्टों मे रचनाकाल सवत् १७०५ लिखा है अत. यह विवादग्रस्त है ।

प्रस्तुत प्रतियो मे रचयिता का वृत्त मिलता है जिसके अनुसार उसके पिता का नाम गगाराम था । जन्मभूमि गगा के तट पर बताई है जिसका नामोल्लेख किया तो है पर ठीक ठीक स्पष्ट नही होता । अनुमान से कडा (? कडा मानिकपुर) विदित होता है जहाँ सत मलूकदास उस समय रहते थे । तीनो प्रतियो के पाठ इस सबध मे इस प्रकार है—

प्रथम प्रति में

जन्मभूमि कर करउ बषाना । सुरसरितट उत्तम स्थाना ॥
'कर' (? कडा) अस्थान मालहिकर आही । दास मलूक संत तेहि मांही ॥

दूसरी प्रति में

जन्म भूमिकर करउ बषाना । सुरसरितट उत्तम स्थाना ॥
'कड' असनाम ताहि कर आही । दास मलूक संत तेहि माही ॥

तीसरी प्रति में

जन्मभूम्य का करौ बषाना । सुरसरितट उत्तम अस्थाना ॥
कृष्ण को नाम मंत्र पढि भाई । दासमलूक संत तेहि गाई ॥

इनसे पता चलता है कि दूसरी प्रति मे, जो संवत् १६३४ की लिखी है, जन्मभूमि का नाम बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है । मलूकदास जी का उल्लेख हो जाने से उसमें आए 'कड' शब्द का बोध 'कडामानिकपुर' के अर्थ मे निश्चित रूप से होता है, क्योंकि यही मलूकदास जी निवास करते थे। इसी आधार पर प्रस्तुत रचना का रचनाकाल भी निश्चित हो जाता है । मलूकदास जी का जन्म समय सवत् १६३१ माना जाता है और मृत्युकाल सवत् १७३६ । अत: इन्ही के बीच सवत् १७०५ मे जैसा कि पिछली खोज विवरणिकाओ मे दिया है यह रचना हुई होगी नकि सवत् १६०५ म जो प्रस्तुत प्रतियो मे दिया है । इन सब तथ्यो के आधार पर

रचयिता का पूरा वृत्त इस प्रकार है—'संवत् १७०५ मे वर्तमान, पिता का नाम गंगाराम, निवास-स्थान कड़ा (कड़ामानिकपुर) जहाँ उस समय संत मलूकदास जी रहते थे।'

इस दृष्टि से प्रस्तुत प्रतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

जगन्नाथ या जन जगन्नाथ—इनकी रची 'गुरुमहिमा' या 'गुरुचरित्र' की दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। इसमे गुरु का माहात्म्य वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १७६० है। लिपिकाल केवल एक प्रति मे सवत् १९४४ दिया है। पिछली खोज विवरणिकाओ (२९–१६४ बी, ९–१२६, २३–१७६ ए, बी, सी, २६–१८९ जी; दि० ३१–३८ ए, बी, ६–२९६) मे इसका उल्लेख हो चुका है।

रचयिता के संबध मे प्रस्तुत रचना की पुष्पिका द्वारा पता चलता है कि ये किसी स्वामी तुलसीदास के शिष्य थे। परतु ये तुलसीदास रामचरितमानस के कर्त्ता गो० तुलसीदास से भिन्न जान पडते है। ग्रथ की इस बार मिली सवत् १९४४ की प्रति मे पुष्पिका के आगे एक गुरु परपरा दी हुई है जो सृष्टि के आरभ से प्रारभ होती है। उसमे सा० राघवानद और स्वा० रामानद जी का उल्लेख गुरु शिष्य के रूप मे हुआ है। स्वा० रामानद के शिष्य अनतानद जी थे। उनके कृष्णदास पयहारी और उनके श्री कील्हजी तथा श्री कीलजी के श्री जगीजी शिष्य थे। इन्ही जगीजी के शिष्य स्वा० तुलसीदास जी थे जो प्रस्तुत रचयिता के गुरु रहे, ऐसा विदित होता है। अत रचयिता को गुरु परपरा का अब ठीक ठीक निश्चय हुआ समझना चाहिए। पहले यह अनिश्चित था यद्यपि प्रस्तुत रचना कई बार मिल चुकी है। अन्य वृत्त नही दिया है। पिछली विवरणिकाओ मे इन्हे भाट कहा गया है।

जिनदास पांडेय 'जैन'—ये पिछली खोज विवरणिका (१७–८९) पर उल्लिखित 'योगीरासा' के रचयिता विदित होते है। इस बार इनका 'जबू स्वामी की कथा' नाम से एक नवीन ग्रथ मिला है जिसमे जबू स्वामी नामक एक जैन भक्त का चरित्र दिया हुआ है। इसकी रचना सवत् १६४२ मे हुई, अत रचना यथेष्ट पुरानी और महत्वपूर्ण है। लिपिकाल सवत् १७५१ दिया है। प्रस्तुत प्रति सुप्रसिद्ध जैन कवि विनोदीलाल ने अपने पढ़ने के लिये लिखी थी, जैसा कि पुष्पिका मे उल्लेख है—

> संवत् सत्रह सेस इक्यावन् फागुनद्वैज वुधौ वदि आई।
> अंतमकेवली केरी कथा रचिकै कहै जिनदास बनाई।
> सो यह लालविनोदी लिखी अपने हित बांटन को मनभाई।
> तद्यपिभव्यन मन को उपदेशन हेतु महासुखदाई॥ १॥

रचयिता के पिता का नाम ब्रह्मचारी सतीदास था और ये आगरे के रहने वाले भक्त थे। किसी टोडर शाह के पुत्र दीपासाहु के लिये प्रस्तुत ग्रथ रचा गया था जिन्होने मथुरा के प्राचीन जैन स्तूपो के जीर्णोद्धार कराए थे। रचयिता ने इनके वशज रिषभदास, मोहनदास, रूपचद और लक्ष्मणदास प्रभृति का भी उल्लेख किया है जो सभवत. प्रसिद्ध व्यक्ति थे। उस समय अकबर बादशाह का राज्य था—

> संवत सोरह से जे भये। बयालीस ता ऊपर गए॥
> भादौ नदि पंचमि गुरुवारु। दिन कथा किए उपचारु॥९०॥
> अकबर पातिसाहि के राज। कीनी कथा धर्म कै काज॥
> :o: :o: :o:
> करै धर्म सो दीपासाहु। टोडर पुत आगेरसनाहु॥
> ताकेनाम कथा यह कही। मथुरा में जिन निसरी कही॥
> रिजभदास अरु मोहनदासु। रूपचंद अरु लक्ष्मणदास॥
> ब्रह्मचर्य भए संतोदास। ताको सुत पांडे जिनदास॥
> सोतिन कथा करी मन लाइ। पुन्य हेतु उपचारु कराइ॥

गो० तुलसीदास—ये रामचरित्र मानस के रचयिता के रूप मे सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। इस बार इनकी तीन रचनाओ—१. जानकीमंगल, २. रामाज्ञा और ३. वैराग्य संदीपनी के

विवरण लिये गए हैं। ये तीनों रचनाएँ पहले कई बार मिल चुकी है, देखिए क्रमशः खोज विवरणिकाएँ (३–७६, ६–२४५ एफ, १७–१९६ सी, २०–१६८ ई, २३–४३२ एक्स; २६–४८४ ए, बी) (३–८७, ६–२४५ डी, ६–३२३ एच, २०–१६८ एच; २३–४३२; २६–४८४; पं० २२–११२; २६–३२५) और (००–३– ३–८१) ६–२४५, २०–१६८ एच; २६–४८४डी २)। इस बार जो महत्वपूर्ण बात देखन मे आई है वह केवल प्रथम रचना—जानकी मगल से ही सबधित है। वह पूर्ण है, पर उसमे पुष्पिका नही दी हुई है। लिपिकाल का भी कोई उल्लेख नही। उसके आरभ मे रचनाकाल सवत् १६३२ दिया हुआ है जिसके कारण वह महत्वपूर्ण जँची और उसका विवरण लिया गया। रचनाकाल का उल्लेख इस प्रकार है—

"संवत १६३२ कथा किय भवा"

परतु प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो मे रचनाकाल का उल्लेख अभी तक इस प्रकार देखने को नही मिला। यही बात है कि इसको रचनाकाल मानने मे सकोच होता है। फिर भी यह किसी न किसी आधार पर दिया गया होगा। अत. यह ध्यान मे रखते हुए इस पर सर्वथा अविश्वास भी नही किया जा सकता।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति के आरभ और अत के पत्रो मे एक ही ओर लिखा है। अत का पत्र तो भिन्न लेखनी से लिखा हुआ है। इसके प्रत्येक पत्र को मुडौल काट करके उसके चारो ओर आधुनिक सफेद कागद सुरक्षा के लिये चिपका दिया गया है। कागद, स्याही और अक्षरो को देखने से यह अधिक पुरानी नही जँचती।

दाराशिकोह—ये दिल्ली के प्रसिद्ध बादशाह शाहजहाँ के बडे पुत्र थे जिनको औरगजेब ने मरवाया था। ये सस्कृत और हिन्दी की ओर बडी रुचि रखते थे और इन भाषाओ के अनेक ग्रंथो का इन्होने फारसी मे अनुवाद करवाया था। 'दोहासार सग्रह' नाम से इन्होने सवत् १७१० मे हिंदी के दोहो का एक बडा सग्रह तैयार करवाया था जिसमे ६१ भावो पर रचे गए १७७२ दोहे हैं। भावो के नाम इस प्रकार है—

१ परमारथभाव, २ वैसधिभाव, ३ जोवनभाव, ४ रूगभाव, ५. अलकभाव, ६. तिलभाव, ७ नैनभाव, ८, सिगारभाव, ६ चेष्टाभाव, १० नैनलगनि, ११. नैनमिलन, १२ नैनमिलन, १३ नैनगजभाव, १४ मनगजभाव, १५ मनसिकार, १६ प्रेमलगनि, १७ संजोगभाव, १८ रतिसयोगभाव, १६ अनजभाव, २०. मानभावदुति, २१. दूतिवचन, २२ सषीवचन नाइकप्रति, २३ सषीवचन नायिका प्रति २४. रसतरकभाव २५ सषीनाइक प्रतिकार, २६. नायिका नायक प्रति, २७ बिछुरन भाव, २८. नायक विरह, २६ नैनविरहभाव, ३० नायक विरह, ३१ साधारन विरह, ३२ स्वप्नभाव, ३३ मिलनभाव, ३४. मनप्रकृति, ३५ विवकभाव, ३६ सजनभाव, ३७ दुर्जनभाव, ३८ कपटभाव, ३६. सचाव, ४०. सिछाभाव, ४१ कुचवर्णन, ४२ सिछाभाव, ४३ ज्ञानभाव, ४४ परस्तावभाव, ४५ अस्फुटभाव. ४६ ऋतुवर्णन, ४७ वायवर्णन, ४८ वसत वर्णन, ४६. हास्यवर्णन, ५० बालकवर्णन, ५१ चोरभाव, ५२ भँवरभाव, ५३ पतगभाव, ५४ चद्रउक्तिभाव, ५५, कर्मभाव, ५६. मनविस्वास, ५७ गूढ अर्थभाव, ५८, चौबोला, ५६ विरोधभाव, ६०. हरिलीला, ६१. वैराग्यभाव।

जिन कवियो की रचनाएँ इस सग्रह मे है उनके नाम इस प्रकार है—१ हुसैन, २ तुलसी, ३ दयाल, ४ मोहन, ५. सिवदास, ६ मल्ल, ७ अहमद, ८ बिहारी, ६ जमाल, १०. समन, ११ जगत, १२ केसव, १३ नवल, १४. हरिवस, १५. कल्यान, १६ सेउ १७. कासिम, १८. निहाल, १६ तुलाराम, २० बाजू, २१. कान्हर, २२, सेख, २३. नवलराम, २४. आलम, २५ बाबू, २६ सकर, २७ गुपाल, २८ हमीद, २६. जमला, ३०. नद, ३१ नाथ, ३२ जगन, ३३ ताहर, ३४ चद, ३५ एदिल, ३६. रजना, ३७. व्यासदास, ३८. रहीम, ३६ जादौ, ४०. अकबरसाहि, ४१ कविसाहि, ४२ कालू, ४३. पूरनदास।

इन कवियो मे बहुत से ऐसे है जिनका समय अभी तक अज्ञात है, पर प्रस्तुत सग्रह द्वारा इतना तो निश्चित हो ही गया है कि ये सवत् १७१० (जो सग्रहकाल है) से पहले के हैं।

संग्रहकार का नाम अंतिम दोहा मे जिसमें सग्रह का समय दिया है और पुष्पिका द्वारा क्रमशः 'दिनमनि' और 'श्रीमनि पडित' विदित होता है—

"अंतिम दोहा"

सत्रह सै दससाल में प्रफुलित फागुन माहि ।
दोहा सारु कढाइयौ "दिनमनि" दारासाहि ।।४४।।

"पुष्पिका"

"इति श्रीमनिपंडित दिल्ली विनेस श्रीदारासाहि करित दोहासार संग्रह संपूर्न समाप्तः ।।"

यदि दोहा मे आए 'दिनमनि' का सबध 'दारासाहि' से लगा भी लिया जाय, तो भी पुष्पिका मे उल्लिखित 'श्रीमनिपडित' का सबध किसी प्रकार भी उससे नही जुड़ता। अनुमान से 'दिनमनि' और 'श्रीमनि पडित' एक ही व्यक्ति विदित होते है। इस अनुमान का आधार यह है कि प्रस्तुत खोज मे एक 'पिगलपियूष' नामक रचना मिली है जिसके रचयिता मुरलीधर है। इन मुरलीधर के पिता का नाम, 'दिनमनि' था जो एक धुरधर ज्योतिषी थे और आगरे मे ही रहते थे। अत हो सकता है कि इन्ही 'दिनमनि' से दारासाहि ने प्रस्तुत सग्रह तैयार करवाया हो। ये दिनमनि परमानद शताक जी जो अकबर बादशाह के दरबारी थे, के वशज थे। इस वंश के लोगो मे से पुरुषोत्तम शाहजहाँ के और स्वय मुरलीधर (दिनमनि के पुत्र) मुहम्मदशाह के दरबार मे रहते थे। अत यह स्वाभाविक है कि दिनमनि भी दारासाहि के दरबार मे रहे होगे।

प्रस्तुत प्रति स्वर्गीय मयाशकर जी याज्ञिक के सग्रह की है। उन्होने इस प्रति के नष्ट हुए पत्रो (५५, ५६ सख्या के पत्रो) के अशो को दूसरी प्रति द्वारा पूरा कर दिया है, जो सग्रह के आरभ मे दिए हुए हैं और 'नायिका विरहभाव' के है। उक्त दूसरी प्रति का पता इस प्रकार है—

"श्री प्रभुलाल जी गुप्त; ठि० श्री बाबूलाल जी—मोहन लाल जी बजाज, कोतवाली, भरतपुर"

प्रस्तुत सग्रह का उल्लेख खोज रिपोर्ट (६–१५२) मे भी हुआ है, पर उसमे विवरण पत्र नही छपा है और न विषय और कवियो का ही उल्लेख है।

दौलतराम—इनके तीन वृहद् ग्रथो—१ आदि पुराण की बालबोध—भाषा वचनिका, २. पद्मपुराण जी की भाषा वचनिका और ३ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा बालबोध—के विवरण लिये गए हैं।

इनमे से प्रथम ग्रथ का उल्लेख पिछली खोज विवरणिका (२३–८५ ए) मे हो चुका है। शेष ग्रथ नए मिले है। ये सभी मूल सस्कृत ग्रथो के गद्यानुवाद है। नीचे रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से इनका उल्लेख किया जाता है—

१. आदि पुराण की बालबोध भाषा वचनिका—रचनाकाल—सवत् १८२४। लिपिकाल—सवत् १८६८ और १९००। विषय—आदिपुराण (जैनग्रथ) का हिंदी गद्यानुनुवाद। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं।

२. पद्मपुराण जी की भाषा वचनिका—रचनाकाल—सवत् १८२३ और लिपिकाल—सवत् १९१४ वि०। विषय—पद्मपुराण (जैन ग्रथ) का हिंदी गद्यानुवाद।

३. पुण्याश्रव कथाकोसभाषा—रचनाकाल—सवत् १७७७। इसकी चार प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से केवल दो मे लिपिकाल दिया है जो सवत् १७८६ और सवत् १८८७ हैं। विषय—जैन धर्म सबधी छप्पन कथाओ का वर्णन।

हिंदी गद्यग्रथ होने के कारण ये महत्वपूर्ण है। जैसा इनके रचनाकालो से स्पष्ट है, ये गद्य सवत् १७७७ से लेकर संवत् १८२४ तक के है। इनमे राजस्थानी, ब्रज और खडी बोली, तीनो भाषाएँ प्रयुक्त हुई हैं।

इन ग्रथो के आधार पर रचयिता खडेलवाल वैश्य थे। अल्ल कासलीवाल थी। पिता का नाम आनंदराम था। ये पहले आगरा मे आए थे जहाँ इन्होने 'पुण्याश्रव कथोकोस' की रचना

की। बसवं (?) मे इन्होने अपना निवास स्थान बतलाया है। पीछे जयपुर चले गए और रायमल तथा रतनचद (राज्य के दीवान) नामक मित्रो के साथ रहने लगे तथा उन्ही के अनुरोध पर "आदिपुराण और पद्मपुराण के अनुवाद किए। जयपुर मे उस समय महाराजा माधवसिंह का राज्य था। वृत्त तीनो ग्रथो मे इस प्रकार है—

आदिपुराण से

नगर सवाई जंपुर जानि। ताकी सोभा अधिक प्रवान॥
जहाँ भूप माधव बलवान। कछवाहन कौ तिलक बषान॥
:o: :o: :o:
अध्यातम संली है जहाँ। रायमल्ल साधर्मौ तहा॥
:o: :o: :o:
रतनचद दीवान सुजान। जिनमारग के सरधावान॥
तिनकी मित्र जु दौलतिराम। ताकौ तात जु आनदराम॥११॥
अठारह सं सवता ता उपर चौबीस।
कृष्णपक्ष आसोज को पुष्य नमित्त गरीस॥२१॥
:o: :o: :o:

पद्मपुराण से

नगर सवाई जयपुर माहि। काकी उपमा दीजं काहि॥ २॥
राजकरं माधवनृप जहाँ। कामदार है जंनी तहाँ॥
:o: :o: :o:
रायमल्ल साधर्मी एक। जाकं घर मं सुपरविवेक॥
:o: :o: :o:
दौलत राम सु ताको मित्र। तासु सो भाष्यौ वचन पवित्र॥ ५॥
पद्मपुराण महासुभग्रथ। ताम लोग सिवर की पथ॥
भाषारूप होय जोरह। वहुजन वांचं करि अलिनेह॥
:o: :o: :o:
आनंद सुत ने भाषा करी। नाहौ विरधौ अति रस भरी॥
:o: :o: :o:
संवत अष्टादस सत जानि। ता ऊपर तेईस बखानि॥
शुक्लपक्ष नौमी सनिधार। माघमास रोहणि रिनसार॥१०॥
:o: :o: :o:

पुण्याश्रव कथाकोस से

जो कोउ पूछं कवि का नाम। दौलति आगं माडौराम॥११॥
जाति वानिया श्रावगसोय। षंडेलवाल मान्यों सब कोय॥
अल्ल कहियं कासलिवाल। आनदराम स्वत (?सुत) वचन रसाल॥
कारणपाय आगरं गयो। पुन्याश्रव सुनि अति सुष भयौ॥
टीका भाषा करी चित चाय। पटि वढि पडित लेहुं बनाई॥१३॥
बसवं वास हमारो जान। घर आगं जिनमंदिर माणि॥
:o: :o: :o:
संवत सत्रह सं विष्यात। तप धरि सत्तरि अर सातं॥
भादवमास कृष्णपष जाणि। तिथि पचं परवो परवाण॥२५॥
रविसुत को पहलो दिव सोय। अर स्वुर गुर के पीछे होय॥
बार यहै गनि लीज्यौ सही। तादिन ग्रंथ समापत लही॥२६॥

रचयिता जैन साहित्य के मर्मज्ञ और प्रौढ़ विद्वान थे । इस बार इनका विस्तृत परिचय मिला है, अत इनके संबध की प्रस्तुत खोज महत्वपूर्ण है ।

नंद और मुकुंद—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे कामशास्त्र विषयक इनकी एक रचना कोकसार नाम से मिली है जिसके विवरण लिये गए हैं । यही रचना अनद, आनंद, नदकेश्वर और जन-मुकुद के नाम से पहले-कई वार मिल चुकी है, देखिए क्रमश खोज विवरणिकाएँ (२-५; ६-१२६; १७-७, २०-६, २३-१३, २६-१०; २६-११- दि० ३१-७, प० २२-५) (२३-२६५) और (६-१८३; २६-२२५) । इस बार भी आनद के नाम से इनकी पाँच प्रतियाँ और मिली है जिनका यथास्थान उल्लेख हो चुका है, देखिए पीछे 'आनद या अनद' का विवरण । परतु अब तक रचयिता के वृत्त के अभाव म यह पता नही चल सका था कि इनका वास्तविक रचयिता कौन है ? सौभाग्य से अब धीरे धीरे इस संबध मे कुछ ज्ञातव्य बातें प्रकट होने लगी हैं । इस बार प्रस्तुत जो प्रति मिली है,उसमे रचयिता का थोडा सा परिचय उपलब्ध होता है । उसके अनुसार ये नद और मुकुद नाम के दो भाई थे । सभवत. नद बडे थे । पिता का नाम चितामनि था और निवासस्थान का नाम जगरकंटी । दोनो भाई सुकवि थे । प्रस्तुत ग्रथ की रचना इन्होंने सम्मिलित रूप से की । रचनाकाल अस्पष्ट है, पर सवत् १६०० पढने मे आता है जिससे विदित होता है कि रचना विक्रम की सत्रहवी शताब्दी की है—

"संवत सोरह सौ वरष एतेरसा जो आहि ।
माघमास सुकुलतिथि सतमीकथा कीन्ह कवि चाहि ।।
जगरकंटी वास तहा चींतामनी चीत चार ।
ताके सुत कवीनंद भए कवी मुकुंद उजीयार ।।
दुनो भ्राता गुनगनी दुनौ चतुर प्रवीन ।
दोऊ रसकै हेत करी कीन्ह कोक नवनीत ।।"

प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल नही दिया है । यह भ्रष्ट कैथी लिपि मे लिखा हुआ है, अत: इस दोष के कारण इसको पढने मे स्वभावत कठिनाई उत्पन्न होती है । यही कारण है कि रचनाकाल ठीक ठीक विदित न हो सका । फिर भी रचयिता के विवरण के कारण यह महत्वपूर्ण है । इससे अब यह स्पष्ट हो जाता है कि अनद, आनद, नद, मुकुद, नदकेश्वर, जनमुकुद और मुकुददास के नाम से जितने 'कोकसार' मिलते है वे सब इन्ही दो बधुओं के रचे है । नद का ही अनद और आनद हो गया है अथवा ये उसके उपनाम है । मुकुददास और जनमुकुद तो स्पष्ट रूप से मुकुद के ही अन्य नाम है । नदकेश्वर का नाम रचयिता के रूप मे खोज विवरणिका (२३-२६५) पर गलत दिया है । उसमे उल्लिखित रचना मुकुद की रचना से मिलती है जहाँ नदकेश्वर पडित का नाम आया है वह अश इस प्रकार है—

नंदकेसवर पंडीत ऐक भैउ । पहोले गरंथ के उन कहेउ ।।
गुनीक पुत्र कवी अतीमाना । कामकलमरस सभ उन जाना ।।
उनके मत ग्रंथ हम देखा । कीछु छंत छेप बीचारी बीसेखा ।।

रेखाकित पदों से स्पष्ट है कि उसका रचयिता कोई दूसरा है जिसने नदकेश्वर पंडित के ग्रथों को देखकर रचना की थी और क्योकि मुकुद की रचना से वह मिलती है, जैसा कि ऊपर कहा गया है । अत मुकुद ही उसका वास्तविक रचयिता है । नीचे दोनों रचनाओं के आरभ के अंश उद्धृत किए जाते है जिससे पता चल जायगा कि ये भिन्न भिन्न रचनाएँ न होकर एक ही रचना है—

मुकुंददासकृत कोकभाषा—

बरनो गनपति बिघनबिनासा । जिह सुमरत गतिमति परगासा ।।
सब दिन बंदो सुरसरिमाता । बंदों शंकर सुत बुद्धिदाता ।।
बंदौ हरिब्राह्मण कर पावठा । जागत विप्रजपति जाकरिभाठा ।।
भरमित बाल पतालहि देवा । दशद्रगपाल करही तोरी सेवा ।।

:o: :o: :o:

साह सलीम जगत सुलताना। अहि निवास आगरे अस्थाना ॥
सोलह सं बहतरी संवत् हमजे सूना बहदसि।
सनदपत्र में देखा एक हजार पचीस ॥

नंदकेश्वर कृत कोकशास्त्र—

बरनौ गनपति बीधोनी बीनासा। जेही सुमीरत गतीमती प्रगासा ॥
सभदिन वंदौं सरोसतीमाता। बरनौ शंकर सीधी बुधीदाता ॥
वंदौ हरी ब्रह्मा के पाया। जगत व्यापिता जाकर माया ॥
स्वग ओतु पतालहि देवा। बस द्वीगपाल करही जे सेवा ॥
वंदौ पांइ सुज गनतारा। वंदौ गनपति जोती अपारा ॥

:o: :o: :o:

साह सलेम जगत सुलताना। तेही पाछे पटना नौस थाना ॥
सोरह सौ पचहत्तरः हम जो गीना दसदीसः।
सन दफतर म हम देखा एक हजार बतीसः ॥

:o: :o: :o:

इन उद्धृत अंशों में जो पाठांतर देखने में आते हैं वे केवल प्रतिलिपिकारों के हस्तदोष के कारण है।

जैसा कि आरंभ मे लिखा जा चुका है, आनद के नाम से भी इस बार इस ग्रंथ की पाँच प्रतियाँ मिली है। उनमें भी रचयिता का थोड़ा सा उल्लेख मिलता है जिसके अनुसार वे कोट हिसार (? पंजाब) के रहने वाले कायस्थ थे। सवत् १६६० में उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की थी। 'राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, द्वितीय भाग' के पृष्ठ १४वें मे उल्लिखित 'वचनविनोद' नामक पिंगल ग्रंथ के रचयिता भी यही आनदराय है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये हिसार (हिसारि) के रहने वाले भटनागर कायस्थ और गो० तुलसीदास (मानसकार) के शिष्य थे (देखिए उक्त खोज विवरण और पीछे आनदराम का विवरण)। अतः इन सबके आधार पर नद और मुकुद का वृत्त इस प्रकार उपलब्ध होता है—

"ये दो भाई थे जिनमे नद सभवत. बड़े थे। पिता का नाम चितामनि था। जाति के भटनागर कायस्थ और हिसार (हिसारि, पंजाब) के अंतर्गत जगरकोटी स्थान के निवासी थे। दोनो भाई सुकवि थे और प्रस्तुत कोकसार दोनों ने सम्मिलित रूप से रचा था। सवत् १६६० मे वर्तमान। नद (आनद या अनद) के गुरु गो० तुलसीदास (मानसकार) थे।"

इस सबंध मे यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि प्रस्तुत रचना इन दोनों भाइयों ने अलग अलग भी लिखी है, जैसे खोज विवरणिकाओं (६–१८३ ए, २६–२२५) में आई 'कोकसार' को मुकुददास ने जहांगीर बादशाह के राज्य मे सवत् १६७२ मे रचा था। इसी प्रकार आनद या अनद के नाम से मिलने वाली रचनाएँ है जो नद की स्वतंत्र रूप से लिखी हुई हो सकती है। इनका कारण अलग अलग आश्रयदाताओं के लिये इनका रचा जाना हो सकता है। परंतु प्रस्तुत रचना से यह स्पष्ट होता है कि एक बार यह रचना इन बंधुद्वय ने सम्मिलित रूप से लिखी थी।

अब एक संदेह और होता है। वह यह कि अष्टछाप के सुप्रसिद्ध कवि स्वा० नददास के नाम पर जो 'भ्रमर गीत' प्रचलित है वह इन्ही बंधुद्वय का तो नहीं? वह जनमुकुद के नाम पर भी मिलता है। एक ही ग्रंथ के दो रचयिताओं की इस उलझन को मिटाने के लिये पिछली खोज विवरणिकाओं (रिपोर्टों) और नागरी-विवरण में नददास का दूसरा नाम जनमुकुद मान लिया गया है। परंतु तब यह विदित न था कि नद और मुकुद नाम से दो भाई थे और उन दोनो ने मिलकर भी रचनाएँ की। अब यह ज्ञात हो जाने से यदि उसको भी इनकी सम्मिलित रचना मान लें तो इस कारण का भी पता सरलता से लग जाता है कि क्यों यह नददास और जनमुकुद के नाम पर अलग अलग मिलती है। परंतु अब यह मानना पड़ेगा कि स्वा० नददास (अष्टछाप) उसके रचयिता नही अथवा यह कि वे कोई भिन्न व्यक्ति नही प्रत्युत इन्ही बंधुओं मे से एक (नद)

हैं। दूसरी धारणा की पुष्टि तो इतनी शीघ्रता से नहीं की जा सकती जब तक कि अन्य सबल प्रमाण न मिल जायँ, पर प्रथम धारणा अनुचित नहीं। बहुत से प्रसिद्ध कवियों के नाम पर अनेक ऐसी रचनाएँ प्रचलित हैं जो वास्तव मे उनकी नहीं। कबीर, सूर, तुलसी आदि इसके प्रमाण हैं। अतः इस दृष्टि से प्रस्तुत रचना विद्वानों द्वारा मनन करने योग्य है।

नंददास (अष्टछाप)—ये सुप्रसिद्ध अष्टछाप के कवि हैं और कई ग्रंथों के रचयिता के रूप मे पिछली खोज विवरणिकाओं में उल्लिखित हैं, देखिए विवरणिकाएँ (१–११, ६६; ६–२००; ६–२०८, १२–१२०; १७–११६, २०–११३; २३–२६४, पं० २२–७२; २६–२४४; दि० ३१–६१– ३५–६७; ३२–१५२)। इस बार इनकी 'रास पंचाध्यायी' की एक प्राचीन प्रति, जो संवत् १७८० की लिखी हुई है, के विवरण लिए गए हैं। यह स्वर्गीय मयाशंकर जी याज्ञिक के संग्रह की है। उनके उत्तराधिकारी पं० भवानीशंकर जी याज्ञिक ने इस प्रति के ऊपर इस प्रकार लिखा है—

'इससे प्राचीन एक ही प्रति सुनी जाती है'। अतः इससे प्रस्तुत प्रति का एक महत्व विदित होता है। रचयिता का इसके द्वारा कोई वृत्त नहीं मिलता। इसकी पुष्पिका जिसमें उक्त लिपिकाल (सं० १७८०) दिया है इस प्रकार है—

इतिश्री नंददास कृत पंचाध्याई संपूर्न जथ्रिस पुस्तिक द्रष्टाव तथ्रिसं लिखतेमया ।। जबवा सुध असुध ममदोष न दीयते ।। संवत् १७८० मीती पूस सुदी १३ बार सनीचर बार को लिषी बसवत डालचद ब्राह्मन के ।। शुभमस्तु शुभभवत् ।।

प्रस्तुत रचना के साथ एक ही हस्तलेख में निम्नलिखित रचनाएँ भी हैं—

१. स्यामसनेही—आलमकृत।

२. ब्रह्मनाममाला योगासिंधु—चिंतामनि कृत। 'स्यामसनेही' मे लिपिकाल संवत् १७७५ है।

नीलकंठ कंठ—प्रस्तुत त्रिवर्षों मे इनका एक खंडित ग्रथ मिला है जिसमे नायिकाभेद का वर्णन पाया जाता है। अतः विषय की दृष्टि से और वास्तविक नाम के अभाव मे इसका नाम 'नायिका भेद' रख दिया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नहीं मिलता। रचना द्वारा ये एक प्रौढ कवि विदित होते हैं। उसमें कहीं कहीं इनका उपनाम 'कंठ' भी दिया है।

संक्षिप्त विवरण और पिछली खोज विवरणिकाओं मे दो नीलकंठों का उल्लेख है। एक तो चिंतामणि, भूषण और मतिराम के भाई और दूसरे कविवर सोमनाथ के पिता, देखिए क्रमश विवरणिकाएँ (३–१) और '(६–२६८)। दूसरे नीलकठ की न तो कविता ही उपलब्ध होती है और न वे कवि के रूप मे ही प्रसिद्ध हैं। अत हो सकता है कि ये प्रथम रचयिताओ (चिंतामणि, भूषण, मतिराम) के भाई 'नीलकंठ' हो जिनका उपनाम 'जटाशंकर' था। उपर्युक्त प्रथम रिपोर्ट मे इनके 'अमरेश विलास' का उल्लेख है जो अमरुक शतक का अनुवाद है।

बालदास—इनके पाँच ग्रंथो—१. चिंताबोध, २. बालपुरान (भागवत), ३. भागवत की अनुक्रमनी, ४ मार्कण्डेय पुराण, ५. सर्वार्थपुराण—के विवरण लिए गए हैं, जिनका उल्लेख रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से नीचे किया जाता है—

१. **चिंताबोध**—इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नहीं दिया है। विषय—सृष्टि, उत्पत्ति, सासारिक कर्म और योग का वर्णन। इसमे निर्गुण मतानुसार भी ज्ञानोपदेस किया गया है।

२. **बालपुरान**—रचनाकाल—अज्ञात। लिपिकाल—संवत् १६५६। विषय—भागवत दशमस्कध के अनुसार श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन।

३. **भागवत की अनुक्रमनी**—रचनाकाल—अज्ञात। लिपिकाल—संवत् १६२१। विषय—भागवत की अनुक्रमणिका वर्णन।

४. मार्कंडेय पुराण—रचनाकाल—अप्राप्त । लिपिकाल—संवत् १६५६ । विषय—मार्कंडेय पुराण की टीका ।

५. सर्वार्थपुराण—रचनाकाल—सं० १८४४ । प्रति अंत में खंडित है, अतः लिपिकाल अज्ञात । विषय—वेद, पुराण और शास्त्रों के आधार पर ज्ञानोपदेश ।

रचयिता का वृत्त केवल अंतिम ग्रंथ 'सर्वार्थ पुराण' में दिया हुआ है जिसके अनुसार इनका जन्मस्थान जयनगरा (रायबरेली जिला) था। जहाँ अब भी इनके वंशज रहते हैं। इनके पुरखे पहले दयालपुर (?) में रहते थे, जहाँ से इनके पिता नंदलाल सोनिकपुर आए और तत्पश्चात जयनगरा में बस गए। अपने माता पिता के ये तीसरे लड़के थे। छोटी अवस्था में ही इन्हें मृगी रोग हो गया था जिसके फलस्वरूप एक वाटिका में इनका प्राणांत हो गया। वास्तव में ये बालदास दूसरे ही थे। जिस समय वास्तविक बालदास का शरीर वाटिका में निर्जीव पड़ा था, उस समय ये वृद्ध योगीराज के रूप में तीन शिष्यों के साथ दक्षिण से चले आ रहे थे। ये कितने ही युगों से केवल चोला बदल लिया करते थे और माता के गर्भ में जन्म धारण नहीं करते थे। यही बात उन्होंने अब भी की। मृतक शरीर को देखकर उसमें प्रविष्ट हो गए। शिष्यों को उपदेश दिया कि वे ही सत्य मुक्त के रूप में है। कबीर आदि जितने भी निर्गुणपथ के संस्थापक हुए उन सबके वे ही गुरु थे। चरणदास स्वामी के गुरु भी वही थे। संवत् १८४० के एक भीषण अकाल का इन्होंने उल्लेख किया है जिसमें एक स्त्री को अपना बच्चा काटकर पकाते हुए और खाते हुए देखा था जिससे वे अत्यंत मर्माहत हुए। पीछे लोगों के कहने सुनने पर अकाल का निवारण किया। उक्त घटना जिस दिन हुई उस दिन इन्होंने अन्न ग्रहण नहीं किया और रात को दो मलार गाए जिसके फलस्वरूप प्रातःकाल दो डंड तक अच्छी वर्षा हुई। पश्चात् साथियों सहित हरिग्राम गए जहाँ राजा रामदेव द्विवेदी का पक्ष लेकर खेरी लखीमपुर के राजा और नवाबों के साथ घोर युद्ध किया। अंत में ये विजयी हुए। राजा रामदेव को उमरी ग्राम में आम के पेड़ के नीचे ज्ञानोपदेश कर वापिस चले आए। इनका जन्म संवत् १८०८ में हुआ और संवत् १८२८ में इन्होंने दीक्षा ली। ये पक्के वैष्णव थे और निर्गुन सगुन दोनों के प्रतिपादक थे। दोनों विषयों पर इन्होंने रचनाएँ की। सर्वार्थपुराण के आरंभ के अंश और बालपुरान की पुष्पिका के आधार पर ये तिवारी (? दयालपुर के त्रिपाठी) ब्राह्मण थे तथा इनके गुरु का नाम गायत्री सहाइ (जैसा कि सर्वार्थ पुराण में है) था जो महाराजगंज (?) के निवासी थे। ऐसा विदित होता है कि 'सर्वार्थपुराण' की प्रस्तुत प्रति मूल प्रति है—

॥ श्रीगणेशाय नमः श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः अथ सर्वार्थ पुराणे वेदांत सर्व पुराण व षटशास्त्र मते कृत बालदासे त्रिपाठी दयालपुर महाराजगंज के गुरु गायत्री सहाइ संवत् १८४४ मिति पौष वदि १३ त्रयोदशी ग्रंथ की उत्पत्ति भई नगर उमरी कथा के श्रोत्वा तेहि के हित शरण रामनाम द्विवेदः"।

बालपुरान की पुष्पिका

इति श्री हरि चारित्रे दसम असकंधे महापुराने श्री भागवते वक्ता श्रोता मन वांछित कहि लेते ॥ किश्न औतार की कथा बालदास तेवारी बरननो नाम नवासिनो अध्याइ ॥८६॥

सर्वार्थ पुराण से

तेहि दयालपुर तें नंदलाला । आये सोनिकपुरहि विशाला ॥
तेहिते आइ बसे जैनगरा । जहा बसत द्विज सब गुन अगरा ॥
जं जगरामा जन्मम सम विद्या समभोग ।
बीते द्वादस वर्ष के तब दीन्हो गुर जोग ॥
संवत सत पुरान अरु सिद्धि । तब जैनगरा जन्म प्रसिद्धि ॥

रिक्त ग्रंथों में केवल 'सर्वार्थपुराण' ही रचयिता की प्रधान कृति है जो उपर्युक्त ऐतिहासिक विवरण के कारण और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। रचयिता 'चिंताबोध' ग्रंथ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओं (१७–१६, २६–३१) में आ चुके हैं। इस बार इनके चार अन्य ग्रंथ और मिले हैं और साथ ही साथ इनका विस्तृत विवरण भी उपलब्ध हुआ है।

भावन (भवानीदत्त)—इनका उल्लेख 'शक्ति चिंतामणि' ग्रंथ के रचयिता के रूप में पिछली खोज विवरणिका (६–२८) में हो चुका है, पर अभी तक इनका वास्तविक वृत्त अज्ञात था। उक्त विवरणिका मे इनका जो वृत्त दिया है वह अशुद्ध है जिसको स्वय विवरणिका लेखक (पं० श्यामबिहारी मिश्र) ने भी सदिग्ध माना है। उसमे इनके लिये अयोध्या नरेश महाराज मानसिंह का भतीजा भैय्या त्रिलोकी नाथ सिंह लिखा है। इस बार ग्रंथ की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। जिनमे इनका ठीक ठीक परिचय दिया हुआ है। इनके अनुसार ये गगा के उत्तर तीन योजन पर स्थित मयूरध्वज (? मौंरावाँ, जिला उन्नाव) के निवासी थे जहाँ एक पवार क्षत्री राजा राज करता था। इन्होने अपनी वशावली इस प्रकार दी है—

भावदत्त (? छितुपुरी पाठक)
|
शीतल शर्मा (इनके सात भाइ और थे)
|
गगा प्रसाद (तीन भाई और थे)
|
भवानी दत्त 'भावन' (रचयिता) — फणीद्रदत्त

ये पाठक ब्राह्मण थे और 'भावन' उपनाम से कविता करते थे। इस वृत्त का समर्थन 'शिवसिंह सरोज' द्वारा भी होता है जिसमे इनका उल्लेख 'काव्यशिरोमणि' अन्य नाम 'काव्य कल्पद्रुम' के रचयिता के रूप मे हुआ है। उसमे दिया हुआ इनका वृत्त इस प्रकार है—

"भावनकवि, भवानीप्रसाद पाठक मौरावाँ, जिले उन्नाव के सं० १८९१ में उ० ।"

इसमे उल्लिखित सवत् अशुद्ध है। यह, जैसा कि ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियों मे दिया गया है, सवत् १८५१ होना चाहिए

सरि सर धृति संवत १८५१ प्रगट मधु रितु माधवमास ।
शुक्ल पक्ष गुर पंचमी कीन्हो ग्रथ प्रकाश ॥३८॥

पिछली दो अन्य विवरणिकाओ (२३–५२ सी, २६–५७) मे भी इस ग्रथ का उल्लेख है, पर उनमे इनका वृत्त नहीं दिया है।

इस ग्रथ के अतिरिक्त प्रस्तुत रचयिता की दो रचनाएँ 'कवित' और 'बरवै' नाम से और मिली है। ये सब काव्य की दृष्टि से उत्तम कृतियाँ है। इनका विवरण रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. **कवित्त**—रचनाकाल—अज्ञात। लिपिकाल—सवत् १८७३। विषय—श्रृंगार, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. **बरवै**—रचनाकाल—अविदित। लिपिकाल—सवत् १८७३। विषय—श्रृगार-काव्य जिसमे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र वर्णों की स्त्रियो का रसपूर्ण वर्णन है।

३. **शक्ति चिंतामणि**—रचनाकाल—सवत् १८५१। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमे लिपिकाल क्रमश. सवत् १८७३ और १९४४ है। विषय—नवरस और नायिकाभेद।

अतिम ग्रथ की स० १८७३ वाली प्रति मे पूर्वोक्त दोनो रचनाएँ लिपिबद्ध हैं जिसके आधार पर ये तीनो रचनाएँ एक ही रचयिता की मानी गई है जो ठीक जान पड़ता है।

भूधर दास 'जैन'—इनका उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओ (००–१०२; २३–५८, २६–५०) मे कई ग्रथो के साथ हो चुका है। उक्त रिपोर्टों के आधार पर ये खडेलवाल जैन, आगरा निवासी और सवत् १७८१ के लगभग वर्तमान थे। इनका दूसरा नाम भूधरमल था।

इस बार इनका एक और नवीन ग्रथ 'पार्श्वनाथ पुराण भाषा' नाम से मिला है जो इसी नाम के सस्कृत ग्रंथ का भाषानुवाद है। रचनाकाल सवत् १७८९ है। इसकी पाँच प्रतियों के

विवरण लिये गए हैं जिनमें से केवल तीन मे लिपिकाल दिए है जो क्रमश संवत् १८१८, १८८२, और १६०० हैं। यह अधिकतर दोहा, चौपाइयों मे रचा गया है, पर कवित्त, छप्पय और सोरठे भी प्रयुक्त हुए हैं। इसके द्वारा रचयिता के विषय मे कोई नवीन बात नही विदित होती। परंतु इसे पढ़ने से विदित होता है कि ये एक प्रौढ कवि थे। इस ग्रथ को इन्होने अधिकतर मौलिक और स्वतंत्र रूप से रचा है। मूल सस्कृत ग्रथ का तो केवल आधारमात्र लिया है। यहाँ इसमे से एक दोहा उद्धृत किया जाता है जिसमे बड़ी सुदर कल्पना और मार्मिक उक्ति मे काम लिया गया है—

"पिता नीर परसै नही दूर रहै रविवार।
ता अम्बुज मैं मूढ़ अलि उरझि मरै अविचार॥"

"पिता नीर जिसका स्पर्श तक नही कर सकता और प्रेमी सूर्य भी जिससे दूर ही रहता है ऐसी कमलिनि मे ऐं मूढ अली ! तू उलझकर मरता है। क्या यह अविचार नही।"

रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है—

संवत् सवह सै समै और नवासी लीय।
सुदि असाढ़ तिथि पंचमी ग्रंथ समापित कीय॥१२६॥

मदन गोपाल कवि—ये 'अर्जुन विलास' नामक ग्रथ के रचयिता हैं और इसके साथ खोज विवरणिका (२३–२५०) में उल्लिखित है। उक्त विवरणिकाओं में इनका बहुत थोडा परिचय दिया है जिसके अनुसार फतूहाबाद (अवध) के निवासी, सवत् १८७६ के लगभग वर्तमान और राजा अर्जुन सिंह के आश्रित थे। इससे यह पता चलता है कि राजा अर्जुन सिंह कहाँ के राजा थे और रचयिता किस वर्ण, किस जाति के रहे तथा उनके पिता आदि का नाम क्या था। इस बार उपर्युक्त ग्रथ की एक प्रति के विवरण और लिए गए है जिनमे इन सब बातो के सबध मे विस्तृत और पूरा विवरण दिया गया है। इसके अनुमार रचयिता कान्यकुब्ज ब्राह्मण और फतूहाबाद (अवध) के रहने वाले थे। पिता का नाम गगाराम था जो फतूहाबाद मे आकर बस गए थे। इनके (रचयिता) के छह भाई और थे जिनके नाम नही दिए है। ये बलरामपुर (अवध) के राजा अर्जुन सिंह के आश्रय मे रहते थे जिनके पुत्र के जन्म के अवसर पर इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। राजा अर्जुन सिह जनवार वशी थे। उनके पुरखे गुजरात के रहने वाले थे जहाँ किसी अकोना (? पकोना) स्थान मे उनका राज्य था। उनमे से माधोसिह नाम के एक राजा ने अकोना का राज्य अपने भाई गनेसराइ को देकर बलरामपुर (गोडा, अवध) मे आकर अपनी राजधानी स्थापित की। इन्ही के वश मे राजा अर्जुन सिह हुए। वशावली इनकी इस प्रकार दी हुई है—

विदित जगत जनवार को वंस बसत गुजरात।
तिनमैं राजकुमार की सुनी अकौना बात॥१४॥
माधौ सिंह महीप तब भये तेज जसधाम।
राज कियो कुछ वर्ष पुनि भाइहि लखि गुनधाम॥१७॥
बुधिबल सदृश गणेश के नाम गनेससहाइ।
जोगराज के काज को सेवक निज अरु भाइ॥१८॥
दयौ पकौना (?) राज त्यहि राजनीति समुझाइ।
आइ आपु बलरामपुर लीन्हो राज बसाइ॥१६॥
माधो सिंह महीप के सुत कल्यान जुत साहि।
राज कियो जब सुर समहि पितु गे वै पद ताहि॥२३॥
हुवयज भूप कल्यान के प्रानवंत महिपाल।
हरिनकाल अर्थिन कलवृक्ष प्रजनपितु आल॥२४॥
तिनके युगल कुमार भे जेठ नृपति हरिवंस।
छोटे सिंह बसत मनु मनु पुत्रन के अंस॥२५॥
गे हरिपुर हरिवंस जब छत्रसिंह भे भूप।
कलि में द्वापर के एदूस धर्म चलाय अनूप॥

फतेसिंह जुवराज कै छत्रसिंह महाराज ।
सचिव समरथ सौपा सकल करो राज को काज ॥
फतेसिंह के तीनि सुत जेठे सिंह अनूप ।
पुनि पहार अरु करणसिंह तीनिउ बीर अनूप ॥
पंचभूत तें पांच सुत जाए सिंह अनूप ।
जिनकी करनी कोकरी कविन कठ मनि रूप ॥
ककुलति सिंह ललेल जू रामसिंह असवंत ।
सिंह सरों सांवल हरी पांचौ सुभ गुनवंत ॥
नवल सिंह महाराज भे ककुलितसिंह तनूज ।
पृथीपाल पीछे पहुमि मंधित राउ उस बूज ॥
तिनके सुत जाए जुगल बड़े बहादुर सिंह ।
पुनि अर्जुन अर्जुन दुबो कीसारि अरिगज सिंह ॥

राजा अर्जुन सिंह के पुत्र का नाम दिग्विजय सिंह था, जिसके जन्म समय पर रचयिता ने प्रस्तुत ग्रंथ रचना आरम्भ की थी ।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १८७६ और लिपिकाल सन् १२७० (? फसली) दिए हैं । इसमे व्याकरण, नीति, न्याय, ज्योतिष, काव्य और वैद्यक आदि विविध विषयो का वर्णन है । ऐतिहासिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है ।

कवि का वृत्त इस प्रकार है—

कान्यकुब्ज श्रीनाभिभो शकल नाभि मुष तुल्य ।
विद्यापति धनपति विदित भे तिनके नर कुल्य ॥१०॥
नाभिवंस पुनि बंसकर गंगाराम प्रसिद्ध ।
बसे फतुहाबाद में विद्या धन जन रिद्ध ॥११॥
तिनके गृह सुर सवृस सुचि भये सकल सुज्ञान ।
छहलों सतए भे 'मदन' एक परम अज्ञान ॥१२॥

राम प्रसाद निरंजनी (साधु)—इनका उल्लेख 'योगवाशिष्ट' ग्रथ के साथ खोज विवरणिका (२९–१९१) मे हो चुका है जिसके अनुसार ये संवत् १७९८ के लगभग वर्तमान और पटियाला की महारानी के यहाँ कथा वाचक थे ।

उक्त ग्रथ की छपी हुई प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं जिसमे ग्रथ के विषय में इस प्रकार कहा गया है—

"अब इसके भाषांतर होने का हाल वर्णन किया जाता है । अनुमान डेढ सौ के व्यतीत हुए कि पटियाला नगर नरेश श्रीयुत् साहब सिंह जी वीरेथ की दो बहिनें बिधवा हो गई थी इसलिए उन्होने साधु रामप्रसाद जी निरजनी से कहा कि श्री योगवाशिष्ट जो अति ज्ञानामृत है सुनाओ तो अच्छी बात है। निदान उन्होंने योगवाशिष्ट की कथा सुनाना स्वीकार किया और उन दोनो बहिनो ने दो गुप्त लेखक बैठा दिए ज्यो ज्यो पडित जी कथा कहते थे वे प्रत्यक्षर लिखते जाते थे, जब इसी तरह कुछ समय में कथा पूर्ण हुई तो यह ग्रंथ भी तैयार हो गया । जोकि इसमें कथा की रीति थी कुछ उल्थे का प्रकार न था और पजाबी शब्द मिले हुए थे प्रथम यह ग्रथ ऐसा ही मुबई नगर मे मगहन सवत् १९२२ मे छपा । जब इसका इस भाँति प्रचार हुआ और ज्ञानियो को कुछ इसका सुख प्राप्त हुआ तो चारो ओर से यह इच्छा हुई कि यदि पजाबी बोलियाँ और इबारत सुधारकर यह पुस्तक छापी जावे तो अति उत्तम हो । तथा च श्रीमान् मुशी नवलकिशोर जी ने वैकुंठवासी प्यारेलाल शर्मा कश्मीरी को आज्ञा दी और उन्होंने बोलियाँ बदलकर और जहाँ तहाँ की इबारत सुधारकर उनकी आज्ञा का प्रतिपालन किया । परमशिष्ट पडितो के द्वारा यह ग्रथ तीन बार शुद्धतापूर्वक छप चुका है और अब कानपुर निवासी भगवानदास जी वर्मा द्वारा सपादित होकर फिर चौथी बार प्रकाश होने का अवसर मिलता है—परमानदकारण हुआ" ।

इससे पता चलता है कि मूल ग्रंथ बंबई से सवत् १९२२ मे प्रथम बार छपा । उसमे पंजाबी ध्वनियों और इबारतों की अशुद्धियाँ थी जिसको प्यारेलाल शर्मा कश्मीरी ने शुद्ध क

दिया और ध्वनियो को भी बदल दिया। ग्रथ खोज मे पहले भी मिल चुका है, देखिए विवरणिका (२६-१६१ ए, बी, सी)। यह खडी बोली के व्यवस्थित और परिष्कृत गद्य का सबसे प्राचीन ग्रथ माना जाता है, परतु भूमिका के उपर्युक्त अवतरण से अब यह निश्चित हो गया कि यह धारणा ठीक नही। मूल ग्रथ पजाबी मिश्रित खड़ी बोली गद्य मे था जिसको खडी बोली का परिष्कृत गद्य नही कह सकते।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचना काल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १६६० है।

शंभूनाथ त्रिपाठी—इनकी इस बार चार रचनाओ—१ कवित्त, २ कृष्ण बिलास (भागवतदशम), ३ जातक चद्रिका और ४ मुहूर्त चिंतामणि या मुहूर्त मजरी के विवरण लिये गए हैं जिनमे से प्रथम दो नए हैं और शेष दो पिछली विवरणिकाओं में आ चुकी है। देखिए विवरणिकाएँ (६-२३४, २६-४२०, २०-१७३, २३-३७१ बी, सी, डी)। 'कवित्तों' मे शृगार विषयक सवैया और कवित्त है। इनकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही है। 'कृष्णविलास' (भागवतदशम) मे श्रीकृष्णचरित्र का काव्यशैली मे सुदर और सरस वर्णन किया गया है। इसे रचयिता की प्रधान कृति समझना चाहिए। इसमे रचनाकाल दिया तो है पर वह अस्पष्ट है—

साको बीति गयो तहाँ रस पर्वत औ भूप।
सगुन उज्यारी पंचमी भादौ मास अनूप॥ ७॥

लिपिकाल सवत् १६२३ है। रचना अधूरी है और ३५ अध्यायो के लिखने के पश्चात् रचयिता का स्वर्गवास हो गया था अत यह रचयिता की अतिम कृति है। इसमे मातृक और वर्णिक दोनो वृत्तो मे रचना की गई है।

रचयिता म दौरिया खेडा (बैसवाडा, रायबरेली) के रावरघुनाथ सिंह के आश्रित थे। उपर्युक्त रिपोर्टों के अनुसार वे सवत् १८०३ के लगभग वर्तमान थे—

सभा मध्य बैठे हुते येक समै रघुनाथ।
मंत्री मित्र पंडित सुभट बंधु बृंद लै साथ॥

:o: :o: :o:

तहँ कवि संभूनाथ को लीन्हों निकट बोलाइ।
सादर नजरि सुकरि हिये परम प्रेम उपजाइ॥ ४॥
दुरित हटै जाके पढ़ै कटैविकट भव बंध।
कह्यौ हमै करि दीजिए भाषा दशम स्कंध॥ ५॥
तिनको आयसु पाइके हिये हरषि कवि संभु।
गौरिगनेसहि पूजिकै ताछन कियो अरंभु॥ ६॥

:o: :o: :o:

कान्ह कुवर बृज बधुन को वरन्यो यामै रास।
नाम धर्यो यहि ग्रंथ को याते 'कृष्ण-विलास'॥ ८॥

:o: :o: :o:

पुष्पिका के पश्चात्—

ह्याँ लागि वरन्यो दसम में रामकृष्ण के ख्याल।
विधिवस ते फिरि ह्वैगयो संभुनाथ को काल॥ १॥

शिवराज महापात्र—इन्होंने 'कृष्ण बिलास' और 'रससागर' नामक दो ग्रथो की रचनाएँ की जिनमे एक ही विषय रस और नायिकाभेद का वर्णन है। दोनो ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियाँ खडित है। पहले ग्रथ की प्रति मे तो आठ ही पत्रे है। जिनमे रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता के वृत्त का कोई उल्लेख नही मिलता। दूसरे ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल दिया है जो सवत् १८६६ है, पर लिपिकाल उसमे भी नही। सौभाग्य से इसमे रचयिता और उसके आश्रयदाता का वृत्त विद्यमान है, जो इस प्रकार है—

"महापात्र के वश मे कविराज प्रकट हुए। उनके सदानद हुए जो कालिदास के सदृश गुणी थे। उनके पुत्र सुखपाल थे। इन्ही सुखपाल के वंश मे शिवराज महापात्र हुए। इनके वंश

के लोग भाषा में नहीं बोलते थे। केवल इन्होंने ही भाषा में कविता करना प्रारंभ किया। ये रामपुर के राजाराय बैरिसाल के आश्रय में रहते थे जो मझौली (गोरखपुर) के राजाओं के वंशज थे। इनके वंश का कवि ने बडा विस्तृत वर्णन किया है। ग्रथ मे वह पत्र नही है जिसमे राजाओं का वर्णन प्रारंभ हुआ है। प्राप्त अश में नरपाल सेनि से उल्लेख मिलता । अत. वशावली का जो अश विद्यमान है वह क्रम से विवरण पत्र मे दे दिया गया है। राजा बैरिसाल के पूर्वजो मे से एक युवराज महाबीर थे जिनका किसी कारण अपने बडे भाई से मनमुटाव हो गया था। उन्होंने मझौली को त्याग दिया और सिगरौर (रायबरेली) और मानिकपुर क्षेत्र की ओर गगा के तट पर बसे रामपुरा राज्य को जीतकर अपने अधीन किया। डेरवा स्थान मे उन्होंने अपनी राजधानी स्थापित की। ये दिल्ली नरेश के भी पास गए, जिसन इनको मनसबदारी देकर मुलतान की लडाई पर भेजा। वहाँ से विजय प्राप्त कर लौटे तो बादशाह से 'रामराया' की उपाधि पाई। तब से रामपुरा के राजा 'राय' कहलाने लगे—

भए भोजमल भूपके जुगल सुवन छितिमांह।
जाहि सराहत सर्वदा दिल्लीपति नरनाह॥
बड़े भए श्री महाराज पटना सरजू तीर लो जाको राजत राज।
लहुए सुखद सनेह सुभ महाबीर जुवराज॥
:o: :o: :o:
तातें श्रीमहाराज तें बतकहाउ के मांह।
सहोपरो नहि नज तें कसिकहो नरनाह॥
आए बनवध बीच से चलो वेगि जुग राज (?जुवराज)।
जथा बुद्धि बरनन करत ताको सकल समाज॥
:o: :o: :o:
बसो परगने पांयि तिन जाहिर सकल जहान।
रामपुरा ढिग बस सुखद अरु डेरवा अस्थान॥
मानिकपुर सिंगरोर अरु जहाँ बावन उमराउ।
गरदोजी को गर्व करि छिनि लियो सब गाउँ॥
पातसाहि ढिग जाइ जेन्ह पायो बहु सनमान।
मनसब सहित किताब जेहि दीन्हो श्री सुलतान॥

॥ कवित्त ॥

दीन्हो सुलतान मूलतान की मुहेम ताहि कीन्हो कलतान ते गनीन कोर सांयां को।
गब्बर गनीम गहि लीन्हो है पलक माह जब्बर रहे न कोउ देसभेस नायां को।
कहै 'सिवराज' श्री विनेस वंस सिरताजु हाजिर हजूर में भयो है जस भ्रांया को।
पातसाह साहेब जो कीन्हो है मुसाहेब मो दीन्हों है हिसाब सों किताब 'रामरायां' कों॥

दियो 'मल्ल' ते 'राय' तब दियो नयो फरमान।
बिदा कियो जुवराज को दिल्लीपति सुलतान॥
तबतें राय कहावहीं रामपुरा अनीप।
श्री बिसेनवर भुजभजग जाहिर जंबूदीप॥
:o: :o: :o:

कविवंस वर्णन

महापाल के बंस में प्रगट महा कबिराज।
जाहिर जंबूदीप में बर बिद्या सुखसाज॥ १॥
ताके सुत भे जगत में सदानंद मतिधीर।
कालिदास ममहीपपर गुनसागर गंभीर॥ २॥
ताके भे सुखलाल छिति धीरधर्म के साज॥
कृपानेम आचार कों राजत ज्यौं रविराज॥ ३॥
ताकुल में भो मंद मति महापात्र सिवराज।
:o: :o: :o:

भाषा जाके बंस मो कबहु न बोलत कोइ ।
ताकुल में सिवराज अब भाषा कवि भो सोइ ॥

रचयिता ने श्री मुनिभट्टमपूर नामक एक व्यक्ति का उल्लेख बड़ी श्रद्धा से किया है जिसने गंडक के तट पर बड़ी तपस्या की थी। पता नहीं, ये कौन थे। गुरु के प्रसग मे यह उल्लेख हुआ है, अतः हो सकता है कि या तो ये कवि के गुरु थे या गुरु के पूर्व पुरुष—

ऐसे गुरु चरन सरोज मन सेउ मेरे छोड़ि भवभावना भरम भ्रमना की है॥ २॥
श्री मुनिभट्ट मयूर भे सूरज कला प्रताप ।
जाके ध्याये जगत में कटत कोटि संताप॥ ३॥
गंडक तट तेहि निकट (नगर मझौली मध्य) में कीन्हो तप बहुभाँति ।
सूरजकर तेहि गहि कियों सूरज सम तन कांति॥ ४॥

रचयिता पिछली खोज विवरणिका (२३–२६६) मे 'कृष्णविलास' के साथ उल्लिखित है, पर उसमें इनका न तो वृत्त दिया है और न समय ही। अत इनके संबध की प्रस्तुत खोज महत्व की है। ये प्रौढ कवि थे, इसमे सदेह नही।

सबलसिंह चौहान—ये अपने 'महाभारत' के लिये प्रसिद्ध हैं, परतु अब तक इनका जो कुछ वृत्त विदित हुआ वह सदिग्ध और अस्पष्ट है। इस बार इनके 'कर्णपर्व' (महाभारत) की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं जिसमे रचनाकाल सवत् १७३४ और लिपिकाल संवत् १६३६ दिया है। इसके अनुसार ये चदगढ (?) के राजा मित्रसेनि के पुरखो मे से एक सिपाही थे। अन्य वृत्त फिर भी अज्ञात ही है। इनका उल्लेख पिछली कई विवरणिकाओं मे हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (४–६६, ६–२२४ ए, १२–१६, पं० २२–६७; २३–३०३– २६–४१२)। इनमे इनका दूसरा नाम शबलस्याम भी लिखा है, जो अशुद्ध है। 'शबलश्याम' इनसे भिन्न थे, देखिए आगे 'शबलश्याम' पर टिप्पणी। इन्होंने अपना जो वृत्त दिया है वह इस प्रकार है—

भूमिनाम गढ़ चंद विराजत। मित्रसेनि तह भूपति राजत॥
अं नप के पुरिजन मंह आहि। सबलसाहि चौहान सिपाही॥
तिन यह भारथ भाषा कीन्हो। जब आज्ञा औरघुपति दीन्हो॥
सुकुलपक्ष अस्वनि के मासहि। तिथि पंचमि कियो कथा प्रकासहि॥
सवत् सत्रह सं चौंतीसा। औरंगसाहि दिलीपति ईसा॥

सबलस्याम (शबलश्याम)—इन्हें महाभारत रचयिता सबलसिह चौहान कहा जाता है, जो ठीक नही। उक्त रचयिता से ये नितात भिन्न व्यक्ति है। इस बार इनके 'भाषाभागवत दशम स्कध' की एक एक प्रति के विवरण लिए गए है जो सवत् १६०६ की लिखी हुई है। इसके अनुसार ये सवत १६८८ मे उत्पन्न हुए थे और अमोघा नगर (अमोढा राज्य, जिला बस्ती) के निवासी थे। ये अपने को राजा कहते हैं—

संवत सोरह सौ अट्ठासी जन्म भयो छिति आई ।
'सबलस्याम' पुर पुण्यते नगर अमोघा में परे देखाइ॥४२३॥
राजा सबलश्यामकृत दशमोत्तर अस्कंध ।
यह समाप्त प्रमुदित भयो संयुत छंद प्रबंध॥४२४॥

ग्रथ स्वामी (ठा० रामसिंह जी, अध्यापक, ग्राम, बभनगाँवा, डाकघर, अमोढा, जिला, बस्ती), जो अपने को इनका (सबलस्यामयेका) वशज बतलाते हैं, इनका वश वृक्ष इस प्रकार देते है—

राजा कसदेव नारायण (अमोढा के प्रथम राजा जो अस्मोडा अस्कोट से आए थे)
|
महाराजा दलसिंह (राजा कसदेव की २७वी पीढ़ी में)

वीरसिंह राजा | फतेहसाह | सबलसाहि (सबलस्याम) रचयिता

वीरसिंह राजा
|
वीरसिंह राजा
|
संग्राम सिंह
|
साहेब सिंह
|
जालिम सिंह
|
पृथ्वीपति सिंह
|
अभय सिंह
|
जंगबहादुर सिंह
|
रानी तलाश कुँवरि
(पश्चात् राज्य अंग्रेजी राज्य मे मिला दिया गया)।

ग्रथ स्वामी का यह भी कहना है कि सबलस्याम सूर्यवंशी थे और अमोढा से एक मील पश्चिम प्रतापगढ मे रहते थे। ये रुक्मिणीहरण, बालविस्तार, रामायण, अमोढा राज्य वर्णन, दृष्टकूट आदि के रचयिता हैं, पर ये रचनाएँ अप्राप्य हैं। सबल सिंह चौहान ने केवल 'महाभारत' की ही रचना की, ऐसा इनका कहना है।

रचयिता का इस बार पूरा विवरण उपलब्ध हुआ है, अत इनके सबध की प्रस्तुत खोज महत्व की है। ये प्रस्तुत ग्रथ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ (१२–१६० ए, बी, डी, ई, एफ, २३–३६३ ए, २६–४१३ ए, बी) मे आ चुके हैं। खोज विवरणिका (४४–४३८) मे इनका 'बरवै षट् ऋतु' का भी उल्लेख है जो काव्य की दृष्टि से सुदर कृति है। इसमे सदेह नही कि सबल सिंह चौहान से ये काव्य प्रतिभा मे बढे चढे थे।

ऐसी रचनाओ मे जिनके रचयिता अज्ञात हैं माधवानल कामकदला, अपभ्रश की एक रचना, षट्पद के भेद, सीता वनवास और कवित्त दोहा सग्रह मुख्य है—

माधवानल कामकंदला—यह यद्यपि सस्कृत रचना है, पर इसके बीच बीच मे अपभ्रश और हिंदी के छद भी प्रयुक्त हुए है जिसके कारण इसके विवरण लिए गए हैं। पूर्ण होते हुए भी इसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। इसमे माधव नामक एक ब्राह्मण और कामकदला नाम की एक वेश्या के प्रेम का बडा मार्मिक वर्णन है। परोपकारी महाराज विक्रमादित्य ने इन दोनो प्रेमियो के विरह कष्टों का निबारण कर इनका मिलन कराया था। इस प्रेम की मार्मिकता ने जनसमाज को इतना प्रभावित किया कि तब से इसका कथा के रूप मे प्रचार होता आ रहा है। सस्कृत आदि प्राचीन भाषाओ के अतिरिक्त इस समय भारत की लगभग सभी भाषाओं में यह लिखित रूप में भी पाई जाती है। हिंदी मे इस विषय पर खोज द्वारा तीन प्राचीन रचयिताओं की रचनाएँ प्राप्त हुई है, जो इस प्रकार हैं—

१. **आलम**—माधवानल कामकदला (रचनाकाल स० १६६०; हिजरी सन् ६६१)।
२. **हरिनारायण**—माधवानल की कथा (रचनाकाल स० १८१२)।
३. **माधवविलास**—(रचनाकाल स० १८०० लगभग)।

गायकवाड़ ओरियटल सीरीज से गणपति नामक एक कवि द्वारा स० १५८४ मे रची

गई 'कामकंदला प्रबंध' (भाग १) का प्रकाशन हुआ है जिसके संपादक बड़ौदा कालेज के गुजराती प्राध्यापक श्री एम० आर० मजूमदार हैं। इसकी भाषा को पश्चिमी राजस्थानी या पिछली अपभ्रंश अथवा प्राचीन गुजराती कहा गया है, परंतु वह पुरानी हिंदी से पृथक् नहीं। उसका स्वरूप इस प्रकार है—

चंदन केरी कंचुकी, रविस्युं अति राजंति।
कुच ऊपरि क्रीडा करइ, खट्पद बइठउ खंति॥५०॥
शिरि चालइ शोणित घणउं प्रमदा पीडि अपार।
न्यास-वयन प्रगटउ करि, ऊजडिड तिनि वारि॥५१॥

इस रचना के साथ अंत मे इसी कथावस्तु को लेकर तीन अन्य रचनाएँ भी परिशिष्टों के रूप मे दी गई है, जो इस प्रकार है—

१. **कवि आनंदधरकृत**—माधवानलाख्यानम् (सस्कृत)।

२. **वाचक कुशललाभकृत**—माधव कामकदला चौपई (रचनाकाल स० १६१६; लिपिकाल स० १६७६)।

३. **कवि दामोदरकृत**—माधवानल कथा (लिपिकाल स० १७३७)।

प्रथम रचना को छोडकर शेष दोनो रचनाएँ भी राजस्थानी मे ही हैं, अतः इन्हें भी हिंदी की ही रचनाएँ समझना चाहिए। इनकी भाषा की बानगी क्रमशः इस प्रकार है—

माधवानलकामकंदला चौपई से—

संवत सोल सोलोत्तरइ, जेसलमेरु मझारी।
फागुण सुदि तेरासिदिवसि विरची आछित बारि॥६५७॥
गाहा मूढा (?दूहा) चउपई, कवित्त कथा संबंध।
कामकंदला कामिनी माधवनल संबंध॥६५८॥
'कुशललाभ वाचक' गहइ, सरस चरित सुप्रसिद्ध।
जे वाचइ जे संभलइ, तियामिलइ नवनिद्ध॥६५९॥

:o: :o: :o:

माधवानल कथा से—

कामाद्विज रंगइ रमइ दिन दिन नील विलास।
विक्रमराजाइ मेलव्या उजेणी मांहे वास॥७८६॥

:o: :o: :o:

माधवकेश गुणकह्या, अवगुण नहीं लगाइ॥
कवि दामोदर इम कहइ, सुष भोगवइ संसार॥७६२॥

प्रथम रचना, कवि आनदधर कृत 'माधवानलाख्यानम्' की शैली खोज मे उपलब्ध प्रस्तुत रचना से मिलती है। अतर केवल इतना ही है कि उसमे प्रस्तुत रचना की तरह हिंदी के छद प्रयुक्त नही हुए हैं, न मिलान करने पर दोनो के आरभ के अश और अपभ्रश के सभी छद थोड़े से पाठ भेदो को छोडकर, मिलते है। मध्य और अत के सस्कृत अंश नही मिलते। खोज मे प्राप्त रचना के मध्य और अंत के अश विवरणपत्र मे इस प्रकार उद्धृत है—

हे माधव त्वं ममनिज गुणाववर्शः॥ त्वं महागुणिनः संति यत्'
'अजहं रसेन रासेनं सोतं पिखेण अमीय सारिछं।
भसवारम्मंति शालणी घुण कीया सुक्क कट्ठाई॥
भमरोजाजे रसविरस जो चुंबई वनराई।
घुणकथा जावइ वापुरा जे सुजा लकरापाइ॥

:o: :o: :o:

'क्रमेण शैल सलीलेन भीद्यते। क्रमेणकार्यं विनयेन सिध्यते॥
क्रमेण शत्रुः कण्टेनहन्यते। क्रमेणमोक्षं युक्तेन गम्यते॥'

मध्य का अंश

ततः कामकंदला चमत्कृता मनासं चिंतित वती, अयं पुरुषः सर्वकला कुन्थला भरतशास्त्र पारगामी आगस्तोस्ति। अद्यमेव सर्वाः कलाः सफला जाताः। यतोगाथा—

"ओजेवर सेण रसिउ, सो तं पिच्छेइ अमियसारित्थम्।
भमरो शान्ति नलिणी, घुणकीडा सुक्क खण्डारम॥४४॥
भ्रमरा जाणइ रसविरसु, जो कुम्बइ वणाइ।
घुण्या क्या जाणइ बापुडा, जे सुक्क लक्कड़ा खभूरी॥४५॥

अंत का अंश

॥ फलश्रुतिः ॥

'येन के नाम्यु पायेन कर्तव्यः पुण्य संग्रहः।
लभ्यते विविधं सौख्यं दीर्घायुर्मङ्गलं श्रियः॥३३२॥
माधवानल संतेहि नाटकं श्रणुयान्नरः।
न जायते पुनस्तस्य दुःखं विरह संभवम्॥२३३॥

विचार करने से विदित होता है कि ये दोनो रचनाएँ एक ही हैं जो अंश नही मिलते उनका कारण यही है कि भिन्न-भिन्न लेखको ने अपनी अपनी रुचि के अनुसार इस रचना मे संशोधन और परिवर्धन किए हैं। हिंदी के छदो के सबध मे जान पड़ता है कि किसी ने इन्हें पीछे मिलाया है यो दोनो रचनाएँ निश्चित रूप से एक ही हैं, अत इनका रचयिता आनदधर के अतिरिक्त और कोई नही हो सकता। विवरणपत्र मे उद्धृत छोटे छोटे विवरणो के आधार पर इन्हें अलग अलग रचनाएँ मान लेना सदेह युक्त है विशेष कर उस दशा मे जब इनके आरभ के अंश मिलते हैं—

खोज में प्राप्त प्रति के आरंभ का अंश

प्रणम्य परमाभक्त्या हंसयानां च सरस्वती।
तस्या प्रसादमासाद्य कलिष्यामि कथामिमां॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अस्ति पुष्पावती नाम नगरी तत्र गोविंदचंद्रो राजा तस्य राज्ञिग सप्तशतानि तासां मध्ये रुद्र महापदराज्ञी श्रेष्ठवर्तते॥ यतः॥

थेयामा यौवन शालिनी मधुर वाक् सौभाग्यभाग्योदयात्। कर्णातायतलोचनानि चतुरा प्रागल्भ्य गर्वोन्विता (?गर्वोक्तिः) रम्भावालयराल मंथरगतिर्म्मतेभ्य कुंभस्तनी।

बिंबोष्टी परिपूर्ण चंद्र वंदना सा नायका पद्मनी॥ इति पद्मिनी॥

माधवानलख्यनाम् का आरंभ का अंश।

प्रणम्य परयामस्या हंसमांनां सरस्वतीम्।
तस्याः प्रसाद मासाद्य करिष्यामि कथामिमाम्॥ १ ॥

अस्ति सकल संसार तिलक भूत पुष्पावती नाम नगरी॥ याहि:—

निराधरणनिशतङ्काः सन्तुष्टाः परमायुजः।
वसन्ति यत्रपुरुषाः कालाऽजाता इव प्रजाः॥ २ ॥

तत्र गोविन्द्र चन्द्रो नाम राजा। तस्य राज्ञिना सप्तशतानि भवन्ति। ताणं मध्ये रूपा-महादेवी नाम पट्ट राज्ञीवर्तते।

साकीवथी

श्यामा यौवन शालिनी मधुरवाक् सौभाग्य भाग्योदया,
कर्णान्तायत लोचनानि चतुरा प्रागल्भ्य गर्वान्विता,
रम्भावालमराल मन्थरगति मंत्तेभ कुम्भस्तनी।
बिम्बोष्ठी परिपूर्ण चंद्रवदना सा नायका पद्मिनी॥ ३ ॥

गाथा

भ्रमराजाणइ रस विरसु, जो कुम्बइ वणराइ।
घुण्मा क्या जाणइ बापुड़ा, जे सुक्कलकुडा खाहू॥ ? ॥ ४५ ॥

संस्कृत

भ्रमरो जानाति रस विरसो यश्चुम्बति वनराजिम् ।
घूस: किं जानातु मन्दको, य: शुष्क काष्ठानि खादति ॥ ? ॥ ४५ ॥

खेद है कि दोनो रचनाओ में से किसी मे भी रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता का वृत्त आदि नही दिया हुआ है ।

अपभ्रंश की एक रचना—इसमे अपभ्रंश की छह् गाथाएँ दी हुई हैं जो सूक्तियो के रूप मे हैं तथा जिनका सस्कृत गद्य मे अर्थ भी दिए हुए हैं । एक विशेष बात जो देखने मे आती है वह यह है कि ये गाथाएँ पूर्वोक्त रचना माधवानल कामकदला (माधवानलाख्यानम्) मे भी हैं । माध्वानलाख्यानम् में इन गाथाओ की क्रम सख्याएँ २५, २६, ४५, ४६, ६० और ६४ हैं और इनका श्लोकबद्ध अनुवाद भी दिए हैं, देखिए पूर्वोक्त विवरण । खोग मे इनका केवल एक पत्र उपलब्ध हुआ है जिसमे न तो पुष्पिका ही दी हुई है और न रचनाकाल, लिपिकाल ही । रचयिता का भी इसमे नामोल्लेख नही ।

इन गाथाओ मे प्राचीन हिंदी के शब्द भी प्रयुक्त हुए है जिनको सस्कृत टीकाकारो ने देशी लिखा है—

भमरा जाणइ रसविरसं जो चुंबई बहु फुल्ल जाइ ।
घूर्णांकि जाणइ बप्पुरा सुखी लाकरिखाइ ॥

इसमे आए 'बप्पुरा' और 'लाकरी' को टीकाकार ने देशी शब्द लिखा है । इससे इस बात की पुष्टि होती है कि अपभ्रंश परवर्तीकाल के कवि देशी शब्दो का व्यवहार नियमित रूप से करने लगे थे जिसके फलस्वरूप धीरे धीरे अपभ्रंश का रूप हिंदी के रूप मे बदलता गया ।

इन गाथाओ का समय जिनमे देशी शब्दो का भी मिश्रण पाया जाता है वि० १५वी शती से पहले का है । अपभ्रंश का समय पद्रहवी शती तक माना जाता है ।

नीचे दो गाथाओ को सस्कृत अर्थ सहित उद्धृत किया जाता है—

अपभ्रंश

"दीसइ विविह चरिउं जाणीजइ सुअण दुजण विसेसो अघाणं च कलिज्जइ हिंउज्जतेस्स पुहवीए ॥

संस्कृत गद्य

'अर्थ—दृश्यते विविध चरितं ज्ञायते सुजन दुर्जन विशेष: आत्मानं च चलये चतुरं अचतुरं भाग्यवतं अभाग्यत्वेन हिंडिगमने दृश्यते गम्यते पथिवी वीभ्रमणे एतादृशं ज्ञातं भवत्यर्थ: ॥

अपभ्रंश

'मेहस्स जलं चंदनस्स सीअलं दिनकरस्स करप्फसं ॥ सुपरिसाणं वितं जीवनं सअल लोअस्स ॥

संस्कृत गद्य

'मेघस्य जलं चंद्रस्य सीतलं दिनकरस्य कर स्पर्श: सत्पुरुषाणां वित्तं जीवनं सकल लोकस्य ॥"

षट्पद के भेद—इस रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है जिसमे केवल आठ ही पत्रे हैं । रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता का इसमे कोई उल्लेख नही । इसमे छप्पय (षट्पद) छदो के निम्नलिखित भेदो का वर्णन है—

१. अजय, २ विजय, ३. बलि, ४. कर्ण, ५ वीर, ६. वेताल, ७ वृहत्, ८ मक्कल, ९. हरि, १०. हर, ११ ब्रह्म, १२. इद्र, १३. चंदन, १४ सुभ्रुभकर, १५. श्वान, १६. सिघ, १७. शार्दूल, १८. कुभ, १९. कोकिल, २०. खर, २१ कुजर, २२. मदन, २३ मत्स्य, २४. ताटक, २५. सेल, २६. सारग, २८. इष्ट, २८. शर, २९. सुशर, ३०. कुद और कमल ।

छप्पयों के जितने उदाहरण दिए गए हैं उनमें रामराज्य और महाभारत के युद्धों का ही वर्णन मिलता है। भाषा इनकी प्राचीन है। अतः विदित होता है कि यह उस समय की रचना है जब छप्पय छंदो का अधिक प्रचार था।

रचना का नाम नही दिया है। विषय को देखकर और प्रारभ के दो दोहो के प्राधार पर ही इसका नाम 'षट्पद के भेद' रखा है—

गुरु लघु लो कुसुमनि ब हे नवरस में रसलीन।
षट्पद के अवतार को समुझो सुकवि प्रवीन॥ १॥
अजय विजय के भेद को समुझौं सकल सुजान।
कियो न ओर उदाहरन याहीते पहिचान॥ २॥

इसमे प्रत्येक छप्पय के गुरु, लघु मात्राओ और समस्त अक्षरों की सख्याएँ भी दे दी गई हैं। नीचे दो उदाहरण दिए जाते हैं जिनमे से एक मे राम रावण युद्ध का और दूसरे मे महाभारत युद्ध का वर्णन है—

अजय नाम षट्पद यथा

आवंता जे दुग्ग धीर वीरा गाजंता।
मातंगा उत्तुंग अंग जुद्धे भाजंता।
सावंता झुक्कार खग्ग धाए धावंता।
पीवंता असंगि झुज्झ जुज्झे भावंता।
गावंती जित्ते अक्षरी सरा सूरा संचए।
रामो लंका कसंत ए सो देवा सिद्धा नंचए॥ १॥
S S S S S I S I S S S S S
S S S S S I S I S S S S S
S S S S S I S I S S S S S
S S S S S I S I S S S S S
S S S S S S I S S S S S S S I S
S S S S S S I S S S S S S S I S
:o: :o: :o:

गुरु ७० ल १२ अक्षर ८२

कुंब नाम षट्पद यथा

गिरत रिथ्थ सारथ्थि सूर रन रंग गरज्जिय।
भिरत मत्त मातंग अंग करिवार तरज्जिय।
निरत संभु कप्पाल माल धर पद्य लरज्जिय।
तिरत भूत वेताल सिंधु सोनिल भरज्जिय।
वाजंत जोति निसान वर धीर बीर भारथ्थ सिय।
सावंत भीर मथिसो सुग्ग मग्ग पारथ्थ दिय॥२८॥
III S I S S I S III S II S II
III S I S S I S III S II S II
III S I S S I S III S II S II
III S I S S I S III S II S II
S S I S I S S III S I S I S S III
S S I S I S S III S I S I S S III

गुरु ४३ ल ६६ अक्षर १०९

सीता बनबास कथा—इस रचना के केवल चार ही पन्ने उपलब्ध हुए है जो अत्यन्त जीर्णशीर्ण दशा मे है और कैथी लिपि मे लिखे हुए हैं तथा जिनके द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल

और रचयिता के संबंध मे कुछ भी विदित नही होता। इसमे सीता के वनवास की कथा का काव्यशैली मे बहुत सुदर वर्णन किया गया है। रचना दोहा, चौपाई छदो मे की गई है जिनकी भाषा अवधी है। इस ग्रथ की शैली ईश्वरदास (आचार्य शुक्ल कृत हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० ७२–७४) कृत 'सत्यवती कथा' की शैली से मिलती जुलती है। अत. सभव है यह भी उक्त काव्य ईश्वरदास की ही रचना हो। ये दिल्ली के बादशाह शाह सिकदर (सवत् १५४६–७४) के समय मे विद्यमान थे। पिछली खोज विवरणिका (१९४८–४६) मे उल्लिखित 'भरत विलाप' और 'अगद पैज' भी इन्ही की रचनाएं हैं। मिलान के लिये इन रचनाओ से कुछ उद्धरण दिए जाते हैं—

सत्यवती की कथा से—

रोवै व्याधि बहुत पुकारी। छोहन बिछ रोवं सब झारी॥
बाघ सिंघ रोवत वनमाहीं। रोवत पंछी बहुत अनाही॥
रिषिग्रन के राजा पुछत हव मौ तोहि।
कैसे बाढ़ ही पाचौ पंडौ कोर्ष अरय सुनावहु मोहि॥

भरतमिलाप से

रामभवर वनकीन्ह पेग्राना। राजा दशरय बहुत पछताना॥
रामभवर छाडा असथाना। रोए नगर सकल परधाना॥
रोए सीआ सतीवर नारी। राम लखन बीनु अवध उजारी॥
:o: :o: :o:
घर घर रोअही पुरुष वर नारी। राह बाट रोए पनिहारी॥
मनमह रोवत पसु ओ पंछी। हाहाकार रोए जल मंछी॥
:o: :o: :o:

अंगदपैज से

इ सब बन्‍ा कवर झरी। कैसे करव खेत मह मरी॥
गढे इनक (?कर) कौन भरोसा। रहही की जही (?जांहि) अपने देसा॥
मोरी दोहई मंत्री चोषे पठवहु एक छूता।
वेगि जइलं अवही वलिरइक पुत्रा (?वलिराइ के पूता)॥

सीता वनवास कथा

ताही निकुज वन भीतर शीता मेली लजव।
कीकर गही याड़शौ कंठ करहुगे घाउ॥
अआा लछन मेटैने पारा। रोअत निशरें पौरि दुआरा॥
बाहर पौरी परा मुरछाई। जानहु बीयकै बरीआ घाई॥
शारंथी शौ बोलं बीलखाई। रय एक शाजी आनुरे भाई॥
शारंथी रंय शाजी ले आवा। शोक मुरछाए लछन च......॥
शैं शीता के आगें ठोकी रंठ घ.........।
हुवंमान भौ शीता लछन दुआ.........॥
राती जो शाध पूछ...... । प्रातहीं शो रंय बीन्ह पठाई॥
जैसैं पंछी पानी पीआसा। आपनी उकुती वैं दे वैं लासा॥
शत शत शीता मन पतीआना। बाह्मन आजु देवो मैं वाना॥
तब भंडार शौ वस्तु लैं आवा। रंय उपर शभ आनि चढ़ावा॥
:o: :o: :o:
रोअही चाद शुरज औतारा। व शोहु दीशा रोअही दिखाला (?दिगकला)।
रोएं लछन वन शपतिया...... । वन मे ओगा रोअही ओआ......॥

भरतविलाप, अगपैज और सीता वनवास कथा एक ही कथा के अग हैं। अत: इससे भी यही जान पड़ता है कि ये सब एक ही रचयिता कृत हैं।

कवित्त दोहा संग्रह—इस त्रिवर्षी में मिले संग्रह ग्रंथों में यह महत्वपूर्ण संग्रह है : इसमें शृंगार और भक्ति विषयक लगभग चौबीस कवियो के उत्तमोत्तम कवित्तो और दोहो का सग्रह किया गया है । कवित्त पहले दिए हुए और तब दोहे हैं । कवियो के नाम इस प्रकार हैं—

१. आलम, २. शेख, ३ कवि वेनी, ४. ब्रह्म, ५. नरायन ६. मंडन, ७. जगन, ८. परवत, ९. अनंत, १०. अभिमन्यु, ११. गंग, १२. नवल सुजान, १३. आनद, १४. जगत् प्रसिद्ध, १५. कवि नाइक, १६. भगवंत, १७. अकबर साहि, १८. दयादेव, १९. रहीम, २०. गोकुल सुकवि, २१. सम्मन, २२. ए दिल, २३. कासिम तथा २४. लालन या ललन ।

इनमें से कुछ कवियो ने अपने कवित्तों में आश्रयदाताओं के भी उल्लेख किए हैं, यथा—मंडन ने खान तुरकमान का, अनत ने जहाँगीर का, अभिमन्यु ने अब्दुल रहीम खानखाना का, गंग ने अकबर बादशाह के पुत्र दानिशाह (दानियल) का, नवलसुजान ने दारासाहि (? दाराशिकोह, शाहजहाँ का प्रथम पुत्र) का और कवि नाइक ने शाहजहाँ का उल्लेख किया है । जगत् प्रसिद्ध ने तो जहाँगीर के उस फरमान का भी उल्लेख किया है जिसके अनुसार वैष्णवो को माला, कठी, तिलक और छाप दूर करने की आज्ञा दी गई थी । इसका उस समय बड़ा विरोध किया गया था जिसमे सबसे अधिक पुरुषार्थ गो० गोकुलनाथ जी ने दिखाया था । इस घटना के पश्चात् जगतप्रसिद्ध सोरों चले गए थे—

रचना गोकुलनाथ कहि सिख मेरी मानु ।
नाखिले और सबाब सब लखिले यहे सयानु ॥
लखिले यहे सयानु मालटारी न गरेतें ।
'जगत प्रसिद्ध' जिहितजि तेब घटि हैं नमरे तें ॥
ठोर ठोर चहुँ ओर फिरें फिटकारे असना ।
जानु यहे निरधार कहूँ जीवन मे रसना ॥२५६॥
भजिहों तुलसीमाल कों रजिहो करि यह नाउ ।
लजि हो नेकु न जगत में तजिहों गोकुल गाँउ ।
तजिहो गोकुल साहि सो बोले हरके ।
लेसे काकी पानि कोरि बसबैमा मठके ॥
'जगत प्रसिद्ध' ब्रवजात खेम सोंरों कों सजिहों ।
करि हों कछुन कलेस ठोर तजि अनत न भजिहों ॥२५७॥

नीचे विवरणिका के परिशिष्टो की सूची दी जाती है ।

परिशिष्टों की सूची—

परिशिष्ट १ ग्रंथकारो पर टिप्पणियाँ ।

परिशिष्ट २. ग्रथो के विवरणपत्र (उद्धरण, विषय, लिपि और कहाँ वर्तमान हैं आदि विवरण) ।

परिशिष्ट ३. उन महत्वपूर्ण रचनाओ के विवरणपत्र (उद्धरण, विषय, लिपि और कहाँ वर्तमान हैं आदि विवरण) जिनके रचयिता अज्ञात हैं ।

परिशिष्ट ४ (क). परिशिष्ट १ मे आए हुए उन कवियो और रचयिताओ की नामावली जो आजतक अज्ञात थे । (ख) परिशिष्ट १ और २ मे आए उन ग्रथो की नामावली जो खोज में नवीन मिले हैं । (ग) काव्य सग्रहो मे आए हुए उन कवियो की नामावली जिनका पता आज तक न था ।

परिशिष्ट ५. ग्रथकार और उनके आश्रयदाताओ की सूची । अत मे ग्रंथकारो और ग्रंथों की नामानुक्रमणिकाएँ दी गई हैं ।

१. अक्षर अनन्य—इनकी इस त्रिवर्षी मे तीन रचनाओ—१. ज्ञानबोध (विज्ञानबोध), २. राजयोग और ३. सुदरी चरित्र के विवरण लिए गए हैं । अतिम दो रचनाएँ क्रमशः खोज रिपोर्ट ५–२; ६–२ बी; २०–४ बी; २३–७ बी, सी) और (२०–७ ई; २६–

१४ जी) में उल्लिखित हैं। प्रथम रचना 'विग्रानबोध' नाम से मिली है, पर यह नाम अशुद्ध जान पडता है। 'विग्रान' शब्द का कोई अर्थ नही। सभवतः प्रति के कैथी लिपि में, जो बहुत भ्रष्ट है, लिखी होने के कारण ही यह अशुद्धि हुई है। वास्तव मे यह 'ज्ञानबोध' या 'विज्ञान बोध' है। पिछली रिपोर्टों (६–२ डी, २३–७ ए, ४१–४७१) मे ज्ञानबोध का उल्लेख हो चुका है। उनमे इसकी उल्लिखित प्रतियो से मिलान करने पर प्रस्तुत प्रतियों मे यद्यपि अनेक पाठभेद हैं, तो भी वह वही ठहरती है। पाठभेद का कारण इसकी कैथी लिपि ही है, जो अन्वेषक द्वारा ठीक ठीक नही पढ़ी जा सकी।

रचनाकाल किसी रचना मे नही दिया है। लिपिकाल प्रथम दो मे, जो एक ही हस्तलेख मे हैं, सवत् १८८२ वि० दिया है। अतिम रचना मे लिपिकाल भी नही है।

रचयिता का प्रस्तुत रचनाओ मे कोई वृत्त नही दिया है, पर उक्त रिपोर्टों के आधार पर इनका वृत्त इस प्रकार है—

"जन्म सवत् १७१०, सवत् १७५४ तक वर्तमान। दतिया रियासत के अतर्गत सेनुहरा के कायस्थ और कुछ दिनों तक दतिया के राजा पृथ्वीसिंह के दीवान। विरक्त होकर पन्ना मे रहने लगे थे। प्रसिद्ध महाराज छत्रसाल के गुरु।"

२. **अगरदास**—इनकी बिना नाम की एक रचना मिली है, जिसमे राम लक्ष्मण और भरत शत्रुघ्न के जेवनार का वर्णन है। विषय के अनुसार इसका नाम "रामजेवनार" रख दिया है। यह खडित है, जिससे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता। कविता की दृष्टि से रचना साधारण है।

रचयिता का प्रस्तुत रचना द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। अतः नही कहा जा सकता कि ये गलता निवासी, कृष्णदास पयहारी के शिष्य सुप्रसिद्ध स्वा० अग्रदास ही हैं, या अन्य।

३. **अजबदास**—इनके "झूलना (ककहरा)" और "दोहा कवित्त" नामक रचनाओ के दो विवरण लिए गए है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल "दोहा कवित्तो" का दिया है, जो सवत् १६५० वि० है। प्रथम रचना का जिसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है, उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३–६ ए, २६–५ ए, बी, १२–१, २३–६ बी) मे हो चुका है। दूसरी रचना, "दोहा कवित्त", पहली बार मिली है। इसका विषय भी 'झूलना' की तरह ही भक्ति और ज्ञानोपदेश है।

रचयिता का प्रस्तुत रचनाओ द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। उक्त रिपोर्टों के आधार पर इनका विवरण इस प्रकार है—

"कान्यकुब्ज ब्राह्मण। कायस्थो की पलिया (सुलतानपुर) मे जन्म। वैष्णव। पिता का नाम अज्ञदास और पुत्र का नाम जानकीदास जो अच्छे कवि थे। अयोध्या मे सवत् १६८० मे देहात।"

४. **अनंतदास**—इनकी "सेऊसमन की परिचयी" नामक रचना की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। पिछली दो रिपोर्टों (३२–६, ४१–२) मे इसका उल्लेख हो चुका है। यद्यपि इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण है तो भी रचनाकाल और लिपिकाल का इसके द्वारा कोई पता नही चलता।

रचयिता के वृत्त के सबध मे भी इससे कुछ विदित नही होता। पिछली रिपोर्टों के अनुसार ये सवत् १६४५ मे वर्तमान, वैष्णव साधु, विनोददास (अग्रदास के शिष्य) के शिष्य थे, देखिए खोज रिपोर्ट (१–१३३, ६–१२८, ६–५, २३,–१८, ३२–६, ४१–२, ४४–६)। अतिम रिपोर्ट मे इनके गुरु का नाम विनोददास निश्चित किया गया है। पहले अग्रदास माना गया था जो भूल है।

५. **अमरसिंह**—इनकी रची "स्वप्नभेद" नामक रचना के विवरण प्रथम बार ही लिए गए हैं। यह बृहस्पति कृत इसी नाम की सस्कृत रचना का हिंदी पद्यानुवाद है। इसमे स्वप्नो के फलाफल पर विचार किया गया है। रचनाकाल सवत् १८६६ है, लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का विवरण भी अज्ञात है। ये खोज रिपोर्ट (६–३ ए, २३–१०, २६–७;

२९–१०) पर आए इस नाम के रचयिता से भिन्न हैं या अभिन्न कुछ नहीं कहा जा सकता। अतः खोज में नवोपलब्ध हैं।

६. अयोध्याप्रसाद (वाजपेयी) "औध"—इनके द्वारा रचित 'रघुनाथशिकार' नामक ग्रंथ का विवरण लिया गया है। ग्रंथ सन् १९१५ ई० में हनुमत प्रेस, कालाकांकर, प्रतापगढ़ (अवध) से मुद्रित हो चुका है और खोज विवरण (२३–२४ बी) में इसका उल्लेख भी हो चुका है। रचयिता अपने जीवनकाल में ग्रंथ को समाप्त नहीं कर सका था, अतएव उसकी मृत्यु के उपरांत उसके पौत्र हरिशंकर ने इसको पूरा किया। ग्रंथांत में इस तरह का उल्लेख है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल दिया तो है, पर वह अस्पष्ट है—

संवत ईश्वर तस वर्ष तापर बाइस ठेहरा।
हस्ता कवरी भान जोग सित जेठ वसहरा॥

उपर्युक्त खोज विवरण में संवत् १८८८ वि० रचनाकाल दिया है।

प्रस्तुत प्रति के अंत मे संवत् १९२३ दिया है, जो संभवतः उस प्रति का लिपिकाल विदित होता है, जो उपर्युक्त प्रेस को छापने के लिये दी गई थी।

ग्रंथ में श्री रामचंद्र जी का आखेट करने का वर्णन है।

रचयिता के वृत्त के संबंध मे पुस्तक की भूमिका मे श्री पं० चंपराम जी मिश्र, डिप्टी कलक्टर ने इस प्रकार लिखा है—

"रचयिता रायबरेली के सांतनपुरवा के रहनेवाले वाजपेयी ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नदकिशोर तथा भाइयो का लक्ष्मण प्रसाद, चतुर्भुज और भारत था। इनका अंतिम समय अयोध्या मे व्यतीत हुआ। पद्माकर जी से भी इनका परिचय था। महाराज हरिदत्त सिंह, रियासत बौंड़ी (बहराइच), राजा सुदर्शन सिंह, चदापुर; बलरामपुर नरेश महाराज दिग्विजय सिंह; गोंडा के पांडेय कृष्णदत्त जी और राव मुनीश्वरबख्श सिंह जी, रियासत मल्लापुर ने रचयिता को भूमि, धन आदि देकर समानित किया था। रचयिता के नीचे लिखे आठ ग्रंथ हैं—

१. साहित्यसुधासागर, २ रघुनाथ शिकार, ३. छदानद, ४ शकरशतक, ५. ब्रज बृज्या, ६. रागरत्न, ७. चित्र काव्य और ८. रामकविलावली, जिसका उल्लेख शिवसिंह सरोज मे भी है। प्रथम तीन ग्रंथ 'बौंड़ी' मे लिखे गए थे। रचयिता के वंशज अब भी चदापुर (बहराइच) मे हैं। इनके दो पुत्र वैद्यनाथ और शिवनाथ थे। वैद्यनाथ के तीन पुत्रो मे 'हरिशंकर' सतान रहित मर गए। रामशकर और शिवनारायण वाजपेयीपुरवा (बहराइच) मे है। इनका जन्म सवत् १८६० वि० और मृत्यु १९४२ वि० है।"

प्रस्तुत रचना सहित अब तक इनकी छह रचनाओ—१ अवध शिकार, २. रघुनाथ शिकार, ३. रघुनाथ सवारी, ४. रागरत्नावली, ५. साहित्य सुधासागर और ६. सुंदर शिकार का पता लग चुका है, देखिए खोज रिपोर्ट (२३–२४ ए, बी, सी, डी, ई, २६–२१)। उक्त रिपोर्टों मे इनका वृत्त सक्षेप मे दिया है। इस बार विस्तृत विवरण प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत प्रति द्वारा इनका उपनाम "औध" विदित होता है। शिवसिंह सरोज में भी यही उपनाम दिया है।

७. अवधप्रसाद बाबा—ये 'विनयशतक' के रचयिता है। रचना मे विनय, स्तुति और ज्ञानोपदेश विषयक पद हैं। रचनाकाल और लिपिकाल दिए नही। रचयिता का भी इसके द्वारा कोई परिचय नही मिलता। परतु इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२५–५ सी) पर हो चुका है जिसके अनुसार रचयिता सत्यनामी पथानुयायी महात्मा दूलनदास जी के वंश मे तदीपुर तहसील, महाराजगंज (रायबरेली) मे सवत् १८८० के लगभग उत्पन्न हुए थे। बस्ती जिले के पुरइन ग्राम के निवासी थे जहाँ संवत् १९६६ वि० मे ६७ वर्ष की अवस्था में इनका देहावसान हुआ।

८. अवधेश—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनका पता प्रथम बार ही लगा है। इनके कुछ 'कवित्तों' के विवरण लिए गए हैं जिनमें भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। हिंदू-तुरक झगड़ा के सबंध

में भी इन्होंने सतोचित विचार प्रकट किए हैं, अत ये कोई सत जान पडते हैं। कवित्तों में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही तथा उनके द्वारा रचयिता का कोई वृत्त भी नहीं मिलता।

९. **अहमकशाह**—इनकी 'अरस आसिक गदा' नामक रचना के विवरण लिए गए हैं, जिनमें सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता के सबध मे प्रस्तुत रचना मे इतना ही पता चलता है कि ये साईं मोहनदास के शिष्य थे। साईं मोहनदास एक पहुँचे हुए साधु हुए है जिनसे साईं मत का प्रचार हुआ। इस बार उनकी भी बहुत सी रचनाओ के विवरण लिए गए हैं, जिनके सबध मे आगे यथास्थान लिखा गया है, देखिए सख्या ३०९। इस मत मे 'अइनि', 'अरस', 'आलिस' और 'हंस' शब्दों का प्रयोग बहुलता से होता है।

प्रस्तुत रचना महाआनदशाह कृत 'अरस आशिक विनोद' और साईं मोहन कृत "अरस-भक्तिबोध" के साथ एक हस्तलेख मे है।

रचयिता का पता प्रथम बार ही लगा है।

१०. **अहलाददास या अहलाद साहब**—इनके दो ग्रथ "बानी या शब्द" और "शब्द झूलना" नाम से मिले है। प्रथम मे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल इसका अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९५० दिया है। खोज मे यह प्रथम बार मिला है। दूसरे ग्रथ का विषय भी ज्ञानोपदेश और भक्ति ही है। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल दोनो नही हैं। पिछली खोज रिपोर्ट (३५-१) मे इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता के संबध मे इन ग्रथो के द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये स्वामी जगजीवन दास जी के अनुयायी सतनामी पथी थे। उपर्युक्त रिपोर्ट मे इनका विवरण इस प्रकार दिया है—

"जगजीवन स्वामी के भतीजे, चदेलवशी क्षत्री, जन्म सरदहा मे सभवतः सवत् १७५० में। कोटवा (बाराबकी) के रहनेवाले। इन्होने स्वामी जी के बनाए हुए कई ग्रथ लिख कर पूर्ण किए थे। फारसी मे भी बहुत से रेखते बनाए है।"

इनके जगजीवन स्वामी के भतीजे होने के विषय मे "बानी या शब्द" ग्रथ के स्वामी (श्री महत गुरुप्रसाद दास, स्थान व पोस्ट, बछरावाँ, रायबरेली) के कथन द्वारा भी पुष्टि होती है। इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट (४४-१२) मे भी है, जिसमे इनकी 'ज्ञानचेटक" नामक रचना का विवरण है

११. **अहलाददास**—इनका पता खोज मे प्रथम बार ही लगा है, अतः पूर्व रचयिता से भिन्न हैं। 'सियारामगुणानुवाद' नामक इनकी एक खडित रचना के विवरण लिए गए हैं, जिसमें रामगुणानुवाद किया गया है। अत मे हनुमत वदना भी है, जिसमे २७ दोहे हैं। समस्त रचना मे नौ सौ चौपाइयाँ, चालीस दोहे और एक सौ आठ सोरठे हैं। रचनाकाल सवत् १८१४ वि० (१८२७ ?) है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता अयोध्या से पूर्व महुली राज्यातर्गत मताश्रम नगर के निवासी थे। महुली के सूर्यवंशी राजा सकंराज और उनके पुत्र राजा (छितिपाल) शमशेर बहादुरपाल का इन्होने उल्लेख किया है, जिससे पता चलता है कि ये सभवत राजा शमशेरबहादुर पाल के आश्रय मे रहते थे। इनके अतिरिक्त इनका और वृत्त नही मिलता। उक्त राजवश के वशज अब महसों (बस्ती) मे रहते हैं, जो महुली मे पश्चिम चौदह कोस पर है, ऐसा अन्वेषक (श्री कृष्णकुमार बाजपेयी) को पता चला है।

१२. **आत्माराम**—इनके दो ग्रथ 'परचुरण पद' और 'ब्रज लीला' नाम से मिले हैं, जिनका विषय क्रमश भक्ति और श्रीकृष्ण की ब्रजलीला है। दोनो ग्रथ आकार मे बडे हैं और रचना भी दोनो की पदो मे ही है, जिनकी भाषा पश्चिमी हिंदी है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी में नही दिए हैं। प्रथम ग्रथ के आरभ मे दूसरे ग्रंथ का उल्लेख किया गया है, इसलिये दोनो को एक ही रचयिता कृत माना गया है। दोनो मे रचयिता के नाम की छाप विद्यमान है। प्रथम ग्रथ के आरभ का लेख इस प्रकार है—

"अब परचुरण पद तथा श्री बाला जी महाराज ने नीत्यनांपद तथा ब्रजलीला लखी छे"

इन ग्रंथों से रचयिता के संबध मे कुछ विदित नही होता। इनमे प्रयुक्त भाषा के आधार पर इतना ही पता चलता है कि रचयिता पश्चिमी राजस्थान के रहनेवाले थे। ये अच्छे भक्त और प्रतिभावान कवि विदित होते हैं। खोज में प्रथम बार ही इनका पता लगा है। पिछली रिपोर्टों में आए इस नाम के रचयिताओं से ये सर्वथा भिन्न हैं और खोज मे नवोपलब्ध हैं।

१३. **आनंद कवि या अनंद कवि**—यह अपनी कोकशास्त्र सबंधी रचनाओं के लिये प्रसिद्ध हैं। इस विषय पर रची हुई भिन्न भिन्न नामो से इनकी कई रचनाएँ पिछली खोज रिपोर्टों में उल्लिखित हैं, देखिए खोज विवरणिकाएँ (२–५; ६–१२६ ए, १७–७; २०–६ ए, बी–२३–१३ बी से जे तक; २६–१० ए, बीसेके तक, २६–११; दि० ३१–७; प० २२–५ ए, बी) तथा (४४–१६)। परतु अब तक इनका वृत्त अज्ञात ही था। इस बार इनकी उक्त विषय पर लिखी हुई पाँच रचनाओ के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से एक मे, जिसका नाम 'कोकसार भाषा' है, इनका थोड़ा सा वृत्त उपलब्ध हुआ है। अतः इस दृष्टि से यह प्रति महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार ये कोट हिसार (? पजाब) के रहने वाले थे और जाति के कायस्थ थे। संवत् १६६० वि० में इन्होंने प्रस्तुत रचना की, जिसमे पद्रह खड है—

कायथ कुल 'आनंद कवि" वासी कोट हिसार।
कोक कला इह रुचि करन जिन बहु कियो बिचार॥ ६॥
ऋतु वसंत सं सोरह अरु ऊपर हुए साठि।
कोकसार कौ तब कियौ कम कम को पाठ॥
खंड पांच दस अति सरस रच्यो जो बहु विधि छंद।
पढ़त बढ़त अति चोप बाढत अधिक अनंग॥ ८॥
चमुर सुकवि पडित सरस जो जानत छवि छंद।
अक्षर टूट संवारेहु विनती करत "अनंद"॥ ६॥

इस उद्धरण की प्रथम पक्ति और अतिम पक्ति मे रचयिता के दोनो नाम 'आनद' और 'अनद' स्पष्ट रूप से दिए हुए है। राजस्थान मे हिदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज (द्वितीय भाग) के पृष्ठ १४१ मे उल्लिखित 'वचनविनोद' नामक पिंगल ग्रथ के रचयिता आनदराम या आनदराय कायस्थ भी यही जान पड़ते है। उक्त ग्रथ की पुष्पिका इस प्रकार है॥

"इति "आनंदराय" कायस्थ भटनागर हिसारि कृत "वचन विनोद" समाप्त। लेखन सं० १६७६ वर्षे आसु सुदि ४ सनौ लिखत नागोरमध्ये तेजाकेन स्वाध्यीत्यं"।

उक्त राजस्थान के खोज विवरण मे पृष्ठ १४१ पर रचयिता के सबध मे इस प्रकार लिखा है :—

"आप सुप्रसिद्ध कवि काशीवासी तुलसीदास जी के शिष्य थे। आपके रचित 'वचन-विनोद' की प्रति सवत् १६७६ की लिखित होने से उसका निर्माण इससे पहले का ही निश्चित होता है। प्रति लेखक ने आपका विशेषण "हिसारी" लिखा है, अतः इनका मूल निवासस्थान "हिसार" ज्ञात होता है। मिश्रबधु विनोद पृष्ठ ३४७ मे कोकसार या कोकमजरी के कर्ता को "आनद कायस्थ, कोट हिसार के" लिखा है। इस ग्रथ की प्रति अनूप सस्कृत लाइब्रेरी मे स० १६८२ लिखित उपलब्ध है। समय, निवासस्थान और नाम पर विचार करते हुए कोकसार रचयिता आनद वचनविनोद के आनदराम कायस्थ ही प्रतीत होते है।"

जैसा कि उपर्युक्त विवरण से विदित होता है, रचयिता काशीवासी तुलसीदास जी के शिष्य थे। ये तुलसीदास मानस के रचयिता गो० तुलसीदास के अतिरिक्त और कोई नही, उक्त ग्रथ 'वचनविनोद' से यह स्पष्ट पता चलता है—

नमो कमल दल जुगल पग, श्री तुलसी गुरु नाम।
प्रगट जात जानत सकल, जहाँ तुलसी तहाँ राम॥ २॥

कासी बासी जगत गुरु, अविनासी रसलीन।
हरि दरसन बरसत सदा, जल समीप ज्यों मीन ॥ ३ ॥

प्रस्तुत खोज में मिली कोकशास्त्र की प्रतियो के नाम, रचनाकाल और लिपिकाल के क्रम इस प्रकार हैं—

१. **कोकसार भाषा**—रचनाकाल सवत् १६६० वि०, लिपिकाल संवत् १८६८ वि०।

२. **कोकशास्त्र**—रचनाकाल सवत् १६६० वि०, लिपिकाल नही दिया है।

३. **कोकसार या कोकसार दर्पण**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १६६७ वि०। यह ग्रथ रणथभौर के राजा भैरवसेन और उसके मत्री कोकदेव के प्रकरण से प्रारंभ किया गया है। इसमे पहले तारक राक्षस और महादेव पार्वती के विवाह का वर्णन कर कामशास्त्र का बीज रूप से उल्लेख हुआ है। पश्चात् कामदेव की उत्पत्ति और उसके स्वरूप का वर्णन है। अत मे प्रत्येक देश की स्त्रियो की रति रुचि का उल्लेख है।

४. **कोकसार**—रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल सवत् १८३१ वि०। इसमें इस विषय का प्रथम रचयिता वात्सायन मुनि का उल्लेख कर कामप्रदीप, पचवान, रतिरहस्य, मदन-विनोद, अनदरग (?अनगरग), रनिरजन और रतितरग नामक कामशास्त्र विषयक रचनाओ का उल्लेख हुआ है।

५. **मदनकोक**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। इसमे भी कामशास्त्र सबधी उपर्युक्त रचनाओ का उल्लेख है।

प्रस्तुत रचना 'नद' और 'जन मुकुद' के नाम से भी मिलती है। इस सबध मे देखिए सख्या १७६ पर 'नद और मुकुद' का विवरण।

१४. **आनंदघन या घनानद**—ये अपनी उत्कृष्ट काव्य रचनाओ द्वारा हिंदी-साहित्य-क्षेत्र मे प्रसिद्ध है। पिछली कई रिपोर्टों मे इनका उल्लेख है। इस बार इनकी दो रचनाएँ 'कवित्त' और 'सुजानहित' के विवरण लिए गए हैं। 'कवित्त' मे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही। विषय राधाकृष्ण का विरह, प्रेम और शृगार है। इसके बीच मे २५ माझ छदो मे 'प्रेमपत्रिका' अलग से लिखी हुई है। उसके छदो का क्रम कवित्तों के छदो के क्रम से अलग है। 'सुजानहित' की दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल किसी मे नही, लिपिकाल क्रमश. स० १९०३ और १८६८ वि० है। इनमे कृष्ण भक्ति, राधाकृष्ण का प्रेम और ब्रजलीलाओ का वर्णन है। दोनो प्रतियो के पाठ अलग अलग हैं। पिछली खोज रिपोर्टों (१२–४ बी, २६–११६ बी) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है।

इन रचनाओ द्वारा कवि के सबध मे नाम के अतिरिक्त और कुछ विदित नही होता। नए सक्षिप्त विवरण और उपर्युक्त रिपोर्टों मे इनका वृत्त इस प्रकार है—

"कायस्थ। जन्म स० १७१५। दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के मीर मुशी। अत समय मे वृदावन चले गए। कहते हैं कि नादिरशाह के आक्रमण मे उसके सैनिको द्वारा स० १७९६ मे मारे गए। पर यह सदिग्ध है। गुरु का नाम हरिदास। गानविद्या मे भी निपुण थे। रीवाँनरेश रघुनाथसिंह ने अपनी भक्तमाल मे इनका वर्णन किया है।"

प्रस्तुत रचनाएँ स्व० मयाशकर जी याज्ञिक द्वारा सगृहीत हैं।

१५. **आलम और शेख तथा शेखसांई**—इनका उल्लेख पिछली कई खोज रिपोर्टों में हो चुका है। प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनके चार कवित्त सग्रह—१. आलम के कवित्त, २. कवित्त, ३. रस कवित्त, ४ कवित्त शेखसांई—और दो रचनाएँ "माधवानलकामकदला" तथा "श्याम-सनेही", जो आलम की स्वतत्र कृतियाँ है, मिली हैं। 'रसकवित्त' जिसमे ४०० कवित्त हैं, और 'श्यामसनेही' की प्रतियाँ सबसे प्राचीन हैं। इनमे लिपिकाल क्रमश. सवत् १७९१ और १७७५ वि० दिए हैं। "श्यामसनेही" मे डा० भवानीशकर जी याज्ञिक (स्व० मयाशकर जी याज्ञिक के भतीजे) ने इस प्रकार टिप्पणी लिखी है—

"नागरीप्रचारिणी सभा की प्रति खडित है। अन्य कोई प्रति प्राप्त नही है।"

इससे इस रचना की प्रस्तुत प्रति का महत्व विदित होता है।

"कवित्त शेखसांई" से पता चलता है कि उसके रचयिता का नाम शेखसाई है, पर इसमें संगृहीत समस्त कवित्त आलम और शेख के हैं। अतः यह रचयिता के नाम के संबंध से विवाद उत्पन्न करता है। संभवतः आलम का ही नाम शेखसांई रहा हो। 'शेख' शब्द स्त्रीवाचक नहीं। मुसलमानो में "शेख" उपाधि भी है और एक वर्गविशेष का नाम भी। इसलिये सभव है, आलम शेख रहे हों और उन्होंने 'आलम' नाम के अतिरिक्त 'शेख' नाम से भी कविता की हो। इतना अवश्य है कि इसकी प्रस्तुत प्रति प्राचीन नही। अधिक से अधिक ५० या १०० वर्ष की होगी। फिर भी, यह तो निश्चित है ही कि यह प्रति किसी अन्य प्राचीन प्रति से ही नकल हुई होगी जिसमें 'कवित्त शेख साई' लिखा रहा होगा। इस दृष्टि से रचयिता (आलम) के नाम के सबध में इसके द्वारा संदेह उत्पन्न होता है, यद्यपि अभी इसकी कोई दृढ भित्ति नही। शेख साई का तात्पर्य शेख का पति (स्वामी) भी हो सकता है।

नीचे प्रस्तुत रचनाओ का उल्लेख, विषय, रचनाकाल और लिपिकाल के क्रम से किया जाता है—

१. **आलम के कवित्त**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय शृंगार हैं। इसमे आलम और शेख दोनो के कवित हैं।

२. **कवित्त**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय पूर्ववत्। इसमे भी शेख के कवित्त हैं।

३. **रसकवित्त**—रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल सवत् १७६१ वि०। विषय पूर्ववत्। शेख का नाम आया है, और इसमे चार सौ कवित्त हैं।

४. **कवित्त शेखसांई**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय भक्ति और शृगार। शेख के कवित्त इसमे भी हैं।

५. **माधवानलकामकंदला**—इसकी दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जो सवत् १८३६ और १६३५ वि० की लिखी हुई हैं। रचनाकाल सन् ६५१ हि० है। इसमे माधवानल और कामकदला की कथा का वर्णन है। सवत् १६३५ वाली प्रति मे मगलाचरण श्रीगनेश से आरंभ किया है। पीछे सरस्वती, जगद्गुरु और पारब्रह्म की वदनाएँ हैं। इनके पश्चात् मुहम्मद साहब, उनके चार यार और गौस कुतुब कादरी का नाम भी लिया गया है। वदना का यह प्रकार देखकर विदित होता है कि आलम की मूल प्रकृति हिंदू की थी और यह किंवदती कि "वह ब्राह्मण था" ठीक जान पडती है। इन्होने अकबर बादशाह का उल्लेख जगद्गुरु के रूप मे किया है, जिससे अकबर के दीनइलाही मत की पुष्टि होती है। राजा टोडरमल खत्री का भी महामंत्री के रूप मे उल्लेख है—

प्रस्तुत प्रति के ऊपर ग्रथस्वामी डा० भवानीशकर जी याज्ञिक का इस प्रकार लेख है—

"छदो के क्रमाको मे कई स्थान पर अशुद्धियाँ है। प्रत्येक पृष्ठ पर एक सोरठा, पाँच चौपाइयाँ (अर्द्धालियाँ) तथा १ दोहा है। पत्र सख्या १४४ (पृ० स० २८७)। सोरठा २८७, अर्धालियाँ २८७ × ५ (५ अर्धालियो का छद), दोहा २८७—८६१। छदो के क्रमाको मे गड़बड़ी पत्र १०, ७५, ६८, ११३ आदि पर है।"

६. **श्यामसनेही**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १७७५ वि०। विषय श्रीकृष्ण रुक्मिणी की कथा का वर्णन। जैसा कि पूर्व मे लिखा है, यह प्राचीन प्रति है, इसलिये महत्व की है। इससे अधिक प्राचीन प्रति इसकी अभी कोई नही।

ये समस्त रचनाएँ स्व० मयाशकर जी याज्ञिक द्वारा सग्रह की हुई हैं।

१६. **इंद्रजीत**—ये एक जैन रचयिता है और इनका इस त्रिवर्षी मे प्रथम बार ही पता चला है। इनका रचा हुआ "उत्तरपुराण भाषा" नामक ग्रथ मिला है, जिसमे सुव्रतनाथ, कुथनाथ, अरहनाथ और मल्लिनाथ जैन तीर्थंकरो का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८४० और लिपिकाल सवत् १८६७ वि० हैं। रचना प्रधानतः दोहा, चौपाई और सोरठो मे है, पर नराच आदि अन्य छंद भी प्रयुक्त हैं। कविता, जैसा कि इस प्रकार के ग्रथो की होनी चाहिए, सरल और सुबोध है।

इस ग्रंथ द्वारा रचयिता का इतना ही पता चलता है कि इन्होंने इसकी रचना भट्टारक जिनेंद्रभूषण के उपदेशानुसार की। भट्टारक जिनेंद्रभूषण ने कवि देवदत्त को भी 'उत्तर पुराण' की भाषा करने को कहा था। इस पुराण की, जिसका मूल संस्कृत मे है, कुछ कथाओं का अनुवाद देवदत्त ने और कुछ का प्रस्तुत रचयिता ने किया था। इससे स्पष्ट है कि भट्टारक जिनेंद्रभूषण, देवदत्त कवि और इंद्रजीत एक ही समय मे वर्तमान थे। भट्टारक जिनेंद्रभूषण श्री विश्वभूषण के शिष्य श्री ब्रह्महर्षसागर के पुत्र थे।

प्रस्तुत ग्रथ मे जो रचनाकाल दिया है, उससे लखनऊ के जैन विद्वान् श्री ज्योतिप्रसाद जी जैन (मेडिकल स्टोर, केसरबाग, लखनऊ) सहमत नही हैं। इसके लिये देखिए देवदत्त कवि सख्या १६४।

१७. **इच्छागिरि**—ये "काम कलासार या कोक कलासार" के रचयिता हैं। ग्रंथ मे इनका विस्तृत परिचय दिया है, जिसके अनुसार ये गामती के किनारे बसे लायपुर के निवासी थे। जाति के अतीथ और बानारसगिरि के नाती थे। लायपुर का राजा उस समय बिसेन वशी था जिसका नाम मदारबक्स था। रचयिता के कुल के लोग कभी किसी के अधीन नही हुए थे। केवल इन्होंने ही इस तरह की जान पहचान एक राजइलाही खान नामक व्यक्ति से की जो इन पर बड़े कृपालु थे। वे इन्हें अपने पास रखते थे। कुछ समय पश्चात् जब खान कूड़ा जहानाबाद के सूबा हो गए तो उन्होंने इनको अकबराबाद (आगरा) भेज दिया। आगरा मे इनकी जानपहचान डालचद नामक एक पडित से हुई जिनसे इन्होंने भाषा कविता का ज्ञान प्राप्त किया। वही अन्य लोगों से भी मिलता हो गई जिससे इनका जीवन सुखपूर्वक बीतने लगा। कुछ दिन पश्चात् इनके आश्रयदाता उपर्युक्त खान ने इन्हें अपने पास बुला लिया। इससे इन्हें मित्रो का वियोग सहना पड़ा और उन्हें, उपहार देने के लिये प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। ये खोज रिपोर्ट (६–१२१) मे उल्लिखित इस नाम के रचयिता से भिन्न है।

ग्रथ दोहा, चौपाई और सोरठो मे रचा गया है और विषय की दृष्टि से उत्तम है। रचनाकाल सवत् १८३७ और लिपिकाल सवत् १६२२ दिए है।

१८. **ईश्वरदास (इसरदास)**—इनकी "भरतविलाप या भरतमिलाप" नामक रचना की तीन प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। पिछली खोज रिपोर्ट (२३–१७३, ४४–२१) पर इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता का ग्रथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। उपर्युक्त खोज रिपोर्ट (४४–२१ और २२) मे इनके सबध मे कुछ विस्तार से टिप्पणी दी गई है, जिसमे यह प्रतिपादन किया गया है कि ये आचार्य रामचद्रशुक्ल कृत "हिंदी साहित्य के इतिहास" पृष्ठ ७२ पर उल्लिखित ईश्वरदास हैं, जिनकी एक रचना 'सत्यवती कथा' का उक्त इतिहास मे वर्णन है। उसके आधार पर रचयिता जो गिरिपुर स्थान के निवासी और दिल्ली के बादशाह शाह सिकदर (सवत् १५४६ से १५७४ वि०) के समय मे वर्तमान थे।

१६. **ईश्वरदास गोसांई**—इनकी रची हुई "युधिष्ठिर यज्ञ" नामक एक छोटी सी रचना के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल इसका अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १६२६ दिया है। विषय नाम से ही स्पष्ट है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। पिछली खोज रिपोर्ट (प० २२–११७, २६–१५६, २३–१७३, २६–१८५, २६–१६०) मे आए इस नाम के रचयिताओं मे से कोई एक है या नहीं, कुछ नही कहा जा सकता।

२०. **ईसबीखाँ नवाब**—इनकी 'रसचद्रिका' के विवरण लिये गए हैं, जिसमे 'बिहारी सतसई' की ब्रजभाषा गद्य मे टीका की गई है। पिछली खोज रिपोर्ट (४१–१४) पर इसका उल्लेख हो चुका है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल दिया तो है, पर वह अस्पष्ट है—

नंवगढा बस भूमि गुन कीजै बरष विचारि।
रस चंद्रका प्रकास किय सुदि पूरन गुरुवारि॥७०१॥

इसमें 'गढ़ा' शब्द किस संख्या के लिये प्रयुक्त हुआ है, स्पष्ट नहीं होता। उपर्युक्त पिछली रिपोर्ट मे उल्लिखित प्रति द्वारा रचनाकाल संवत् १८०६ विदित होता है—

संब गगन बसुभूमि गुनि कीजै बरष विचार।
रसचंद्रका प्रकास किय मधु (शुचि) पून्यो गुरु बार॥ ५॥

इस दोहे मे आए 'गगन' शब्द से पता चलता है, कि प्रस्तुत प्रति मे आया 'गढ़ा' शब्द अशुद्ध है, और यह 'गगन' का विकृत रुप है। अतः रचनाकाल सं० १८०६ वि० होना चाहिए।

प्रस्तुत प्रति सवत् १८८८ वि० मे लिखी गई थी। इसको रीवावासी किसी शेख खुदाबक्श (सेख खुदाबगस) नामक मुसलमान लेखक ने श्री बाबू साहिब विश्वनाथ सिंह जू देव की आज्ञा से लिखा था। पुष्पिका मे ऐसा उल्लेख किया गया है—

"इति नवाब इसबीषां विरचितं विहारीसतसैया ॥टीका॥ रसचंद्रिका संपूर्ण समाप्त गनस्तु॥ साब वदि ५ बुधवासरे संमतु॥ १८८८ मुकाम रीमा लिषतं श्रीसेष षुदाबगस॥ जैसी प्रति को हती तैसी लिषी बिचारि अधिक चूक हमसो परै लीजो ताहि सुधारि श्री बाबू साहिब बिसुनाथ सिंघ जू देव के हुकुम सो लिषी गो कोइ बाचे और सुनै ताको सलाम पहुंचे॥"

यदि ये 'विश्वनाथ सिंह जी' रीवा के महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव (१८७०-१९११ ई०) हैं, तो प्रति विशेष महत्व रखती है।

रचयिता के संबंध मे प्रस्तुत प्रति से इतना प्रकट होता है कि ये नरवर (ग्वालियर) के राजा छत्रसिंह के आश्रय मे रहते थे और उन्ही की आज्ञा से प्रस्तुत टीका की रचना की। राजा छत्रसिंह का उल्लेख खोज रिपोर्ट (६-२१७) पर हुआ है।

२१. **उसमदास (उमरावसिंह)**—ये 'छदमहोदधिपिंगल' नामक ग्रथ के रचयिता हैं। ग्रथ की पुष्पिका द्वारा इनका वास्तविक नाम उमराव सिंह विदित होता है। ये जाति के कायस्थ (चित्रगुप्त) थे। पिता का नाम धनिलाल या धनपति था, जो कवि थे। वदाऊ (वेदामऊ) में अगरिया नगरी के निवासी थे। इनके पिता बाहर से बदाऊँ मे आए थे। अपने छोटे भाई, वसंतराय, जो विद्वान् और प्रसिद्ध व्यक्ति थे, के अनुरोध पर इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

ग्रथ मे रचनाकाल चौपाई मे इस प्रकार दिया है—

"संवत ऋतु नर्भ रस पाशि मीता। ज्येष्ठ मासर विवार पुनीता॥
शुक्ल त्रयोदसि तिथि शुभ जानी। छंद महोदधि प्रगटयो आनी॥११॥'

इसमे 'पाशि' (रेखाकित) स्पष्टत· 'शशि' का अशुद्ध रूप है, जो लिपिकार के हस्तदोष से हुआ है। अत. रचनाकाल के लिये प्रयुक्त इस चौपाई मे सख्यावाची शब्द ऋतु, नर्भ (नभ), रस और शशि हैं। अब यदि 'रस' की सग्या ६ माने तो सवत् १६०६ वि० होता है। परतु ग्रथ की भाषा इतनी प्राचीन नही जँचती। इसलिए 'रस' की सख्या ९ (काव्यरस) मानना उति है, जिससे रचनाकार सवत् १९०६ होता है। ग्रथ की भाषा को देखते हुए यह ठीक जान पड़ता है ऽ

इसकी प्रस्तुत प्रति सन् १८७७ ई० (सवत् १९३४) मे ज्वालाप्रसाद प्रेस, मेरठ द्वारा छपी थी।

२२. **उदोत कवि**—ये कोश विषयक एक ग्रथ "अनेकार्थमजरी" के रचयिता हैं। ग्रथ के अनुसार ये काशी मे रहते थे। जन्मस्थान टीकमगढ ग्वालियर (टीकमगढ ग्वारियर) था। जाति के सनाढ्य (पाठक) ब्राह्मण थे। पिता का नाम सभवतः स्यामसिश्र था। किसी रामसिंघ ने इनको "उदोत कवि" की उपाधि दी थी। औरगजेब बादशाह (१७१५-१७६४ ई०) के समय मे वर्तमान और विहारप्रात के सूबा श्री वुजुक के मत्री सयमलराम के पुत्र पूरनमल्ल के आश्रित थे। जिनके लिए प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई। बिहार के पटना नगर के लिये इन्होंने लिखा है कि उसके समान दूसरा नगर न था।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। यह आरभ मे खंडित है।

२३. **ऋषिनाथ**—इनकी अलकार विषयक रचना "अलकारमजरी" की दो प्रतियों

के विवरण इस बार भी लिये गए हैं। रचनाकाल संवत् १८३० है। लिपिकाल दोनों प्रतियों का सवत् १८६० है। पिछली खोज रिपोर्ट (२०-१६६) पर इस ग्रंथ का उल्लेख हो गया है।

ग्रथ द्वारा रचयिता बनारस के राजा वरिबडसिंह के दीवान दोहाराम के पुत्र रघुबर और भानजे सदानद के आश्रित थे। रघुबर और सदानद कायस्थ थे और राजा चेतसिंह के यहाँ क्रमश' दीवान और बख्शी थे। इन्ही के कहने पर प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई। ग्रथ मे रचयिता ने अपने को स्पष्ट रूप से असनी का ऋषिनाथ कहा है—

सदानंद रघुबर कृपा करि राख्यो निज साथ।
जस नीको नित करत है, "असनी" को ऋषिनाथ॥

सक्षिप्त विवरण और उपर्युक्त पिछली खोज रिपोर्ट द्वारा प्रकट होता है कि ये ब्रह्मभट्ट थे और काशीराज के भाई देवकीनदन सिंह के भी आश्रय मे रहते थे तथा कवि सेवकराम (वाग्विलास के रचयिता') इनके पौत्र थे।

२४. **कबीर**—इनके नाम पर इस बार भी १३ ग्रथो के विवरण लिये गए हैं, जिनमें से चार ग्रंथ—१ कुजालाकथा, २. ग्रथ नाममाला, ३. निरनसार और ४. सारभेद नए मिले हैं। प्रथम मे जीव का बधन मे पडने का कारण और उसके मोक्ष का उपाय वर्णित है। रचना काल और लिपिकाल इसमे नही दिए हैं। शेष रचनाओं का विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल इनका अज्ञात है, लिपिकाल क्रमश: १८६१, १६४४ और १६३५ वि० है।

अन्य ग्रथों का उल्लेख पिछली रिपोर्टों मे हो चुका है। नीचे उनका उल्लेख रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से किया जाता है—

१. **अखरावली**—इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३-११८ ए; २६-२१४ ए; २६-१७६ ए. बी, सी, ३२-१०३ बी, सी, ४१-४७७ क) मे हो गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। विषय प्रत्येक अक्षर पर दोहा चौपाई रचकर ज्ञान और भक्ति का उपदेश।

२. **कबीर देवदत्त की गोष्ठ**—इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३-१६८ एच) मे हो चुका है। रचनाकाल, लिपिकाल दोनो अज्ञात। विषय—कबीर देवदत्त (?) की गोष्टी के रूप मे ज्ञानोपदेश।

३. **कुर्मविली**—खोज रिपोर्ट (२३-१६८ के, २६-१७६ क) मे इसका उल्लेख है। रचनाकाल अविदित, लिपिकाल सवत् १८३३ है। विषय—कूर्म आदि अवतारों और सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन। यह कबीर धर्मदाससवाद के रूप मे है।

४. **ज्ञानतिलक**—खोज रिपोर्ट (३२-१०३ एल) मे यह उल्लिखित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

५. **निर्भयज्ञान**—खोज रिपोर्ट (६-१७७ आर, ६-१३४ ओ) पर यह आ चुकी है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८६२ वि० दिया है। विषय—कबीर का वृत्त और ज्ञानोपदेश।

६. **बारामासा**—इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (६-१४३ जे, ३२-१० डी, ई) में है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—ज्ञानोपदेश।

७. **बीजक रमैनी**—इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (६-१४३ एल, २०-७४ ए, २३-१६८ आइ, जे, २६-७६ डी) मे हुआ है। रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल सवत् १८६४ वि०। विषय—भक्ति, ज्ञानोपदेश। इसमे रमैनी, पद, साखी, कहरा, वसत, बेलि, बिरहुली, चाचरी, हिंडोला, विप्रमतीसी और चौंतीसी आदि रचनाएँ हैं।

८. **अवतारन**—खोज रिपोर्ट (४१-२१ ग) मे उल्लेख है। रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल सवत् १६१८ वि०। विषय—भक्ति, ज्ञानोपदेश।

९. **मूल ज्ञान**—इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (४८-३२) मे है। रचनाकाल अविदित. लिपिकाल सवत् १६२६ वि०। विषय—ज्ञानोपदेश विषय का वर्णन।

इन ग्रथो द्वारा रचयिता के विषय मे कोई नवीन बात नही मिलती। इसमे भी संदेह है कि ये सभी रचनाएँ कबीर की ही हैं।

२५. **कमलनयन (कमलनैन)**—ये एक जैन रचयिता हैं। इस त्रिवर्षी में इनके "जिनदत्त चरित्र भाषा" नामक ग्रंथ के विवरण लिए गए हैं। इसमें जैन धर्मानुयायी जिनदत्त के चरित्र का वर्णन है। रचनाकाल इसमे दिया तो है, पर वह लिपिकाल से, जो संवत् १६०७ है, मेल नही खाता—

> ० ७ ६ १
> **गगन रिवीस्वर रंध्र पुनि चंद्र तथा परमान।**
> **सब मिलि कीजै एकठे संवतसर पहिचानि॥**

यदि 'रंध्र' की संख्या ६ लें तो सवत् १६७० होता है, जो लिपिकाल (सं० १६०७) को देखते हुए अशुद्ध है। अतः यह अस्पष्ट है। जैन विद्वान् श्री ज्योतिप्रसाद जी जैन (मेडिकल स्टोर, केसरबाग, लखनऊ) के कथनानुसार प्रस्तुत ग्रथ का रचनाकाल संवत् १८७० के लगभग होना चाहिए।

ग्रथ के अनुसार रचयिता इटावा परगने के अंतर्गत भीमगाँव क्षेत्र में मैनपुरी के रहनेवाले थे। उस समय इटावा चकला (इलाका या जिला) था, जो आगरा सूबा के अतर्गत और कन्नौज सरकार द्वारा शासित था। राजा दलेल सिंह मैनपुरी के राजा थे। उसी मैनपुरी में नंदराम और हरचंदराय दो भाई रहते थे। हरचदराय वैद्य थे और छत्रपति तथा प्रस्तुत रचयिता कमलनयन उनके पुत्र थे। नंदराम के पुत्र स्यामलाल थे, जिन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ रचने में रचयिता की सहायता की। रचयिता प्रस्तुत खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२६. **करताराम**—ये "शालिहोत्र" ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ पिछली खोज रिपोर्ट (४१–२२ क, ख; ४४–३४) मे आ चुका है। इस बार भी इसकी तीन प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल एक प्रति मे दिया है, जो सवत् १८५४ वि० है। लिपिकाल प्रथम दो प्रतियो मे है, जो क्रमश सवत् १६३० वि० (१२८१ साल) और १६२६ वि० है।

रचयिता का ग्रंथ की प्रथम प्रति द्वारा इतना ही वृत्त मिलता है कि उन्होंने ग्रथ की रचना खैरीधाम नामक गाँव मे की थी। सक्षिप्त विवरण और उपर्युक्त रिपोर्टों के अनुसार ये ब्राह्मण थे। सिंधुवा (गोरखपुर) इनका निवासस्थान था। सभवतः पडरौना (गोरखपुर) के राजा रमनीराय के आश्रित थे।

२७. **करताराम**—इनकी "दधिलीला" नामक रचना की एक खडित प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही है। श्रीकृष्ण और गोपियों की दधिलीला का इसमे वर्णन है। ग्रथ का उल्लेख खोज रिपोर्ट (४४–३३) मे हो चुका है।

रचयिता का इस ग्रंथ द्वारा अभी तक कोई वृत्त उपलब्ध नही हो सका है। पूर्वोक्त 'शालिहोत्र' के इस नाम के रचयिता से ये भिन्न हैं या अभिन्न निश्चित रूप से नही कहा जा सकता। संभव है, ये दोनो एक ही हैं। शालिहोत्र मे रचयिता ने जहाँ तहाँ अपने को कवि कहा है, अत हो सकता है कि प्रस्तुत रचना ही उनके कवि कर्म की द्योतक हो, क्योंकि कविता की दृष्टि से यह अच्छी है। इसमे दोहा, कवित्त और सवैया छदो मे रचना की गई है।

२८. **कान्हकवि (कान्हर)**—इनकी 'रागरंग' नामक रचना के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। पिछली खोज रिपोर्टों (२६–१८४, ३२–१०७ ए) मे इसका उल्लेख हो चुका है। सक्षिप्त विवरण मे उक्त रिपोर्टों मे उल्लिखित इस नाम के रचयिताओ को अलग अलग माना गया है, जो भूल है। ये दोनो एक ही है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् दोहा मे दिया है, जो उपर्युक्त रिपोर्टों के ही अनुसार है और जिससे सवत् १८०२ और १८०४ दोनो निकलते है—

> १८ २या४
> **संवत धृति सत जुग बरस कान्हर सुकबि प्रसंग।**
> **क्वार सुदी तेरसि ससी रच्यौ ग्रंथ रसरंग॥२८७॥**

इसमें प्रयुक्त 'जुग' शब्द की सख्या २ या ४ (चार युग मानने से) दोनों हो सकती हैं। उपर्युक्त रिपोर्टों मे से प्रथम मे सवत् १८०४ वि० माना गया है।

प्रस्तुत प्रति सवत् १८६८ की लिखी है। रचयिता का नाम ग्रथ में 'कान्हर' भी आया है। इन्होने अपने विषय मे इस प्रकार लिखा है—

जाकी रचना देखिकै बाढ़ै प्रेम तरंग।
मनमैं अति सुख पाइकै कियो कान्ह रसरंग ॥२८६॥

इससे पता चलता है कि इनकी शृगार और प्रेम विषयक रचनाओ ने रसिकों का मन लुभा लिया था, जिससे उत्साहित और आनदित होकर इन्होंने प्रस्तुत रचना की। पूरा वृत्त इनका अभी तक अज्ञात है।

२९. कान्ह द्विज—ये "ज्योतिस्सारावलीभाषा" के रचयिता हैं और खोज मे नवोपलब्ध है। ग्रथ द्वारा इनका नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता।

ग्रथ का विषय फलित ज्योतिष है। रचनाकाल सवत् १९३५ दिया है, लिपिकाल ग्रंथ के खंडित होने के कारण अज्ञात है।

३०. पं० कालिप्रसाद वैद्य—इनका रचा हुआ "वैद्य प्रकाश" नामक ग्रथ का विवरण लिया गया है, जिसमे आयुर्वेद और यूनानी दोनो प्रकार की चिकित्साओं का वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सवत् १९१७ वि० विदित होता है। यह (सवत्) पुष्पिका मे दिया है, जिसमें लिपिकार का उल्लेख नही। पता चलता है कि यह मूल प्रति ही है। ग्रथस्वामी (प० शिवगोपाल जी, स्थान व डाकघर–डलमऊ, जिला–रायबरेली) के कथनानुसार रचयिता उनके पितामह थे और उक्त सवत् मे वर्तमान थे। इनके वश मे अब भी वैद्यकी होती आ रही है। ग्रथ गद्य मे है, जिसकी भाषा ब्रज है, पर उसमे खड़ी बोली का भी मिश्रण है।

३१. काशीप्रसाद शुक्ल या कासीराम—इनकी भगवती की स्तुति के सबध मे तीन रचनाएँ 'कवित्त', 'भगवती स्तुति' और 'शीतलाष्टक' मिली है। रचनाकाल और लिपिकाल का किसी मे उल्लेख नही।

रचयिता का भी इन रचनाओ से कोई वृत्त उपलब्ध नही होता। ग्रंथस्वामी (पं० कृष्णकुमार जी शुक्ल, ग्राम–रामदयाल का पुरवा, डाकघर–सग्रामगढ; जिला–प्रतापगढ) के कथनानुसार ये उनके पितामह थे और लगभग सौ वर्ष पहले वर्तमान थे। इनकी कविता सामान्य है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३२. कासिम—इनकी 'हस जवाहिर' नामक रचना इस बार भी मिली है, जिसमे बलखनगर के सुलतान ब्रह्मा के पुत्र हस और चीन के शाह आलम की पुत्री जवाहिर की प्रेमकथा का वर्णन है। रचना सूफी शैली की है। इसकी प्रस्तुत प्रति सवत् १९५३ वि० की मुद्रित है। रचनाकाल हिजरी सन् ११४९ (सवत् १७८८) है। पिछली खोज रिपोर्ट (२–१११) मे इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता के पिता का नाम अमानउल्ला था और वे दरियाबाद (अवध) के निवासी थे। अपने को इन्होंने हीन जाति का बतलाया है। मुहम्मदशाह का भी इन्होंने उल्लेख किया है, जिसका राज्यकाल सवत् १७७६ से १८०५ तक था।

३३. कासीदास—ये 'भाषा सम्यक्त कौमुदी' के रचयिता हैं और खोज मे नवोपलब्ध हैं। ग्रथ मे इन्होंने अपना विस्तृत विवरण दिया है, जिसके अनुसार ये आगरा के रहनेवाले थे। किसी जगतराइ के ये आश्रित थे, जिनको इन्होने राजा कहा है तथा जिनका परिचय इस प्रकार दिया है—

"माईदास सिघल गोत्र के अग्रवाल वैश्य थे। उनकी स्त्री लक्ष्मी तुल्य थी जिसके उदर से रामचंद और नंदलाल नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। ये शहर गुहाणा के निवासी थे। रामचद के पुत्र जगतराइ हुए जिनके लिये प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई। जगतराइ के टेकचद नामक पुत्र थे। ये सब लोग जैनी थे।"

इन्होंने (रचयिता ने) औरंगजेब का भी उल्लेख किया है, जिसने अपने पिता (शाहजहाँ) के जीवित ही राज्य ले लिया था। शाहजहाँ का विधाता ने जीवित ही मृतरूप (गतरूप) कर दिया था।

साहिजहाँ अवनीपति भूप। विद्यमान विधि कृत गत रूप॥
तासुत अवरंगसाह सुजान। विजयराज भुप्रति बलवान॥८७॥

विदित होता है कि औरंगजेब से रचयिता को अच्छा सम्मान प्राप्त था। निम्नलिखित चौपाई से ऐसा संकेत मिलता है—

"तासु प्रसादि भई यह सही। ईति भीति कोई व्यापी नहीं॥"

ग्रंथ मे अनेक जैन भक्तो की रोचक कथाओं का वर्णन है। अतः जैन कथा साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। रचनाकाल सवत् १७२२ वि० और लिपिकाल संवत् १९०४ विए हैं। रचना दोहा, चौपाइयो मे है तथा कविता इसकी ललित और प्रसाद गुण युक्त है।

३४. **किसनहरि या किशनसिंह**—'भद्रबाहु चरित्र' नामक ग्रथ के ये रचयिता हैं। ग्रंथ द्वारा इनका वृत्त इस प्रकार है—

"ये नागर चालदेश (?सभवत. गुजरात) मे बरवाड़ा गाँव के निकट रामपुरा" के निवासी थे। पिता का नाम देव और पितामह का राय वसत था। प्रस्तुत ग्रथ की रचना इन्होंने "ढुढाहरदेस के सागानर स्थान मे की।" सभवत. खोज रिपोर्ट (३२–११९) मे उल्लिखित 'क्रिया कोश' के रचयिता किशनसिंह यही जान पड़ते हैं।

ग्रथ मे भद्रबाहु नामक एक जैन धर्मानुयायी की कथा का रोचक वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७८३ वि० और लिपिकाल सवत् १८९१ वि० है। इसमें दोहा, चौपाई और छप्पय छद अधिक प्रयुक्त हुए हे। कथासाहित्य की दृष्टि से यह उत्तम रचना है। रतननदि कृत मूल सस्कृत ग्रथ का यह अनुवाद है।

३५. **किसोरदास द्विज**—इनके इस त्रिवर्षी मे "कवित सग्रह वसंत" नाम से फुटकर कवितो का एक छोटा सा सग्रह मिला है, जिसमे वसत, फाग और होरी विषयक लगभग ५७ कवित्त है। इसके अत मे एक एक दो दो कवित ठाकुर और देव के भी हैं। रचनाकाल और लिपिकाल का इसमे कोई उल्लेख नही। काव्य की दृष्टि से ये कवित्त साधारणत. अच्छे हैं।

रचयिता का परिचय कवितो के आरभ के लेख मे दिया है, जिसके अनुसार इनका पूरा नाम किसोरदास था। ये जाति के ब्राह्मण थे और छत्रपुर रियासत मे रहते थे—

"अथ किसोरदास कवि छत्रपुर के द्विज कृत संग्रह वसंत के क०"

खोज रिपोर्ट (२३–२१२, २–५९ चार) मे भी एक किसोर के कुछ 'कवित्तो' का उल्लेख है। सभव है वे और प्रस्तुत कवि एक ही हे। उनके कवितो की और प्रस्तुत कवित्तो की शैली मिलती जुलती है।

३६. **कीर्ति केशव या केशव कीर्ति**—इनके रचे हुए 'सखीसमाज नाटक' के विवरण लिए गए है, जिसमें नायक और नायिका, विशेषकर कृष्ण और राधिका के सखा और सखियो का विस्तृत वर्णन है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १७६० वि० है। अतः रचना यथेष्ट पुरानी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है, यह नाटक ग्रथ नही, क्योंकि नाटक का इसमे कोई गुण नही। सखा और सखियो का वर्णन हिंदी के रीति ग्रथो मे देखने को नही मिलता। अतः इसका सबध राधाकृष्ण की लीलाओं से ही अधिक है। ग्रथ मे इसकी रचना का एक विचित्र प्रसग दिया है, जो इस प्रकार है—

"रचयिता को वृंदावन मे एक स्वप्न हुआ जिसमें श्रीकृष्ण और गोपियों की रासक्रीड़ा का दृश्य उन्हे दिखाई दिया। उसमे सरस्वती वीणा का साज सज रही थी और केशवदास (महाकवि केशवदास) ताल दे रहे थे। इसी बीच केशवदास ने रचयिता से कहा कि उन्होंने यद्यपि सुदर नायिको की रचनाएँ की, जिन्हे चारो ओर के नर और नरेश पढ़ते है, परतु उनमे सखी समाज (सखा और सखियो) का वर्णन न होने से उनके मन मे आशका रहती है। गुह और

वृंदावन में किन किन सखियों और कौन कौन से सखाओ के क्या क्या कर्म हैं, इनका ध्यान करके वर्णन करो। इसी प्रकार रचयिता को सात दिन तक स्वप्न होता रहा जिस पर विश्वास कर उन्होंने दो अध्याय (प्रभाव) इस विषय पर रचे।"

ग्रंथ में "रसिकप्रिया" का उल्लेख किया गया है जिसको केवल रसिकों के मनन योग्य बतलाया है।

रचना अध्यायो (प्रभावो) मे है, जिनकी कोई निश्चित संख्या नहीं। ग्रंथारंभ में दो अध्यायो (प्रभावों) का उल्लेख है और अत मे सोलह अध्यायों का। अत का दोहा जिसमें सोलह अध्यायो का उल्लेख है, त्रुटित है।

रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि इनका नाम कीर्ति मिश्र, कीर्तिकेशव या केशव कीर्ति था और ये वृदावन मे, जैसाकि उपर्युक्त स्वप्न प्रसग से पता चलता है, रहते थे। पुष्पिका मे इन्हे महाराज कहा गया है, अत. सभव है, ये कोई राजा अथवा कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति रहे हो। रचना साहित्यिक है, इसमे सदेह नही। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३७. **कुबेरदास**—इनके रचे "सतसहस्रनाम" ग्रथ के विवरण लिये गए हैं, जिसमे एक हजार सतो का नामोल्लेख कर उनकी महिमा गाई गई है। रचनाकाल अविदित है। लिपिकाल सन् १२७३ साल दिया है, जो हिजरी सन् विदित होता है।

रचयिता के विषय मे इतना ही पता चलता है कि ये किसी बालदास के शिष्य थे। कबीर का बडे आदर से उल्लेख किया है, अत विदित होता है कि ये कबीरपथी थे। बालदास के गुरु का नाम शिवदत्त दिया है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

३८. **कुशलसिंह**—इनके दो ग्रथ 'रामरतनगीता' और 'गोपीसागर' नाम से मिले हैं। प्रथम ग्रथ का उल्लेख पिछली कई रिपोर्टों मे हो चुका है, देखिए २०–५७, २३–२३१; २६–२५४ए, बी, ४१–३०। दूसरा ग्रथ खोज मे प्रथम बार ही मिला है, जिसमें भागवतपुराणातर्गत गोपी उद्धव सवाद वर्णित है। रचनाकाल इसमे दिया नही। लिपिकाल सवत् १८८१ है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति बहुत भ्रष्ट लिपि मे लिखी हुई है। विवरण पत्र मे जो उद्धरण दिए है वे बहुत कुछ सुधारकर लिखे गए हैं, जिससे आशय समझ मे आ जाय। जिस दृष्टि से सुधार किया गया है, उसका नमूना इस प्रकार है—

मूल

साबा का चारान कामला की आसा। चौदहं लोक प्राभु का प्रागासा॥
आवा तुमा सुनो मोरी सुभा बानी। जेहिते भेटौ सारंगपानी॥
श्रीकृष्ण चारना चीतवं बाहु भांति। तावा बरसना पायेहु केहु भांती॥

सुधाकर लिखा हुआ

सब कर चरन कमल की आसा। चौदह लोक प्रभुकर परगासा॥
अब तुम सुनौ मोरी सुभ बानी। जेहिते भेटौ सारंगपानी॥
श्रीकृष्ण चरन चीतवं बहुभांती। तब दरसन पाएहु केहि भांती॥

ग्रथ द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ मे भाव, भाषा और शैली मिलती जुलती है, अतः इसी आधार पर दोनो को एक मान लिया गया है। उपर्युक्त रिपोर्टों और संक्षिप्त विवरणो के अनुसार ये मथुरा (बाराबकी) निवासी, सवत् १८८७ के पूर्व वर्तमान थे।

प्रस्तुत ग्रथो मे से दूसरे के लिपिकाल के अनुसार अब इनका सवत् १८८१ के पूर्व वर्तमान होना सिद्ध होता है।

३९. **कृपानिवास**—इनकी बहुत सी रचनाएँ पहले मिल चुकी हैं, देखिए खोज रिपोर्ट ६–२७६ बी, १७–६६ एच; ६–१५४ सी; ६६ सी, २०–८५ डी, २३–२२५; २६–२४४। इन रिपोर्टों के अनुसार इनका अन्य नाम प्रकाशनिवास और कृष्णनिवास भी था।

सखी संप्रदाय के वैष्णव और मिथिला निवासी थे। गुरु का नाम हनुमान प्रसाद था। अंत में अयोध्या में जाकर महंत हो गए। संवत् १८४३ के पूर्व वर्तमान।

इस बार इनकी दो रचनाएँ 'झूलना' और 'सिद्धांत पदावली' नाम से और मिली हैं। पहली मे सीताराम के झूलना खेलने का वर्णन है और दूसरी मे भक्ति और ज्ञानोपदेश का। रचनाकाल किसी मे नही दिया है, लिपिकाल केवल दूसरी मे है, जो सवत् १९०७ है। इनके द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता।

४०. **कृपाराम**—'चित्रकूटविलास' नाम का इनका एक ग्रथ इस त्रिवर्षी मे मिला है, जिसमें चित्रकूट की बड़ी प्रशंसा की गई है। रचनाकाल सवत् १८३५ वि० है। लिपिकाल दिया नहीं। खोज रिपोर्ट (६–१८३) में उल्लिखित 'चित्रकूट माहात्म्य' और प्रस्तुत ग्रंथ संभवत: एक ही हैं। उक्त रिपोर्टों मे ग्रथ का विवरण नही दिया है, जिससे इनका मिलान न हो सका।

रचयिता का ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा कोई वृत्त नही मिलता, परतु ये खोज रिपोर्ट (९–२२६; ६–१८३; ९–१५५, ४–४६, ५–६) मे आ चुके हैं, जिनके अनुसार ये रामानुज संप्रदाय के साधु, नरयनिया (?नरायनपुर) जिला–गोंडा निवासी और सवत् १८१५ के लगभग वर्तमान थे। अत मे चित्रकूट मे रहकर ग्रथो की रचनाएँ की।

४१. **कृष्णचैतन्यदेव 'निज जू'**—इन्होंने सुप्रसिद्ध महाराज भर्तृहरि कृत सस्कृत ग्रथ 'राजनीतिशतक' का 'अमरराजतिलक' नाम से हिंदी मे अनुवाद किया। समस्त अनुवाद कुंडलिया छंदो मे है। रचनाकाल सवत् १९३१ है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति काशी सस्कृत यत्रालय, मुहल्ला ज्ञानकूप द्वारा सवत् १९३२ मे मुद्रित हुई थी।

रचयिता ने अपना विस्तृत परिचय दिया है, जिसके अनुसार ये माध्वगौडेश्वर सप्रदाय के थे और काशी मे रहते थे। गुरु और वश परपरा इस प्रकार है—

श्री चैतन्यदेव
|
गोपालभट्ट
|
गोपीनाथ (राधारमणी गोस्वामी नाम से प्रसिद्ध)
|
रासबिहारी (गो० गोपीनाथ के वश मे बहुत पीछे हुए)
|
गो० राधागोविंद — गो० श्रीकृष्ण चैतन्यदेव "निज जू" (रचयिता)
|
कुंजबिहारी

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' के पिता बाबू हरखचद इनके शिष्य थे। उनके (बाबू हरखचद के) मर जाने पर वहाँ से जो जीविका का स्रोत था वह बद हो गया। अत: प्रस्तुत ग्रथ राजा शिवप्रसाद की प्रसन्नता के निमित्त उन्हें भेट के रूप मे अर्पण किया गया था। इसमें राजा साहब की अनेक प्रकार से प्रशसा एव मिन्नत की गई है और साथ ही साथ उन्हें उपालभ भी बहुत दिए गए हैं।

पिछली खोज रिपोर्ट (९–३०२; २३–२१७) मे इनकी दो रचनाओ ("रसकौमुदी" और "सौंदर्यचद्रिका") का उल्लेख है।

४२. **कृष्णदास कायस्थ**—इनकी 'रास पंचाध्यायी' नामक रचना मिली है, जो अंत से खंडित है। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। यह खोज रिपोर्ट (४४–५२) मे आ चुकी है। काव्य की दृष्टि से रचना सुदर है।

रचयिता का ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा विस्तृत विवरण मिलता है, जिसके अनुसार ये जाति के सक्सेना कायस्थ और रामपुर, शमसाबाद (प्रतापगढ़) के निवासी थे। गुरु का नाम खेमकरन था, जो सभवत सोनावढ़ (?सोनागढ़) के मिश्र थे—

खेमकरन गुरु नाम सुहायो। सुमिरि जासु जम त्रास नसायौ॥
द्विजवर मिश्रा सोनावढ़ जानौ। दयाधाम गुणमय पहिचानौ॥

इनके हीरानद एक मित्र थे जिनके कहने के अनुसार इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की।

४३. **कृष्ण विष्णु पंडित**—इनका रचा "सछेप तिमिर नाशक (संक्षेप तिमिर-नाशक)" ग्रथ मिला है, जिसमे मुसलमान बादशाहो, कुतुबुद्दीन बादशाह से लेकर शाह आलम तक का सक्षेप मे इतिहास दिया है, जो पद्यबद्ध है। रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात हैं। यह ग्रथ राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद कृत 'इतिहास तिमिरनाशक' का संक्षिप्त संस्करण जान पड़ता है। ग्रथारभ के सोरठे से यह पता चलता है—

बाबू त्कत (?कृत) इतिहास तिमिरनास कर नाम यह।
पढ़ें होत अभ्यास भानु उदै जिमि तम हटै॥

विदित होता है कि इस सोरठे के पूर्व भी कुछ रचना रही, जो प्रस्तुत ग्रथ मे नही दिया गया है।

रचयिता के सबध मे कोई विवरण उपलब्ध नही। परतु राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' का समय सवत् १८८० से सवत् १९५२ तक है और उन्होने 'इतिहास तिमिरनाशक' की रचना सवत् १९२१ के लगभग की थी। अत इनका भी समय सवत् १९२१ के पश्चात् या इसी के लगभग विदित होता है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

४४. **केसोदास बाबा**—इनके "शब्द और साखियों" के विवरण लिए गए हैं, जिनका विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के सबध मे रचनाओ द्वारा कुछ विदित नही होता, परतु ग्रंथस्वामी (महत श्री महावीरदास जी, स्थान–बाबा झामदास की कुटी, डाकघर–जगेसर, जिला–सुलतानपुर) के कथनानुसार ये झामदास की कुटी (सुलतानपुर) के प्रथम महत थे। जाति के क्षत्रिय और बाबा झामदास के भतीजे थे। विशेष के लिये देखिए बाबा झामदास सख्या १३७। खोज रिपोर्ट ३५–५३ पर इनके शब्दो का उल्लेख है। उसके अनुसार ये सवत् १८४० के लगभग उत्पन्न हुए थे और सवत् १६०० मे स्वर्गस्थ। रामा पथ के दूसरे महत थे।

४५. **खेमकरन**—इनके 'कृष्ण चरितामृत' ग्रथ की दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। ग्रथ का विषय कृष्ण चरित्र है, जो सक्षेप मे वर्णन किया गया है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है, लिपिकाल क्रमश सवत् १९२९ और साल १२८४ (सभवत. हिजरी सन्) है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (९–४९) मे हो चुका है।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथ से कोई विवरण नही मिलता। उपर्युक्त रिपोर्ट के अनुसार ये मगधनौली (बाराबकी) निवासी, जन्मकाल सवत् १७७१, मृत्युकाल सवत् १८६१; 'भाषा काव्यसग्रह' के कर्ता प० महेशदत्त के नाना के पिता थे। प्रस्तुत रचना द्वारा ये एक प्रौढ़ कवि जान पड़ते है।

४६. **खुशाल कवि**—'भुवनसारसग्रह' नामक ज्योतिष (फलित) के रचयिता हैं। ग्रथ द्वारा इनका कोई वृत्त उपलब्ध नही होता, पर इसके साथ इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट २६–२३८ बी, सी, डी मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये देव कवि की पाँचवी पीढ़ी के वशधर थे।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही, लिपिकाल सवत् १८९३ वि० दिया है।

४७. **खुसिआल**—इनकी प्रस्तुत खोज मे "कवित सवैया" मिले हैं, जिनमे पहेली, उषा अनिरुद्ध प्रेम और गणेश का वर्णन है। कुल छदो की सख्या चार है, जिनमे से तीन सवैया (किरीट) हैं और एक कवित्त (मत्त गयद)। प्रथम दो सवैयो मे पहेलियाँ है, जिनके उत्तर चौथे चरण मे दिए है, परतु ये उत्तरवाले चरण विलोम काव्य की शैली पर है, जो अधिक कूट हो गए

हैं। उनका तात्पर्य ठीक ठीक समझ में नही आता। तीसरे सवैया में स्वप्नदर्शन के फलस्वरूप उषा अनिरुद्ध प्रेम और कवित्त मे एक रदन गणेश का वर्णन है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४८. खुशालचंद (काला)—ये एक जैन रचयिता हैं, जिनके दो ग्रंथों 'उत्तरपुराण' और 'रामपुराण' के विवरण लिए गए हैं। उत्तरपुराण की दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे से केवल एक में ही रचनाकाल और लिपिकाल दिए हैं, जो क्रमश॰ सवत् १७९९ वि० और सं० १८७३ हैं। यह एक वृहद् ग्रथ है, जो जैन 'उत्तरपुराण' का हिंदी पद्यानुवाद है। इसकी रचना जहानाबाद जैसिंहपुर स्थान पर हुई थी। खोज मे इस ग्रथ का पता प्रथम बार ही लगा है। 'रामपुराण' की तीन प्रतियों के विवरण लिए गए, जिनमे रचनाकाल सवत् १७८३ वि० दिया है। लिपिकाल दो प्रतियों मे संवत् १८२७ और संवत् १८९२ हैं। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। यह भी बड़ा ग्रंथ है। खोज रिपोर्ट २३–२११ पर इसका उल्लेख हो गया है।

प्रस्तुत ग्रथों द्वारा पता चलता है कि रचयिता विसनसिंघ भूपति के पुत्र राजा जैसिंघ के राज्य मे ढूंढाहरदेश के अतर्गत सागावती (सागानेर) ग्राम के निवासी थे। पहले टोडो स्थान मे रहते थे और फिर जहानाबाद मे बस गए। पिता का नाम सुदर माता का नाम सुजान दे था। ये कालागोत्र के थे। गुरु का नाम लक्ष्मीदास था जो मूल सघ मे पडित थे। गुनाकर जैसे ऋषि और कुद कुंद जैसे मुनि उक्त मूल सघ मे थे। रचयिता के समय मे सभवतः देवेंद्र कीर्ति आचार्य थे। उत्तरपुराण की रचना मे मारोठ नगर के खुस्याल नामक एक विद्वान् ने भी सहायता की थी। पिछली खोज विवरणिका २६–२३९ पर भी रचयिता का उल्लेख है।

४९. खेमदास (श्यामदास)—इनकी एक रचना 'काशीकांड' के विवरण लिए गए हैं, जिसमे काशी का आध्यात्मिक वर्णन और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल सवत् १८२७ वि० और लिपिकाल सवत् २००१ वि० है। प्रस्तुत प्रति उस प्रति की नकल है, जो सवत् १८४८ मे ग्रंथकर्त्ता द्वारा लिखी गई थी और जिसकी नकल गगादीन ने सवत् १९३६ में की। ग्रथ का उल्लेख खोज रिपोर्ट २९–१९६ ए पर हो चुका है।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति के अनुसार रचयिता थानडीह हरजनापुर मे मुरइ मदन के बीच हरिशकर के नीचे निवास (सभवत कुटी बनाकर) करते थे। ग्रथस्वामी के कथनानुसार ये स्वामी जगजीवनदास जी के शिष्य थे।

५०. खैरातीलाल—इनकी 'अयोध्यामाहात्म्य' नामक रचना मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता।

५१. खैरासाह—इन की दो रचनाएँ "घडी खैराकी" और "बारहमासा" मिली हैं। प्रथम रचना खोज मे नवीन है और दूसरी खोज रिपोर्ट (१२–९१, २६–२३४ ए. बी, दि० ३१–४९) मे आ चुकी है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है, लिपिकाल दोनो का सवत् १९२२ है। विषय भी दोनो का प्रेम और शृगार है। ख्याल शैली की ये रचनाएँ हैं, जिनमे सूफी ढंग पर भी प्रेम की व्यजनाएँ की जाती हैं।

रचयिता का प्रस्तुत रचनाओ द्वारा कोई विवरण नही मिलता। उपर्युक्त रिपोर्ट के अनुसार ये मेरठ निवासी कोई सूफी मुसलमान थे और सभवत. उन्नीसवी शताब्दी मे वर्तमान थे।

५२. गंग—ये महाभारत के "शल्य और गदा पर्वों" के रचयिता हैं। पिछली खोज रिपोर्ट (४४–६५) मे 'शल्य पर्व' के साथ इनका उल्लेख है, जिसमे इनका विस्तारपूर्वक वृत्त दिया है। उसके अनुसार इनके पिता का नाम धर्मदास था, जिन्होने इनको एक प्रौढ़ कवि बताया है। खड्गसेन, दलपति और श्रीपति नाम के इनके तीन भाई थे, जो सब कवि थे। सवत् १७११ के लगभग ये वर्तमान रहे। धर्मदास और श्रीपति के लिए देखिए क्रमशः खोज रिपोर्ट ४४–१७२ और ४४–४३०।

प्रस्तुत ग्रंथों का एक ही विवरण लिया गया है, जिसमे रचनाकालों का उल्लेख नहीं। लिपिकाल दोनो का संवत् १८८६ है। 'गदापर्व' प्रथमबार मिला है।

५३. गंगल—इनकी एक छोटी सी रचना "राग बारामास का मगल' नाम से मिली है, जिसमे विरह शृगार का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के विषय में केवल इतना ही पता चलता है कि इनके गुरु का नाम गुरु छीना था। अन्य वृत्त अप्राप्त हैं। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

५४. गंगावास—इनकी "गीताभाषा" और "पिंगल" नामक दो रचनाओं के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल किसी ग्रंथ मे नहीं दिया है। लिपिकाल क्रमशः संवत् १६१८ और सन् १२७६ (? हिजरी) हैं। विषय दोनों के उनके नामो से ही स्पष्ट है।

रचयिता का ग्रथों द्वारा कोई विवरण उपलब्ध नही। प्रस्तुत रचनाएँ एक ही व्यक्ति के यहाँ मिली हैं इसलिए इनका रचयिता एक ही मान लिया गया है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

५५. गंगावास—इनका "रामायण माहात्म्य" मिला है, जिसमे रामचरितमानस का माहात्म्य वर्णन करने के अतिरिक्त गो० तुलसीदास जी का चरित्र भी दिया गया है, जो संक्षेप में इस प्रकार है—

"ब्रह्मा की सभा मे लक्ष्मण द्वारा शाप दिए जाने पर बाल्मीकि ऋषि तुलसी के रूप मे अवतरित हुए। काशी के समीप राजापुर ग्राम मे हरि शर्मा के पुत्र अवादत्त के ये पुत्र थे। माता का नाम हुलसी था। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार था, जो शाक्त धर्म का पालन करता था। तुलसीदास को यह धर्म अप्रिय था। वे रामभक्ति मे लीन इच्छानुसार इधर उधर घूमते फिरते थे। माता पिता के अथक प्रयत्न करने पर भी वे उनके अनुयायी न हो सके। औरगजेब बादशाह की पुत्री की कब्र खोदकर उसमे से सात लाख रुपए के कफन निकाले जिनको बेचकर साधुओं को भंडारा दिया। बादशाह की पुत्री ने नगी होने पर उनको विषयासन होने का श्राप दिया। पीछे तुलसीदास की प्रार्थना पर श्राप का निवारण भी बतलाया। यह बादशाह पुत्री गगापार लखन तिवारी के यहाँ अवतरित हुई और ममता नाम से तुलसीदास जी की स्त्री हुई।"

शेष कथा कुछ कुछ अतर लेकर आज तक छपे तुलसी चरित्रों से मिलती जुलती हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से यह चरित्र ऊलजलूल हैं। तुलसीदास जी को औरगजेब के समकालीन मानना ही इसकी व्यर्थता प्रकट होती है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात हैं। अत से यह खडित है।

रचयिता का ग्रथ द्वारा कोई वृत्त उपलब्ध नही, केवल इतना ही कि ये गो० तुलसीदास के शिष्य थे जैसा कि ग्रथारभ के श्लोक से सिद्ध है। परतु इसमे सदेह है कि ये गोस्वामी जी के शिष्य रहे। सभवत उनकी शिष्य परपरा मे रहे होंगे। खोज रिपोर्ट २६,—१२८ ए, बी, ३८—४१ पर आए इस नाम के रचयिता यही विदित होते हैं। इनके अनुसार ये रामानुज संप्रदाय के वैष्णव साधु, सवत् १६२४ के पूर्व वर्तमान और किसी तुलसीदास के शिष्य थे।

प्रस्तुत तुलसी चरित्र मे इन्होंने तुलसीदास जी के शरीरांत का समय सवत् १६८० माघ सिताष्टमी और गुरुवार दिया है।

५६. गंगाधर—इनकी एक छोटी सी रचना "नागलीला" के विवरण लिए गए हैं, जिसमे श्रीकृष्ण की नागलीला का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं।

रचयिता का परिचय भी उपलब्ध नही। सभवत. खोज रिपोर्ट (दि० ३१–३२; ३८–५०) मे उल्लिखित गगाधर भी यही हैं। उक्त रिपोर्टों मे 'गोवर्धन लीला' का उल्लेख है। अतः उसको और प्रस्तुत रचना को, जिनका विषय एक ही अर्थात् श्रीकृष्ण की बृजलीला है, एक ही रचयिता द्वारा निर्मित मानी जा सकती है। उक्त रिपोर्टों मे भी रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नहीं दिया है।

५७. गंजन कवि—इनका उल्लेख इनके प्रसिद्ध ग्रंथ "कमरुद्दीनखाँ हुलास" के सहित पिछली खोज रिपोर्टों में हो चुका है, देखिए खोज रिपोर्ट (३–६५, १७–६२; २६–१२६)। उक्त रिपोर्टों मे इनका वृत्त कुछ भ्रामक है। ग्रथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं, जिसमें इतना परिचय स्पष्ट रूप से दिया हुआ है। इसके अनुसार ये काशीवासी गुर्जर गौड़ ब्राह्मण थे। इनके एक पुरखा का नाम रायमुकुट (मुकुटराय) था, जिनके शिर पर अकबर बादशाह (?अकबर औलिया) ने कविराय का मुकुट बाँधा था। रायमुकुट के वंश में मानसिंह एक प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। उनके पुत्र गिरिधर थे और गिरिधर के मुरलीधर हुए, जो काशी में बस गए। इन्ही मुरलीधर के वश मे प्रस्तुत रचयिता गंजन कवि हुए। ये दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के वजीर कमरुद्दीन खाँ (मीरमुहम्मद काजिल) के आश्रित थे और संवत् १८७५ के लगभग वर्तमान रहे।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल सवत् १७८५ दिया है और लिपिकाल संवत् १९४६ वि०। इसमे रस और नायिका भेद के साथ साथ षट्ऋतुओ का भी वर्णन किया गया है। कवि के आश्रयदाता कमरुद्दीनखाँ की भी बड़ी प्रशसा की गई है।

५८. गणपति—"ऋषि पचमी की कथा" नाम से इनकी एक खंडित रचना के विवरण लिए गए हैं। रचना का विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १८६० वि० है, अत प्रस्तुत प्रति मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

५९. गणेश कवि—इन्होने संवत् १८१८ वि० मे "रसवल्ली" नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमे बरवै छदो मे भरत मतानुसार नायिकाओं के भेदोपभेद वर्णन किए हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १९४१ की लिखी हुई है। काव्य की दृष्टि से रचना उत्तम है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (९–८२, २३–११२) मे हो चुका है।

रचयिता का इस बार कुछ अधिक परिचय विदित हुआ है, जिसके अनुसार ये मलामा (?मलावाँ, हरदोई) के निवासी थे जहाँ से चार कोस पर गगा बहती हैं। उस समय उस नगर का राजा राजमनि (राजिमन) था, जिसके लिये संभवतः प्रस्तुत ग्रथ की रचना की गई।

६०. गणेशदत्त मिश्र—इनके "वैष्णवविलास" नामक ग्रथ की एक छपी प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमे सगुण पूजा, अवतारवाद, मूर्ति उपासना, तुलसी पूजा, उर्ध्व पुंड्, शंख चक्र धारण, मंत्र दीक्षा और नाम स्मरण आदि वैष्णवो के सिद्धातो का प्रतिपादन किया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल ग्रथ मे दिए नही है। इसमे एक सवत् १९५८ का उल्लेख किया गया है, अतः इसी के पश्चात् की प्रस्तुत रचना समझनी चाहिए।

रचयिता के पिता का नाम प० भवानी शर्मा था और बलरामपुर, गोंडा के रहनेवाले थे। इनके आश्रयदाता प० द्वारिकाप्रसाद पाडेय (जमीदार लरवाही, परगना बलरामपुर) थे, जिनके कहने पर इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। आश्रयदाता की इन्होने वशावली भी दी है, जिसके अनुसार प० द्वारिकाप्रसाद के भाई का नाम गोकुलप्रसाद और पिता का नाम मनोदत्त था। मनोदत्त का देहावसान का समय सवत् १९५८ दिया है जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है।

रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

६१. गणेशप्रसाद—इनका एक "बारहमासा" मिला है, जो सवत् १९५४ वि० का छपा हुआ है। रचनाकाल अज्ञात है। खोज रिपोर्ट २९–१०८ ए पर इसका उल्लेख हो चुका है और विरह शृंगार का इसमे वर्णन है।

रचयिता का इतना ही पता चलता है कि ये फर्रुखाबाद निवासी थे। एक लेखराज का इन्होंने उल्लेख किया है, पर यह स्पष्ट नही किया कि वे इनके क्या थे? उपर्युक्त रिपोर्ट से पता चलता है कि रचयिता सवत् १९०० मे वर्तमान थे और खोज रिपोर्ट (२६–१२५, २९–१०८) से विदित होता है कि लेखराज इनके पिता का नाम था। उक्त रिपोर्टों में आई इनकी अधिकांश रचनाएँ ख्याल, टप्पा और लावनी शैली की हैं। प्रस्तुत रचना भी इसी तरह की है।

६२. **गदाधर त्रिपाठी**—ये "औषधिसुधातरंगिणी" नामक आयुर्वेद निघंटु के रचयिता हैं। ग्रंथ की दो छपी (शिला यत्रालय, लाला हरप्रसाद, मथुरा) प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल सवत् १६३९ वि० है और मुद्रणकाल सवत् १६४१ वि०।

रचयिता शांडिल्य गोत्री ब्राह्मण थे। बस्ती जिले मे बाँसी परगने के अंतर्गत तिवाडीपुर ग्राम के ये निवासी थे। रगीलाल माथुर नामक एक धुरधर पडित की आज्ञा से प्रस्तुत रचना की। उस समय वहाँ का राजा महाराज रामसिह था। अपनी वशावली इन्होने इसप्रकार दी है—

खेमकरण त्रिपाठी (मूल)
|
रामनिरजन
|
लीलाधर
|
शिवानद
|
सनाथराम
|
कृपानद
|
आनदराम
|
कृष्णानद
|
दलसिंगार
|
सूर्यमणि
|
गदाधर त्रिपाठी (रचयिता)
|
नर्मदेश्वर — सुरेश्वर

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

६३. **गदाधर शुक्ल**—इनकी रची हुई 'सत्य प्रबध' नामक रचना के विवरण लिए गए है, जिनमे *बहुला, व्याघ्र कथा नाम मे एक पौराणिक आख्यान का वर्णन है*। रचनाकाल संवत् १८४४ है। लिपिकाल अस्पष्ट है, जो इस प्रकार है, 'सम्वत ।१८६।।"। यह अनुमान से सवत् १८८० विदित होता है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नहो मिलता, केवल इतना ही कि ये पारा (?) निवासो किसी रामसिघ ठाकुर के आश्रित थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

६४. **गिरवरदास**—इनकी 'भक्ति विनय दोहावली' और 'वानी या शब्दावली' नामक रचनाएँ मिली हैं। प्रथम की दो प्रतियो के विवरण लिए गए है, जिनमे से एक मे रचनाकाल सवत् १८४८ और लिपिकाल सवत् १८६३ वि० दिए हैं। दूसरी प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही। इसका विषय भक्ति है। दूसरी रचना मे रचनाकाल नही दिया है। उसका लिपिकाल सवत १६५० वि० है। विषय ज्ञानोपदेश है। प्रस्तुत दोनों रचनाएँ क्रमशः खोज रिपोर्ट २०–५०; २३–१२८; २६–१४२ और ४४–८१ पर आ चुके है।

इनके द्वारा रचयिता के संबंध मे इतना ही पता चलता है कि ये स्वा० जगजीवनदास जी के अनुयायी थे। 'बानी या शब्दावली' ग्रंथ के स्वामी श्री महंत गुरुप्रसाददास जी (स्थान व पोस्ट–बछरावाँ; जिला–रायबरेली) के कथनानुसार ये स्वा० जगजीवनदास जी के पौत्र थे। पिता का नाम जलालीदास था। स्वा० जगजीवनदास जी के पाँच पुत्र थे, जिनके नाम सभादास, अनंतदास, बल्लादास, पन्नादास और जलालीदास थे। उपर्युक्त रिपोर्टों मे भी इनको स्वा० जगजीवनदास जी का पौत्र लिखा गया है।

६५. गिरिधारी—इनकी "भक्ति माहात्म्य" नामक रचना की तीन प्रतियो के विवरण इस बार भी लिए गए हैं, जिनमे अनेक भक्तो का माहात्म्य वर्णन किया गया है। रचनाकाल केवल दो प्रतियो मे दिया है, जो सवत् १६०५ है। इनका लिपिकाल क्रमश १८५५ वि० और १६३४ वि० है। तीसरी प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल दोनों नही दिए हैं। पिछली खोज रिपोर्टों मे इस ग्रंथ का उल्लेख हो गया है, देखिए खोज रिपोर्ट (६–६४, २३–१२५, ४१–४८६)। उक्त रिपोर्टों मे रचनाकाल सवत् १७०५ लिखा है, अत. यह विवादग्रस्त है।

रचयिता ने अपने संबध मे केवल इतना हीं लिखा है कि उसके पिता का नाम गगाराम था। जन्मभूमि गगा के तट पर बताई है जिसका नामोल्लेख इन्होने किया तो है, किंतु ठीक ठीक स्पष्ट नही होता। अनुमान से कडा (कडा मानिकपुर) विदित होता है, जहाँ सत मलूकदास उस समय रहते थे। इस सबध मे तीनो प्रतियो का पाठ द्रष्टव्य है, जो इस प्रकार है—

पहली प्रति में

जन्मभूमि कर करउ बखाना। सुरसरि तट उत्तम स्थाना॥
कर (?कड़ा) अस्थान मातहि कर आही। बास मलूक संत तेहि माँहि॥

:o: :o: :o:

दूसरी प्रति में

जन्मभूमि कर करउ बखाना। सुरसरि तट उत्तम स्थाना॥
'कड' असनाम ताहि कर आही। बास मलूक संत तेहि माही॥

तीसरी प्रति में

जन्म भूम्य का करौ वखाना। सुरसरितट उत्तम अस्थांना॥
कृष्ण को नाम मंत्र पढ़ि भाई। बास मलुक संत तेहि गाई॥

इन उद्धरणो से पता चलता है कि दूसरी प्रति मे, जो सवत् १६३४ की लिखी है, जन्मभूमि का नाम बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। मलूकदास जी का उल्लेख हो जाने से 'कड' शब्द का बोध कड़ा मानिकपुर के अर्थ मे निश्चित रूप से होता है, क्योंकि यही मलूकदास जी भी निवास करते थे। इन्ही के (मलूकदास जी के) आधार से प्रस्तुत रचना का रचनाकाल भी निश्चित हो जाता है। मलूकदास जी का जन्म समय सवत् १६३१ है और मृत्यु का समय संवत् १७३६। अत इन्ही के बीच सवत् १७०५ वि० मे यह रचना हुई होगी ताकि सवत् १६०५ वि० मे जैसा कि इनमे दिया है। इन सब तथ्यों के आधार पर रचयिता का पूरा वृत्त इस प्रकार है—

"सवत् १७०५ मे वर्तमान, पिता का नाम गगाराम, निवासस्थान कडा (कडा मानिकपुर) जहाँ उस समय सत मलूकदास जी भी रहते थे।" इस दृष्टि से प्रस्तुत प्रतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

६६. गिरिधारी—इनके रचे हुए दो ग्रंथों "सुदामा चरित्र" और "भागवत दशम स्कंध या गिरधारी काव्य" के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल इनमे से किसी मे नही दिए है। लिपिकाल सुदामा चरित्र मे सवत् १६६५ दिया है और भागवत दशम स्कंध मे, जिसकी तीन प्रतियाँ मिली है, क्रमश: संवत् १६११, सवत् १६६५ और सवत् १६६६ है। इनका विषय इनके नामो से स्पष्ट है। काव्य की दृष्टि से ये रचनाएँ मौलिक और उत्तम है तथा अपना विशेष महत्त्व रखतीं हैं।

खेद है कि रचयिता का इनके द्वारा कोई परिचय नही मिलता। अन्वेषक द्वारा पूछताछ करने पर पता चला कि ये रायबरेली जिले के अतर्गत लालगज स्थान के समीप सातनपुर ग्राम मे

निवास करते थे। वहाँ इनके एक वंशज, पं० रामरतन दुबे, जो अपने को ८५ वर्ष के बतलाते हैं, अभी तक विद्यमान हैं। उनके अनुसार उनकी वंशावली इस प्रकार है—

गिरिधारी लाल दुबे (प्रस्तुत कवि)
|
सहाइ
|
विदाप्रसाद
|
विशेश्वर — दुर्गाप्रसाद — रामरतन (वर्तमान, ८५ वर्ष)
|
मनबोध

पं० रामरतन जी का कहना है कि एक दिन गिरिधारी और उनके पिता मे कुछ कहासुनी हो गई थी, जिसके कारण गिरिधारी रुठकर गाँव के समीप एक इमली के पेड के नीचे चले गए। वहाँ इन्हें निद्रा आ गई। स्वप्न मे देवी ने दर्शन देकर काव्य करने को कहा, तब से काव्य करने लगे। इनको रतौंधी थी और लिखना पढना नही जानते थे।

इस विवरण की पुष्टि गाँव के सुशिक्षित लोग भी करते है। उनका कहना है कि प्रस्तुत रचनाओ के अतिरिक्त रचयिता ने 'रसमसाल' ग्रंथ और अनेक 'पद' भी रचे हैं। रायबरेली के दक्षिण पश्चिम भाग मे इस कवि की बड़ी चर्चा रहती है। वही कवि का भी निवासस्थान है। इसमे सदेह नही कि ये प्रतिभावान कवि थे। 'शिवसिंह सरोज' (पृष्ठ ४०४) मे इनके सबध मे इस प्रकार लिखा है—

"गिरिधारी ब्राह्मण बैसवारा गाँव सातनपुरवा वाले। सवत् १९०४ मे उ०। इनकी कविता या तो श्रीकृष्णचद्र के लीला सबधी है और या शात रस की। यह कवि पढे बहुत न थे। परंतु ईश्वर के अनुग्रह से कविता सुदर रचते थे।"

६७. **गुरुदत्त**—ये खोज मे प्रथमबार ही ज्ञात हुए हैं। इनकी रची 'भक्तिमजरी' नामक एक खडित प्रति के विवरण लिए गए है। इसमे रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सन् १२७७ साल दिया है, जो हिजरी सन् विदित होता है। विषय इसका रामचरित्र और भक्ति है।

रचयिता का केवल इतना ही वृत्त मिलता है कि इनके पिता का नाम विष्णुदत्त और पितामह का दिनमणि था। वर्ण से ब्राह्मण थे।

६८. **गुरुदीन पांडेय**—ये 'शालिहोत्र' ग्रथ के रचयिता हैं। ग्रथ की एक प्रति मिली है, जिसमे रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल सन् १२८० साल दिया है, जो हिजरी सन् विदित होता है। पिछली खोज रिपोर्ट (४४–८४)मे इसका उल्लेख हो चुका है। रचयिता का वृत्त इस बार भी उपलब्ध नही हो सका।

६९. **गुरुदीन**—इनकी रची "पिंगलमात्रा प्रसार" नामक एक छोटी सी रचना खंडित रूप मे मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकालादि का उल्लेख तक नही। विषय का इसमे बहुत संक्षेप में वर्णन हुआ है।

इसके द्वारा रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। ग्रथ-स्वामी (प० देवी प्रसाद जी मिश्र, स्थान व पोस्ट—मोहनलाल गज, जिला—लखनऊ) से पता चला कि उनके बाबा या परबाबा मे से कोई व्यक्ति इस नाम का था। अत. सभव है ये वही व्यक्ति हो। इस दृष्टि से ये मोहनलालगज (लखनऊ) के रहनेवाले कान्यकुब्ज मिश्र ब्राह्मण थे। इनका कोई वश नही चला। इनके भाई ईश्वरी प्रसाद का वश इस समय विद्यमान है। अतः ये पूर्व रचयिता से भिन्न हैं और खोज मे नवोपलब्ध हैं।

७०. **गुलाबराइ मोतीराइ**—इनका प्रस्तुत खोज मे प्रथम बार ही पता लगा है। ये जैन रचयिता हैं और "समेर (?समेद) सिखर माहात्म्य" नामक इनकी एक रचना के विवरण

लिए गए हैं। इसमे समेद सिखर (हजारीबाग जिला मे पारसनाथ पर्वत) का, जो जैनी लोगों का तीर्थस्थान है, माहात्म्य वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १८४१ वि० है।

ग्रंथ के अनुसार रचयिता गुलाबराइ और मोतीराइ नाम से दो भाई थे। इनके वंश मे वंशीधर नामक एक बड़े कवि हुए थे, जिनके सबंध मे इनका कहना है कि उनके कवित्त पृथ्वी पर छा गए थे—

प्रथमहि कवि वंशीधर भए। तिनके कवित्त पोहोमि पर छये॥

वंशीधर के पुत्र अठमल्लराइ हुए, जिन्होने बादशाहो के यहाँ बडा सम्मान पाया। उनके पुत्र लछीराम भी कवि थे। लछीराम के दुर्गादास थे, जो जिन भक्त प्रसिद्ध हुए। दुर्गादास के प्रस्तुत रचयिता गुलाबराइ और मोतीराइ हुए। गुलाबराइ ज्येष्ठ थे और मोतीराइ कनिष्ठ। इटावा के ये रहनेवाले थे। प्रस्तुत रचना किसी जिनेंद्रभूषण के कहने पर रची गई, जिससे पता चलता है कि वे इनके गुरु थे।

७१. गुलाबसिंह—इनका एक ग्रथ "भावरसामृत" नाम से मिला है, जिसमे भक्ति विषय का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८३४ और लिपिकाल सवत् १९०१ हैं।

रचयिता के पिता का नाम गौरीराइ था और गुरु का मानसिंह। ये सिख थे और सेखव नगर के रहनेवाले थे। खोज रिपोर्ट (३–७८, १७–१८०, २०–५४, ४१–५३) मे अन्य ग्रथो के साथ इनका उल्लेख हो चुका है। उनमे इन्हे अमृतसर निवासी लिखा है।

७२. गुलाबहसन पीर (?)—इनका एक बिना नाम का खडित ग्रथ मिला है, जिसमे सृष्टिक्रम और नबी, रसूल आदि का वर्णन है। यह आदि अत से खडित है, जिससे रचनाकाल और लिपिकालादि का कोई पता नही चलता। लिपि इसकी कैथी है, जो बहुत भ्रष्ट है।

रचयिता के नाम का भी इसके द्वारा ठीक ठीक पता नही चलता। 'गुलाबहसन पीर' का उल्लेख स्थान स्थान पर होने से अनुमान से इन्ही को रचयिता मान लिया गया है। इन्होने वजीरानेमुल्क आसफउद्दौला और मऊआयमा शहर का उल्लेख किया है, जिससे पता चलता है कि ये लखनऊ के सुप्रसिद्ध नवाब आसफउद्दौला (सवत् १८३२) के राज्यकाल के समय वर्तमान थे और मऊआयमा (? इलाहाबाद) के रहनेवाले थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

७३. गुलाम नबी "रसलीन"—इनकी "रसप्रबोध" नामक रचना की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए है। पिछली खोज रिपोर्ट (५–१६, ६–१६६; २३–१४० बी, सी) मे इसका उल्लेख हो गया है, जिसके आधार पर रचयिता बिलग्राम (हरदोई) निवासी, सैयद बाकर के पुत्र और सवत् १७६४ मे वर्तमान थे।

प्रस्तुत प्रति बनारस लाइट छापेखाने की छपी हुई है। इसमे रचनाकाल सवत् १७६८ वि० (हिजरी सन् ११५४) दिया है, मुद्रणकाल का उल्लेख नही। रचयिता के सबध मे इसके द्वारा कोई और विशेष बात नही विदित होती।

७४. गेवा—इनकी "द्वादशभावफल" नामक फलित ज्योतिष विषयक एक रचना मिली है। इसमे सस्कृत हिंदी दोनो भाषाओ के पद्य है, जिनमे फारसी शब्दो का भी बाहुल्य है। रचना पूर्ण होते हुए भी इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कुछ भी पता नही चलता। एक स्थान पर बादशाहे बर्बरी का उल्लेख हुआ है—

लग्नखाने चस्मकोरा मालखाने मुस्तरी।
सहबाजखाने चंद्र दीवम बादसाहे बर्बरी॥१२॥

संभव है रचयिता बादशाह बाबर (सवत् १५८३–८७) के समय मे रहे हो, अतः इस दृष्टि से इनकी प्रस्तुत रचना महत्वपूर्ण हो सकती है। इसमे खड़ी बोली का भी प्रयोग किया गया है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

७५. गोकुल कायस्थ—ये बलरामपुर (गोंडा) निवासी और वहीं के राजा दिग्विजयसिंह के आश्रित कवि थे। सवत् १६०० से १६१६ के लगभग वर्तमान रहे। पिछली खोज रिपोर्टों मे इनके कई ग्रथो का उल्लेख हो चुका है, देखिए ६–६५, २३–१२६; २६–१४३; ४४–८७।

इस बार इनका "कृष्णदत्तभूषण" नामक नया ग्रंथ मिला है, जिसकी दो खंडित प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल, लिपिकाल केवल एक प्रति मे दिए हैं, पर उसमे भी रचनाकाल अधूरा है—

संवत् रिषि गु......उ शशि सावन तिथि सित पांच।
तादिन पूरन ग्रंथ यह पंथ वाक्य श्रुति सांच॥१५०॥

इस दोहे मे 'रिषि' के पश्चात् 'गु' अक्षर को 'गुण' शब्द का प्रथम अक्षर माने तो रचनाकाल संवत् १६३७ होता है क्योकि जैसा ऊपर उल्लेख किया गया है रचयिता बीसवी शती के पूर्व का है, अत. इसको दृष्टि मे रखते हुए प्रस्तुत ग्रंथ के रचनाकाल के लिये केवल १६ और ७ के बीच के अंक को ही जानने की आवश्यकता रह जाती है और वह 'गुण' शब्द द्वारा ठीक निश्चित होता है। लिपिकाल सवत् १६५१ है। इसमे नृप वशावली, धर्म, नीति और वर्ण व्यवस्था आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत ग्रथ द्वारा पता चलता है कि रचयिता ने प्रस्तुत ग्रथ की रचना किसी कृष्णदत्त राजा की आज्ञा से की थी, अत ये बलरामपुर (गोंडा) के राजा दिग्विजय सिंह के अतिरिक्त राजा कृष्णदत्त के आश्रय मे भी रहे। ग्रथ की पुष्पिका के आधार पर राजा कृष्णदत्त वत्सगोत्रीय पाडेय रामकिसुनराम के पुत्र थे और सभवत. गोंडा की ओर के ही रहनेवाले थे।

७६. गो० गोकुलनाथ जी—ये श्री वल्लभाचार्य जी के पौत्र और गो० विट्ठलनाथ के पुत्र के रूप मे प्रसिद्ध है। गोकुल (वृदावन) मे ये निवास करते थे और सवत् १६२५ म वर्तमान थे। पिछली खोज रिपोर्टों मे इनका कई ग्रथो के रचयिता के रूप मे उल्लेख हो चुका है, देखिए खोज रिपोर्ट (२६–१२२, ३२–६५, ४१–५५, ४४–८८)।

इस बार "अष्टछाप के कवियो की वार्ता" नाम से इनकी एक रचना मिली है, जिसके विवरण प्रथम बार ही लिए गए है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, अत. रचनकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता। इसमे अष्टछाप क कवि चत्रभुजदास[१], नददास[२], छीतस्वामी[३], गोविदस्वामी[४], सूरदासजी[५], परमानददासजी[६], कुभनदासजी[७] और कृष्णदासजी[८] की वार्ताएँ दी हुई है। इनके अतिरिक्त कान्हबाई (गोविदस्वामी की बड़ी बहिन) और सूवा (तोता जो महाप्रभु वल्लभाचार्य जी का सेवक था) का भी वार्ता कही गई है। अष्टछाप कवियो मे प्रथम चार गो० विट्ठलनाथजी के सेवक थे और शेष चार श्री वल्लभाचार्य जी के।

प्रस्तुत वार्ता रचयिता कृत "चौरासी वैष्णवो की वार्ता" के अतर्गत है। इसे विद्वानो द्वारा अधिकतर अप्रामाणिक माना जाता है पर डा० दीनदयालु जी गुप्त ने अब यह सिद्ध कर दिया है कि यह बहुत कुछ विश्वसनीय है। भक्तो मे इस प्रकार की रचनाओ का प्रचलन बहुत पहले से ही है, जिनम नाभादास जी का भक्तमाल अधिक प्रसिद्ध है। वैष्णव सप्रदाय सगुणमार्गी और निर्गुणपथ दोनो मे इस प्रकार का प्रयास हुआ है। राघवदास कृत भक्तमाल मे निर्गुणपथी भक्तो का वर्णन है। रचयिता के सबध मे प्रस्तुत वार्ता द्वारा कोई नवीन बात नही प्रकट होती।

७७. गोपकवि—इनके "रामचद्राभरण" नामक अलकार विषयक ग्रथ की एक अपूर्ण प्रति के इस बार भी विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल और लिपिकाल का इसमे उल्लेख नही। खोज रिपोर्ट ६–३६ पर यह आ चुका है। विषय की दृष्टि से रचना उत्तम है।

रचयिता जाति के भट्ट (भाट), गोकुल निवासी, निमन भट्ट के पौत्र और यदुराइ भट्ट के पुत्र थे। ये तीन भाई थे जिनके नाम क्रमश. केशवराइ, गोप और बालकृष्ण थे। ओड़छा के राजा पृथ्वीसिंह के ये आश्रित थे, जिनके लिये प्रस्तुत ग्रथ की रचना की गई। इन्होने गोकुल के एक प्रसिद्ध व्यक्ति बलभद्र दीक्षित का उल्लेख किया है। इनके पिता का नाम रामकृष्ण और

पितामह का नंदनाथ था तथा वल्लभकुल के लोगों ने इनके पाँव पूजे थे। नंदनाथ दीक्षित दक्षिण से आए थे।

उपर्युक्त खोज रिपोर्ट और संक्षिप्त विवरण में इनका संवत् १७६७ में वर्तमान रहना लिखा है। उनमें वल्लभ दीक्षित को वल्लभ संप्रदाय का बताया गया है।

७८. गोपाल या दास गोपाल—इन्होंने "रामरसिक रागमाला" की रचना की, जिसकी एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमें रामकृष्ण की शृंगारमय क्रीडाओं का पदों में सरस वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। ग्रंथ के अंत में पुष्पिका नहीं दी है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण उपलब्ध नहीं। अतः पिछली रिपोर्टों में आए इस नाम के रचयिताओं से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कुछ नहीं कहा जा सकता। ये एक अच्छे कवि जान पड़ते हैं। पंजाबी भाषा का भी इन्होंने पदों में उपयोग किया है।

७९. गोरखनाथ—इनकी इस बार 'सबदी' नाम से एक रचना के विवरण लिए गए हैं, जिसके अंतर्गत "महादेव गोरख गोष्टी", "ग्रंथ लँमात्रा" और "रोमावली" भी हैं। इनमें से केवल "ग्रंथ लँमात्रा" ही नवीन है। शेष ग्रंथ पिछली रिपोर्टों में आ चुके है, देखिए खोज रिपोर्ट (२-६१, पृ० २२-३३ ई, आई)। इनकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९२६ की लिखी हुई है। रचनाकाल अज्ञात है। रचयिता के संबंध में ग्रंथों के द्वारा और कोई नवीन बात नहीं प्रकट होती।

८०. गोविंद कवि—खोज में इनके कुछ 'कवित्त' मिले हैं, जिनमें जहानाबाद (?) के सूबेदार एक कायमखाँ का यश वर्णन किया गया है। इससे स्पष्ट है कि ये उक्त सूबेदार (कायम खाँ) के आश्रय में रहते थे। कायमखाँ को वगस का नंदन कहा है। उसका अन्य परिचय नहीं दिया है। एक वगस का उल्लेख खोज रिपोर्ट (६-३४२) में है, जो संवत् १७८० के लगभग मालवा के सूबेदार थे और जिनको विचित्र कवि का आश्रयदाता कहा गया है। यदि यही कायमखाँ सूबेदार के पिता वगस हो तो उसका और प्रस्तुत कवि का समय संवत् १७८० के पश्चात् निश्चित होता है। रचयिता का अन्य परिचय नहीं मिलता। अतः नहीं कहा जा सकता कि ये खोज रिपोर्टों में आए इस नाम के रचयिताओं में से कोई एक हैं या नहीं। जब तक यह निश्चित नहीं, रचयिता को नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

'कवित्तों' की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं।

८१. गोविंद कवि—इन्होंने "वंशविभूषण" नामक ग्रंथ की संवत् १८६९ में रचना की, जिसमें पढेरी (?) के राजा काशीराम के वंश का विस्तृत वर्णन किया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति अंत में खंडित है, जिसके कारण उसमें लिपिकाल का उल्लेख नहीं मिलता।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं मिलता। इनके आश्रयदाता राजा काशीराम कायस्थ जाति के थे, क्योंकि इन्होंने उनका वंशवर्णन चित्रगुप्त से आरंभ किया है और उसमें कायस्थों की अनेक जातियों का उल्लेख हुआ है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है राजा काशीराम पढेरी में निवास करते थे, पर यह पता नहीं चलता कि यह स्थान कहाँ है?

रचयिता पिछली खोज रिपोर्टों में आए इस नाम के व्यक्तियों में से कोई एक हैं या नहीं प्रमाणाभाव में कुछ नहीं कहा जा सकता। इस दृष्टि से खोज में इन्हें, नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

८२. गोविंद कवि द्विज—इनके रचे "महाभारत विराटपर्व" ग्रंथ की एक खंडित प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल आदि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। रचना दोहा चौपाइयों में है और काव्य की दृष्टि से उत्तम है।

रचयिता का इतना ही कि ये ब्राह्मण (द्विज) थे, अन्य कोई वृत्त उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत ग्रंथ की भाषा प्राचीन अवधी है, अतः ये एक प्राचीन कवि विदित होते हैं। इस नाम के कई रचयिता पिछली खोज रिपोर्टों में उल्लिखित हैं, पर प्रमाणाभाव के कारण नहीं कहा जा सकता कि ये उनमें से कोई एक हैं या नहीं। पूर्व रचयिता से ये सर्वथा भिन्न है। इस दृष्टि से इनको खोज में नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

८३. गोविंददास—इनकी 'ककाबत्तीसी' मिली है, जिसमें भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता के संबंध मे भी नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। पिछली खोज रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता। इस दृष्टि से इन्हें भी नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

८४. गोविंदस्वामी (अष्टछाप)—इनके २५२ कीर्तन के पद प्रसिद्ध हैं, जिनमें से २४८ पदो के एक सग्रह के विवरण इस बार लिए गए हैं। इसमे २४७ पद तो पूरे हैं और २४८वाँ पद अपूर्ण है। विषय इनका वही कृष्ण भक्ति और ब्रजलीला है। रचनाकाल और संग्रहकाल का कोई पता नही चला। खोज रिपोर्ट ४१–६० ग पर इन पदो का उल्लेख हो चुका है।

रचयिता के सबध मे प्रस्तुत पदो द्वारा और कोई विशेष विवरण नही मिलता। इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट (३२–६७, ४४–६८) मे भी है।

८५. गोसाईंदास—प्रस्तुत खोज मे इनके "कहरानामा" और "दोहा" नाम से दो रचनाएँ मिली है। 'कहरानामा' दो तरह के है, जिनमे क्रमश गुरुभक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। इनकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही, लिपिकाल सवत् १९६८ वि० है। 'दोहो' का विषय भी भक्ति और ज्ञानोपदेश ही है। रचनाकाल इनका भी अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १९२२ है।

रचयिता का इनके द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये सतनामी पंथ के प्रवर्तक स्वा० जगजीवनदास जी के शिष्य थे। अन्य वृत्त अज्ञात है। पिछली खोज रिपोर्ट (२६–१५१) मे इनकी 'शब्दावली' का उल्लेख है। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये कमोली (बाराबकी) निवासी स० १७२७ के लगभग वर्तमान थे।

८६. गौरा (?)—इनकी "गुजाकल्प" नामक रचना मिली है, जिसमे गुजा (घुघुची) नामक लता को सिद्ध करने से अनेक चमत्कारों का, यथा—मारन, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, गुप्त होना, दृष्टि विस्तार, अस्त्र शस्त्रो से आघात न होना आदि वर्णन है। रचनाकाल का इसमें उल्लेख नही, लिपिकाल सवत् १९१८ दिया है। प्राचीन ग्रथो, विशेषकर आयुर्वेद विषयक ग्रंथो मे इस प्रकार के सैकडो कल्प है।

रचयिता का कोई स्पष्ट उल्लेख नही। ग्रथात मे 'गौरा' नाम का उल्लेख है अतः उसी को रचयिता का नाम मान लिया है। परतु ग्रथारभ 'गौराशिव' सवाद के रूप मे होने के कारण यह नाम पार्वती (गौरा या गौरी) के अर्थ मे भी घटता है। फिर भी रचयिता के स्पष्ट नाम के अभाव मे सुभीते के लिये इसी को ग्रहण कर लिया गया है। अन्य वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

८७. घासीराम—इनकी अब तक "पक्षीविलास" नामक रचना ही मिल सकी है, जो परिमाण मे छोटी होने पर भी इनकी काव्य प्रतिभा की द्योतक है। इसका उल्लेख पिछली खोज रिपोर्ट (९–९१, २३–१२२, २६–१३६) मे हो चुका है, जिनके अनुसार रचयिता ब्राह्मण, मलावाँ (हरदोई) निवासी और सवत् १६८२ के लगभग वर्तमान थे। जन्मकाल सवत् १६२३ दिया है। रचना मे गोपी-उद्धव-सवाद, लक्ष्मी, चपक, चदन, बबूर, मेघ और कोकिल, मराल, चातक, कीर आदि पक्षियो के विषय मे कविता की गई है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही, लिपिकाल सवत् १९४४ दिया है। रचयिता के सबध मे अन्य कोई विवरण नही मिलता।

८८. घिस्यावनदास बाबा—प्रस्तुत खोज मे इनकी तीन रचनाओ 'कवित्त', 'रामचरितामृतमहोदधि' और 'रामरस' के विवरण लिए गए हैं, जिनमे राम कृष्ण चरित्र वर्णन किए गए है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल 'रामचरितामृतमहोदधि' मे दिया है, जो सवत् १९४८ वि० है। अतिम रचना 'रामरस' का उल्लेख खोज रिपोर्ट (२६–१३८) मे हो चुका है। शेष रचनाएँ प्रथम बार ही मिली हैं।

रचयिता के विषय मे इन रचनाओ मे नाम के अतिरिक्त और कोई उल्लेख नही मिलता। 'रामचरितामृतमहोदधि' के स्वामी (महंत श्री प्रेमदास बाबा; स्थान, घिसियावन दास बाबा की

कुटी खेखरवा गंगापुर; डाकघर–समरौता, जिला–रायबरेली) के कथनानुसार ये एक पहुँचे हुए महात्मा हो गए हैं। रायबरेली जिला के अतर्गत महाराजगज तहसील मे स्थित जमिलीगाँव के निवासी थे। कान्यकुब्ज दुबे परिवार मे उनका जन्म हुआ था। छुटपन से ही ये विरक्त रहा करते थे। एक दिन पिता ने इन्हे पूर चलाने का काम सौपा और स्वय खेत मे पानी देने का काम करने लगे। इधर पूर स्वयं चलता था और ये दूर खडे होकर जैसे जैसे पुर पानी छोड़ता था "रामजी लाए" कहा करते थे। पानी जब खेत में नही पहुँचा तो इनके पिता ने इनकी ओर देखा। इन्हें दूर खड़ा पाकर वे बड़े अप्रसन्न हुए और खेत से आकर स्वय पूर चलाने लगे और इन्हें खेत पर भेज दिया। परंतु ये जैसे ही खेत पर पहुँचे खेत भर चुका था और पानी बाहर बह रहा था। इन्होंने पिता से पूर बद करने के लिये कहा। पिता और क्रुद्ध हुए और खेत की ओर दौड़े। देखा कि खेत सचमुच पानी से भर गया है और पानी बाहर जा रहा है। उन्हें इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होने इनसे कार्य लेना बंद कर दिया और इन्हें पूरी स्वतत्रता दे दी। ये फिर घर नही गए और सीधे जंगल की ओर चल पडे जहाँ अपना शेष जीवन तपस्या मे बिताया। इनकी तपस्या का स्थान गगापुर कुटी के नाम से प्रसिद्ध है जिसके वर्तमान महत ग्रथ स्वामी हैं। इस स्थान पर शरद पूर्णिमा को बड़ा मेला लगता है।

रचयिता ने बहुत से कवित्त, सवैया और भजन रचे हैं। ग्रथस्वामी के कथनानुसार संवत् १९३२ मे अयोध्या मे ये स्वर्गस्थ हुए। अयोध्या के बड़े स्थान से इनका संबंध था। श्री हरिभूषणदास इनके गुरु थे। अब तक इनका पूरा वृत्त अप्राप्त था। इस बार पूरा वृत्त उपलब्ध हो गया है, जो इन्ही की शिष्य परपरा के एक व्यक्ति एव इन्ही की गद्दी के महंत द्वारा प्राप्त होने कारण विश्वसनीय है।

८९. घोड़ाचोली—इनके नाम से "घोडाचोलीगुटिका" नामक एक रचना मिली है, जिसमे घोड़ाचोली नामक ओषधि के अनुपान भेद से अनेक प्रयोगो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का भी कोई विवरण उपलब्ध नही हुआ है। खोज रिपोर्ट (४१–६३) मे भी इनका उल्लेख है, पर उसमे भी इनका कोई वृत्त नही दिया है।

९०. चंदन कवि—इनकी "काव्याभरण" नामक अलंकार विषयक रचना की एक प्रति के इस बार भी विवरण लिए गए है। पिछली खोज रिपोर्टों (६–४०, २३–७३ ए; २६–७७) मे इसका उल्लेख हो चुका है। रचनाकाल सवत् १८४५ और लिपिकाल सवत् १९४४ वि० है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा रचयिता का विवरण नही मिलता, पर उपर्युक्त रिपोर्टों के अनुसार ये पुवायाँ (शाहजहाँपुर) निवासी एक वदीजन थे। सवत् १८०३ से सवत् १८६५ तक वर्तमान, पिता का नाम धर्मदास और पुत्रो का प्रेमराय तथा जीवन था। राजा केशरी सिंह के आश्रित थे।

९१. चंदनराम चंद या चंदन कवि—इनकी दो रचनाएँ 'प्रश्नोत्तर विदग्ध मुखमडन" और "जलहरण दडक" मिली है। पहली रचना का विषय भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल सवत् १८६७ है, लिपिकाल दिया नही। इसमे विद्यापति और शुकदेवमुनि कृत "प्रश्णोत्तर और मणिमालिका" नामक सस्कृत ग्रथो का सार है। किसी नृपति (?) के लिये यह रचना की गई थी, जिसको इन्होने अज्ञानी कहा है—

कुंडलिया

विद्यापति सुक मुनि रचित सुरवानी में दोइ।
प्रश्णोत्तरमणिमालिका ताको सारक होइ॥
ताको सारक होइ चन्दकवि रचितरभाषा।
विरद ए प्रश्णोत्तर विदग्धमुष मण्डन राषा॥
राषा भरि नृप अज्ञ ह्रिदय गृह कीच अविद्या।
ताहि प्रछालन हेतु सलिल वर रचीय सुविद्या॥

दूसरी रचना मे शिव स्तुति की गई है। इसमे चित्र काव्य के १० जलहरणदंडक हैं। यह प्रथम रचना के साथ एक ही हस्तलेख मे है, अत. इसके भी रचनाकाल और लिपिकाल उसी की तरह हैं।

रचयिता का वृत्त प्रथम रचना मे दिया है, जिसके अनुसार ये कविवर हरिकृष्ण के पौत्र और साहबराम के पुत्र थे। प्रस्तुत रचना इनकी तीसरी कृति है—

दोहा

कविबर श्री हरिकृष्ण सुत साहबराम कवीस।
ततसुत चंदनराम यह ग्रंथ त्रितीय रचीस॥४८॥

इनके चद और चंदन दो उपनाम थे। अन्य वृत्त उपलब्ध नही। प्रस्तुत वृत्त के अनुसार ये पूर्व रचयिता—काव्याभरण के रचयिता चंदन कवि से सर्वथा भिन्न हैं।

उनकी (पूर्व रचयिता की) नौ रचनाओ के सबध मे पता चला है, परतु ऐसा संदेह होता है कि उनमे प्रस्तुत रचयिता की भी कुछ रचनाएँ सम्मिलित हो गई है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

६२. **चतुर्भुज**—इनकी "पिंगल" विषयक एक रचना का केवल आरंभ का एक पत्र मिला है, जिनके द्वारा न तो रचना का नाम, न रचनाकाल लिपिकाल और न वर्णित विषय का ही पता चलता है। परतु उसमे इनका और इनके आश्रयदाता अकबर बादशाह का उल्लेख होने से यह महत्वपूर्ण जँची, इसलिए इसके विवरण लिए गए। इससे अकबर बादशाह के समकालीन (स० १६१३–६३ तक) और उसके आश्रय मे रहनेवाला एक और कवि का पता चलता है। रचयिता ने अकबर बादशाह के दीनेइलाही मत का भी उल्लेख किया है—

"अकबर साहि जगतगुरु मानहु। इहइ बात सबहि अनुमानहु॥"

यह प्रसिद्ध है कि अकबर बादशाह ने अपने को जगद्गुरु मानकर "दीने इलाही" मत का प्रचार करना चाहा था, परतु स्वय उसके दरबार के व्यक्तियो मे ही कुछ को छोडकर इसे मान्यता न मिल सकी।

प्रस्तुत रचना अकबर बादशाह के आदेश से ही रची गई थी। इसमे पिंगल के प्राचीन छह आचार्यों—शभु, भरत, सैतव, गरुड, कश्यप और शेष का उल्लेख भी हुआ है, जिनके ग्रथो के आधार पर यह तैयार की गई—

संभु भरत सैतब गरुड कश्प सेसु बिचारि।
षट् पिंग ए बिंवत मुग्र कहौव तिन्हहि निहारि॥

भाषा भी इसकी प्राचीन है।

६३. **चरनदास**—इनकी तीन रचनाओ—१. वृजचरित्र, २. ब्रह्मज्ञान और ३. स्वरोदय के विवरण लिए गए है, जिनका पिछली खोज रिपोर्टों मे उल्लेख हो चुका है, देखिए क्रमश. खोज रिपोर्ट (२६–६५ एल), (१२–३६ सी, २६–७८ डी, ई, एफ, जी, २६–६६ एच से के तक) और (१–७०, ६–१४७ ई, १७–३८ सी, २०–२६ बी; २३–७४; २६–७८, प० २२–१८, २६–६६ डब्ल्यू से जेड तक)। विषय इनके नामो से ही स्पष्ट हैं। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल ब्रह्मज्ञान मे सवत् १८७२ दिया है।

प्रस्तुत रचनाओ मे रचयिता के सबध मे और कोई विशेष वृत्त ज्ञात नही होता, पर पिछली रिपोर्टों मे इनका पूरा विवरण दिया हुआ है। उनके अनुसार ये धूसर वैश्य, जन्म स० १७६०, मृत्यु स० १८३८। इनका पहला नाम रणजीत था। पिता का नाम मुरली। सुखदेव के शिष्य। सहजोबाई, श्यामाचरण, रामरूप (गुरु भक्तानद), जसराम और दयाबाई के गुरु। दहरा (अलवर राज्य) निवासी। बाद मे दिल्ली मे रहने लगे थे।

६४. **चरपटनाथ**—ये "वैद्यविलास या वैद्यक विलास" नामक ग्रंथ के रचयिता के रूप में इस बार भी विवरण के अतर्गत आए हैं। इनका निश्चित परिचय अभी तक अज्ञात है। पिछली खोज रिपोर्ट (४१–५६, ४४–११३) में इनका उल्लेख हुआ है, जिसमे इन्हें गोरखनाथ का समकालीन अथवा उनका शिष्य कहा गया है। जनश्रुति से भी यही बात प्रसिद्ध है।

प्रस्तुत ग्रंथो मे रचयिता का कोई विवरण नही दिया हुआ है। इसका नाम कोनों पर लिखे हुए "वै० वि०" के आधार पर ही "वैद्यक विलास" या "वैद्यविलास" अनुमान किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल का भी पता नही चलता। विषय इनके नाम से ही स्पष्ट है। उपर्युक्त दूसरी रिपोर्ट मे रचयिता की इसी विषय पर रची हुई 'चरपटिका पत्रिका' नामक रचना उल्लिखित है। सभव है वह भी प्रस्तुत ग्रथ का ही अश हो।

६५. चितामनि या ऋषि चितु—इनकी "ब्रह्ममाला और योगसिद्धि" नामक रचना के विवरण लिए गए हैं। रचना मे इनका नाम "ब्रह्ममाला और योगसिध" दिया है, पर 'योगसुसिध' का कोई ठीक अर्थ न होने से इसका शुद्ध रूप "योगसिधु या योगसिद्धि" मान लिया गया है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १७७५ से स० १७८० तक इस आधार पर माना है कि इस रचना के साथ एक ही हस्तलेख म आलमकृत "स्यामसनेही" और नददास कृत "रासपचाध्यायी" भी लिपिबद्ध है। उक्त दोनो रचनाओ का लिपिकाल क्रमश: सवत् १७७५ और सवत् १७८० है और क्योकि तीनो ही रचनाओं की स्याही, कलम और कागज एक ही प्रकार के हैं। अत: प्रस्तुत रचना का भी लिपिकाल लगभग उन्ही सवतो के बीच समझना चाहिए। विषय ब्रह्म ज्ञानोपदेश और योग है। इसम दोहा, छप्पय और गाथा छदो का प्रयोग हुआ है।

रचयिता ने अपने दो नाम "चितामनि" और "ऋषि चितु" दिए हैं। अन्य वृत्त उपलब्ध नही। रचना द्वारा प्रकट होता है कि ये एक अच्छे ज्ञानी पुरुष थ। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

६६. चितामणि दुबे—ये "गणेशकथा" नामक रचना के रचयिता हैं। रचना का रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सवत् १८७३ विदित होता है। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है।

रचयिता ने केवल अपने गाँव का नाम दिया है, पर वह भी अस्पष्ट है। उससे गाँव का नाम 'मउरा' या 'तामउरा' विदित होता है—

"जथा बुधि भाषा रचिडारा। चितामणि दुबे अस्थाण "तामउरा"॥

ये पिछली खोज रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओ से सर्वथा भिन्न जान पड़ते हैं। अत. खोज म नवोपलब्ध है।

६७. चिरंजीव भट्टाचार्य—इन्होने "वृत्त रत्नावली" की रचना की है, जिसमे पिंगल विषय का वर्णन है। इसका केवल अत का पत्र उपलब्ध हुआ है, जिसम तीन सस्कृत के श्लोक हैं और एक हिंदी का कवित है। रचनाकाल का पता नही। लिपिकाल सवत् १९०५ है।

रचयिता के पिता का नाम जैसा कि ग्रथ के अत मे दिए हुए श्लोक से पता चलता है, शतावधान भट्टाचार्य था। किसी यशवत गौंड के ये आश्रित थे, जिसके मान समान की इन्होंने बड़ी प्रशंसा की है। अन्य विवरण प्राप्त नही। खोज रिपोर्ट २६-७३ पर आए इस नाम के रचयिता से ये सर्वथा भिन्न हैं। अत खोज म नवोपलब्ध है।

६८. चेतनदास—इनकी रची हुई "प्रसग पारिजात" नामक एक रचना के विवरण लिए गए हैं, जो अपने विषय की एक विलक्षण प्रति है। इसकी रचना बाड़ी प्राकृत (देश बाड़ी प्राकृत) मे पिशाच भाषा के साकेतिक शब्दों के योग स मदणा छदो मे हुई है। इसमे स्वामी रामानद का समस्त जीवनवृत्त दिया है। रचनाकाल सवत् १५१७ है और लिपिकाल सवत् १९६७ वि०।

रचयिता ने अपने सबध मे इतना ही लिखा है कि सवत् १५१७ मे स्वा० रामानद जी की जन्मतिथि पर एक वृहद् भडारे की आयोजना हुई थी, जिसमे स्वामी जी के शिष्य और प्रशिष्यो के अतिरिक्त चारो ओर के अनेक सिद्ध महात्मा जुटे थे। उस अवसर पर स्वामी जी के जीवन के चमत्कारों की अच्छी तरह चर्चा की गई थी, जिसमे उपस्थित सत महात्माओ का समुदाय विशेष रूप से आनदित हुआ था। उन महात्मागणों द्वारा रचयिता को यह आज्ञा हुई कि वह उस चर्चा को, जिसमे रहस्य की और प्रकट न करने की अनेक बाते थी, लिपिबद्ध करे। साथ ही यह भी आदेश मिला कि रचना विचित्र छद और विचित्र भाषाओ मे रची जाय, जिसको बिना समझाए कोई न समझ सके। क्योकि कुछ वृत्तांत ऐसे थे जो प्रकट नही किए जाने चाहिए थे, जिनको उस

समय तक छिपाना था जब तक वे घटनाएँ घटित न हो जाती, जिनका निश्चय तत्कालीन सिद्ध ही द्वारा हो सकता था। फलत यह वृत्तातमाला देशवाडी प्राकृत मे पिशाच भाषा के साकेतिक शब्दों के योग से अदणा छदो मे सग्रथित की गई। ग्रथान्त मे यह भी लिखा है कि जो इन प्रसगों को समय से पहले खोलेगा वह पागल हो जायगा, परतु प्रकट होने पर (रचना मे वर्णित समस्त घटनाओ के घटित हो जाने के पश्चात्) जो इसका पाठ करेगा उसको तत्वज्ञान की प्राप्ति होगी और चतुर्वर्गजनित कामनाएँ सिद्ध होगी।

यद्यपि इस रचना की भाषा हिंदी से भिन्न होने के कारण यह विवरण लेने योग्य नहीं थी, तो भी इसका सबध स्वा० रामानद, कबीर, रैदास, खुसरो और पीपा से होने के कारण इसका विवरण लिया गया है। कबीर मे तो इसका घनिष्ठ सबध है और यदि इस रचना मे उल्लिखित बात प्रामाणिक और सत्य सिद्ध हो गई, तो इन सत कवियो के सबध मे भी बहुत सी विवादग्रस्त बातो का ठीक ठीक निर्णय हो जायगा। इसमें एक भविष्य कथन भी है, जो कबीर के वृत्त मे दिया जायगा। नीचे इनके सबध मे जो कुछ लिखा गया है वह सक्षेप मे क्रमपूर्वक दिया जाता है—

स्वा० रामानंद

ऋषिकेश मे एक सारस्वत दपति रहते थे, जो भरत मदिर मे पूजा करते थे। उन्होने बद्रीवन (उत्तराखड बद्रीनाथ) मे जाकर विष्णु भगवान् की तपस्या की, जिस पर भगवान् प्रसन्न हुए और उनको वर माँगने का कहा। उन्होने कहा, "आप हमारे पुत्र हों और हमे प्रसन्न करे।" भगवान् ने 'तथास्तु' कहकर उनकी मनोकामना पूर्ण की। परतु केवल बारह वर्ष तक ही जीवित रहने का वचन दिया। कालातर मे ये दपति कान्यकुब्ज वाजपेयी वश मे उत्पन्न हुए और प्रयाग मे रहने लगे। समय पाकर भगवान् इनके पुत्र रूप मे प्रकट हुए, जो आगे स्वा० रामानद के नाम से प्रसिद्ध हुए। जन्म से ही इनके अलौकिक कार्यों का आभास मिलने लगा था। बारहवे वर्ष इनका प्राणात हो गया, पर स्वा० राघवानद के आशीर्वाद और प्रयत्नो तथा इनके माता पिता एव इष्ट मित्रो द्वारा अपनी अपनी आयु का कुछ अश दे देने पर ये फिर जीवित हुए। फलत अपने जीवन-दाता स्वा० राघवानद के ये शिष्य हो गए। माता पिता ने इनके लाख मना करने पर भी इनके विवाह का प्रबध किया, परतु जिस कन्या के साथ विवाह निश्चित हुआ था उसका विवाह होने पर वैधव्य योग था, अत उसने विवाह न कर जीवन पर्यंत कुमारी रहने का प्रण किया। स्वा० रामानद जी से उसने दीक्षा ले ली और तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगी तथा थोड़े ही समय पश्चात् स्वर्ग भी सिधार गई। इस प्रकार स्वा० रामानद जी की विवाह न करने की इच्छा अपने आप पूर्ण हो गई। वे काशी मे रहने लगे और बहुत ही शीघ्र चारो ओर प्रसिद्ध हो गए। उन्होने अपना अलग सप्रदाय चलाया, जिसमे जात-पाँत, ऊँच-नीच और छूआछूत का कुछ भी भेदभाव नहीं था। संसार के सभी मनुष्यो के लिये वह खुला हुआ था। जो उसमे दीक्षित होता वह आनद और शाति से जीवन व्यतीत करता। उसकी आध्यात्मिक शक्ति भी पूर्णरूप से विकसित हो जाती। कबीर जैसे जुलाहे और रैदास सरीखे अछूत स्वा० रामानद जी के प्रौढ शिष्यो मे से थे। पहले तो बड़े बड़े पडितो, विद्वानो और कर्मकाडियो ने इस विचारधारा का विरोध किया, परंतु जब स्वा० रामानद जी ने उन्हें अनेक युक्तियो और चमत्कारो द्वारा निरुत्तर कर दिया, तो वे लोग चुप हो गए। बहुत से उनके अनुयायी भी हो गए। दक्षिण के विद्यारण्य मुनि उनके समर्थक थे। इन विद्यारण्य मुनि पर स्वामी जी ने भविष्य की बाते प्रकट की थी (यह भविष्यवाणी और एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विवरण जो हिंदुओ पर मुसलमानो के अत्याचार, तैमूर का हत्याकाड और लखनौती के उपद्रव से सबधित है, आगे कबीर के वृत्त मे दिए जायँगे)। कविवर खुसरो श्रीस्वामी जी से मिलने आए थे। शिष्यो सहित समस्त देश का भ्रमण कर और दिग्विजय प्राप्त कर तथा दीर्घायु भोगने के पश्चात् सवत् १५०५ मे श्रीस्वामी जी का साकेतवास हो गया।

कबीर

ज्योतिर्मठ के अधिपति (शकराचार्य) ने कैवल्य का लाभ कर ही लिया था कि इंद्र के द्वारा अघटित घटना हो गई। प्रतीची नाम की देवागना ने विघ्न उपस्थित कर दिया। महात्मा

उस पर मोहित हो गए और उसके साथ यथेष्ट विहार और रति क्रीड़ा की। अप्सरा ने भक्त प्रह्लाद को गर्भ में धारण किया। उसने शिशु को जन्म देकर उसे कमल पत्रों में रख लहरतालाब (काशी) में तैरा दिया। जुलाहा दपति नीरू और नीमा के आने तक वह उस नवजात शिशु की अलक्ष्य रूप में रक्षा करती रही। यह बात सवत् १४५५ वि० ज्येष्ठ पूर्णिमा की है। दपति को सहवास के पूर्व ही पुत्र (कबीर) लाभ हुआ। दपति के छूने से शिशु की द्युति मलिन हो गई, जिस पर वे उसको मोमिन के पास ले गए। मोमिन ने कहा, "तुम्हारे धन्य भाग्य है कि ऐसा पुत्र मिला।" उसने स्वाभाविक ढग से शिशु को उसकी ठुड्डी पकडकर पूछा, "किसका बेटा है ?" उसने कहा, "मैं वीरानद के औरस और दिव्या के जठर से जन्मा शिशु हूँ।" माता पिता का इस पर दृढ विश्वास हो गया। मोमिन ने शरया भाषा की शब्दावली छानबीन कर उसका नाम कबीर रखा। यह बात सारे शहर मे फैल गई। पडोस की कर्मा देवी ब्राह्मणी ने जिसकी जठर से उत्पन्न कन्या एक मास पहले गत हो चुकी थी, दूध पिलाना स्वीकार किया। एक वैश्य ने बिआई हुई गाय भेज दी। परतु शिशु ने किसी के दूध का ग्रहण नही किया। तीसरे दिन शिशु की रक्षा और माता पिता की चिंता दूर करने के लिये स्वामी रामानद जी ने प्रिय शिष्य अनतानद जी के द्वारा "सुधामुखी" नाम की जडी भेजी, जिसे शिशु मुख मे डालकर चूसने लगा। यह बूटी 'कबीर बूटी' नाम से प्रसिद्ध हुई। इससे कबीर की द्युति फिर ज्यो की त्यो हो गई।

:o: :o: o :o:

काशी के पडित स्वामी जी के पास गए और कहा, "कबीर जुलाहे ने कठी, तिलक, माला और छाप लगा लिया। वह अपने को आपका शिष्य बतलाता है। क्या यह सच है ? यदि ऐसा है तो अनर्थ है।" स्वामी जी ने शख बजाया। इससे सबकी द्वेषाग्नि बुझकर शात हो गई। तब स्वामी जी ने कहा, "वह मेरा शिष्य है। भगवान् सबमे है और भगवत शरणागति का सबको समान अधिकार है।" इतने मे कबीर जी भी आ गए। उनके मुख पर ऐसा प्रकाश था कि उससे प्रभावान्वित होकर वे सब लोग उठ खडे हुए और परदा भी (जो स्वामी जी और अन्य लोगों के बीच मे लगा रहता था) हटा दिया गया। साक्षात् दर्शन ने उनके अतःकरण को स्वच्छ और प्रकाशित कर दिया। स्वामी जी ने कहा—"हुसेनवशी माता द्वारा शुद्ध सात्विक भोजन से पला जिसने तकी (शेखतकी) के प्याले को अनिच्छापूर्वक लौटा दिया, उसको हेय दृष्टि से केवल वस्त्र व्यवसाय के कारण देखना मिथ्या अभिमान का ही काम है। ऐसे सत्पात्र को, जो शैशवावस्था मे अपने माता पिता का परिचय दे चुका है, मोक्षमार्गीय दीक्षा से वचित करना किसी भी समदर्शी जगद्गुरु के लिये उचित कार्य नही है।" "हमने व्यर्थ ही महात्मा को कष्ट दिया" ये बाते उन विद्वानो के शुद्ध हृदय मे अपने आप स्फुरित होने लगी, उन्होने क्षमा माँगी और विदा हुए।

:o: :o :o: :o:

दिल्ली मे तैमूर का हत्याकाड और लखनौती का उपद्रव होने के पश्चात् चारो ओर के श्रद्धालु स्वामीजी के पास आए। उस समय अजान के साथ मौलवी और मुल्लाओ के कठ बद हो गए। सब बडे विकल थे। उन्होने इसकी जड कबीर को समझा (ऐसा विदित होता है कि इन्होने कबीर पर अवश्य अत्याचार किया था) और उसकी ओर इगित किया। इब्बनूर और तकी आदि मौलवी राजाज्ञा के साथ भेंट और उपहार लेकर कबीर के पास गए। कबीर ने भेंट और उपहार को गगाजी मे फिकवा दिया। परतु बहुत अनुनय विनय के पश्चात् वह उनके साथ गुरु रामानंद के पास गया। स्वामीजी ने उपदेश किया—"ईश्वर मुसलमानो का ही नही, सबका है। वह किसी का पक्षपाती नही। यही मुस्तफा का आदेश है। केवल पूजा के विधान मे भेद होने से दूसरो पर जजिया लगाना अनुचित है। मदिर बनवाने मे और उपासना करने मे प्रतिबध हटा देना चाहिए। मदिरो को ध्वस्त नही करना चाहिए। मसजिद के सामने वर को न उतारा जाय। वह पक्षपातपूर्ण और पुरानी धर्मनीति के विरुद्ध तथा पारस्परिक प्रीति का बिगाड़ने वाला है। गाय की कुर्बानी अनावश्यक है। जब आचार्य ने ही प्राणरक्षा के लिये उसे ग्रहण नही किया तो और मुल्लाओ को आमनाय के प्रचार मे रुकावटें न डालनी चाहिए। धर्म पुस्तकें न जलाई जायँ, देवमदिर न ढहाए जायँ और न किसी का जी जलाया जाय। मुहर्रम मे त्योहार पर्व मनवाने मे प्रतिबंध न रहे। स्त्रियो का सतीत्व नष्ट न किया जाय। कथा आदि

मे शख बजाने का निषेध न रहे। कुभादि पर्वों पर यात्रियों से कर न लिया जाय। कोई हिंदू किसी फकीर के पास जाय तो उसका उसी के धर्मानुसार उपदेश दिया जाय। यदि इन बारह प्रतिज्ञाओ मे से किसी का उल्लघन होगा, तो राज्य नष्ट हो जायगा। उन्होंने इन प्रतिज्ञाओं को उचित जानकर मान लिया। शर्तों को लिपिबद्ध करके उस पर बादशाह की मुहर लगाई गई। तब सब ठीक हो गया।

:o: :o: :o: :o:

काचीवरम (दक्षिण) के लोगो ने वर्णद्वेष के कारण रैदास और कबीर की निंदा की। स्वामी जी के जमात का किसी ने भी स्वागत सत्कार नही किया। पुरी के उत्तर विद्याधर प्रजेश ने भोजन सामग्री की व्यवस्था की और स्वय भी सेवा मे उपस्थित हुआ। एक दिन उसके वापिस आने मे देर हो जाने के कारण उसकी स्त्री सीता अनुधीता स्वय पति की खोज मे जमात की ओर चली। सामने ही गुरुवानी गोदादेवी जा रही थी। उसने साथ की स्त्रियों से रानी को इगित करके कहा, "यह कबीर की जोय जा रही है। छू न जाना। बच के जाना।" पतिव्रता को इस पर बड़ा क्रोध आया और उसने श्राप दिया, तेरे इस भागवतापराध के कारण (जुलाहे के रूप मे भागवत की निंदा की, इस कारण) सारे देश मे वस्त्र निर्माण के उपकरण नष्ट हो जायँगे। दरिद्रता का विस्तार होगा और तेरे समान विचार वाले म्लेच्छ योनि मे पतित होगे। नक्षत्र तिलमिलाते, वायु विषैली बहेगी। पृथ्वी फटे और तू खटे।" तत्काल पृथ्वी फटी और गोदादेवी उसी मे समा गई। हाहाकार मच गया। दूसरे दिन से धर्मदड चला। लोग जब रसोई बनाएँ तो चौके मे कबीरदास प्रकट दिखाई दे। कोई भोजन न करे। इस प्रकार दो दिन और दो रात भूखे रहने पर सबका अभिमान दूर हो गया। सब नमित भाव से स्वामीजी के पास गए। विद्यारण्य मुनि भी शिष्यवर्ग और राजमत्री सहित उपस्थित हुए। शापानुग्रह की प्रार्थना की। स्वामीजी ने कहा, "यह (धर्मदड) भविष्य कल्याण के लिये था। अब ऐसा न होगा। पतिव्रता का श्राप व्यर्थ न जायगा। भगवान् भी उसे नही टाल सकते। जब यह विष वृक्ष फलेगा तब देशवासी बडे कष्ट मे पडेगे। शाप के प्रभाव से इसी किनारे से वणिक समाज आयगा और करघा चरखा घर घर से मिटाकर सब व्यवसाय हस्तगत करके देश को महाकगाल बना देगा। दरिद्रता के कारण धीरज छूट जायगा और धर्मग्लानि उपस्थित हो जायगी। ऐसे ही समय मे वैदेही के वरदान का फलीभूत होने का योग लगेगा। उस समय कबीरदास की ज्योति वणिक कुल मे मोहनदास (? गाधीजी) नाम से उतरेगी। चरखा का प्रचार करेगी और राम नाम के प्रताप से सब दुख दरिद्र भगावेगी—

तिघ्घप कबीरा काउआं। छन्दास मोहन गारुआं॥
विद्यांत सउपड़ फाउआं। रामेति पुहुपुरा पारुओ॥

विद्यारण्य स्वामी ने प्रश्न किया—"दरिद्रता सद्गुण का नाश और दुर्गुण की वृद्धि करती है, तो क्या उस कठिन समय मे नि सीम धर्मग्लानि की रोकथाम करने के लिये 'कर्मसूत्रधार' की ओर से कोई विशेष आयोजन होगा।" स्वामी जी ने मुस्कराकर कहा, "परित्राणायसाधूना" के प्रमाण से आप ऐसा प्रश्न करते हैं सो आप जैसे सहृदय ज्ञानी पुरुष से छिपा नही रह सकता। पचनद देश मे विदेह (?नानक) और बग मे राधाजी के परम प्रेम का मर्म जानने के लिये श्री यादवराज (गौराग महाप्रभु) स्वय अवतरित होगे और धर्मरक्षा की व्यवस्था करेगे। इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारो खूंट मे धर्मरक्षा का कटकाकीर्ण पथ कर्मसूत्रधार भगवान् ही प्रशस्त कर देंगे।"

विद्यारण्य मुनि को परम संतोष हुआ। मन की मलिनता दूर हुई। रहस्य रक्षा की प्रतिज्ञा करके अपने व्यक्तित्व के विषय मे पूछा। स्वामीजी ने एक पुष्प दिया। विद्यारण्य मुनि ने दलों पर एकाग्र दृष्टि से देखा और सब जान लिया, भविष्य को भी देख लिया।

रैदास

इनका केवल नामोल्लेख हुआ है, जो कबीर के वृत्त के अतर्गत है।

खुसरो

ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ने अपने शिष्य कवि खुसरो के हाथ एक विचित्र पत्र भेजा, जो सुनहले बेलबूटों से खूब सजा था। ध्यान देकर देखने पर उसमे अरबी भाषा का एक सूत्र

लिखा था जो उनके पूज्य ग्रंथ मे है—"इल्लाबजिक्र अल्लाह ततमैन उल कुलूब"—अर्थात् भगवत के सुमिरन भजन से ही आत्मा को शांति प्राप्त होती है। सुचतुर कवि ने इसका परिचय दिया और टीका टिप्पणी सहित इसकी पूरी व्याख्या की जिसे सुनकर समुपस्थित सज्जन बहुत प्रसन्न हुए। भगवत भागवत की तन्मयता पर एकता भासित हुई। तब वह बहुमूल्य पत्र स्वामी जी के चरण कमलो में इस प्रकार युक्तिपूर्वक परदे के भीतर पहुँचाया गया कि उसका कोई भी भाग या कोना दबा मुड़ा नही। गरद से धब्बा भी नही पड़ा। फिर प्रतीक्षा करते देर हो गई। तब कविवर खुसरो ने एक कसीदा प्रेम रस से पूर्ण सुनाया, जिसका प्रथम पाद फारसी भाषा में और द्वितीय चरण हिंदी भाषा मे था। उसमे गुरुवर की दयालुता को नायिका मानकर उसके प्रति अगाध प्रेम प्रकट किया गया था। इतने मे स्वामी जी ने दर्शन दिया। कवि आत्मानुभव का सुख लूटने लगा। स्वामी जी ने खुसरो का आदर किया और पाटांबर पर एक मंत्र अंकित कर अद्भुत पुष्प लताओं से खचित अभ्रक की मजूषा मे रखकर उसके (खुसरो के) हाथ वह ख्वाजा जी के पास भेजा गया। पीपा जी को भी साथ मे भेजा गया।

पीपा

गागरौन के राजा पीपा स्वामी जी के पास देवी की आज्ञा से दर्शन को आए। बड़ी कठिनाई से अनतानद जी के कहने पर स्वामी जी की आज्ञा हुई कि कुएँ मे गिर जाओ। पीपा जी बिना बिचारे कुएँ में गिर पड़े। वहाँ अनेक प्रकार के दृश्यों को देखा। पश्चात् स्वामीजी के चरण दर्शन हुए और दीक्षा मिली। काशी मे उनकी बड़ी ख्याति हुई। कुछ समय पश्चात् पीपा जी स्वामी जी को जमात सहित अपने राज्य मे ले गए। चार मास तक उनकी सेवा की। पीछे राज्य त्याग करके उन्ही के साथ हो लिए। उनकी स्त्री ने भी उनका अनुगमन किया। द्वारिका में जाकर ये दंपति समुद्र मे प्रविष्ट हुए। वहाँ उनको राधाकृष्ण का दर्शन मिला और जब बाहर निकले, तो शंख चक्र की छाप उनके वदन पर विद्यमान थी।

:o. ·o: .o: :o:

हस्तलेख के मुखपृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है—

"श्रीरामोजयति

"अथप्रसग पारिजात

जिसमे

"भगवान रामानंदाचार्य के दिव्य चरित तथा सदुपदेश

प्रणेता

"श्री श्री चेतनदास जी कृत श्रीमोनिक महाराजोक्त अनिल नामक हिंदी अनुवाद समन्वित इदं प्राप्त.

"श्री बिनायक जी महाराज सवत् १६२८ वि०

"श्रीपरमहंस जी राममगलदास गोकुल भवन अयोध्या ने सं० १६८४ मे पाया।

"संवत् १६६७ मे मलूक जी (केवल बहादुर, ग्रंथस्वामी) को मिला।"

विशेष

उपर्युक्त श्रीमौनिक (मोनिक) महाराज कृत अनिल नामक हिंदी अनुवाद के आधार पर ही प्रस्तुत ग्रंथ का विवरण लिया गया है। अनुवाद मे उसका समय नही दिया है पर उसकी भाषा को देखने से वह बीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध का विदित होता है। स्वा० रामानंद युग प्रवर्तक के रूप मे प्रसिद्ध ही हैं। जात-पाँत, ऊँच-नीच और छूआछूत के भेद को वे नही मानते थे। यही कारण था कि उनके यहाँ हिंदू और मुसलमान समान रूप से प्रवेश और आदर पाते थे। एक ओर उच्च से उच्च वर्ण के शिष्य श्री अनतानंद जी थे, तो दूसरी ओर नीच से नीच वर्ण के कबीर और रैदास सरीखे भी विद्यमान थे, जो गुरु भाइयो की तरह निष्कपट रूप से साथ साथ रहते थे। मध्यकालीन वैष्णव धर्मों मे इनका चलाया हुआ रामानदी सप्रदाय ही सबसे अधिक उदार और प्रगतिशील विचारधारा को लिए हुए था। सच तो यह है कि मुसलमानी काल मे भारत की संस्कृति और धर्म की रक्षा सबसे अधिक इन्होंने ही की। यदि इसमे अलौकिक शक्ति और आध्यात्मिक चमत्कार न होते तो कट्टर धर्म के प्रचार मे लगे मुसलमानी विजेताओ की तलवारें

जो अन्य धर्मावलबियो की खून की प्यासी रही, अरब और भारत के बीच के क्षेत्र की संस्कृति को विनष्ट करती हुई भारत मे आकर कुठित न हो जाती। आर्य सस्कृति की रक्षा करने में मध्यकालीन सभी वैष्णव धर्मों का योग अवश्य रहा पर उनमे सबसे आगे स्वा० रामानद और उनके अनुयायी ही रहे। कबीर के गुरु होने के नाते निर्गुण पथ के प्रचार का मूल आधार भी इन्ही का समझना चाहिए क्योंकि कबीर के विचारो से वे सहमत थे। अपने अतर्धान होते समय शिष्य वर्ग को इन्होंने इसी प्रकार का सदेश दिया था, जो ध्यान देने योग्य है—

"अतवार अठमी पाहचिण। बीदी बुमीदी आहरिण।
विप्पां भुचंसा माहकिण। तिसुधा मुधा था लाहलिण॥

"अष्टमी रविवार के दिन अनुष्ठान की समाप्ति पर शिष्यो, सतो और विप्रो को संबोधित करके महाराज ने कहा। सब शास्त्रों का सार भगवत् स्मरण है, जो सतो का जीवन आधार है। शिखा सूत्र का आधार पादज और अन्त्यज है।

"लहुवाच लुपिग घासुमू। बतखाछ भाडिस भासुमू॥
णवमी अयोध्या टासुमू। सेगा उगाढिह गासुमू॥

"भाई!! पैरो को कटाकर समाज को पगु मत बनाना। कलको रामनवमी है। अयोध्या जी जाऊँगा। सब यही रहेगे और उत्सव मनावेंगे।"

इसी तरह इन्होंने अयोध्या के राज परिवार को, जो मुसलमानो के स्पर्श से भ्रष्ट हो गया था उसकी प्रजा समेत शुद्ध किया।

यदि हम ऐसा कहें कि सगुण निर्गुण और रामानदी विचारधाराओ ने ही मिलकर वर्तमान स्वतत्र भारत का निर्माण किया है, तो कोई अत्युक्ति न होगी। जात पाँत, छूआछूत और ऊँच नीच को दूर कर उदार विश्वधर्म की, जो लहर इस समय समस्त भारत में व्याप्त हो रही है वह इस विचारधारा से किसी प्रकार पृथक् नही। प्रस्तुत ग्रंथ मे वर्णित भविष्यवाणी के अनुसार तो आधुनिक भारत का निर्माण करने मे स्वा० रामानद और कबीर ही दृष्टिगत होते है क्योंकि उसमे महात्मा गाधी को कबीर का अवतार कहा गया है। फिर भी इस युग को गाधी युग कहने मे कोई विरोध नही। प्रस्तुत ग्रथ सवत् १६२८ मे (? श्री विनायक महाराज द्वारा) प्रकट हुआ और गोकुल भवन अयोध्या मे सवत् १६८४ मे आया। इस दृष्टि से भी यह प्रामाणिक जँचता है क्योंकि इसमे वर्णित भविष्य की घटनाएँ १५ अगस्त १६४७ को (देश के स्वतत्र हो जाने पर) ही सत्य सिद्ध हुई समझना चाहिए। इसलिये यह आक्षेप निराधार होगा कि किसी ने इस ग्रथ को सवत् १६२८ मे १६८४ के बीच किसी समय रचा है। इस ग्रथ से स्वा० रामानद के छोटे बडे सभी कार्य जनता के समक्ष आ जायेंगे। इसमे स्पष्ट हो जायगा कि स्वा० रामानद जी ने प्राचीन दार्शनिक (विशेषकर वेदान्त के विचारो को) और धार्मिक ग्रथो के सिद्धातो को देश-काल के अनुरूप किस प्रकार उदार बनाया और उनको स्वाभाविक रूप से किस प्रकार कार्य मे भी परिणत कर दिखाया। वैसे तो सभी वैष्णव सिद्धात उदार ही हैं, पर इसमे सदेह नही कि ऐसे सिद्धात को मानव मात्र के हित मे पूर्णरूप से कार्य मे परिणत करने वाले स्वा० रामानद ही थे। निर्गुण सप्रदाय का प्रचार किस परिस्थिति मे और क्यो हुआ? इसके कारण भी धीरे धीरे स्पष्ट हो रहे है। अत मे यह कहना ठीक होगा कि मध्यकालीन सगुण और निर्गुण भक्ति-मार्गों की सार्थकता अब समझ मे आ रही है। इनके सतत प्रयत्नो के फलस्वरूप भारत के स्वतत्र हो जाने से वर्तमान विश्व नाटक का एक अक समाप्त हो गया है, यह रहस्य भी प्रकट हो रहा है।

ग्रथ मे अनेक ऐतिहासिक विवरण भी है, जैसे, गग ब्राह्मण और जफरखाँ, पारसियो (अग्निपूजको) के गुरु कारोवियाँ जी, विजयनगर के राजा बक्कराय, राणा हम्मीर का विश्वासपात्र पुहकारसी आदि। इसमे अनेक दार्शनिक और आध्यात्मिक उपदेश भरे पड़े है, जो सर्वग्राह्य है तथा जिनसे तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक बातो की जानकारी प्राप्त होती है। स्वा० रामानद जी के परिभ्रमण मे पडने वाले अनेक नगरों के उल्लेख भी हैं। इसमे सदेह नही कि यदि इस ग्रथ का मूल ठीक ठीक पढा जा सका और वह अनुवाद से सर्वथा मिलता गया, तो स्वा० रामानद, कबीर, रदास और पीपा के अतिरिक्त मध्यकालीन इतिहास के संबध मे भी इससे बड़ी सहायता मिलेगी। यद्यपि भविष्य कथन वाली बात पर इस वैज्ञानिक युग मे विद्वानों का

सरलता से विश्वास होना संभव नहीं तो भी इसमें वर्णित अन्य प्रसगों की इतिहास के आधार पर छानबीन करना आवश्यक है।

ग्रंथ के अनुसार कबीर का जन्म संवत् १४५५ में हुआ। कुछ लोग इनका मृत्युकाल संवत् १५०५ बतलाते हैं जो इस ग्रंथ से गलत है। इस संवत् मे स्वामी रामानंद जी का साकेत-वास हुआ था। इस ग्रंथ के विषय मे श्री शंकरदयालु श्रीवास्तव एम० ए० का एक लेख विशाल भारत (नवंबर, १९३२ ई०, भाग १०, अंक ५) मे छपा है जिसका उल्लेख डा० बड़थ्वाल ने दिल्ली रिपोर्ट (पृष्ठ ८) मे स्वा० रामानंद कृत "ज्ञानतिलक" के प्रसग मे किया है।

९९. चोपसिंह "चोप"—इनका पता प्रस्तुत खोज मे प्रथम बार ही लगा है। रामकृष्ण की भक्ति विषयक इनकी एक खंडित रचना के विवरण लिए गए हैं, जिसमे ग्रथ का नामोल्लेख नही पाया जाता। आरंभ मे दिए सख्या तीन के दोहे के आधार पर इनका नाम 'हरिजस' रख दिया गया है—

"बयाकुरु "हरिजस" कहत सुनत दिवसनिसि जाइ ॥३॥"

रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं। रचना दोहा, सोरठा, कवित्त और पदों में की गई है तथा काव्य की दृष्टि से सुदर है।

रचयिता का दूसरा नाम 'चोप' भी है। अन्य वृत्त अप्राप्त हैं।

१००. छत्रनृपति—ये "पदरत्नावली" नामक रचना के रचयिता हैं। रचना द्वारा इनका नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। पिछली रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न जान पड़ते है। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ मे इन्होंने राग रागिनियो और उनके पुत्रों के साज और चित्रो सहित उदाहरण मात्र दिए हैं। लक्षणों का उल्लेख नही किया है। उदाहरणो मे राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है जो काव्य की दृष्टि से सरस है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति प्राचीन टाइप मे छपी हुई है। यह अपूर्ण है और इसमे रचनाकाल तथा मुद्रणकालो का उल्लेख नही पाया जाता।

१०१. छत्रपाल सिंह नृप—इन्होने किसी "जोखूराम द्विज" की प्रशसा मे एक छोटी सी रचना की है। प्रशस्ति मे रचना का नामोल्लेख नही है, अतः विषय के आधार पर उसका नाम "जोखूरामयश वर्णन" रख दिया हे। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १९५७ है।

रचना के आधार पर केवल इतना ही पता चलता है कि रचयिता कोई राजा थे और जोखूराम बडे गुणी तथा विध्यवासिनी देवी के भक्त थे एव कोई सेवकराम उनका शिष्य था। ग्रथस्वामी (पं० गुरुप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—हीगनगीरा, डाकघर—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर) का कहना है कि जोखूराम उनके परपितामह थे। उन्होने 'वनदुर्गालहरी' नामक ग्रथ की रचना की और अन्य फुटकर कविताएँ भी लिखी। रचयिता के विषय मे उनका (ग्रथ स्वामी का) कथन है कि वे सभवत बेहदबल रियासत (प्रतापगढ) के निवासी थे। पिछली खोज रिपोर्टों में उल्लिखित इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न जान पड़ते हैं। सभव है पूर्व रचयिता भी यही हो। खोज मे नवोपलब्ध है।

१०२. छिब्बूराम या छबूराम—इनकी फलित ज्योतिष विषयक रचना "लग्नसुंदरी" के विवरण इस बार भी लिए गए है। पिछली तीन खोज रिपोर्टों मे इसका उल्लेख हो गया है, देखिए १२—४३, २३—७८, २९—६८ ए, बी, सी। रचनाकाल सवत् १८७० है। इसकी प्रस्तुत प्रति सवत् १९१७ की लिखी हुई है। इसमे रचयिता का निवासस्थान सिद्धपुरी लिखा है जहाँ कि उपर्युक्त पिछली रिपोर्टों मे इन्हे सगौनी निवासी बतलाया है। शेष वृत्त समान है, अर्थात् इनके पिता का नाम धरनीधर और बडे भाई का नाम मनसुखराम था। कोई रामचरन इनके गुरु थे। प्रस्तुत ग्रंथ मे इन्होने १०७० दोहा, छद और कवित्तों की सख्या बतलाई है।

१०३. छीतम या जन छीतम—इनकी 'जखजी' (? जखडी) नाम से एक छोटी रचना मिली है जिसके विवरण लिए गए हैं। इसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १८२६ इस आधार पर दिया है कि इस रचना के साथ एक ही.

हस्तलेख में पांडव गीता भी लिपिबद्ध है जिसमे उक्त संवत् लिपिकाल के रूप में दिया गया है। इसकी भाषा मे राजस्थानी का भी मिश्रण है।

प्रस्तुत रचना द्वारा रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि इनके गुरु का नाम दासमदास था। अन्य विवरण उपलब्ध नही। ग्रथ की भाषा के आधार पर ये राजस्थानी विदित होते हैं। सभवत ये दादूपथी थे और खोज रिपोर्ट (२-६४) मे आए जन छीतम विदित होते हैं।

१०४. **छोटेलाल**—इनकी तीन रचनाओ—१. छदबंध सूत्र, २. देवपूजा और ३. पद—का एक हस्तलेख मिला है जिसका एक ही विवरण ले लिया गया है। प्रथम रचना में मोक्ष ज्ञान का वर्णन है, दूसरी मे जिनदेव की पूजाविधान का उल्लेख है और तीसरी मे जैन धर्मानुसार ज्ञानोपदेश वर्णित है। लिपिकाल सवत् १९५० है। रचनाकाल केवल प्रथम रचना का प्राप्त है जो सवत् १९३२ है।

रचयिता का वृत्त प्रथम रचना मे दिया है जिसके अनुसार ये अलीगढ जिला के अंतर्गत मेडू ग्राम के निवासी थे। पिता का नाम मोतीलाल था और भाई का नाम उदयराज। कुल इनका इक्ष्वाकु था और जाति जायसवाल। जैन धर्म के अनुयायी थे। ये काशी में किसी सैनी की सगति मे रहे। एक मिखरचद का भी इन्होने उल्लेख किया है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१०५. **जगजीवनदास स्वामी**—ये जगजीवनदास सतनामी पथ के प्रवर्तक के रूप मे अच्छी तरह प्रसिद्ध है। पिछली कई रिपोर्टों मे इनकी रचनाओं का उल्लेख हो चुका है जिनके आधार पर इनका वृत्त इस प्रकार है—

"सरदहा कोटवां (बाराबकी) के चदेल क्षत्री। जन्म स० १७२७, मृत्यु स० १८१७। गगाराम के पुत्र। विश्वेश्वर पुरी के शिष्य। गुरु का नाम बुल्ला साहब (? दूसरे गुरु)। दामोदरदास, दूलनदास, नवलदास, दुलारेदास तथा देवीदास के गुरु। गुलाल साहब इनके गुरु भाई थे। कोटवा (बाराबकी) मे अब तक इनके सप्रदाय का प्रधान केंद्र है।"

इस बार इनकी निम्नलिखित नौ रचनाएँ और मिली हैं—

१. **अघविनास**—इसकी चार प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल संवत् १७८० है। लिपिकाल क्रमानुसार स० १९८७, १९०३, २००० और १८४६ है। विषय, रामभक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन। पिछली खोज रिपोर्ट (२३-१७५ ए, बी) में इसका उल्लेख हो चुका है।

२. **प्रस्तुति महावीर जी जन्म की**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९२२। विषय, हनुमान जी की स्तुति। खोज रिपोर्ट (२३-१७५ एफ) मे यह आ चुकी है।

३. **कहरानामा**—रचनाकाल अविदित, लिपिकाल सवत् १९२३। विषय, ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट (२६-१६३) मे इसका उल्लेख है।

४. **ज्ञानप्रकाश**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९१६। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट (२६-१६३ आर) मे उल्लिखित है।

५. **परम ग्रंथ**—रचनाकाल सवत् १८१२ और लिपिकाल सवत् १९२३। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट (२३-१७५ ई, २६-१६३ बी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

६. **महाप्रलै कहरानामा**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९२२। विषय, ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट (२६-१६३) मे आ चुकी है।

७. **लीला**—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल संवत् १९२३। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट २३-१७५ डी, २६-१८७ बी पर उल्लेख है।

८. **बानियाँ**—इसमे रचयिता की २४ रचनाएँ संगृहीत हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—ग्रंथमनपूरना, परमग्रथ, ज्ञानप्रकाश, महाप्रलै, कहरानामा तीन, चरनवदगी, सरनवंदगी, विवेकज्ञान, उग्रज्ञान, छंदविनती, बारहमासा, विवेकमंत्र, बुद्धिवृद्धि, दृढध्यान, ग्रंथसन्यास, ग्रथ अघोर, प्रस्तुति महाबीर जी की दो, शब्द, लीलावती बानी और दोहावली। रचनाकाल केवल परम ग्रंथ" मे दिया है, जो संवत् १८१२ है। लिपिकाल सवत् १८८७ है। दोहावली मे गुरु "बिसेसरपुरी" का उल्लेख है। उसमे दूलनदास, देवीदास, खेमदास, गूदरीदास आदि

शिष्यों का भी उल्लेख है, जिनको उपदेश दिया गया है। हस्तलेख शुद्ध लिखा हुआ है और लिपिकाल की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

६. शब्दसागर—रचनाकाल सवत् १८१२ वि० और लिपिकाल सवत् १९४० । विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश । इसमे रचयिता के २६ ग्रथ सगृहीत है, जो इस प्रकार हैं—ग्रथ शब्दावली, दोहावली, लीलावता, बुद्धि वृद्धि, दृढ़ध्यान, विवेकमत्र, कहरानामा, कहरानामा-दोसर, कहरानामा तीसर, चरन वदगी, सरन वदगी, विवेकज्ञान, उग्रज्ञान, छदविनर्ती, छद दोसर, छद तीसर, बारहमासा, सन्यासजाग, अघोरमत्र, अस्तुति महावीर जन्म, अस्तुति दोसरी, अस्तुति तीसरी, परम ग्रथ, महाप्रलै, ज्ञानप्रभास और मनपूरन ।

अतिम दो रचनाएँ विशेष महत्वपूर्ण है। इनमे रचयिता की लगभग समस्त कृतियाँ सगृहीत हैं। रचयिता के विषय में इनके द्वारा और कोई नवीन बात नही विदित हुई। पता लगाने पर विदित हुआ कि रचयिता ने विश्वेश्वर पुरी से जो गुरु दीक्षा ली थी वह केवल कुल परपरा से चली आने के कारण। वह सन्यासियों की दीक्षा था। निर्गुण मत की दीक्षा इनको बावरी साहिबा की परपरा मे यारी साहब के शिष्य बुल्ला साहब से मिली थी। यह परपरा भी सतनामी ही कहलाती है और कबीर की तरह ही निर्गुण सिद्धाता की प्रतिपादक है। रचयिता निर्गुण और सगुण दोनों के मेल मे रहे यद्यपि निर्गुण का अधिक वर्णन किया है।

१०६. जगतसिंह—इनके दो ग्रथ "भारती कठाभरन" और "साहित्य सुधानिधि" नाम से मिले हैं। पहले मे पिंगल विषय का वर्णन है, जिसमे रचनाकाल सवत् १८६३ और लिपिकाल सवत् १८९६ दिए है। दूसरे मे साहित्यशास्त्र के अगो का वर्णन छदो मे विवेचन किया गया है। इसमे जयदेव, भरत, भोज, मम्मट, विश्वनाथ, गोविद भट्ट और भानुदत्त नामक सस्कृत साहित्य के आचार्यों के ग्रथो से सहायता ली गई है। यह दस तरगो मे रचा गया था पर इसकी प्रस्तुत प्रति मे केवल सात ही तरग हैं। रचनाकाल सवत् १८५८ और लिपिकाल सवत् १९४३ दिए है। ये दोनो ग्रथ क्रमश पिछली खोज रिपोर्ट २३–१७९ बी और ६–१२७ ए, २०–६४ ए, बी, २३–१७९ एम, एन, २६–१९२ बी मे आ चुके हैं।

रचयिता प्रस्तुत ग्रथो और उक्त रिपोर्टो के आधार पर सरयूपार उत्तर मे स्थित गोडा (? द्योतहारा) के निवासी थे और वही के बिसेन वशी राजा दिग्विजै सिंह (भिनगा नरेश) के पुत्र थे। सवत् १८२० से १८७७ के लगभग वर्तमान थे। पिछली रिपोर्टो मे इनके बहुत से ग्रथो का उल्लेख है, जिनसे प्रकट होता है कि ये अच्छे कवि और साहित्य मर्मज्ञ थे।

१०७. जगन्नाथ या जन जगन्नाथ—इनकी रची "गुरुमहिमा" की दो प्रतियो के विवरण इस बार भी लिए गए है। इसमे गुरु का माहात्म्य वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १७६० है। लिपिकाल केवल एक प्रति मे सवत् १९६४ दिया है। पिछली खोज रिपोर्टों (२९–१६४ बी, ६–१२६, २३–१८६ ए, बी, सी, २६–१८९ जी, दि० ३१–३८ ए, बी, ६–२९६) मे इसका उल्लेख हो चुका है।

रचयिता के सबध मे प्रस्तुत रचना की पुष्पिका द्वारा पता चलता है कि ये किसी स्वामी तुलसीदास के शिष्य थे। परतु ये तुलसीदास रामचरितमानस के कर्त्ता गो० तुलसीदास से भिन्न जान पडते हैं। रचना के आगे एक गुरु परपरा दी हुई है, जो सृष्टि के आरभ से प्रारभ होती है। उसमे स्वा० राघवानद और स्वा० रामानद जी का उल्लेख गुरु शिष्य के रूप मे हुआ है। स्वा० रामानद के शिष्य अनतानद जी थे। उनके कृष्णदास पयहारी और उनके श्री काल जी तथा कील जी के श्री जगी जी शिष्य थे। इन्ही जगी जी के शिष्य स्वा० तुलसीदास थे, जो प्रस्तुत रचयिता के गुरु रहे, ऐसा विदित होता है। अत. रचयिता की गुरु परपरा का अब ठीक ठाक निश्चय हुआ समझना चाहिए। पहले यह अनिश्चित था यद्यपि प्रस्तुत रचना कई बार मिल चुकी है। अन्य वृत्त नही दिया है। पिछली विवरणिकाओं मे इन्हे भाट कहा गया है।

१०८. जगन्नाथ या जन जगन्नाथ—इनकी एक रचना "राजा हरिश्चद्र की कथा या हरिश्चद्र सत" नाम से मिली है, जिसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (६–१२४) मे भी है। प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १९२० है। इससे रचयिता के विषय में नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त उपलब्ध नही होता। परतु उपर्युक्त रिपोर्ट और संक्षिप्त विवरण के

आधार पर ये मिश्र ब्राह्मण, सवत् १५६० के लगभग वर्तमान, जौनपुर निवासी और मुगल सम्राट् अकबर के आश्रित थे। सम्राट् की ओर से इन्हे भूमि मिली थी, पर ये उसके नवरत्नों में के जगन्नाथ से भिन्न हैं।

१०६. जगन्नाथ सिंह बिसेन—"युद्ध ज्योतिष" नामक ग्रथ के ये रचयिता हैं, जिसमे युद्ध मे हार जीत होने के सबध मे ज्योतिष द्वारा फलाफल का वर्णन किया गया है। रचनाकाल संवत् १८८७ है। इसकी दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से एक मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। दूसरी मे लिपिकाल सवत् १६१४ है। रचनाकाल ऊपर दे दिया गया है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (६–१२३, १७–२७) मे हो चुका है। इसके आधार पर रचयिता बिसेन ठाकुर राजा देवीबख्शसिह के पुत्र और रामपुर (डेरवा अवध, जो प्रतापगढ मे है) के निवासी थे। ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियो के आधार पर ये प्रतापगढ के अन्तर्गत धनगढ स्टेट (परगना ढिंगवस) के ताल्लुकेदार थे। एक प्रति मे इनकी विस्तृत वशावली दी हुई है, जो इस प्रकार है—

- काशी (रामपुरा डेरवा के राजा)
  - गयराम
    - सुलतान (इन्होंने ढिंगवस को अलकापुरी के समान बनाया)
      - भरतराय (सोमवशी राजा के साथ सग्राम मे मारे गए)
        - लक्खनसिंह
          - हुलास
          - सेर
          - तेज
          - मनि
          - मोहन
          - चयनसिह
            - रिसाल
              - भवानीबक्स
              - आमसिह
                - लाल महिपाल
              - कामसिह
              - मेहरबानसिंह
            - अवसान
              - देवीबक्स
                - लाल रघुनाथ
                - जगन्नाथ सिह (रचयिता)
      - कनकसिह
        - वनसिह

इन राजाओ मे से सुलतान और भरथराम प्रसिद्ध हुए। पहले ने 'ढिंगवस' को अलकापुरी के समान बड़े मनोरम ढग से बसाया और दूसरे ने किसी सोमवशी राजा के साथ सग्राम मे प्राण छोड़े।

११०. जतनलाल—इन्होंने 'अनन्यसार' नामक ग्रथ की रचना की जिसमे श्री हित हरिवशजी का रूप उनकी वशावली, ब्याह जनेऊ और वृदावन की शोभा का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। इसमे रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। परतु इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (६–१३७) मे हुआ है, जिसके अनुसार ग्रंथ का पूरा नाम रसिक अनन्यसार है और रचयिता सं० १८६१ के पूर्व वर्तमान स्वा० हित हरिवश जी के अनुयायी थे।

१११. जनकराज किशोरीशरण—इनकी "सिद्धात मुक्तावली" मिली है, जिसमे वैष्णव भक्ति सिद्धातो का वर्णन है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १६०७ है। इसमें रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। परतु इसका उल्लेख दो खोज रिपोर्टों (६–१८१ डी, ६–१३४ ए) मे हो चुका है, जिनके आधार पर इनका उपनाम किशोरी

शरण, रसिक अलि या रसिक तथा रसिकबिहारी था। जनकलाड़िलीशरण के गुरु और सुदामापुरी (गुजरात) के निवासी थे। अयोध्या के वैष्णव महंत राघवदास के शिष्य और अंत में गद्दी के स्वामी हुए। संवत् १८७५ के लगभग वर्तमान थे।

इनकी बहुत सी रचनाओं का उल्लेख पिछली रिपोर्टों में हो चुका है।

११२. जनज्वाला—इन्होंने संस्कृत ग्रंथ 'प्रश्न मनोरमा' की भाषा टीका की, जिसमें प्रश्नों द्वारा शकुन विचार किया गया है। रचनाकाल संवत् १९२७ है। लिपिकाल दिया नहीं। ग्रंथ के अनुसार रचयिता हजरतगंज, लखनऊ में रहते थे। अन्य वृत्त उपलब्ध नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

११३. जनबेगम—इनकी एक रचना "वैराग्य बारहमासा" के विवरण लिए गए हैं, जिसमें भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता के विषय में इसके द्वारा इतना ही पता चलता है कि उनके गुरु का नाम छंना था। खोज में नवोपलब्ध है।

११४. जनमुकुंद—इनके नाम से मिली हुई "भ्रमरगीत या भँवरगीत" की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। पहले भी इस रचना के कई बार विवरण लिए जा चुके हैं, देखिए खोज रिपोर्ट (२–१०४ दो; ६–२७३, ९–१८४)। इन रिपोर्टों से रचयिता के विषय में केवल इतना ही पता चलता है कि उनका उपनाम मुकुंददास भी था। अन्य वृत्त अभी तक अज्ञात ही हैं।

प्रस्तुत रचना प्रसिद्ध अष्टछाप कवि नंददास की मानी जाती है, जिनका दूसरा नाम जनमुकुंद भी बतलाया जाता है। इस त्रिवर्षी में एक "कोकशास्त्र" के विवरण लिए गए हैं, जिसके रचयिता नंद और जनमुकुंद दो भाई थे। ये जाति के कायस्थ थे और संवत् १६०० के पश्चात् विद्यमान थे। इन बातों को दृष्टि में रखते हुए यह विदित होता है कि संभवत यह 'भ्रमरगीत' भी अष्टछाप कवि नंददास की न होकर कोकशास्त्र के रचयिता इन्हीं बंधु द्वय (नंद और जनमुकुंद) की है। इसका इस बार फिर विवरण लेने का यही तात्पर्य था कि इस पर दुबारा विचार किया जाय। नंद और जनमुकुंद के लिये देखिए संख्या १७६।

प्रस्तुत रचना की जिस प्रति के विवरण लिए गए हैं उसमें रचनाकाल का कोई उल्लेख नहीं। लिपिकाल संवत् १८९८ दिया है।

११५. जयचंद—इन्होंने सुप्रसिद्ध जैन आचार्य श्री शुभचंद्राचार्य कृत संस्कृत ग्रंथ "ज्ञानार्णव" की भाषा टीका की है, जिसकी एक खंडित प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमें रचनाकाल और लिपिकाल के साथ साथ टीका के रचयिता का भी उल्लेख नहीं है। परंतु पिछली खोज रिपोर्ट २३–१८७ ए पर यह आ चुकी है, अत: उसके अनुसार टीका के रचयिता जयचंद और रचनाकाल संवत् १८६९ विदित हुए हैं। रचयिता जयपुर निवासी खंडेलवाल जैन थे।

प्रस्तुत टीका खड़ी बोली में है और संवत् १८६९ की होने के कारण महत्वपूर्ण है। इसी समय के लगभग इंशा, सदासुखलाल और लल्लू जी लाल ने भी खड़ी बोली गद्य में रचनाएँ कीं।

रचना का विषय जैन धर्मानुसार ज्ञानोपदेश है। यह एक बृहदाकार का ग्रंथ है।

११६. जयदयाल—इन्होंने "जुगलानंदसुधासमुद्र, माधुर्यलहरी-सिकतावली और अष्टजाम सेवाप्रकरण" नामक रचनाएँ कीं जो एक ही हस्तलेख में संगृहीत हैं, जिसका विवरण लिया गया है। रचनाकाल इनमें से किसी में नहीं दिया है, लिपिकाल संवत् १८७३ वि० है। इनमें राधाकृष्ण की लीलाओं और उनकी अष्टयाम की सेवाविधान का वर्णन है। रचना काव्य की दृष्टि से भी सरस है।

रचयिता का केवल इतना ही पता चला है कि इनके गुरु का नाम कृष्णदास था, जो (पुराण इतिहास से) प्रसिद्ध है—

"श्री गुरु कृपानिधान सुजस सब वेद बखानें।
कृष्णदासगुणरूप प्रगट इतिहास पुरानें॥

सोई समयुत होइ कृपा करि रीति बताई ।
मैं निजमति अनुसार हिए धरि मति सम गाई ॥"

अन्य वृत्त उपलब्ध नही । इस नाम के एक रचयिता खोज रिपोर्ट (२६–१७३; १७–८६, २३–१८८) मे भी उल्लिखित हैं पर वे संवत् १६०६–७ के लगभग वर्तमान थे जहाँ कि प्रस्तुत रचयिता संवत् १८७३ वि० जो कि इनकी रचनाओं का लिपिकाल है—के पूर्व वर्तमान थे । अतः ये उससे भिन्न हैं और खोज मे नए मिले है ।

११७. जयसिंह रायराजा—ये "सतसई" के रचयिता है जिसके विवरण पहले भी लिए जा चुके है, देखिए खोज रिपोर्ट (६–१३६)। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये जाति के कायस्थ, किसी मुगल सम्राट् के आश्रित और संवत् १८१२ मे वर्तमान थे । अंत समय मे अयोध्या चले गए थे जहाँ संन्यासियो की भाँति रहने लगे थे ।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति संवत् १६५७ की लिखी है और इसमे रचनाकाल और रचयिता का वृत्त नही दिया है । इसमें संदेह नही कि रचना सरस और मार्मिक उक्तियो से पूर्ण है । इसकी रचना ज्ञान और भक्ति पक्ष को लेकर हुई है । इसका अंत का दोहा इस प्रकार है—

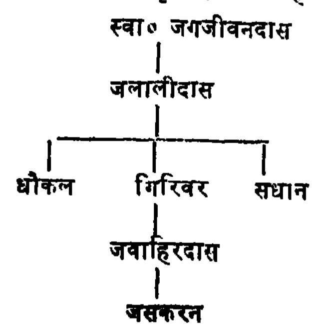
सतसइया प्रतिबोहरा सोनबिहारी लीन ।
जै प्रभु अक्षर अर्थ सब संत नेवछावरि कीन ॥३१३॥

(बिहारी ने अपनी सतसई के प्रत्येक दोहे के लिये सोना लिया, पर जैप्रभु (रचयिता) ने (अपनी प्रस्तुत सतसई के) सब अक्षर और अर्थ या अक्षर रूपी वैभव संतो को निछाकर कर दिया) ।

इससे विदित होता है कि रचयिता न अपनी कृति को बिहारी सतसई की तरह ही संभवतः ७०० दोहों मे रचा है और उसी के अनुरूप उसको सरस बनाने की चेष्टा की है । प्रस्तुत प्रति में केवल ३१३ दोहे है और उपर्युक्त रिपोर्ट मे उल्लिखित प्रति मे ४६१ । इनसे भी यही सिद्ध होता है ।

११८. जवाहिर—इनकी रची "नासिकेत पुरान" नामक रचना की एक खंडित प्रति और जीर्णशीर्ण प्रति के विवरण लिए गए है, जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है । इसमें उद्दालक ऋषि के पुत्र नासिकेत ऋषि की कथा का वर्णन है । इसके द्वारा रचयिता के पिता का नाम परमदत्त त्रिवेदी था, ऐसा विदित होता है । अन्य वृत्त नही दिया है । ये पिछली खोज रिपोर्टों में आए इस नाम के रचयिताओ से भिन्न जान पडते है, अत खोज मे नवोपलब्ध है ।

११९. जवाहिरदास, अहलाददास और गिरवरदास—इन लोगो के नाम से एक आज्ञा-पत्र मिला है, जिसका कोई नाम नही दिया है । विषय को देखते हुए इसका नाम "तीरथ के पंडा" रख दिया है, क्योकि इसमे झुनझुन फुनफुन, रिषिनाथ और जगबहादुर नाम के व्यक्तियो को क्रमशः मथुरा, अयोध्या और प्रयाग तीर्थों मे सत्यनामी पंडाओ के रूप मे पूजने का आदेश है । ये लोग सतनामी पंथ के प्रवर्तक स्वा० जगजीवनदास के वंशज थे और उन्होने उक्त तीर्थों की यात्रा की थी । संवत् १८७६ मे जवाहिरदास अपनी माता के साथ मथुरा वृंदावन गए थे और संवत् १८८४ मे अहलाददास । इनका वंशवृक्ष इसप्रकार है—



बहुलालदास का पता नहीं चलता कि ये कौन थे। परंतु संभवतः स्वा० जगजीवनदास के भतीजे थे।

१२०. जवाहिरपति—इनकी दो रचनाएँ "शब्दप्रकाश" और "साखी" नाम से मिली हैं, जिनमे निर्गुण मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। इनमे रचनाकाल और लिपिकाल आदि का कोई उल्लेख नही हुआ है, यद्यपि ये दोनो ही रचनाएँ पूर्ण रूप मे मिली हैं। परंतु साखी के अंत में रचयिता ने अपने गुरु दूलनपति की मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार किया है—

सावन चौथि अजोरि तिथि नावासी सन्बुधवार।
दूलनपति तन त्याग करि जग तजि शब्द अधार।

इसके अनुसार सावन शुक्ला चौथ, बुधवार को दूलनपति ने तन त्यागा था। सन् को यदि हिजरी सन् मानें—जोकि ठीक जँचता है—तो इसके अनुसार वि० संवत् १६२६ के लगभग आता है। अतः इसी के आसपास प्रस्तुत रचनाओ और रचयिता का समय जानना चाहिए।

रचयिता का वृत्त इन रचनाओं द्वारा तो केवल इतना ही मिलता है कि ये किसी दूलनपति के शिष्य थे। परंतु इस त्रिवर्षी मे एक मोहनलाल कृत 'गुरुप्रनाली' नामक रचना के विवरण लिए गए हैं, जिससे इनके विषय मे और अधिक विवरण उपलब्ध हुआ है। उसके अनुसार खरौना ग्राम, जिला जौनपुर मे एक मदन साहब हुए, जिनको सद्गुरु कबीर साहब ने 'सारशब्द' का प्रचार करने का आदेश दिया क्योंकि उस समय कबीर के अनुयायियो ने 'सार शब्द' को छोड़कर निरंजनी पंथ का अवलंबन कर लिया था। फलस्वरूप मदन साहब ने 'सारशब्द' का प्रचार किया और संभवतः कबीर पंथ के अंतर्गत ही मदन पंथ की स्थापना की। उनका जन्म उक्त खरौंना ग्राम मे ही हुआ था और त्यागी हो जाने पर भी उसी ग्राम मे कुटी बनाकर रहते थे। उनके शिष्य दूलनपति साहब थे, जिन्होंने बढ़ैयाग्राम (जौनपुर) मे अपनी कुटी स्थापित की। इन्ही दूलनपति के शिष्य जवाहिरपति (दीवान) प्रस्तुत रचयिता थे। गुरु की मृत्यु हो जाने पर विवेकपति साहब गद्दी पर बैठे और उनके पश्चात् प्रस्तुत रचयिता महंत बने। मोहनलाल के लिये देखिए आगे संख्या ३११। प्रस्तुत रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

१२१. जवाहिरलाल 'जैन'—ये एक जैन रचयिता है और इनको "अढाई दीप की पूजा" के विवरण लिए गए है, जिनमे जैन धर्म संबंधी पूजा पाठ विषय का वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८८७ और लिपिकाल संवत् १६४० है। यह खोज रिपोर्ट (२३–१८६) मे उल्लिखित है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय अब तक नही मिल सका। खोज रिपोर्ट (३२–६७) मे भी 'समेदशिखरपूजा' के साथ इनका उल्लेख है।

१२२. जवाहिरलाल 'जैन'—इन्होने संवत् १६०५ मे 'सहस्रनामपाठ' की रचना की, जिसकी संवत् १६४० की लिखि हुई एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमे भी विष्णुसहस्रनाम की तरह जिनसहस्रनाम दिए हैं, जिनका जैनी लोग पाठ करते है। इसका मूल संस्कृत मे है।

रचयिता के पिता का नाम सोभाचंद था। ये अयोध्या के समीप संभवत. पश्चिम की ओर पँतेपुर स्थान के निवासी थे जहाँ पारसनाथ जिन का मंदिर है और जैनी लोग अधिक संख्या मे बसते हैं। अन्य विवरण अप्राप्त है। संभवतः पूर्व रचयिता भी यही है।

१२३. जयराम या उपगारी जसराम—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी चार रचनाओं—भक्तिबावनी, भक्तिबोध, शब्द और हरिगुनरत्नतंत्र के विवरण लिए गए हैं। इनमे से 'भक्तिबोध' का विवरण पहले भी लिया जा चुका है, देखिए खोज रिपोर्ट (२३–१८२)। शेष रचनाएँ नवीन मिली हैं। ये सब एक ही हस्तलेख मे हैं और इनका रचनाकाल, लिपिकाल और विषयादि का विवरण क्रमशः नीचे दिया जाता है—

१. भक्तिबावनी—रचनाकाल १८४१ वि० और लिपिकाल संवत् १८७१ वि०। विषय, चारों युगो (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) के बावन भक्तो की कथाओ का वर्णन।

२. **भक्तिबोध**—रचनाकाल संवत् १८३४ और लिपिकाल संवत् १८७१। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

३. **शब्द**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १८७१ वि०। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

४. **हरिगुरु स्तोत्र**—रचनाकाल अविदित। लिपिकाल सवत् १८७१ वि०। विषय, हरि और गुरु की स्तुति वर्णन।

रचयिता का वृत्त केवल प्रथम दो रचनाओ मे मिलता है, जिनके अनुसार ये उपगारी जसराम नाम से अधिक प्रसिद्ध रहे, विदित होता है। रचनाओ मे इसका अधिक प्रयोग है। ये भाभर नगरी परगना के अंतर्गत सुवाणा गाँव के निवासी थे। माता का नाम अनंदी और पिता का नाम सीताराम था। इनको बालपन मे ही वैराग्य उत्पन्न हो गया था। स्वा० चरनदास (चरनदासी संप्रदाय के सस्थापक) के एक शब्द को सुनकर उनके प्रति आकर्षित हुए। पिता के मर जाने पर इन्होने माता से अपने वैराग्य लेने की बात कही। माता ने पुत्र स्नेह के कारण स्वीकृति दे दी और स्वयं इनको लेकर स्वामी चरनदास जी के पास दिल्ली पहुँची तथा इन्हें उनकी सेवा मे दे दिया। पश्चात् वे घर आ गई और थोड़े ही दिनो के उपरात स्वर्ग सिधार गई। इससे इन्हे और निवृत्ति प्राप्त हुई और निश्चित होकर गुरु की सेवा करने लगे। गुरु की आज्ञा से इन्होने साधुओ के साथ चारो दिशाओ का परिभ्रमण किया। प्रस्तुत ग्रंथ इन्होने साधु संतो के आग्रह पर ही रचा। अपनी गुरु प्रणाली ये इस प्रकार देते है—

ब्रह्म
|
मूलप्रकृति
|
महत्तत्व
|
त्रिगुण
|
विष्णु (हंसावतार)
|
सनकादिक
नारद
|
व्यास
|
सुखदेव
|
चरनदास
|
उपगारी जसराम (रचयिता)

सुखदेव को (भक्तिबोध मे) व्यासपुत्र और अपना दादा गुरु कहा है।

१२४. **जसुराम**—इनकी "राजनीति" नामक पुस्तक मिली है, जो अत से खडित है। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही। विषय, इसके नाम से ही स्पष्ट है। खोज रिपोर्ट (१–१११) मे इसका उल्लेख हो चुका है, जिसके अनुसार रचयिता सवत् १८१४ के लगभग वर्तमान अमयपुर (? दक्षिण) के राजा जीतराय के आश्रित थे। जाति के ये चारण थे।

प्रस्तुत प्रति मे आलमगीर बादशाह के समय मे हुए सोलंकी राजा जगमाल के पुत्र उदया (? उदयसिंह) का उल्लेख किया गया है तथा जहाँ तहाँ 'जगजीत' और 'जुगजीत' नामो का भी प्रयोग मिलता है, जो अनुमान से आश्रयदाता के लिये प्रयुक्त हुए जान पड़ते है। हो सकता है कि उपर्युक्त रिपोर्ट के विवरण मे उल्लिखित रचयिता के आश्रयदाता राजा जीतराय के ही उपनाम हों।

१२५. **जानकीदास**—इनकी चार रचनाएँ—कवित्त, छायाजोग, ज्योतिष और बालबोध—मिली हैं, जिनके विवरण लिए गए। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण इस प्रकार है—.

१. **कवित्त**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, भक्ति।

२. **छायाजोग**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९१० वि०। विषय, योग।

३. **ज्योतिष**—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय, स्वप्नविचार और तारा विचार आदि। आदि अंत मे खंडित हैं।

४. **बालबोध**—रचनाकाल, लिपिकाल अविदित। विषय, ज्योतिष।

दूसरे ग्रंथ के द्वारा पता चलता है कि रचयिता के गुरु का नाम निजानंद था, जिन्होंने इनको छाया योग का उपदेश किया। शेष वृत्त अप्राप्त हैं। पिछली खोज रिपोर्टों में आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न जान पडते हैं। अतः खोज मे नवोपलब्ध हैं।

१२६. **जानकीदास**—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनके कुछ 'झूलना' मिले हैं, जिनमे ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। इन झूलनों की रचना प्रत्येक अक्षर के क्रम से हुई है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी केवल इतना ही कि इनके गुरु का नाम अजबदास था और कोई वृत्त उपलब्ध नही होता। संक्षिप्त विवरण और खोज रिपोर्ट (२३–६; २६–५; १२–१) में अजबदास का उल्लेख हुआ है, जिनके अनुसार उनका वृत्त इस प्रकार है—"कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कायस्थों की पलिया (सुलतानपुर) मे जन्म, वैष्णव, पिता का नाम अज्ञदास और पुत्र का नाम जानकीदास, जो अच्छे कवि थे। अयोध्या मे सवत् १८०० मे देहात हुआ।

इस विवरण से पता चलता है कि रचयिता सभवतः अजबदास के पुत्र भी थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१२७. **जानकीदास**—ये इस नाम के पूर्व रचयिताओ से भिन्न सतनामी पथ के अनुयायी थे। प्रस्तुत खोज मे इनकी रची हुई 'कीरतिविलास' नामक रचना मिली है, जिसमें स्वा० जगजीवनदास, (सतनामी पथ के प्रवर्तक) का वृत्त दिया हुआ है। रचनाकाल इसका अज्ञात है पर लिपिकाल सवत् १९०७ वि० दिया है।

रचयिता का नाम (जानकीदास) केवल अध्यायो और पुष्पिका मे प्रयुक्त हुआ है। पुष्पिका के अनुसार ये सरदहा (बाराबकी) के निवासी थे। अन्य विवरण अप्राप्त ही है। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

१२८. **जानकीदास गोसाई**—'ज्ञानककहरा' और 'पाखडदलन' नाम से इनकी दो रचनाएँ एक ही हस्तलेख मे मिली हैं। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। लिपिकाल संवत् १९४४ है। प्रथम रचना मे ज्ञानोपदेश वर्णित है और दूसरी मे कंठी पहरने तथा मास मछली न खाने का उपदेश किया गया है।

रचयिता जैसा कि दूसरी रचना (पाखडदलन) से पता चलता है रामानुज सम्प्रदाय के थे—

चारिवेद षट्शास्त्र का जो पै वक्ता होय।
रामानुज के सर्इ (शरण) बिनु मुक्ति न पावै सोय॥

इस रचना मे इन्होने सतोचित विचार भी प्रकट किए है। हिंदू मुसलमानो की समान रूप से आलोचना की है और दोनो को ऐक्यता से रहने का उपदेश किया है। अन्य विवरण अप्राप्त है। खोज रिपोर्ट (६–१३५) मे आए इस नाम के रचयिता से ये भिन्न हैं या नही प्रमाणाभाव के कारण कुछ नही कहा जा सकता। अतः खोज मे इनको नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

१२९. **जानकीप्रसाद या जानकीदास**—इन्होने केशवदास कृत 'रामचद्रिका' पर "रामभक्ति प्रकाशिका" नाम से तिलक रचा है, जिसकी दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। ये दोनो प्रतियाँ छपी हुई हैं। इनमें से एक मुहल्ला निवाजगज (लखनऊ) के मतबय आसफी से मुद्रित

हुई है। दूसरी मे प्रेस का उल्लेख नही मिलता। रचनाकाल केवल पहली प्रति में दिया है, जो सवत् १८७२ वि० है। मुद्रण काल किसी मे नही है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता, पर इनकी प्रस्तुत रचना खोज रिपोर्ट (३–२०) मे आ चुकी है, जिसके अनुसार ये काशी निवासी और काशीनरेश के भाई बाबू देवकीनंदन सिंह के पुत्र थे। काव्यप्रकाश आदि के रचयिता धनीराम के ये आश्रयदाता थे।

खोज रिपोर्ट (४१–८०) मे, जिसमे जानकीदासकृत 'युक्तिरामायण' का उल्लेख है, पता चलता है कि उक्त रामायण और प्रस्तुत रचना (रामभक्तिप्रकाशिका) के वास्तविक रचयिता धनीराम है, जो प्रस्तुत रचयिता के आश्रय मे रहते थे, जैसा कि ऊपर उल्लेख हो चुका है।

१३०. जानकी प्रसाद या जानकी सिंह पवार—इनकी दो रचनाएँ "भगवती विनय" और "श्रीराम नौरत्न विनय" नाम से मिली हैं। दोनो रचनाएँ प्रकाशित है और एक ही जिल्द मे है, जिसका मुद्रणकाल सवत १९२३ है। रचनाकाल केवल दूसरी रचना मे दिया है, जो सवत् १९०८ है। प्रथम रचना मे देवी की स्तुति वर्णन की गई है और दूसरी मे रामभक्ति। खोज रिपोर्ट (२६–१९९ ए, बी, सी) मे इन दोनो का उल्लेख हो गया है। इसमे रचयिता का केवल इतना ही परिचय दिया है कि ये रायबरेली जिला के निवासी थे। परतु प्रस्तुत रचनाओं मे से दूसरी मे रचयिता का कुछ अधिक परिचय दिया है, जिसके अनुसार ये रायबरेली जिला मे डलमऊ परगने के अतर्गत जमीदारपुर (?) के रहनेवाले थे जहाँ से गगा जी डेढ कोस की दूरी पर हैं। इनके पिता का नाम भवानी सिंह, पितामह का नाम भाऊ सिंह और परपितामह का नाम निहाल सिंह था। जाति के पवार ठाकुर थे। 'श्रीरामनौरत्नविनय' को पढने से पता चलता है कि ये एक प्रौढ विद्वान् थे और ब्रज, अवधी, पजाबी तथा पूर्वी (पूर्वी अवधी) भाषाओं के ज्ञाता थे। प्रस्तुत ग्रथ के प्रथम अध्याय मे अवधी का, षष्ठ मे ब्रज का, अष्टम मे पजाबी का और नवम् मे पूर्वी भाषा का प्रयोग किया गया है। पचम अध्याय मे चित्रकाव्य का भी वर्णन है।

१३१. जानकी बाई—इनकी दो रचनाएँ "जानकीप्रकाश" और "जानकीप्रकाशिका" नाम से मिली हैं। प्रथम मे व्याकरण विषय का वर्णन है और दूसरी मे गीता की टीका है। ये दोनो सवत १९३५ की छपी हुई है, इनका रचनाकाल भी लगभग यही सवत् समझना चाहिए क्योंकि दूसरी रचना की पुष्पिका के अनुसार इस सवत् मे लेखिका, जो परम विरक्ता और वैराग्यवती थी, वृदावन मे निवास करती थी। व्याकरण जैसे शुष्क पर आवश्यक विषय की ओर भी रचयित्री का ध्यान गया इससे इनकी सम सामयिक दृष्टिकोण का पता चलता है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१३२. जिनदास पांडेय—इनकी रची हुई "जबूस्वामी की कथा" नामक रचना के विवरण लिए गए है, जिसमे जैनभक्त जबूस्वामी का चरित्र वर्णन है। रचनाकाल सवत् १६४२ और लिपिकाल सवत् १७५१ हैं। प्रस्तुत प्रति सुप्रसिद्ध जैन कवि विनोदीलाल ने अपने पढ़ने के लिये लिखी थी, अत इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

रचयिता के पिता का नाम ब्रह्मचारी सतीदास था और ये आगरा के रहने वाले थे। किसी टोडरशाह के पुत्र दीपासाह के लिये प्रस्तुत ग्रथ रचा गया था, जिन्होंने मथुरा के प्राचीन जैन स्तूपों के जीर्णोद्धार कराए थे। रचयिता ने इनके वशज रिषभदास, मोहनदास, रूपचद और लक्ष्मणदास प्रभृति का भी उल्लेख किया है, जो सभवत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। उस समय अकबर बादशाह का राज्य था। खोज रिपोर्ट १७–८९ पर उल्लिखित 'योगीरासा' के रचयिता जिनदास भी यही विदित होते है।

१३३. जियराज और भावसिंह—प्रस्तुत रचयिताओ ने "पुण्याश्रवकथाकोसभाषा" की रचना की, जिसमे पुण्य और पापो का फल वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १७९२ है और लिपिकाल सवत् १८६४। मूल रचना सस्कृत मे है, जिसकी वचनिका दौलतराम ने की थी। इसी वचनिका को पद्यबद्ध करने का प्रयत्न भावसिंह (प्रस्तुत रचयिताओं मे से एक) ने किया था। परतु शील अधिकार तक ही पद्य रचना कर सके थे कि उनकी मृत्यु हो गई। पश्चात् किसी भैरोदास नामक पुण्यजन के अनुरोध करने पर जियराज ने इसकी पूर्ति की। यह जैन धर्म विषयक रचना है।

जियराज का अन्य नाम 'जीवराज' भी लिखा मिलता है। अन्य परिचय नही दिया है। भावसिंह का परिचय भी प्रस्तुत रचना द्वारा कुछ नही मिलता पर खोज रिपोर्ट (२३–५४; ४१–५३४) मे उल्लिखित 'जीवचरितभाषा' के रचयिता भावसिंह यही जान पडते हैं। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये आगरा निवासी और संवत् १७८२ के लगभग वर्तमान थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१३४. जीवनदास आचार्य—इनकी रची हुई "दोहावली" की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं जिसमे भक्ति, वैराग्य और ब्रह्मज्ञान का वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८४० है और लिपिकाल संवत् १६१०। रचना विषय की दृष्टि से उत्तम है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। ग्रंथस्वामी (महंत जगदेवदास, ग्राम–पडरीगनेशपुर, डाकघर–रायबरेली) के कथनानुसार ये उनके आजा गुरु थे और उन्ही के ग्राम के निवासी थे। जाति के कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण और उच्चकोटि के विद्वान् तथा महात्मा रहे। खोज मे नवोपलब्ध है।

१३५. जोखूराम द्विज 'सूरि'—इनकी दो रचनाएँ "वनदुर्गालहरी" और "शत्रुसहार" मिली हैं। इन दोनो का विषय देवी की स्तुति वर्णन करना है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। लिपिकाल प्रथम रचना मे संवत् १६५४ है। प्रथम रचना खोज रिपोर्ट (२३–१६५) मे आ चुकी है, जिसके अनुसार रचयिता हीगनगौरा (सुलतानपुर) निवासी संवत् १८६० के लगभग वर्तमान थे। इस बार प्रस्तुत ग्रंथो के स्वामी (प० गुरुप्रसाद जी मिश्र, ग्राम–हीगनगौरा, डाकघर–कादीपुर, जिला–सुलतानपुर) से पता चला कि ये (रचयिता) उनके परपितामह थे। लक्ष्मणपुर निवासी महामहोपाध्याय प० तूर्यनारायण जी रचयिता के गुरु थे, जैसा कि वनदुर्गालहरी के अंत मे दिया हुआ है। छत्रपाल सिंह नृप (देखिए प्रस्तुत रिपोर्ट मे संख्या १०१) ने इन्ही जोखूराम की प्रशसा की है। ग्रंथो को देखने से विदित होता है कि ये देवी के बड़े भक्त थे और साथ ही साथ अच्छे कवि भी। रतनपाल नामक एक व्यक्ति ने इनकी भूमि ले ली थी जिस पर इन्होने उसको नष्ट करने के लिए 'शत्रुसहार' नाम से देवी की स्तुति की।

१३६. जोगजीत—इनके नाम पर "पचमुद्रा" ग्रंथ मिला है जिसमे ज्ञानपचमुद्रा का, जिसको योग का मूल सार बताया गया है, वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२०–७३) मे हो चुका है, जिसके अनुसार रचयिता कबीरपथी साधु थे। कबीरपथी युगो के क्रम से कबीर के चार अवतार मानते है। सत्ययुग मे सुकृत, त्रेता मे मुनीद्र, द्वापर मे करुणामय और कलियुग मे कबीर। इस दृष्टि से सुकृत कबीर का सत्ययुग का अवतार है और जोगजीत सुकृत के गुरु। प्रस्तुत ग्रंथ इन्ही जोगजीत और सुकृत के सवाद के रूप मे है। पता नही यह बात कहाँ तक सत्य है। बहुत से मत मतातरो ने इसी प्रकार अपने अपने मतो की अनादि और अनतता सिद्ध की है, पर ऐसे विचारो की कोई दृढ भित्ति भी है या नही यह विवादग्रस्त है। सच तो यह है कि प्रस्तुत रचना किसी कबीरपथी साधु की ही जान पड़ती है, जो कबीर के बहुत पीछे हुए।

१३७. झामदास बाबा—इन्होने "रामशब्दावली" की रचना की है, जिसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही है। एक स्थान पर संवत् १८३१ का उल्लेख हुआ है, जिसमे रचयिता को हरिद्वार की यात्रा के अवसर पर भगवान् का दर्शन हुआ था और निर्वाण भी प्राप्त हुआ था। अत. इसी संवत् के आसपास प्रस्तुत रचना का समय जानना चाहिए।

प्रस्तुत रचना से तो रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता, पर ग्रंथस्वामी का (महंत श्री महाबीरदास जी, स्थान–झामदास बाबा की कुटी, डाकघर–जगेसरगज, जिला–सुलतानपुर) जो रचयिता की कुटी के महत और उन्ही के वशज है, कथन है कि रचयिता रायबरेली जिला के रहनेवाले क्षत्रिय थे। ये जन्म से विरक्त थे और वर्तमान स्थान मे जहाँ पर इनकी कुटी है, आकर भजन करते थे। ये अविवाहित थे। इन्ही के वशज इनकी कुटी के उत्तराधिकारी होते चले आते हैं। इनके पश्चात् केसौदास, रामप्रसाद और रामसुधिकरनदास उक्त

कुटी की गद्दी के महंत हुए। उन्होंने भी थोड़ी थोड़ी रचनाएँ की हैं, जिनके विवरण लिए गए हैं, देखिए प्रस्तुत रिपोर्ट में क्रमशः संख्या ४४, ३३६, ३४२।

रचयित्री अपनी प्रस्तुत रचना के साथ खोज रिपोर्ट (२३–१६१; ३५–४७) में उल्लिखित हैं। उक्त रिपोर्ट में इनको सतनामी लिखा है, जो ठीक नहीं। इन्होंने अपना स्वतंत्र मत (झामदासी पंथ) चलाया है, जिसका प्रचार अधिकतर फतेहपुर जिले में है।

१३८. तारानाथ—इनका संगीत विषय पर रचा हुआ 'रागमाला' नाम का ग्रंथ मिला है, जिसकी एक प्रति के इस त्रिवर्षी में विवरण लिए गए हैं। इसमें छह राग और तीस रागनियों के वर्णन हैं। प्रत्येक राग की पाँच पाँच भार्याएँ बताई गई हैं। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। पुष्पिका के अनुसार रचयिता संभवतः सुप्रसिद्ध कवि नरहरि (अकबर के दरबारी कवि) के कुल के थे।

"इति श्री मन्महाराजधिराज रामसिंह प्रोत्साहिते नरहरिकुलप्रसून तारानाथ विरचिताया मेघनार्घ्यं निरुपणो ॥शुभम्॥"

ये जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में रहते थे और उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। आश्रयदाता के कुल का संबंध इन्होंने महाराजा रामचंद्र के पुत्र कुश से जोड़ा है—

महाराजा रामचंद्र
|
कुश
|
भगवतनरेश (कुश के वंश में बहुत पीछे)
|
मानसिंह
|
जगतसिंह
|
महासिंह
|
जयसिंह (सवाई)
|
रामसिंह (रचयिता के आश्रयदाता)

महाराजा रामसिंह का राज्यकाल संवत् १७२३–३२ तक माना जाता है, अतः इसी समय के लगभग रचयिता का वर्तमान होना समझना चाहिए। इनकी प्रस्तुत रचना विषय की दृष्टि से उत्तम है। इसमें राग का लक्षण, उसके गाने का समय और उसका स्वरूप आदि का ठीक ठीक वर्णन किया गया है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१३९. ताहिर—इनकी "कोकशास्त्र" और "गुणसागरकोकसार" नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। इनका उल्लेख क्रमशः खोज रिपोर्ट ९–३१६ और ६–३३५; २०–२ ए, बी में हो चुका है, जिनके अनुसार रचयिता का वास्तविक नाम अहमद था। ये आगरा के निवासी थे और संवत् १६१८–१६७८ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत रचनाओं में इनका (रचयिता का) इससे अधिक विवरण नहीं मिलता। 'गुणसागरकोकसार' में अवश्य ही जहाँगीर बादशाह का उल्लेख है, जिससे विदित होता है कि ये उक्त बादशाह के समय में वर्तमान थे।

नीचे प्रस्तुत रचनाओं का रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से विवरण दिया जा रहा है—

१. कोकशास्त्र—इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है, जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। विषय, कोकशास्त्र का वर्णन।

२. बुन्दसागर (कोकशास्त्र)—इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जो खंडित हैं। रचनाकाल संवत् १६७८ है। लिपिकाल केवल एक प्रति मे है, जो सवत् १८६६ है। विषय, सामुद्रिक के साथ साथ कोकशास्त्र।

१४०. ताहिर (?)—"अद्भुत विलास" नाम से इन्होने इंद्रजाल की टीका की है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है, जिससे लिपिकाल का उसमे कोई उल्लेख नही पाया जाता। रचनाकाल संवत् १६६६ विदित होता है—

१६ ६५
"संवत सोलह सै गनै ओ पचानवे राषि।
४
अंतकाल गिनि लीजिए बेद भेद की साषि॥"

पर यह अशुद्ध है, जैसा कि आगे विदित होगा।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। परंतु ये पूर्व रचयिता ही विदित होते हैं। खोज रिपोर्ट (४४-१४०) मे इनकी प्रस्तुत रचना का उल्लेख है। उसके अनुसार रचना काल सवत् १६५५ या १६५६ विदित होता है, जो इस प्रकार दिया है—

१६ ५५
"संवत् सोले सौ गने ओर पचपन में राष।
अंतकाल गिनि लीजिये बेद भेद सब भाष॥"

यह सवत् प्रस्तुत प्रति मे दिए हुए सवत् से अधिक युक्तिसगत है। इस सवत् को मानने से प्रस्तुत रचयिता का पूर्व रचयिता से ऐक्य सिद्ध हो जाता है। प्रस्तुत प्रति मे दिए हुए सवत् से तो दोनो के बीच समय की दूरी अधिक हो जाती है, जिससे दोनो को अलग अलग मानने मे विवश होना पड़ता है, क्योकि पूर्व रचयिता का समय सवत् १६१८ से १६७८ तक माना गया है और प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १६६५ मानने से वह अधिक दूर जा पडता है।

१४१. तुरसी—प्रस्तुत खोज मे इनकी एक रचना "नवधाभक्तिविधान" नाम से मिली है, जिसमे निर्गुन मतानुसार नवधाभक्ति का वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उससे रचनाकाल और लिपिकाल के विषय मे कुछ भी पता नही चलता। रचयिता के संबंध मे केवल इतना ही विदित होता है कि ये कबीर के शिष्य (?) थे—

अथ सुमिरन विधान

जब लग देही साबती रोग न कछू सरीर।
तब लग गोब्यंद भजन करि बंदि गुर चरन कबीर॥

एक तुरसी का उल्लेख खोज रिपोर्ट (३५-१००) मे भी है, जो निरजनी पंथ के अनुयायी थे। हो सकता है कि प्रस्तुत तुरसी वही हो, जैसा कि जवाहिरपति (स० १२०) और मोहन-लाल (सं० ३११) के विवरणो से पता चलेगा। बहुत से कबीरपंथियो ने निरजनी पंथ का अवलबन कर लिया था। अतः संभव है प्रस्तुत रचयिता ने भी ऐसा ही किया हो, परतु निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। खोज मे इन्हें नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

१४२. गो० तुलसीदास—"रामचरितमानस" के रचयिता के रूप मे ये सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। इस बार इनकी तीन रचनाओ—१. जानकीमगल, २. रामाज्ञा और ३. वैराग्यसदीपनी के विवरण लिए गए हैं। ये तीनो ही रचनाएँ पहले भी कई बार मिल चुकी हैं, देखिए क्रमशः खोज विवरणिकाएँ ३-७६; ६-२४५ एफ; १७-१९६ सी; २०-१९८ ई; २३-४३२ एक्स; २६-४८४ ए, बी, ३-८७; ६-२४५ डी, ६-३२३ एच; २०-१९८ एच; २३-४३२; २६-४८४, पं० २२-११२; २६-३२५ और ००-७; ३-८१; ६-२४५; २०-१९८; २६-४८४ डी[१]। इस बार जो महत्वपूर्ण बात देखने मे आई है वह केवल प्रथम रचना (जानकीमंगल) से ही संबंधित है। वह पूर्ण है, पर उसमे पुष्पिका नही दी हुई है। लिपिकाल का भी कोई उल्लेख नही। उसके आरंभ मे रचनाकाल संवत् १६३२ दिया हुआ है

जिसके कारण वह महत्वपूर्ण जँची और उसका विवरण लिया गया। रचनाकाल का उल्लेख इस प्रकार है—

"संवत् १६३२ कथा किय भवा"

परंतु प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथो मे रचनाकाल का उल्लेख अभी तक इस प्रकार देखने को नही मिला। यही बात है कि इसको रचनाकाल मानने मे थोड़ा संकोच होता है। फिर भी यह किसी न किसी आधार पर ही दिया गया होगा, अतः यह ध्यान मे रखते हुए इस पर सर्वथा अविश्वास भी नही किया जा सकता।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति के आरंभ और अंत के पत्रो मे एक ही ओर लिखा है। अंत का पत्र तो भिन्न लेखनी से लिखा हुआ है। इसके प्रत्येक पत्र को सुडौल काट करके उसके चारो ओर आधुनिक सफेद कागज सुरक्षा के लिए चिपका दिया गया है। कागज, स्याही और अक्षरों को देखने से यह अधिक पुराना नही जँचता।

१४३. तुलसीदास—इनके नाम से "तुलसीशब्दादिप्रकाश" और "बृहस्पतिकाड" के विवरण लिए गए है। दोनो ग्रंथो का विषय फलित ज्योतिष है। रचनाकाल केवल दूसरे ग्रंथ (बृहस्पतिकाड) मे है, जो संवत् १६०६ वि० है। इसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९३६ की लिखी हुई है। प्रथम ग्रंथ की तीन प्रतियो के विवरण लिए गए है, जिनमे से केवल दो मे लिपिकाल दिया हुआ है, जो क्रमशः संवत् १९०९ और १९१२ है। यह खोज मे प्रथम बार मिली है।

रचयिता का इन ग्रंथो द्वारा कोई वृत्त नही मिलता, पर ये दूसरे ग्रंथ (बृहस्पतिकाड) के साथ खोज रिपोर्ट (३–३०, ४४–१८२) मे आ चुके है। उक्त रिपोर्टो और संक्षिप्त विवरण मे इनके दो ग्रंथ 'ज्ञानदीपिका" और "भगवद्गीता भाषा" का भी उल्लेख है पर वे रचनाएँ दूसरे किसी संत तुलसीदास की जान पडती है। प्रस्तुत तुलसीदास को ज्योतिषी मात्र जानना ठीक होगा। ज्योतिष विषय की रचनाओ और ज्ञान विषयक रचनाओ को एक ही रचयिता की मान लेना युक्तिसंगत नही जँचता। पहला प्रवृत्ति मार्ग का सहायक है और दूसरा निवृत्ति मार्ग का, अतः इस दृष्टि से भी ये एक दूसरे की विरोधी रचनाएँ होने के कारण अलग अलग रचयिताओ की रची हुई सिद्ध होती है।

१४४. तुलसीदास—इनकी "मोहमुग्दर" नामक रचना मिली है, जिसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १९३९ दिया है। रचयिता का इसके द्वारा नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। पुष्पिका मे इन्हें 'गोसाई' कहा गया है, परंतु रामचरितमानस के रचयिता गो० तुलसीदास से इनको अलग समझना चाहिए। ग्रंथ मे प्रयुक्त भाषा की दृष्टि से ये बहुत इधर के विदित होते है। ग्रंथ मे इन्होंने प्रमाण के लिए रामचरितमानस से भी उद्धरण दिए हैं। एक स्थान पर विष्णुभक्त की चरचा करते हुए लिखते है—

साछी रामायने

"भक्तिवंत अति नीचहु प्रानी। मोहि प्रानसम अस मोहि बानी॥"

इससे भी सिद्ध होता है कि ये "रामचरितमानस" के रचयिता से भिन्न उनके परवर्ती है।

पिछली रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओ से भी ये सर्वथा भिन्न विदित होते हैं, अतः खोज मे नवोपलब्ध है।

१४५. तुलसीदास—"हनुमान टीका" के रचयिता के रूप मे इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३–४३१) मे हो चुका है, जिसमे इनका कोई वृत्त नही दिया है। उन्हें अनुमान से खोज रिपोर्ट (३५–१५३, दि० ३१–९१) मे उल्लिखित 'हनुमान अष्टक' और 'हनुमान स्तुति' का रचयिता तुलसीदास माना गया है, जो राज्यपुर (बुंदेलखड) के निवासी थे।

प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इस ग्रंथ की एक प्रति और मिली है, जो अंत से खंडित है। उसमे न तो रचनाकाल और न लिपिकाल का ही उल्लेख है और न रचयिता का ही वृत्त दिया हुआ है।

१४६. तुलसीदास—इनके नाम से "हजारा" नामक ग्रंथ का विवरण लिया गया है, जिसमे एक हजार दो दोहो का संग्रह है। इससे यह प्रकट होता है कि यह सुप्रसिद्ध 'रामचरित-

मानस' के कर्ता गो० तुलसीदास की कृति है, पर अभी तक उनके 'हजारा' ग्रंथ का नाम नही सुना गया है। वस्तुतः यह किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया गया संग्रह है, जिसमे गोस्वामी जी के दोहों का भी सकलन है। फिर भी इतने दोहो का यह संग्रह महत्वपूर्ण है। इसमे कोई सवत् नही दिया है।

१४७. **तुलसीदास**—इनके नाम से "तीसायत्र" नाम की एक छोटी सी रचना मिली है, जिसमें सत मतानुसार ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल नही दिया है, लिपिकाल सवत् १९०३ है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (९–१४३ के) मे कबीर के नाम से हुआ है। इस बार यह तुलसीदास के नाम से मिली है। यह एक उदाहरण है जिससे विदित होता है कि किस प्रकार एक ही रचना प्रतिलिपिकारों की भूल से अन्य अनेक रचयिताओ के नाम से मिलती हैं। प्रस्तुत रचना का वास्तविक रचयिता कौन है, यह पता लगाना अब कठिन है। यद्यपि रचना जैसा कि ऊपर लिखा गया है, सतसाहित्य विषयक है, पर सतो मे भी कई तुलसीदास हुए हैं। किसी निश्चित प्रमाण के अभाव मे इसको किसी एक की मान लेना सभव नही। रचयिता का इसके द्वारा कोई विवरण नही मिलता।

१४८. **तुलसीदास**—इनका रचा हुआ "शालिग्राममाहात्म्य" मिला है, जिसका विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल नही दिए हैं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। अपने पूर्ववर्ती रचयिताओ और पिछली रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न हैं या अभिन्न प्रमाणाभाव के कारण कुछ नही कहा जा सकता।

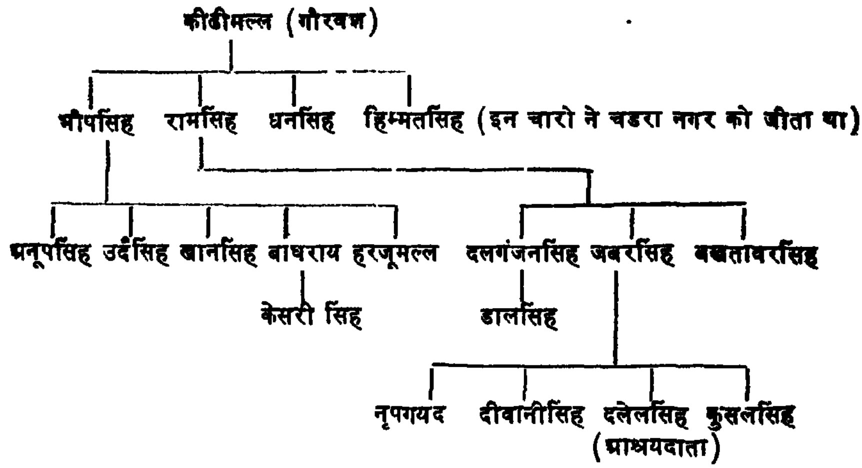
१४९. **तुलसीदास**—इस बार भी इनके नाम से "भरतविलाप" नामक रचना मिली है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२६–४८५ ए; ४४–१४३) मे हो चुका है। परतु उक्त रिपोर्टों मे से दूसरी मे यह लिखा जा चुका है कि यह तुलसीदास की न होकर इसरदास या ईश्वरदास की है। इस बार भी उनके नाम पर इसकी तीन प्रतियो के विवरण लिए गए है, देखिए सख्या १८। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल सवत् १८९६ दिया है। इसमे न तो तुलसीदास का और न इसरदास का ही वृत्त दिया है।

१५०. **तोवरदास**—इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट (९–३१८, २०–१९५, २६–४८३) मे "शब्दावली (एकाक्षरी)" के रचयिता के रूप मे हो चुका है। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये रायबरेली जिला के निवासी, सोमवशी क्षत्री, दूलनदास के शिष्य, सवत् १८८७ के लगभग वर्तमान और सतनामी सप्रदाय के अनुयायी थे।

इस बार इनकी एक दूसरी रचना "कुडलिया या शत चौतीस" मिली है, जिसके विवरण प्रथम बार लिए गए हैं। विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९३८ वि० दिया है। रचयिता का इसके द्वारा कोई अधिक विवरण नही मिलता।

१५१. **त्रिविक्रमदास**—इन्होने शकुनशास्त्र विषयक मूल सस्कृत ग्रथ 'बसतराज' शकुन का "बसतराजाभाषा" नाम से ब्रजभाषा गद्य मे टीका की है, जिसकी एक खडित प्रति के विवरण इस बार लिए गए हैं। रचनाकाल का इसमे उल्लेख नही, लिपिकाल सवत् १९०२ वि० है। रचयिता का इसके द्वारा नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख पिछली खोज रिपोर्ट (१७–१९५) मे हो चुका है, पर उसमे भी इनका विवरण अप्राप्त है।

१५२. **थानकवि**—इनका "दलेलप्रकाश" नामक ग्रथ मिला है, जिसमे विविध विषय जैसे काव्यरीति, नवरस, नायिकाभेद और चित्रकाव्य आदि वर्णित हैं। रचनाकाल सवत् १८४८ और लिपिकाल संवत् १९४६ वि० है। यह एक उत्तम साहित्यिक कृति है, इसमे सदेह नही। इसके अनुसार रचयिता बैसवारा के अतर्गत डौडियाखेडा के निवासी थे। पिता का नाम निहाल, पितामह का महासिंह और परपितामह का लालराय था। नाना का नाम धर्मदास और मामा का नाम बदन, जो प्रसिद्ध कवि और बदीजन थे, दिए हैं। संभवतः गुरु का नाम सेवक था। चडरा (बैसवारा) के राजा दलेलसिंह के ये आश्रय मे रहते थे, जिनकी वंशावली इन्होने इस प्रकार दी है—



प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट (९–३१७; २३–४२७; २६–४८०) में हो चुका है। इस बार इनका विस्तृत विवरण मिला है।

१५३. **दयानिधि**—इनका उल्लेख शालिहोत्र विषयक ग्रथ "अश्वचिकित्सा" के साथ खोज रिपोर्ट (९–६२, २३–८६ ए, बी) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये डौंडियाखेड़ा (अवध) के राजा अचलसिंह के आश्रित और सवत् १८५० के लगभग वर्तमान थे। इनके इस ग्रथ की एक खडित प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं, जिसमे रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता का कोई विवरण नही मिलता।

१५४. **दरियासाहब**—इनके चार ग्रथों—१. 'अग्रज्ञान", २. "ज्ञानरत्न", ३. "दरिया स्वरोदय" और ४. "भक्ति हेतु" के विवरण लिए गए हैं। इनमे से प्रथम ग्रथ पहली बार मिला है। शेष तीन ग्रथो का उल्लेख क्रमश. खोज रिपोर्ट (९–५५ एच, एफ, सी) मे हो चुका है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण इस प्रकार है—

१. **अग्रज्ञान**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सन् १३४२ साल दिया है। विषय, सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. **ज्ञानरत्न**—रचनाकाल अविदित, लिपिकाल सन् १३१२ साल। विषय, वही ज्ञानोपदेश।

३. **दरिया स्वरोदय**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, स्वरोदय। यह पहले फारसी मे लिखी गई थी, पीछे हिंदी मे लिखी गई।

४. **भक्तिहेतु**—इसमे सवत् १८३७ का उल्लेख है, जो रचयिता का मृत्युसमय है। लिपिकाल सवत् १९६४ दिया है। विषय भक्ति।

रचयिता के सबध मे 'ज्ञानरत्न' और 'भक्तिहेतु' से पता चलता है कि ये द्वारकआ मे रहते थे और इनकी मृत्यु सवत् १८३७ मे हुई थी। उपर्युक्त रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि ये अपने को कबीर का अवतार कहते थे।

१५५. **दाराशिकोह**—ये दिल्ली के प्रसिद्ध बादशाह शाहजहाँ के बड़े पुत्र थे, जिनको औरंगजेब ने मरवाया था। ये संस्कृत और हिंदी की ओर बड़ी रुचि रखते थे और इन भाषाओं के अनेक ग्रथो का इन्होंने फारसी मे अनुवाद करवाया था। 'दोहासारसग्रह' नाम से इन्होंने सवत् १७१० मे हिंदी के दोहो का एक बडा सग्रह तैयार करवाया था, जिसमे ६१ भावों पर रचे गए १७७२ दोहे हैं। भावो के नाम इस प्रकार हैं—

१. परमारथभाव, २. वैसधिभाव, ३. जोवनभाव, ४. अंगभाव, ५. अलकभाव, ६ तिलभाव, ७ नैनभाव, ८. सिंगारभाव, ९. चेष्टाभाव, १०. नैनलगनि, ११. नैन-मिलन, १२. नैनभाव, १३. नैनगजभाव, १४. मनगजभाव, १५. मनसिकार, १६. प्रेमलगनि,

१७. संजोगभाव, १८. रतिसंजोगभाव, १९. अनषभाव, २०. मानभावदूती, २१, दूतीवचन, २२. सषीवचन नाइकप्रति, २३. सषी वचन नायिका प्रति, २४. रसतरकभाव, २५. सषी नाइकप्रतीकार, २६ नायिका नायक प्रति, २७. बिछुरनभाव, २८. नायकविरह, २९. नैनबिरहभाव, ३०. नायकविरह, ३१. साधारनविरह, ३२. स्वप्नभाव, ३३. मिलनभाव, ३४. मनप्रकृति, ३५. विवेकभाव, ३६. सजनभाव, ३७. दुर्जनभाव, ३८. कपटभाव, ३९. सठभाव, ४०. सिछाभाव, ४१. कुच वर्णन, ४२. सिछाभाव, ४३. ज्ञानभाव, ४४. परस्तावभाव, ४५. अस्फुटभाव, ४६. ऋतुवर्णन, ४७ वायवर्णन, ४८. बसतवर्णन, ४९. हास्य वर्णन, ५०. चात्रकभाव, ५१. चारभाव, ५२. भवरभाव, ५३. पतगभाव, ५४. चद्रउक्तिभाव, ५५. कर्मभाव, ५६ मनविस्वास, ५७. गूढ़ अर्थभाव, ५८. चौबोला, ५९. विरोधभाव, ६०. हरिलीला, ६१. वैराग्यभाव।

जिन कवियों की रचनाएँ इस सग्रह मे हैं उनके नाम इस प्रकार हैं—

१ हुसैन, २. तुलसी, ३. दयाल, ४. मोहन, ५ सिवदास, ६. मल्ल, ७. अहमद, ८ बिहारी, ९. जमाल, १०. समन, ११. जगत, १२. केसव, १३. नवल, १४. हरिवंस, १५ कल्यान, १६. सेऊ, १७. कासिम, १८. निहाल, १९ तुलाराम, २०. बाजू, २१. कान्हर, २२. सेख, २३ नवलराम, २४ आलम, २५. बाबू, २६ सकर, २७ गुपाल, २८. हमीद, २९. जमला, ३०. नद, ३१. नाथ, ३२ जगन, ३३ ताहर, ३४ चद, ३५ एदिल, ३६ रजना, ३७ व्यासदास, ३८. रहीम, ३९ जादौ, ४० अकबरसाहि, ४१. कविसाहि, ४२. कालू, ४३. पूरनदास।

इन कवियो मे बहुत से ऐसे है जिनका समय अभी तक अज्ञात है, पर प्रस्तुत सग्रह द्वारा इतना तो निश्चित हो ही गया है कि ये सवत् १७१० (जो सग्रहकाल है) से पहले के हैं।

सग्रहकार का नाम अतिम दोहा, जिसमे सग्रह का समय दिया है और पुष्पिका द्वारा क्रमश 'दिनमनि' और 'श्रीमनि पडित' विदित होता है—

"सत्रहसै दस साल मैं प्रफुलित फागुन माहि।
दोहा सारु कढाइयौ "दिनमनि" दारासाहि॥४४॥

"इति "श्री मनि पडित" दिल्ली दिनेस श्रीदारासाहि करित दोहासार सग्रह सपूर्न समाप्त॥"

सभवत ये ("दिनमनि" या "श्रीमनिपडित") "पिंगलपियूष" के रचयिता मुरलीधर के पिता थे, जो एक धुरधर ज्योतिषी थे और आगरा मे ही रहते थे। मुरलीधर के लिये देखिए प्रस्तुत रिपोर्ट मे सख्या ३०३।

प्रस्तुत प्रति स्वर्गीय मयाशकर जी याज्ञिक के सग्रह की है। उन्होंने इस प्रति के नष्ट हुए पत्रो (५५, ५६ सख्या के पत्रो) के अश को दूसरी प्रति द्वारा पूरा कर दिया है, जो सग्रह के आरभ मे दिए हुए हैं और नायिका 'विरहभाव' के हैं। उक्त दूसरी प्रति का पता इस प्रकार है—

"श्री प्रभुलाल जी गुप्त, द्वारा—श्री बाबूलाल जी मोहनलाल जी बजाज, कोतवाली, भरतपुर।"

प्रस्तुत सग्रह का उल्लेख खोज रिपोर्ट (६—१५२) मे भी हुआ है पर उसमे विवरणपत्र नही दिया है और न विषय और कवियो का ही उल्लेख है।

१५६. दासराम—इनकी "भक्ति उक्ति कृष्ण आज्ञा" नाम से एक रचना मिली है जिसकी एक प्रति के विवरण लिए गए है। रचनाकाल सवत् १७७१ दिया है। लिपिकाल का उल्लेख नही। विषय कृष्णभक्ति है। इसमे ५२ दोहे है। प्रत्येक अक्षर पर एक दोहा रचा गया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त कोई परिचय नही मिलता। अत नही कहा जा सकता कि पिछली खोज रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओंमे से ये कोई एक है या नही। इस दृष्टि से इन्हे नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

१५७. दीनदयाल गिरि—ये हिंदी मे अन्योक्तिकार के रूप मे प्रसिद्ध हैं। पिछली खोज रिपोर्टों में इनके बहुत से ग्रथो का उल्लेख हो चुका है। इस बार "अन्योक्ति कल्पद्रुम" और कुछ फुटकर रचनाओ—विश्वनाथ नवरत्न, भगवती पचरत्न, काशी पचरत्न, मकुर्‍, चित्रकाव्य और शृंगार के नूतन कवित्त के विवरण लिए गए है। 'अन्योक्ति कल्पद्रुम' में सरस और मनोरम अन्योक्तियों का सग्रह है। यह कवि का प्रधान ग्रथ है, जो अपने विषय का एक ही है। रचनाकाल सवत् १९१२ है, लिपिकाल दिया नही। खोज रिपोर्ट (२३–१०४ सी, डी) मे यह आ चुका है। फुटकर रचनाओं में से "विश्वनाथ नवरत्न" और "काशी पंचरत्न" क्रमशः खोज रिपोर्ट २६–४८ और ४–९१ मे उल्लिखित है। शेष नवीन है। इनकी प्रस्तुत प्रति मे कोई संवत् नही दिया है। विषय इनके नामों मे ही स्पष्ट हैं।

प्रस्तुत रचनाओं मे रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता, पर उपर्युक्त रिपोर्टों और संक्षिप्त विवरण मे इनका पूरा वृत्त दिया हुआ है। 'शृगार के नूतन कवित्त' इन्होंने अयोध्या के महाराज मानसिंह 'द्विजदेव' को सुनाए थे—

"यह कवित्त सिंगार के विरचे दीनदयाल।
सुनि सराहि प्रमुदित भए मानसिंह भूपाल॥"

अत मे इन महाराज 'द्विजदेव' के भी दो कवित्त दिए हुए हैं, जो इस प्रकार हैं—

भेद मुकुता के जेते स्वाति हीते होत तेते रतननहूँ को कहूँ भूलि हूँ न होत भ्रम।
मोती सोन रतन रतन हूँ न मोती होत एक के भए ते कहूँ दूसरे के होत क्रम।
"द्विजदेव" की सों यह बनकनिकाई देषि राम की दोहाई मन होत है निहालमम।
कंज के उदर प्रगटो है मुकताहलसो बाहिर के आवल भयो हैं इंद्रनील सम॥

बाग विलोकन आज गई वह प्यारी कलिंद सुता के किनारे।
सो "दुजदेव" कहा कहिए विपरीति भई यह रीति कहारे।
केतक चंपक कुंद जपा यह भेद प्रसूनन के जे निहारे।
वे सिगरे मिसपातन के छवि वाहि सों मागत हाथ पसारे॥ २॥

१५८. दीनदास—इनकी पिगल विषयक एक रचना 'फलग्रथ' नाम से मिली है, जिसकी एक खडित प्रति के विवरण लिए गए है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९४० दिया है।

रचयिता का इसके द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। खोज रिपोर्ट (२६–९०, ६–१६१; २९–९१) मे इस नाम के एक रचयिता आए है, पर नही कहा जा सकता कि ये वही हैं या अन्य।

१५९. दीनदास बाबा—इनकी दो रचनाओ "बानी" और "अघनासन" का पता लगा है, जिनमे से प्रथम में भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है और द्वितीय मे सतनामी सतो का चरित्र वर्णित है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है, लिपिकाल क्रमश. १९३४ वि० और १९४२ वि० हैं।

इनसे रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये सतनामी पंथी थे। पर ग्रथ स्वामी (महत गुरुप्रसाददास, स्थान व पोस्ट—बछरावाँ, जिला—रायबरेली) से इनका पूरा वृत्त इस प्रकार मिला है—

ये ग्रथस्वामी के बाबा थे और बछरावाँ (रायबरेली) मे रहते थे। इनका गोलोकवास संवत् १९४२ मे ७२ वर्ष की अवस्था मे हुआ था। ये भी पहुँचे हुए सत हुए हैं और बड़ी सुदर रचनाएँ करते थे तथा सतनामी पथ के अनुयायी थे। इनके गुरु नरेनापुर (बाराबकी) निवासी बाबा रामसहाईदास थे। महती की गद्दी (बछरावाँ) इन्ही से आरभ हुई। जाति के कुर्मी थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१६०. दुनियापति—'रामायणरामलघुचरित्र' नाम से इनकी एक रचना मिली है, जिसमे रामायण की कथा का सक्षेप मे वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १८८७ है और लिपिकाल संवत् १९११ वि०। प्रस्तुत प्रति की विशेषता यह है कि इसको सरेनी (रायबरेली) के बेनी कवि ने लिखा था।

ग्रंथ मे रचयिता ने अपने नाम का उल्लेख तक नही किया है। पुष्पिका के पश्चात् एक पद्य भिन्न कलम और भिन्न स्याही मे इस प्रकार लिखा है—

शम्वत प्रति सत अधिक सतासी १८८७ शेमरी ग्राम शुहायो।
दुनियापति हित जानि राम लघु चरित मोद करि गायो।
परपोते जगन्नाथ बक्स नृपमन प्रमोद अधिकायो।
१९ २ ३
लघि शम्वत् उनविंश विस त्रैनेहि छापा करवायो॥२२८॥

इससे पता चलता है कि 'दुनियापति' रचयिता का नाम था और उसके परपोते नृप जगन्नाथ बक्स ने सवत् १९२३ मे इस ग्रथ को छपवाया था। सवत् १८८७ में सेमरी ग्राम (?) मे, जो रचयिता का निवासस्थान था, इस ग्रथ की रचना हुई। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१६१. दुर्गादत्त द्विवेदी—इनकी धातुमारण और रोगोपचार विषयक एक रचना "वैद्यदर्पन" नाम से मिली है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। रचयिता का परिचय भी इसके द्वारा कुछ नही मिलता। परतु ग्रथस्वामी (प० मातड जी द्विवेदी; स्थान व पोस्ट–रायबरेली) से पता चलता है कि ये उनके बाबा (पितामह) थे और लगभग १०० वर्ष पहले वर्तमान थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१६२. दुर्गादत्त या दुर्गादास—इनका "अजीतसिह फतेह ग्रथ" का इस बार भी विवरण लिया गया है। इसमे रोवा नरेश श्री अजीतसिह और यशवतराव पेशवा के युद्ध का ओजस्वी भाषा मे वर्णन किया गया है। यह युद्ध चोरहटा (रीवाँ) मे हुआ था, जिसमे रीवाँनरेश की विजय हुई था। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति म रचनाकाल सवत् १८५३ दिया है और यह सवत् १९५९ वि० का (भारतमाता यत्रालय, रीवाँ द्वारा) छपा हुआ है। खोज रिपोर्ट (००–४१) मे इसका उल्लेख हो चुका है। उक्त रिपार्ट मे रचयिता का नाम दुर्गाप्रसाद दिया है और उन्हे किसी प० राजाराम का आश्रित लिखा है। अन्य वृत्त नही दिया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा रचयिता का नाम दुर्गादास विदित होता है। आश्रयदाता और अन्य परिचय का इसमे उल्लेख नही।

१६३. दूलनदास—इनकी तीन रचनाएँ मिली है, जिनके नाम—१. कवित्त, २. नहछुरनिर्गुन और ३. रतनमाल हे। सबका विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। लिपिकाल प्रथम दो मे क्रमश. सवत् १९५३ और १९०७ हैं। अतिम दो रचनाएँ खडित है। प्रथम दो रचनाओ का उल्लेख खोज रिपोर्ट (२९–९४ ए) मे हो चुका है। अतिम रचना प्रथम बार मिली है। इनके रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये सतनामी पथानुयायी और उसके प्रवर्तक स्वा० जगजीवनदास जी के शिष्य थे। परतु उपर्युक्त खोज रिपोर्टों और सक्षिप्त विवरण मे इनका पूरा वृत्त दिया हुआ है, जिनके आधार पर ये सोमवशी क्षत्रिय, रायसिह के पुत्र, जन्मकाल सवत् १७१७, तर्दापुर (रायबरेली) जन्मस्थान, मृत्यु सवत् १८३५, तोवरदास, सिद्धदास, नवलदास और पहलवानदास के गुरु थे। कोटवा (बाराबकी) के सतनामी महत। सस्कृत और फारसी के अच्छे विद्वान्।

१६४. देवदत्त कवि 'जैन'—ये "उत्तरपुराण" के रचयिता है। ग्रथ के अनुसार इनका निवासस्थान अटेर था और ये दीक्षित ब्राह्मण थे। एक जैन भट्टारक जिन इद्रभूषण के कहने पर इन्होने प्रस्तुत रचना की। इनका समय अज्ञात है, पर भट्टारक जिन इद्रभूषण ने एक अन्य इंद्रजीत नामक कवि, जिनका उल्लेख पीछे हो चुका है, से भी इस पुराण की कुछ कथाओ का अनुवाद करने के लिये कहा था, जिस पर उक्त कवि ने सवत् १८४० मे उन कथाओं का अनुवाद किया। अत: प्रस्तुत रचयिता का भी यही समय मानना उचित है। यद्यपि लखनऊ के प्रसिद्ध जैन विद्वान् श्री ज्योतिप्रसाद जी जैन इससे सहमत नही है। उनके विचार से देवदत्त सवत् १७५० के लगभग वर्तमान थे। अस्तु इद्रजीत के लिये देखिए प्रस्तुत विवरणिका मे सख्या १६।

प्रस्तुत ग्रथ में केवल आठ तीर्थंकरों—अजितनाथ, सभवनाथ, अभिनंदन, सुमतिनाथ,

पद्मप्रभु, पार्श्वनाथ, चंद्रप्रभुनाथ और महावीर स्वामी की कथाओं का वर्णन है। यह दोहा चौपाइयों मे रचा गया है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १८६७ वि० है। मूलग्रंथ संस्कृत मे है जिसको पहले जिनसेनाचार्य ने लिखना आरंभ किया था; परतु आदिनाथ चरित्र लिखने के पश्चात् उनका देहात हो गया। पीछे गुणभद्राचार्य ने उसको पूरा किया। खोज मे प्रस्तुत रचयिता नवोपलब्ध हैं।

१६५. देवीदास कायस्थ—इन्होने दो फारसी ग्रथो "करीमा" और "मामकीमा" का हिंदी मे पद्यानुवाद किया है। इनमे भगवत् प्रेम का बडा सुदर, आकर्षक और रजनकारी वर्णन है। दोनो अनुवाद एक ही हस्तलेख मे है, जो सवत् १६०६ का लिखा हुआ है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। मूलग्रथ फारसी साहित्य मे प्रसिद्ध है, जिनके रचयिता क्रमश: शेखसादी और अलाउद्दीन अवधी है। प्रस्तुत अनुवाद भी काव्य की दृष्टि से उत्तम और सरस हुए है।

इनके द्वारा (पुष्पिका के अशो से) रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये जाति के कायस्थ थे और गाजीपुर इनका निवासस्थान था। खोज मे नवोपलब्ध है।

१६६. देवीदास बाबा—ये सतनामी पथ के प्रवर्तक स्वा० जगजीवनदास जी के चार प्रधान शिष्यो (गुसाईंदास, दूलनदास, देवीदास और श्यामदास) मे से एक थे। इनका जन्म-स्थान बाराबकी और रायबरेली जिला की सीमा पर स्थित देवीदास का पुरवा था, जो इनके नाम से प्रसिद्ध है। सवत् १६८७ मे वर्तमान थे। पिछली खोज रिपोर्टों मे इनकी तीन रचनाओं का उल्लेख हो चुका है। इस बार भी इनकी निम्नलिखित तीन रचनाएँ और मिली है—

१. **गुरु उपदेस और गुरुवदना**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १६२२। इसमे गुरु उपदेश महिमा और गुरु वदना का वर्णन है।

२. **लीला या लीलावतीवानी**—रचनाकाल दिया नही। इसकी तीन प्रतियाँ मिली है, जिनमे से एक खडित है। लिपिकाल केवल एक मे दिया है, जो सवत् १६४६ है। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट (२६–१००, २६–८३ बी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

३. **सुखसनास**—रचनाकाल सवत् १८४७ है, लिपिकाल दिया नही। विषय, सतनामी पथ के सिद्धातानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश।

इनमे से केवल दूसरा ग्रथ, लीला या लीलावतीवानी ही ऐसा है जो पहले आ चुका है। शेष दो ग्रथ खोज मे प्रथम बार ही मिले है। 'सुखसनास' उत्तम रचना है, जिसकी भक्त लोग पूजा करते हैं।

१६७. देवीसिंघ—इनकी रची हुई "कौशिल्या का बारहमासा" नामक रचना के विवरण लिए गए हैं। इसमे राम के वन गमन पर कौशिल्या का विलाप वर्णन है। प्रस्तुत प्रति खंडित है, अत रचनाकाल और लिपिकाल खडित है। रचना साधारण है।

रचयिता का इसके द्वारा कोई वृत्त नही मिलता पर खोज रिपोर्ट (२६–१०१) मे इनका उल्लेख है, जिसके आधार पर ये ओडछा नरेश मधुकरसाहि की पाँचवी पीढ़ी मे हुए थे और चंदेरी के राजा थे। सवत् १७३३ के लगभग वर्तमान थे।

१६८. दौलतराम—इनके तीन वृहद् ग्रथो—आदि पुराण की बालबोधभाषावचनिका, पद्मपुराण जी की भाषा वचनिका और पुण्याश्रव कथाकोश भाषा बालबोध के विवरण लिए गए हैं। इनम से प्रथम ग्रथ का उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३–८५ ए) मे हो चुका है। शेष ग्रथ नए मिले है। ये सभी मूल संस्कृत ग्रथो के गद्यानुवाद है। नीचे रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से इनका उल्लेख किया जा रहा है—

१. **आदिपुराण की बालबोध भाषा वचनिका**—रचनाकाल सवत् १८२४। लिपिकाल सवत् १८६८ और १६००। विषय, आदिपुराण (जैन) का हिंदी गद्यानुवाद। इसकी दो प्रतियाँ मिली है।

२. **पद्मपुराण जी की भाषावचनिका**—रचनाकाल सवत् १८२३ और लिपिकाल सवत् १६१४ वि०। विषय, पद्मपुराण (जैन) का हिंदी गद्यानुवाद।

३. **पुण्याश्रव कथा कोस भाषा**--रचनाकाल संवत् १७७७ वि० । इसकी चार प्रतियाँ मिली हैं, जिनम से केवल दो मे लिपिकाल दिया है, जो सवत् १७८६ और स० १८८७ है । विषय, जैनधर्म विषयक छप्पन कथाओ का वर्णन ।

हिंदी गद्य ग्रंथ होने के कारण ये महत्वपूर्ण हैं । जैसा कि इनके रचनाकालो से स्पष्ट है, ये गद्य सवत् १७७७ से लेकर सवत् १८२४ तक के है । इनमे राजस्थानी, ब्रज और खड़ी बोली तीनो ही भाषाएँ प्रयुक्त हुई है ।

रचयिता इन ग्रथों के आधार पर खडेलवाल वैश्य थे । अल्ल कासलीवाल था । पिता का नाम आनदराम था । ये पहले आगरा मे आए थे जहाँ इन्होंने "पुण्याश्रवकथाकोस" की रचना की । वहीं ? मे इन्होंने अपना निवासस्थान बतलाया है । पीछे जयपुर चले गए और रायमल्ल तथा रतनचद (राज्य के दीवान) नामक मित्रो के साथ रहने लगे तथा उन्ही के अनुरोध पर "आदिपुराण और पद्मपुराण" के अनुवाद किए । जयपुर मे उस समय महाराजा माधवसिंह का राज्य था । रचयिता जैन साहित्य के मर्मज्ञ और प्रौढ विद्वान् थे । इस बार इनका विस्तृत परिचय मिला है, अत इनके सबध की प्रस्तुत खोज महत्वपूर्ण है ।

१६६. **दौलतराम**--इनकी "व्रतविधानरासो" नाम से एक रचना मिली है, जिसमे जैन धर्म के उपवासों का वर्णन है । रचनाकाल सवत् १७६७ दिया है । लिपिकाल का उल्लेख नही है ।

रचयिता पूर्व रचयिता से भिन्न है । इनके पिता का नाम चतुर्भुज, पितामह का धनपाल और परपितामह का नाम साहमामाधर था । इनके पुत्रो का नाम हिरदैराम और सदाराम था । ये पाटणी गोत्र के खमेरवाल जैन थे । बूंदीगढ निवासस्थान था जहाँ उस समय हाडा बुधसिंह राज्य कर रहे थे ।

इन्होंने मूलग्रथ सरस्वतीगछ के भट्टारक जगतकीर्ति, कुदामुनि ब्रह्मचारी (आचार्य तथा पंडित) और पंडित तुलसीदास नामक व्यक्तियों का उल्लेख किया है, जो विदित होता है कि इनके परिचितो मे से थे । खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

१७०. **धर्मदास**--इनकी "महाभारत (सभा, उद्योग, भीष्म और द्रोणपर्व)" नामक रचना के विवरण इस बार भी लिए गए है । पहले खोज रिपोर्ट (१७-४८, २०-४१ ए, बी, ४४-१७२) में इसका उल्लेख हो गया है । अंतिम रिपोर्ट मे रचयिता का विस्तृत परिचय दे दिया गया है, जिसके अनुसार ये बघेलखड मे डहार देश के अतर्गत मऊ ग्राम के निवासी थे जहाँ उस समय कोई वासुदेव राजा था । गग, खड्गसेन, दलपति और श्रीपति नाम के इनके चार पुत्र थे, जो सबके सब कवि थे । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल नही दिया है । रचनाकाल द्रोणपर्व के आधार पर सवत् १६६४ है । इसके द्वारा रचयिता के सबध मे और कोई उल्लेखनीय बात नही मिलती ।

१७१. **धर्मादास**--पैशाची भाषा मे रची हुई इनकी "विदग्ध मुखमडन" नामक रचना के विवरण लिए गए हैं । यह खडित है और इसके केवल दो ही पत्रे उपलब्ध हो सके हैं, जिनमे न तो रचनाकाल का ही उल्लेख है और न लिपिकाल का ही । सस्कृत श्लोकबद्ध अनुवाद भी साथ साथ है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई पता नही चलता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

विषय भी इसका ठीक ठीक ज्ञात नही होता पर सभवत यह कोई काव्य कृति है । पैशाची भाषा का ग्रथ होने के कारण ही इसका विवरण लिया गया है ।

१७२. **धारू**--इनके भक्ति और ज्ञानोपदेश विषयक "कवित्तो" के विवरण लिए गए हैं, जिनकी प्रस्तुत प्रति खडित है । उससे रचनाकाल, लिपिकाल और रचना के नाम का कोई पता नही चलता । रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय अप्राप्त है । खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

१७३. **धिरजाराम**--इन्होने "सुदामाचरित्र" की रचना की, जिसकी एक खडित प्रति के विवरण लिए गए है । रचनाकाल सवत् १७८७ है । लिपिकाल का उल्लेख नही । काव्य की दृष्टि से रचना सुदर है ।

रचयिता शाकद्वीपी ब्राह्मण और रामगढ़ (?) शहर के निवासी थे। इनके मोहनाढ्य नाम से एक प्रसिद्ध पुरखे थे, जिनके पुत्र श्रीकांत थे। श्रीकांत के दामोदर और उनके मुरलीधर पुत्र हुए। इन्ही मुरलीधर के पुत्र प्रस्तुत रचयिता थे। ये चार भाई थे। अन्य तीन भाइयो के नाम क्रमशः गोविंदराम (गोविराम), मनसाराम और दशाराम था। किसी बिशनसिंह राजा (?) के ये आश्रय मे थे रहते थे। रचना द्वारा विदित होता है कि ये एक अच्छे कवि थे। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

१७४. धीर या धीरसिंह—ये "अलकार मुक्तावली" के साथ खोजरिपोर्ट (५–३५; २३–१०२) मे आ चुके हैं। उक्त रिपोर्टों मे इनका केवल इतना ही वृत्त मिलता है कि ये एक राजा थे। इस बार भी इनके उक्त ग्रथ की एक प्रति के विवरण लिए गए है, जिसमे लिपिकाल संवत् १८५२ दिया है। रचनाकाल अभी तक अज्ञात ही है। लिपिकाल द्वारा यह उन प्रतियो से पुरानी है, जो उपर्युक्त रिपोर्टों मे उल्लिखित है। अत इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। इसमे अलकारो का वर्णन किया गया है, जो सस्कृत ग्रथ चद्रालोक के आधार पर है। एक विशेष बात इसमे यह पाई जाती है कि कही कही विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए गद्य का भी प्रयोग किया गया है। रचयिता का वृत्त अभी तक अविदित है।

१७५. ध्रुवदास हित—ये स्वामी हितहरिवश जी के शिष्य, वृदावन निवासी और प्रसिद्ध कवि थे। इनका रचनाकाल सवत् १६६० से १७०० तक माना जाता है। इन्होने बहुत से ग्रथो की रचनाएँ की, जिनम से कई ग्रथो का उल्लेख पिछली खोज रिपोर्टों मे हो चुका है, देखिए खोज रिपोर्ट (००–६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, ६–१५९, ९–७३, १२–७६, १७–५१, २९–८९, ७३, ३८–४२, प० २२–२६, ४१–११७)।

इसबार इनकी "बयालीस लीला" नामक रचना के विवरण फिर लिए गए हैं। इसमे श्रीकृष्ण की ४२ लीलाओ का सरस वर्णन है। रचनाकाल वृदावनसत के आधार पर सवत् १६८६ है। लिपिकाल सवत् १९४८ दिया है। खोज रिपोर्ट (२९–८९ बी) मे इसका पहले उल्लेख हो चुका है। विवरण पत्र के विषय क खान म समस्त लीलाओ का नामोल्लेख कर दिया गया है।

१७६. नंद और मुकुंद—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे कामशास्त्र विषयक इनकी एक रचना "कोक-सार" नाम से मिली है जिसक विवरण लिए गए है। यही रचना अनद, आनद, नदकेश्वर और जनमुकुद के नाम से पहले कई बार मिल चुकी है, देखिए क्रमश. खोज रिपोर्ट २–५, ६–१२६, १७–७; २०–६; २३–१३, २६–१०, २९–११, दि० ३१–७, प० २२–५; २३–२९५ और ९–१८३; २९–२२५। इस बार भी आनद के नाम से इनकी पाँच प्रतियाँ और मिली है जिनका यथास्थान उल्लेख हो चुका है, देखिए पीछे आनद या अनद के विवरण। परतु अब तक रचयिता के वृत्त के अभाव मे यह पता नही चल सका था कि इनका वास्तविक रचयिता कौन है। सौभाग्य स अब धीरे धीरे इस सबध म कुछ ज्ञातव्य बाते प्रकट होने लगी है। इस बार प्रस्तुत रचना की जो प्रति मिली है उसमे रचयिता का थोडा सा परिचय उपलब्ध होता है। उसके अनुसार ये नद और मुकुद नाम स दो भाई थे। सभवत नद बडे थे। पिता का नाम चितामनि था और निवासस्थान का नाम जगरकँटी। दोनो भाई सुकवि थे। प्रस्तुत ग्रथ की रचना इन्होने सम्मिलित रूप से की। रचनाकाल अस्पष्ट है, पर सवत् १६०० पढने मे आता है जिससे विदित होता है कि रचना सत्रहवी शताब्दी की है—

"संमत सोरह सौ बरष एतेरसा जो आही।
माघ मास सुकल तिथि सतमी कथा कीन्ह कबि चाही॥
जगरकँटी वास तहा "चींतामनी" चीत चार।
ताके सुत कवी नंद भए कवी मकुंद उजीआर॥
दुनो भ्राता गुनगनी दुनौ चतुर प्रवीन।
दोऊ रस कै हेतु करी कीन्ह कोक नवनीत॥"

प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल नही दिया है। यह भ्रष्ट कैथी लिपि मे लिखा हुआ है, अतः इस दोष के कारण इसको पढ़ने मे स्वभावतः कठिनाई उत्पन्न होती है। यही कारण है कि रचना-काल ठीक ठीक विदित न हो सका। फिर भी, रचयिता के विवरण के कारण यह महत्वपूर्ण है। इससे अब यह स्पष्ट हो जाता है कि अनद, आनद, नंद, मुकुद, नदकेश्वर, जनमुकुद और मुकुददास के नाम से जितने 'कोकसार' मिलते हैं वे सब इन्ही दो बधुओ के रचे है। नद का ही 'अनंद' और 'आनंद' हो गया है अथवा ये उसके उपनाम हैं। 'मुकुददास' और 'जनमुकुद' तो स्पष्ट रूप से मुकुद के उपनाम विदित होते हैं। 'नदकेश्वर' का नाम रिपोर्ट (२३–२६५) मे गलत दिया है। उसमे उल्लिखित रचना मुकुद की रचना से मिलती है, जिसमे नदकेश्वर पडित का नाम आया है, वह अश इस प्रकार है—

चौपाई

नंदकेसवर पंडीत ऐक भेउ। पहोले गरंथ के उन कहेउ॥
गुनीक पुत्र कवी अती माना। काम कलारस सब उन जाना॥
उनके मत ग्रंथ हम देखा। कीछु छंनछेप बीचारी बीसेखा॥

उपर्युक्त पद से स्पष्ट है कि उसका रचयिता कोई दूसरा है, जिसने नंदकेश्वर पंडित के ग्रंथो को देखकर रचना की थी और क्योकि मुकुद की रचना से वह मिलती है अत. मुकुद ही उसका वास्तविक रचयिता हो सकता है।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, आनद के नाम से भी इस बार इस ग्रथ की पाँच प्रतियाँ मिली हैं। उनमे भी रचयिता का थोडा सा उल्लेख मिलता है, जिसके अनुसार वे कोट हिसार (? पजाब) के रहने वाले कायस्थ थे। सवत् १६६० मे उन्होने इस ग्रथ की रचना की थी। "राजस्थान मे हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज, द्वितीय भाग" के पृष्ठ १४ मे उल्लिखित "वचनविनोद" नामक पिंगल ग्रथ के रचयिता भी यही आनदराम हैं। उक्त खोज के अनुसार ये हिसार (हिंसारि) के रहनेवाले भटनागर कायस्थ और गो० तुलसीदास (मानसकार) के शिष्य थे (देखिए उक्त खोज और आनदराम पर की टिप्पणी)। अत इन सबके आधार पर नद और मुकुद का वृत्त इस प्रकार उपलब्ध होता है—

"ये दो भाई थे जिनमे नद सभवत. बडे थे। पिता का नाम चितामनि था। जाति के भटनागर कायस्थ और हिसार (पंजाब) के अतर्गत जगरकँटी स्थान के निवासी थे। दोनो भाई सुकवि थे और प्रस्तुत रचना (कोकसार को) दोनो ने सम्मिलित रूप से की थी। सवत् १६६० मे वर्तमान। नद (अनद या आनद) के गुरु गो० तुलसीदास (मानसकार) थे।"

इस सबध मे यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि प्रस्तुत रचना इन दोनो भाइयो ने अलग अलग भी लिखी हैं, जैसे खोज रिपोर्ट (६–१८३ ए; २६–२२५) मे उल्लिखित 'कोकभाषा' को मुकुददास ने जहाँगीर बादशाह के राज्य मे सवत् १६७२ मे रचा था। इसी प्रकार आनद या अनद के नाम से मिलने वाली रचनाएँ हैं, जो नद की स्वतत्र रूप से लिखी हुई हो सकती है। इसका कारण अलग अलग आश्रयदाताओ के लिये उसकी इच्छानुसार इन ग्रथो का रचा जाना हो सकता है। परतु यह निश्चित है कि एक बार यह रचना इन बंधु द्वय ने सम्मिलित रूप से लिखी थी।

अब एक सदेह और उत्पन्न हो गया है। वह यह कि अष्टछाप के सुप्रसिद्ध कवि स्वा० नंददास के नाम पर जो 'भ्रमरगीत' प्रचलित है वह इन्ही बधु द्वय का तो नही। वह जनमुकुद के नाम पर भी मिलता है। एक ही ग्रंथ के दो रचयिताओ की इस उलझन को मिटाने के लिये पिछली खोज रिपोर्टों और सक्षिप्त विवरण मे नददास का दूसरा नाम जनमुकुद मान लिया गया है। परतु तब यह विदित न था कि नद और मुकुद नाम से दो भाई थे और उन दोनों ने मिलकर भी रचनाएँ की। अब यह ज्ञात हो जाने से यदि इसको भी इनकी सम्मिलित रचना मान लें तो इस कारण का भी पता सरलता से लग जाता है कि क्यो यह नददास और जनमुकुंद के नाम पर अलग अलग मिलती हैं। परतु इससे अब यह मानना पडेगा कि स्वा० नददास (अष्टछाप) इसके रचयिता नही अथवा यह कि वे कोई भिन्न व्यक्ति नही है प्रत्युत इन्ही बंधुओं मे से एक हैं। दूसरी धारणा की पुष्टि तो इतनी शीघ्रता से नही की जा सकती जब तक कि अन्य सबल प्रमाण

न मिल जायँ, पर प्रथम धारणा अनुचित नही। बहुत से प्रसिद्ध कवियो के नाम पर अनेक ऐसी रचनाएँ प्रचलित हैं जो वास्तव मे उनकी नही। कबीर, सूर, तुलसी आदि इसके प्रमाण हैं। अत: इस दृष्टि से प्रस्तुत रचना विद्वानो द्वारा मनन करने योग्य है।

१७७. नंददास (अष्टछाप)—ये सुप्रसिद्ध अष्टछाप के कवि हैं और कई ग्रथो के रचयिता के रूप मे पिछली खोज रिपोर्टों मे उल्लिखित हैं, देखिए १–११, ६६; ६–२००; ६–२०८, १२–१२०, १७–११६, २०–११३, २३–२६४, प० २२–७२; २६–२४४, दि० ३१–६१, ३५–६७, ३२–१५२। इस बार इनकी "रास पचाध्यायी" की एक प्राचीन प्रति, जो सवत् १७८० की लिखी हुई है, के विवरण लिए गए है। यह स्व० मयाशकर जी याज्ञिक के सग्रह की है। उनके उत्तराधिकारी प० भवानीशकर जी याज्ञिक ने इस प्रति के ऊपर इस प्रकार लिखा है—

"इससे प्राचीन एक ही प्रति सुनी जाती है"

अत इससे इस प्रति का महत्व विदित होता है। रचयिता का इसके द्वारा कोई वृत्त नही मिलता।

१७८. नंद या नंदलाल—इनके दो ग्रथो "सुदर्शन चरित्र" और "यशोधर चरित्र या जशोधर चरित्र" का पता चला है। इनमे क्रमश जैनधर्मानुयायी सुदर्शन सेठ और यशोधर के चरित्रो का वर्णन है। प्रथम ग्रथ का रचनाकाल सवत् १६६३ है। लिपिकाल दिया नहीं। दूसरे का रचनाकाल स० १६७० है, इसका भी लिपिकाल अज्ञात है। रचनाएँ दोहा चौपाइयों मे है।

'रचयिता जैन धर्मानुयायी और आगरा के निवासी थे। गुरु का नाम त्रिभुवनकीर्ति था जो काम का नाश करनेवाले सुखेमकीर्ति के शिष्य थे। सुखेमकीर्ति के गुरु का नाम भट्टारक जशकीर्ति था। रचयिता ने आगरा की बड़ी प्रशसा की है। उस समय जहाँगीर बादशाह का राज्य था, जो आगरा मे ही रहते थे। बडे बडे धनाढ्यो का वहाँ निवास था। वहाँ के लोगो की भाषा अच्छी थी और वे गुणियो से प्रीति करते थे, आदि। दूसरे ग्रथ के अनुसार ये गोइल गोत्र और अग्रवाल जाति के थे। पिता का नाम भैरो और माता का नाम चदन था।

इसमे सदेह नही कि उस समय आगरा मे राजधानी होने के कारण अनेक कवि और विद्वान् रहते थे। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१७९. नकुल—इनके नाम से 'शालिहोत्र' की दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे मे एक खडित है। रचनाकाल किसी मे नहीं दिया है। लिपिकाल केवल एक मे है, जो सवत् १६०१ है।

रचयिता का नाम यद्यपि पुष्पिकाओं मे नकुल दिया है पर वे प्रस्तुत हिंदी रचना के प्रणेता नही विदित होते। ये पाडव नकुल जान पडते है, जिनका सस्कृत मे शालिहोत्र प्रसिद्ध है और जो घोडो की विद्या मे दक्ष थे। प्रस्तुत रचनाओ को उसी सस्कृत ग्रथ का अनुवाद मान सकते है, जो भिन्न भिन्न अनुवादको द्वारा हुआ है। यही कारण है कि ये अनुवाद आपस मे नही मिलते। यदि इनका एक रचयिता होता तो ये अवश्य ही आपस मे मिलते। फिर भी सुभीता के लिए नकुल ही रचयिता मान लिया गया है जैसा कि पिछली रिपोर्टों मे भी माना गया है, देखिए ६–२०८, २६–३१४।

१८०. नत्थन—इनकी "बारहमासा" के विवरण लिए गए है, जिसका विषय विरह शृंगार है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १६२२ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। इनकी प्रस्तुत रचना लावनी शैली की है, जिसका प्रादुर्भाव काल १६वी विक्रम शती का उत्तरार्ध था जो ख्यालबाजो का भी आविर्भाव काल माना जाता है (देखिए दिल्ली रिपोर्ट का भूमिका भाग, पृष्ठ १५)। इसकी भाषा को देखने से रचयिता उक्त काल का ही विदित होता है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१८१. नथमल—ये एक जैन रचयिता है और इनके "नागकुमार चरित्र" नामक ग्रथ के विवरण लिए गए है। इसमे जैन धर्मानुयायी एक नागकुमार के चरित्र का सरस वर्णन है।

यह प्रधानतः दोहा चौपाइयों मे रचा गया है, पर इसमे अन्य छदो, जैसे उमलता छद आदि का भी प्रयोग हुआ है। रचनाकाल दिया तो है पर वह खंडित है—

संवत सत जान...... । ता उपरि लेनी सप्त मान ।
माघ सुक्ल पांचं गुरवार । ग्रंथ समाप्त कीनो सार ॥४६॥

लिपिकाल संवत् १६८६ है। रचयिता के पिता का नाम सोभाचद, पितामह का नाम जेठमल और पितृव्य का नाम गोकुलचंद था। ये बिलालागोत्री खडेलवाल (? वैश्य) थे। इनके पुरखे आगरा मे रहते थे पर ये लोग भरतपुर मे जाकर बस गए। वहाँ किसी केसोदास (चांडबाड प्रसिद्ध) के पोतदार मायाराम ने इन्हे खजाने का काम दिया। परतु भरतपुर मे ये टिके नहीं और वहाँ से रायपुर (?) चले गए, जहाँ प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। इस नाम के एक जैन रचयिता खोज रिपोर्ट (४४–१७७) मे भी आए हैं पर प्रमाणाभाव के कारण ये वही हैं या नही, कहा नही जा सकता।

१८२. नवरंग—इनका "नवरगविलास" नायिका भेद विषय का एक उत्तम ग्रथ है। इसमे अन्य रसो का भी विवेचन किया गया है, पर अत्यत सक्षेप मे। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल तथा लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता के परिचय के सबध मे भी इससे कुछ ज्ञान नही होता। खोज रिपोर्ट (२६–३२८ ए) मे इसका विवरण आया है, जिसके आधार पर रचयिता के विषय मे इतना ही पता चलता है कि वे जाति के कायस्थ थे।

१८३. नवलदास—इनकी आठ रचनाओ के विवरण लिए गए हैं, जिनमे दो "स्तुति श्री बजरग की" और "रामगीता" नवीन हैं। इनका विवरण रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. स्तुति श्री बजरंग की—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १६२१। विषय, हनुमान जी की स्तुति।

२. ज्ञानसरोवर—रचनाकाल सवत् १८१८। इसकी छह प्रतियों के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से केवल चार मे लिपिकाल दिए है, जो क्रमश: सवत् १८५१, १८५१, १६०४ और १६६० है। विषय, श्रीकृष्ण और उद्धव के सवाद मे ज्ञानोपदेश का वर्णन है। खोज रिपोर्ट (२६–३२७ ए, २३–३०१ ए) मे उल्लेख है।

३. भागवत दशम स्कंध—रचनाकाल सवत् १८२३, लिपिकाल सवत् १८३१। विषय, भागवत दशम स्कध की कथाओ का वर्णन। खोज रिपोर्ट (६–२१३; २०–११८) मे उल्लिखित है।

४, भागवतभाषा (जन्म, मध्य और पारायण कांड)—रचनाकाल सवत् १८२३, लिपिकाल अज्ञात। विषय, पूर्व ग्रथ भागवत दशम स्कध के सदृश्य। तीसरा ग्रथ और यह एक ही हैं। खोज रिपोर्ट (६–२१६, २३–३०१ डी) मे यह आ चुका है।

५. माधव रत्नज्ञान—रचनाकाल स० १८३८, लिपिकाल सवत् १८५२। विषय, भक्ति और उपदेशपूर्ण प्राचीन कथाओ का वर्णन। खोज रिपोर्ट (२३–३०१ बी) मे यह आ गया है।

६. रामगीता—रचनाकाल सवत् १८८५ और लिपिकाल सवत् १६२१ वि०। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

७. शब्दावली—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १६५७। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। खोज रिपोर्ट (२६–२४६ ए) पर उल्लेख हो गया है।

८. सुखसागर—रचनाकाल सवत् १८१७, लिपिकाल सवत् १६३६। विषय, शुकदेव मुनि का चरित्र वर्णन। खोज रिपोर्ट (२६–३२७ बी, २३–३०१ सी) मे उल्लेख हो चुका है।

इन ग्रथों के अनुसार रचयिता सतनामी पथी और स्वा० जगजीवनदास के शिष्य थे। घनेसा ग्राम मे कुटी बनाकर रहते थे। ग्राम की सीमा इस प्रकार दी है—

दक्षिण छह योजन पर गंगा जी, पूर्व ५ योजन पर अयोध्या, उत्तर चार योजन पर गुरु-स्थान और पश्चिम पाँच योजन पर लखनऊ।

'सुखसागर' ग्रंथ के अनुसार इन्होंने गोमतीतट पर कुछ दिन अजपा जाप की भी साधना की थी, जिससे उन्हें थोड़ी सी सिद्धि प्राप्त हुई थी। 'माधव रत्नज्ञान' मे इन्होंने स्वामी जगजीवनदास के सात शिष्यो के नाम दूलनदास, देवीदास, खेमदास, गोसाईंदास, शिवदास, उदयराम और भवानीदास दिए हैं। स्वा० जगजीवनदास के पुत्र का नाम जलालीदास और पौत्र का गिरवरदास लिखा है तथा अहलाददास को इस परपरा का शिष्य बतलाया है।

इसमे सदेह नही कि प्रस्तुत रचयिता उच्चकोटि के ज्ञानी थे और साथ ही साथ प्रौढ़ कवि थे।

१८४. नवलसिंह "नवल"—इनके "मगलगीत और शब्दावली" मिली हैं, जिनमें रामजन्म, रामविवाह और सगुण भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १९८८ दिया है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य वृत्त उपलब्ध नही। ग्रथ-स्वामी (प० त्रिभुवनप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम–प्रानपाडेय का पुरवा, डाकघर–तिलोई; जिला–रायबरेली) के कथनानुसार इनका पूरा नाम नवलसिंह था। ये सतनामी नवलदास से भिन्न सगुणोपासक वैष्णव थे और बाराबकी जिले में कही रहते थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१८५. नवीन कवि—इनका "प्रबोधरससुधासागर" एक सग्रह ग्रथ है, जिसके विवरण लिए गए हैं। इसमे अनेक कवियो के छदो को लेकर नायिकाभेद वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है जिसके कारण रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चल सका। रचयिता का भी इसके द्वारा कोई विवरण नही मिलता, पर इसकी एक प्रति का उल्लेख खोज रिपोर्ट (३५–६९) मे हो चुका है, अत उसके और सक्षिप्त विवरण के अनुसार रचयिता का वास्तविक नाम गोपालराय था। ये जाति के कायस्थ, वृदावन निवासी, जयपुर वाले ईश कवि के शिष्य और नाभा के महाराज जसवतसिंह तथा उनके पुत्र देवेद्रसिंह के आश्रित थे। इनके वशज अब भी अलवर राज्य के आश्रित हैं। स० १८९५ के लगभग वर्तमान।

पिछली रिपोर्टों मे रचयिता के 'नेहनिदान', 'शृगारशतक' और 'सुधासार' नामक ग्रथो का भी उल्लेख है, देखिए ५–३९, २६–२३० ए, बी, ३५–६९ बी।

सग्रह की प्रस्तुत प्रति मे अनेक छद इसके पन्नो के दाएँ, बाएँ रिक्त स्थानो मे लिखे हुए हैं। इससे जान पडता है कि यह कार्य स्वय ग्रथकार का है। लिपिकार तो आँख मूँदकर नकल कर सकता था, उसको और छद बढाने की आवश्यकता न थी। अत इस दृष्टि से सग्रह की यह प्रति मूल प्रति विदित होती है, जो महत्वपूर्ण है।

१८६. नागरीदास (सावंतसिंह महाराज)—ये सुप्रसिद्ध कृष्णगढ नरेश महाराज सावतसिंह हैं। पिछली खोज रिपोर्टों मे इनके बहुत से ग्रथो का उल्लेख हो चुका है, जिनमे इनका पूरा वृत्त आ गया है, देखिए १–११२, १२१, १३१, ११६, १२०, १२३, १३०, ११९, १२८, १२४, ११५, १२६, १२६, ११७, ११८, १२५, १२७, ६–१९८, प० २२–६६, ३८–१०३, ३२–१४६, ६–२०३। इस बार इनकी तीन रचनाओ—१ पदमुक्तावली, २ निकुजविलास और ३ बैराग्यसार के विवरण और लिए गए है। अतिम रचना प्रथम बार मिली है। इसमे रचयिता की लगभग ३५ छोटी बडी रचनाएँ सगृहीत है, जिनमे से कुछ मे अलग अलग रचनाकाल दिए हैं, जो इस प्रकार है—

ग्रथ	रचनाकाल
१. भागवत परायणविधि	स० १७९९ वि०
२ गोपीप्रेमप्रकाश	स० १८०० वि०
३. ब्रजवैकुठ	स० १८०१ वि०
४. ब्रजसार	स० १७९९ वि०
५. विहार चद्रिका	स० १७८८ वि०

इसका लिपिकाल संवत् १६३१ है। 'पदमुक्तावली' मे रचनाकाल और लिपिकालों का उल्लेख नहीं। 'निकुंजविलास' मे रचनाकाल संवत् १७६४ है, लिपिकाल दिया नहीं। इनका उल्लेख क्रमशः खोज रिपोर्ट १२–११८ और १–११६ पर हो गया है।

१८७. नाथ—ये "कामरत्न" नामक रचना के रचयिता है। ग्रथ मे कामशास्त्र और रसादि औषधियो का वर्णन है। परतु इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे केवल अत के तीन पत्रे उपलब्ध हुए है। उनमे ग्रथ की पुष्पिका और उसके पश्चात् फुटकर औषधियो के नुस्खे दिए हैं। पुष्पिका से इतना ही पता चलता है कि कोई 'नाथ' नामक व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने 'कामरत्न' नामक ग्रथ की रचना की। ग्रथ का लिपिकाल सवत् १८४० दिया है। रचनाकाल अज्ञात है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१८८. नाथूलाल—ये एक जैन रचयिता हैं और इनका 'सुकुमाल चरित्र' नामक ग्रंथ का विवरण पहली बार लिया गया है। इसमे जैन-धर्म-कथाओ के अतर्गत सुकुमाल चरित्र का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १६१८ और लिपिकाल सवत् १६६७ दिए है। यह खड़ी बोली मिश्रित ब्रजभाषा गद्य में है, जिसका नाम वचनिका रखा गया है। मूल ग्रथ सस्कृत में है जिसका रचयिता आचार्य सकलकीर्ति हैं।

रचयिता के पिता का नाम शिवचद था और पितामह का दुलीचद। ये दोशी गोत्र के जैन बनिया थे। ढूंढाहर (राजस्थान) के मध्य जैपुर नगर के रहनेवाले थे जहाँ उस समय महाराज रामसिंह का राज्य था। किसी हरिचद गगवाल के अनुरोध पर इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ की वचनिका लिखी। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१८६. नानक (गुरु)—ये प्रसिद्ध गुरु नानक है और इनके कई ग्रथ पिछली रिपोर्टों में उल्लिखित हैं, देखिए रिपोर्ट ६–१६६, ६–२०७, २०–६६, प० २२–७०, २३–२६३, ३२–१५१, २६–३१५। इस बार इनका 'नानकप्रगाश' नाम से एक और ग्रथ मिला है, जिसका विवरण प्रथम बार लिया गया है। इसमें गुरु भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का इसके द्वारा नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता।

१६०. नामदेव—इनके नाम पर एक "महाभारत" का विवरण लिया गया है। इसमें एक स्थान पर अस्पष्ट रूप से 'नामदेव' नाम आया है, जो रचयिता का नाम मान लिया गया है। परतु यदि यह नाम रचयिता का ही हो तो ये महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सत नामदेव से भिन्न है। इन्होंने ग्रथारभ मे गो० तुलसीदासकृत दोहा "श्री गुरु चरन सरोज रज, निजमन मुकुर सुधारि" का उल्लेख किया है, अत उनके (गो० तुलसीदास के) पश्चात् के हैं। ग्रथ यद्यपि पूर्ण है, पर उसमें रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १७८१ है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

१६१. नारायणाश्रम स्वामी परमहंसकाचार्य—इनकी एक रचना "त्रिकाडवल्ली ज्ञानदीपिका" नाम से मिली है, जिसमे आर्य ग्रथो और आर्य सस्कृति का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १६०४ के लगभग है। लिपिकाल सवत् १६४८ दिया है।

रचयिता के सबध मे ग्रथस्वामी (प० देवशकर पाडेय, ग्राम—भगवानपुर बढैया; डाकघर—खैरहनी पहाड़गढ, जिला—रायबरेली) से पता चला कि वे रमतेराम साधु थे। कुछ दिन खैरहनी पहाड़गढ (रायबरेली) में रहे थे। अन्य विवरण अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१६२. नित्यनाथ—इनके 'उड्डीसतत्र' की एक प्रति और मिली है, जो गद्य मे लिखी हुई है। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल प्रति के खडित होने के कारण अज्ञात है। रचयिता के विषय मे पुष्पिका द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये पार्वती पुत्र थे। पिछली खोज रिपोर्टों (१७–१२६, २६–२५५ ई) मे इनके प्रस्तुत ग्रथ का उल्लेख हो गया है पर उनमें भी इनके विषय मे और अधिक ज्ञात नही होता।

१६३. निधान—इनका "शालिहोत्र" नामक ग्रंथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। पिछली खोज रिपोर्टों (१२–१२४, २३–३०४ ए, २६–३३४) में इसका उल्लेख हो चुका है, जिनके अनुसार रचयिता संवत् १८०० के लगभग वर्तमान, दीक्षित ब्राह्मण और सैयद अकबर अली के आश्रित थे। प्रस्तुत प्रति में रचयिता का परिचय तो इतना ही मिलता है, पर रचनाकाल, जिसमें कवि वर्तमान थे, भिन्न है। इसके अनुसार रचनाकाल संवत् १८१२ होता है, जो ठीक जान पड़ता है—

१० ८ १२
"संवत दश वसु सै जहाँ उपर जानौ भानु।
सालिहोत्र भाषा करि नूतन सुकवि निधान॥"

पिछली रिपोर्टों में उल्लिखित ग्रंथ की प्रतियों में रचनाकाल का दोहा अशुद्ध दिया हुआ है, जिससे वह संवत् १८०० ही पढ़ा गया। उदाहरणार्थ खोज रिपोर्ट (१२–१२४) में दिया हुआ रचनाकाल इस प्रकार है—

"संवत् वस वसु सै जहाँ उत्तम जानो भान।
सालिहोत्र भाषा रचितुतन सुकवि निधान॥"

इसमें "ऊपर जानो भानु" (प्रस्तुत प्रति में दिया हुआ) के स्थान पर "उत्तम जानो भान" पाठ है। यहाँ 'उत्तम' शब्द ने 'भान' का ठीक अर्थ जानने में अवरोध उत्पन्न किया। प्रस्तुत प्रति में इसके स्थान पर 'उपर' शब्द है, जिससे 'भानु' का अर्थ बारह (संख्या) स्पष्ट रूप से विदित हुआ।

१६४. नीलकंठ "कंठ"—प्रस्तुत त्रिवर्षी में इनका एक खंडित ग्रंथ मिला है, जिसमें नायिकाभेद का वर्णन पाया जाता है। अतः विषय की दृष्टि से और वास्तविकता के अभाव में इसका नाम 'नायिका भेद' रख दिया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नहीं मिलता। रचना द्वारा ये एक प्रौढ़ कवि विदित होते हैं। उसमें कहीं कहीं इनका उपनाम 'कंठ' भी दिया है।

संक्षिप्त विवरण और पिछली रिपोर्टों में दो नीलकंठों का उल्लेख है। एक तो चिंतामणि, भूषण और मतिराम के भाई और दूसरे कविवर सोमनाथ के पिता, देखिए क्रमशः रिपोर्ट ३–१ और ६–२६८। दूसरे नीलकंठ की न तो कोई कविता ही उपलब्ध होती है और न वे कवि के रूप में ही प्रसिद्ध है। अतः हो सकता है कि ये प्रथम रचयिताओं (चिंतामणि, भूषण और मतिराम) के ही भाई नीलकंठ हों, जिनका उपनाम 'जटाशंकर' था। उपर्युक्त प्रथम रिपोर्ट में इनका "अमरेशविलास" का उल्लेख है, जो अमरुक शतक का अनुवाद है।

१६५. नेवाजदास—इनकी एक छोटी सी रचना "भ्रमग्रथलीला" नाम से मिली है, जिसमें ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं मिलता। संभव है, ये खोज रिपोर्ट (६–२१७) में उपस्थित नेवाज हों, जो जाति के ब्राह्मण, बुंदेलखंडनिवासी और चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी थे।

१६६. पतितदास—इनके दो ग्रंथ "वैद्यककल्प" और "सर्वग्रथोक्ति" नाम से मिले हैं। ये दोनों ही आयुर्वेद विषयक ग्रंथ है। दोनों की प्रस्तुत प्रतियाँ खंडित हैं, अतः रचनाकाल इनमें से किसी में नहीं है। लिपिकाल केवल 'वैद्यककल्प' में संवत् १६३७ दिया है। रचयिता का भी इनके द्वारा कोई परिचय नहीं मिलता। परंतु 'वैद्यककल्प' का उल्लेख खोज रिपोर्ट (२६–३४६ एन) में है, जिसके अनुसार ये गिरिधरपुर (बैंसवाड़ा) निवासी थे। अंतिम समय अयोध्या में बीता जहाँ इनके नाम का एक मंदिर भी है। संभवतः १६वीं शताब्दी में वर्तमान।

दूसरी रचना "सर्वग्रथोक्ति" नई मिली है।

१६७. पदमदास या पदमस्वामी—इनके कुछ 'पद' मिले हैं, जिनमें श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह और कृष्णभक्ति का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का भी विवरण अप्राप्त है। संभवतः ये खोज रिपोर्ट (००–२४, ६२, १० २२–८०) में उल्लिखित रुक्मिणी मंगल के रचयिता पदम भगत हैं, जो संवत् १६६६ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत पदों और उक्त खोज रिपोर्टों मे उल्लिखित 'रुक्मिणीमंगल' की भाषा राजस्थानी है, जिससे विदित होता है कि रचयिता कही राजस्थान के ही रहने वाले थे।

१६८. पन्नालाल—ये "रत्नकरड" नामक रचना के रचयिता हैं, जिसमे जैन धर्मानुसार सत्यधर्म का उपदेश वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १६३१ है, लिपिकाल दिया नही। रचयिता जैपुर के रहनेवाले थे। पिता का नाम रत्नचद और गुरु का नाम सदासुख (कासलिवाल) था। इनके गुरु ने मूल सस्कृत ग्रंथ पर विस्तृत वचनिका लिखी थी जिसका भाव लेकर इन्होंने प्रस्तुत वचनिका (गद्य मे) तैयार की। गद्य की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है। इसमे राजस्थानी शब्दो का भी मिश्रण है। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

१६६. परमाणंद—ये "ओषाहरण (ऊषाहरण)" नामक रचना के रचयिता है। रचना का विषय हरिवशपुराण के आधार पर ऊषा अनिरुद्ध विवाह वर्णन है। रचनाकाल सवत् १५१२ है और लिपिकाल सवत् १६१३ वि०। रचना प्राचीन होने के कारण महत्वपूर्ण है। यह पच्छिमी राजस्थानी मे लिखी हुई है, जिसमे गुजराती शब्दो का भी समावेश पाया जाता है।

रचयिता ब्राह्मण वर्ण के थे और बडौदा मे निवास करते थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२००. परमेश्वरदत्त—इनका एक ग्रथ "वर्षप्रदीप" नाम से मिला है, जिसमे ज्योतिष विषय का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १६३१ अथवा १७६६ शकाब्द है। यही लिपिकाल भी है। अत ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मूल प्रति होने के कारण महत्वपूर्ण है।

रचयिता के पिता का नाम कुजबिहारी और पितामह का नाम शीतल था। ये गौतम गोत्री मिश्र ब्राह्मण थे। निवासस्थान प्रतापगढ़ जिला मे परमा का पुरवा (ग्राम, गौरा) था, जो काशी से सात योजन पच्छिम बतलाया गया है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२०१. परसन पांडेय—"सोन बीजक" नाम से इनकी एक रचना के विवरण लिए गए है, जिसमे सोनारी विद्या का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही किया गया है। रचयिता का भी इसमे कोई विवरण नही दिया है। परतु इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२६–३४३) मे हो गया है, जिसके अनुसार रचयिता सवत् १६२० के लगभग वर्तमान और पडितपुर (अयोध्या के निकट) के निवासी थे। उक्त रिपोर्ट मे प्रस्तुत रचना का नाम "सोनारी विद्या" दिया है।

२०२. परिमल्ल कवि—इनका "श्रीपालचरित्र या श्रीपालपुराणभाषा" नाम मे एक बृहद्काय ग्रथ मिला है, जिसकी पॉच प्रतियो के विवरण लिए गए है। यह जैन साहित्य का ग्रथ है, जिसमे श्रीपाल नामक एक राजा की कथा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रतियो मे दिए गए रचनाकाल मे भिन्नता है। दो प्रतियो मे तो यह सवत् १६५१ है और दो मे सवत् १६४६ तथा एक मे अस्पष्ट है। सबसे पुरानी प्रति सवत् १८०७ की लिखी है, जिसमे रचनाकाल १६५१ दिया है, अत इसी को वास्तविक रचनाकाल मानना उचित है। लिपिकाल प्रस्तुत प्रति मे क्रमश सवत् १८०७, १८३५, १८५६, १८७४ और १६१३ है।

रचयिता अकबर बादशाह के समय मे आगरा मे निवास करते थे। मूल स्थान ग्वालियर था जहाँ राजा मान राज्य करता था। वहाँ (ग्वालियर) बर्हिया जाति के एक चदन नामक चौधरी रहते थे, जिनके पुत्र रामदास थे। रामदास के पुत्र आसकरन हुए, जो प्रस्तुत रचयिता के पिता थे।

प्रस्तुत रचना को पढने से विदित होता है कि रचयिता एक प्रौढ कवि थे। आगरे का इन्होंने बडा सुदर और रोचक वर्णन किया है। अकबर बादशाह की भी प्रशसा की है, जिसमे गाय के प्रति उसकी प्रीति का उल्लेख है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२०३. पलटूदास—इनकी दो रचनाएँ "आत्मकर्म" और "ककहरा अरल के" मिली है। पहले मे भक्तो का लक्षण और उनका माहात्म्य वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। दूसरी रचना का विषय ज्ञानोपदेश और योग है। इसकी रचना अक्षर क्रम से अरिल्लो मे की गई है। रचनाकाल इसमे दिया नही है, लिपिकाल

संवत् १६२२ है। रचयिता का इनके द्वारा कोई विवरण नही मिलता, परतु "आत्मकर्म" का उल्लेख खोजरिपोर्ट (२०–१२४ए) मे हो चुका है। उक्त रिपोर्ट मे इनका वृत्त इस प्रकार है—

"कबीरपथी प्रसिद्ध सत। भीखा साहब के शिष्य, जयगोविंद या गोविंद साहब के शिष्य। सवत् १८२७ के लगभग वर्तमान। अत समय मे अयोध्या मे रहते थे।"

इनकी प्रस्तुत दूसरी रचना "ककहरा अरल के" पहली बार मिली है। पिछली रिपोर्टों में इनकी और भी रचनाएँ उल्लिखित है, देखिए रिपोर्ट (६–२२, ३८–१०६)।

२०४. **पहलवानदास**—इनके तीन ग्रथ इस बार भी मिले है, जिनके नाम—१. उपखानविवेक, २ विरहसार और ३ शब्द हैं। प्रथम दो का उल्लेख क्रमश खोज रिपोर्ट ६–२२१, १७–१३१, २३–३०८; २६–३४० सी और २६–३४० मे हो चुका है। अतिम ग्रथ नया मिला है। यह पदो मे है, जिनमे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन किया गया है। रचनाकाल का इसमे उल्लेख नही है, लिपिकाल सवत् १६७५ दिया है।

प्रस्तुत रचनाओ के आधार पर रचयिता सतनामी सप्रदाय के अनुयायी, बाबा सिध्यादास के शिष्य, दूलनदास के पोता शिष्य, भीखीपुर (रस्तामऊ, रायबरेली) निवासी और सवत् १८५१ (विरहसार का रचनाकाल) के लगभग वर्तमान थे। पिछली खोज रिपोर्टों मे इनकी और भी रचनाओ का उल्लेख है, देखिए रिपोर्ट (२६–२६०, ३५–७१)।

२०५. **पानपदास**—प्रस्तुत विवर्षी मे इनका पता प्रथम बार ही लगा है। इनकी निम्नलिखित आठ रचनाएं मिली है, परतु उनमे न तो रचनाकाल और लिपिकाल ही दिए है और न इनका ही कोई परिचय। फिर भी उनके द्वारा ये एक प्रौढ विचारक और पहुँचे हुए सत (निर्गुणमार्गी) विदित होते हैं। हिदू मुसलमानो के द्वद के विषय मे इन्होने भी सतो चित विचार प्रकट किए हैं—

१. **इश्कगर्क ग्रंथ**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। इसमे फारसी शब्दो का बाहुल्य है।

२. **कड़खे**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, निर्गुण भक्ति वर्णन।

३. **पद**—रचनाकाल, लिपिकाल अविदित। विषय, निर्गुण भक्ति।

४. **पदावली**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

५. **बाणी या सबदी**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

६. **शब्द**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, चेतावनी और उपदेश।

७. **सोरठे**—रचनाकाल और लिपिकाल अविदित। विषय, ब्रह्मज्ञान।

८. **होली**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, ज्ञानोपदेश।

प्रथम रचना से प्रकट होता है कि ये फारसी के भी ज्ञाता थे। डा० बडथ्वाल कृत "हिंदी काव्य मे निर्गुण सप्रदाय" नामक पुस्तक मे इसका उल्लेख है, जिसके अनुसार ये नगीना-धामपुर (बिजनौर जिला) के रहनेवाले थे। इन्होने अपने नाम से पानपदासी पथ चलाया था। इनकी और कबीर की रचनाएँ पथवालो मे बडी श्रद्धा से पढी जाती हैं। सभवतः विक्रम की २७वी शताब्दी में वर्तमान थे।

२०६. **पीतमदास**—इनकी "अककुतूहल" नाम से गणित विषय की एक रचना मिली है, जिसमे सस्कृत ग्रथ लीलावती का सक्षिप्त सार दिया हुआ है। रचनाकाल सवत् १८८८ वि० है। लिपिकाल का उल्लेख नही। इसके द्वारा रचयिता के विषय मे इतना ही परिचय मिलता है कि उन्होने किसी बैजनाथ के लिए प्रस्तुत रचना की थी। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२०७. **पीतांबर**—इनकी एक छोटी सी रचना "रामककहरा" मिली है, जिसमे अक्षर क्रम से दोहा चौपाइयो की रचना कर राम गुणगान किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल और न लिपिकाल ही दिए है और न रचयिता का वृत्त ही। अत नही कहा जा सकता कि पिछली खोज रिपोर्टों (१२–१२८; ५–४६) मे उल्लिखित इस नाम के दो रचयिताओ मे से ये कोई एक है या नही।

२०८. पीतांबरराय—ये "स्वप्नविचार" नामक ग्रथ के रचयिता हैं। ग्रंथ द्वारा न तो इनका ही कोई परिचय मिलता है और न उसमे रचनाकाल ही दिया है। लिपिकाल सवत् १८२६ है। विषय, उसके नाम से ही स्पष्ट है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

२०९. पुरंदर कवि—इन कवि महोदय का नाम तो सुनने में आता था, पर अब तक इनका कोई ग्रथ देखने मे नही आया था। इस बार "रघुराजविनाद" नाम से इनके एक मुद्रित ग्रथ के विवरण लिए गए हैं।

इसमें इन्होने रीवाँ के सुप्रसिद्ध महाराज रघुराजसिंह और जयपुर तथा जोधपुर के राजाओं के यश वर्णन के अतिरिक्त चित्र, पहेली और देव विषयक रचनाएँ की हैं। ग्रथ द्वारा इनके संबंध मे यह विदित होता है कि ये रीवाँ के राजा विश्वनाथसिंह के कार्य से जयपुर मे रहते थे। सवत् १९१० मे ये राजा रघुराजसिह के विवाह मे रीवाँ आए जहाँ इनका सम्मान पहले से भी अधिक गुरु के रूप मे हुआ। राजा रघुराजसिंह ने इनको मित्र तुल्य अपने पास रखा और पुरस्कार मे रहट नाम का ग्राम दिया तथा जयपुर एव जोधपुर के राजाओ द्वारा इनका समान करवाया। राजा रघुराजसिंह का मृत्युकाल इन्होने सवत् १९३७ दिया है, जो ठीक है। प्रस्तुत ग्रंथ को इन्होने राजा रघुराजसिंह के ही विनोदार्थ रचा था और उसको सवत् १९१९ मे प्रारभ कर सवत् १९४१ में समाप्त किया था। सवत् १९५६ वि० (१८९९ ई०) मे इसकी प्रस्तुत प्रति नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ मे छपी थी। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२१०. पुरुषोत्तम—ये "रसिकरसायन" नामक ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ का विषय रसायनशास्त्र है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे न तो रचनाकाल, लिपिकाल ही दिए हैं और न रचयिता का ही विवरण। खोज रिपोर्ट (४४–२०६) मे इसका उल्लेख हो चुका है, पर रचयिता का वृत्त उसमे भी नही दिया है।

२११. पुरुषोत्तमदास—इनका उल्लेख "जैमिनिपुराण (अश्वमेध)" के साथ पिछली खोज रिपोर्टों (२३–३२५, २६–३६३, २९–२७४) में हो चुका है, जिनके अनुसार ये क्षेमानद के पुत्र, दादरपुर (अयोध्या से चार योजन दक्षिण नारायणपुर क्षेत्र के अतर्गत गोमती के किनारे) निवासी, किसी रघुनाथ के शिष्य और सवत् १५५८ के लगभग वर्तमान थे। इस बार भी उक्त ग्रथ की एक प्रति मिली है, जो उपर्युक्त रिपोर्टों मे उल्लिखित प्रतियो मे दिए गए रचनाकाल से मेल नही खाती। प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १६५८ स्पष्ट रूप से दिया है। ग्रथ की भाषा को देखने से भी यह इससे पहले का रचा हुआ नही जान पडता। अत: रचयिता का समय जैसा कि उपर्युक्त रिपोर्टों मे दिया है, सवत् १५५८ न होकर सवत् १६५८ मानना चाहिए। प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल सवत् १८९५ है। रचयिता का परिचय उपर्युक्त जैसा ही है।

२१२. पुरुषोत्तमदास—इनके ज्ञानोपदेश विषयक कुछ 'दोहे' मिले है, जिनकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १९५० है। रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। परतु ये कोई सत जान पडते हैं। पिछली खोज रिपोर्टों मे उल्लिखित इस नाम के रचयिताओ से ये सर्वथा भिन्न जान पड़ते है। अतः खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२१३. पूरन मिश्र—इनके "नादोदधि" ग्रथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए है। पिछली खोज रिपोर्ट (४–४३) मे इस ग्रथ की एक प्रति का उल्लेख हो चुका है पर उसमे न तो रचयिता का ही कोई वृत्त दिया हुआ है और न रचनाकाल और लिपिकाल का ही उल्लेख है। प्रस्तुत प्रति मे इन बातो का उल्लेख मिलता है। इसमे रचनाकाल सवत् १७७० और लिपिकाल सवत् १९०१ दिए हैं। रचयिता ने प्रस्तुत ग्रथ की रचना किसी दत्त के लिये की थी, जो सभवत: उनके पुत्र के शिष्य थे। अन्य वृत्त इनका अभी भी अज्ञात है।

२१४. प्रयागदत्त—इनके कुछ "कवित्त" और "सरजूशतक" नामक रचनाएँ मिली हैं। 'कवित्त' वीर और शृगार रस विषयक है, जिनमे किसी जदुनाथसिंह की वीरता और दानशीलता का वर्णन किया गया है। 'रसजूशतक' मे सरयू का माहात्म्य वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी मे नही दिया है। रचयिता सरजूशतक के अनुसार त्रिपाठी ब्राह्मण और

कवित्तों के अनुसार किसी जदुनाथसिंह के आश्रित थे। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं है। ग्रंथ स्वामी (प० जगदेव जी पाडेय, ग्राम–पूरेवेद, डाकघर–अमोढा, जिला–बस्ती) के कथनानुसार इतना पता और चलता है कि ये बाहाजोन (बस्ती) के निवासी थे।

ये पिछली खोज रिपोर्टों मे आए इस नाम के रचयिताओं से भिन्न और खोज मे नवोपलब्ध है। कविता इनकी सुंदर है।

२१५. प्रवीन कवि—इनका "सारसग्रह" नाम से एक संग्रह ग्रंथ मिला है, जिसमे लगभग १५१ कवियो के कवित्त, सवैया आदि सगृहीत हैं। इनका विषय अधिकाश शृगार ही है। सग्रह की प्रस्तुत प्रति मे सग्रह का समय तो नही दिया है, पर लिपिकाल सवत् १६४४ वि० का उल्लेख किया गया है। इसके आरम्भ के कवित्त से विदित होता है कि प्रस्तुत कवि राधावल्लभी संप्रदाय के प्रवर्तक श्री हितहरिवश जी के वश मे गो० चतुरशिरोमणि जी के पुत्र गो० आनदलाल के आश्रय मे रहते थे। मिश्रबधुविनोद मे इनका समय सवत् १६६० के लगभग माना गया है।

इसमे सदेह नही कि प्राचीन कवियो का यह संग्रह महत्वपूर्ण है। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

२१६. प्रसिद्ध—इनका उल्लेख "जानकीविजय रामायण" के साथ पिछली खोज रिपोर्ट (३८–११०) मे हो चुका है। इस बार भी इनके इस ग्रथ की पाँच प्रतियो के विवरण लिए गए है, जिनके अनुसार रचनाकाल सवत् १८१३ है। लिपिकाल केवल तीन प्रतियो मे दिया है, जो क्रमश सवत् १८६८, १६१६ और १६३८ है।

रचयिता का अभी तक कोई परिचय नही मिल सका है। पर ग्रथ द्वारा ये अच्छे कवि विदित होते है। इन्होंने गो० तुलसीदास की ही शैली पर रचना की है।

२१७. प्रागन या प्रागनि—इनका रचा हुआ "भँवरगीत" काव्य की दृष्टि से सरस रचना है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३–३१६, २६–३४७, ४१–५१७) मे हो चुका है। इस बार भी इसकी चार प्रतियों के विवरण लिए गए है, पर खेद है कि अब भी इसका रचनाकाल और कवि परिचय अनुपलब्ध है। इसकी प्रस्तुत प्रतियों मे से केवल एक मे ही लिपिकाल दिया है, जो सवत् १६२५ है।

२१८. स्वा० प्राणनाथ (इंद्रावती और महामती)—ये धामीपथ के प्रवर्तक और पन्नानरेश महाराज छत्रसाल के गुरु के रूप मे प्रसिद्ध है। पिछली खोज रिपोर्टों (२०–१२६, ६–६०, २६–३४६, ४१–१४०, दि० ३१–६५, २६–२६६, ६–२२५, ३२–१६८; ३८–१०६, ४४–२१६) म इनके कई ग्रथो के उल्लेख हुए हैं। अतिम रिपोर्ट (४४–२१६) मे इनका ठीक ठीक विवरण दिया गया है, जिसके अनुसार इनके उपनाम इद्रावती श्री जी और महामति भी थे। इस बार इद्रावती और महामति के नाम से इनकी चार रचनाएँ—१ परिक्रमा प्रकरण, २ प्रनालिका, ३ बीतक और ४ श्रीप्रकाशकिताब की प्रकरण नाम से और मिली हैं। इन सबका विषय धामीपथ के सिद्धात वर्णन और ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल का उल्लेख किसी मे नही है। लिपिकाल केवल दो प्रतियों मे दिया है, जो सवत् १६५५ है।

२१९. प्राणनाथ—इनका उल्लेख "बभ्रुवाहन कथा" के रचयिता के रूप मे खोज रिपोर्ट (१२–१३१) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये सवत् १८५७ के लगभग वर्तमान थे। अन्य परिचय नही दिया है। इस बार भी उक्त ग्रथ की एक प्रति के विवरण लिए गए है, जिसमे रचनाकाल तो नही दिया है, पर लिपिकाल सवत् १८६८ है। रचयिता का वृत्त अभी भी अज्ञात है। परतु जैसा कि ग्रथारम्भ के लेख से विदित होता है इन्होंने सभवत "जैमिनिपुराण" का अनुवाद किया था, जिसका एक अश प्रस्तुत कथा भी है। इस दृष्टि से ये खोज रिपोर्ट (४१–१४०) मे उल्लिखित "जैमिनिपुराण" के रचयिता प्राणनाथ त्रिवेदी है, जो कान्यकुब्ज त्रिवेदी ब्राह्मण और सवत् १७६५ के लगभग वर्तमान थे। उपर्युक्त रिपोर्ट (१२–१३१) मे जो काल (सं० १८५७) दिया गया है वह प० श्यामबिहारी मिश्र (उक्त रिपोर्ट के सपादक) द्वारा अनुमान से दिया गया है। अतः वह मान्य नही हो सकता।

२२० प्रानसुख—इन्होंने सवत् १८५७ मे "तरगभेपमालिन या चंबोला" नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमे श्रीकृष्ण और गोपियो की मालिन लीला का सुदर और सरस वर्णन

है। इसकी प्रस्तुत प्रति में किसी सवत् का उल्लेख नही हुआ है यद्यपि यह पूरी है। पुष्पिका के लेख से पता चलता है कि रचयिता ने "सनेहसागरलीला" नामक ग्रथ की रचना की थी जिसका प्रस्तुत रचना एक अंश है—

"इते श्रीसनेहसागरलीलाया श्री प्रधान कठेरा वारे प्रान सुकवि रचिताया मासिक तरंग संपूर्नः समासमापता ॥ जेठ सुद १० ॥

रचना चौबोला छदो मे है। इसके अनुसार रचयिता वत्सकुल के, ओड़छा नगर के अंतर्गत कटेरा (? कठेरा, पुष्पिका मे) निवासी और राजा विक्रमाजीत के आश्रित थे। पुष्पिका में इन्हें श्रीप्रधान कठेरावारे' या 'प्रानसुकवि' भी कहा गया है। इसमे सदेह नही कि ये एक अच्छे कवि थे। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२२१. प्रियादास (?)—इन्होने मनु और याज्ञवल्क्य स्मृतियो के आधार पर "व्यवहारपाद" नामक एक वृहद् ग्रथ की, रचना की, जिसमे व्यवहार धर्म का योग्यतापूर्वक विवेचन किया गया है। इसकी एक विशेषता यह है कि यह गद्य मे लिखा हुआ है, जो इस प्रकार के ग्रंथों के लिये आवश्यक समझा जाता है। रचनाकाल दिया नही है। लिपिकाल सवत् १६०४ वि० है। परतु ऐसा विदित होता है कि यही लिपिकाल रचनाकाल भी है। इसके साथ पुष्पिका मे अन्य किसी लेखक का नाम नही दिया है—

"इति मिति पुस वदि १३ भौमे का स. १६०४ के साल"

प्रतिलिपिकार अपने नकल किए हुए ग्रथो मे अपना नाम अवश्य लिखते हैं। प्रस्तुत ग्रंथ मे ऐसा न करने का यही अर्थ हो सकता है कि यह मूल प्रति है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२२२. प्रेमदासि या प्रेमदास—इनकी "हितचौरासी की टीका" के विवरण लिए गए हैं, जिसमे हितहरिवशजी कृत चौरासी पदो (हितचौरासी) पर विस्तृत टीका की गई है। रचनाकाल सवत् १७६१ है, लिपिकाल दिया नही। रचयिता राधावल्लभी सप्रदाय के अनुयायी थे। खोज रिपोर्ट (६–२०६ ए) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है।

२२३. फतेहसिंह—इनकी "लीलावती (दस्तूरमालिका)" की एक प्रति इस बार भी मिली है। यह गणित विषयक मूल सस्कृत ग्रथ 'लीलावती' का सक्षिप्त अनुवाद है। रचनाकाल दिया नही। इसकी प्रस्तुत प्रति छपी हुई है, जिसमे मुद्रणकाल सवत् १६१३ वि० है। रचयिता का इसमे वृत्त दिया हुआ तो है, पर वह अश त्रुटित है और ठीक ठीक पढने मे नही आता। प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख खोज रिपोर्ट (५–५४, २०–४८ ए) मे हो चुका है, जिसके अनुसार "ये जाति के कायस्थ, कौच (जालौन) निवासी, सवत् १८१३ के लगभग वर्तमान और पन्नानरेश महाराज सभासिह के आश्रित थे। इन्होंने अपने एक ग्रथ मुहर्रम मे जहाँदारशाह के पुत्र खुर्रम का भी वर्णन किया है।"

सभासिंह जी का राज्यकाल स० १७६७ से स०१८०६ था, जिनका यह कवि आश्रित था।

२२४. बख्तावरसिंह की स्त्री सुखदानि (अयोध्यानरेश की रानी)—ये अयोध्यानरेश महाराज बख्तावरसिह की रानी थी। इन्होने सवत् १८८८ मे बद्रीनाथ की यात्रा की थी, जिसका इन्होने 'बद्रीयात्रा कथा' नामक एक पुस्तक मे जो पद्यबद्ध है, अच्छा वर्णन किया है। यात्रा-विवरण की दृष्टि से पुस्तक महत्वपूर्ण है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे लिपिकाल का कोई पता नही चलता। रचयित्री खोज मे नवोपलब्ध है।

२२५. बलराउ (भाट)—इन्होंने सवत् १८४६ में "रामाश्वमेध" की रचना की, जिसमे पद्मपुराण के आधार पर राम के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है। इसकी रचना प्रबंध काव्य की शैली पर हुई है और इसमे दोहा, चौपाई तथा सोरठा छदो का ही अधिक प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत प्रति इसकी खडित है और उसमे लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता। इसमे रचयिता का जो वृत्त दिया है उसका कुछ अश खडित है परतु जो शेष है उसके अनुसार

ये जाति के बासीठिया भाट थे और अवध के समीप हडहा परगना के अंतर्गत अकबरपुर ग्राम (गाउ) मे निवास करते थे। गुरु का नाम दयाराम था। खडित अश से कुछ ऐसा पता चलता है कि इनके पिता का नाम छन परवीना, पितामह का खेमकरन और परपितामह का नाम महीप या महीपा भाट था। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२२६. **बदलीदास बाबा**—इनका उल्लेख 'अनभवप्रकाश' के साथ पिछली खोज रिपोर्टों (३५–७, ४४–२२६) मे हो चुका है। उक्त रिपोर्टों के अनुसार ये सतनामी सप्रदाय के अनुयायी और स्वा० जगजीवनदास जी के पुत्र, जलालीदास के शिष्य थे। सवत् १८००–१८६१ के लगभग वर्तमान। लखनऊ मे कुटी बनाकर रहते थे। इस बार उक्त ग्रथ की दो प्रतियो के अतिरिक्त इनकी "भक्तिविलास" नामक एक नयी रचना और मिली है, जिसमे सूत शौनक संवाद के रूप मे रामचरित्र वर्णन किया गया है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १९३५ है। इसमे रचयिता का वृत्त नही दिया है, पर "अनुभवप्रकाश" की प्रस्तुत प्रतियो मे इन्होने अपने को स्वा० जगजीवनदास जी के सुत का सेवक स्पष्ट रूप से लिखा है—

"जगजीवन सुखमूल शूल हरण निजदास की।
होहुनाथ अनुकूल निजशुत सेवक जानि मोहि॥"

२२७. **बनमाली**—प्रस्तुत विवर्षी मे इनका पता प्रथम बार ही लगा है। इन्होने सवत् १८५८ मे "सुदामाचरित्र" नामक ग्रथ की रचना की, जिसमे दोहा चौपाइयो मे सुदामा की कथा का सरस वर्णन किया गया है। इसके अनुसार ये महुली परगना (दशरथपुर मडल, बस्ती के अतर्गत) के घोराग ग्राम के निवासी और जाति के राठौर क्षत्रिय थे। इनके पुत्र का नाम भवानी-शकर था, जिसकी प्रेरणा से इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। प्रस्तुत ग्रथ काव्य की दृष्टि से सुदर है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी उसमे लिपिकाल नही दिया है। खोज रिपोर्ट (३२–१७, ३८–८) मे उल्लिखित वनमाली से प्रस्तुत रचयिता सर्वथा भिन्न विदित होते है।

२२८. **बनवारीलाल या बनवारीदास**—ये "दपतिरसिक तरग (बारहमासा)" के रचयिता है, जिसमे नायिका के बारहमासो के विरह का सरस और हृदयग्राही वर्णन है। ग्रथ पूर्ण और मुद्रित होते हुए भी इनका उसमे कोई विवरण नही मिलता। रचनाकाल भी अज्ञात है। मुद्रणकाल एक अन्य ग्रथ (अल्लाबख्श कृत बारहमासा) के आधार पर सवत् १९४४ है।
रचयिता नवोपलब्ध हैं।

२२९. **बनवारीदास जैन**—ये हिंदी के सर्वोत्तम जैन कवि थे और गो० तुलसीदास के समकालीन सवत् १६८० के लगभग वर्तमान थे। आगरा मे रहते थे। पिछली खोज रिपोर्टों मे इनके बहुत से ग्रथो का उल्लेख हो चुका है, देखिए रिपोर्ट (००–१०४, दि० ३१–११, १७–१९, २३–३६, २६–३९)। इस बार "बनारसीविलास" नाम से इनके लगभग ५७ ग्रथों का एक सग्रह मिला है। इसमे इनकी विविध विषय सबधी छोटी बडी रचनाएँ है। इस सग्रह के कर्ता ये स्वय नही है वरन् एक जगजीवन हैं, जो आगरे के रहनेवाले थे और जिसके माता पिता के नाम क्रमश मोहनदेई और अभैराज थे। प्रस्तुत संग्रह को इन्होने सवत् १७७१ मे तैयार किया था। खोज रिपोर्ट (२३–३६ ए) मे इसका दूसरा नाम ब्रह्मविलास भी दिया है।

२३०. **बलदेवदास जौहरी**—इनका एक ग्रथ "श्रीकृष्ण जन्म खड" नाम से मिला है, जिसका उल्लेख पिछली खोज रिपोर्ट (२३–३० ए) मे हो चुका है। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये खडेलवाल बनिया, सवत् १९०३ से १९१६ के लगभग वर्तमान, हाथरस (अलीगढ) निवासी और भरतपुर नरेश महाराज बलवतसिह तथा धौलपुर के महाराज के आश्रित थे। प्रस्तुत प्रति के अनुसार ये अग्रवाल जाति के थे और राधारमणी (माध्व सप्रदाय) वैष्णव थे। पिता का नाम जयगोपाल था। धौलपुर नरेश, कीरति सिंह के आश्रित और वही उनके पास रहते थे। उपर्युक्त रिपोर्ट मे इन्हे जो खडेलवाल वैश्य लिखा है, वह खोज रिपोर्ट (१७–१५) मे उल्लिखित "विचित्र रामायण" के आधार पर है। वह या तो दूसरे बलदेव कवि की रचना है और या उसमे खडेलवाल गलत लिखा है।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति संवत् १९२४ की छपी हुई है और उसमे रचनाकाल संवत् १९०३ दिया है।

२३१. बलदेव द्विज—इनका कृष्णलीला विषयक "शृंगार सुधाकर" नामक ग्रंथ मिला है। इसका उल्लेख खोज रिपोर्ट (२३–३१ डा) में हो गया है, जिसके अनुसार रचयिता का वास्तविक नाम बलदेवप्रसाद अवस्थी था। 'द्विज बलदेव' इनका उपनाम था। संवत् १८६७ में जन्म और संवत् १९२६ के लगभग वर्तमान थे। दसपुर (सीतापुर) इनका निवासस्थान था। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में निवासस्थान का नाम दासापुर (पता नहीं सम्पादक ने यह नाम किस आधार पर दिया है, विवरण पत्र में इसका उल्लेख नहीं है। इसके अनुसार ये नैमिषारण्य से ईशानकोण की ओर चार योजन की दूरी पर स्थित हथिया राज्य के राजा दलथभनसिंह के आश्रय में रहते थे। उन्हीं की आज्ञा से प्रस्तुत ग्रंथ की इन्होंने रचना की। प्रस्तुत प्रति संवत् १९३३ वि० की छपी हुई है। इसमें रचनाकाल संवत् १९३१ वि० दिया है।

२३२. बलभद्र—ये "वैद्यविद्याविनोद" नामक एक वैद्यक ग्रंथ के रचयिता हैं और खोज रिपोर्ट (१२–९) में इस ग्रंथ के साथ उल्लिखित हैं। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये क्षत्रिय थे। इनके पिता केशवदास बड़े विद्वान् थे, जिसके कारण इन्हें भी पंडित की उपाधि मिली थी। संवत् १६९५ के लगभग वर्तमान थे। इस बार ग्रंथ की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं, पर उनमें रचनाकाल नहीं दिया हुआ है। लिपिकाल केवल एक प्रति में संवत् १८६४ वि० दिया है। इनके द्वारा रचयिता का कोई और वृत्त नहीं मिलता।

२३३. बलिदेवदास—ये "कृष्णचंद्रिका" नामक ग्रंथ के रचयिता हैं। ग्रंथ की एक खंडित प्रति के विवरण इस बार लिए गए हैं, जिसमें इनके नाम के अतिरिक्त इनका और कोई विवरण नहीं दिया है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है। संभवतः रचयिता बलदेवदास जौहरी हैं, जिनका उल्लेख प्रस्तुत विवरणिका में संख्या २३० पर हो चुका है।

२३४. बहमन—इनकी रमल विषयक एक खंडित रचना मिली है, जिसमें उसके नाम का उल्लेख तक नहीं पाया जाता। अतः विषय की दृष्टि से ही इसका नाम "रमल" रख दिया है। रचनाकाल सन् ११२१ हिजरी है। लिपिकाल अज्ञात है। इसमें रचयिता का वृत्त तो अवश्य दिया है पर लिपि भ्रष्ट होने के कारण वह ठीक ठीक पढ़ने में नहीं आता। संभवतः ये हीरापुर हिंडान के रहनेवाले थे। गुरु (उस्ताद) का नाम अवलिया खान था, जो बड़े मूजिब और रमाल थे। उस समय बहादुरशाह बादशाह का राज्य था। हीरापुर हिंडान के नवाब राकरोहा खाँ का भी उल्लेख हुआ है। खोज में रचयिता नवोपलब्ध हैं।

२३५. बहाव—ये "बारहमासा" के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं, पर अभी तक इनका वृत्त उपलब्ध नहीं हुआ है। खोज रिपोर्ट (२६–४८९) में इस ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है। इस बार भी इस ग्रंथ की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं जो पूर्ण तो हैं, पर उनमें रचनाकाल और लिपिकाल आदि का उल्लेख नहीं है। फिर भी इनके द्वारा रचयिता का थोड़ा सा वृत्त उपलब्ध होता है, जिसके अनुसार ये किसी मुहम्मद के चेला थे। प्रस्तुत दोनों प्रतियाँ छपी हुई हैं पर उनमें मुद्रणकाल नहीं दिया है।

२३६. नागेश्वर भारती—इनका रचा हुआ "सुखदेवपुराण" मिला है, जिसमें व्यास-पुत्र शुकदेव मुनि का चरित्र वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १९०६ वि० दिया है। इसके अनुसार रचयिता अतीथ (संन्यासी) थे। माता का नाम सती और यमुना तट पर बसे बुढानपुर गाँव के निवासी थे। अन्य वृत्त नहीं दिया है। अपनी माता के संबंध में इन्होंने लिखा है कि वह ब्रह्मलोक की एक सती थी। एक दिन नृत्य के अवसर पर चूक हो जाने के कारण ब्रह्मा ने उसको पृथ्वी पर जन्म लेने का श्राप दिया। उसके अनुनय विनय करने पर ब्रह्मा ने कहा—जब तक पति जीवें तब तक उसकी सेवा करने और उसके पश्चात् राम राम कह कर देह भस्म करने से पूर्व स्वरूप की प्राप्ति हो जाएगी। आगे इसी प्रकार सती का काल-यापन हुआ।

रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं। इनकी प्रस्तुत रचना दोहा चौपाई छंदों में है और कथावार्ता की दृष्टि से सुंदर है।

२३७. बालकृष्ण—इन्होने "जानकी राममंगल" की रचना की, जिसमें राम और जानकी के विवाह का वर्णन किया गया है। काव्य की दृष्टि से यह साधारण है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल के अतिरिक्त रचयिता का भी कोई विवरण नही दिया है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२३८. बालकृष्ण—इनके "नेहप्रकाश" ग्रंथ की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। ग्रंथ मे राम जानकी के शृंगारिक लीलाओं का वर्णन किया गया है। रचनाकाल संवत् १७४६ है और लिपिकाल संवत् १८८५। पिछली खोज विवरणिका (१७–१६ बी) मे इसका उल्लेख हो चुका है।

रचयिता का प्रस्तुत प्रति द्वारा पता चलता है कि वे किसी चरनदास जी के शिष्य थे। पिछली कई विवरणिकाओं से विदित होता है कि इन्होने बहुत से ग्रंथो की रचनाएँ की, देखिए विवरणिकाएँ (५–७७, ६–६, १००, १६५, ६–२४८, १७–१६, प० २२–६३; २६–२२७; २३–३३)। इन रिपोर्टों के अनुसार इनका अन्य नाम रामकृष्ण चौबे और मानदास था। बुंदेलखंड निवासी। चरणदास और पुरुषोत्तम दास के शिष्य। पन्नानरेश अमानसिंह और हृदयसाहि के समय मे कालिंजर के किलेदार थे। पश्चात् साधु होकर ब्रज मे रहने लगे। सं० १७२६–१७४६ के लगभग वर्तमान थे।

२३९. बालदास—इनके पाँच ग्रंथो—१ चिंताबोध, २ बालपुरान (भागवत), ३. भागवत की अनुक्रमनी, ४. मार्कंडेयपुरान और ५ सर्वार्थपुराण के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से अंतिम ग्रंथ, सर्वार्थपुराण मे ही इनका वृत्त दिया हुआ है। इसके अनुसार इनका जन्मस्थान जयनगरा (रायबरेली जिला) था जहाँ अब भी इनके वंशज रहते है। इनके पुरखे पहले बयालपुर (?) मे रहते थे जहाँ से इनके पिता नंदलाल सोनिकपुर आए और तत्पश्चात् जयनगरा मे बस गए। अपने माता पिता के ये तीसरे लडके थे। छोटी अवस्था में ही इन्हें मिरगी रोग हो गया था, जिसके फलस्वरूप एक वाटिका मे इनका प्राणांत हो गया। वास्तव मे ये बालदास दूसरे ही थे। जिस समय वास्तविक बालदास का शरीर वाटिका मे निर्जीव पडा था उस समय ये वृद्ध योगिराज के रूप में तीन शिष्यों के साथ दक्षिण से चले आ रहे थे। ये कितने ही युगो से केवल चोला बदल लिया करते थे और माता के गर्भ मे जन्म धारण नही करते थे। यही बात इन्होने अब भी की। सुंदर शरीर को देखकर उसमे प्रविष्ट हो गए। शिष्यों को उपदेश दिया कि वे ही सत्य सुकृत के रूप हैं। कबीर आदि जितने भी निर्गुनपंथ के संस्थापक हुए उन सबके वे ही गुरु थे। चरणदास स्वामी के गुरु भी वही थे। संवत् १८४० मे जो भीषण अकाल पड़ा उसमें इन्होने एक स्त्री को अपना बच्चा काटकर पकाते हुए और खाते हुए देखा था, जिससे ये अत्यंत मर्माहत हुए। पीछे लोगों के कहने पर अकाल का निवारण किया। उक्त घटना जिस दिन हुई उस दिन इन्होने अन्न ग्रहण नही किया। रात को दो मलार गाए, जिसके फलस्वरूप प्रातःकाल दो दंड तक अच्छी वर्षा हुई। पश्चात् अपने साथियो सहित हरिग्राम गए जहाँ राजा रामदेव द्विवेदी का पक्ष लेकर खेरी लखीमपुर के राजा और नवाबों के साथ घोर युद्ध किया। अंत मे ये विजयी हुए। राजा रामदेव को उमरी ग्राम मे आम के पेड़ के नीचे ज्ञानोपदेश कर वापिस चले आए। इनका जन्म संवत् १८०६ में हुआ और संवत् १८२० मे इन्होने दीक्षा ली। ये पक्के वैष्णव थे और निर्गुन सगुन दोनो के प्रतिपादक थे। दोनो विषयो पर इन्होने रचनाएँ की। सर्वार्थपुराण के आरंभ के अंश और बालपुरान की पुष्पिका के आधार पर ये तिवारी (त्रिपाठी) ब्राह्मण थे। खोज रिपोर्ट (१७–१४, २६–३१) में 'चिंताबोध' ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख है।

नीचे इनके प्रस्तुत ग्रंथो का उल्लेख रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से किया जाता है—

१. चिंताबोध—इसकी दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल किसी में नहीं

दिया है। विषय, सृष्टि उत्पत्ति, सांसारिक कर्म और योग का वर्णन। इसमें निर्गुण मतानुसार ही ज्ञानोपदेश दिया गया है।

२. कृष्णपुरान—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९५६। विषय, भागवत दशम स्कंध के अनुसार श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन।

३. भागवत की अनुक्रमनी—रचनाकाल दिया नहीं। लिपिकाल संवत् १९२१ है। विषय, भागवत की अनुक्रमणिका का वर्णन।

४. मार्कंडेयपुराण—रचनाकाल अप्राप्त, लिपिकाल संवत् १९५६। विषय, मार्कंडेयपुराण की टीका।

५. सर्वार्थपुराण—रचनाकाल १८४४ वि०। लिपिकाल प्रति के खंडित होने से अज्ञात है। विषय, वेदपुराण और षट्शास्त्रों के आधार पर ज्ञानोपदेश वर्णन।

'सर्वार्थपुराण' रचयिता की प्रधान कृति है। इसी में इनका वृत्त दिया हुआ है। हरिग्राम (अवध) के राजा रामदेव द्विवेदी का खेरी लखीमपुर के राजा और नवाबों के साथ हुए एक युद्ध का और संवत् १८४० के भीषण अकाल का इसमें विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है जिसके कारण यह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके प्रारंभिक अंश से विदित होता है कि इसकी रचना उमरी नगर में उपर्युक्त राजा रामदेव द्विवेदी को दिए गए ज्ञानोपदेश के रूप में हुई। इसमें रचयिता को दयालपुर का त्रिपाठी कहा गया है और उनके गुरु का नाम गायत्री सहाइ लिखा है, जो महाराजगंज (?) के निवासी थे। ऐसा विदित होता है कि प्रस्तुत प्रति मूल प्रति ही है—

"श्रीगणेशायनम श्री सरस्वत्यैनम.॥ श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नम. अथ सर्वार्थ पुराणे वेदांत सर्वे पुराण व षटशास्त्र मते कृत बालदासे त्रिपाठी दयालपुर के महाराजगंज के गुर गायत्रीसहाइ संवत् १८४४ मिति पौष वदि १३ त्रयोदशी ग्रंथ की उत्पत्ति भई नगर उमरी कथा के श्रोत्वा तेहिके हित शरण राम नाम द्विवेद'

२४०. बुधजन (जैन)—इनकी संवत् १८५९ की रची हुई एक रचना "छंढाला" नाम से मिली है, जिसमें ज्ञानोपदेश का वर्णन किया गया है। इसमें इनके नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नहीं मिलता। इस नाम के एक रचयिता का उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओं (००–११८, २६–७४) में भी है जो जैनी थे। परंतु उसका काल संवत् १८९५ दिया है, जहाँ कि प्रस्तुत रचयिता का समय संवत् १८५९ है। अतः इस दृष्टि से ये उससे भिन्न प्रतीत होते हैं और खोज में नवोपलब्ध हैं।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल संवत् १९०३ है, जो इसी के साथ एक हस्तलेख में लिपिबद्ध अन्य संस्कृत ग्रंथों के आधार पर है।

२४१. बुलाकीदास या बूलचंद (जैन)—इनका एक वृहद् ग्रंथ "पांडवपुरान भाषा" का विवरण लिया गया है। ग्रंथ में पांडवों की कथा का विस्तृत वर्णन है। रचनाकाल संवत् १७५४ है और लिपिकाल संवत् १९०९। यह इसी नाम के मूल संस्कृत ग्रंथ (शुभचंद्राचार्यकृत) का अनुवाद है और खोज विवरणिका (३२–३४ सी) में उल्लिखित है। इसमें रचयिता का विस्तृत विवरण दिया है, जिसके अनुसार इनका दूसरा नाम बूलचंद भी था। अन्य विवरण इस प्रकार है—

मध्य देश में बयानो नगर प्रसिद्ध था। वहाँ साहु अमरसिंह नाम का एक वैश्य रहता था जो गोयलगोत्री और अग्रवाल जाति का था। उसके पुत्र का नाम प्रेमचंद और पौत्र का नाम श्रवणदास था। श्रवणदास बयानो नगर छोड़कर आगरा में बस गया। उसकी स्त्री का नाम आनंदी था जिसके उदर से नंदलाल नाम का पुत्र हुआ जिसका (नंदलाल का) विवाह आगरे के प्रसिद्ध जैनी पंडित हेमराज की पुत्री जैनुलदे से हुआ। इन्हीं नंदलाल और जैनुलदे के पुत्र प्रस्तुत रचयिता थे। ये रचयिता किसी कारण से इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) चले गए जहाँ इन्होंने अपनी माता के उपदेश से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। इनके समय में औरंगजेब बादशाह राज्य करता था। गुरु का नाम अरुनरत्न था। उपर्युक्त खोज विवरणिका और 'संक्षिप्त विवरण' में इनका वृत्त संक्षिप्त और भ्रामक है। इस बार ठीक ठीक और विस्तृत विवरण मिलने से ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति महत्व की है।

२४२. **बेधा (?)**—इनके कवित्त, सवैया, दोहा, कुंडलिया और छप्पय आदि का एक बड़ा 'सग्रह' मिला है, जिसमे भक्ति और शृंगार का उत्तम वर्णन किया गया है। बीच बीच में बिष्णुपद और बरवै भी लिखे हुए हैं, जो इन्ही के रचे जान पड़ते हैं। सग्रह की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है और उसमे इनका स्पष्ट नामोल्लेख नही मिलता। एक स्थान पर 'बेधा' शब्द का उल्लेख होने से उसी को अनुमान से इनका नाम मान लिया है यद्यपि उसका अर्थ 'विधाता' भी सरलता से लग जाता है। इसमे इन्होने प्रसिद्ध कवि सुखदेव मिश्र और एक शिवलाल मिश्र का उल्लेख किया है, जो क्रमपूर्वक गुरु शिष्य थे। दोनो सुकवि थे तथा विद्या, बुद्धि और गुणो मे समान थे। यदि कोई भेद था तो केवल गोत्र मे अर्थात् दोनों अलग अलग गोत्र के थे। शिवलाल मिश्र को इन्होने अपना गुरु लिखा है और देहावसान का समय सवत् १८५८ दिया है। एक दोहा मे इन्होने उनका (गुरु का) प्रस्तुत रचना के समय वर्तमान होना लिखा है—

तिनकी कृपा कटाक्ष लहि मिश्र सुकवि शिवलाल।
पंडित गुनमंडित अखिल जीवित है यहि काल॥

अत. इनका और प्रस्तुत रचना का लगभग यही समय मानना चाहिए। इनका अन्य वृत्त उपलब्ध नही, पर ये एक प्रौढ कवि थे इसमे सदेह नही। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२४३. **बेनी कवि**—ये सुप्रसिद्ध कवि है, जो बेती (रायबरेली) के निवासी थे। बैसवाडे के खूबचद कायस्थ और अवध के नवाब के मत्री, डलमऊ निवासी राजा टिकैतराय के आश्रित थे। इनकी दो रचनाओं—१ रसविलास और २. टिकैतरायप्रकाश नामक ग्रथ मिले हैं, जो क्रमश उपर्युक्त आश्रयदाताओ के लिये रचे गए थे। प्रथम मे नायिकाभेद और नवरस का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८७४ है और लिपिकाल सवत् १९५३। दूसरे ग्रथ मे अलकारो का वर्णन किया गया है। इसकी रचना सवत् १८४९ मे हुई जिसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९४५ की लिखी हुई है। इन दोनो ग्रथो का उल्लेख क्रमश पिछली खोज विवरणिकाओ १२–१९, २३–३८ ए और ६–१४ मे हो चुका है। उक्त रिपोर्टों के अनुसार रचयिता वदीजन थे।

२४४. **बैजनाथ**—ये "गोपीविरह" नामक रचना के रचयिता हैं। रचना के अनुसार ये जौनपुर जिला के अतर्गत बादशाहपुर के उत्तर नउआडीह ग्राम के त्रिपाठी ब्राह्मण थे। प्रस्तुत रचना ३० बरस की अवस्था मे काशी मे रहकर की। अन्य वृत्त नही दिया है। खोज विवरणिका (२६–२४ ए) मे प्रस्तुत ग्रथ और बामविलास के साथ इनका उल्लेख हो गया है, जिसमे इनको दिनेश का पुत्र और बादशाहपुर के बाबू सीताराम का आश्रित लिखा है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १९१४ और लिपिकाल सवत् १९४७ दिए हैं।

२४५. **बैजनाथ या वैद्यनाथ**—इन्होने सस्कृत ग्रथ शार्ङ्गधर सहिता का "शार्ङ्गधर सुधाकर" नाम से अनेक छदों मे अनुवाद किया है, जिसका गद्य मे भी भावार्थ दिया गया है। रचनाकाल संवत् १९२१ है। इसकी दो खडित प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे लिपिकालों का उल्लेख नही मिलता। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२४६. **बोधदास या बोधमल**—इनकी "भक्तिविनोद" नामक रचना मिली है, जिसमे सतनामी भक्तो का नाममाहात्म्य वर्णन किया गया है। यह पहले भी खोज विवरणिकाओ मे आ चुकी है, देखिए विवरणिका (२३–६६, २६–७०)। उक्त विवरणिकाओं के अनुसार ये जाति के कायस्थ और बरहटा (? बरैठा, बाराबकी जिला) के रहनेवाले थे। पीछे लखनऊ के कागदी टोला मे रहते थे। कौटुबिक झगडो के कारण घर से भागकर कोटवा के रामेश्वर के शिष्य हो गए थे। सवत् १९६६ के लगभग वर्तमान।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियो के अनुसार इनका झगडा पुरजन और परिजनो के साथ कोटवा मे हुआ था जहाँ से ये लखनऊ चले गए थे और वहाँ के कागदी टोला मे बस गए थे तथा सवत् १८४८ (प्रस्तुत प्रति मे दिया गया रचनाकाल के अनुसार) के लगभग वर्तमान रहे।

इस बार ग्रथ की तीन प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से केवल एक मे ही रचनाकाल का उल्लेख किया गया है, जो सवत् १८४८ है। लिपिकाल दो प्रतियों मे सवत् १९२३ और सवत् १९४७ दिए हैं।

२४७. बोधा—इनकी "फूलमाला" के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। यह पिछली खोज विवरणिका ३२–३१ सी पर उल्लिखित है, जिसके अनुसार रचयिता उसापनी (फीरोजाबाद, आगरा) के रहनेवाले थे और संवत् १६३६ में वर्तमान थे।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता का नामोल्लेख तक नहीं, यद्यपि वह पूर्ण है। उपर्युक्त विवरणिका से मिलान करने पर ही रचनाकाल और रचयिता का नाम विदित हो सका है।

ग्रंथ मे विरह शृंगार का वर्णन है और काव्य की दृष्टि से यह उत्तम है। समस्त रचना दोहों मे है, जिनमे से प्रत्येक मे श्लेष से एक फूल का नाम आता है।

२४८. बोधीदास—इनका नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता। ज्ञानोपदेश विषयक "भक्तिविवेक" नामक इनकी एक रचना के विवरण लिए गए हैं, जिसमे रचनाकाल का कोई उल्लेख नही, पर लिपिकाल सवत् १९३९ दिया है। पिछली खोज विवरणिकाओं (२३–६५, २९–५६ ए, बी) मे यह आ चुकी है। उक्त रिपोर्टों के अनुसार रचयिता सवत् १९३० के लगभग वर्तमान थे। अन्य विवरण उनमे भी नही दिया है। परतु प्रस्तुत रचना से इतना पता चलता है कि ये कोई सतमतानुयायी थे। अन्य रचनाएँ भी इनकी मिली है देखिए विवरणिकाएँ (२६–७१; दि० ३१–१४; ४४–२४२)।

२४९. बोधेदास—ये कोई महाराष्ट्री सत जान पडते हैं। जो सभवत बरार(सुरवा-डोनवंसला कुटी तीतयाला) की ओर के रहनेवाले थे। इनकी भक्ति और वैराग्य विषयक एक रचना "विवेक वैराग्यदशक" नाम से मिली है। यह गुरु शिष्य सवाद के रूप मे लिखी गई है। इसकी प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है, पर उसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२५०. भगनदास—इस त्रिवर्षी मे इनका पता पहले पहल लगा है। ये आपापथी, जाति के क्षत्रिय और कुटी गूगदास (पचपेडवा, जिला–गोडा) के महत थे तथा इनके गुरु का नाम गूगदास था। उक्त कुटी के वर्तमान महत श्री अज्ञारामदास जी ने इनकी और अपनी गुरु परपरा इस प्रकार दी है—

मुन्नादास
|
ऊधोदास
|
गूगदास
|
फकीरदास
|
भगनदास (रचयिना)
|
परशुरामदास
|
शत्रुहनदास
|
लक्ष्मणदास
|
तिलगादास
|
संगमदास
|

रामफलदास
|
अज्ञारामदास (वर्तमान महंत)

इस परंपरा से तो भगनदास के गुरु फकीरदास ठहरते हैं। आपापंथियों का प्रधान स्थान, उक्त महंत के कथनानुसार मंडवा, जिला खीरी है। अन्य वृत्त नही मिलता। इनकी पाँच रचनाएँ मिली हैं, जिनका विवरण विषय, रचनाकाल और लिपिकाल के क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. गुरुगोष्टी (पवनगुंजार)—रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल संवत् १८६४ वि०। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. गुरुमहिमा—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १८७६। विषय, गुरु का माहात्म्य वर्णन।

३. नामनिधि—रचनाकाल अप्राप्त, लिपिकाल सवत् १८७६। विषय, नाममाहात्म्य वर्णन। यह पूर्व ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे है।

४. भंवरगुंजार—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८६४। विषय, भक्ति ज्ञानोपदेश।

५. शब्दगुंजार—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल संवत् १८८४। विषय, भक्ति ज्ञानोपदेश।

ग्रथो के लिपिकालो को देखने से पता चलता है कि रचयिता संवत् १८७६ के पहले वर्तमान थे।

२५१. भगवानदास—इनकी "आरतमोचन" नामक रचना मिली है, जो पदो मे है तथा जिसमे रामभक्ति का वर्णन किया गया है। काव्य की दृष्टि से रचना उत्तम है। रचनाकाल सवत् १८८५ है। लिपिकाल दिया नही। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। पिछली खोज विवरणिकाओ में इस नाम के कई रचयिताओं का उल्लेख है पर नहीं कहा जा सकता कि उनमे से ये कोई एक हैं या नही। अत खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२५२. भगीरथप्रसाद त्रिपाठी—ये "अबिकाचरित्र" के रचयिता हैं और अभी वर्तमान हैं। ग्रथ के अनुसार जिला रायबरेली के निगोहाँ स्थान के निवासी है। प्रस्तुत ग्रथ को इन्होने दुर्गासप्तशती के आधार पर रचा है। इसका रचनाकाल सवत् १९६६ वि० है। जिसको लिपिकाल भी समझना चाहिए, क्योंकि प्रस्तुत प्रति स्वय रचयिता के हाथ की लिखी हुई है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२५३. भगौतीदास भैय्या—इनकी तीन रचनाएँ—१ ब्रह्मविलास, २ पुन्यपचीसिका और ३ चेतनकर्मचरित्र नाम से मिली हैं। प्रथम रचना का उल्लेख पिछली दो खोज विवरणिकाओ मे भी है, देखिए विवरणिकाएँ (३२–२१, ३८–८ बी)। उक्त विवरणिकाओं के अनुसार रचयिता सवत् १६८० के लगभग वर्तमान थे, जो अशुद्ध है। इस बार "ब्रह्मविलास" की जो प्रति मिली है उसमे रचयिता ने रचनाकाल सवत् १७५५ दिया है और औरंगजेब का उल्लेख किया है। औरंगजेब का राजत्वकाल संवत् १७१५–१७६४ था, जिसके अनुसार उक्त रचनाकाल ठीक विदित होता है। अन्य दो रचनाओ (पुन्यपचीसिका और चेतनकर्मचरित्र) मे भी जो रचनाकाल दिए है, वे भी औरंगजेब के ही राजत्वकाल के हैं। अतएव रचयिता का समय सवत् १६८०, जैसा पूर्वोक्त विवरणिकाओ मे दिया है, नही माना जा सकता।

प्रस्तुत रचनाओ के अनुसार रचयिता कटारिया गोत्री और ओसवाल जाति के वैश्य थे। ये जैनी थे और आगरे मे रहते थे। पिता का नाम लाल जी और पितामह का नाम दशरथ साहु था।

नीचे प्रस्तुत रचनाओ का विवरण, रचनाकाल, लिपिकाल और विषय क्रम से दिया जाता है—

१. ब्रह्मविलास—रचनाकाल संवत् १७५५ वि०, लिपिकाल संवत् १८०४ (?)। विषय, विविध विषयो पर ज्ञानोपदेश।

२. **पुण्यपचीसिका**—रचनाकाल संवत् १७३३। लिपिकाल अज्ञात। विषय, शुभ-कर्म करने के लिये ज्ञानोपदेश।

३. **चेतनकर्मचरित्र**—रचनाकाल संवत् १७३२। लिपिकाल संवत् अज्ञात। विषय, प्रबोधचंद्रोदय नाटक (संस्कृत नाटक) की तरह एक रूपक कथा का वर्णन किया है, जिसमें काम, क्रोध, मद, लोभ और चेतन, सुबुद्धि, शांति आदि का संघर्ष दिखलाया गया है।

इन रचनाओं से पता चलता है कि रचयिता एक प्रौढ कवि थे। 'ब्रह्मविलास' में इन्होंने अन्य संप्रदायों के संबंध मे भी विचार प्रकट किए हैं।

२५४. **भवानीचरण**—इनका वास्तुविद्या विषय पर एक ग्रंथ "गृहदीपक" नाम से मिला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है। इसमे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १९०४ है। रचयिता गोविंदपुर (? बिडहर परगनातर्गत, गोरखपुर) के निवासी थे। प्रस्तुत रचना इन्होंने किसी वृद्धिनिधि त्रिपाठी के अनुरोध पर की, जिनके पिता का नाम कनकनिधि और पितामह का नाम तारानिधि था तथा जो गोरखपुर से वायव्य कोण की ओर तीन कोस पर स्थित मानीराम ग्राम के जमीदार थे। इन्होने एक सोमवंशी राजा सर्वजीतसिंह (?सर्वजीत सिंह) का उल्लेख किया है, जिनके निवासस्थान का कोई पता नही चलता, सभवत: वे इनके आश्रयदाता थे और गोरखपुर के आसपास कहीं किसी इलाके के राजा रहे, ऐसा विदित होता है।

रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२५५. **भवानी प्रसाद**—इन्होने "श्रीरामको परधामवर्णन" नाम से एक रचना की, जिसमे श्री रामचद्र जी का परस्वरूप और परधाम का वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १९२० दिया है।

रचयिता का नाम केवल ग्रथ की पुष्पिका से विदित हुआ है। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं। पिछली खोज विवरणिकाओ मे उल्लिखित इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता। अतः इन्हें नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

२५६. **भागवतदास**—इनकी रची हुई 'प्रयाग शतक' की एक खडित प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमे प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का भी इसके द्वारा कोई वृत्त उपलब्ध नही होता पर इसका उल्लेख खोज विवरणिका (४४-२४८) मे हो गया है, जिसके आधार पर ये प्रयाग निवासी और संभवतः किसी टहलदास जी के शिष्य थे। अन्य विवरण उसमे भी नही दिया है।

२५७. **भानुजसिह** (?)—इनके नाम से मगलस्तोत्र विषयक एक छोटी सी रचना 'जयमगल' नाम से मिली है। इसका रचनाकाल तो विदित नही पर लिपिकाल संवत् १८८८ वि० है। रचयिता के नाम का इसमे न तो स्पष्ट उल्लेख ही मिलता है और न उसका कोई वृत्त ही दिया है। प्रस्तुत नाम अनुमान से लिखा गया है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२५८. **भारामल्ल (जैन)**—इनके धार्मिक कथाओं सबधी दो रचनाओ—१. चार कथा का गुटका और २ दानकथा के विवरण लिए गए है। इनमें रचनाकाल का उल्लेख नही किया गया है। लिपिकाल क्रमश सवत् १९५३ और १९०३ हैं।

रचयिता का इनके द्वारा नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। परंतु पिछली दो खोज विवरणिकाओं (२९-३९ ए, २३-४१ ए) मे अन्य ग्रथो के साथ इनका उलेल्ख है, जिनके आधार पर ये वर्ण के वैश्य, फर्रुखाबाद के निवासी और सवत् १८१२ के लगभग वर्तमान थे। इनकी प्रस्तुत रचनाएँ पद्य मे हैं।

२५९. **भावन** (?)—इनकी शृंगार विषय की एक सुदर और सरस रचना "मगल-गारी" नाम से मिली है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण तो है पर उसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही किया गया है। उसमे रचयिता का नाम भी स्पष्ट नही मिलता। ग्रथात मे दिए गए 'भावन' शब्द को ही अनुमान से रचयिता का नाम मान लिया गया है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

२६०. भावन (भवानीप्रसाद)—इनका उल्लेख "शक्तिचिंतामणि" ग्रंथ के रचयिता के रूप मे पिछली खोज विवरणिका (६–२८) मे हो चुका है, पर अभी तक इनका वास्तविक वृत्त अज्ञात था। उक्त विवरणिकाओं मे इनका जो वृत्त दिया है वह अशुद्ध है जिसको स्वयं विवरणिका लेखक ने भी सदिग्ध माना है। उसमे इनके लिये अयोध्यानरेश महाराज मानसिंह का भतीजा भैया त्रिलोकीनाथ सिंह लिखा है। इस बार उपर्युक्त ग्रंथ की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं, जिनमे इनका ठीक ठीक परिचय दिया हुआ है। इनके अनुसार ये गगा के उत्तर तीन योजन पर स्थित मयूरध्वज नगर (? मौरावाँ, जिला–उन्नाव) के निवासी थे जहाँ एक पवार क्षत्रिय राजा राज करता था। इन्होने अपनी वंशावली इस प्रकार दी है—

भावदत्त (? छितुपुरी पाठक)
|
शीतलशर्म (इनके सात भाई और थे)
|
गंगप्रसाद (इनके तीन भाई और थे)
|
भवानीदत्त (भावन) रचयिता — फणीद्रदत्त

ये पाठक ब्राह्मण थे और 'भावन' उपनाम से कविता करते थे।

इस वृत्त का समर्थन "शिवसिंहसरोज" द्वारा भी होता है, जिसमे इनका उल्लेख "काव्य शिरोमणि अन्यनाम काव्य कल्पद्रुम" के रचयिता के रूप मे हुआ है। उसमे दिया हुआ वृत्त इस प्रकार है—

"भावनकवि, भवानीप्रसाद पाठक मौरावाँ, जिले उन्नाव के सं० १८६१ मे उ०।" इसमे उल्लिखित संवत् अशुद्ध है। यह, जैसाकि ग्रंथ की प्रस्तुत प्रतियो मे दिया गया है, संवत् १८५१ होना चाहिए—

१ ५ १८
ससि सर धृति संवत् १८५१ प्रगट मधुरितु माधवमास।
शुक्ल पक्ष गुर पंचमी कीन्हो ग्रंथ प्रकास॥३८॥

पिछली दो अन्य विवरणिकाओ (२३–५२ सी, २६–५७) मे भी इस ग्रंथ का उल्लेख है।

उपर्युक्त ग्रंथ के अतिरिक्त रचयिता की दो रचनाएँ 'कवित्त' और 'बरवै' नाम से और मिली हैं। ये सब काव्य की दृष्टि से उत्तम कृतियाँ हैं। इनका विवरण रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. **कवित्त**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १८७३। विषय, शृंगार, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. **बरवै**—रचनाकाल अविदित। लिपिकाल संवत् १८७३। विषय, चारो वर्णों की स्त्रियो का शृंगारपूर्ण वर्णन किया गया है।

३. **शक्ति चिंतामणि**—रचनाकाल संवत् १८५१। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमें लिपिकाल क्रमश. संवत् १८७३ और १९४४ हैं। विषय, नवरस और नायिका भेद का वर्णन। इसकी संवत् १८७३ वाली प्रति मे पूर्वोक्त रचनाएँ भी लिपिबद्ध है।

२६१. भिखारीदास (दास)—ये हिंदी साहित्य मे आचार्य के रूप मे सुप्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत खोज मे इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले है—

१. अमरकोश (नामप्रकाश), २. अलंकार, ३. काव्यनिर्णय, ४. छंदार्णव पिंगल, ५. मात्रा प्रस्तार, वर्णमर्कटी, ६. रससारांश, ७. विष्णुपुराण भाषा, ८. सतरंजशतिका।

इनमे से 'अलंकार' काव्य निर्णय का आठवाँ उल्लास है और 'मात्रा प्रस्तार वर्ण मर्कटी' छंदार्णव का तीसरा अध्याय है। रचनाकाल और लिपिकाल इनमे से किसी मे नहीं दिए हैं।

शेष ग्रंथों का उल्लेख पिछली कई खोज विवरणिकाओं मे हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (३–३१; ४६, ६१; ४–२१; ६–२७, २०–१७, प० २२–२२; २३–५५; २६–६१)।

रचयिता के विषय मे और कोई नवीन बात नही ज्ञात होती।

२६२. भीम या भीमसेन—इनकी "डगी या डगवेकथा" मिली है, जो पिछली खोज विवरणिका (४४–२५८) मे "डगवेपुराण" के नाम से आ चुकी है। इसी का प्रस्तुत प्रति जो स० १८३७ की लिखी है, खडित है। इसम न तो रचनाकाल ही दिया है और न रचयिता का ही परिचय। परतु उक्त रिपोर्टों मे रचनाकाल और थोड़ा सा रचयिता का परिचय, जो अनुमान के आधार पर है, दिया हुआ है।

उसके अनुसार रचनाकाल सवत् १५५० है। रचयिता अमर नगर के निवासी और किसी बसुक इद्रदेव कायस्थ के पुत्र नौरतन के कुल म उत्पन्न हुए थे। खोज विवरणिका (२०–१६) मे उल्लिखित "महाभारत द्रोणपर्व" के रचयिता भीम भी यही है, ऐसा विदित होता है।

२६३. भीषम (? भीष्म)—इनकी "नखशिख वर्णन" नामक रचना की एक खडित प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए है, जिसमे नायिका का नख से लेकर शिख तक का श्रृंगार पूर्ण वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। परतु प्रस्तुत रचना के साथ इनका उल्लेख खोज विवरणिका (२६–६२) मे हुआ है, जिसम इन्हे अतर्वेद निवासी भीष्म अनुमान किया गया है, जो खोज विवरणिका (१७–२५ ए, बी) मे उल्लिखित भागवत के रचयिता हैं और सवत् १६२४–१६५१ तक वर्तमान थे।

२६४. भीषमदास बाबा—इनका रचा हुआ "सृष्टिसागर" नाम का एक बृहद्काय ग्रथ मिला है, जिसमे सृष्टि और उसके जीव जतु तथा दिक्काल एव वेद आदि की उत्पत्ति का विशद वर्णन किया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी उसमे रचनाकाल का उल्लेख नही मिलता। लिपिकाल सवत् १८६२ है।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और परिचय नही दिया है। ग्रथ स्वामी (महत श्री सतनदास बाबा, ग्राम–उजहेनी, डाकघर–राजा फतेहपुर, जिला–रायबरेली,) का जो अपने को इनकी ८वी पीढ़ी मे बतलाते है, कथन है कि ये गृहस्थ साधु थे और इन्होंने अनतपथ चलाया था।

इनके कई ग्रथ पिछली खोज विवरणिका '(३५–१४) मे आ चुके है। उक्त रिपोर्ट के अनुसार ये कश्यप गोत्रीय भट्ट, डौडियाखेडा (बैसवाडा) निवासी, सवत् १७७० के लगभग वर्तमान और हरिवशराय के पुत्र थे। युवावस्था मे अवध के नवाब शुजाउद्दौला की फौज मे नौकर हुए और वहीं साधुओ के सत्सग मे इन्हे ज्ञान हुआ। फलस्वरूप किसी अनतदास के शिष्य हो गए जिनके नाम पर अनत पथ चलाया।

२६५. भुवनदास—इनकी "दोहावली" नामक रचना के विवरण पहले पहल लिए गए हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही है पर लिपिकाल दिया है, जो सवत् १६३५ है। रचयिता का इसके द्वारा नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। परतु ये कोई पहुँचे हुए सत जान पड़ते है। ग्रथस्वामी (प० देवता महाराज, ग्राम–कानपुर; डाकघर–करहिया, जिला–रायबरेली,) का कहना है कि ये उनके पुरखे थे और इन्होंने बहुत से ग्रथो की रचनाएँ की। विक्रम की अट्ठारहवी शती के आरभ मे वर्तमान थे। वे (ग्रथ स्वामी) अपना वशवृक्ष इस प्रकार बतलाते है—

भुवनदास
|
सरजूदास
|
राधारमणदास — गोपालदास — गोकुलदास
|
देवता महाराज (ग्रंथ स्वामी)

खोज में रचयिता नवोपलब्ध हैं।

२६६. भूधरदास (जैन)—इनका उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओं (००–१०२; २३–५८; २६–५०) मे कई ग्रथो के साथ हो चुका है। उक्त रिपोर्टों के आधार पर ये खंडेलवाल जैन, आगरा निवासी और संवत् १७८१ के लगभग वर्तमान थे। इनका दूसरा नाम भूधरमल था।

इस बार इनका एक और ग्रथ "पार्श्वनाथ पुराण भाषा" नाम से मिला है, जो इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का भाषानुवाद है। रचनाकाल सवत् १७८६ है। इसकी पाँच प्रतियों के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से केवल तीन मे लिपिकाल दिए हैं जो क्रमश: सवत् १८१८, १८८२ और १६०० हैं। यह अधिकतर दोहा चौपाइयो मे रचा गया है पर कवित्त, छप्पय और सोरठे भी प्रयुक्त हुए हैं। इसके द्वारा रचयिता के विषय मे कोई नवीन बात नही विदित होती। परतु पढ़ने से विदित होता है कि ये एक प्रौढ कवि थे। इसको इन्होने अधिकतर मौलिक और स्वतत्र रूप से रचा है। मूल संस्कृत ग्रथ का तो केवल आधार मात्र लिया है। यहाँ इसमे से एक दोहा उद्धृत किया जाता है, जिसमे बडी सुदर कल्पना और मार्मिक उक्ति से काम लिया गया है—

"पिता नीर परसै नहीं दूर रहे रवि यार।
ता अम्बुज मैं मूढ अलि उरझि मरै अबिचार॥"

"पिता नीर जिसका स्पर्श नही करता और प्रेमी सूर्य जिससे दूर ही रहता है, ऐसी कमलिनी में से मूढ अलि ! तू उलझकर मरता है। क्या यह अविचार नही ?"

२६७. भूप या भूपति—इनकी सामुद्रिक विषय पर "चपू साध्य सामुद्रिक" नामक रचना की एक प्रति मिली है, जो खडित है। रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल दो दिए हैं। एक दोहे मे और दूसरा केवल अको मे। ये क्रमश सवत् १६६५ और १७११ हैं। इससे विदित होता है कि सवत् १६६५ वाली प्रति की प्रस्तुत प्रति नकल है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता, परतु जैसा कि लिपिकाल से स्पष्ट होता है ये सवत् १६६५ के पहले वर्तमान थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६८. भूपति (राजा गुरुदत्तसिंह)—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी नायिकाभेद और अलकार विषय पर लिखी गई "रसरत्न" नामक रचना की एक खडित प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही पाया जाता। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता, पर इनकी प्रस्तुत रचना खोज विवरणिका (२३–६० डी) में उल्लिखित है, जिसके अनुसार ये अमेठी (सुलतानपुर) के राजा गुरुदत्त सिंह हैं, जो "भूपति सतसई" के रचयिता के रूप मे प्रसिद्ध है। ये प्रसिद्ध कवि कवीद्र (उदयनाथ) के आश्रयदाता और संवत् १७८८ से १७६६ के लगभग वर्तमान थे।

२६९. भोजदास—ये "भक्तिविनोद" नामक ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही किया गया है। रचयिता का केवल इतना ही वृत्त मिलता है कि ये कोई सत और किसी प्रेमदास के शिष्य थे। ग्रथस्वामी (महत श्री सतनदास जी, ग्राम–उजहेंनी, डाकघर–राजा फतेहपुर; जिला–रायबरेली) के कथनानुसार ये सतनाम के, जिसके प्रवर्तक बाबा भीषमदास थे, अनुयायी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७०. भोपत या भूपति—इन्होंने भागवत दशम स्कध के आधार पर "कृष्ण जन्म" नामक रचना की, जिसकी एक खडित प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता। रचयिता का भी विवरण अज्ञात है। परतु ये "भागवत-दशमस्कध" के रचयिता भूपति कायस्थ विदित होते हैं, जो उक्त ग्रथ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओं (२–११५, १७–२६, २०–५६, ३८–१३) मे आ चुके हैं। प्रस्तुत रचना उसी भागवत ग्रथ का अश विदित होता है। उक्त विवरणिकाओ के अनुसार रचयिता इटावा निवासी, कंगल भाट के वशज, विट्ठलदास के पौत्र, लेखराज के पुत्र और दामोदर गुसाईं के पुत्र गो० मेघश्याम के शिष्य थे। सवत् १७४४ के लगभग वर्तमान। प्रस्तुत रचना खोज मे नई मिली है।

२७१. मोला—इनकी "बारहमासी" नामक रचना मिली है, जिसमे विरह शृंगार का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण है पर उसमे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १९३६ है। रचयिता का इसके नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। परतु ये इस रचना के साथ पिछली खोज विवरणिका (२९–४७) मे उल्लिखित हैं, जिसके अनुसार ये जहानगंज (फर्रुखाबाद) के रहनेवाले और सवत् १९०५ के लगभग वर्तमान थे।

२७२. मौनकवि—इन्होंने नायिकाभेद और नवरस पर "रसरत्नाकर" नाम से एक सुंदर रचना की है। इसकी पुष्पिका के आधार पर ये किसी खुसालचंद महापात्र के पुत्र और किसी महाराजकुमार ठाकुर रामबक्स के आश्रित थे। प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओं (१२–२२, २३–५२ ए, बी) मे हो चुका है, जिनने इन्हें बैंती (रायबरेली) का महाभट्ट बतलाया गया है और सवत् १८२५ से १८९१ के लगभग इनका वर्तमान होना लिखा है।

उक्त विवरणिकाओ और सक्षिप्त विवरण मे प्रस्तुत रचयिता और 'शक्ति चिंतामणि' के रचयिता भवानीदत्त 'भावन' को एक ही माना गया है, जो अशुद्ध है। इस बार भवानीदत्त 'भावन' का ठीक ठीक वृत्त उपलब्ध हुआ है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि वे प्रस्तुत रचयिता से भिन्न हैं। देखिए प्रस्तुत विवरणिका मे सख्या २६०।

२७३. मंगलदास बाबा—इनकी दो रचनाओ "कवित्तरामायण" और "दोहावली या अलखप्रकाश" के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। लिपिकाल केवल 'कवित्त रामायण' की प्रति मे है, जो सवत् १९६३ की लिखी है। रचयिता वर्ण से ब्राह्मण और किसी पूर्णानद के शिष्य थे। निवासस्थान रायबरेली से ५ मील उत्तर हरिदासपुर था। ये हनुमान जी के भक्त थे। अन्य परिचय नही मिलता। उक्त गाँव मे ननकूमुरई, जिसके यहाँ दूसरी रचना का विवरण लिया गया, से पता चला कि इनकी केवल एक लडकी थी जिसकी कोई सतान नही चली। इनकी प्रस्तुत रचनाओ को देखने से पता चलता है कि ये भक्त तो ऊँचे दरजे के थे, पर कवि प्रतिभा इनकी साधारण थी। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७४. मगनलाल पंडित—इन्होने सवत् १९२६ मे "उर्दू तवारीख वाकिआत हिंद" का अनुवाद "भारतवर्षीय वृत्तातप्रकाश" नाम से किया, जिसकी एक छपी हुई प्रति के विवरण लिए गए हैं। इस अनुवाद को प्रस्तुत करने के लिये इन्हे अवधदेश के तत्कालीन डायरेक्टर, पब्लिक इस्ट्रक्शन, श्रीयुत् मिस्टर हैडफोर्ड साहब ने आज्ञा दी थी। इसका सशोधन नारमल स्कूल (? इलाहाबाद) के थर्डमास्टर पडित कालीचरण ने किया था, जिन्होंने इसमे इतिहास की नवीन शोधें भी समिलित की। इसमे प्राचीनकाल से लेकर विक्टोरिया तक का भारतवर्ष का इतिहास वर्णन किया गया है। यद्यपि प्रस्तुत अनुवाद मे सशोधन और परिवर्द्धन किया गया था तो भी इसको पढ़ने से विदित होता है कि अनुवादक और सशोधक दोनो को, जो स्वय हिंदू थे अपने पुराणो और इतिहासो का कतई ज्ञान न था। उर्दू मे लिखी गई मूल पुस्तक की अनर्गल बातो को ज्यो का त्यो लिख देना इन्होने अपना कर्तव्य समझा। इसका कारण सभवत पराधीनता की मनोवृत्ति थी। कहना नही होगा कि मुसलमान इतिहासकार और विद्वान् आरभ से ही हिंदू ग्रथो को पढ़ने की कोई विशेष चेष्टा नहीं करते थे। इसका फल यह हुआ कि उनके द्वारा लिखी गई हिंदुओ के सबध की बाते या तो सुनी सुनाई बातो पर आधारित रहती है अथवा अन्य भाषाओ में लिखी गई बातो पर। प्रस्तुत अनुवाद मे युधिष्ठिर के भाइयो का नाम श्रीकृष्ण और बलराम लिखा गया है। महाभारत के वृत्तात मे अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव का कोई उल्लेख नही। ऐसा ही सर्वत्र है। उस समय के विद्यार्थियो का जिनके लिये प्रस्तुत रचना हुई जान पडती है—इसके द्वारा किस प्रकार ज्ञानवर्द्धन हुआ होगा इसका अनुमान सहज ही मे लगाया जा सकता है।

रचयिता केनिंग कालेज (? प्रयाग) के सस्कृत अध्यापक थे। अन्य परिचय नही दिया है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२७५. मगनानंद—इनके उपदेश विषयक कुछ "पद" मिले हैं, जिनकी प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल और न लिपिकाल ही दिए है और न इनका परिचय ही। परतु ये कोई वेदाती भक्त विदित होते हैं। रचयिता नवोपलब्ध है।

२७६. मतिराम—ये रीतिकालीन प्रसिद्ध कवियो मे से हैं और अपनी कई रचनाओं के साथ पिछली कई खोज विवरणिकाओ मे उल्लिखित है, देखिए विवरणिकाएँ (००–४०; १–६७; ६–१६६, ६–१६६, १२–११२, २०–१०५, २३–२७६; २६–३००; पं० २२–६४; ४१–१८२)। इस बार इनकी प्रसिद्ध रचना "रसराज" की दो प्रतियों के विवरण लिए गए है, जिनमे से एक संवत् १७६० की लिखी हुई होने से अधिक पुरानी है। खोज मे अबतक इस ग्रथ की केवल एक ही प्रति जो सवत् १७८० की लिखी है, ऐसी मिली है जो इससे पुरानी ठहरती है। इसी दृष्टि से इसकी प्रस्तुत प्रति का विवरणिका मे उल्लेख किया जाता है। वैसे यह पहले कई बार मिल चुकी है। दूसरी प्रति मे लिपिकाल सवत् १८५१ दिया है।

२७७. मदन साहब—इनकी दो रचनाएँ "नामप्रकाश" और "साखी शब्द" मिली हैं, जिनके विवरण लिए गए है। इनके अनुसार ये कबीर परपरा के कोई सत थे। गुरु का नाम राधापति था। अन्य वृत्त नही दिया है। परतु प्रथम ग्रथ के स्वामी के कथनानुसार ये वही मदनसाहब है, जिन्होने मदन पथ की स्थापना की। यह पथ कबीरपथ के ही अतर्गत है और इसकी कुछ गद्दियाँ करियावजना (?), कुडवार (सुलतानपुर) और अमरगढ़ (प्रतापगढ़) आदि स्थानो मे हैं।

प्रस्तुत रचनाओ का विवरण, रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. नामप्रकाश—इसकी दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल केवल एक मे सवत् १६१५ दिया है। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. साखी शब्द—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश।

खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है। इनके विषय मे देखिए आगे मोहनलाल पर टिप्पणी सख्या ३११।

२७८. मदनगोपाल—ये "अर्जुनविलास" ग्रथ के रचयिता है और इसके साथ खोज विवरण (२३–२५०) मे उल्लिखित है। उक्त विवरण मे इनका बहुत थोडा परिचय दिया है, जिसके अनुसार ये फतूहाबाद (अवध) के निवासी, सवत् १८७६ के लगभग वर्तमान और राजा अर्जुनसिंह के आश्रित थे। इससे यह पता नही चलता कि राजा अर्जुनसिंह कहाँ के राजा थे और रचयिता किस वर्ण और किस जाति के थे तथा उनके पिता आदि का नाम क्या था। इस बार उपर्युक्त ग्रथ की एक प्रति का विवरण और लिया गया है, जिसमे इन सब बातों के सबध मे विस्तृत और पूरा विवरण है। इसके अनुसार रचयिता कान्यकुब्ज ब्राह्मण और फतूहाबाद के रहनेवाले थे। पिता का नाम गगाराम था, जो उक्त गाँव (फतूहाबाद) मे आकर बस गए थे। इनके छह भाई और थे जिनके नाम नही दिए गए है। ये बलरामपुर के राजा अर्जुनसिंह के आश्रय मे रहते थे, जिनके पुत्र के जन्म के अवसर पर इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। राजा अर्जुनसिंह जनवारवंशी थे। उनके पुरखे गुजरात के रहनेवाले थे जहाँ किसी अकोना स्थान मे उनका राज्य था। उनमे से माधोसिंह नाम के एक राजा ने अकोना (? पकोना) का राज्य अपने भाई गनेसराइ को देकर बलरामपुर मे आकर अपनी राजधानी स्थापित की। उन्ही के वश मे राजा अर्जुनसिंह हुए। इनका वंशवृक्ष इस प्रकार है—

राजा माधोसिंह (जनवारवशी, गुजरात के अकोना स्थान के निवासी)
| बलरामपुर (अवध) मे राज्य स्थापित किया
कल्याणजुत साहि
|
प्राणचद
|
हरिवश
|
छत्रसिंह
|

फतेहसिंह
- अनूपासिंह
  - ककुलतिसिंह
    - नवलसिंह
      - बहादुरसिंह
      - अर्जुनसिंह (रचयिता के आश्रयदाता)
        - दिग्विजय सिंह (जिनके जन्म समय पर प्रस्तुत रचना की गई)
  - दलेलसिंह
  - रामसिंह
  - जसवतसिंह
  - सांवलसिंह
- पहारसिंह
- रूपसिंह

राजा अर्जुनसिंह के पुत्र का नाम दिग्विजय सिंह था, जिसके जन्मदिवस पर रचयिता ने प्रस्तुत ग्रंथ का रचना आरभ किया। राजा दिग्विजय सिंह के आश्रय मे गोकुल और शिवदास गदाधर कवि रहते थे।

ग्रथ का रचनाकाल सवत् १८७६ है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल सन् १२७० (? फसली) दिया है। इसमे व्याकरण, नीति, न्याय, ज्योतिष, काव्य और वैद्यक आदि विविध विषयो का वर्णन है। ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है।

२७६. **मनमोहनदास**—इनकी "वानी" नाम से कुछ पद मिले हैं, जिनमे भगवद्भक्ति का वर्णन किया गया है। पद सरस और काव्य की दृष्टि से सरस हैं। इनकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १६०७ है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और स्पष्ट परिचय नही मिलता। तीसरे पद से विदित होता है कि ये भगवतरसिक (टट्टी सप्रदाय के प्रवर्तक श्री हरिदास के शिष्य) के शिष्य थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२८०. **मनरंगलाल (जैन)**—ये "धर्मसार" ग्रथ के रचयिता हैं, जिसको इन्होने सवत् १६११ मे रचा था और जिसमे जैन धर्म का सार वर्णन किया गया है। ग्रथ के अनुसार ये कन्नौज के रहनेवाले कन्नौजीलाल पल्लीवार के पुत्र थे। अन्य विवरण नही दिया है। पिछली खोज विवरणिकाओ (२३–२६०, २६–२६१, दि० ३१–५७) मे अन्य ग्रथो के साथ इनका उल्लेख है।

प्रस्तुत ग्रथ की जिस प्रति के विवरण लिए गए हैं, उसमे लिपिकाल नही दिया है।

२८१. **मनशुद्धसागर (जैन) या मनसुखसागर**—इनके दो ग्रथो "पद्मनाभिचरित्र" और "शिखरमाहात्म्य" के विवरण लिए गए है। पहला खोज मे नया मिला है और दूसरे का उल्लेख खोज विवरणिका (२३–२६४) मे हो चुका है। उक्त विवरणिका मे रचयिता का कोई वृत्त नही दिया है। इस बार दूसरे ग्रथ की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से एक मे इनका वृत्त भी दिया हुआ है। उसके अनुसार इनका दूसरा नाम मनसुखसागर भी था। गुरु का नाम सतोषसागर था जो श्री गुलालकीर्ति के पट्टधर शिष्य थे। सभवत. संवत् १८४५ के लगभग वर्तमान। गुरु का स्थान इन्होंने दिल्ली बताया है, जो सभवत इनका भी निवासस्थान रहा होगा।

ग्रथों का विवरण, रचनाकाल, लिपिकाल और विषय क्रम से नीचे दिया जाता है—

१. **पद्मनाभिचरित्र**—रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल सवत् १६१३। विषय, जैन तीर्थंकर महापद्मनाभि का चरित्र वर्णन किया गया है।

२. शिखरमाहात्म्य—रचनाकाल संवत् १८४५ (? अस्पष्ट)। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमश. सवत् १८८८ और १९०२ हैं। विषय, समेदशिखर का माहात्म्य वर्णन।

२८२. मनसुख—इनकी रची हुई एक 'बारामासा' मिली है, जिसमे हरिभक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। इससे इनका नाम के अतिरिक्त इतना और विदित होता है कि ये एक अच्छे भक्त थे। अन्य परिचय अज्ञात है। रचना की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। रचयिता खोज में नवोपलब्ध हैं।

२८३. मनियार कवि या मनियार सिंह—इनकी "हनुमान छबीसी" खोज मे प्रथमबार मिली है, जिसमे छब्बीस कवित्तो मे हनुमान की वीरता का बड़ा सुदर वर्णन किया गया है। काव्य की दृष्टि से यह उत्तम रचनाओ मे से है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता काशी निवासी और जाति के क्षत्रिय थे। इनका उल्लेख अन्य ग्रथो के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ (३–४७; २३–२७०, ३२–४५) मे हो गया है। अतिम विवरणिका मे उल्लिखित "हनुमानविजय (सुदरकाड) के रचयिता को उसमे प्रस्तुत रचयिता से भिन्न मानकर 'चितामनिमनियारसिंह' लिखा है, जो भ्रम है। यह भ्रम उक्त ग्रथ के एक दोहे मे रचयिता के नाम के पहले "चितामनि" शब्द के प्रयुक्त होने से हुआ है—

चरन कामना कलप तनु कथा काम...रूप।
"चितामनि" मनियार के हनुमान कपि भूप॥

वास्तव मे 'चितामनि' शब्द का अर्थ यहाँ "कामदमणि" से है। दोहे के द्वितीय चरण का अर्थ इस प्रकार हुआ—

"मनियार के लिये कपि भूप हनुमान चितामनि सदृश है।"

अत उक्त विवरणिका के रचयिता निश्चित रूप से प्रस्तुत रचयिता ही है। पूर्वोक्त अन्य विवरणिकाओ के अनुसार ये काशी निवासी प्रसिद्ध मनियारसिंह हैं। इनके पिता का नाम श्यामसिंह और गुरु का नाम कृष्ण कवि था। पडित आरामचद्र के सेवक और सवत् १८४३ के लगभग वर्तमान थे।

२८४. मनोहरदास जैन—ये अपने ग्रथ "धर्मपरीक्षा" के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ (००–१२२, २३–२७१) मे आ चुके हैं। उक्त विवरणो के अनुसार ये खडेलवाल जैन, साँगानेर निवासी और सवत् १७०५ के लगभग वर्तमान थे। इस बार उक्त ग्रथ की तीन प्रतियों के विवरण और लिए गए है, जिनके द्वारा इनके वृत्त के विषय मे और अधिक जानकारी प्राप्त होती है। इनके आधार पर ये साँगानेर निवासी सोनी खडेलवाल जैन बनिया थे। पीछे धामपुर (? धरमपुर) मे बस गए, जो पर्वत की तलेटी मे दादुरोदेश (?) के अतर्गत है। किसी हीरामणि के उपदेश से इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। इसमे सहायता देनेवाले कोई जेठमल्ल के पुत्र विधिचद, आगरे के रावत सालिवाहन, हिसार के जगदत्त मिश्र गौड और धामपुर के पडित वेगराज ज्योतिषी थे।

ग्रथ में मनोवेग और पवनवेग नामक दो मित्रो के कथोपकथन के रूप मे एक रूपक कथा का वर्णन है, जिसमे विविध मतमतातरो का गुण दोष दिखाया गया है। रचनाकाल सवत् १७०५ है। इसकी तीन प्रतियो के विवरण लिए गए है, जिनमे लिपिकाल क्रमश. सवत् १८५६, १८८७ और १९०९ दिए है।

२८५. मनोहरदास—इनकी "फूलचरित्र" नाम की एक रचना के विवरण लिए गए हैं, जिसका विषय शृगार है। यह दोहो मे है, जिनमें से प्रत्येक मे एक फूल का उल्लेख किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण तो है, पर उसमे रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १८५६ दिया है। रचयिता का इसके द्वारा नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। परतु इस ग्रथ के साथ ये दो खोज विवरणिकाओं (६–१९२, २६–२९६) मे आ चुके हैं, जिनमे इनका वृत्त इस प्रकार दिया है—

"सेवक जाति के चारण, संवत् १८५७ के लगभग वर्तमान और जोधपुरनरेश महाराज मानसिंह के आश्रित थे। इनको गुरु आयस लाड़लूनाथ ने एक लाख रुपए (? पसाव) और एक हाथी इनाम मे दिया था। इन्हें महाराज (जोधपुर) की ओर से भी एक गाँव मिला था।"

२८६. मनोहरदास निरंजनी—इनकी "शत प्रश्नोत्तरी" मिली है, जो सुप्रसिद्ध अद्वैतवादी स्वामी शकराचार्यकृत इस नाम की मूल सस्कृत रचना का हिंदी गद्य पद्य अनुवाद है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। रचयिता का भी इसके नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। परतु पिछली खोज विवरणिका (३–८३, ६–२६३) में इसका उल्लेख हो गया है, जिसके आधार पर रचयिता निरजनी सप्रदाय के साधु और सवत् १७१७ के लगभग वर्तमान थे।

२८७. मलिक मुहम्मद जायसी—इनकी चार रचनाओ—१. अखरावट, २. पद्मावत, ३. कहरानामा और ४. मसला के विवरण इस बार भी लिए गए हैं, जिनमे से अंतिम रचना का पता खोज मे प्रथम बार चला है। शेष रचनाएं क्रमश पिछली खोज विवरणिकाओं (२–१०८; २६–२८६, ००–५४, १–२४, २५, ५३, २०–१०६, २३–२८४; २६–२८६; २६–२२६) मे आ चुकी है। 'मसला' मे कहावतो (मसलो) का प्रयोग कर ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता के विषय मे इन रचनाओ द्वारा कोई नवीन बात नही विदित होती।

२८८. मलूकदास—ये सुप्रसिद्ध मलूकदास है, जो जाति के खत्री, कड़ामानिकपुर (इलाहाबाद) निवासी, प्रसिद्ध सत और लाला सुदरदास खत्री के पुत्र थे। इनके वशज अभी तक सिराथूकड़ा के निकट वर्तमान है। गो० तुलसीदास जी के समकालीन और सेवादास के गुरु। जन्म सवत् १६३१ और मृत्यु सवत् १७३६ है। पिछली खोज विवरणिकाओ मे इनकी बहुत सी रचनाओ के विवरण आ चुके है, देखिए विवरणिकाएं (४–८०, ६–१६४; ६–१८५; १७–१०६, २६–२६, ३२–१२८, ४१–१८८)। इस बार इनकी आठ रचनाएं मिलीं हैं, जिनके नाम—१ करखा, २. ज्ञानपरोछि (ज्ञानपरीक्षा), ३ ज्ञानबोध, ४ ध्रुवचरित्र, ५ भक्तबछावली, ६. मयूरध्वजचरित्र, ७ विभैविभूति और ८ सुखसागर है। इनमे से सख्या ३ और ५ की रचनाएँ उपर्युक्त विवरणिकाओ में उल्लिखित है। शेष रचनाओ का पता खोज मे पहले पहल चला है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से इनका विवरण नीचे दिया जाता है —

१. **करखा**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, ज्ञानोपदेश और भक्ति।

२. **ज्ञानपरोछि**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १७८४। विषय, ज्ञानोपदेश और भक्ति।

३. **ध्रुवचरित्र**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १७८४। विषय, ध्रुव की कथा का वर्णन।

४. **मयूरध्वज चरित्र**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १७८४। विषय, राजा मयूरध्वज की कथा का वर्णन।

५. **विभैविभूति**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १७८४। विषय, भगवत् विभव का वर्णन।

६. **सुखसागर**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १७८४ वि०। विषय, भगवत् लीलाओं का वर्णन।

२८६. मल्लिकानाथ—इनका पता खोज मे प्रथम बार चला है। आयुर्वेद विषयक मूल सस्कृत ग्रथ "नवरत्नमाला" के ये सग्रहकार और टीकाकार है। टीका मराठी मिश्रित हिंदी मे होने से पता चलता है कि ये हिंदी और मराठी प्रदेश की सीमा पर कही के रहनेवाले थे। इनके पिता का नाम पुष्पिका के अनुसार गोविंद था। अन्य परिचय अज्ञात है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। रचयिता नवोपलब्ध है।

२६०. महाआनंदसाह—इनका खोज मे पहले पहल पता चला है। भक्ति और ज्ञानोपदेश विषय पर रची हुई 'अरस आशिक विनय' नाम से इनकी एक रचना मिली है, जिसकी दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं। परन्तु उक्त प्रतियों मे से किसी मे भी रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। रचयिता का ग्रथ के आरभिक अश द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये साँई मोहनदास द्वारा स्थापित साईं मत के अनुयायी थे। ग्रथस्वामी (मुशी देवनारायण जी श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर टडेई, डाकघर—शिवरतनगज, जिला—रायबरेली) का कहना है कि ये साईं मोहनदास के ही शिष्य थे। अन्य वृत्त नही मिलता। साईं मोहनदास के लिये देखिए विवरणिका सख्या ३०६।

२६१. महादेव या महादेवसिंह—इन्होने नीति विषयक एक ग्रथ 'नीतिसंदोह' की रचना की, जिसकी एक छपी हुई प्रति के विवरण लिए गए है। रचनाकाल सवत् १६२४ और मुद्रणकाल सवत् १६३७ है। रचयिता प्रयाग से सोलह कोस पश्चिम शहिजादपुर के रहनेवाले और भाति के क्षत्रिय थे। पिता का नाम मदनगोपाल था। सभवतः कोई श्रीकृष्ण इनके आश्रयदाता थे। प्रस्तुत ग्रथ की रचना इन्होने अनेक नीति विषयक ग्रथों को देखने के पश्चात् की है। पिछली खोज विवरणिका (२६–२८१) मे इस ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है।

२६२. महेश या महेश जू—शृगार रस विषयक इनकी "शृगारशतक" नाम से एक सुदर काव्य कृति का पता चला है, जिसकी एक छपी हुई, पर खडित प्रति के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल और मुद्रणकाल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई पता नही चलता। सभवतः ये शिवसिंह सरोज (पृष्ठ ४७३) मे आए महेश कवि है, जो सवत् १८६० के लगभग वर्तमान थे। उक्त ग्रथ मे इनके किसी ग्रथ का नामोल्लेख नही हुआ है, केवल एक सवैया दिया है। ग्रथस्वामी (पं० जगन्नप्रसाद जी पाडेय, ग्राम, कूरेडीह, डाकघर—रानीगज; जिला—प्रतापगढ) के कथनानुसार ये बस्ती (अवध) के राजा थे। अन्य परिचय फिर भी अज्ञात है।

ग्रथ का नाम प्रस्तुत प्रति मे स्पष्ट रूप से कही नही मिलता। परतु उसके प्रत्येक पत्र के कोने मे 'शृं० स०' लिखा है, जिसके आधार पर इसका नाम 'शृगार शतक' मान लिया गया है। विषय भी इसका शृगार ही है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

२६३. मातादीन शुक्ल—इनके बहुत से ग्रथ पिछली खोज विवरणिकाओं मे आ चुके हैं, देखिए विवरणिकाएँ (२३–२७८, २६–२६७, ३५–६१)। उक्त विवरणिकाओं के अनुसार ये अजगरा (प्रतापगढ) निवासी और सवत् १६०३ के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनके छह ग्रथों के विवरण और लिए गए हे, जिनके नाम—१ जीवगति, २ ज्ञान दोहावली, ३ नानार्थ नवसग्रहावली, ४ रमसारिणी, ५ रामगीताष्टक और ६. रामायणमाला है। इनमे से प्रथम ग्रथ नया मिला है। शेष उपर्युक्त विवरणिकाओं मे उल्लिखित हैं। नया ग्रथ का विषय ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १६१० दिया है। इसके द्वारा रचयिता का इस विषय मे इतना पता और चला है कि इनके आश्रयदाता कोई बाबू अजीतसिंह थे, जिन्होने इनके कितने ही ग्रथों को नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ मे छपवाए थे। शिवसिंह सरोज के पृष्ठ ४७० (१६२६ ई० की छपी प्रति) मे बाबू अजीतसिंह को प्रतापगढ का राजा लिखा है, जो सोमवशी थे।

२६४. माधव—इनके "भगवद्गीता भाषा" के विवरण लिए गए है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। ये सभवत. पिछली खोज विवरणिका २६–२१५ पर उल्लिखित "गीतासुबोधिनी टीका" के रचयिता माधव है, जो उक्त विवरणिका के अनुसार सवत् १६१८ के पूर्व वर्तमान थे। अन्य विवरण उसमे भी नही दिया है।

२६५. माधवदास—इनका उल्लेख "मदालसा आख्यान" के साथ खोज विवरणिका (पं० २२–६०) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये किसी दामोदर के शिष्य थे तथा इनके दादू पथी होने की सभावना इसबार की गई है। उपर्युक्त ग्रथ की एक प्रति के विवरण और लिए गए हैं, जिसमे रचनाकाल का तो उल्लेख नही है, पर लिपिकाल सवत् १७५८ दिया है। रचयिता का उपर्युक्त विवरण के अतिरिक्त और वृत्त अप्राप्त है।

२९६. मानसिंह द्विजदेव (राजा)—इनकी रची "शृगार लतिका" की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही मिलते। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नही दिया है। परतु ये प्रस्तुत रचना के साथ पिछली खोज विवरणिका (२३–२६२) मे आ चुके है, जिसके अनुसार ये अयोध्या के राजा मानसिह 'द्विजदेव' है, जिनका अन्य नाम प्रतापनारायण सेन (मान) भी था। रामनारायण के आश्रय-दाता और १९वी शताब्दी मे वर्तमान थे।

२९७. मायाविप्र—इन्होने फलित ज्योतिष विषय पर 'फलितभाषा' नाम से एक ग्रंथ की रचना की, जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल सवत् १८६२ और लिपिकाल सवत् १९१५ दिए है। रचयिता का इसके द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये गेंगटाही (बस्ती) ग्राम के निवासी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२९८. मालीराम—ख्याल शैली पर लिखी गई "ख्याल बँजारे को" और "ख्याल जोरी को" नाम से इनकी दो रचनाएँ मिली हैं, जिनमे शृगार विषय का वर्णन किया गया है। इनकी प्रस्तुत प्रतियाँ खडित है, जिनमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। रचयिता का भी इनमे नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। परतु इनमे राजस्थानी भाषा का मिश्रण पाया जाता है, अत विदित होता है कि रचयिता राजस्थान के ही रहनेवाले थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२९९. मिहिर—इनके "समरसार" नामक ग्रथ की इस बार दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। ये दोनो प्रतियाँ खडित है, जिनसे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता। रचयिता का भी विवरण अप्राप्त है परतु इस ग्रथ के साथ ये खोज विवरणिका (४४–२९४) मे आ चुके है, जिसके अनुसार इनका दूसरा नाम छत्रपति चौहान भी था। अन्य विवरण उसमे भी नही दिया है।

३००. मुकुंददास—इनकी "साखी" के विवरण लिए गए है, जिनके अनुसार ये धामी पथ के अनुयायी और सभवत स्वा० प्राणनाथ जी के शिष्य थे। महाराजा छत्रसाल का भी इन्होने उल्लेख किया है। अन्य विवरण अज्ञात है।

'साखी' का विषय सिद्धात वर्णन और ज्ञानोपदेश है। इसकी जिस प्रति का विवरण लिया गया है, उसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

३०१. मुकुंददास—इस बार इनकी "कोकशास्त्र" नामक रचना की एक प्रति के विवरण और लिए गए है, जिसमे रचनाकाल सवत् १६७५ और लिपिकाल सवत् १८७६ दिए हैं। इसमे इनके नाम का उल्लेख तो नही पाया जाता पर इसका उल्लेख खोज विवरणिका (९–१८३, २९–२२५) मे हो चुका है, जिसके आधार पर यह इन्ही की कृति विदित हुई। उक्त विवरणिकाओ के अनुसार ये सवत् १६७२ के लगभग वर्तमान और शाहजादा सलीम (जहाँगीर) के आश्रित थे। प्रस्तुत प्रति के आधार पर ये सवत् १६७५ मे बादशाह जहाँगीर (न कि शाहजादा सलीम) के राजत्वकाल मे वर्तमान थे। इनके सबध मे देखिए 'नदमुकुद' पर टिप्पणी सख्या १७६।

३०२. मुखदास—ये पिछली खोज विवरणिकाओ मे कई ग्रथो के साथ उल्लिखित हैं, देखिए विवरणिकाएँ (२९–२३४; ४१–५४४)। उक्त विवरणिकाओ के आधार पर ये पजाब निवासी और सवत् १८१२ के लगभग वर्तमान थे। इस बार 'सारगीता' जो उपर्युक्त प्रथम विवरणिका मे आ चुकी है—की एक प्रति के विवरण और लिए गए है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही किया गया है। रचयिता का भी उसमे कोई परिचय नही दिया है। इसमे गीता का सक्षिप्त सार वर्णित है और यह पुरानी खडी बोली गद्य मे है।

३०३. मुरलीधर—इस बार इनकी दो रचनाओ—१. नखशिख और २. पिगल पीयूष के विवरण लिए गए हैं, जो पिछली खोज विवरणिकाओ (प० २२–६८, २३–२८८ ए) मे आ चुके है। इनके अतिरिक्त इनके पहले और भी ग्रथ मिले हैं, देखिए विवरणिकाएँ

(१२–११७, ३२; १४८, ३८–१०२; ४४–३०४)। इन विवरणिकाओं के आधार पर ये माथुर ब्राह्मण, आगरा निवासी, दिनमणि (ज्योतिषी) के पुत्र और मुहम्मदशाह बादशाह के आश्रित तथा संवत् १८१४ के लगभग वर्तमान थे। अंतिम दिनों में रामभक्ति की ओर प्रवृत्त हुए। ये अकबर बादशाह के आश्रय में रहनेवाले परमानंद शतावधानी (खोज विवरणिका ६–२३५) के वंशज थे। अकबर बादशाह ने परमानंद शतावधानी को 'मिश्र' की पदवी दी थी, जो इनके वंश में बराबर चलती आ रही थी। वंशावली इस प्रकार है—

परमानंद शतावधानी (अकबर के आश्रित)
|
कपूरचंद
|
पुरुषोत्तम (शाहजहाँ के आश्रित)
|
प्रेमराज
|
पृथीचंद
|
दिनमणि (ज्योतिषी)
|
मुरलीधर (मुहम्मदशाह के आश्रित)

'पिंगलपियूष' की प्रस्तुत प्रति के अनुसार ये भारद्वाज गोत्री माथुर त्रिपाठी ब्राह्मण थे। आगरे के माथुर टोला में रहते थे। पिता का नाम दिनमणि, पितामह का पृथ्वीराज और परपितामह का शिरोमणि नाम था, जो सुकवि थे। पिछली विवरणिकाओं के आधार पर ऊपर जो वंशवृक्ष दिया हुआ है उसके अनुसार पृथ्वीराज (रचयिता के पितामह) के पिता का नाम प्रेमराज था। पता नहीं प्रस्तुत ग्रंथ में शिरोमणि नाम किस अभिप्राय से दिया गया है। हो सकता है प्रेमराज का ही दूसरा नाम अथवा उपनाम शिरोमणि रहा हो। रचयिता के पिता 'दिनमणि' ज्योतिषी संभवतः दाराशिकोह के आश्रय में रहे, जिसके नाम पर इन्होंने 'दोहासार' का संग्रह किया था। देखिए दारासाह पर टिप्पणी संख्या १५५।

३०४. मुरलीधर—इनका 'फतेहअलीप्रकाश' नाम से एक ज्योतिष विषय का ग्रंथ मिला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नहीं मिलता। इन्होंने अपने को 'कविवर' और 'कविराज' कहा है, अतः विदित होता है कि ये कवि भी थे। ग्रंथ के नाम से पता चलता है कि ये किसी फतेह अली के आश्रय में रहते थे, जिनके नाम पर इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ रचा। पिछली खोज विवरणिकाओं में इस नाम के कई रचयिताओं का उल्लेख है, पर प्रमाणाभाव के कारण नहीं कहा जा सकता कि ये उनमें से कोई एक है या नहीं। अतः खोज में इन्हें नवोपलब्ध समझना चाहिए।

३०५ मुसाफिर (?)—इनके नाम से "इश्कपेंचा" नाम की एक रचना के विवरण लिए गए हैं, जिसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है। इससे इनका और रचना का ठीक ठीक नाम विदित नहीं होता। दो छंदों में 'मुसाफिर' शब्द का प्रयोग है, जिसके दो अर्थ 'यात्री' और आध्यात्मिक पक्ष में 'जीव' सरलता से लग सकते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक छंदों के आरंभ में इश्कपेंचा (इसीक पेंचा) लिखा है। फिर भी सुविधा की दृष्टि से रचयिता और रचना के नाम क्रमशः 'मुसाफिर' और 'इश्कपेंचा' मान लिए गए हैं। यह ज्ञानोपदेश विषयक रचना है और इसकी भाषा पुरानी खड़ी बोली है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। खोज में रचयिता नवोपलब्ध हैं।

३०६. मेघराज उपनाम मेघमुनि—इनके "मेघविलास" ग्रंथ की एक प्रति के विवरण और लिए गए हैं, जिसमें रचनाकाल का तो स्पष्ट उल्लेख नहीं है, पर लिपिकाल संवत् १८७७ दिया है। रचयिता फगवारे के निवासी थे। इन्होंने अपनी गुरु परंपरा इस प्रकार दी है—

जटमल (आचार्य)
|
प्रमानंद
|
सदानंद
|
नरोत्तम
|
मयाराम
|
मेघमुनि (रचयिता)

पिछली दो खोज विवरणिकाओं में इनके प्रस्तुत ग्रंथ का उल्लेख हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (१२-११३, पं० २२-६५ सी)। अन्य ग्रंथ भी इनके मिले हैं, जो खोज विवरणिकाओं (६-१६७, २३-२७८, २६-३०३) में उल्लिखित हैं। इन विवरणिकाओं के अनुसार रचयिता श्वेतांबर जैन और कपूरथला राज्य के अंतर्गत फगवाड़ा स्थान के निवासी थे। संवत् १८१७ के लगभग वर्तमान।

प्रस्तुत रचना का रचनाकाल इन विवरणिकाओं के अनुसार संवत् १८०८ है।

३०७. मेहरवान—इन्होंने आयुर्वेद विषयक संस्कृत ग्रंथ विशेषत. सारंगधर के आधार पर "व्याधिनासग्रंथ" की रचना की। इसकी एक खंडित प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमें रचनाकाल का उल्लेख तो स्पष्ट नहीं है, पर लिपिकाल संवत् १८७१ दिया है। रचयिता का भी स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है, पर पुष्पिका के लेख से विदित होता है कि इनका नाम मेहरवान था। प्रस्तुत प्रति मूल प्रति जान पड़ती है, अतः उसमें उल्लिखित लिपिकाल को रचनाकाल भी मानना चाहिए। खोज में ये नवोपलब्ध है।

३०८. मोतीसखि—इनके "होरी" विषयक कुछ 'पद' मिले हैं, जिनमें संतमतानुसार ज्ञान और भक्ति का वर्णन है। इनकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नहीं दिया है, पर लिपिकाल दिया है, जो संवत् १८८२ है। रचयिता का इतना ही पता मिलता है कि इनके गुरु का नाम माँजीदास था। खोज में ये नवोपलब्ध है।

३०९. मोहन सांई—प्रस्तुत त्रिवर्षी में इनका पता प्रथम बार ही लगा है। इनके सात ग्रंथों—१. अरस अइनिवानी, २. अरस अरिल ककहरा, ३ अरस अरिलवार्णी, ४ अरसनाम ककहरा, ५. अरस पियापाती, ६ अरसभक्तिबोध और ७ सेल्हा के विवरण लिए गए है, पर इनमें से किसी में भी इनका वृत्त नहीं दिया है। 'अरसभक्तिबोध' ग्रंथ के स्वामी (मु० देवनारायण श्रीवास्तव, ग्राम—टडेई रामपुर, जिला—रायबरेली) से पता चला कि ये साई मत के प्रवर्तक और पहुँचे हुए महात्मा थे। निवासस्थान जिला सुलतानपुर था। इस मत के साधु शरीर में केवल लंगोटी और चद्दर या गूदरी धारण करते है तथा ठीकरे में भी भोजन कर लेते है। ये लोग सदा जंगलों में निवास करते है और न तो वैभव ही जोड़ते है और न भोजन ही बनाते है। शिष्य लोग जो कुछ बना बनाया भोजन भेज देते है, वही खाते हैं।

साईं मत को संतमत की ही तरह मानना चाहिए। इसमें भी निर्गुणमार्गी संतों की शब्दावलियों का ही प्रयोग होता है, जैसे—सुरति, निरति, मतगम, परम ज्योति, शब्दपरिचय, निरगुन आदि। इस मत में 'अरस', 'आशिक' और 'शाह' शब्दों का अधिक प्रचार पाया जाता है। प्रत्येक रचना के आरंभ में 'अरस' और कहीं कहीं 'आशिक' शब्दों का प्रयोग होता है। इसी प्रकार प्रत्येक नाम के साथ 'शाह' (साह) शब्द लगा मिलता है।

नीचे रचयिता के ग्रंथों का रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से उल्लेख किया जाता है—

१. अरस अइनिवानी—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, निर्गुणमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश।

२. **अरस अरिलककहरा**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय, पूर्ववत्।

३. **अरस अरिलबानी**—रचनाकाल, लिपिकाल अविदित। विषय—ज्ञान, वैराग्य और भक्ति।

४. **अरस नामककहरा**—रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त। विषय, भक्ति।

५. **अरस पियापाती**—रचनाकाल अज्ञात, लिपिकाल सवत् १९९३। विषय, ज्ञानोपदेश।

६. **अरस भक्तिबोध**—रचनाकाल अज्ञात। विषय, भक्ति और ज्ञानोपदेश। इसकी दो प्रतियो के विवरण लिए गए है, जिनमे से एक मे लिपिकाल सवत् १९९३ दिया है।

७. **सेल्हा**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १९९३। विषय, पूर्ववत्।

मोहन साईं के अनुयायी महाप्रानदसाह और अहमकसाह की भी इस बार कुछ रचनाएँ मिली है, जिनके लिये देखिए क्रमश टिप्पणी सख्याएँ २९०, ९।

३१०. **मोहनमल**—इनके कुछ 'माँझ' छद मिले हैं, जिनमे संतमतानुसार चेतावनी और ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९४१ दिया है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। परतु इन्होंने प्रस्तुत रचना मे पजाबी शब्दों का प्रयोग किया है, अत ये पजाब के ही रहनेवाले कोई सत जान पड़ते हैं। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३११. **मोहनलाल**—इनकी लिखी हुई एक 'गुरुप्रनाली' के विवरण लिए गए हैं, जिसमे मदन पंथ के प्रवर्तक श्री मदनसाहब की गद्दी के महतों का नामोल्लेख है—

मदनसाहब (मदन पथ के प्रवर्तक, खरौना मे गद्दी, जिला जौनपुर)
|
दुलमपति (बढैया गाँव, जौनपुर)
|
विवेकपति साहब
|
दीवान जवाहिरपति साहब

मदन साहब के विषय मे लिखा है कि वे उच्चकुल के एक रईस थे और जौनपुर जिला के अतर्गत खरौना ग्राम के निवासी थे। एक दिन कबीर साहब ने प्रकट होकर उन्हें 'सार शब्द' का प्रचार करने का उपदेश किया। इस पर उन्होने सासारिक सुखोपभोग का त्याग कर दिया और उसी ग्राम मे एक कुटी बनाकर विरक्त भेष मे रहने लगे। 'सार शब्द' कबीर का मूल उपदेश था, जिसको निरजनी लोगो ने छिपाकर निरजनी ज्ञान का प्रचार किया। मदन साहब ने कबीर साहब का उपदेश पाकर फिर इस 'सार शब्द' का बडे जोरशोर से प्रचार किया। 'मदन साहब' और 'जवाहिरपति' का उल्लेख प्रस्तुत रिपोर्ट मे क्रमश. संख्या २७७, १२० पर हो चुका है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता। रचना की प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही।

३१२. **यज्ञप्रसाद**—इनके दो ग्रथ "ब्रह्मवाद" और "समेहेत" मिले है, जिनमे से अतिम ग्रथ के अनुसार इनके पिता का नाम बालदास था जो एक पहुँचे हुए महात्मा थे। अन्य परिचय नही दिया है। परंतु ग्रथस्वामी (प० बालाप्रसाद जी, ग्राम—जैनगरा; डाकघर—राना फतेहपुर, जिला—रायबरेली), जो इनके वशज हैं, का कहना है कि ये जैनगरा (जहाँ ग्रथस्वामी रहते हैं) के निवासी थे। इसकी पुष्टि रचयिता के पिता उपर्युक्त महात्मा बालदास के ग्रथो द्वारा भी होती है, जो इसी त्रिवर्षी मे मिले हैं। देखिए टिप्पणी सख्या २३९।

नीचे इनके ग्रथों का उल्लेख रचनाकाल, लिपिकाल और विषय के क्रम से किया जाता है—

१. **ब्रह्मवाद**—रचनाकाल अज्ञात। इसकी दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे से केवल एक मे लिपिकाल सवत् १९३४ दिया है। विषय, वेदात के अनुसार ब्रह्म ज्ञानोपदेश।

२. सर्वहेत—रचनाकाल अनुमान से संवत् १८७७ है और लिपिकाल संवत् १९५५। विषय, नीति और राजनीति वर्णन।

अंतिम ग्रंथ के अनुसार रचयिता संवत् १८७७ के लगभग वर्तमान थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३१३. रंगपाल—इनके भक्ति विषयक "कवित्त" मिले हैं, जिनकी प्रस्तुत प्रति मे रचना काल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १९४९ है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय अज्ञात है। प्रस्तुत कवित्तों द्वारा ये एक अच्छे कवि विदित होते हैं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

३१४. रंगीलाल पंडित—इन्होंने "चिकित्सा सिंधु" नामक एक वैद्यक ग्रथ की रचना की, जिसके अनुसार ये मथुरा के रहनेवाले थे। अन्य वृत्त नही दिया है, पर पिछली खोज विवरणिकाओं २६–४००, २९–२९३ पर इनका अन्य ग्रथों के साथ उल्लेख किया गया है, जिनके अनुसार ये सवत् १९२७–१९४० के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत ग्रंथ मे रचनाकाल नही दिया है। इसकी प्रस्तुत प्रति सन् १८९६ ई० की छपी हुई है।

३१५. रतनराम—"अग्यारी विलास" नाम से इनकी एक छोटी सी रचना मिली है, जिसमे ब्रह्मज्ञान का उपदेश किया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय अप्राप्त है। परतु इन्होने शिवनारायणी पथ के प्रवर्तक श्री शिवनारायण स्वामी के नाम का और उक्त पथ मे प्रचलित 'सतसरन' शब्द का स्पष्ट उल्लेख किया है, अत. ये कोई शिवनारायणीपथी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३१६. रघुनाथ—इनका "चिकित्सासार सग्रह" नाम से चिकित्सा सबधी एक ग्रथ मिला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। इनके वृत्त के विषय मे भी इससे कुछ ज्ञात नही होता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३१७. रघुनाथ कवि—इनके कुछ "कवित्त" मिले है, जिनमे रामजन्म, किसी बख्तावर सिंह की बारात और शारदाप्रताप नामक किसी राजा के यश का वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति द्वारा रचनाकाल और लिपिकाल के विषय मे कुछ प्रकाश नही पडता। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता, परतु विदित होता है कि ये उपर्युक्त बख्तावर सिंह और शारदाप्रताप राजा के आश्रित थे।

रचयिता के नाम के कई रचयिता पिछली खोज विवरणिकाओं मे उल्लिखित है, पर पता नही उनमे से ये कोई एक हैं या नही। काव्य की दृष्टि से ये प्रौढ कवि जान पडते हैं। खोज मे इन्हें नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

३१८. रणविजय बहादुर सिंह—इनका "विक्रम नाटक" नाम से एक नाटक ग्रंथ मिला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। प्रत्येक परिच्छेद की पुष्पिका के अनुसार इनका पूरा नाम महाराजकुमार दीवान रणविजयबहादुर सिंह था।

प्रस्तुत रचना को यद्यपि नाटक की सज्ञा दी गई है पर उसमे नाटक का कोई गुण नही पाया जाता। यह अंको मे न लिखी जाकर परिच्छेदो मे लिखी गई है, अत. इसको गद्यकाव्य ही कहना उपयुक्त होगा। इसमे अवती के राजा विक्रमादित्य की कथा का वर्णन है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका कुछ महत्व है या नही, यह तब तक नही कहा जा सकता जब तक पूरी रचना प्राप्त न हो जाय। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३१९. रतनदास या रत्नदास—इनका "स्वरोदय" नामक ग्रथ मिला है, जिसके विवरण पहले भी लिए गए है, देखिए विवरणिका (९–३२०)। उक्त विवरणिका मे इनका कोई वृत्त नही दिया है तथा इसकी प्रस्तुत प्रति—जो खडित है—से भी इस विषय मे कुछ ज्ञात नही होता। उसमे (प्रस्तुत प्रति में) रचनाकाल और लिपिकाल भी नही दिए हैं।

३२०. रतनहरि या रत्नहरि—ये पिछली खोज विवरणिका (१७–१६२) मे उल्लिखित रत्नहरि है। उक्त विवरणिका के अनुसार ये सवत् १८६६ के लगभग वर्तमान थे। अन्य वृत्त अज्ञात है। इस बार इनकी "ब्रह्मरहस्य" नामक रचना नई मिली है, जिसमे ब्रह्म ज्ञानोपदेश वर्णित है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही है। रचयिता के विषय मे इसमे भी कुछ पता नही चलता। सभवतः खोज विवरणिका (प० २२–६६) पर उल्लिखित रचयिता भी यही है।

३२१. राघवदास—ये रमल विषयक ग्रथ "रमलप्रश्न" के रचयिता हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १८१७ है। रचयिता का वृत्त अज्ञात है। सभवत खोज विवरणिका (२६–३६६) पर उल्लिखित राघवदास यही हैं।

३२२. राघोदास—इन्होंने सवत् १८४८ मे पद्मपुराण के आधार पर "कार्तिक माहात्म्य" की रचना की, जिसकी एक प्रति के विवरण लिए गए है। यद्यपि प्रस्तुत प्रति पूर्ण है, पर उसमे लिपिकाल नही दिया है। रचयिता का भी उसके द्वारा नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। पूर्व रचयिताओं मे ये भिन्न है या अभिन्न कुछ नही कहा जा सकता। खोज मे नवोपलब्ध समझना चाहिए।

३२३. राम—इनकी एक रचना "सामुद्रिक" नाम मे मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है पर उसमे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १६०४ है। रचयिता का परिचय अज्ञात है। खोज की पिछली विवरणिकाओं मे इस नाम के कई रचयिताओ का उल्लेख है, पर प्रमाणाभाव से नही कहा जा सकता कि उनमे से ये कोई एक है या नही। अत. खोज मे नवोपलब्ध समझना चाहिए।

३२४. रामकवि—इन्होने सवत् १६०८ मे "वैद्यशिरोमणि" नामक आयुर्वेद विषयक ग्रथ की रचना की। इसकी प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का केवल इतना ही परिचय मिलता है कि वे शालिवाहन (?) के वश मे किसी राजा के आश्रित थे। इस नाम के कई रचयिता पिछली विवरणिकाओ मे आए है पर यह विदित नही होता कि उनमे से ये कोई एक हैं या नही।

प्रस्तुत ग्रथ उस मूल ग्रथ का अनुवाद है, जिसको रूम के बादशाह जुल्करण सिकदर शाह ने दोनो दीन के (? हिंदू और मुसलमान) हकीमो और आयुर्वेदाचार्यो को बुलाकर अपने अपने शास्त्रीय ग्रथो के सिद्धातो का समन्वय करके लिखवाया था। इस दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है।

३२५. रामकिकर—ये और इनका ग्रथ "ग्रथ कुडली चक्र" खोज मे नए मिले है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १६२२ है। रचयिता का विवरण अज्ञात है। खोज मे नवोपलब्ध है।

३२६. राइचद्र या रायचंद उपनाम "चंद्र"—इनका उल्लेख "सीता चरित्र' के रचयिता के रूप मे पिछली खोज विवरणिका (२३–३६२) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये पजाबी जैन और सवत् १७१३ के लगभग वर्तमान थे। इस बार भी इनके उक्त ग्रथ की चार प्रतियों के विवरण लिए गए है, जिनमे इनका नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही दिया है। रचनाकाल का उल्लेख केवल तीन प्रतियो मे है, जिनमे से एक मे सवत् १७१३ दिया है और अन्य दो मे सवत् १७७७। जिन दोनो मे ये सवत् दिए है उनमे मास, पक्ष और लिपिकाल का उल्लेख है पर वार का उल्लेख नही किया गया। वार के अभाव मे ठीक सवत् का निर्णय भी नही किया जा सकता। परतु जैन विद्वान् श्री ज्योतिप्रसाद जी जैन (यूनियन मेडिकल स्टोर, केसरबाग, लखनऊ) के कथनानुसार शुद्ध सवत् १७१३ ही है। उपर्युक्त विवरणिका मे भी यही सवत माना गया है, अत. इसी को रचना काल मानना उचित है। लिपिकाल केवल दो प्रतियो मे दिए गए हैं, जो क्रमश सवत् १८०१ और १८०८ है।

३२७. रामचरणदास—ये सुप्रसिद्ध महात्मा अयोध्या के महत थे। संवत् १८४४–७८ के लगभग वर्तमान और जानकीचरण के गुरु थे। पति पत्नि भाव की उपासना (रामोपासना के अतर्गत) इन्ही ने चलाई थी और अपनी शाखा का नाम 'स्वसुखी' शाखा रखा था। इस बार इनके पाँच ग्रथो—१. दृष्टानबोधिका विवेकसतक और वैराग्यसतक, २. रसमालिका,

३. रामरत्नसार संग्रह, ४. रामानंदलहरी (बालकांड की टीका) और ५. सेवाविधि के विवरण लिए गए हैं, जिनमे से केवल तीसरा ग्रथ "रामरत्नसारसग्रह" ही खोज मे नवीन है। इसका रचनाकाल नही दिया है, लिपिकाल संवत् १६५० है। विषय, रामनाम माहात्म्य और द्वैताद्वैत भेद वर्णन है। शेष ग्रथो का उल्लेख पिछली विवरणिकाओं में हो चुका है, देखिए क्रमशः विवरणिकाएँ (६-२११; ६-२४५ के; १७-१४३ ए, ई; २३-३३६ बी, सी; २६-३७७ सी, डी, ३-४४; ५-६३; २०-१४५; ६-२४५ एफ; २६-३७७ ए, बी)।

३२८. रामजी भट्ट—इनके "शृंगारसौरभ" ग्रंथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। पिछली दो विवरणिकाओ मे इनका इस ग्रथ के साथ उल्लेख हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (१२-१४६; १७-१४८)। इनके अनुसार ये फरुंखाबाद निवासी और संवत् १८०३ मे उपस्थित थे। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल दिया है और न इनका वृत्त ही। यह सवत् १६४२ की लिखी है।

३२६. रामजीवन—इन्होने "वैद्यक भवन" नाम से एक आयुर्वेद विषयक ग्रथ की रचना की। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी उसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। रचयिता का नाम रामजीवन द्विवेदी है। इनके पिता का नाम सुखराम पडित था। अन्य वृत्त नही दिया है, पर अन्वेषक (श्री कृष्णकुमार वाजपेयी) को ग्रथस्वामी से पता चला कि रचयिता उनके (ग्रथस्वामी के) पूर्वज थे और वही (ग्रथ स्वामी का स्थान) दुबौली बाजार (बस्ती) के रहनेवाले थे तथा लगभग १००-२०० वर्ष पहले वर्तमान थे। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३३०. रामदया—इन्होने नकुल और शालिहोत्र ऋषि के ग्रथो के आधार पर "शालिहोत्र" ग्रथ की रचना की, जिसकी एक प्रति के विवरण इसबार लिए गए हैं। पिछली खोज विवरणिका (२३-३४२ जी) मे इनका इस ग्रथ के साथ उल्लेख हो गया है, पर अभी तक इनका कोई वृत्त उपलब्ध नही हो सका। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल में से किसी का उल्लेख नही है।

३३१. रामदास—इनके रचे "भागवत दशमस्कध" की दो खडित प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे रचनाकाल और लिपिकाल आदि का कोई उल्लेख नही किए गए हैं। रचयिता का परिचय केवल एक प्रति मे दिया है, जिसके अनुसार इनके निवासस्थान का नाम इमलानो, माता का नाम वीरमति और पिता का नाम मनोहरदास था। प्रस्तुत ग्रथ को इन्होने लालदास (लालचदास) कृत भागवत के अनुवाद को देखकर रचा। पिछली विवरणिकाओ (६-२१२ ए, बी, २६-२५६, ४४-३४५) मे उल्लिखित ऊषा कथा, प्रह्लाद लीला और रुक्मिणी व्याह के रचयिता रामदास यही है। केवल स्थान के नाम मे अतर पडता है। उक्त विवरणिकाओ मे स्थान का नाम मलिनी (मालवा) दिया है। परतु ऐसा विदित होता है कि 'इमलानो'—जैसाकि प्रस्तुत प्रति मे दिया है—का ही प्रतिलिपिकार द्वारा 'मलिनी' हो गया है। वास्तव मे यह नाम इमलानो ही है।

३३२. रामदास—इनकी "कार्तिक तरग" नामक रचना मिली है, जिसमे श्रीकृष्ण की कार्तिक लीलाओ का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण है, पर उसमे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नही दिया है। पिछली विवरणिकाओ मे इस नाम के कई रचयिता आए हैं, पर उनमे से ये कोई एक हैं या नही, कुछ नही कहा जा सकता। अत. नवोपलब्ध है।

३३३. रामनाथ—इनकी रची हुई "कालीदमन" नामक रचना मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल और लिपिकाल ही दिए हैं और न रचयिता का ही वृत्त दिया है। परतु इसका उल्लेख खोज विवरणिका (२६-३८५) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये एक अच्छे पडित थे और बादशाहपुर (जौनपुर के निकट) के अधिवासी थे।

३३४. रामनाथ 'प्रधान'—इनके कई ग्रथ पिछली खोज विवरणिकाओ मे आ चुके हैं, देखिए विवरणिकाएँ २३-३४६; ४-३८६; २०-१५३; ६-२५३; ६-२१४; १-८ आदि। इनके अनुसार ये रीवाँ राज्य के मत्री घराने के वशज, रीवाँनरेश के आश्रित और सवत्

१८८७–१९१२ के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनकी "रामकलेवारहस्य" नामक रचना की दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे रचनाकाल सवत् १९०२ दिया है। लिपिकाल एक ही प्रति मे सवत् १९३८ दिया है। इसका उल्लेख उपर्युक्त खोज विवरणिकाम्रो मे हो चुका है।

३३५. रामनारायण—"द्वारिकाविलास" नाम से इनकी एक सुदर काव्यकृति मिली है, जिसमे कुरूक्षेत्र के पर्व पर राधाकृष्ण के मिलन का सरस और मनोहारी वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १८८० है और लिपिकाल सवत् १८९२। रचयिता अयोध्या से सात कोस पच्छिम सरयू तट पर बसे हिमामपुर स्थान के निवासी थे। जाति के अग्रवाल वैश्य और उसी गाँव के एक ब्राह्मण श्यामानद पडित के शिष्य थे। पिछली खोज विवरणिकाओ मे इस नाम के कई रचयिताओं का उल्लेख है, पर उनमें से ये कोई एक है या नही प्रमाणाभाव मे कुछ नही कहा जा सकता। अत इन्हे खोज मे नवोपलब्ध ही समझना चाहिए।

३३६. बाबा रामप्रसाद—इनका उल्लेख खोज विवरणिका (३५–८२) मे "शब्दावली" के साथ हो चुका है, जिसके अनुसार ये बैस क्षत्रिय और भामदास की कुटी (सुलतानपुर) के रहनेवाले थे। बाबा भामदास के वशज और बाबा केशवदास के शिष्य थे। इनका जन्म सवत् १८७५ और मृत्यु सवत् १९४० मे हुई। इनकी उपर्युक्त "शब्दावली" की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए है, पर उसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। इनके लिए देखिए प्रस्तुत विवरणिका मे भामदास बाबा, सख्या १३७।

३३७ रामप्रसाद निरंजनी साधु—इनका उल्लेख "योगवाशिष्ट" ग्रंथ के साथ खोज विवरणिका (२९–१९१) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये सवत् १७९८ के लगभग वर्तमान और पटियाला की महारानी के यहाँ कथावाचक थे।

उक्त ग्रथ की एक छपी हुई प्रति के विवरण लिए गए है, जिसमे ग्रथ के विषय मे इस प्रकार कहा गया है—

"अब इसके भाषातर होने का हाल वर्णन किया जाता है। अनुमान डेढ सौ वर्ष के व्यतीत हुए कि पटियाला नगर नरेश श्रीयुत् साहबसिह जी वीरेश की दो बहिनें विधवा हो गई थी इसलिए उन्होने साधु रामप्रसाद जी निरजनी से कहा कि, श्री योगवाशिष्ट जो अति ज्ञानामृत है सुनाओ तो अच्छी बात है। निदान उन्होने योगवाशिष्ट की कथा सुनाना स्वीकार किया और उन दोनो बहिनो ने दो गुप्त लेखक बैठा दिए ज्यो ज्यो पडित जी कथा कहते थे वे प्रत्यक्षर लिखते जाते थे, जब इसी तरह कुछ समय मे कथा पूर्ण हुई तो यह ग्रथ भी तैयार हो गया। जो कि इसमे कथा की रीति थी कुछ उल्थे का प्रकार न था और पजाबी शब्द मिले हुए थे। प्रथम यह ग्रथ ऐसा ही मुबई नगर मे अगहन सवत् १९२२ मे छपा। जब इसका इस भाँति प्रचार हुआ और ज्ञानियो को कुछ इसका सुख प्राप्त हुआ तो चारो ओर से यह इच्छा हुई कि यदि पजाबी बोलियाँ और इबारत सुधार कर यह पुस्तक छापी जावे तो अति उत्तम हो। तथाच श्रीमान् मुशी नवलकिशोर जी ने बैकुठवासी प्यारेलाल शर्मा कश्मीरी को आज्ञा दी और उन्होंने बोलियाँ बदलकर और जहाँ तहाँ की इबारत सुधार कर उनकी आज्ञा का प्रतिपालन किया। परमशिष्ट पडितो के द्वारा यह ग्रथ तीन बार शुद्धतापूर्वक छप चुका है और अब कानपुर निवासी भगवानदास जी वर्मा द्वारा संपादित होकर फिर चौथी बार प्रकाश होने का अवसर मिला है—परमानद कारण हुआ।"
इससे पता चलता है कि मूल ग्रथ बबई से सवत् १९२२ मे प्रथम बार छपा। उसमे पंजाबी ध्वनियाँ और इबारतो की अशुद्धियाँ थी, जिसको प्यारेलाल शर्मा कश्मीरी ने शुद्ध कर दिया और ध्वनियो को भी बदल दिया। ग्रथ खोज मे पहले भी मिल चुका है, देखिए विवरणिका (२९–१९१ ए, बी, सी)। यह खडी बोली के व्यस्थिति और परिष्कृत गद्य का सबसे प्राचीन ग्रथ माना जाता है, परतु भूमिका के उपर्युक्त अवतरण से अब यह निश्चित हो गया कि यह धारणा ठीक नही। मूल ग्रथ पजाबी मिश्रित खड़ी बोली गद्य मे था, जिसको खडी बोली का परिष्कृत गद्य नही कह सकते। अत खडी बोली के परिष्कृत गद्य का आरंभ मुशी सदासुखलाल से ही माना जाना चाहिए, यद्यपि इसके पहले ही संवत् १८१८ मे दौलतराम ने जैन पद्मपुराण का अनुवाद खडी बोली मे किया, पर वह परिष्कृत नही। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचना काल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १९६० है।

३३८. रामभजन त्रिपाठी—इनका शकुन विषय पर "रमलप्रश्न" नामक रचना मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। इनका वृत्त भी अनुपलब्ध है। खोज में ये नए हैं।

३३९. रामरतन लघुदास—इनकी दो रचनाएँ "गणेशजयति" और "हनुमानजयति" नाम से मिली है, जिनका विषय उनके नामो से ही स्पष्ट है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। ये रचनाएँ एक ही हस्तलेख मे है, जिसका लिपिकाल सवत् १८६५ है। रचयिता हनुमानजयति के अनुसार हरियाना (पजाब) क्षेत्र के अतर्गत चिंयाणी नामक गाँव के रहनेवाले थे। ये गौड ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम मनीराम और गुरु का नाम मयाराम था। पिछली खोज विवरणिका (४४–३५४) मे इनका उल्लेख हनुमानजयति के साथ हो चुका है।

३४०. रामसनेहीदास (? रघुनाथदास बाबा)—"हृदयप्रकाश" नाम से इनकी एक रचना मिली है, जिसमे रामभक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात ह, लिपिकाल सवत् १९३८ दिया है। रचयिता का पुष्पिका के आधार पर केवल इतना ही पता चलता है कि ये जोहवै ग्राम के निवासी थे। परंतु ऐसा जान पड़ता है कि ये अयोध्या के महत बाबा रघुनाथदास थे जिनको रामसनेहीदास भी कहा जाता था और जो रामसनेही सप्रदाय के प्रवर्तक थे तथा जिनका उल्लेख कई रचनाओ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ (२०–१३९, २३–३२८, २६–३७२; २९–२७८) मे हो चुका है।

३४१. रामसहाई—इनका "अलिफनामा" मिला है, जिसमे फारसी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर पर रचना करके ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल संवत् १९५० है। रचयिता ने अपने सबध मे केवल इतना ही लिखा है कि वे किसी परिरोसन अमीर के शिष्य थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३४२. रामसुधिकरन बाबा—इनकी "रामशब्दावली" मिली है, जिसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता बाबा झामदास की कुटी (सुलतानपुर, जगेसरगज) मे बाबा रामप्रसाददास के पश्चात् महत हुए। ग्रथस्वामी (झामदास कुटी के वर्तमान महत) के कथनानुसार ये लगभग १०० वर्ष पहले वर्तमान थे। विशेष के लिए देखिए प्रस्तुत विवरणिका मे बाबा झामदास पर टिप्पणी सख्या १३७। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३४३. रामसेवक—इनकी "अखरावती" नामक रचना की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९८७ है। रचयिता ने प्रभु देवीदास और जगजीवनदास का नामोल्लेख किया है, जिससे विदित होता है कि ये सत्यनामी पथ के प्रवर्तक जगजीवन साहब के अनुयायी और देवीदास जी के शिष्य थे। पिछली खोज विवरणिकाओ (९–२५८ और २९–२९२) मे ये प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लिखित हैं। उक्त द्वितीय विवरणिका के अनुसार ये हरिचदपुर (बाराबकी) निवासी, भूलामऊ (सुलतानपुर) के गजाधरदास के गुरु और सवत् १८८६ के पूर्व वर्तमान थे।

३४४. रामस्वरूप—इन्होने गोकुल कवि (२६–१४३) कृत "दिग्विजैभूषण" पर तिलक रचा है। मूल ग्रथ की रचना सवत् १९१९ मे हुई थी और अलकारो के वर्णन के साथ-साथ इसमे रचयिता ने अपने आश्रयदाता राजा दिग्विजयसिह (बलरामपुर गोडा के राजा) के वश का भी ऐतिहासिक परिचय दिया है। इसके साथ साथ इसमे १९२ कवियो की भी रचनाएँ उदाहरण के रूप मे दी गई हैं, जिनका नाम विवरण पत्र मे दे दिया गया है।

तिलककार ने अपना कोई परिचय नही दिया है केवल इतना ही कि इनके पितृव्य का नाम गदाधर शर्मा था, जो मूल रचयिता गोकुल कवि के गुरु थे। सभवत. उक्त गदाधर शर्मा वही हैं, जिन्होने "दिग्विजै चपू" की रचना की, देखिए विवरणिका (४४–४१९)। ये भी राजा दिग्विजै सिह (बलरामपुर, गोडा) के आश्रय मे रहते थे और प्रतिभाशाली कवि होने के साथ साथ बड़े राजनीतिज्ञ भी थे। राजा दिग्विजै सिंह को राजगद्दी प्राप्त करने में इन्होने उनकी बड़ी सहायता की थी। तिलककार खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३४५. रामहित सिंह वर्म—इनका उल्लेख तीन रचनाओ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ मे हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (२९–२८४; ४४–३५८)। इन विवरणिकाओं के आधार पर ये सिंहेल क्षत्रिय और चित्तविसाँव (आजमगढ़) ग्राम के निवासी थे। माता पिता का नाम क्रमश. इदर और रामगति सिंह था।

इस बार इनकी "रत्नसाठिका" नामक रचना नई मिली है, जिसमे साठ सवत्सरो के फलाफल का वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं।

३४६. रामानंद गुरु—इनके नाम से तीन रचनाएँ—१. आभूषण मत्र, २ पचमात्रा और ३. रामरक्षा या रामरक्षास्तोत्र मिली हैं। इनमे से प्रथम दो नई हैं और अंतिम रामानुजाचार्य के नाम से खोज विवरणिका (२९–२८९) मे आ चुकी है। इस बार यह रामानद के नाम से आई है। यदि ये रामानद सुप्रसिद्ध कबीर के गुरु हैं, तो इन रचनाओ का महत्व बढ़ जाता है। परतु प्रथम दो रचनाओं मे भाषा का पुराना रूप नही पाया जाता। तीसरी रचना रामरक्षास्तोत्र मे अवश्य ही भाषा का पुराना रूप मिलता है। फिर भी ये तीनों ही रचनाएँ रामानद गुरु के नाम से मिली है, अत· जब तक इनका रचयिता स्पष्ट रूप मे कोई अन्य विदित नही होता तब तक इन्ही की मानी जाएँगी। इनका उल्लेख खोज विवरणिकाओ (३१–७१; ४१–२३१, १७–१५०; ००–७६, ९–२५० ए, २०–१५१) मे हो चुका है।

रामरक्षास्तोत्र की चार प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे से केवल दो मे ही लिपिकाल दिए हैं; जो संवत् १८७३ और १८७४ हैं। अन्य रचनाओ मे से केवल पचमात्रा मे लिपिकाल सवत् १९२९ दिया है।

३४७. रामानंद—ये पूर्व रचयिता रामानद गुरु से सर्वथा भिन्न और खोज मे नए मिले हैं। इनका "ज्ञानलीला स्तोत्र" मिला है, जिसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश विषयक पद हैं। रचनाकाल नही दिया है, लिपिकाल सवत् १८२६ है। रचयिता का कोई परिचय नही दिया है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३४८. रामानंद—इनकी "लीलारतन चूडामणि" नामक रचना मिली है, जिसकी एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९३१ दिया है। इसमे कृष्णलीलाओ और कृष्ण भक्ति का वर्णन किया गया है। रचयिता भरतपुर नरेश महाराज बदनेस के आश्रय में रहते थे। गुरु का नाम श्रीगोपाल था। प्रस्तुत रचना इन्होंने किसी नवलकिशोर की आज्ञा से की, जो संभवत. राजघराने की ही कोई स्त्री थी। हो सकता है कि वह महाराज बदनेस की ही रानी रही हों। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

३४९. रामेश्वर भट्ट—इन्होने योग विषय पर एक ग्रथ की रचना की, जिसका नाम स्पष्ट रूप से नही दिया है। केवल 'योग० सा०' ऐसा लिखा है। इसमे योग विषय का प्रतिपादन किया गया है, अत: 'योग० सा०' के आधार पर इसका नाम 'योगशास्त्र' मान लिया गया है, जो ठीक ही विदित होता है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, अत. रचनाकाल और लिपिकाल विदित न हो सके। रचयिता के विषय मे ग्रंथारभ मे दिए गए विवरण से केवल इतना ही पता चलता है कि इन्होंने पाचाल देश मे सुलतान गयासुद्दीन को यह ग्रथ सुनाया था। अन्य वृत्त अज्ञात है। दिल्ली मे गयासुद्दीन नाम से दो बादशाह हुए हैं। एक गयासुद्दीन बलवन, जो सवत् १३२३–४४ तक बादशाह थे और दूसरे गयासुद्दीन तुगलक, जो सवत् १३७७-८२ तक थे। पता नही कि रचयिता ने इन दो मे से किसको योगशास्त्र सुनाया। अधिक संभावना दूसरे गयासुद्दीन की होती है, क्योंकि उसकी माता एक हिंदू जाट दासी थी और पिता बलवन नाम का एक तुर्क। अतः माता के प्रभाव से उसका झुकाव हिंदू शास्त्रो की ओर रहा होगा, ऐसा जान पड़ता है। जो कुछ हो, प्रस्तुत रचना से इतना तो विदित होता ही है कि बहुत से मुसलमान बादशाह हिंदू शास्त्रों के प्रति भी गहरी श्रद्धा रखते थे।

प्रस्तुत रचना खडी बोली गद्य मे लिखी गई है, पर यह गद्य इतना पुराना नही है कि उसको हम विक्रम की चौदहवीं शती (बादशाह गयासुद्दीन तुगलक के समसामयिक) का मान लें। ऐसा विदित होता है कि किसी ने पीछे से मूल रचना का हिंदी मे रूपांतर किया है।

३५०. छत्रप्रतापसिंह (राजा)—इनका उल्लेख "सुसिद्धांतोत्तमरामखंड (उत्तरखंड)" के साथ खोज विवरणिका ४४–३६१ पर हो चुका है। इससे पहले इनके इस ग्रंथ का एक अंश "कौशलपथ" नाम से खोज विवरणिका (३–२५) मे भी उल्लिखित है। इन विवरणिकाओं के अनुसार ये माडा (विंध्याचल के निकट इलाहाबाद जिला) के राजा थे और सवत् १८७७ में वर्तमान थे।

उपर्युक्त ग्रंथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं, जिसमे रचनाकाल संवत् १८८३ और मुद्रणकाल सवत् १९११ दिए हैं। ग्रथ में रामकथा का वर्णन है। रचयिता ने इसमें अपने वश का विस्तृत वर्णन किया है। ये सोमवंशी थे और अपने को सुप्रसिद्ध राजा जयचद के भाई मानिकचंद का वशज बतलाते हैं। इस दृष्टि से ग्रथ का ऐतिहासिक महत्व भी है।

३५१. लक्ष्मीनाथ (?)—इनके नाम से "वदींमोचन" नामक रचना के विवरण लिए गए हैं, जो सदेहास्पद है। "लक्ष्मीनाथ" नाम विष्णु भगवान् के लिये प्रयुक्त हुआ जान पड़ता है। अत. सभवत. यह (लक्ष्मीनाथ) रचयिता का नाम नही है। इनका अन्य विवरण कुछ नही मिलता।

रचना का विषय भगवती की वदना करना है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नहीं मिलते। रचयिता नवोपलब्ध हैं।

३५२. लक्ष्मीदास (लखमीदास)—इनका "श्रेणिकचरित्र या श्रेणिकमहाराज" चरित्र" खोज विवरणिका (३२–१३० बी०) मे आ चुका है। उक्त विवरणिका के अनुसार ये सांगानेर के रहने वाले और सवत् १७८१ मे वर्तमान थे।

इस बार उपर्युक्त ग्रथ की एक और प्रति के विवरण लिए गए हैं, जिसके अनुसार ये रणथभौर की तलेठी पर बसे शेरपुर स्थान के निवासी थे। इनकी जाति खडेलवाल और गोत्र चाँदूवाड था। दुर्भाग्यवश इन्हे अपना देश छोडना पडा और ढूंढाहर (राजस्थान, जयपुर) देश मे राजा प्रतापसिंह के पुत्र राजा रामसिंह के राज्य के अतर्गत सागावती स्थान मे आकर ये रहने लगे। वही प० दसरथ के पुत्र सदानद के उपदेश से इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। अपना वश वर्णन ये इस प्रकार करते हैं—

चाहासुत चद्रभान के पुत्र मानकुल थे। उनके जीवराज और जीवराज के भोजराज हुए। इसी भोजराज के दो पुत्रो मे से प्रथम लषमीदास (रचयिता) और द्वितीय चिंतामणि थे।

प्रस्तुत ग्रथ का रचनाकाल सवत् १७३३ है, लिपिकाल दिया नही। मूल ग्रंथ सस्कृत मे है, जिसके रचयिता शुभचद्राचार्य है।

३५३. लछिमन—इनके शारदा और अन्नपूर्णा की स्तुति विषयक कुछ 'कवित्त' मिले हैं, जिनकी प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल और न लिपिकाल ही दिए हैं और न रचयिता का ही परिचय। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३५४. लालकवि—इनकी "दुकूलचितावनी" और "ककहरा" नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। प्रथम रचना मे श्लेष से एक वस्त्र का उल्लेख कर राधा के मान का वर्णन किया गया है। दूसरी मे नागरी के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियो का विरह वर्णन किया गया है। रचनाकाल क्रमशः सवत् १८९८ और सवत् १८९९ हैं। लिपिकाल दोनो का एक ही सवत् १९०७ है।

रचयिता दूसरी रचना के अनुसार वैश्य वर्ण के थे। पिता का नाम बृजलाल और पितामह का नाम मनसाराम था। इनके पिता तीन भाई थे, जिनका नाम क्रमश बेचूलाल, हीरालाल और बृजलाल था। गुरु का नाम शिवगुलामथा, जिनकी आज्ञा से इन्होने ककहरा (राधा बृजराजजस) की रचना की। पिछली विवरणिकाओ मे इस नाम के कई रचयिताओं का उल्लेख हुआ है, पर उनमे से ये नितात भिन्न हैं और खोज मे नवोपलब्ध है।

३५५. लाल (नेवजीलाल दीक्षित)—ये खोज विवरणिका (४१–२४१ ख) मे "विक्रमविलास (नवरस)" ग्रथ के साथ आ चुके हैं। उक्त विवरणिका के अनुसार ये किसी राजा विक्रमशाही के आश्रित और संवत् १६४० मे वर्तमान थे। इनका पूरा नाम संभवतः नेवजीलाल

दीक्षित था। इस बार उपर्युक्त ग्रथ की एक और प्रति के विवरण लिए गए हैं, जो अपूर्ण है और जिसमे रचनाकाल और लिपिकालादि का कोई उल्लेख नही पाया जाता। रचयिता का भी विवरण इसमे नही है। "कथा माधवानल" और "नाटक उषाहार" का उल्लेख इसमे भी किया गया है, जो रचयिता की कृतियाँ हैं, पर अभी तक अनुपलब्ध हैं।

३५६. **लाल**—इनकी "मानमजरी" के विवरण लिए गए हैं, जिसमे राधा के मान का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही लगता। रचयिता का भी वृत्त उपलब्ध नही होता। ये प्रस्तुत ग्रथ के साथ खोज विवरणिका (४४–३७४) मे आ चुके हैं, पर उसमे भी इनका कोई विवरण नही दिया है।

३५७. **लालकवि**—इनका "सभाविलास" नामक ग्रथ मिला है, जो पहले भी खोज विवरणिका (४१–२४३ क) मे आ चुका है। उक्त विवरणिका मे इनका कोई वृत्त नही दिया है। ग्रथ की एक प्रति इस बार भी मिली है, पर उसमे भी इनका वृत्त उपलब्ध नही। रचनाकाल सवत् १८७० है और लिपिकाल सन् १२६३ फसली।

३५८. **लोकनाथ**—"रामब्याह कवित्त" नाम से इनकी एक सरस रचना मिली है, जिसका विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९१५ दिया है। रचयिता का केवल इतना ही परिचय मिलता है कि ये वर्ण के ब्राह्मण थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३५९. **लोचनसिंह कायस्थ**—इनका "जातकालकारभाषा" की तीन प्रतियाँ मिली हैं, जिसमे ज्योतिष (फलित) विषय का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १९१० है। लिपिकाल क्रमश. सवत् १९३०, १९३१ और १९४१ हैं। रचयिता के गुरु का नाम रघुलाल था, जो वर्ण के ब्राह्मण थे। इनके स्थान का नाम राजमलनगर था। खोज विवरणिका (२६–२६९) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख हो गया है। 'लोचनप्रकाश' इनका एक दूसरा ग्रथ भी है, जो खोज विवरणिका (३८–९०) मे उल्लिखित है।

३६०. **वंशीधर**—इनका उल्लेख "दस्तूरमालिका" के साथ खोज विवरणिका (९–१८) मे हो गया है, जिसके अनुसार ये बुदेलखड के महाराजा छत्रसाल के आश्रित और सवत् १७६५ के लगभग वर्तमान थे। इस बार भी उपर्युक्त ग्रथ की एक प्रति मिली है, जिसमे रचनाकाल सवत् १७६५ और लिपिकाल सवत् १९०२ हैं।

३६१. **वंशीधर पंडित**—ये आगरा के रहनेवाले और सवत् १९३१ के लगभग वर्तमान थे। इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ मिली हैं—

१. **तिब्ब अहसानी**—ग्रथ छपा हुआ है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १९५० (सन् १८९३ ई०) है। इसमे यूनानी चिकित्सा का वर्णन है।

२. **भोज प्रबंधसार**—यह भी छपा हुआ है। रचनाकाल और लिपिकाल दिए नही। यह सस्कृत ग्रथ भोज प्रबध का सक्षिप्त अनुवाद है।

दूसरा ग्रथ खोज विवरणिका २९–२९ के, एल, ४४–२२७ पर उल्लिखित है और यह युक्त प्रात के डाइरेक्टर आफ पब्लिक इस्ट्रक्शन की आज्ञा से रचा गया था।

३६२. **विनोदीलाल (जैन)**—ये "भक्तामरचरित्र" और "श्रीपालचरित्र या श्रीपाल-विनोद" के रचयिता हैं। ये अगरवाल वैश्यो के अठारह गोत्रो मे उत्तम गर्गगोत्री थे। अनखचूर इनकी अल्ल थी। पिता का नाम दरिगहमल्ल, पितामाह का नाम पारस और प्रपितामह का नाम मडन था। वत्सदेश के अतर्गत गगा तट पर बसे साहिजादपुर नगर इनका स्थान था। ये जैन थे और काष्टासघ के अतर्गत माथुरगछ के कुमारसेनि के आम्नाय के अनुयायी थे। गुरु का नाम सारद था। प्रस्तुत रचना इनकी वृद्धावस्था की है, जब ये ७०–७२ वर्ष के थे। इन्होने औरगजेब बादशाह की बड़ी प्रशसा की है, जिससे विदित होता है कि उससे इनको धन या अच्छा सम्मान प्राप्त हुआ था। उसकी वशावली भी इन्होने दी है, जो तैमूरलंग से आरंभ होती है। अकबर बादशाह का इन्होंने जगद्गुरु नाम से उल्लेख किया है और औरंगजेब के विषय मे लिखा है कि उसने बलख बुखारा छीन लिया था तथा दक्षिण मे अपने नाम की दोहाई फिरवा दी थी।

इनका उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओं मे हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (१७–२०२; २३–४४०; ३८–१६०)। संक्षिप्त विवरण (नवीन) मे इनके विषय मे भ्रमपूर्ण बातें लिखी गई हैं।

प्रस्तुत ग्रथों में से 'भक्तामरचरित्र' का रचनाकाल सवत् १७४७ है। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमश. सवत् १९०९ और संवत् १८९३ हैं। यह खोज विवरणिका (२३–४४० ए) मे उल्लिखित है और महत्वपूर्ण ग्रथ है, जिसमे अनेक कथाओ के साथ भोज और कालिदास के भी विवरण मिलते हैं। दूसरी रचना 'श्रीपालचरित्र' मे श्रीपाल राजा की कथा का वर्णन है। इसका रचनाकाल सवत् १७५० है। इसकी भी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमशः सवत् १८८७ और सवत् १८९४ है। खोज मे यह प्रथम बार मिली है।

३६३. विप्र—इन्होने संवत् १६७५ मे "कोकशास्त्र" नाम की रचना की, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे लिपिकाल का उल्लेख नही। इन्होने अपने नाम का जो उल्लेख किया है वह अस्पष्ट सा है। 'विप्र' शब्द से वर्ण का भी बोध होता है कि रचयिता ब्राह्मण थे। ये जहाँगीर बादशाह के समय मे वर्तमान थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६४. विश्राम शुक्ल—इन्होंने युद्ध ज्योतिष पर "समरसारभाषातिलक" की रचना की। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल संवत् १८५५ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६५. विश्वंभरदास—इनकी रची हुई "फूलचरित्र" नाम की रचना मिली है, जो दोहो मे है और जिसके प्रत्येक दोहे मे एक फूल का उल्लेख किया गया है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १८८२ है। शृंगार विषय की यह सरसकृति है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य विवरण उपलब्ध नही है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६६. विश्वनाथ सिंह जू देव—इन्होने सस्कृत ग्रथ "रामचद्राह्निक" की "आह्निक तिलकप्रकाश" नाम से टीका की है, जिसमे राम के आठों याम के जीवनयापन का वर्णन है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १९०७ है। टीका ब्रजभाषा गद्य मे है। रचयिता का परिचय तो नही दिया है, पर ये रीवाँ के सुप्रसिद्ध महाराज विश्वनाथसिंह जू देव विदित होते हैं, जो पिछली खोज विवरणिकाओ मे अनेक ग्रथो के साथ उल्लिखित है, देखिए विवरणिकाएँ (००–४३, १–६, ३–२२, ४–३८, ६–२४९ बी, ३–५३; ९–३२९ ए, ४–११४; २०–२०५ ए; २३–४४५ ए, बी)। प्रस्तुत ग्रथ नया मिला है।

३६७. विष्णुदास—इनकी "बारहखडी" की एक प्रति इस बार भी मिली है, जिसमे नागरी के प्रत्येक अक्षर पर दोहे रचकर कृष्णलीला का वर्णन किया गया है। रचनाकाल संवत् १८५१ और लिपिकाल सवत् १८९९ है। यह रचना खोज विवरणिका (९–३२७; २३–४४२) पर आ चुकी है पर उनमे रचयिता का कोई विवरण नही दिया है। इस बार इनका थोड़ा सा विवरण उपलब्ध हुआ है, जिसके अनुसार ये झाझर के निवासी थे और इनके गुरु का नाम शायद ढढीरामसुख था। अन्य वृत्त अभी भी अनुपलब्ध है।

३६८. विष्णुरसिक—इनके कुछ "पद" मिले हैं, जिनकी प्रस्तुत प्रति खडित है। उसमे न तो रचनाकाल ही है और न लिपिकाल ही। पदों मे भक्तिपूर्ण विरह शृगार का वर्णन है। काव्य की दृष्टि से ये पद सरस है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६९. वीरभानुदेव—इनका रचा हुआ "रतिरहस्य" मिला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है। उसमे न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल का ही उल्लेख है। रचयिता पुष्पिका के अधार पर ही विदित हो सके हैं। इनके पिता का नाम राजा विक्रमसेन देव था। ये तोमर क्षत्री थे। इनकी प्रस्तुत रचना गद्य मे है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३७०. वृंदावन (जैन)—इनकी "शनिश्चर की कथा" मिली है, जिसमे शनिश्चर

देवता की कथा का वर्णन है। रचनाकाल संवत् १७२६ और लिपिकाल संवत् १६१४ हैं। रचयिता का केवल इतना ही विवरण मिलता है कि ये किसी विश्वभूषण के शिष्य थे। संभवतः खोज विवरणिका (२३-४४७) में उल्लिखित वृंदावन जैन हैं।

३७१. बैजनाथ (बैजनाथ)—इनका एक ग्रंथ "श्रीकृष्णखंड" नाम से मिला है, जिसमे श्रीकृष्णचरित वर्णित है और जो आल्हा छदों मे रचा गया है। रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १६३६ है। अतः प्रति मूलप्रति है।

रचयिता जौनपुर के अंतर्गत बादशाहपुर के निकट जामडाडह (नउआडाडी) के रहनेवाले थे। पिता का नाम अयोध्या था। सवत् १६३७ मे आल्हखंड को पढ़ने के पश्चात् इन्होंने प्रस्तुत रचना उसी शैली मे की। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३७२. ब्रजनाथ—इनके "पिंगल" ग्रंथ की एक प्रति के विवरण लिए गए हैं, जो खोज मे पहले भी मिल चुके हैं, देखिए विवरणिका (६-१४२)। इसके अनुसार ये वर्ण के ब्राह्मण, महीपति मिश्र के वशज, कपिला निवासी और सवत् १७३२ के लगभग वर्तमान थे।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता के वृत्त के विषय में कुछ पता नही चलता।

३७३. शंकर—"कर्मविपाक" ग्रंथ के ये रचयिता हैं पर इनके नाम मे संदेह है। यह नाम भगवान शंकर के लिये प्रयुक्त हुआ है। ग्रंथ शंकर पार्वती के सवाद के रूप मे है। अतः इस का रचयिता कोई दूसरा ही है, जिसका नाम इसमे नही है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल संवत् १८५० है।

३७४. शंकर—"ज्योतिषभाषा या ज्योतिषलग्नप्रकाश" के विवरण लिए गए हैं। इसकी दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल केवल एक में है, जो सवत् १८८८ है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता, पर ये खोज विवरणिका (६-३२८ ए) मे उल्लिखित शकर है, जो विसवाँ (सीतापुर) के रहनेवाले एक ब्राह्मण थे। जन्मकाल सवत् १८६१ दिया है, जो अशुद्ध है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियो मे से एक मे लिपिकाल सवत् १८८८ दिया है, जो उक्त जन्मकाल से भी पहले का है, अत ऐसी दशा मे रचयिता का जन्मकाल सवत् १८६१ नही हो सकता।

३७५. शंकराचार्य—इनकी एक रचना "दशावतार" नाम से मिली है। यह पहले भी खोज मे मिल चुकी है, देखिए विवरणिका (२६-४२४)। परतु अभी तक इनका कोई वृत्त नही मिला है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे न तो रचनाकाल ही दिया है और न रचयिता का ही कोई विवरण। परतु उसमे लिपिकाल सवत् १७६५ होने से इतना पता चलता है कि रचयिता इस काल के पहले का है।

३७६. शंकराचार्य—इनके नाम से "देवीस्तोत्र" नामक रचना के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८८० दिया है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही दिया है। परतु ये सभवतः सुप्रसिद्ध दार्शनिक शकराचार्य हैं, जिन्होने बहुत से स्तोत्रो की रचनाएँ की। प्रस्तुत स्तोत्र उन्ही मे से किसी का भाषानुवाद है, जो किसी दूसरे भाषा कवि ने किया है।

३७७. शंभुनाथ त्रिपाठी—इनकी चार रचनाएँ—१. कवित्त, २. कृष्णविलास (भागवतदशम), ३ जातकचद्रिका और ४ मुहूर्तचितामणि या मुहूर्तमजरी मिली हैं, जिनमे से प्रथम दो नई हैं और शेष दो पिछली विवरणिकाओ मे आ चुकी हैं, देखिए विवरणिकाएँ (६-२३४, २६-४२०, २०-१७३, २३-३७१ बी, सी, डी)। 'कवित्तों' मे शृंगार विषयक सवैया और कवित्त हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। "कृष्णविलास (भागवतदशम)" में कृष्णचरित्र का काव्यशैली मे सुदर और सरस वर्णन किया गया है। इसे रचयिता की प्रधान कृति समझना चाहिए। रचनाकाल दिया तो है पर वह अस्पष्ट है। लिपिकाल सवत् १६२३ है। यह अधूरी है और ३५ अध्यायो को लिखने के पश्चात् रचयिता का स्वर्गवास हो गया था। अत. यह रचयिता की अंतिम कृति है। इसमें मातृक और वर्णिक दोनो वृत्तों मे रचना की गई है।

रचयिता डौंडियाखेड़ा (बैसवाड़ा) के राव रघुनाथ सिंह के आश्रित और संवत् १८०३ के लगभग वर्तमान थे।

२७८. **शंभुनाथ द्विज**—इनकी छह रचनाएँ मिली हैं, जिनके अनुसार ये छिपियाग्राम (बस्ती) के निवासी गर्गगोत्री और वर्ण के ब्राह्मण थे। पिता का नाम त्रिवेणीदत्त था। संसारपुर ग्राम (बस्ती) के राज। भैरोबक्स सिंह के ये आश्रित थे। उन्ही के यहाँ रहकर इन्होने प्रस्तुत रचनाएँ की। रचनाएँ निम्नलिखित प्रकार से हैं।

१. **काली विजय**—इसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं। रचनाकाल केवल एक मे संवत् १६१२ दिया है। लिपिकाल दो प्रतियों में है, जो क्रमश. सवत् १६३५ और १६१३ है। विषय—कालीविजय वर्णन।

२. **ताराविजय**—रचनाकाल संवत् १६०८ और लिपिकाल अज्ञात है। विषय—देवी भागवत के आधार पर शुभनिशुभ के साथ भगवती के युद्ध का वर्णन।

३. **वैवाज्ञमरण**—इसकी प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। विषय—ज्योतिष।

४. **प्रबोध पारिजात**—रचनाकाल संवत् १६०७। लिपिकाल अज्ञात। विषय—मार्कंडेयपुराण और ब्रह्मवैवर्त के आधार पर दुर्गाचरित्र का वर्णन।

५. **विद्याविलास**—रचनाकाल संवत् १६०३ और लिपिकाल संवत् १६१३। विषय—देवी भागवत के आधार पर भगवती के यश और माहात्म्य का वर्णन।

६. **शिवतत्वप्रकाश**—रचनाकाल सवत् १६०७। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमशः सवत् १६१० और १६३८ है। विषय—शिव दुर्गा भक्ति का वर्णन। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

३७६. **शंभुनाथ द्विज**—इनकी "प्रदोषव्रतकथा" की एक प्रति मिली है, जिसका विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६१४ है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य विवरण अनुपलब्ध है। परतु ये पूर्ववर्ती रचयिता विदित होते हैं। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३८०. **शिरोमनिदास (जैन)**—ये "धर्मसार" नामक ग्रथ के रचयिता है और पिछली खोज विवरणिका (३२–२००) मे उल्लिखित है, जिसके अनुसार ये सवत् १७५१ के लगभग वर्तमान थे। प्रस्तुत प्रति मे इनका कोई वृत्त नही दिया है, केवल इतना ही कि ये जैन थे और किसी भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। प्रति में रचनाकाल का उल्लेख नही, लिपिकाल सवत् १८६४ है।

३८१. **शिव (?)**—इनके नाम से "अवतारचरित्र" ग्रथ मिला है जिसमे भगवान् के चौबीस अवतारो का सक्षेप मे वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल के साथ साथ रचयिता का भी परिचय नही दिया है। रचयिता नवोपलब्ध हैं।

३८२. **शिवदास**—इनका अलंकार विषय पर एक ग्रथ "अलकारशृंगार" टीका सहित मिला है। विषय की दृष्टि से ग्रथ उत्तम है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल का उल्लेख नही किया गया है। लिपिकाल सवत् १६८२ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। पिछली खोज विवरणिकाओ मे इस नाम के तीन रचयिताओ का उल्लेख है, पर प्रमाणाभाव मे नही कहा जा सकता कि उनमे से ये कोई एक हैं या नही। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८३. **शिवदीन दास**—इनकी दो रचनाएँ "ज्ञान कवित्त" और "पद" मिले हैं। ये दोनों ही भक्ति विषयक रचनाएँ है। रचनाकाल इनमे से किसी मे नही दिया है। लिपिकाल केवल प्रथम मे सवत् १८६१ है।

रचयिता का विवरण ग्रथस्वामी के कथनानुसार जो इनके वशज हैं, इसप्रकार है—

ये गंगापुर ग्राम (प्रतापगढ़) के निवासी थे। गृहस्थ होते हुए भी ये त्यागी थे और सदा ग्रंथावलोकन में ही जीवन बिताते थे। अन्य विवरण उपलब्ध नहीं। संभवत. खोज विवरणिका (२६–४४५) में उल्लिखित शिवदीन दास भी यही है।

३८४. शिवनरेश सिंह—इनका "कविकुलकुमुदकलाधर" पिंगल विषय पर उत्तम कृति है। प्रस्तुत खोज में इसकी एक मुद्रित प्रति के विवरण लिए गए हैं जिसमें रचनाकाल सवत् १९३१ है और मुद्रणकाल सवत् १९४९। ग्रथ में १२५ प्रकार के छदो का वर्णन है।

रचयिता जगतापुर ग्राम (बहराईच) के निवासी थे। पिता का नाम विजयी सिंह और पितामह का नाम मर्मसिंह था। ये रैंकवार वश के क्षत्री थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८५. शिवनारायण स्वामी—ये शिवनारायणी पथ के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध शिवनारायण स्वामी हैं, जो सवत् १७९२–१८११ के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनकी एक बिना नाम की रचना के विवरण लिए गए है, जिसमें सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता के विवरण का कोई उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का पिछली कई खोज विवरणिकाओ मे उल्लेख हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ ९–२९४, २६–४४८, ४१–२६३।

३८६. शिवप्रकाश—इन्होंने विनयपत्रिका पर "रामतत्वबोधनी" नाम से टीका की है। टीका मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १९३५ है। यह ब्रजभाषा गद्य मे है। रचयिता डुमराँव के राजा जैप्रकाश के छोटे भाई थे। अपने को ये सुप्रसिद्ध राजा भोज के वशज बतलाते हैं। इन्होंने सात ग्रथो की रचनाएँ की, जिनके नाम इस प्रकार है—

१. सत्सगविलास, २ भजनरसार्णव, ३. भगवतरस सपुट, ४ अद्भुत रसतरंग, ५. इतिहास लहरी, ६ भागवत तत्व भास्कर और ७ रामतत्वबोधिनी। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८७. शिवप्रसाद—इनका "जयदायक (समरसार)" नामक ग्रथ मिला है, जिसकी एक खडित प्रति के विवरण लिए गए है। प्रति मे न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही। रचयिता लखनऊ से ग्यारह कोस पूर्व की ओर भगरैंगहे नामक ग्राम के निवासी थे। इन्होंने अपने आश्रयदाता का उल्लेख तो किया है पर ठीक ठीक स्पष्ट नही होता। फिर भी सभवत. रामवक्स हैं, जो सूर्यवशी क्षत्रिय थे। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

३८८. शिवप्रसाद—इन्होंने किसी राजा महिपाल के कहने पर सवत् १९०० मे "ढेकचरित्र" की रचना की। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल का उल्लेख नही है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३८९. शिवराज महापात्र—इन्होंने "कृष्णविलास" और "रससागर" नामक दो ग्रथो की रचनाएँ की जिनमे एक ही विषय रस और नायिका भेद का वर्णन है। दोनो ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियाँ खडित है। पहले ग्रथ की प्रति मे तो आठ ही पत्रे है जिनमे रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता के वृत्त का कोई उल्लेख नही मिलता। दूसरे ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल दिया है, जो सवत् १८६६ है पर लिपिकाल उसमे भी नही। सौभाग्य से इसमे रचयिता और उसके आश्रयदाता का वृत्त मिलता है, जो इस प्रकार है—

महापात्र के वश मे कविराज प्रकट हुए। उनके सदानद हुए, जो कालिदास के सदृश गुणी थे। उनके पुत्र सुखलाल थे। इन्ही सुखलाल के वश मे शिवराज महापात्र हुए। इनके वश के लोग भाषा मे नही बोलते थे। केवल इन्होंने ही भाषा मे कविता करना आरंभ किया। ये रामपुर के राजा रायबैरिसाल के आश्रय मे रहते थे। जो मझौली (गोरखपुर) के राजाओं के वशज थे। इनके वश का कवि ने बड़ा विस्तृत वर्णन किया है। प्रस्तुत हस्तलेख मे वह पत्र नही है, जिसमे राजाओ का वर्णन प्रारभ होता है। प्राप्त अश मे नरपाल सेनि से उल्लेख मिलता है। अत वशावली का जो अश विद्यमान है वह क्रम से विवरण पत्र मे दे दिया है। राजा बैरिसाल के पूर्वजो मे से एक युवराज महावीर थे, जिनका किसी कारण अपने बडे भाई से मनमुटाव हो गया था। उन्होंने मझौली को त्याग दिया और सिंगरौर (रायबरेली) और मानिकपुर

क्षेत्र की ओर गंगा के तट पर बसे रामपुरा राज्य को जीतकर अपने अधीन किया। डेरवा स्थान पर उन्होंने अपनी राजधानी स्थापित की। ये दिल्लीनरेश के भी पास गए, जिसने इनको मनसबदारी देकर मुलतान की लड़ाई पर भेजा। वहाँ से विजय प्राप्तकर लौटे तो बादशाह से 'रामराया' की उपाधि पाई। तब से रामपुरा के राजा 'राय' कहलाने लगे।

इसमें सदेह नही कि प्रस्तुत दोनो ग्रथ साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, पर दूसरा इतिहास और कवि परिचय के कारण विशेष महत्व रखता है।

रचयिता ने श्री मुनिभट्ट मयूर नामक एक व्यक्ति का उल्लेख बड़ी श्रद्धा से किया है, जिसने गडक के तट पर बड़ी तपस्या की थी। पता नही ये कौन थे। गुरु के प्रसग मे यह उल्लेख हुआ है, अतः हो सकता है कि या तो ये कवि के गुरु थ या गुरु के पूव पुरुष। रचयिता पिछली खोज विवरणिका (२३–३९६) में 'कृष्णविलास' के साथ उल्लिखित है, पर उसमे इनका न तो वृत्त ही दिया है और न समय ही।

३९०. शीतलदास—इनकी दो रचनाएँ "रामायणमाहात्म्य" और "विवेकमाल" मिली हैं। पहली मे रामायण का माहात्म्य और गो० तुलसीदास जी का जीवनवृत्त दिया है। रचनाकाल सवत् १९२९ है। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनम लिपिकाल नही दिया है। दूसरी रचना मे ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णित है। इसका रचनाकाल सवत् १८९८ और लिपिकाल सवत् १९४३ वि० है। रचयिता अयोध्या से नैऋत्य दिशा की ओर छह योजन की दूरी पर सुबेह परगना के अतर्गत बहरामऊ ग्राम के रहने वाले थे। ये पिछली खोज विवरणिकाओ ४४–४१९ और २३–३८८ मे क्रमश. प्रस्तुत दोनो ग्रथो के साथ आ चुके है।

३९१. शुभचंद्राचार्य (जैन)—इन्होने सवत् १६०८ मे "पाडवपुराण" की रचना सस्कृत मे की थी, जिसकी किसी अज्ञात रचयिता ने खड़ी बोली गद्य मे टीका की। इसमे (टीका मे) इस बात का उल्लेख है कि शुभचद्राचार्य के शिष्य श्रीपाल ब्रह्मचारी ने इस भाषातर को देखने और शुद्ध करने मे भाषातरकार की सहायता की थी। अत इस दृष्टि से यह गद्य विक्रम की १७वी शती के अत का है और महत्वपूर्ण है। मूल रचयिता (शुभचद्राचार्य) का समय सवत् १६०८ है, अत उनके शिष्य के जीवनकाल की कल्पना वि० की १७वीं शती के अत तक की जा सकती है। अत यह गद्य रामप्रसाद निरजनी (स० १७९८) के योगवाशिष्ट के पूर्व का समझना चाहिए। गद्य सुव्यवस्थित और प्रौढ है। उचित स्थानो म पूर्णविराम रखे गए हैं।

३९२. श्यामकवि—ये "स्वरविलास" नामक सगीत ग्रथ के रचयिता हैं, जिसमे स्वर, ताल और राग-रागनियों का वर्णन किया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल और लिपिकाल ही दिए हैं और न रचयिता का ही वृत्त। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३९३. श्रीधर—इनकी "हनुमानविजय" नाम स एक छोटी सी रचना मिली है, जिसमे हनुमान जी की स्तुति वर्णन की गई ह। रचनाकाल सवत् १९२१ है। लिपिकाल दिया नही। रचयिता सलेमाबाद के रहनेवाले और गौड़ ब्राह्मण थे। अन्य वृत्त नही दिया है। ये प्रस्तुत रचना के साथ पिछली खोज विवरणिका (२६–४५४ बी) मे आ चुके हैं, जिसके अनुसार ये पुष्कर तीर्थ (अजमेर के निकट) के रहनेवाले थ। यह विवरण प्रस्तुत विवरण से मेल नहीं खाता। अतः ये रचयिता भिन्न भिन्न है।

३९४. श्रीराम बाजपेयी—इन्होने "समरसार" ग्रथ की रचना की, जो मूल सस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है और जिसमे युद्ध ज्योतिष का वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमशः सवत् १८४३ और १८७१ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३९५. संकठाप्रसाद तिवारी—इनके कुछ "भजन" मिले है, जिनमे भगवद्भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १९३० और लिपिकाल सवत् १९८९ है। रचयिता रायबरेली से लगभग ५ मील उत्तर की ओर हरिदासपुर गाँव मे रहते थे और कान्यकुब्ज तिवारी ब्राह्मण थे। जन्म से हरिभजन मे लीन रहा करते थे। ८५ वर्ष की आयु मे इनका स्वर्गवास हुआ। इनके दो पुत्र और एक पुत्री अभी तक विद्यमान हैं। बड़े पुत्र का नाम हृदयनारायण और दूसरे का नाम

सूर्यकुमार है। पुत्री का नाम हरिदेई है। ये लोग भी बड़े भक्त हैं और साधु संतों की सेवा में तत्पर रहते हैं।

३९६. संगम—इनकी रची हुई "दानलीला" मिली है, जिसमे कृष्ण और गोपियो की दानलीला का वर्णन है। रचनाकाल दिया नही, लिपिकाल सवत् १९०७ है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय अज्ञात है। पिछली खोज विवरणिका (२३-३७२) मे एक सगमलाल का उल्लेख है, पर नही कहा जा सकता कि वे प्रस्तुत रचयिता ही हैं या नही। अतः खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

३९७. संत या संतन कवि—इन्होंने सस्कृत ग्रथ लीलावती का भाषानुवाद "अध्यात्म-लीलावती" के नाम से किया, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित मिली है। उसमे न तो रचनाकाल ही है और न लिपिकाल ही। रचयिता जजमऊ (रायबरेली) के रहनेवाले थे। अन्य वृत्त उपलब्ध नही।

३९८. संतदास—ये "भक्तिविलासभाषा" नामक एक सुदर काव्य ग्रथ के रचयिता हैं। ग्रथ मे सक्षेप मे रामचरित्र वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत् १९११ और लिपि-काल सवत् १९१७ है। रचयिता डलमऊ (रायबरेली) से दो कोस पच्छिम की ओर गगा के तीर पर बसे च्यवर्नी ग्राम के निवासी थे। अन्य परिचय नही दिया है। खोज मे नवोपलब्ध है।

३९९. सत्यकवि—इनका "सामुद्रिक" ग्रथ मिला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति मे न तो रचनाकाल, लिपिकाल ही दिए है और न रचयिता का ही वृत्त। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

४००. सबलसिंह चौहान—अब तक इनका जो कुछ वृत्त विदित हुआ वह सदिग्ध और अस्पष्ट है। इस बार इनके "कर्णपर्व (महाभारत)" की एक प्रति का विवरण लिया गया है, जिसमे रचनाकाल सवत् १७३८ है और लिपिकाल सवत् १९३९। इसके अनुसार ये चदगढ (?) के राजा मित्रसेनि के पुरखो मे से एक सिपाही थे। अन्य वृत्त फिर भी अज्ञात है। इनका उल्लेख पिछली कई विवरणिकाओं मे हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (४-६६, ६-२२४ ए, १२-१६; प० २२-९७; २३-३६३, २६-४१२)। इनमे इनका दूसरा नाम 'सबलश्याम' भी लिखा है, जो अशुद्ध है। 'सबलश्याम' इनसे भिन्न थे, देखिए आगे 'सबलश्याम' पर टिप्पणी।

४०१. सबलस्याम (सबलश्याम)—इनको महाभारत का रचयिता सबलसिंह चौहान माना जाता है, जो ठीक नही। उक्त रचयिता से ये नितात भिन्न व्यक्ति है। इस बार इनके "भाषाभागवत दशमस्कध" की एक प्रति का विवरण लिया गया है, जो सवत् १९०९ की लिखी हुई है। इसके अनुसार ये सवत् १६८८ मे उत्पन्न हुए थे और अमोढ़ानगर (अमोढ़ाराज्य, जिला बस्ती) के निवासी थे। ये अपने को राजा कहते है। ग्रथस्वामी (ठाकुररामसिंह जी, अध्यापक, ग्राम—बभनगावाँ, डाक०—अमोढा, जिला—बस्ती) जो अपने को इनका वशज बतलाते हैं, इनका वशवृक्ष इसप्रकार देते हैं:—

राजा कसदेवनारायण (अमोढा, बस्ती के राजा)
|
महाराजा दलसिंह (राजा कंसदेव की सत्ताइसवी पीढ़ी मे हुए)
|
वीरसिंह (इन्ही के भाई सबलश्याम थे, जो रचयिता है)
|
सग्रामसिंह
|
साहेबसिंह
|
जालिमसिंह
|
पृथ्पतिसिंह
|

अभयसिंह
|
जगबहादुरसिंह
|
रानी तलाशकुँअरि

पश्चात् अंग्रेजी शासन म यह राज्य बस्ती मे मिला दिया गया (गजेटियर बस्ती)।

ग्रथस्वामी का यह भी कहना है कि ये सूर्यवशी थे और अमोढा से एक मील पश्चिम प्रतापगढ़ मे रहते थे। य रुक्मिणीहरण, बालविस्तार रामायण, अमोढा राज्य वर्णन और दृष्टकूट आदि के रचयिता है, पर ये रचनाएँ अभी तक अप्राप्त है। अस्तु, ये प्रस्तुत ग्रथ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओं (१२–१६०, २३–३६३ ए, २६–४१३ ए, बी) मे आ चुके हैं। खोज विवरणिका (४४–४३८) मे इनका 'बरवै षट्ऋतु' का भी उल्लेख है, जो काव्य की दृष्टि से सुदर कृति है।

४०२. समन (?)—प्रस्तुत विवरणी मे "बैंत समनत्रैज का" नाम से एक रचना मिली है, जिसको समन कृत मान लिया ह। क्योंकि "बैंतसमनत्रैजका" मे 'समन' का नाम है, अत इसी आधार पर ऐसा अनुमान किया गया है। परतु 'बैंतसमनत्रैजका' अर्थ 'बैंत समन के तरजका' भी हो सकता ह, जिसस रचयिता कोई दूसरा ह। ठहरता है। फिर भी वास्तविक रचयिता के अभाव मे तथा रचना के महत्वपूर्ण होने के कारण यह नाम दे देना उचित जान पडा।

रचना मे ज्ञानोपदेश विषय का वर्णन ह, जो आध्यात्मिक रूप लिए हुए है। इसकी भाषा खडी बोली है। इसकी प्रस्तुत प्रति कैथी लिपि म है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है। रचयिता नवोपलब्ध है।

४०३. समन या समनेश बख्शी—ये "पिगल काव्य विभूषण" के रचयिता है, जिसके साथ इनका उल्लेख खोज विवरणिका (००–८२) म हो चुका है। उक्त विवरणिका क अनुसार ये जाति के कायस्थ, सवत् १८७६ क लगभग वतमान और रीवाँ नरेश राजा विश्वनाथसिह के आश्रित थे। इनक पूर्वज गुजरात से आकर दिल्ली म रहने लगे थे।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति म रचनाकाल सवत् १८७६ वि० दिया है। लिपिकाल अज्ञात है। इसके अनुसार रचयिता क पिता का नाम शिवदास और पितामह का नाम केसवराइ था। शेष वृत्त उपर्युक्त विवरणिका क अनुसार ही है। इनका एक ग्रथ रसिकविलास भी है, जो खोज विवरणिका (६–२२७) म उल्लिखित ह।

४०४. समाधान—इनका रचा हुआ "लक्ष्मणशतक" मिला है, जो उत्तमवीरकाव्य है। इसका उल्लेख खोज विवरणिका (४४–४४०) मे हो गया ह, पर उसम इनका कोई वृत्त नही दिया है। इस बार इसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है, जिसम रचनाकाल नही दिया ह पर लिपिकाल सवत् १६५० है। इसने रचयिता का थोड़ा सा विवरण दिया हुआ है, जिसके अनुसार ये चरखारी (बुदेलखड) निवासी और जाति के वदीजन थे। इस दृष्टि स प्रस्तुत प्रति महत्वपूर्ण है।

४०५. सहजराम—इनकी तीन रचनाएँ मिली है, जिनके नाम १. प्रह्लादचरित्र, २ प्रह्लादचरित्र इतिहास और ३ हनुमान बालनीला या हनुमान लीला है। इनम से केवल प्रथम ग्रथ ही नया है, जिसका विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। इसकी दो प्रतियाँ मिली है, जिनम रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल क्रमश. सवत् १८६४ और १६१७ है। शेष दो रचनाएँ पिछली खोज विवरणिकाओं १२–१६२, २३–३६७ बी, सी, २६–४१५ बी, सी, ४१–२७६ और २६–४१५ ए म आ चुकी है, जिनके अनुसार रचयिता वर्ण के वैश्य और सवत् १७८६ के लगभग वर्तमान थे।

४०६. सागर कवि—इन्होने सस्कृत साहित्यशास्त्र के आचार्य मम्मट के सुप्रसिद्ध ग्रथ काव्यप्रकाश के आधार पर "कविताकल्पतरु" नामक महत्वपूर्ण ग्रथ की रचना की। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १७८८ और लिपिकाल सवत् १७८६ उल्लिखित हैं। अतः यह

मूल प्रति विदित होती है। रचयिता का इससे केवल इतना ही परिचय मिलता है कि ये मालवा-नरेश (?) जोरावरसिंह के आश्रय मे रहते थे। उक्त नरेश ने रामगढ़ किला के निकट भानपुर गाँव मे कवियों की एक सभा बुलाई थी, जिसमे चद के पुत्र बाबोराभाट और आमेरगढ़ के वासी कवि नान्हूराम उपस्थित थे। इसी सभा मे इन लोगो ने इस कवि को प्रस्तुत ग्रथ रचने को कहा, जिसका इन्होंने सहर्ष पालन किया। इसमे इन्होने अपने आश्रयदाता के वंश का विस्तृत वर्णन किया है, जो इस प्रकार है—

धर्मनरेश (ग्वालियर को छीना)
|
सोठ (?)
|
दूलहराज
|
हनूराय
|
उदै (कन्नौज आदि देश जीते)
|
मलैसिह (गिरनार जीता)
|
वीजलनरेश
|
नृपराजदेव
|
कील्हरणदे
|
जीनसिह
|
उदयकरण
|
नरसिह — कुंभराव
कुंभराव
|
रणमल्ल
|
नाथू — पचाइण — आसलजी
पचाइण
|
देईदास
|
गुपाल
|
भोपतिराव — खेतसिह
भोपतिराव
|
रावत राणोदास — फतैहसिह

देवसिंह

बख्तसिंह　जुझारसिंह　जोरावरसिंह (आश्रयदाता)

रचयिता नवोपलब्ध है।

४०७. सावार—इनकी "रसरत्न" नाम से साहित्यशास्त्र (अलंकार, रस और काव्य-विवेचन) विषयक एक उत्तम कृति मिली है, जिसमे संस्कृत के आचार्य अप्पय्य दीक्षित और मम्मट आदि के ग्रंथों से उदाहरण भी दिए गए हैं। खेद है कि इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है और उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही है। रचयिता के वृत्त के विषय मे प्रत्येक अध्याय की समाप्ति की विज्ञप्ति से इतना ही पता चलता है कि इनके पिता का नाम तारानाथ था। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४०८. सारंगधर—इन्होने सोनारी विद्या पर "विराहचंद्रिका" नामक ग्रंथ की रचना की, जिसकी संवत् १७७४ की लिखी हुई एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल नही दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य विवरण अज्ञात है। खोज में नवोपलब्ध हैं।

४०९. सिध्यावास या सिद्धदास—इनकी चार रचनाएँ—१. बानी, २. विरहसत, ३. शब्दावली और ४. साखी मिली हैं। इन सबका विषय संतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश है। इनमे से केवल प्रथम रचना 'बानी' ही नई है और शेष पिछली विवरणिकाओ मे आ चुकी हैं, देखिए क्रमश: विवरणिकाएँ २६–४३७ डी, २३–३८६; २६–४३७ बी और २६–४३७ सी। इन विवरणिकाओ के अनुसार रचयिता हरगाँव (सुलतानपुर) निवासी, सतनामी संप्रदाय के अनुयायी और दूलनदास जी के शिष्य थे।

'बानी' की प्रति मे रचनाकाल नही दिया है, लिपिकाल संवत् १९६० है। प्रस्तुत ग्रंथों मे से केवल विरहसत मे ही रचनाकाल दिया है, जो संवत् १८१० है। अतः रचयिता इसी संवत् के लगभग वर्तमान थे।

४१०. सिपहदार खाँ उपनाम 'वेगुनदास'—इनके श्री जगन्नाथ जी की स्तुति विषयक ४४ पद मिले हैं, जो छपे हैं। रचना का नाम "पदमाला श्रीजगन्नाथ जी" है। रचनाकाल स्पष्ट नही दिया है, पर अनुमान से १९१२ विदित होता है। मुद्रण का समय दिया नही। रचयिता का वास्तविक नाम सिपहदार खाँ था और उपनाम 'वेगुनदास'। ये कोल (संभवत. अलीगढ) के वासी थे, अलीगढ जिला को कोल भी कहते हैं। एक मुसलमान लेखक की रचना होने के कारण प्रस्तुत रचना महत्वपूर्ण है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध हैं।

४११. सीतल जैन—ये "सुदृष्ट तरंगिनी" के रचयिता हैं। इनका नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। इनके प्रस्तुत ग्रंथ मे जैन धर्म का प्रतिपादन किया गया है। मूल ग्रंथ संभवतः गाथाओ मे था, जिसका खडी बोली गद्य मे प्रस्तुत अनुवाद किया गया है। रचनाकाल संवत् १८३८ होने के कारण अनुवाद बहुत कुछ पुराना है, अत. महत्वपूर्ण भी है। लिपिकाल संवत् १९७० है। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

४१२. सीताराम (?)—इनका "शकुनविचार" मिला है, जिसमे रचनाकाल संवत् १८२७ है। लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का न तो कही नाम स्पष्ट दिया है और न कोई विवरण ही। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४१३. सीताराम—इनकी दो रचनाएँ १. वंशावली या काव्यकल्पतरु और २. रसिकबोध मिली है, जिसमे क्रमशः तिलोई (रायबरेली) के राजाओं का इतिहास और उनकी

वंशावली और नायिकाभेद विषय का वर्णन है। ये दोनो रचनाएँ पिछली खोज विवरणिकाओं (२६–४४० और ३५–६१) मे आ चुकी हैं, जिनके अनुसार रचयिता सरयूपारी ब्राह्मण, धौंकलराम उपाध्याय के पुत्र और तिलोई (रायबरेली) के राजा शकरसिंह के आश्रित थे। जन्म मवैया (बहरेला) बलीपुर (बाराबकी)। संस्कृत हिंदी के अच्छे ज्ञाता और सवत् १६५५ तक वर्तमान थे। इनके ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियों मे रचनाकाल संवत् १६१५ दिया है, लिपिकाल अज्ञात हैं।

४१४. **सुंदरकलि**—ये एक मुसलमान कवियित्री थी, जिनका अन्य कोई विवरण उपलब्ध नही। लावनी शैली पर इन्होने "सुदर कली हुदहुद का बारहमासा" नाम की रचना की जिसमे सयोग और वियोग शृगार का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति छपी हुई है, जिसमे मुद्रणकाल १२६८ हिजरी दिया है। रचनाकाल विदित नही। खोज विवरणिका ६–३१२ पर इनका उल्लेख है।

४१५. **सुखलाल कायस्थ**—इन्होने "हनुमान जन्म" नाम से दोहा चौपाइयो मे हनुमान के जन्म चरित्र का वर्णन किया है, जो काव्य की दृष्टि से साधारण है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६१८ दिया है।

रचयिता पहले काशी मे रहते थे और पश्चात् गुरु कृपा से अवध (अयोध्या) मे जाकर रहने लगे थे। खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

४१६. **सुखलाल**—इनका "विवेकसागर या सुखसागर" नामक ग्रथ मिला है, जिसमे भक्ति और ज्ञानोपदेश विषय का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८४४ और लिपिकाल सवत् १६४१ है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य वृत्त अनुपलब्ध है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४१७. **सुथरादास**—इनकी रची हुई "परिचयी बाबा मलूकदास जी" की तीन प्रतियो के विवरण लिए गए है। परिचयी मे कडा मानिकपुर के सुप्रसिद्ध सत बाबा मलूकदास जी का वृत्त दिया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल केवल एक प्रति मे सवत् १७८४ है। रचयिता प्रयाग के रहनेवाले और बाबा मलूकदास जी के शिष्य तथा उनकी बहिन के पुत्र थे। अन्य वृत्त नही दिया है। बाबा मलूकदास जी के भानजे होने के नाते इनकी प्रस्तुत रचना महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार बाबा मलूकदास जी का जन्म सवत् १६३१ को हुआ था और निधन सवत् १७३६ को। रचना की प्रस्तुत प्रतियों मे से एक, जो सवत् १७८४ की लिखी है, बाबा मलूकदास जी के निधनकाल के बहुत समीप की है। साथ ही साथ इसको मलूकदास जी के शिष्य, दयालदास जी के शिष्य ने लिखा है (मलूकदास जी कृत ज्ञानबोध के अनुसार जो प्रस्तुत रचना के साथ एक ही हस्तलेख मे है)। इसलिये इसकी प्रामाणिकता असदिग्ध है।

रचयिता खोज विवरणिका (१७–१६०) मे आ चुके है, पर उसमे इनका बाबा मलूकदास जी का भानजा होने का कोई उल्लेख नही है। अब यह उल्लेख मिला है।

४१८. **सुब्बासिंह राजा उपनाम श्रीधर**—ये "शालिहोत्र" ग्रथ के रचयिता हैं और इस ग्रथ के साथ खोज मे पहले भी मिल चुके हैं, देखिए विवरणिकाएँ (१२–१७७ ए, २३–४०१ ए)। उक्त विवरणिकाओ के अनुसार इनका उपनाम 'श्रीधर' था। ये खीरी जिले के निवासी, पृथ्वीराज चौहान के वशज और बख्तसिंह के पुत्र थे। स० १८८४–६६ के लगभग वर्तमान रहे।

इस बार ग्रथ की जो प्रति मिली है उसमे इन्होने अपने वश का विस्तृत वर्णन किया है, जो इस प्रकार है—

ब्रह्मा के अत्रि हुए, उनके चद्र और चद्रमा के जलस्वरूप पुत्र (? बुध) हुए। उसके वश मे मुनीद हुए जो शाल्मली द्वीप के राजा थे। परशुराम ने उनको युद्ध मे मार दिया था जिससे शाल्मली द्वीप मे बडी गडबडी हुई। श्रीवत्स ऋषि (इनको सभवत परशुराम ने द्वीप का राज्य सौपा था) परशुराम के पास गए और उनसे शाल्मली द्वीप की अव्यवस्था के सबध मे परामर्श किया। परशुराम ने अनलकुड स्थान मे यज्ञ करने की सम्मति दी। यज्ञ किया गया और उसमे से परशुराम के कथनानुसार एक चतुर्भुज पुरुष उत्पन्न हुआ जिसका नाम राजरिपि रखा गया।

वह शाल्मली द्वीप का राजा और चौहान क्षत्रियों का मूल पुरुष हुआ। उसके माता पिता क्रमशः स्वाहा और अग्नि तथा गोत्र वत्स हुआ। उसके वंश मे शकट नृपति हुए और शकट के वंश में महाराज पृथ्वीराज जैसे प्रतापी वीर हुए। पृथ्वीराज के वश मे हालदेव राजा हुए, जो बड़े दानी थे। इन्होंने मोरा स्थान को छोड़ खीरी (अवध) मे राजधानी बनाई। ढरववाबैल संभवतः राजधानी का नाम है। इन हालदेव के वश मे मानसिंह राजा हुए। मानसिंह के अमरवल और राजा अनत हुए। अनत के महीपर (? महीधर) हुए, जिनके गजराज और हेमसिंह नामक दो पुत्र हुए। हेमसिंह प्रसिद्ध हुए जिनके बखतसिंह पुत्र थे। इन बखतसिंह के चार पुत्र हुए, जिनमे प्रथम रघुनाथ, द्वितीय जालिमसिंह, तृतीय उमराव और चतुर्थ सुब्बासिंह थे। यही अतिम पुत्र सुब्बासिंह प्रस्तुत रचयिता हैं, जिनका उपनाम 'श्रीधर' था और जिन्होंने 'विद्वन्मोदतरगिणी' नामक ग्रंथ की भी रचना की। इनका प्रस्तुत ग्रथ विषय की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमे विषय का सम्यक् वर्णन हुआ है। सारगधर, नकुल और शालिहोत्र के प्राचीन ग्रंथों से इसमे सहायता ली गई है। हिंदी के प्राचीन साहित्य में अपने विषय का ऐसा उत्तम ग्रथ अभी देखने में नही आया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १८९६ और लिपिकाल सवत् १९४५ दिए हैं।

४१९. **सुवंश शुक्ल**—इनकी दो रचनाएँ "उमरावकोश" और "ढेकी" नाम से मिली हैं, जिनका उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओ (२३–४२२ ई; २–१०७) मे हो चुका है। उक्त विवरणिकाओ के अनुसार ये बिसवाँ (सीतापुर) निवासी, सवत् १८६४ के लगभग वर्तमान और राजा उमरावसिंह और सूबासिंह के आश्रित थे।

इस बार प्रस्तुत ग्रंथों की एक एक प्रति मिली है, जिनमे से प्रथम ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल संवत् १८६४ और लिपिकाल सवत् १९४२ है। दूसरे ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं। प्रथम ग्रंथ की प्रति मे आश्रयदाता का वशक्रम इस प्रकार दिया है—

- बालचद (महिपाल)
  - अमरसिंह
    - शिवसिंह
      - धौकलसिंह
      - भूपसिंह
      - उमराऊ (कवि के आश्रयदाता)
      - बख्तावरसिंह
      - ईश्वरीसिंह
    - भवानीसिंह

४२०. **सूरदास**—इनकी तीन रचनाएँ, १ नागलीला, २ बिसातिनलीला और ३. सूरसागर नाम से इस बार भी मिली है। प्रथम दो रचनाएँ नवीन है, पर स्पष्ट है कि ये सूरसागर के ही अग हैं, जिन्हे लोकरुचि के कारण अलग पुस्तकाकार रूप मे सकलित किया गया है। इनकी प्रस्तुत प्रतियो मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल क्रमश सवत् १९३१ और १८८४ हैं। सूरसागर रचयिता की प्रधान कृति है, जिसके कारण इनकी ख्याति है। इसकी दो प्रति मिली है उसमे रचनाकाल नही दिया है, पर लिपिकाल है जो सवत् १८८५ है। इसमे समस्त पदो की सख्या १३६७ है। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण सग्रह है।

रचयिता का कोई वृत्त उपलब्ध नही। पिछली खोज की कई विवरणिकाओं मे इनका उल्लेख हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (१–२३, ६–२४४, ९–३१३, १२–१८५; १७–१८६; २३–४१६, ३२–२१२, २६–२४४; २९–३१९, ४१–२९४)।

४२१. **सूबरा**—इनके नाम से "भाषा पंचपक्षी" मिली है, जो शुभाशुभ शकुन विषय पर रची गई है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई

उल्लेख नहीं । रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नहीं दिया है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं ।

४२२. सेनापति—ये "चाणाकशास्त्र भाषा (चाणक्यशास्त्र भाषा)" के रचयिता हैं। ग्रंथ के अनुसार ये गुरु गोविंदसिंह के दरबार में लेखक थे । अपना परिचय इन्होंने एक दोहे में इस प्रकार दिया है—

गुरुगोविंद की सभा मै लेखक परम सुजान ।
चाणाकै भाखा किये कवि सेनापति नाम ॥१०॥

इसमें रचयिता अपने को "सुजान लेखक" और कवि दोनों कहता है । यद्यपि इनसे इनका अहभाव व्यक्त होता है तौभी यह तो मानना ही पडेगा कि उनका यह 'अहं' भाव गुणों के कारण ही रहा होगा और ये अवश्य ही कोई प्रौढ लेखक या कवि रहे होंगे । हो सकता है कि ये सुप्रसिद्ध कवि सेनापति ही हों । सेनापति का कविताकाल सवत् १७०६ है और गुरु गोविंदसिह का सवत् १७२७ । अत. ये लगभग समसामयिक थे और इनका गुरु गोविंदसिह के दरबार में होना कोई असभव बात नही । ये पिछली कई विवरणिकाओं मे उल्लिखित हैं, देखिए विवरणिकाएँ (६–२३१; ६–२८७, २३–३७६; २६–४३३; २०–१७६; ४–५१; ४१–२६७) ।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है पर उसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं । ग्रंथ में वृद्ध चाण्यक नीति का हिंदी पद्यानुवाद है, जो दोहा और छप्पयों में है ।

४२३. सेनापति त्रिवेदी—इन्होंने वैद्यक विषय पर "सर्वग्रंथमत" की रचना की, जिसमे आयुर्वेद के अनेक ग्रथो से सहायता ली गई है । रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १६३३ दिया है ।

रचयिता का केवल इतना वृत्त मिलता है कि ये गगा के तीर पर निवास करते थे और जाति के त्रिवेदी ब्राह्मण थे तथा राजा वखिडसिंह के आश्रित थे, जिनकी आज्ञा से प्रस्तुत ग्रथ की रचना की । यदि ये वखिडसिह बनारस के सुप्रसिद्ध महाराज बलवतसिंह हो तो रचयिता सवत् १८०२ (महाराज बलवत सिंह का समय) के लगभग वर्तमान थे । खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

४२४. सेवकहित या हितसेवक—इनकी एक रचना "हितहरिवंशजस और मगल" नाम से मिली है, जिसमे राधावल्लभी सप्रदाय के प्रवर्तक श्री हितहरिवश जी का यश और मंगल तथा भक्ति आदि का वर्णन है । इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल तथा लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता । रचयिता का केवल इतना ही पता चलता है कि वे हितानुयायी थे । पर इनका उल्लेख खोज विवरणिकाओं (६–२३२; ३२–१६६; ४१–५७५) मे हो गया है, जिनके अनुसार ये राधावल्लभी सप्रदाय के अनुयायी, श्री हितहरिवश जी के शिष्य और वृंदावन निवासी थे ।

४२५. सेवाराम कवि—ये "शांतिनाथपुराण" के रचयिता हैं और इसके साथ पिछली खोज विवरणिका (२३–३८४) में उल्लिखित हैं । उक्त विवरणिका के अनुसार ये चीसा ग्राम के निवासी, मयाचंद के पुत्र और संवत् १८३४ के लगभग वर्तमान थे । बाद मे ये डीग (भरतपुर) में आकर रहने लगे थे ।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल संवत् १८३४ और लिपिकाल संवत् १६०६ है । इसमें रचयिता ने अपना पूरा वृत्त दिया तो है पर ग्रथ के अधिक जीर्णशीर्ण हो जाने के कारण वह जहाँ तहाँ खडित है । जो कुछ पढ़ने में आ सका उससे पता चलता है कि ये मालव (महामालव) के अंतर्गत देवगढ के निवासी थे जहाँ सावंतसिंह नरेश राज करता था । इनके एक मित्र का नाम खुस्याल था । दो व्यक्तियों—महेसमल्ल और रघुनाथ का इन्होंने और उल्लेख किया है ।

प्रस्तुत ग्रंथ मूल संस्कृत ग्रंथ—जिसके रचयिता सकलकीर्ति थे—का पद्यानुवाद है ।

४२६. सैनदास या सैना—इनकी "प्रभुता रैदासगोष्टि" नाम से एक रचना मिली है, जो "कबीर रैदास सवाद" नाम से पिछली खोज विवरणिका (४१–३०२) मे आ चुकी है । उक्त विवरणिका मे इनका कोई विवरण नही दिया है केवल इतना ही कि ये एक प्रसिद्ध भक्त थे ।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति से भी इनके विषय में कुछ विदित नहीं होता। इसमें रचनाकाल और लिपिकाल भी नहीं दिए हैं।

४२७. हजारीदास (संतदास)—इनकी तीन रचनाएँ मिली हैं, जिनके नाम, १. भक्ती, २. विपर्जैक (विपर्यय) अंग और ३. शून्यविलास हैं। इनमें से केवल प्रथम रचना ही नई है, जिसमें भक्ति और आत्मोपदेश वर्णित है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है और उसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। शेष दो रचनाएँ पिछली खोज विवरणिकाओं (२६–४२७ बी; ३५–४० ए) में आ चुकी हैं। इनकी जो प्रतियाँ मिली हैं उनमें रचनाकाल नहीं दिए हैं। लिपिकाल केवल शून्यविलास में है, जो संवत् १९८८ वि० है। रचयिता का प्रस्तुत रचनाओं द्वारा केवल इतना ही परिचय मिलता है कि ये सतनामीपंथी थे। परंतु उपर्युक्त खोज विवरणिकाओं के अनुसार इनका अन्य नाम संतदास या शिवदास था। उदेरमऊ (सुलतानपुर) के निवासी और संवत् १९०० के लगभग वर्तमान थे। इनके गुरु गजाधरदास जी और ये किसी फौज में सिपाही थे। वहाँ से पेंशन प्राप्त कर दोनों ही विरक्त होकर भूलामऊ (बाराबंकी) में रहने लगे। ये संस्कृत के भी कवि थे।

उक्त विवरण में रचयिता को कबीरपंथी साधु कहा गया है, जो अशुद्ध है। "बानी" के अनुसार वे सतनामीपंथी साधु थे जैसा कि ऊपर लिखा गया है।

४२८. हनुमान कवि—इनके "शिखनख" की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। रचना में श्री राधाजी के शिखनख का वर्णन है और काव्य की दृष्टि से यह उत्तम कृति है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का पुष्पिका के लेख द्वारा पता चलता है कि ये जाति के कायस्थ और लखनऊ निवासी थे। अन्य वृत्त नहीं दिया है। ये प्रस्तुत रचना के साथ खोज विवरणिका (२३–१४७; ४४–४७६) में उल्लिखित हैं, जिनमें इनके रीवाँ निवासी होने की संभावना की गई है, जो अब असत्य सिद्ध हो गई।

४२९. हफीजुल्लाखाँ—इन्होंने प्राचीन कवियों के कवित्त सवैयों का संवत् १९३९ में एक संग्रह तैयार कर संवत् १९४८ में मुंशी नवलकिशोर छापाखाना, लखनऊ से छपवाया था। इसका नाम इन्होंने "नवीनसंग्रह" रखा। इसमें परमात्मा की वंदना, द्रौपदी, गंगा आदि के कवित्त, वीर कवित्त, षट्ऋतु, विशेष रसकवित्त, बाँसुरी, स्वप्न, सिंहावलोकन, परस्पर वार्ता, उपमा, समस्या, फागहोली, फारसी भाषा संयुक्त कवित्त, गूढ़ार्थ, द्व्यर्थक कवित्त, फुटकर काव्य, पत्रसंदेश (बारहमासा, षट्ऋतु और संगीत) आदि विषयों का वर्णन है। ये हरदोई जिला के अंतर्गत बघापुर पाठशाला में अध्यापक थे। इन्होंने प्राचीन कवियों की रचनाओं के बहुत से संग्रह एकत्रित किए पर उनमें एक ही विषय पर और एक ही स्थान पर अधिक छंद नहीं पाए। अतः इसकी पूर्ति करने के लिए इन्होंने प्रस्तुत संग्रह तैयार किया, जिसमें एक ही विषय पर और एक ही स्थान पर अनेक कवियों की रचनाएँ एकत्रित की हैं। संग्रह में अधिकतर प्राचीन कवियों के कवित्त सवैय ही हैं, अतः संग्रह इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हरदोई के बहुत से प्राचीन मुसलमान कवियों ने हिंदी में रचनाएँ की हैं। प्रस्तुत संग्रहकार भी हरदोई का ही एक मुसलमान साहित्यिक है। इस दृष्टि से भी इस संग्रह का महत्व बढ़ जाता है।

संग्रह में निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ हैं—

१. शुकदेव, २. देव, ३. कृष्ण, ४. कवि माखन, ५. कादर, ६. अनन्य, ७. अभयराम, ८. जैतराम, ९. बादेराय, १०. ग्वाल, ११. कवि चैन, १२. द्विज बलदेव, १३ कवि बेनी, १४. तुलसी, १५. छत्रसाल, १६. कवि दयाराम, १७. नाथ, १८. बालकृष्ण, १९. वंशगोपाल, २०. रविदत्त, २१. मोहन, २२. दास पंवार २३. लच्छ (लच्छीराम), २४. पद्माकर, २५. केशवदास, २६. कालीदीन, २७. समाधान, २८. हरचरण, २९. कवि पुष्कर, ३०. द्विजदेव, ३१. शंभु, ३२. मुबारक, ३३, कवि धीर, ३४. महेशदत्त, ३५. श्रीपतिराय, ३६. ठाकुर, ३७. सुंदर, ३८. गंग, ३९. मंशाराम, ४०. ऊधोराम, ४१. मतिराम और ४२. हफीजुल्लाखाँ।

४३०. हरकर्ण मिश्र—इन्होंने युद्ध ज्योतिष विषय पर संवत् १८५० में "समरसार" नाम की रचना की, जो इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ के आधार पर है। लिपिकाल संवत् १८६५ है।

पुष्पिका में रचयिता का अन्य नाम सोपाजी श्रीराम भी दिया हुआ है। ये रावलपिंडी (पंजाब) के रहनेवाले वत्सगोत्री ब्राह्मण थे। गुरु कश्मीर के कोई दामोदर पंडित थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४३१. **हरिचरणदास**—इनकी तीन रचनाएँ १. कविप्रियाभरणाख्या, २. कवि वल्लभ और ३. हरिप्रकाश टीका (सतसई की टीका) मिली हैं, जिनका उल्लेख पिछली खोज विवरणिकाओं मे हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ क्रमश. ४–५८; ६–१०८; ६–२५५ ए; और ४–४, १७–७१, ४१–३१६। इनके अनुसार रचयिता सरयूपारीण ब्राह्मण और चैनपुर (सारन–बिहार) के रहनेवाले थे। जन्म संवत् १७६६ और संवत् १८३४ के लगभग वर्तमान थे। पिता का नाम रामधन और पितामह का नाम वासुदेव था। पहले नवापुर के राजा विश्वसेन और पीछे कृष्णगढ के राजकुमार विरदसिंह के आश्रित थे।

प्रस्तुत रचनाओ मे से केवल "कवि वल्लभ" मे इनका वृत्त दिया हुआ है, जो खंडित है और जिसके अनुसार इनका उपनाम "हरि कवि" भी था। नवापार शुभदेश के अंतर्गत राज बढ़ैया ग्राम मे श्री विश्वभर (संभवत इनके कोई प्रसिद्ध पुरखा) रहते थे। उनके वंश मे वासुदेव हुए। इन वसुदेव के रामधन थे, जो कवि के पिता थे और जिन्होने चैनपुर स्थान मे जाकर निवास किया। चैनपुर सारनि सरकार (? जिला सारन) के अंतर्गत गोवा परगना मे सरयू और गंगा के बीच स्थित है। रचयिता मरुस्थल (? राजस्थान) मे जाकर रहने लगे थे। इन्होंने अपने पिता को 'सूर' कहा है, जिसका तात्पर्य ठीक ठीक समझ मे नही आता। यदि इसका अर्थ 'जन्माध' लें तो कोई अपने पिता को यकायक जन्माध नही कह सकता। संभव है वे वीर या यशस्वी रहे हों।

प्रस्तुत रचनाओ की जो प्रतियाँ मिली हैं, उनमे से केवल अंतिम रचना की प्रति मे ही रचना काल और लिपिकाल दिए है, जो क्रमश संवत् १८३४ और १८६८ हैं।

४३२. **हरिदास बाबा**—इनके दो ग्रंथ "भक्तिविलास" और "मसलविवेक" नाम से मिले हैं। पहले मे भक्ति विषय का वर्णन है और दूसरे मे कहावतो का प्रयोग करके ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल केवल पहले ग्रंथ मे दिया है, जो संवत् १९३८ है। दूसरा ग्रंथ मुद्रित है, जिसमे मुद्रणकाल संवत् १९९२ है। रचयिता रायबरेली के अंतर्गत महाराजगंज के पास बबुरिहा गाँव के निवासी थे। पिता का नाम लालसाहि और पितामह का सुखसाहि था। वर्ण के क्षत्रिय थे। जन्म से साधु स्वभाव के रहे तथा अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा हो गए हैं। अयोध्या के प्रसिद्ध साधु रघुनाथदास जी के शिष्य थे। तुलसीकृत रामायण पर इन्होंने सीला नामक वृत्ति लिखी है, जो बहुत उत्तम है पर अभी छपी नही। इन्होंने निम्नलिखित रचनाएँ की—

१. तुलसीकृत रामायण पर सीला वृत्ति टीका।
२. भक्तिविलास (५०५ सिंहावलोकन छंद)।
३. मसलविवेक।
४. चित्रकाव्य।
५. भक्तिविनोद।
६. प्रश्नोत्तरी।
७ समुझाई।
८. सप्तछंदी रामायण।
९. भक्तमाल।

इनका जन्म संवत् १८४९ मे और स्वर्गवास संवत् १९७२ मे हुआ। इनका 'भक्तिविलास' खोज विवरणिका (३५–३५) मे आ चुका है।

४३३. **हरिदेव कवि**—इस बार इनकी "छंदपयोनिधि" नामक रचना की एक प्रति और मिली है, जिसमे रचनाकाल संवत् १८९२ और लिपिकाल संवत् १९१३ हैं। ये रतिराम के पुत्र और रसिकगोविंद के शिष्य थे। अन्य वृत्त नही दिया है। पिछली खोज विवरणिका (१७–७२ ए) मे इनका उल्लेख प्रस्तुत ग्रंथ के साथ हो चुका है। उसमे भी इनका और कोई विशेष वृत्त नही मिलता।

४३४. **हरिभुवनदास**—इन्होने सुप्रसिद्ध संस्कृत रचना "विष्णुसहस्रनाम" का हिंदी

में पद्यबद्ध अनुवाद किया है, जिसकी एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४३५. हरिराम—ये "छदरत्नावली" नामक पिंगल विषयक ग्रथ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ (६–२५७; १२–७३) मे आ चुके है, जिनके अनुसार इनके विषय मे इतना ही पता चलता है कि ये सवत् १६५१ के लगभग वर्तमान थे। ग्रथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं पर उसमे भी इनका कोई वृत्त नही दिया है। ग्रथ के सबध मे इतना पता अवश्य चलता है कि इसमे सक्षेप मे अलकारो का भी वर्णन किया गया है। उदाहरण के रूप मे दिए गए छदो मे, जो अलकार आए है, उनका लक्षण सहित नामोल्लेख कर दिया गया है। कही कही छदो के उदाहरण और लक्षण तथा अलकारो के भी लक्षण और उदाहरण एक ही छद में दिए हैं। ग्रथ की भाषा मिश्रित है, जिसमे यत्र तत्र खडी बोली का भी मिश्रण पाया जाता है। ऐसा कुछ विदित होता है कि रचयिता सभवत. दिल्ली की ओर का निवासी था।

४३६. हरिरायजी—इन्होने गो० गोकुलनाथ जी कृत "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" पर "भाव" नामक टीका लिखी है, जिसकी सवत् १८७० वि० की लिखी हुई एक प्रति के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल नही दिया है। परतु गो० गोकुलनाथ जी का समय सवत् १६६६ के लगभग है, अत. यही मूल ग्रथ का रचनाकाल माना जाना चाहिए। अब तक इस वार्ता के सबध मे बहुत विवाद चला आता रहा है। कई विद्वानो ने इसको जाली ठहराया है और कितनो ही ने इसका मूल रचयिता कृत होने का समर्थन किया है। अब धीरे धीरे दूसरे पक्ष की ही बातें मानी जाने लगी हैं। भक्तो की वार्ताओ का प्रचार बहुत पहले से होता चला आ रहा है। निर्गुण और सगुण दोनो सप्रदाय वालो ने अपने अपने यहाँ के भक्तो के वृत्तात लिखे है। पुष्टिमार्ग मे भी ८४ और २५२ वैष्णवो की वार्ताएँ प्रसिद्ध है। अत इनको जाली नही माना जा सकता। हाँ, वृत्तातों के विषय मे उन बातो से मतभेद हो सकता है, जिनका सबध भक्तों के व्यावहारिक पक्ष से है, अर्थात् जन्मस्थान, माता पिता और जाति पाँति आदि। पहले भक्ति सप्रदाय मे इन बातो की पूछताछ अधिक नही होती थी। प्रस्तुत वार्ता पर श्री हरिरायजी की "भाव" नामक टीका होने से भी इसका महत्व समझा जा सकता है। ये (श्रीहरिराय जी) श्री वल्लभाचार्य जी के वशज थे और नाथद्वारा (सिंहोर, राजपूताना) मे रहते थे। पुष्टिमार्ग मे ये श्रीवल्लभाचार्य जी के समान ही प्रसिद्ध और पूजनीय माने जाते है। इनका समय सवत् १७५० के लगभग है। अत. प्रस्तुत 'भावटीका' का भी यही रचनाकाल समझना चाहिए। रचयिता (हरिरायजी) का पिछली कई खोज विवरणिकाओ मे उल्लेख हो चुका है, देखिए विवरणिकाएँ (००–३८, ६–११५, १७–७४, ३२–८३, ३५–३८, ४१–३२२)। खोज विवरणिका (६–११५ बी) मे प्रस्तुत रचना भी आ गई है।

४३७. हरिराय या हरियराय (जैन)—इनका "हरिवशपुराण" नाम से एक बृहदाकार ग्रथ मिला है, जो इसी नाम के मूल सस्कृत ग्रथ का हिंदी पद्यानुवाद है। मूल ग्रथ का रचयिता ब्रह्मजिणदास है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४३८. हरिलाल—ये "व्रजविहारलीला" नामक रचना के कर्त्ता है। रचना के अनुसार ये राजपुर (व्रज के अतर्गत) ग्राम मे रहते थे जहाँ राधाघाट है और जहाँ श्री राधाजी का आदिस्थान कहा गया है। अन्य वृत्त उपलब्ध नही हैं।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १६०१ है। रचयिता नवोपलब्ध हैं।

४३९. हरिबंश—"बारहमासा" नाम से इनकी एक रचना मिली है, जिसमे राधा के बारह मासो के वियोग का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय अप्राप्त है। खोज मे नवोपलब्ध है।

४४०. हरिवंश मिश्र—"अराठिका प्रश्न" नाम से शकुन विषयक इनकी एक रचना मिली है। इसकी प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी उसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। रचयिता का भी परिचय अज्ञात है। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

४४१. हरिविलास—इनके "गोविंदविलास" ग्रंथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिए गए हैं। पहले यह खोज विवरणिका (४४–४८८) में आ चुकी है, जिसके अनुसार रचयिता के पिता का नाम कामेश्वर था। ये गोमती तट पर बसे लक्ष्मणपुर (लखनऊ) के निवासी और संवत् १९१९ के लगभग वर्तमान थे। इनका उल्लेख अन्य ग्रंथों के साथ पिछली दो खोज विवरणिकाओं (२९–१५०; २६–१७७) मे भी है।

प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १९३३ है। लिपिकाल दिया नही। इसमे राम और कृष्ण चरितों का काव्यशैली में वर्णन किया गया है।

४४२. हुसन—इनकी शकुन विषय पर एक छोटी सी रचना मिली है, जिसमे इसका नाम तक नहीं दिया हुआ है। इसकी प्रति खंडित है और उसमें रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल संवत् १८९० दिया है।

रचयिता का नाम हुसन है। अन्य वृत्त उपलब्ध नही। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४४३. हित हरिवंश जी—ये राधावल्लभी संप्रदाय के प्रवर्तक के रूप मे प्रसिद्ध हैं। इस बार इनकी दो रचनाएँ १. चौरासी पद और २. बानी (फुटकर पद, कवित्त आदि) मिली हैं। जो क्रमशः पिछली खोज विवरणिकाओं ६–१७४; २३–१६८ए, बी, सी; २६–१७९ए, बी; २९–१५६ बी, सी और ९–२० मे आ चुकी हैं। इनका पूरा वृत्त उपलब्ध हो चुका है और प्रस्तुत रचनाओं मे इस संबंध मे विशेष उल्लेख योग्य बात नही मिलती। अपनी सुंदर रचनाओं द्वारा ये प्रतिभाशाली कवि के रूप मे भी प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत 'बानी' मे इनके १४ पद, ३ कवित्त, २ छप्पय, २ कुंडलियाँ, १ अरिल्ल और १ दोहा है। इसके साथ एक ही हस्तलेख मे प्रेमदासकृत ८४ पदों की विस्तृत टीका भी है। हस्तलेख को हितहरिवंश जी कृत समस्त रचनाओं का संग्रह कहना चाहिए।

प्रेमदास के लिए देखिए टिप्पणी संख्या २२२।

४४४. हृदयराम—ये "चित्रकूटविलास" के रचयिता हैं और खोज मे प्रथम बार मिले हैं। नाम के अतिरिक्त इनका और कोई परिचय नही मिलता। रचना की प्रस्तुत प्रति खंडित है और उसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। विषय, रचना के नाम से ही स्पष्ट है। रचयिता खोज में नवोपलब्ध हैं।

४४५. हेमनाथ—इन्होंने "महाभारत विराटपर्व" का हिंदी मे पद्यानुवाद किया है, जिसकी एक पूर्ण प्रति के विवरण लिए गए हैं। रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १८७५ है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय उपलब्ध नही है। परंतु इनका प्रस्तुत अनुवाद, जो दोहा चौपाइयों मे है, काव्य की दृष्टि से उत्तम है, जिससे इनकी काव्यप्रतिभा प्रकट होती है। खोज मे नवोपलब्ध हैं।

द्वितीय परिशिष्ट

प्रथम परिशिष्ट में वर्णित रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

द्वितीय परिशिष्ट

रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

संख्या १क. वीग्रान बोध (ज्ञान बोध), रचयिता—अक्षरअनन्य, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—१८८२ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—अथ वीग्रानबोध लीषते

प्रीथीचंद नोर्पराज अपुसो ज्ञान कथा हम भाषै।
सकल भांती सबोंधन करी कै संभ्रम कछु न राषै॥
अने अने पछ महताम सबकोउ ज्ञन सुनवै।
तता ज्ञान हर्ष सुनु राज जाय वेद समुझावै। १
तता येक चेतानी सनतान न्रीगुन सर्गुन सोइ।
इत अभास उत भास जनी नीर्प वर्पन गती दोइ।
नीर्गुन ब्रह्म अषाड सद सीवं पार्म जोती गुरजोवै।
सर्गुन ब्रह्म आदी नरायन सो समुद्र में सोवै। २
नरायेन की नभी कवल ते प्रगटे अपु विधात।
तीन आपने मनकी इच्छा ते प्रगट कीन सुत सात।
तिनके वेट नाती पनती संति वठे संतान।
भये जका परीवार पारस सात गो परा वान। ३
वप आज परपाज षोजिकै नसल नसात जो लेषै।
सत्या रीषी ना वीधी नारायन लो साषकी नासल वीसेषै।
नसलु माही संदेह नाम नै नारायन को वाच।
पुर्षन गती की राह न जानै मै कुसंगती काच। ४
पाच सात दस साषी षोजो कै सबकोउ जाती वषानै।
उन पुर्षन की जाती भूलिगै ताते मै देवाने।
कोन कर्म साधे उन पुर्षन कवन कर्म ठहराये।
ते सताकर्म सुने नहीं जानै मिथ्या कर्म उपाये। ५

:o: :o: :o:

अंत—

जीव ब्रह्म नीज जाती येक है यह संदेह न मानै।
मिली अविद्या जोव भयो मिलि विद्या ब्रह्म वषानै।
विद्या नाम पढन को नाहीं ना पोथी ना पुरान।
जैसे को तैसा मत समझो यह वीद्या बीयान। १५
अछार आनन्य कहात यह ग्रंथन वीच भार्म करी दुरी।
"प्रीथीचंद्र" नीप्र राज जानीवो है ज्ञान गत पुरी।

इति श्री वियान बोध संपुरनं समत् १८८२।

विषय—ज्ञानोपदेश।

संख्या १ख. राजयोग, रचयिता—अक्षरअनन्य, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—९ × ६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य,

लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १८८२ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेसयेन्मह श्री गुरुभेन्म अथा राजजोग लीषाते ॥

आतम ज्ञान सो ज्ञन है परामताम ध्याम ।
सो ध्यान सुरोसुर बेद विधन विधान।

बहै सात पत्रा ही दीजं दान धनेसुर अंतारा भक्ती सो भक्ती वाहै गाती अंतरा की पारमेसुर। बेद प्रमान 'ग्रानन्नी मानं' येह भेद सुनो प्रीथीचं नरेसुर ।

छंदरी

यह भेद सुनो प्रीथी चंदराउ । कला चरीहुक सधावउ पाउ ।
याक लोक साधि लोकिक लोग । थानहुक मान रची राम भोग ।
यह लोक सधं सुष पुत्रा वाम । परा लोन सै वसि नार्क धाम ।
परा लोक या लोक कहै अति तात । पतिथा वात करी कस्य नेती ।
याही लोक ना तिनक सुष विलास । परलोक सधै सुष सर्ग वास ।
परलोक लोक दोउ सधाही । लेहि राज्य सोय्यत जोग पाही ।
येह राज जोग ज्ञानी करांत । हुर्ष मूढ़ धर्म सधान अनत ।
याक पवन षैची आसन ना जोरी । या हुथ पावक मट ग्रीव बटोरी ।
याक लंघोत वर्ता कर्ता अंगर षात । याक भर्मता फिरता तीरथान जात ।
याक धम सीततान सहन अग । या पंच अग्नी तापी देह भांग ।

अंत—

आतम ब्रह्म अंध पुनि कहियतु सब्व ब्रह्म है पंग ।
कराज सीधो होय ताव राज जुरं दोउ सो सग ।
सब्व ब्रह्म अताम ब्रह्म से जोग जुरं तौ जोगी ।
न तौ नर पसु पछी वट वारी वन पान रस भोगी । १२
नरदेही को फल याह राज सुछी ब्रह्म औ दीधं ।
ओर सकल संसारी कारज धर्मरीति सो साधं ।
जो कोउ आप आसत की अवं वनी अवं सो दीजं ।
जो कोउ अपु लगे लपटाने जोनी दया सभन पार कीजे । १३
तन कारी मान करी वाच कर्म करी दुष नहिं कहु देनो ।
सव वातन की वात येही है नाम धनी को लेनो ।
अछर अनन्य वेत सीष वहु वीधी पुवजे ज्ञान गुट अर्चा ।
प्रीथी चंद्र नृपराज जनो वो पापर ओरान चार्च । १४

इति श्री ज्ञान समबोधा संपुरनं ।

विषय—ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। रचनाकाल अज्ञात और लिपिकाल इसी से युक्त 'वियानबोध' के आधार पर सवत् १८:२ वि० है ।

संख्या १ग. सुदरी चरित्र, रचयिता—अक्षरअनन्य, कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—८३/४ × ५३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् लाल श्रीकंठ नाथ सिंह जी, धेनुगावां, वस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अथ सुंदरी चरित्र अनन्य कवि कृत लिख्यते ॥

रामदूत

दोहा—सुन्दर पट गुरुनाथ के सुन्दर गुरु उपदेश ।
सुन्दर चरित्र भवानि के सुन्दर सुरथ नरेश । १

सुरथ धरम बिकल राजा भयो केवल धरम निधान ।
सकल नगर कुल जन प्रजा पालहिं पुत्र समान । २

बल

नृपति भार मन्त्रिन दियो आपु करत सुखमोद ।
कै नित नेम शिकार को कै रस वाम विनोद । ३
तब शत्रनि व्यवहार लहि जान्यो नृपति प्रचेत ।
देशमारि उघरो नगर सब परिवार समेत । ४
राजा मंत्रिन बल रहे मंत्रिन कियो विस्वास ।
जाय मिले सब शत्रु लहि नृपति भागि बनवास ।

अंत— दोहा

गुप्त बहै प्रगटै वहै निकट वहै औ दूरि ।
श्री भवानि त्रिभुवन विषै रही सबनि भरिपूरि । ३११
जो जिहि भांति भजै जहां ताको तहा प्रतक्षि ।
त्रिभुवन व्यापक शक्ति बिनु श्री भवानि शुभ लक्षि । ३१२
श्री भवानि शुभ लक्षणी परम सुंदरी जानि ।
ताको सुंदर चरित यह अक्षर अनन्य बखानि । ३१३
जो यह सुंदरि चलि को पढ़ै सुनै मनलाय ।
मन वांछित फल देहि तिहि श्री भवानि जगमाय । ३१४

इति श्री मार्कंडेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्य वर प्रदानं १३ अध्याय ।

विषय—देवी माहात्म्य ।

संख्या २. रामजेवनार (?), रचयिता—अगरदास (अग्रदास), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० हरिशंकर जी, ग्राम–तेंदुआ माफी, डाक–खलीलाबाद, जिला–बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

जेइये जी रघुबीर गोसाइ
जनक सुता जेवनार बनाइये जी

भरत शत्रुहन लछिमन भ्राता । बैठे बोलि लिये नृप साथा ।
धोती पहिरि छिरोवक आई टेक
चोआं चौकी आसन रतन जड़ाये, अति सुंदर झारी भरि आये ।
प्रथमहि मेवा मिश्री खोवा । घीवर पापर लुचुई मेवा ।
खीर खांड घृत लाडु लडावन । परसत कौशिल्या मन भावन ।
सेव सोहारी पुहुप अदरसा । पीठापाक जलेबी हीरसा ।
नासपती बदाम छोहारे । लंवग पाक अरु पाक सिंगारे ।
नरिअर भोग लगत गिरि वौरा । छोलि धरे खरभूजा केरा ।
घिरिचा बाक बरोवा रोरी । खांड कटोरन उरिद वरोरी ।
पाछे भात विविध परसाये । राज भोग औ झिनवा आये ।
हीरीसा बासमती सुखबरनी । बेद वीरि साठी सुभ बरनी ।
उरिद दालि अरु मूंग दराये । चनादाल बहु भांति बनाये ।
कनक कटोरन भो घृत आये । सो लेइ राधे निकट धराये ।

अंत—

रतन सिंहासन रघुवर बैठे पुहुपनि की बरषा बरषे ।
कनक भवन में डारि दुलैचो ओट किये पीताम्बर की ।

पांच सब्द बैजंत्र बजावैं गारी गावत नारि पंचम सुर की ।
कूअर कूअँरि गारी देत परसपर नारी हंसै नृप के कुल की ।
लालन मंद मंद मुसुकाने । टेक ।
लाड़ली घुघुटी में मुसुकानी
हास विनोद सुधा रस सींचत आनंद वेलि बढ़ी उर की ।
जे अरुझी सरुझीन परे लघु मोहन सीस परी भुर की ।
अगरदास, धनि धन्य सुनैना बार बार सीता बर की ।

:o: :o: :o:

अचवन कीजै कृपानिधान ।
ब्रह्मादिक जल झारी भरि लाये घरिका इनर सुजान ।
जै विजै सुष सेज सवारे नारद लेइ आये पान ।
सनक सनन्दन चोर डोलावैं गावे जैं भगवान । ३ ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का केवल एक ही पत्र मिला है जिसमें रामचंद्रजी के जेवनार (जनकपुर) का वर्णन किया गया है। रचनाकाल तथा लिपिकाल का उल्लेख नहीं। रचयिता 'अगरदास' का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या ३क. झूलना (ककहरा) (?), रचयिता—अजबदास, कागज—देशी पत्र—३, आकार—८।। × ३।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—ह् वाजता आपुछा चारि वाजा १२
ढा ढा रू वेढारु यह पास जो पास है टेक दे मुक्ति की लाउ वाजी
काम औ क्रोध सोई नरद को गरद करि जीति जो पाइए होत राजी
भगति भगवान की हेरी हीरदे वसि लेत है अंत में नाम साजी
'अजबदास' डंक दे जात घर आपने बोलता द द जम वाह वाह जी १३
ता ता वुक ना तवना तवहु विधि बने मातु अरु तात पितु वधु नारी
राज औ पाट जगठाट को देखिकै भूलीमती जाइ योही अनारी
राम के नाम सो नेह तु ना कीया जाइहै छुटि सव वस्तु सारी
'अजबदास' मूढ़ पछिताइगा येक दिन फेरी नाही पाइहै औसि वारी १४
था थू कवे थूक उस जीवना जन्म भजै न राम नर देह पाइ
मूढ़ दिन राति विष घोरि भरि भरि पीवै अमी को हाथ सो देत नाइ
मोह मासान मे सोवता है सही जागवे होइ तव जागु भाई
'अजबदास' बात कौ बुद्धि विचारि कै होहु गोयिद की सर्न आइ १५

अंत—
ला लोग कुटुंब परीवार जो जात मे ब्रह्म वानाइ एक ठौर कीन्ह
ऐसही नात कोइ मानता नाहि तौ मया की फास गर वाधि दीन्ह
मोर औ तोर झकझोर में भूलिये पास ही राम को नाहि चीन्हा
'अजबदास' मूढ़ पछिताइगा एक दिन अमी को छोड़ विष मोल लीन्हा २४
वा वार औ पार तौ सूझता है नहि लोभ दरिआउ अति जानु भारी
तासु परवाह मे जातु है जग वहा डूबता है आइ जो लाइ तारी
लेत उसास गंभीरतेहि बीच में जोगी अरु जंगम ब्रह्मचारी
'अजबदास' संत कोइ वाची भी जात है राम की क्रीपा की वात न्यारी २५
स सा सउसास को भेद सो सारा है नभि अरु नासिका येक लावै
वारही वार अनरुद्ध उच्चार करि पवन ब्रहमंड के षंड जावै
बीना मिरदंग गति मेरि तरु वाजती सब्द रकार लै राग छवै
'अजबदास' ध्यान धरि चीन्ह ले अपु को फेरि संसार...... ।

—अपूर्ण

विषय—ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता 'अजबदास' के नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय प्राप्त नहीं हुआ ।

संख्या ३ख. दोहा और कवित्त, रचयिता—अजबदास, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रदसादास जी, स्थान व पोस्ट—अछरावाँ, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ लिख्यते दोहा शाहेब अजबदासकृत ॥

गुर समान कोइ बैद नहि रामनाम सम चूरि ।
"दास अजब" परतीत ते होत व्याधि सब दूरि ॥ १ ॥
रामनाम नौका भलो गुर भल खेवनहार ।
"दास अजब" भवसिंधु ते बेत अहै करिपार ॥ २ ॥
बाट चलत अरु सोवते पानि पियत अरु खात ।
"दास अजब" बिसरै नही कही गुरु जो बात ॥ ३ ॥
"दास अजब" संसार यह ज्यो केदली को डार ।
अंतर वाके देखिए कछू न निकरेसार ॥ ४ ॥
रसना रटि जल मे गयो काकरि माला जाय ।
दास अजब गुर मता विना मिटेउ न तीनिउ तांप ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

कवित्त

तारेउ है कोल औ भील मलेजन नाइ वो धोबी कसाई औ भंगी ।
केवट वो ठग डोम जोलाह चमारन के घर के रसरगी ।
ऐसोई काम कियो है अनेक न एक तरो कहू विप्र अर्धगी ।
"दास अजब" यह जानि परी अब नाथ अहो तुम नीच प्रसंगी ॥ १ ॥

अंत—

ब्रह्मज्ञान रसायनिकोमत देव कथा अरु वेद मझावै ।
वेद कुव्याकरण धुनर्धर जल तरंग सगीतहि गावै ।
सर नाटक श्रा अस्वारोहिनि कोकचर उर चातुर कहि आवै ।
कहै 'दास अजब" सब सेख कला अरु चौदा विद्या य कहावै ॥ ५३ ॥

इति श्री ग्रंथ कवित्त शाहेब अजबदास कृत संपूरन ।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल संवत् १६५० है। देखिए अह्लाददास कृत "बानी" का विवरण पत्र ।

रचयिता का नाम अजबदास है। ये जाति के ब्राह्मण थे। ग्रंथ स्वामी के कथनानुसार ये बलिया (?) स्थान के निवासी थे। ये वैष्णव थे।

संख्या ४. सेउसमन की परिचयी, रचयिता—अनंतदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५३/४ × ४५/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—सत्त सहब कबीर को दया लीषते सेवोसमन की प्रची ॥

सधू आये अगमते मोहमोई कीयो गोण ।
ठौर ठौर पुछत फिरै समन का घर कहू आय ॥ १ ॥
ठार ठाडे भये जब त्रिया दीनी सैन ।
तब समन मुष मोडिकै वेष्या अपने नैन ॥ २ ॥

समन उठि सनेह करि बरसन का फललेहुं ।
मुष छिपाया नावरण सनमुष हुं सुष वेहु ॥ ३ ॥
समन सेरी सांकड़ी क्यूं करि टरिय जाय ।
साधू ग्राया प्रीतसू मिलिये उजल भाय ॥ ४ ॥
संमन प्रक्रमा वई मिल जो अंग लगाय ।
बहोत उमंग मन मैं भयौ सो कंठ छोड्या जाय ॥ ५ ॥
सेऊ ग्रायो वौरि कै प्रसन हुवो मन ।
हूं बलिहारी साध की तपत मिटी मो तन ॥ ६ ॥
समन की त्रिया उठकर भरि करि ल्याई नीर ।
बड़ी प्रीत बरनन लगी पाव पछाल्या नीर ॥ ७ ॥

अंत—

जब रामराय कृपा करी दूरि किया सम दुष ।
राजा ग्राय चरना परघौ भयो समन को सिष ॥ ६० ॥
पुर पटन मे नीपजें दोनों हरि के संत ।
सऊ समन की काथा बरनी वास ग्रनंत ॥ ६१ ॥

इति सेऊ समन की प्रचोई । सपुरण समपती वसकत मनुहरवास के ॥

विषय—सेउ समन नामक भक्त की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल दिए नहीं । रचयिता का नाम ग्रनतदास है । इनका ग्रौर कोई परिचय नहीं मिलता, परतु स० विवरण मे ग्राए नामदेव ग्रौर पीपा ग्रादि सतो की परिचयी रचनेवाले यही जान पडते है । उक्त विवरण के ग्रनुसार ये सवत् १६४५ के लगभग वर्तमान ग्रौर साधु कृष्णदास के शिष्य थे ।

संख्या ५. स्वप्नभेद, रचयिता—ग्रमरसिंह, कागज—देशी, पत्र—४, ग्राकार—८१ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

ग्रादि—ग्रथ स्वप्न विचार लिषते ॥

स्वपन विचारैं लिषत हौ । भाषा सरल सुभेद ।
जेहि समुझै सभ सहज ही रंचिक होए न भेद ।
प्रथम प्रहर जौ सपना देषै । वर्ष एक मो सो फल लेषैं ।
दुसरे पहु मास षट जानौ । ताके ग्राधे तीनि वषानौ ।
चौथे यह पाछिले घटिका । दस दिन वादि होए सो सतीका ।
एतनेऊ स्पन विचार । सुभ ग्ररु ग्रसुभ भेद निरुग्ररा ।
स्पने बैल चढ़ै जो कोइ । वाहा वीतेहि वाहन होइ ।
धौरा हरी स्पने चढि जाइ । तरीवर चढीवो स्पन देषाइ ।
नाव चढै जल ग्ररू जोइ । वीना वाद वजावत होइ ।
भोजन करै स्पन के अंत्र । ग्रर्थ लाभ सो होए निरंत्र ।
स्वसंत घातर्काम ग्रगमो प्रने मिथ्या ग्रधिकाइ ।
अंग सुष विष्टा लगै रुधिर वहत विलखाइ ।
जहा ग्रपनी गति नहि जावै । स्वपन मधि भ्रम ग्रगम जनावै ।
ग्रैसो स्पन धन्य सुष साई । ग्रपर स्वपन को भेद वताई ।
निर्पत के जर है जोयै देषै । सोन वृषभ स्वपन विसेषै ।

:o: :o: :o:

मानुमासुहिं षाए जौ स्वपन मध्य सुष पाय ।
रोग्रा होय कि काव वर फल वह कहत वनाय ।

अंत— **दोहा**

स्वपन भेद बृहस्पति कृत एह ग्रंथ प्रकास ।
'ग्रमर सिंह' भाखो करी सरल मिर्डल सुख भास ।
दुष्ट स्वपन जो देखई सांति करै सोई जानि ।
चंदन लाल जु सर्फ जुत होम करै ग्रनुमानि ।
गाइत्री सहस्त्र जपि ब्राह्म भोजन साज. ।
सांति होइ एहि भाँति सो दुष्ट स्वपन दुख राज ।
अंक अंक ग्ररु गंज सहित तामें चंद्र मिलाय ।
बाम लिखे संवत बनै भाद्र त्रियोदसि पाय ।

इति स्वप्न ग्रधियाय स्माप्तः ॥

विषय—स्वप्न विचार ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। सभवत. यह प्रति मूल प्रति है। रचयिता ग्रमरसिंह ने वृहस्पति कृत स्वप्न विचार के ग्राधार पर प्रस्तुत ग्रथ भाषा मे रचा। ग्रन्य परिचय नही मिलता।

संख्या ६. रघुनाथ शिकार, रचयिता—ग्रयोध्याप्रसाद वाजपेयी "ग्रौध", स्थान—सांतनपुरवा (रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—१४, ग्राकार—७ × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—३०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—ग्रस्पष्ट, मुद्रणकाल—सन् १६१५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुँवर सुरेशसिंह जी, कालाकाँकर, प्रतापगढ़।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः। रघुनाथ शिकार

सिद्ध के खंभ ग्रधार ग्ररंभ के दंभ दुरास गिलानि को गाड़िले ।
सुंड उदंड सों दंत दुरंत दरेर दवाय तमोगुन ताड़िले ।
हे गण नाह उछाह कि बाँह दै ग्रापने ग्राश्रित "ग्रौध" को ग्राड़िले ।
देश विदेश न लेश कलेश तुम्हारी दया सों महेश के लाड़िले ।
छमियो ग्रपराध दया करि भारती ग्रवसों ग्रौध विनीत बतावों ।
तव चेटक पेटक हेतक केतक नीचन बीच न नाच नचावो ।
हित हानि गलानि सही न कहीं तेहि सोधक बोधक यो वर पावों ।
सियराम रटों रस नाम सदा सुखधाम कि चंद्र ललाम रिझावो । २ ।
जय शशि मौलि सुकंठ सीय सौमित्र सुकृत सुख ।
वैनतेयजित वेग बरि वज्रांगबली मुख ।
लूम लोम नगलाय ललकि लंकाधि विमरदन ।
मंगलायतन महि मुनीस नर ग्रमर जन रदन ।
संतत समर्थ सरणद सदय सानुकूल संदोह सिधि ।
ग्राधार ग्रवध ग्रारंभ के ग्रांजनेय ग्रानंद निधि । ३ ।

अंत—इति श्री द्वितीय कला समाप्त ।

नृप बर कुमार । रघुबर उदार ।
सन्तन ग्रधार । सुन्दर सिकार ।
सम्वत ईश्वर तस बनै तापर बाइस टेहरा ।
हस्ता कवरी ग्रान जोग सित जेठ दसहरा ।
तव रघुनाथ चरित्र पवित्र सिकार सवारी ।
लिखि हरिशंकर बाजपेइ प्रभु रुचि ग्रनुसारी ।
पाँडे पुनीत नृप मुकुट मनि राम रसिक नित उदित चित्त ।
श्री कृष्णदत्त महराज प्रति ग्राशिष परम प्रमोद हित ।
जय जय जय श्री राम सच्चिदानंद ग्रमघ ग्रवतारी ।
ग्रज ग्रखिलेश ग्रनुग्रह विग्रह ग्राविरभूत मुरारे ।

:o: :o: :o:

अवध नाथ अविवेक अनन्वित सुमन सुमन करिकारी।
बान मान संतोष साज जय जय रघुराज तुम्हारी।१६।

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा सम्वत् १६२३ वि०

विषय—रामचंद्रजी का शिकार वर्णन।

रचनाकाल

सम्वत ईश्वर सत बनै तापर बाइस टेहरा।
हस्ता कवरी आन जोग सित जेठ दसहरा।

संख्या ७. विनयशतक, रचयिता—बाबा अवधप्रसाद, कागज—आधुनिक, पत्र—४०, आकार—८३/४ × ७६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन प्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—परान पांडे का पुरवा, पोस्ट—तिलोई जिला—रायबरेली।

आदि—अथ श्री बाबा अवधप्रसादकृत विनयशतक प्रारम्भ।

श्री गणेशाय नमः

वंदौं श्री गणपति वरदायक।
जय गिरिजानंदन जगवन्दन शंकर सुवन सहायक ॥
सिद्धि पुरुष गजवदन रदन यक लंबोदर अधिनायक।
प्रणतारनहर विघ्न विनाशन देव आदि विनायक ॥ २ ॥
नाम महत्व जानि सर्वोपरि पूज्यमान सब लायक।
जेहि ध्यावत पावत फल अभिमत गावत निगम सिद्धि मुनिनायक ॥ ३ ॥
अवहु दीनजन जानिगजानन देहु दया करिवर मन भायक।
बसहिं रामसुखधाम "अवध" उर कर सरोज लीन्हें धनुशायक ॥ ४ ॥

अंत—

रामकृपालु कृपा अब कीजै।
भवभय विकल पुकारत आरत नाथ विनय सुनि लीजै ॥ १ ॥
पाँच पचीस चारि दश तीनिउ षट विचार युत माया।
यह उपाधि परिहरहु करहु अब कृपासिंधु निजदाया ॥ २ ॥
मायाप्रबल तिहारी माधव शिव विरंचि भ्रमि जाहीं।
जे ऐसे सर्वज्ञ महातम नर पामर केहि माहीं ॥ ३ ॥
भवनिधि तारन अधम उधारन विपति विदारन हारो।
हे जगदीश ईश ? करुणामय ! कृपाकटाक्ष निहारो ॥ ४ ॥
बार बार कर जोरि विनय करि निज दीनता सुनाई।
"जगजीवन" जगदीश जगतपति लेहु "अवध" अपनाई ॥ ५ ॥ १०० ॥

॥ इतिश्री विनयशतक सम्पूर्णम् ॥

संख्या ८. कवित्त रचयिता—अवधेश, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८३/८ × १११/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रतिपाल जी द्विवेदी, ग्राम—पश्चिम विसारा, पोस्ट—मुसाफिरखाना, जिला—सुलतानपुर।

आदि—.............................

................लाज करो राघव जनको ॥
जहँ कहुँ गाढ परयो संतन्ह कँह काटयो विपति कि वेरी।
लयसगलानि नाम ध्रुव तारयो दीन्हो अचल परमपद हेरी।
पिता वयर प्रहलाद जो कीन्हौ करि सांसति तेहि जनहि निवेरी।
ग्राह ग्रसे गजदीन पुकारयो त्राहि त्राहि आरत हित टेरी।
ताहि नेवारि विकट संकट तें दीन जानि दीन्हो पदफेरी।

रावौ लाज दास बसिन्ह की गँह संकठ तहँ प्रगट बझेरी ।
प्रथम जानि "अवधेस" विसारयो अहहु कहाँ कोन्हो बढि बेरी ।। १ ।।
महा मसक सकहुँ नहि पाया औ येहि सब का भेव बताया ।
नर नारी सकल तरैया आपनि आपनि गरज सुनाया ।
कोई विद्यापढि फिरत भुलानो वेभी गरजी अरज सुनाया ।
कोई तन रंगि बहु वेष बनाया भक्ति भव कर भेद न पाया ।
कोउ करि काया कष्ट जतन बहु मर्महि जगमन धीर न आया ।

:o: :o: :o:

पुनिया याम कुइ राह चलायो हिन्दु तुरक बनाई ।
कोधौं बन्दो करै बन्दगी कौन गली भिकराई ।
दीन दुनी बरम्यान पाक सो साचा सोह कहाइ ।
रहै बंदगी हाजिर हरदम छोड़े कर्म कसाई ।
बन्दा नेक भिस्ति सो पावै भ्रष्ट दीन दोऊ जाई ।
काजी मोल ना भए फिरिस्ते भूत बस्त पंडिताई ।
पढत पुरान कुरान जनमगा दिल में दरद न आई ।
साँच सो बंदा साँच बंदगी साँचावली कहाई ।
हजरति हाजी वेद किताबै सिद्धि संतन गोहराई ।
साँचा पीर गुरु सो पूरा जाके पीर पराई ।
कहै "अवधेस" अर्व नूरा झरि दरद बंद लखि पाई ।।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

संख्या ६. अरस आसिकगदा, रचयिता—अहमकसाह, कागज—आधुनिक, पत्र—१२, आकार—७३/४ × ५१/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी देवनारायण श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर टढेई, डाकखाना—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—सत गुरु साईं मोहन की दाया ।। अरस आसिकगदा ।। भाखते अहमक साह ।। बसपत लीवा अबरन साह अबधुत ।। बोलो हंसौ साईं मोहन की जान बंदगी ।। जान सलामति बारमबार ।।

।। गवाही ।।

आसिक गदा पुकारते साईं मोहन के मैदान ।
सनमुष फना भे चरन पर अहमकसाह हंस सयान ।।

।। बयान ।।

धनि हंस जो सनमुष आये । काया माया प्रान लुटाये ।।
डरं न मरै जिये को भाई । सब्बुर संतोष अमर पद पाई ।।
पुरस पद को बुझि अघाने । दीन पाये दिन दुन मोटाने ।।
तन दुरबल मन से वह चंगा । सत गुरु अइमि पेलें हुरदंगा ।।

।। जबाब ।।

अस सतगुर समरथ भुष पियास हरि लेत है ।
अहमक साह परै न कस्ट पद सुमिरत साईं मोहन मिलै ।।

अंत—
।। बयान ।।

आसिक गदा अरस सम्पुरा । पढ़ै गुनै मिलै साँई के नुरा ।।
बुझि बिचारि येक भे साँई । जहाँ से आवा तहाँ को जाई ।।
यहै तन धरै यहै तन माही । पुरस निह इच्छित कलप तरु पाई ।।
जब आवै सतगुर तन पावै । बहुत हंस निरबंस करावै ।।
बोलो हंसौ साँई मोहन की चरन सलामति चरन बंदगी बारमबार ।।
सति साँई की दाया ।। सतगुर की दाया ।।

विशेष ज्ञातव्य—विषय की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत ग्रंथ निम्नलिखित ग्रथो के साथ एक ही हस्तलेख मे है—

१. अरस आमिक विनोद—महाआनद साह कृत।

२. अरम भक्ति बोध—माई मोहन दास कृत।

संख्या १०क. वार्ना या शब्द, रचयिता—अहलाद साहेब, स्थान—सरदहा, कागज—आधुनिक, पत्र—१५, आकार—८¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महन्त गुरुप्रसाद दास जी, स्थान व पोस्ट—बछरावाँ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः लिख्यते वानी शब्द होरी अहलाद साहेब की।

नंद महर घर धूम मची होरी खेलत सब व्रज नारी री।
कोउ कुकुम कोउ अबीर उड़ावै कोऊ कंचन पिचकारी री॥ १॥
कोई कोई झगरि लेत फगुवा कोई देत जसोदही गारी री।
कोई मसि रोरि लायकै मुख छुवै कोई बढ़ावै रारि री॥ २॥
लै चरि पकरि खीचकर झूमठ कोइ नहि सुनत गोहारि री।
जन "अहलाद" उमग भरे सब भेटत अंक पसारि री॥ ३॥
आजु ब्रज बंसी बाजत री।
ग्वाल बाल मिलि फागु रचि बीच कृष्ण विराजत री॥ १॥
एक बार सोहै मयक मुख विधुपूरन लाजत री।
घूंघट वोट दै चोट करै सुर धीरज भाजत री॥ २॥
वुख वारिद को मुख कार किरा जेइ जगे सो गाजत री।
"अहलाद" बिखाद गयो उनको सुख सोभा राजत री॥ ३॥
बलिहारी तुम्हारी प्रीति की,
सेवरी क जूट विचारन कोन्हेंउ ऐसे सहज सुभायन रीति की॥ १॥
सुनियत कीरति धना सधना गनिका गज गीध पुनीत की॥ २॥
आवि ते जरु जहान वृदावल विदुर विचारे मीत की॥ ३॥
कुरिया सुख पूरन कौन करै "अहलाद" सुवामा चीत की॥ ४॥

अंत— **पहुंचा न लेउ रंग लगाइ।**
जौ सुर्दिष्टि निहारु सरूय कवन केरि विसाई॥ १॥
पलटि जाइ प्रकृति मनकी ज्ञान प्रगटै आइ।
लीलीन होइ होइ ध्यान लावै मिलै हरि गोहराइ॥ २॥
पाच बहुत प्रकार ते यइ देहि रस उपजाइ।
पवन स्वांसा गुंजि निसु दिन नाम रत अधकाइ॥ ३॥
निरवान निरमल होइ रहै चौगान मन ठहराई।
सुरस सति सनेह सागर भाउ ते भरि खाइ॥ ४॥
सखदा सतजुग चराहै कलिकाल गति बिसराई।
जोर तोर मसमो बीते सुरति अनत न जाइ॥ ५॥
धन्य जग औतार उनका तकेउ मै ठहराइ।
बिन क्रिपा राम कृपाल क जंजाल कबहु न जाइ॥ ६॥
करौ विनती दीन होइ कै करण सीस नवाइ।
जगजीवन जन अहलाद क अरक्यार हुकुम बजाइ॥ ७॥

शब्द ४३ इति श्री शब्द साहेब अहलाददास कृत समाप्त॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ स्वामी के कथनानुसार ये स्वा० जगजीवनदास जी के भतीजे थे जो स्वा० जी के ही अनुयायी हो गए थे। इनकी प्रस्तुत रचना बहुत सुदर है।

हस्तलेख मे प्रस्तुत रचना के साथ निम्नलिखित ग्रथ भी हैं—

१. अवधविलास—लालदास कृत
२. ज्ञानप्रकास—सुंदरदास कृत
३. विचारमाल—अनाथदास कृत
४. राजजोग—अक्षर अनन्य कृत
५. बानी—गिरवरदास कृत
६. आलिफनामा—रामसहाइ कृत
७. आलिफनामा—बजहनदास कृत
८. कुंडलिया—पलटूदास कृत
९. दोहा कवित्त—अजबदास कृत
१०. दोहा—पुरुषोत्तमदास कृत

५, ६, ९ और १० सख्या की रचनाओ के विवरण लिए गए हैं। शेष रचनाओ के विवरण पहले कई बार लिए जा चुके हैं।

संख्या १०ख. शब्द झूलना, रचयिता—अहलाददास, स्थान—शरदह (बाराबकी), कागज—आधुनिक, पत्र—२२, आकार—८ × ६¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ।। लिखि शब्द झूलना बानीसाहेब अहलाददास की ।।
।। झूलना ।।
ग्यानते मर्मकरु क्षमा सब कर्मकरु सीलहि नरम करु दयाराखौ ।
कपट को काटि औ कुमति को कूटिकै सुद्धि करि नाम सुभ शब्द भाखौ ।।
पाप औ पुन्य दोउ छुंनि बैराग में धुनि सतनाम धरि धीर राखौ ।
पाँच की पैंड तजि तरक करि तीनि सो चारि में चरन चित चूरि राखौ ।।
दीन के द्वार मे दया की चौक करि सुमति की सेज मम सुमन राखौ ।
भाउते प्रेम दरियाव होइ घट भरौ प्रगट नहिं करौरस गुप्त चाखौ ।।
गुरु को बानलै पैठि चौगान में जगत की आसते कियौ साखौ ।
कहत अहलाद जगजीवन के चरन में सीस यक भाउ दिन रैनि राखौ ।।१।।

अंत—
रमित जे सर्व में जानि कापार में अलख निरवाँन वै राम गावैं ।
कोउ सुखवाँनि पहिचानि वरनन करै दीन के बंध जग सुयस गावैं ।
विपति कहेरान कोइ सिद्धि के करन कहि उधमुख अधर करि ध्यान लावैं ।
बालदुखहरन कोउ अलख गति करन कहि बरन आवरन भजि सुफल पावैं ।
जहाँ लहि नाम विस्राम के गुनन्ह के प्रगट ससताहि जस समुझि आवैं ।
"दास अहलाद" अब सरन तेरीपरा अधम उधार सो अरज लावैं ।। २७ ।।

संख्या ११. सियाराम गुणानुवाद, रचयिता—अहलाददास, स्थान—महुली (बस्ती), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१०।। × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १८१४ वि० (१८२७ वि० ?), प्राप्तिस्थान—श्री प० राजेश्वर प्रसाद जी शुक्ल, ग्राम—बनगवां, डाक—महसो, जिला—बस्ती।

आदि— दोहा
साहेब सीताराम हे जन पर होहु सहाय ।
चरन कमल रत देहु मोहि रहों तुमार कहाय ।
सोरठा
करो विनै कर जोरि करुनाकर प्रभु दीन हित ।
जानत इच्छा मोरि देहु भक्ति अनपायनी ।

छन्द

गावैं चरित अति अमित नित भक्ति वर सो पावहीं ।
पावैं पदारथ प्रेम नो भौ सिंधु पार ते जावहीं ।
जावैं सो पार अपार कल वैकुंठ थलहिं सिधावहीं ।
तव चरन जनहित भरन गुन गन निधि जो ध्यावहीं ।

दोहा

अवधपुरी ते पुरुवदिसि 'महुली' मोर महाल ।
रवि कुल तिलक प्रसिद्ध जग सर्कराज महिपाल ।
तासु तनं जग विदित भै पुन्यमई छितिपाल ।
सम सत्रुन पर सेर सम समसेरबहादुर पाल ।
तहा मताश्रम नगर सुभ वसत दास अहलाद ।
कीन्ही वंदन प्रेम ते सियाराम गुनवाद ।

छन्द

भौ सप्त अति सुचि चौपई सियराम पद वंदन कियौ ।
जुग करन नव दोहा मृदुल नौ छंद पद प्रमुदित दियौ ।
सुभ षड सोरठ सुभग सुचि हरि चरित सुभ वंदत करयौ ।
येक सत अरु अष्ट परमित सियराम गुन गन मम भरयौ ।
१८ १४
वस अष्ट सत द्वै सप्त सम्वत् मास कार्तिक सुभ घनो ।
पंचमी तिथि सुकुल पच्छे प्रेम जुत वंदन बनो ।
सियराम गुन गत परम निधि जो सुमति जन निति गावहीं ।
पावैं पदारथ भक्ति पावन चरन चित बहु ध्यावहीं ।

इति श्री सियाराम गुनावाद अस्तौ 'अहलाददास' कीरते संपूरनं अथ लछिमन बाला प्रेम-अस्तौ आरंभ । :o: :o: :o:

अंत—हौं अनुचर तव पांयके सरन गहेव प्रभु आय ।
कोजै कोश क्रिपायतन जैति जैति तव पाय । २४
जै अंजनी सुअन जै त्रिभुअनपति प्रियप्रान ।
सदा दीनहित विरुद तुम्र करहु दास कल्यान । २५
हनोमान सनमानि जन करिये क्रिपा क्रिपाल ।
समन करत त्रय ताप के सरनागति प्रतिपाल । २६
सप्तबीस दोहा सुभग वंदन हनुमत कीन्ह ।
स्वारथ भक्ति अउ प्रेके चरन कमल चीत दीन्ह । २७

इति श्री हरहर बोल छितवो हनोमान चरित्रे प्रेम अस्तौ अहलाददास कीरते संपूरनं ।

संख्या १२क. परचुरण पद, रचयिता—आत्माराम, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—६ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० गयाप्रसाद जी पाण्डेय, अध्यापक, मिडिल स्कूल, कुडा, डाक—कुडा, प्रतापगढ़ ।

आदि—अथ परचुरण पद तथा श्री बाला जी महाराज ने नीत्यमांपद तथा ब्रज लीला लखीछे ॥

राम भजी ले भाई मन तुं रांम भजीले भाई ॥
उतमतु जमदेह मलीछे कर लेजे तु कमाई ॥ मनतु ॥ १
ना लपराउ तो गयुछे रमतांपछेन वानी आवा ॥
नारी परणो थयो रणी. . रली मुवो तुं धाई ॥ मनतु ॥ २
वड. . ण तारे आवीयो. . लो येक शुंन जो शुजनधां चीनो ।
बल धीयो तेतरणापुंतमतारणछाई ॥ मनतु ॥ ३

आंछोकर घरमंकामेमे तु परणावे असमाफ माथा उपर मेदशापघावे ।। ४
अवलखे सुखनांवेला अंतेलाहमकोई ।।
अंत काले सखे गलां रहेसे संगा सहोवर रोई ।। ५
आगल अवसर मोह आवे तारे नमेस्तु करसो ।।
राम नाम तेन वलीघुमाटे चोरासी फरसो ।। ६
धंधो करते टलीज सोने तारे गतसी थासे ।
अवलां सवलां बंधन वांधी वुत लई ने जासे ।। ७
आव्यो तो तु वांधी मुठि जासोहाथ पसारी ।
मेत प्रेत करीने नासे पासे रेहेती नारी ।। ८
घणां घणां ते दुखने पामी लाखी माया जोरी ।
धागोतारो काटीलेसे पासे नमले कोडी ।। ६
धक पहूं सङ्ग रहे से घरमा साथे कायन आवे । साधुजन नीकरतु संगत ते तुमने बतलावे ।।१०
धरमदानमां धन खरचीने ग्रांमण हाथे देजे । जेतु आपी सतेतु पामीस बमण खोली लेजे ।।११
रखे मायामां रेहे लपटाइ. . .तेन थी कोयतारू । सावधान तुंछे जांसुधी समफि लेतो सारू ।।१२
जोवनी आवे तोतुं लेजे रामकृष्ण मुख वाणी । साथ घड़ीमां एक घडी तु समरे सारंगप्राणी ।।१
दया दीनता राखी मनमां सेवा समरण करजे । आसंसार समंदुर सेहेजे भजन करीने तरजे ।।१४
आगल पाछल जोने वीचारी सी सीखामण तु आकी । 'आत्माराम' तुहरी भजीले तोतु कीते वाजी ।। १५

अंत—राजाधिराज सरनमो आयो ।।
सरन तेरो आयो भयो मनभायो ।। टे
वंधु मातपिता तुम मेरे या भव सीधुते तुमहि उवारो ।।
तुम वीनु ठौर और कोन मेरो । जाय कहू दुख मेरो जे टारो ।। राजा ।। १
साधन तो मेहे कछुवन कीनो तुमहि तुमारो विरद समारो ।
पतीत पावन कीरपा कीजें मेहे पतीत परी दास तुमारो ।। राजा ।। २
दीनानाथ दीन बंधु दया नीधातरं धारमे करउ पुकारी ।
'आत्माराम' को अधम जानके सुन लीजें ज्यौ अजामिल तारयौ.।। राजा ।। ३
नहि कोइ नहि कोइ नहि कोइ मेरे ।।
तुम बीन और नहीं कोई वेग संभाल करो मेरी वाला कहां लों गुन कऊंमे तेरे ।। नहीं ।। १
क्षमा करो अपराध हमारो वेर वेर काहा कऊं टेर टेरे ।।
'आत्माराम' को अधमजन के चरन कमल राखो प्रभु नेरे ।। नहीं ।। २ ।।

संख्या १२ख. ब्रजलीला, रचयिता—आतमाराम, कागज—देशी, पत्र—२६४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० गयाप्रसाद जी पाडेय, अध्यापक, मिडिल स्कूल, कुडा, डाक–कुडा, (प्रतापगढ़) ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः अथ श्री व्रजलीला लीखीछ

॥ दोहा ॥

श्री गरुने चरणोनमु जाचुबे करजोड़ ।
व्रजलीलाने वरणवु कोपन देशुखोड । १
रामा अवतार पुरण थयो करी राक्षस प्रगटासार ।
श्रीकृष्ण चंद्र प्रगट थई उतारो भोमीभार । २
रामा अवतार राक्षस मारी आपु पधारो धामे ।
तार पछी फरी राक्षस वलीआ प्रगटा माहा वलवाने ।
माहावली यावलवानतेन केहि । अरसी कहे हवे को करहि ।
इद्र कहे इद्रासन लीधु । देव कहे अमने दुख दीधु ।
जेजें कृष्ण कीपाल १

प्रथवी उपर भार घणों थयों थरथर धुजवा लागी ।
ब्रह्मा पासे प्रथवी आपी स्तवन करवा लागी ।
स्तवनकरछे गायनेरुपे । राटले आव्यारसी स्वरूपे ।
इशवी देवता सङ्ग आव्या । ब्रह्माने मनमाहे भाव्या । जेजे कृष्ण... ।
रवे केहे इद्रासन माहारु राकस हरीने लीधुं ।
रसीकहेमारा यज्ञनचाले दुस्ट मारा दुख दीधु ।

× × ×

अेती वाणी शुणीं सखे मनमां आनंद वांध्यो ।
अनाथ ना कर्वालिद्रने जम द्रव्य नो कुपज लाधो ।
लाधो उपने चिंता गई सुखनो सागर उलटयो सही ।
संगमनमा आणद जथया । पोताने स्थानक सङ्ग गया । जेजे... ३० ।
अे लीला जे क्षीर सागरनी सीखे सुणे ने गासे ।
'आत्माराम' अे लीला सांभल तांभवना पातीक जासे ।
जासे पावन नीरमल थसे । अते हरी चरणे जई वशे ।
ते माटे सङ्ग्ये करपा करी । मोहो मे बोलो जेजे हरी ।। जेजे... । ३१ ।

अंत—हये शुकदेव जी केहे छेरे । परीक्षत राय नेरे ।
व्रजनी लीला सुदररे । ते वरणव था अनैहिरे । १
गोपीनी प्रेम भक्तीरे अमे वरणव करी ।
राजा अेरुदेराखीरे भावथी मनधरी । २
धन्य अे व्रीजनी गोपीरे धन्यनंद तातनेरे ।
धन्यछे ग्वालबालनेरे जसोदा मात नेरे । ३
धन्य गोकुल ना वासीरे जेने श्रीमुख जोयुरे ।
रात दीन क्रीडा करतारे मन्न कृष्ण जीशु मोह्युरे । ४
अे लीला प्रेमधरोनेरे प्रीते जे साभलेरे ।
त्रीवीधना तापटलीनेरे । भुधरमाजइ भले । ५

कामना पुरण सरवेरे कृपा करसे हरी चोरासीनो फेरो चुकेरे । जनम बधन घरे फरी ।५
घरबेठेफल पांमेरे तीरथनुफल जे कहावेरे गया गोमती ने गंगारे जेजन फरीन आवे ।७
बंध्या तो पुत्रने पामेरे रोगीनारोगजाये वंधनससार नो टुटेरे । प्रीते व्रजलीला गाये ।८
माहारानी पांमारनीवुधीरे भावेक भाव करी उपर कवीजन खोडनदेशोरे हरो चीत ले जो धरी ।९
भुल्युने चुक्यु सरवेरे तमे संभाल जो अरथ मनमां वीचारीरे संधे सङ्कटाल जो ।१०
गुरुना चरणरेराय थीरे कृपा थी गरु तरणी रे दास ने माथे मोहो टारे श्री वल्लभराज धणी ।
वैष्णवनीपुरण करवारे थाज्यो मज उपररे वारे वारे चरणे सुगुरे कालु घेलु अो चरे ।१२
'आत्माराम' चरण सेवकरे सीस चरणेधरे । घाग शुकऊ कथीरे कांलु घेहेलुं अोचरे १३
बीन वाणीने बयारे कृपा करो नाथ जी संसारमां वुडता तारोरे पकड जो हाथ जी १४
आव्रज लीला नी शुंदररे सांभल जी प्रीत्यधरी । एक वार सखे बोलोरे जेजे कृष्णहरी १५
श्रीकृष्ण इति श्री वृज लीला श्रीकृष्णनो पुरणं शुभं ।। :o: :o: :o:

संख्या १३क. कोकसार भाषा, रचयिता—आनद कवि, स्थान—कोट हिसार, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—८५/८ × ६१/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६० वि०, लिपिकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० विद्याविलास जी, ग्राम—सेमरपहा, डाकघर—सेमरपहा (लालगज), जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। कोकसार भाषा लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

ललित सुमन अलि पवन तन छवि अभिनव कंद ।
मधु ऋतु हितु अति रति रमन जय जय मदन अनंद ।। १ ।।

बरनि काम अभिराम छवि बरनो भामिनि भोग ।
सकल कोक दधि मथन करि कोकसार सुष जोग ॥ २ ॥

॥ चतुष्पदी ॥

अभिनव जलधर वरण सकल सुष घनस्याम ।
मधु ऋतु रति पति हेतु प्रगट उत्पति देहगति ।
सब गुन सुंदर रूप पुष्प अलि एक मनरंजन ।
जलचर चपल पिनाक अभ्रु संवर बल गंजन ॥ ३ ॥
मनुष रूप ह्वै अवतरो तीनि भांति को योग ।
द्रव्य उपावन हरिभजन अरू भामिनि को भोग ।
भक्ति एक भगवंत की अरू ,भामिनि को भोग ।
उह संकट में सुष करन उह दुषहरन वियोग ॥ ५ ॥
कायथ कुल आनंदकवि वासी कोट हिसार ।
कोककला इह रुचि करन जिन वहु कियो विचार ॥ ६ ॥
ऋतु वसंत से सोरह अरु ऊपर हुए साथि ।
कोकसार कौ तब कियौ कर्म कर्म को पाठ ॥
षंड पांच वस अति सरस रच्यो जो वहु विधि छंद ।
पढत वढत अति चोप वाढत अधिक अनंग ॥ ८ ॥
चतुर सुकवि पंडित सरस जो जानत छवि छंद ।
अक्षर टुट संवारेहु विनती करत अनंद ॥ ९ ॥

अंत— ॥ सवैया ॥

रूपहारिनिहारि जहा जत दे तहा कवि हेत विचारि विचारे ।
जो जेहि भांति सुजाति अजातिहि तैसे तरं तेहि भांति निहारे ।
मधु समुध अउहि वुध सवुधि विसाल तहा तसु सातरे ।
सोई अवलोकि अवलोकि शुधि कवि की रचना गई तजि तात हरे ॥
इति अनंद कवि कृत कोकसार ग्रंथ समाप्तं ॥

संवत् ॥१८६८॥ माघ कृष्ण ५ ॥ याद्रशं पुस्तकं द्रष्ट्वा ताद्रशं लिखितंमयः ॥ यदि शुद्धम शुद्धंवा मम दोषो न दीयते ॥ शुभ भूयात् ॥

संख्या १३ख. कोकशास्त्र, रचयिता—आनद, कागज—आधुनिक, पत्र—३१, आकार—६ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६०, प्राप्ति स्थान—पं० बदरी प्रसाद जी, ग्राम-खारे, पोस्ट-शिवरतनगज, जिला-रायबरेली ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कोकशास्त्र प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

ललित सुमन घन अलिपनच तन छवि नभि अवकंद ।
मधु रितु हित अति रति वयन जं जं मदन अनंद ।
वरन काम अरि नाम छवि वरणो भामिनि भोग ।
सकल लोक दधि मथन् को रचो सार सुख जोग ॥ २ ॥
भक्ति एक भगवंत को भोग सुभामिनि भोग ।
वह संकट में सुष करन सो वह दुख करन वियोग ॥ ३ ॥
मानुष रूप ह्वै अवतरे तीन वातन को जोग ।
द्रव्य उपावन हरिभजन अरु भामिनि को भोग ॥ ४ ॥
ललित वचन सब कविन के सुरति करति सब कोय ।
दृग अंजन सब कामिनि भेद सबन में होय ॥

पिंगल बिन छंदहि रचे अरु गीता बिज्ञान ।
कोक पढ़ें बिन रति करे सो नर पशु समान ॥
:o: :o: :o:
१६ ६०
ऋतु वसंत सम्वत् सोलह सौ अरु साठ ।
कोक मजारी जहँ रची करम करम कर पाठ ॥

अंत— द्वितिय आसन
आलस उचित संकोच करि सिथिल सुनहु धरि काम ।
ऐ पांचो आनंद त्रिय रति गंडुक परिमान ॥
ऐं षोडश औ पंचदश सकल भये इकतीस ।
रति उपजावन सुख करन द्राव करति को ईस ॥
चौरासी आसन सकल कहे कोक सुखकंद ।
तामह तिरसठि अति कठिन किये न जात अनंद ॥
॥ इति ॥

विषय—कोकशास्त्र ।

रचनाकाल

ऋतु वसंत सम्वत् सोलह सौ अरु साठ ।
कोक मजारी जहँ रची करम करम कर पाठ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १६६० है । लिपिकाल दिया नही पर प्रति बहुत इधर की लिखी है । अधिक से अधिक ७--८ वर्ष की लिखी ज्ञात होती है । ग्रथ स्वामी भी ऐसा ही कहते है । इन्ही के बड़े लडके ने अपने यहाँ के एक प्राचीन प्रति से यह नकल की है ।

रचयिता का नाम आनद है । अन्य परिचय नही दिया है । गत मास मे भी यह रचना मिली है जिसमें इसके रचयिता जनमुकुद और नद बतलाए गए हैं । पिछले खोज विवरणों मे भी इन ग्रथो का नामोल्लेख हुआ है । रचनाकाल के कारण प्रस्तुत प्रति महत्वपूर्ण है ।

संख्या १३ग. कोकसार या कोकसार दर्पण, रचयिता—आनद, कागज—आधुनिक, पत्र—३०, आकार—१० × ६½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९६७ वि०, प्राप्तिस्थान—लाला अंबिका बक्स सिंह, स्थान—बारा नया कोट, डाक—परशदेपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—॥ अथ कोक दर्पणो लिख्यते ॥ श्री गणेशाय नमः

॥ दोहा ॥

ध्याय परमानंद पद विष्णु के नौमि रति पतिहि काम ।
ध्याय परमानद पद विष्णु के नौमि रति पतिहि काम ।
कामशास्त्र विरचें मन पूर्ण करु अभिराम ॥
:o: :o: :o:
ललित सुमन धनु अलियन चितन छवि अभिनव कन्द ।
मधु रितु हित अति रति रमण जय जय मदन अनन्द ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
कोक पढ़ें बिनु रति समं ज्यो दीपक बिनु धाम ।
ते कारण रचना रच्यों कोकसार इमि नाम ॥ ६ ॥
॥ अथ प्रथम खण्ड तरुणी विधान कथ्यते ॥
चतुर चतुर तरुणी कहौं प्रगट विचारि विचारि ।
पद्मिनी चित्रिणि शखिनि और हस्तनी नारि ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

बंग नरेन्द्र देश के वनिता । ऐसीहि पुनि रति मो मुदिता ॥
काम रूप के कामिनि कोमल । रतिमो प्रतिसं मति है निरमल ॥
बन्त नखक्षत सों सुख पावति । नायक ते रीझत मम वं प्रति ॥२॥
इति श्री कवि आनन्द कृत कोकसार भाषायां पंचदश खण्डः समाप्तः ॥१५॥

चैत्रे शुक्ल पक्षेतु नवम्यां चन्द्र वासरे ॥ पच्चतिरियम्वं समाप्तौऽयं अलिखः कुंजविहारि शर्म्मणा ॥ विक्रमाब्दाः १९६७ सन् ॥ १९१० ईसवी ताः १८ अप्रैल ॥ शुभ्मं भूयात् ॥

संख्या १३घ. कोकसार, रचयिता—आनद कवि, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—६॥ X ४॥ इंक, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६, खजित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८३१ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—स्वस्ति श्री................।

:o: :o: :o:

चार विचार...... ।
पदमनि चित्रनि संखिनी और हस्तिनी नारी ॥ ७
पदमनि चंपक वरनत अति कौमल शव अंग ॥
चहूँ ओर गूंजत भ्रमर निमिषि न छाडिति शंग ॥ ८

छपय

चंचल चपल सुश्याम नऐन मृग कूटील भृकूटिवर ॥
तिलक भेद शुक नास त्रिवल वह वाहन कटितर ॥
अवचन गवन जिह हीन अंग कोमल व चित्र अति ॥
अति शूछम कटि छीन प्रगट दामिनी देह दुति ॥
आनंद चंद वरनन वदन मदा अंग निरमल रहत ॥
आहार निमिष अछत अमल शू विमल ठौर वयेठो चहत ॥ ९ ॥
अमल कमल तभू वरन नऐन चंचल अनि ओर ॥
मयूर मयूर मुष वचन चारु कुचित रुचवारे ॥
लघू दीरघ नहिं अंग सनवत नगर वयनवत ॥
दयावंत अति होत पूहप परीमल वहू भावत ॥

अंत— ॥ पद्धरिया छंद ॥

प्रथमहि अमरावति हतौ कोक । नहीं कोउ जानत मृत्यू लोक ॥
एकहू भौ अति शैव मुनीशू । तीन्ही ये प्रगटायो जगदीशू ॥
ता पाछे कवि भए अनेक । तिन्ह रचे काव्य करि अति विवेक ॥
कामोद प्रदीप अरु पांच वान । पूनी रति रहश्य जानहि शूजान ॥
मवन विनोद आनंद रंग । रति रञ्जन शंपति मूति शूरंग ॥
वढे सकल कवि कवि विचारा । वरनौ आनंद कवि कोकशार ॥

॥ दोहा ॥

भए जा कवी कूल रशीकरशू रचे जु वहु वीधि छंद ॥
पठत पठत अति चोप चित वढत अनद अनद ॥

इति श्री कवि आनंद विरचितां कोकशार संपूरणम संवत १८३१ मिती आषाढ सुदी १

संख्या १३ङ मदन कोक, रचयिता—आनद, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—८ X ४। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—४२०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० चद्रशेखर पाडेय, ग्राम—मनुहार, डाक—करहिया, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ मदन कोक लीष्यते

।। दोहा ।।

ललित सुमन मनु अलि पंन जलनु छवि अभिनव कंद ।
मधु न्तु हितु अलि रति रमन जय जय मदन अनांद । १
वरनि काम अभिराम छवि वरनतु भामिनि भोग ।
सकल लोक दधि मथन करि रच्यो सार सुष जोग । २
मनुज रूप होई अवनरचौ तिन वात को जोग ।
द्रव्य उपावन हरि भजन अरु भामिनि को भोग । ३
भगति एक भगवंत की भोग सुभामिनि भोग ।
बहु संकट मे सुष करन बहु दुष हरन विजोग । ४
पिगल विन छंदहि रचं अरु गुर विन नहीं ग्यान ।
कोक पढे विन रति करं ते नर पसू समान । ५
कोक पढे विन रति रमे ज्यो दीपक विन धाम ।
ता कारन रचना रचि कोकसार धरि नाम । ६

ईति प्रथम षंड १

अथ जोषिता जात

।। दोहा ।।

चतुर चतुर तरुनी प्रगट कहूँ विचारि विचार ।
पदमिनी हसतनी संषनी अवर चीत्रनी नार ।

अंत— दोहा

आसन जानि परसपर जानि ।
ताको करत पुरुष अरु भाम ।
सेष पंचदस आसन रहै ।
ते पुरुषहि करबे को कहै । १४
सुनहु रसिक जन श्रवन धरि कोक रासी सुषसार ।
चाहत चतुर सलोल हुय करत मूढ़ अती हासी । १५
प्रथम अमरावति हतो कोक ।
कोउ जानत नाहिन मृत्यु लोक ।
हतो वात साहिनिमि मुनीस ।
तिन प्रगट करि काडा रतीस ।। १६
तो पाछे जु कवि भये अनेक ।
तीन रचे कवीत बहु विधि विवेक ।
काम प्रदीप आरु पंचवान ।
पुनि रहति रहस्य जानहु सुजान । ११७
मदन विनोद अनंद रंग ।
रति रंजन सप्तम रति तरंग ।
पढे सकल कविकर विचार ।
वररायौ आ............

संख्या १४क. कवित्त, रचयिता—आनदघन, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—११¼ × ७¼ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, पूर्ण, रूप,—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशकर जो याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ कवित्त आनदघन कृति लिष्यते ।।
मनमेरौ घनेरौ अनेरौ भया अबकौन के आगं पुकार करौं ।
सुषकंद अहो ब्रजचंद सुनौ जिय आवति है तुमही सौं लरौं ।

मनमोह भए जनमोहन हौ मनमोहन या विधि याहि भरौं ।
घनआनंद ह्वै वृषताप तवावत क्यौ करि नानां वहिव धरौं ॥ १ ॥
रूपसुधारस प्यास भरीं नितही असुवा ढरवोड करंगी ।
पीवन साध असाधमई इहि जीवन यौं मरिवोई करंगी ।
हाई महावुष है सुष दंन विचारी हियं भरिबोई करंगी ।
क्यौं घनआनदमीत सुजांन कहा अषिया भरिबोइ करंगी ॥ २ ॥
सुनि वेनु कौमावक नाव महा उमाद (? उन्माद) सवाद छियौ न धिरैं ।.
निसिद्यौस घुमेरी निभौरि परयौ अवलाष महोदधि हेरि हिरैं ।
घन आनव भीजतु सोचनि सूषतु थाकिनि दौरि सम्हारि गिरैं ।
तनतौ यह लाज घिरयौ घर में वन मैं मनमोहन संगफिरैं ॥ ३ ॥

अंत— अथ प्रेम पत्रिका लिष्यतं

कान्ह तेरी पाती तुमही सुनाइ हौ । हाइ हाइ फिरिहाइ कहू जौं पाइहौ ॥
कटुक प्रीति कौ स्वाद मिठास भरयौ महा । ह्वै रसनां करि किलक कहौ वरनै कहा ॥३०॥
जानं विरही प्रांन और कसं वनं । तीषि तरह सुवात कहत रसना छनं ॥३१॥
श्रवन सहैते और रहै पारपीरकौं । धनि धनि हैं व्रजनाथ तिहारे धीरकौं ॥३२॥

:o: :o: :o:

या पाती कौं वेस पंथिक प्राएं लहै । आसनिगउ समेत चलन उनयौ रहौ ॥५३॥
गोर भय स्यांम गोरी सांवरी ह्वै रही देषौ रूप की निकाई आजु औरे पेषियति है ।
बवली परी है प्रीति रीति परतीति नीति निपट अचमे की समीति लेषियति है ।
देषं भूलियतु कछु कहत न आवं सषी इनकौंहि लगनई नई वेषियति है ।
चिरजियौ जोरी घन आनद वरस यह वृज वृंवावन ही मे यों विसेषियति है ॥२१२॥
इतिसपूर्णम श्री

संख्या १४ख. सुजानहित, रचयिता—घनानद (आनदघन), कागज—देशी, पत्र—१०६, आकार—११½ × ८¼ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भवानीशकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुजानहित लिष्यते ॥
नेही महा व्रजभाषा प्रवीन औ सुदरतानि के भेद कौं जानं ।
जोग वियोग की रीति में कोविद भावनाभेद स्वरूप कौं ठानं ।
चाह के रंग मै भीज्यौ हियौ विछुरं मिलं प्रीतम साति न मानें ।
भाषा प्रवीन सुछव सदीसहै सोघन जी के कवित्त वषानै ॥ १ ॥
प्रेम सदा अति उचो लहै सुकहे इहि भाति की बात छकी ।
सुनिकें सबके मनलालच दौरं पं वौरे लौं षसव बुद्धि जकी ।
जगकी कविताई के घोषं रहौ ह्यां प्रवीनन की मति जाति चकी ।
समझं कविता घन आनंद की हिय आषिन नेह की रीतिन की ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

बारधौं चित चौंपनि चितौंनि मैं चिन्हारि करि चाहसी जनाइ हाइ मोहि कं मनौं लियौ ।
भोरी भोरी बातनि सुनाय जांन भोरे प्रांन फासी तें सरसहासी फंद छद सौ दियौ ।
छैलन छबीलं आप छाय घन आनंव यौं उघरे विसासी अति निरदं महा हियौ ।
वारी मतिहारी गति कहां जांहि नाहि ठौर मारत परेषौ देषौ हितू ह्वै कहा कियौ ॥५०००४॥(? ५०४)

इति श्री कवि आनवघन विरचितायां सुजानहित संपूर्ण ॥ शुभंभूयात ॥ यादृश पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसं लिषितं मतंमया ॥ यवि शुद्धंम शुद्धंवा ममदोषं न दीयतें । लिषं भरथपुर मध्ये

मिश्र हरदेव ।। लिषायतं धर्म मूरति धर्मावतार फौजदार जी श्री व्रज वल्लभ जी ।। मिती सिर वदी ।। १३ ।। संवत् ।। १६०३ ।।

संख्या १४ग. सुजानहित, रचयिता—ग्रानदघन, कागज—देशी, पत्र—१०, ग्राक १०½ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—१२७, अपूर्ण, र प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भ शकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ ग्रानंदघन के कवित्त सवैया सुजानहित लिष

कवित्त

नेहो सिरमौर एक तुमही लौ मेरी दौरि नांहि ग्रौर ठौर काहि सांरंक सम्हारियै ।
बरसन दान दीजे भावते सुजांन रहैं ग्रास लगी प्रान ग्रान बोलत तिहारियै ।
गुनमाला फेरौं निगुनी ह्वं नित हित हेरौं विरह ग्रधीर टेरौं पीरही निबारियै ।
पनत न ताको जोहै काव सोतौ ग्राहि पाको ग्रानंदके घन प्रीति सा कौन विगारियै ।। '

सवया

प्रान पखेरू परे तरफै लखि रूप चुगी जु फदे गुन गाथन ।
क्यौ हतियै हितपाल सुजांन दयाखिन व्याधि वियोग के हाथन ।
सालति बांन संमान हियें सुलहै घन ग्रानंद जें सुष साथन ।
देउ दिषाई दई मुषचंद लग्यों ग्रब ग्रौधि दिवाकर ग्राथन ।। २ ।।

:o: :o: :o:

ग्रंत—

फल दल संपुट मै मुदे मन मोद मानो ग्रारसी विभावरी ह्वं होति भौरहाई
ह्वं सरोज बीच एक वसमु रसमु कैसै लसमु सु ऐसै ग्रचिरज ग्रधिकाई
बाहिर तें रूप मकरद पान करै पुनि वडी भूतगति हेरै मो मति हिराई
नयौही रसित घनग्रानंद सुजान यह किधौं प्यारी तेरे नैन सैन कीनि

:o: :o: :o: —

संख्या १५क. ग्रालम के कवित्त, रचयिता—ग्रालम, कागज—देशी, पत्र— ग्राकार—७६⁄१० × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—१ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशकर जी या लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

ग्रादि—श्रीगणेशाय नमः ।। ग्रथ ग्रालम के कवित्त ।।

सारीसेत सोहै नव नूपुर की ग्राभा सेत चंदमुषी धरै ग्रंग चाँदनी सी वंद की
उरज उतंग मानौं उमगि ग्रनंग ग्रावै कसि बैठि ग्रांगी षाउ गाढी जढी बंद की
कहि कवि "ग्रालम" किसोरी वैस गोरी जगी जग की उज्यारी प्यारी न्यारे नंद नंद की
सुभरि नितंब जंघ रंभा कैसे षभ चलि मंद मंद ग्रावै गति मद के गइंद की
ग्राठौ ग्रंग निपट सुठानि वानि ठानि ठई गांठि से कठोर कुच जोवन की टेंठि है
गुन की गंभीर ग्रति भौरीयै जउनि जग थोरे ही दिनन गोरी रूपरग जैठि है
कहि कवि "ग्रालम" दिषाई दुरि जाई देत ग्वारि घरीमारि मनहि ग्रमेठि है
सषीसौ कहति बात जगमग मुसिकाति कौल कैसे पात नैन पातरी ग्रंगठि है

:o: :o: :o:

ग्रंत—ग्रपथ पथ उच्चरै तासु मन वृषभ कहिज्जय ।
तिहिं कत नथ्थं संतोष जाप गल घट बंधिज्जय ।
सत सील कसिगो नषानि गुर मुषहूँ ज्ञागभरि ।
परमारथ पथ हक्किसच्चलै कहर सदुकरि ।।
हरि गोरि पुहुंचै "ग्रालम" सुमति मुक्तिदव्य पावै गनिज ।
जिन डुल्लहि डुल्लहि ग्रडुल्ल व्यडुल्ल हूँ यह वणिज्ज नायक बनिज ।। ७ ।।

करन की करनि को करत बखान कवि कवन की कीर निकर करन साबान हो ।
तवन अमित जाके तवन को तेज धरे तिरन के सम अरियाकोत करत बखान है ॥

॥ इति संपूर्ण ॥

संख्या १५ख. कवित्त, रचयिता—आलम. कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—८६/८ × ५६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२३०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कवित्त आलम कृत लिष्यते ॥

पलन खेलत नंदललन छलन वल गोद लै लै ललन करति मोद गान है ।
"आलम" सुकवि पल पल मैया पावै सुख पोषत पयूष सुकरति पयपान है ।
नंद सौं कहति नदरानी होमहर सुनि चंद कीसी कलनि वढत मेरे जान है ।
आइ देषि आनद सौ प्यार कान्ह आनन मैं अनुदिन अनुपई आनछवि आन है ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

ठौरि कौन लागी दुरि जैवे की सिगरो दिन छिनन घर रहै कहा करौ कन्हैया को ।
कल न परति कल विकल यसोधा मैया ठौर भूलै जैसे तलवेली लागै गैया को ।
आचर सौ मुष पोछि पोछि के कहति तुम ऐसे कैसे जानदेत कहू छोटे भैया को ।
षेलन ललन नैकु गये है अकेले कहू वोलि लीजै वलन वलैया लागै मैया को ॥ ५ ॥

अंत—और अहीर अजौं कहिधौं हो तौ जाव तहा जहा है गिरिधारी ।
कैसे फिरयौ मनमोहन सौ सब गोकुल की सुष कौन पिटारी ।
हेरि सबै घरबार जसोमति "आलम" व्याकुल है जियभारी ।
आनंदकंद गोविंद विना अब नद भई मतिमद तुम्हारी ॥३०५॥

:o: :o: :o:

सेजहु ते उठि नारि चली मनमोहन जू हसि चीर गह्यो ।
प्रगटयौ रवि कान्ह विहान भयौ मुषमोरि कै यो मृग नैनि कह्यो ।
बैनी दुहू कुच वीच रही उपमा "कवि ब्रह्म" यहै निवह्यौ ।
जनमेजय के मनो जग्य समै दुरि तछिछक मेरु की संधि रह्यौ ॥ १ ॥

विषय—शृंगार विषयक कवित्त सवैया का सग्रह । अत मे ७ कवित्त निम्नलिखित कवियो के हैं —

१ मनि—१ पद ।
२. मानहास—१ पद ।
३ गुलाब—४ पद ।
४. ब्रह्म—१ पद ।

प्रस्तुत ग्रथ मे आलमशेख के ३०५ कवित्त हैं ।

संख्या १५ग. रस कवित्त, रचयिता—आलम और शेख, कागज देशी पत्र—६३, आकार—८६/८ × ६४/८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३४१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशंकर याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शेष आलम कृति रसकवित्त लिख्यते ॥

कवित्त

पलन षेलत नंदललन छलन बलन गोद लै लै ललन करत मोद गांन है ।
"आलम" सुकवि पल पल मैया पावै सुष पोषति मयूष सों करतु पयपान है ।
नंद सों कहति नंदरानी होमहि सुत चंद केसी कलान वढ़ति मेरे जाँन है ।
आँन देषि आँनंद सौं प्यारे कान्ह आँनन मैं आनदिन आँनधरी आँन छवि आँन है ॥ १ ॥
झीनीसी झगुली बीच झीनों आँगु झलकत झुमरि झुमरि झकि ज्यों ज्यौ झुले पलनां ।
घूघर घुमति बने घूघना की घोर घने घूघरारे बनबार घनीबार बलनां ।

"आलम" रसाल जुगलोचन विशाल लाल ऐसे नंदलाल बिन देखे क्यों हूँ कलनों ।
बेरि बेरि फेरि फेरि गोद लै लै हेरि हेरि टेरि टेरि गावै गुण गोकुल की ललनां ।। २ ।।

:o: :o: :o:

अंत—

पारासर लरवरयौ हलरिगाररू मछोवरि । शृंगीरिषी सो पच्यौ राजपुत्री सुमंत्र करि ।
संकर संकि अनंग मूरि अरधंग राषि लिय । लगत विषम फुंकार चरि ककन गौतम लिय ।
बंच्यौ न होइ "आलम" सुमति इहि च वल तै कौन स्यौ । कहि कौन पुरष निर्विष सुमदन भुवंगमनहि डस्यौ ।।४००।।

इति श्री शेष आलमकृत रस कवित्त समाप्तं संपूर्ण संवत १७६१ कार्तिक शुक्ल २ बृहस्पतिवार अथा प्रति लिषत रिषभदास जैमवाल लिषायतं षान साहिब इनायतषांजी शुभ-कल्याणं भवति श्रीराम

विषय—शृगार विषयक कवित्तों का सग्रह ।

संख्या १५घ. कवित्त शेख साईं, रचयिता—शेख साईं या आलम और शेख, कागज—आधुनिक, पत्र—३२, आकार—७ × ३$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशकर जी याज्ञिक, असिस्टेंट डायरेक्टर, प्रोविंशियल हाईजिन इन्स्टिट्यूट, लखनऊ ।

आदि—कवित्त शेखसांई ।।

रूठे ते न ठौर छाडे ऊठे न ऊठाये हठि कठिन हठीली अति अली निठुराई के ।
कोक की कहानी कहे तासो कहो कहा कहो आलम जू कही रहे जनि हुंकराई के ।
मेरी न सिषवे सिष सषीनु की सिष थकीं सोषमौ दुराइ हे कोधौ येदुराई के ।
तुम हो चतुर चतुरायौ वे तौ चातुरी हे चाहो चितचोर लेहि येक चतुराई के ।।१।।
कहु मोतीमाग कहु वाजूबंद झवा झरे कहु हार कचन हमेल ठाउ ठीक है ।
ऐसो के विसारी स्याम ऐसी बंस ऐसी वाम पहर पपीया को सी वार वार पीक है ।
सेष प्यारे आजुकालो आल चा देषो आई छिन छिन जैसी तन छोजन की छीक है ।
सेज में न सारी सी है सारीहु विसारी सोहै विरह विलाति जाति तारा की सी लीक है ।।२।।

अंत—

जोग दीजे जोग निस जोगनिको भोग दीजै राजभाग कान्ह जी वड़ाई सब दीजिए ।
आलम अलष ग्यान मुकती मुनिद लेहि देव कविलासवसे प्रेम ही पतीजिए ।
रूप रुकुमिनी रमेसाई सतिभामा के हो कुबुजा के परस परेषे तन छीजिये ।
विनती ईहा के ईहै आही बंसीधर जू सोहमै नेकु वासुरी सुनाई दया कीजिये ।।६१।।

विषय—शृगार और भक्ति विषयक कवित्तों का सग्रह ।

संख्या १५ङ. माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम, कागज—देशी, पत्र—१६२, आकार—८ × ६$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२०, अपूर्ण (आरभ के ७ पत्रे फटे है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् ६५१ हि०, लिपिकाल—स० १८३६, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् डा० भवानीशकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—।।६०।। श्री गणे. . . . . .लिषते ।।

सोर. . . . .

:o: :o: :o:

. . . . . .सै इक्यांवन जबही । कथा. . . . .कहिये तबही ।।
कवि करौं सिंगा बियोग । क. . . . . .यो सब लोग ।।

:o: :o: :o:

लगी नृत करन तहां बाल । रूपवत गुनवंत रिसाल ।।
नृत्य करै अरभाव बतावै । कोकिल कंठ सप्तसुर गावै ।।

चतुर रूप बयगुन अधिकानी । अपछर एक अयंती जानी ॥
इंद्र सभा सब गुन बस कीन्हीं । तासम और न दूजी चीन्ही ॥४२॥

॥ दोहा ॥

ऐसो नृत्य कियो तहां ऐसो कबहु न होय ।
इंद्र आदि सब सुर कहै तो समान नहि कोय ॥४३॥

अंत—

प्रीतवंत सुनै जो कोय । बाढ़ै प्रीत हियै सुष होय ।
परदुष हरन सुने दातार । ताहि सुनत अति होय उदार ॥
सुर सुभट जो सुनै चितलाय । सूरापन तिहि चढ़ै सिवाय ॥६४॥

॥ दोहा ॥

पंडित बुधवंता गुनी कविजन अंथिर टेक ।
नाम निगम गुन उच्चरै कहि कहि कथा अनेक ॥६६॥

इति श्री माधवनल की कथा मपूरण ॥ सुभं भवतु मीती ज्येष्ट कृष्ण तिथौ ॥२॥ सनिवासरे ॥ लीषतं गोपीनाथ जोसी बृजलाल सुत ॥ जात गुजराती मोढ चात्रवेदी ॥ संवत् १८३६ ॥ पुस्तक लो० कामबन मधे ॥ श्री श्री महाराजि प्रताप स्यंघ जी राजे ॥ पुसतग गंगा विश्ण पंडया की ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

विषय—माधवानल कामकदला कथा वर्णन ।

रचनाकाल

...गे सै इक्यांवन जबही । कथा......कहेये तबही ॥

विशेष ज्ञातव्य—आरम्भ के ७ पत्ने फटे हुए है । इन पत्नो को देखने से पता चलता है कि इनमें कवि ने अपना और आश्रयदाता आदि का परिचय दिया है । इनमें महम्मद साहब का भी वर्णन है । सैयद महमद और अकबर बादशाह का भी उल्लेख मिलता है ।

रचनाकाल दिया तो है पर फटे पत्नो के कारण प्रथम अंश खंडित है । उत्तरांश "सै इक्यावन" पूरा है । प्रस्तुत रचना की कई प्रतियां पहले भी मिल चुकी है जिनमें ६५१ हि० सन् दिया है ।

अत प्रस्तुत प्रति में प्राप्त रचनाकाल जो खंडित है, पूर्व की प्रतियो के आधार पर केवल 'सन नौ' जुट जाने से रचनाकाल ठीक हो जाता है—

('सन नौ') सै इक्यावन जबही । कथा...कहेये तबही ॥

संख्या १५च माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम, कागज—देशी, पत्न—१४८, आकार—१२½ × ७¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् ६५१ हिजरी, लिपिकाल—सं० १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ सोरठा ॥

नमस्कार कवि कीन्ह गवरीपुत्न गणेश कहु ।
हुवै प्रसन बुधि दीन प्रेम कथा पूरन करहू ॥ १ ॥
नमोगणेस बुधि वरदायक । बानी विरद बकसिवे लायक ॥
गज आंनन कविजन जोधावत । जो फल मांगत सो फल पावत ॥
लंबोदर दरसन जो करियै । ताछिन बुधि अघट घट भरियै ॥
पारवती नंदन जग वंदन । विघन हरत जनु चरिचित चंदन ॥
:o: :o: :o:
हौ तिहि गगन भोग कर चहना । पूजापुरुष महंमद कहना ॥

ताकी प्रीति लगी संसारा। चंद सूर लों कीन्हु पसारा।
परमरूप अवतार लिय आपू। आपुन जन्मन कीयौ पापू॥

:o: :o: :o:

अवावकर उसमा(न) उमर चौथा अलीसुभान।
जो इनकी सेवा करै ताहि होहि मति ज्ञान॥१२॥

:o: :o: :o:

गोस कुतुव कादरी कहीया। जगमति संव महुदीया अहिया॥
बंस रसूल किया परगासा। पुरवैनाम लेत मग्रासा॥

:o: :o: :o:

अवली कहौं वखानि सुजस प्रगट चहुं षंड मैं।
विद्या अरथ निदांन साहि अकवर जगतगुर॥१६॥

जगपति राज कोटि जुग कोजै। साहि जलाल छत्रपति ओजै॥
दिलीपति अकवर सुलताना। सप्तदीप मैं जाकी आना॥
सिधिनीपति जगनाथसुहेला। आपन गुरू जगत सब चेला॥

:o: :o: :o:

आगै नेव महाबल मंत्री। राजा दीप टोडरमल षत्री॥
संन नौ सै इक्यावन जबही। कथा आरंभकीन्ह यह जबही॥
काव्य करौ सिंगार वियोगा। कहौं कथा सुनियौ सब लोगा॥
कछु अपनी कछु परकी चोरी। जथासकति यह मति है मोरी॥
आवि सोरठा एक बनाई। मध्य चौपई पावौं जनाई॥
तर हर एक दोहरा लेषा। इहि विधि पूरन ग्रंथ विसेषा॥

:o: :o: :o:

अंत—

प्रेम कथा जिहि विधि कछू लही। प्रेम सहित आलम कवि कही॥
पढै गुनै जे प्रेम पयारा। सो नर लहै प्रेम का सारा॥
जगमहि प्रेम नेम अति सारा। विना प्रेम करनी सब छारा।
प्रेम सहित माधौ कंवला। आपन जन्म कीन्ह निर्मला॥
जो कोई इहि विधि राम सह्मारै। मन वच ताहि रांम निस्तारै॥६०॥
पंडित वुधिवता गुनी कविजन अक्षर टेक।
नांम निमत गुन उचरहि कहि कहि कथा अनेक॥६१॥

मिति कौर शुदी॥ ३॥ रवि वासरे संवत् १९३५ दसषत चुनी लेषक के॥ भरथपुर मधे बुध की हाट मैं पठिनार्थ कोठ्यारी जी श्री कलुराम मुगदी जी॥ १॥

विषय—माधवानल कामकदला की कथा का वर्णन।

रचनाकाल

संन नौ सै इक्यावन जबही। कथा आरभ कीन्ह यह जबही॥

संख्या १५छ. श्याम सनेही, रचयिता—आलम, कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—८६⁄₁₀ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १७७५ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री गुत् डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ राम॥ लिषित स्याम सनेही:

॥ छप्पै छंद॥

मुष मंडन पर लसैं जोन्हि मंडित मयंक जनु।
जटित जोति अरधंग गवरि मजित दर्पन तनु।

धवल धूर धरि अंग उच्च सोहित संकरबर ।
फन भूषित फनपति चारु बुधिज चंदन तरु ।
जिहि मिलत अंग आलम सुमति कोय जल थल उजल बरन ।
नव करन जोति नव अंग कहू सुभव विभूति भव उधरन ।।

अथ भुजंग छंद

नमो नाथ पुरे सवं सिधि दाता । जुगादी जगं अंत ऐकं विधाता ।।
हीये नाम सो दीप रूपी प्रगासं । तम्मग्यान तव मूढता गूढ़ नासं ।।
सनेही सुचितं जगं जिहवति । प्रकासं लहै उन अग्यान राती ।।
सुधा नाग पं पुरि लै मूल भाषा । सदा सुध होइ पलटं बुधि साषा ।।
नवी नाथ कितहू हिदं मं कलोलं । ततो बुधि पछी चितं अर्थ बोलं ।।
उकारे अकारंत पेषिय नैनं । निरंकार निर्धार उचार बैनं ।।
नाथ निरंजन निर्विघ्न करनामं निकाम ।
निस्तार तन तारन तरन रचो निरंतर नाम ।।

अंत—

पहिले सुनी भागवत की रीति । बसममाह रुकुमनि की प्रीति ।।
सुनत समीर सांति मन आई । छिन्न ताल जानो उतरी काई ।।
जलहित उपजि तरंग डुलाए । कवि कलोल तट लै परसाए ।।
:o: :o: :o:
पोथी अग अग सुदर देही । नाम धरो तिहि "स्याम सनेही" ।।
कीन्ही आपु समुझि कै कारन । परगट भइ जगत निस्तारन ।।
आलम जो जीवं जगत जात चला संसार ।
दं अधार पोषहु मनहि प्रेम भगति आहार ।।

इति श्री आलम कृत स्याम सनेही भाषा कृत संपूरन सुभ मस्तु सुभं भवतु संवत १७७५ मिती फाल्गुन वदी ६ शुक्रवार कौ संपूरन भई जैसी देषी तैसी लीषी दसषत डालचंद ब्राह्मन के पोथी दलीपसाह की शुभमस्तु ।।

विषय—श्रीकृष्ण रुक्मिणी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना के साथ निम्नलिखित दो ग्रंथ और हैं—

१ ब्रह्म नाममाला योग सिधु—चिंतामणि कृत ।

२ राम पंचाध्यायी—नंददास कृत ।

इन दोनों ग्रंथों का विवरण अलग से लिया गया है ।

संख्या १६ उत्तर पुराण भाषा, रचयिता—इंद्रजीत, कागज—देशी, पत्र—७१, आकार—१५६/८ × ८६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४० वि० (मुनि सुव्रत पुरान के अनुसार), लिपिकाल—सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री वीतरागाय नमः ।। श्री जिनवाण्यै नमः ।। श्री परम गुरुभ्यो नमः ।। श्री जिनधर्म्मेभ्यो नमः ।।

।। दोहा ।।

वंदौ सुव्रत नाथ को मन वच तन रुचिल्याइ ।
विघनहरन मंगलकरन मोको होहु सहाइ ।। १ ।।
:o: :o: :o:

।। सोरठा ।।

तृतीय जन्म इहि आइ श्री मुनि सुव्रत जिन भये ।
पूरव प्रभु पर आइ वरनत हौं भविजन सुनौ ।। ६ ।।

॥ नराँच छंद ॥

यही सुजंबूदीप है। सुमेर जा महीप है॥
तहाँ भरत्त खेतु है। ...छंड को निकेतु है॥ ७॥
तहाँ सुअंगदेश है। चंपापुरी सुभेसु है॥
हर्वर्मनाम भूप है। गुनानिस्यौ अनूप है॥ ८॥

॥ चौपाई ॥

एक दिवस नृप पुन्योद्यान। गयौ सकल परिवार सुजान॥
अनतवीर्ज जिनवर को दीढ। करि प्रदक्षिना पूछेउ ईठ॥ ९॥
पुनि भूपाल कही सुविचारि। हे जगबोधक करुनाकारि॥
धर्म सनातन को कहै भेद। मुक्त संसारी आत्मा द्वेद॥ १०॥

:o: :o: :o:

श्री जिनेंद्रभूषण विदित भट्टारक महिमाहि।
तिनके हित उपदेस सो रच्यौ ग्रंथ उत्साहि॥१३८॥

:o: :o: :o:

रंध्र द्विगुन मत चालीसर संवत्सर गतिजान।
पौष कृष्ण तिथि द्विज महि चद्रवार परमान॥१४१॥
वदौ श्री जिन चरन कंज विघन हरन सुषकार।
तिनकी के परभाव वेरचौ ग्रंथ सुभसार॥१४३॥

इत्यार्षे श्रीभगवद्गुण भद्राचार्जानुक्रमेन श्री भट्टारक विश्व भूषण तत्पदाभरण श्री ब्रह्महर्षसागरात्मज श्री भट्टारक जिनेंद्रभूषणोपदेशित इंद्रजीत कृते रामवलक्ष्मीधर केशव पुरान वर्ननो नाम सप्तमोधिकारः ७ इदंपुरानं सुव्रतनाथ तीर्थंकर संपूर्ण सवत् १८९७ अस्वनिमासे कृष्ण पक्ष सप्तम्यां भृगुवासरे शुभः

अंत---

पुन्यजोगतें सुभगति होई। अघते सदा असुभगति जोई॥
सर्व ग्रंथ को है इहसार। तातें करौ पाप परिहार॥९७॥

इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यानुक्रमेन श्री भट्टारक विश्वभूषन तत्पादाभरन श्री ब्रह्महर्ष सागरात्मज श्री भट्टारक जिनेंद्रभूषणोपदेशित इंद्रजीत कृते मल्लिनाथ तीर्थंकर प्रश्न चक्रधर नदिमित्र वलिदेवदत्त नाम वसुदेव वलीद्रारय प्रति वासुदेवव्ययवर्ननो सपूर्न लीषा॥ हीरालाल श्रावक नवाबगंज मधे लालजीव के पुत्र सवत् अप्रैल १८९७॥ साके १७६२ मास वैसाष कृष्ण १४ रोज सूकवार ढाई पहर दिन चढे॥११॥

॥ श्री ॥

विषय---मुव्रतनाथ पुरान कुंथनाथ पुरान, अरहनाथ पुरान और मल्लिनाथ पुरानो का हिंदी पद्यानुवाद।

रचनाकाल

रंध्र द्विगुन मत चालीसर संवत्सर गति जान।
पौष कृष्ण तिथि द्विज महि चद्रवार परमान॥१४१॥

संख्या १७ कामकलागार या कोकिलकलासार, रचयिता---इक्ष्यागिरि, कागज---देशी, पत्र---९९, आकार---१२$\frac{1}{2}$×७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप्)---१६४६, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---सं० १८३७ वि०, लिपिकाल---सं० १६२२ वि०, प्राप्तिस्थान---पं० ब्रह्मदत्त जी शुक्ल, ग्राम व डाक--बहेरा गोविंदपुर, जिला--रायबरेली।

आदि---श्री गणेशाय नमः॥ अथ कामकलासार इक्ष्यागिरि कृत लिख्यते॥

॥ सोरठा ॥

गणपति शरण तुम्हारि कर जोरे वंदन करौं।
करिवर वदन स्नाय शिवशंकर पायन वरौं॥

॥ दोहा ॥

गुरु चरनन की बंदिना करौं जुगल कर जोरि ।
करियेंनुग्रह ग्यान सो शुद्ध होय मति मोरि ॥

:o: :o: :o:

सुघर सुहावन देखिये नगर गोम्ती तीर ।
लायूपुर असनाम है बहु धनाढ की भीर ॥
राज विसेने की सदा अचल रहत तेहि ठौर ।
जीति लेत पर भूमि को इन वल तकौ और ॥
तेहि कुल साचिक पर्म यो मदारबक्स सर्दार ।
राज करत विकरम मनौ सालधर्म आधार ॥

:o: :o: :o:

ता लायूपुर नगर मैं चारि वरन शुभ धर्म ।
ब्राह्मण छत्री जोनिये वैश्य शूद्र शुभ कर्म ॥

॥ सोरठा ॥

धर्म आपने माहिँ सदा सकल लोलीनता ।
अतिथतपस्वी आहि वानारभगिरि नाम है ॥
नाती तिनको मैं भयो इच्छागिरि कहि नाम ।
वेद भेद नाहिँ जानऊँ आगुन ही को धाम ॥
कुल हमरे भलिकं भयौ नाहि कोऊ आधोन ।
राज इलाहो खान लो एक चीन्हि हम कीन ॥
खान बहुत कृपा करो सादर राख्यो पास ।
कछु दिन याहीं भाँति सों साथ रह्यो सुखवास ॥
खान तवं सूबा भयो कुरा जहानावाद ।
अब हमको अज्ञा दई जाहु अकराबरावाद ॥
आयो आगरा बीच में अज्ञाधरि के सोस ।
डालचंद पंडित मिले विप्रन के गुरु ईस ।
नौ व्याकरन वखानईं वाँचें वेद पुरान ।
सामुद्रिक संगीत सो जोतिष आगम ज्ञान ॥
सो हम पर कृपा करी सदा रहत इक भाय ।
तिन भाषा को ज्ञान कछु हमको दयो बताय ॥
और सुसंगति आगरा कहाँ कहाँ लगि मित्र ।
चतुरकला प्रवीनता अतिही बुद्धि पवित्र ॥
मोहि तहाँ बहु सुख मिल्या रह्यो बहुत दिनमास ।
तब खानौ खत यौं लिख्यौ आवो हमरे पास ॥

॥ सोरठा ॥

आवो हमरे पास बहुत दिना वीते तहा ।
तु विन चित्त उदास रहत याद तुम्हरी सदा ॥
तहँ तव कियो विचार मित्रन को कहि दीजिए ।
कह्यौ विप्र तेहि बार ग्रंथ एक प्रगट करौ ॥
तब मै पंडित तें कह्यौ जोर जानु युग हत्थ ।
लघु दीरघु जानौं नहीं कहा मोहि समरत्थ ॥

पंडित उवाच

जो पै काहु के नाम को ग्रंथ कीजिये मित्र ।
फला अफल के भेद को तहाँ विचारो मित्र ॥

बहुत भाँति समुझाय कै दीन्ह मोहि यह ज्ञान ।
तब मै मित्रन भेंट को कीन्हो ग्रंथ सुजान ।
ता कारन रचना रची मित्रन भेंट अनोष ।
विद्या बुद्धि न मोहि कछु बुधजन देहिं न दोष ।
कोक ग्रंथ को सोधि वैद्यक कियौ विचार ।
सामुद्रिक मत कछु लियो यथा सक्ति निरधार ।।
नाम धरचौ या ग्रंथ को बुद्धि काम कलसार ।
चौपाई छद दोहरा रसिकन को सिगार ।
इक इक सुवर नवीन खड पाँच यामें करै ।
पढ़ै होहि प्रवीन स्वारथ परमारथ लहे ।।
प्रथमखड मै काम को जन्म बताऊँ तोहि ।
दूजे मे दपति कहा फिरि संयोगहि लेहि ।।
चौथे में बंध्या कही पचए कर्महि जानि ।
जबलौं यह जानौ नहीं तबलौं सुख की हानि ।।
सँवत् अठारा सौ कहे श्रौ सैतिस अधिकार ।
भादौं सुदि तिथि पचमी भयौ ग्रथ औतार ।।

अंत—मार्जार विष्टा मादाय मूषक विष्टा समन्वित । पादान मृतकायुवत पुतली कृते नरः ।।

नील वस्त्रे वस्त्रे संवेष्टे मंत्रइत्व सतेनच विधौषभेवेत् सिद्धार्थभुल विभुः ।।

इति श्री इक्ष्यागिरि कृत कोक कलाशार समाप्तम् शुभ भूयात् सम्वत् १६२२ कुँवार मासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दशी अदितवार लिष्यन ग्रंथ कोकसार कालिकादास वैष्णव वासी अवध निवासी श्री पुरीकासी ।। श्री रामाय नमः

विषय—पूर्व मे पटना नगर का एक राजा भूर्जसेन नाम का था । उसको कोई सतति न थी । उसने देवी की आराधना की जिससे उसको एक पुत्री का वरदान मिला । समय पाकर रानी के गर्भ से पुत्री उत्पन्न हुई । जब वह पूर्ण युवती हुई तो राजा ने उसके विवाह के लिये स्वयवर रचा । उसमे जितने भी राजा आए वे सब राजकुमारी को देखकर नपसक हो गए । राजकुमारी ने उनको स्त्रीवत देखा । अत उनमे से किसी को नही वरण किया । पश्चात् नग्न होकर और योगिनी का भेष धारण कर वह स्वय पति के खोज मे गई । चारो ओर के राजाओ को परास्तकर वह अत मे पुहुपावती के राजा भोरसेन के पास गई । वह भी योगिनी को देखकर अत्यत चिंतित हुआ, पर उसके मत्री कोकदेव ने, जो उस समय बधन मे था, कामकला के द्वारा योगिनी को वश मे कर राजा को चितारहित किया । योगिनी को वश मे करने के लिये उसने कामकला की जितनी क्रियाएँ की, उसका वर्णन प्रस्तुत ग्रथ मे है । इसमे पाँच खड है ।

रचनाकाल

संवत् अठारा सौ कहे श्रौ सैतिस अधिकार ।
भादौं सुदि तिथि पंचमी भयौ ग्रथ औतार ।।

संख्या १८क भरथ विलाप, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६।× ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री प० भिक्षा मिश्र, ग्राम, डाक-बेलहर जिला—बस्ती ।

आदि—श्री हनुमान जी सहाए ।। इती श्री पोथी भरथ वीलाप

दोहा

श्री गुर चरन सरोज रज नीजमनी मकुर सुधारी ।
बरनौ रघुबर बीमल जस जो दाऐक फल चारी ।

चौपाई

सुमिरो स्वामी श्री गनेसा । जीन्ह मोहि बीदुब दीन्ह उपदेसा ।
बांधा बंध तब कैकेई कीन्हा । राजा दसरथ हरख बर लेन्हा ।
मांगु कैकेई तोर मन काजू । देहों बर तोहीका मै आजु ।
जो तोही अहै ह्रीदं मन सामुं । सो तोहीं देव बचन बर सामु ।
देहु राज जनि करि बिस्वासा । भरथही राज राम बन बासा ।
सुनिकं बचन परे मुरछाई । पुत्र सोग अब सहा न जाई ।

दोहा

सुरसति चरन मनाएउ मनमहु बहुत उछाह ।
राम कथा कछु गावौ जामं गुन अवगाह ।

चौपाई

रामचंद्र बन कीन्ह पयाना । राजा दसरथ बहुत पछताना ।

अंत—

नंद्री ग्राम भुइ उबरीष भाई । कुस पत्नन ते सेज बनाई ।
बैठे आसन प्रभु मन लाई । आगे पीआ धरी सीरनाई ।
नीसीप्रीती पुजन जाको करई । अवधं अधार प्रान तन धरई ।

दोहा

भरथ बीलाप कथा बीमल ईस्वर दास कही गाई ।
जो नर सुनही जो गावहीं जनम जनम अघ जाई ।

इती श्री पोथी भरथ बीलाप कथ सपूरनम् समापत ॥

विषय—भरत चरित्र वर्णन ।

संख्या १८ख भरत विलाप, रचयिता—रामदास, कागज—आधुनिक, पत्र—१२, आकार—७६/१० × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार नाऊ, ग्राम—माठागाँव डाक—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ भरत विलाप कथा लिख्यते :

॥ दोहा ॥

सादर (?सारद) चरन मनावहु मन में प्रेम उछाह ।
राम कथा कछु गावहु जाके गुन अवगाह ॥

॥ चौपाई ॥

रामचंद्र बन कीन पयाना । राजा दसरथ मन पछिताना ॥
रामचंद्र छाडा अस्थाना । रोवं नगर सकल अकुलाना ॥
रोवं सिया सती बर नारी । राम लषन बिन अवध उजारी ॥
रचि रचि कंकई पत्र लिषावा । दूत हाथ दे नेहर पठावा ॥
जावहु दूत भरत के पासा । अवधपुरी अब भए निरासा ॥
चोषे दूत बिदा तब भएउ । अंतरवमि जोजन सत गएऊ ॥
जहंवा भरत चतुर गुन रहेऊ । जाई दूत दडवत तहां कीएऊ ॥
कहहु दूत अवध कुसलाई । कस कौसल्या दसरथ राई ॥
घर घर राज नेति ठकुराई । कैसे राम लषन दोउ भाई ॥
तीनके पुत्र भए अनुरागी । विधि के लिषे भए बेरागी ॥

अंत—

हमहु रहब पुर बाहर जाई । महि सज्या परउ घर बनाई ॥
नंदीग्राम भूमि घने आई । कुसपत्नन की सेज बनाई ॥

बैठे आसन प्रभु मन लाई । सींघासन पादुका धराई ॥
नित पूजन जन ताको करई । अवधि अधार प्रान तन धरई ॥

॥ दोहा ॥

भरतविलाप कथा विमल दास इस(र) ही गाई ।
जो नर गार्वाह सुर्नाह एह जन्म जन्म अघ जाई ॥

इति श्री ईसरदास विरचित भरत विलाप कथा सपूरनं समापतं सुभं भवतु ।

विषय—भरत का ननिहाल से अयोध्या आना, राम के वनवास के कारण विलाप करना, चित्रकूट जाकर राम को मनाना, राम के न लौटने पर उनकी चरण पादुका लेकर अयोध्या लौटना और नंदीग्राम में जाकर निवास करना ।

संख्या १८ग भरथ मिलाप, रचयिता—ईश्वरदास (इसरदास), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—५ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण (दीमक लगा), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० श्री काशीप्रसाद जी ओझा, ग्राम, डाक—नारापुर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भरथ मिलाप लिष्यते । श्री रामाय नमः ।

......चरन माना वहु मन महू वहुत उछाह ।
......था गुन गावता जाके गुन औगाह ।

रामचद्र वन कीन्ह पयाना । राजा दसरथ बहुत पछताना ।
रामचद्र छाड़ा अस्थाना । दारा नगर सकल परधाना ।
रोव सकल नगर नरनारी । रामचद्र विनु अवध उजारी ।
रचा रचा ककई पत्र लिषावा । दूत हाथ...हरषि पठावा ।
जायहू दूत भरथ के पासा । अवध पुनि......सा ।
चाथा दूत विदा तव भएउ । अतर वास जोजन... ।
......पत्र रोवत जाई । पुनि कहौ लोग कु... ।
जवही दूत कही कुसलाई । इष्ट काम......गौसाई ।
आग चलिअ अव दूर्ताह भाई । ...चन सो कहो समुझाई ।
मै उदास ता दषहु ताता । मरे मन न होय परतीता ।
वसुधा देषहु सत्य कर हाना । .... ।

अंत—......आगे पादुका धरेसि सुनाई ।
निसि......ननता का कराई । अवध उधार अगो...ई ।

दोहा

भरथ मिलाप कथा विमल सुरदास कवि गाई ।
जो नर सुर्नाह जो गार्वाह जन्म जन्म को अघ जाई ।

इति भरत मिलातप सपूरण सूरदास कृत ॥

विषय—भरथ मिलाप कथा वर्णन ।

संख्या १६ युधिष्ठिर यज्ञ, रचयिता—गोसाईं ईश्वरदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१८ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९२९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भैया हनुमत प्रसाद सिंह, अठदमा रियासत, बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ दोहा ॥

जै गणपति सुंदर वदन मंगलादि सुरईस ।
गुरु चरण वदन करो मंगल करण कपीस ।

सोरठ

गुरु चर्ण सिरनाय वरणो गति भाषा कछुक ।
सव संतन सिरनाय जाते मारग धर्म को ।

चौपाई

कथा एक मैं वरणों भाई । सुनं तासु सुष पछवी पाई ।
केवल रटन राम को कीजै । दिवस निसा गुरु रस को पीजै ।
जज्ञ जुधिष्ठिर अति सुषदाई । कथा सुनहु सोई भ सोई ।
जन्मेजै निज वचन उचारी । वैसंपायन सुनहु अधरी ।
जन्मेजै राजा बलवाना । वच उचारत सुधा समाना ।
भीमरूप सोइ कैसन होई । धर्म युधिष्ठिर जानत जोई ।
मकल कथा सुनि एकहि वारा । प्रश्न करत अति हृदं उदारा ।
राजा वचन हर्ष अति कजहि । वैसंपायन मुनि अति पुलकहि ।
वंसंपायन मुनि अति मनमंह कीन विचार ।
जन्मेजै राजा सुनहु कथा सकल एक वार ।

:o: :o: :o:

कंचन वरण सुभ धानि । सोइ रचौ विधि जुगपानि ।
सोई कहते ईस्वर दास । एह छंद धर्म प्रकास ।
राउ द्वार पर आएउ मन अति कीन विचार ।
द्वार पाल सत मागिए हम कह कछुक अहार ।

अंत—

कछु लघु कहौं हृदय जो आवा । सकल कथा भारथ मंह गावा ।

:o: :o: :o:

सो कहौं जज्ञ वयान । मै सुन्यौ सुत गुण गान ।
धरि हृदं पद निरवान । आवौं वढ़ावन दान ।
पर दर्व करह करवान । सभ जीव आपु समान ।
लोभ बिनु नर जोय । सोइ मुक्ति लक्षण होय ।
पुनि धर्म हर्षित होय । सुत दियौ हिच्छा जोय ।
सुत सगुण रूप वताय । तुम साधु सेवहु जाय ।

दोहा

धर्म व्याधि ग्रह सतुहत राम नाम भव पार
सुतहि वहुरि समुझाय पुनि गुप्त भयौ नृप द्वार

इति श्री गोसाईं ईश्वर दास कृतौ जुधिष्ठिर जज्ञभाषा समाप्तः सम्वत् १६२६ मध्ये ।।

विषय—युधिष्ठिर के यज्ञ का वर्णन ।

संख्या २० रसचंद्रिका (बिहारी सतसई टीका), रचयिता—ईसवी खाँ नवाब, स्थान—नरवर (ग्वालियर), कागज—देशी, पत्र—११५, आकार—८$\frac{9}{10}$ × ६$\frac{2}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—अस्पष्ट संभवत १८०६, लिपिकाल—सं० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—टैगोर पुस्तकालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री सरसुती जु श्री गनेस अनम्हा अथ लिषते विहारी की सतसैया ।।

।। दोहा ।।

अपनं अपनं मति लगं बाद मचावत सोर ।
ज्यौ त्यौ सबकौ सेइबो येकौ नंद किसोर ।। १ ।।

टीका—इस जगा वाद का अर्थ व्रथा है तथा दोहा का यह है कं अपनं मति का झगरा करना विथा है ।। क्यौं कं जिन्हौंनं सेया है तिन्हौने जानि कं नंदकिसोर ही कौ सेया है ।। क्यौ

कै ब्रह्मा सिव सनकादिक सब ब्रह्म ही है ।। तौ जिसनै जिसकी पूजा तिसनै तिन्हीं की पूजा ।। प्रमान टीका ताको लछन ।। तहां वेद असमति पूरानादिकानि करि अर्थ पाइए सबही को येकै येक नद नंदन सेइवी ।। पूरानोक्त हे यह लिखा है कै सर्वमई नदनंदन है ।। और जो कहीयँ कै परिसख्यालंकार है ।। तौ ताको लछन यह है येक थल को वरजीयँ ।। येक थल वस्त ठहराईयै तौ यामे और देवन की अवग्या होइ है ।। ताते पेरिसख्यालकार नही राषा है ।।

अंत—किय प्रसंग नरवर नृपति छत्र सिघ भुवमान ।
पढत विहारी सात सै सबजग करत प्रमान ।।६८६।।

टीका—अर्थ प्रगट है ।

कविन किये टीका प्रगट अर्थ न काहू कीन ।
अपनी कविता के लिये और कठिन करि दीन ।।६००६६।।
कछु रहै संदह नहि ऐसो टीका होइ ।
याचव तिनका पद अर्थ समुझि लेइ सब कोइ ।।६६६।।
तब सबके हित कौ सुगम भाषा वचन विलास ।
उदित ईस टीका कियौ रसचंद्रका प्रकास ।।७००।।
  ६   ८ १
नंद गढा बस भुमिगुन कीजै वरष विचारि ।
रसचद्रका प्रकास किय सुचि पुरन गुर वारि ।।७०१।।

इति नवाव इसवीषा विरचितं विहारी सतसैया टीका ।। रसचंद्रिका सपूर्ण समाप्तं सुभमस्तु ।। वैसाख वदि ५ वुधवासरे समतु ।। १८८८ मुंकाम रीमा लिषतं श्री सेष षुदावगस ।। जैसी या प्रति की हती तैसी लिषी विचारि अधिक चूक हम सो परै लीजो ताहि सुधारि श्री बाबू साहिब विसुनाथ सिघ जू देव के हुकुम . . लिषी जो कोइ बाचे उतारे सुनै ताकौ सलाम पहुंचे ।

विषय—बिहारी सतसई की टीका ।

रचनाकाल

  ६   ८ १
नद गढा वस भुमि गुन कीजै बरष विचारि ।
रसचद्रका प्रकास किय सुचि पुरन गुरवारि ।।७०१।।

सख्या २१ छंदमहोदधि पिंगल रचयिता—उत्तमदास (उमराव सिंह), स्थान—बदायूं (अगरीया नगर), कागज—देशी, पत्र—८० आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य-गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० वि० (?), मुद्रणकाल—सन् १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० चंद्रशेखर (बच्चन) मिश्र, ग्राम—भैरवपुर, डाक—बरुमा, जौनपुर ।

आदि—छदमहोदधि पिगल

मतवअ ज्वाला प्रकाश मे अहतमाम लाला नत्थमल सेठ से छपी

ॐ श्री गणेशाय नम. अथ छंद महोदधि लिष्यते ।। मगलाचरण ।। मनहरणछद ।।
विघ्नकुल दहन दुखदारिद के हरन कलि सागर तरन आनद करत हैं ।।
शैलजा नदन तमीचर दल निकदन शननभव फदन सुमति भरन हैं ।।
पूजें पचानन चतुरानन पाक शासन खगासन समेत निशि दिन सरन हैं ।।
सुकवि उत्तमदास पूरत हे सकल आस शकर हरण गणनायक चरण हैं ।।१

अथ कविदेश और वंशवरणन ।। मनहरणछंद ।।

गंगा के तट वसत वदाऊँ प्रसिद्ध नाम ताकौं वेदामऊह पंडित वखानत हैं ।।
चारो वेद षष्ट सास्त्र अष्टादश पुराणन चतुरदश विद्याहू वाल वृद्ध जानत हैं ।।
नारि नर तहा के देख परत देवी देव काशी तैं अगरीया नगरी कू मानत हैं ।।
सुकबि उत्तम जू महिमा नहि जाय कहि शारद शेष नारद व्यास यों भानत हैं ।। २ ।।

॥ दोहा ॥

चित्रगुप्त कुल में भये कवि धनिपति सुजान ॥
कर्म धर्म गुण सिन्धुसो बसे बयाऊं ग्राम ॥ ३ ॥
तिनके उत्तमदास सुत भयो महा बुधि हीन ॥
सुजन अजन करये कृपा जान दास कौ दीन ॥ ४ ॥
बसंतराय और लघुभ्राता ॥ जासुनाम बहुंदिशि विख्याता ॥
अति गुण ज्ञान शीलनिधि सोई ॥ पूछयो छंद कौन विधि होई ॥

:o: :o: :o:

सुमति विमल वर मानसरि कविजन कुल बन जात ॥
उत्तम तिनकौं ग्रंथ यह हंस उदय इव तात ॥ ८ ॥
छंद वेद को अंग है कहै पुराने लोय ॥
सहसानन सकुचत कहत वरण सकै किमकोय ॥६०
भाम अगस्त फार्सींद कृत छंदो ग्रंथ अपार ॥
तिनको मति लहि कहत कछु लीजै सुकवि सुधार ॥१०॥
संवत ऋतु नर्भ रस पाशि मीता ॥ ज्येष्टमास रवि वार पुनीता ॥
शुक्ल त्रयोदशि तिथि शुभ जानी ॥ छंद महोदधि प्रगटयो आनी ॥११॥

इति श्री वृषभानजारमण चरणारविंद भृंग पाना नंदित श्री कवि धनीलाल तस्यात्मज कवि उत्तमदास छंदमहोदधिनाम विरचते मंगला चरणस्य प्रथमो प्रकरणः ॥

अंत—इति विषम वृत्त छंद संपूर्ण

॥ दोहा ॥

औरहु विधि प्रस्तारते छन्द होत बहुभांत ॥
उत्तम कवि किहि विधि कहै फणिपति जहं सकुचात ॥ १
श्री गुरु गौरि प्रसाद ते पूर भयो यह ग्रंथ ॥
बाल वुद्धि हित निजमेते कीन्हो सुधो पंथ ॥ २
जानु पानि युग जोरि कर विनवो वारंवार ॥
सुजन अजन निज और लखि लीजे चूक सुधार ॥ ३
प्रगटै श्री हरि ग्रंथ जग सकल करैं सनमान ॥
ऋद्धि सिद्धि सुख संपदा वढै देउ वरदान ॥ ४ ॥

इति श्री वृषभानजारमण चरणारविंदं भृंगपानानंदित श्री कवि धनीलाल तस्यात्मज कवि उत्तमदास प्रसिद्ध नाम उमराव सिंह छंदमहोदधिनाम विरचिते वर्णछंदस्यनवमो प्रकरणम् ॥

छंद महोदधि ग्रंथ यह कृत कवि उत्तम दास ॥
पंडित नन्हें सिंहजू लिखो सप्रेम हुलास ॥ १ ॥
लाला नथमल सेठ ने छपवायो सानंद ॥
देख छंद प्रस्तार विधि ह्वै हैं मुदित कविंद ॥ २ ॥
संवत श्रुति जुरखंड शशि मासभाद्रपद मान ॥
सित एकादशी वार कुज ता दिन पूरन जान ॥ ३ ॥
सन् १८७७ पहली बार ॥ :o: :o: :o:

विषय—पिंगल विषयक वर्णन। छदों के निर्माण के नियमादि, उनके भेद और उदाहरण।

रचनाकाल

(१)

६ ० ६ १
संवत ऋतु नर्भ रस पाशि मीता। ज्येष्ट मास रवि वार पुनीता ॥
शुक्ल त्रयोदशी तिथि शुभ जानी। छंद महोदधि प्रगटयो आनी ॥११॥

(२)

४ ३ ६ १
संवत श्रुति जुर खंड शशि मास भाद्रपद मान ।
सित एकादशी वार कुज तादिन पूरन जान ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ छदशास्त्र का उत्तम ग्रथ है । छदों के भेद तथा उनका सांगोपाग वर्णन उदाहरण सहित दिए गए हैं । ग्रथ नव प्रकरणो मे समाप्त किया गया है । विषय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है ।

मंगलाचरण प्रथम प्रकरण ।
वृत्त प्रमोदस्य द्वितीय प्रकरण ।
लघुविचार तृतीय प्रकरण ।
मात्रागण कथन चतुर्थ प्रकरण ।
गणागण वर्ण विचार पचम प्रकरण ।
मात्रा अष्टाग वर्णन षष्ठ प्रकरण ।
मात्राछद वर्णन सप्तम प्रकरण ।
वर्ण अष्टाग वर्णन अष्टम प्रकरण ।
वर्णछंद नवम प्रकरण ।

संख्या २२. अनेकार्थ मंजरी, रचयिता—उदोत कवि, स्थान—टीकमगढ (ग्वालियर), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ X ५। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—२१०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री सीताराम जी दसौधी, ग्राम—नईडीह, डाक—मडियाहूँ, जिला—जौनपुर ।

आदि—....................
गिरिवव सू मंडल वरणिग्रौ सुमूह निरआन ।
भूमि भाग मंडल भणत मंडक हियते स्वान ।४४।
मनि लिंगाग्रभागस्यान्मणि केसपाल कुंतल कहै आस ।
कुतल कल केस स्वान लयो जो हो सकुतल आयुध वेस ।४५।
पद्म राग मनि जान मनि लिंगनि अग्र ।
कूपनि के उपकंठ मनि मनि भग अग्र समग्र ।४६।

मध्य—तंत्रशास्त्र कुल तंत्र वल तंत्र रसायन देषि ।
आपु धारना तंत्र......कहि तंत्र मर सुष लेषि ।४७।
:o: :o: :o:
सनि मूरष रोगी अलप मद नाम कहि दीन ।
सखी सास्त्र कारन सुकवि जानि प्रमा प्रवीन ।५२।
विदुर नाम सर्वोपरि जानै । अधिक पुज्य अलप वषानै ।
उचित वस्त जग निवत रहे है । स्वारथ सहित सुधन्य कहे है ।५२।

अंत—कुंजर नाम समाज है कहिय समय समाज ।
जाति वाजि खग जाति सो अनल मछिका वाज ।१६।
वत्तमान रज राज को भूय चक्कवत्ता वीर ।
पातसाह दिली तषत राजत आलमगीर ।२०।
वई जेब जिनि जगत को औरंग साहि दिलीप ।
सप्त दीप नव षंड को सेवत सदा महीप ।२१।
साहि आलिगीर की सव देषी वुधिवान ।
पूरव पहन सो दुसरो नगर न देखो आन ।२२।
सुवास वस विहार में श्री वुजुक उमोद ।
वेद पुरान कुरान के जाने वहुविधि वेद ।२३।

तिनके सथमल राम जू मंत्री मंत्र प्रवीन ।
पूरन मल 'सथमल सथमल' तनय राजतनवनल नवीन ।२४।
बुधिवर सुकवि उदोत सों कीन्हीं कृपा अपार ।
अनेकार्थ भाषा रच्यो करिकै विविध विचार ।२५।
ग्रंथ सुनेते पूछि हैं कौन सुकवि उदोत ।
रस जस कविता के सुने तनमन आनंद होत ।२६।
कासी बसियत सुरसरि के तीर समीप नीजु वतन टीकमगढ़ ग्वारियर गाउ है ।
परम पवित्र पति पाठष हमारी अल्ल जाहिर जगत देस देस ठाउ ठाउ है ।
गीरवान वानी विदित षट दरसन भाषा कविताई सदा सहज सुभाउ है ।
नंद स्याम मिश्र के सनावढ़ सुकवि मनि दीनो रामसिंघ को उदोत कवि नाउ है ।२७।
भूषन दूषन होत है सवही ग्रंथनि माह ।
इहा अनुग्रह कीजियो सकल सुकवि नरनाह ।२८।

इति श्री कायस्थ कुल कलि कल्पतरु श्री ला पूरनमल्ल विरचितायां अनेकार्थक मंजरी केशशो समाप्त शुभमस्तु श्री भवानी साहाय ।।

विषय—शब्दकोश वर्णन ।

संख्या २३क अलकार मजरी, रचयिता—ऋषिनाथ, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—८।×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अणुष्टुप)—५१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३० वि०, लिपिकाल—स० १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री राय अबिका नाथ सिह जी, नायन रियासत, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

दोहा

तासुतनै प्रगटौधरा दोहाराम उदंड ।
तन देवान कीन्हो तिन्है कासिराज बरिवंड ।१
स्वामिधर्म जान्यौसदा मन वच कर्म ललाम ।
धर्मधाम अभिराम अति "लाल दोहाराम" ।२

कवित्त

कासिराज राजमैं चलाये पथ नीके भाये,
सुजस सुहाय करि धरम को धाम भो ।
जापी रघुनाथ को प्रतापी रवि ऐसों कहैं,
रिषीनाथ चापी पथ्य कैसो जगनाम भो ।
चंडकर परको उदंड भुजदंड बलीभूप बरिवंड को देवान दोहाराम भो ।३

:o: :o: :o:

किति छिति छावत अनूप रूप रिषिनाथ आवत बरसि कासिका से पुन्य थर को ।
कविता बनावत मनावत है जैत श्री ओज सब दावत अवनि भूरि भरि को ।
सुध सरसावत रिझावत रस जन को ध्यावत हैं सबदो सुवेष हरि हर को ।
पावत हैं मौजें मनभावत महीपन के गावत सुजस सदा नंद रघुबर के ।१४

यहै मोंहि आयसुदयो करिके कृपा अपार ।
अलंकार की रीति कछु कीजै ग्रंथ विचार ।१५
सदानंद रघुवर कृपा करिकै कृपा सनाथ ।
अलंकार मनिमंजरी रची सुकवि रिषिनाथ ।१६
संवत् नभ शंकर नयन सिधि वहुरी निसिकंत ।
वार सोम शुभमाघ सुदि तिथि पंचमी वसंत ।१७

अंत—धरकत हिय विरहीन सुनि घोर अघोर ।
सैना बढी मनोज की भजि बचिहै केहि ठोर ।

इतिशब्दालंकार

सदानंद रघुबर कृपा करि रख्यो निज साथ ।
जस नीको मित करत है प्रसनीको ऋषिनाथ ।
सदानंद रघुबर हमैं आयसु आछो दीन ।
रच्यो जथामति सो सुनो मैं यह ग्रंथ नबीन ।
अलंकार मति मंजरी कंठराखि मतिवान ।
सभा बीच सोभा लहै करहि संत सनमान ।

इति श्री कायस्थ कुल कलपरूसदानंद रघुवर दयाल विरचायां अलंकार मति मंजरी समाप्तम् सम्वत् १८९० ।।

बिषय—अलकार विषय वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् नम शंकर नयन सिद्धि बहुरि निशिकंत ।
वार सोम शुभ माघ सुदि तिथि पचिमी बसंत ।

संख्या २३ख अलकार मन्मजरी, रचयिता—ऋषिनाथ, कागज—आधुनिक, पत्र—५०, आकार—८$\frac{3}{8}$ × ६$\frac{7}{8}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—९७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३० वि०, लिपिकाल—स० १८९० वि०, प्राप्तिस्थान—राय अबिका नाथ सिंह जी (लाल साहब), नाइनराज्य, डाक—सूची, जिला—रायबरेली ।

आदि— ।। दोहा ।।

तासु तनै प्रगटौं धरा "दीहाराम" उदंड ।
तन देवान कीन्हो तिन्है कासिराज वरिबंड ।। १ ।।

:o: :o: :o:

भो अनुजा सुत सुत सरिस "सदानंद" कुल चंद ।
बहुरो दीहाराम सुव "रघबर" बधत बिलंद ।। ५ ।।
है दोउ चेत महीप के बकसी वीर देवान ।
जिनको सकल जहान प्रभु जानत तनमन प्रान ।

:o: :o: :o:

दोउ भयनि की परम प्रीति न वरनी जाय ।
ग्यान प्रान प्रभु मनसु तनु एकै रूप लखाइ ।। ८ ।।

:o: :o: :o:

तिन कविता रिषि नाथ सो कियो पुन्य पथ पेम ।
दये दान सनमान सो अगनिति करि मरि हेम ।। १३ ।।

:o: :o: :o:

सदानन्द रघुबर कृपा करिके कृपा सनाथ ।
अलंकार मनि मञ्जरी रची सुकवि रिषिनाथ ।।१६।।
संवत नभ शंकरनयन सिधि बहुरी निसिकंत ।
वार सोम सुभ माघ सुदि तिथि पंचमी बसंत ।।१८३१।।
ऐसो सुभ दिन सोधि कै कीन्हो ग्रंथ विचारु ।
अलंकार मनु मंजरी रची यथामति चारु ।।१८।।

अंत—।। पुरुष को उदाहरन ।।

किंसुक बकुल रसाल वन परफुलित चारो ओर ।
कोकिल कीर कपोत अलि कूजत पिय घनघोर ।।

।। कोमल को उदाहरण ।।

धरकत हिय बिरहीन सुनि घोर अघोर ।
सैना चढ़ी मनोज की भजि बचि है केहि ठोर ।

इति सब्दालंकार

सदानंद रघुबर कृपा करि राख्यो निज साथ ।
जस नीको नित करत हैं असनीको ऋषिनाथ ।।
सदानंद रघुबर हमैं आयसु आछी दीन ।
रच्यो जथामति सो सुनो मैं यह ग्रंथ नवीन ।।
अलंकार मनि मंजरी कंठ राखि मतिवान ।
सभा बीच सो भाल है करहिं संत सनमान ।।

इति श्री कायस्थ कुल कलपरु सदानंद रघुबर दयाल बिरचायां अलंकार मनिमंजरी समाप्तम: सम्वत १८९० माघ मास शुक्ल पच्छे तीथौ त्रयोदस्यां गुरु बासरे इदं पुस्तकं आलेख्य श्री सीता बल्लभाय नमः

विषय—अलकार वर्णन ।

रचनाकाल

० ३ ८ १
संवत नभ शंकरनयन सिधि बहुरि निसिकंत ।
बार सोम सुभ माघ सुदि तिथि पंचमी बसंत ।।१८३१।।

संख्या २४क. अखरावती, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—७ × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री विंदेश्वरीप्रसाद जायसवाल, ग्राम-डाक, मड़ियाहूँ बाजार (तहसील), जिला—जौनपुर ।

आदि—सतनम लिषतं ग्रंथ अखरावती

।। सोरठा ।।

सतगुरका उपदेस सतनाम निजु सार है ।
सोई मुकति संदेस सुनहु संत सतिभाव सौ ।।
नाम सनेहि सोई काक कुमति गति परिहरैं ।
कुला कर्म सब धोइ हंसहोइ सतगुर मिले ।।

।। चौपाई ।।

सति लोक की अकथ कहानी । सोई निजु सतगुर सहिदानी ।
रूप बरन नाहीं जिन देखा । तेन का अचरज सुनहु संदेसा ।
नहिं तह पाँच तत्व की काया । नहिं तह तीनि पुरुष निर्माया ।
नहिं तह प्रकृति पचीसौ सोई । जरा मरनि जानै नहि कोई ।
बसई विनही घट कर्मा । बरन भेद नहिं कुलकर धर्मा ।
देवस न रजनी चंदन सुरा । विमल प्रगास सकल विधि पूरा ।
सर्गुण निर्गुण तौ नहिं होई । सब्द सरूप सकल है सोई ।
समय सब्द सरूपी सतगुर जाकर आदि न अंत ।
काया मोसो अप है निहचै मानहु संत ।

।। सोरठा ।।

सति सब्द परवान अनहद बानी जो उठै ।
अवर झूठ सब ज्ञान कहै 'कबीर' विचारिकै ।।

अंत—

।। सोरठा ।।

सत नाम है ऐक जो सतगुर संति भाषहीं ।
करहु एक को टेक मुकति नहीं परतीत बिनु ।।

।। चौपाई ।।

कथा ज्ञान अखरौती सारा । बावन अछर के बिस्तारा ।।
चौ उपदेस बेद बसभाषा । तीनौ तै तिस उपर राषा ।।

ऐक ऐक अछर सहिदानी । वेद को मूल कथा बहुमानी ॥
सत्यलोक का अगम संदेसा । सो सतगुर जीवन उपदेसा ॥
अकथकथा अषरौती भाषी । वेद किताब के उपर राषी ॥
अषरौती पढि पढि भेद बखानैं । सतगुर की महिमा सो जानैं ॥

समय—विनु अछर सब झूठ है निहि अछर समसार ।
अछर भेद जो पावे सोई हंस हमार ॥
सोरठ—कहत कबीर इरनाहि सत्य बचन परतीत कर ।
गहो हंस को वाहि निहचै जग भो जल तरहिं ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है । रचयिता संत कबीरदास हैं । रचनाकाल तथा लिपि-काल का कोई उल्लेख नही पर ग्रंथ देखने से अत्यंत प्राचीन प्रतीत होता है ।

प्रस्तुत ग्रंथ मे भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णित है । संत साहित्य की दृष्टि से ग्रंथ महत्व-पूर्ण है ।

संख्या २४ख कबीर देवदत्त की गोष्ट, रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६$\frac{३}{१०}$ × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—१६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बबा रामशरण दास जी, कबीर-पंथी मठ, उँचगाँव, पोस्ट—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—सतनाम सत सुकृत ॥ आद अदली अजर अचंत ॥ पुरस मुनींद्र करुनाम कबीर ॥ सुरत जोग संताएन ॥ धनी धर्मदास की देव बंस बयालीस की वेग्रा लिषते कबीर देवदत्त की गोष्ट ॥

कबीर वचन

देवदत्त सुनो हो वानी । अब जन भूलो जाकी घानी ॥
षोजो वेद मुक्त परदेसा । भ्रम जन भूलो जम कर भेसा ॥
मानो दत्त कहु समझाई । तेज तमोगुन देहो वाहाई ॥
तुम जिन भूलो जम कर झेला । ए संसार काल का चेला ॥
तीन लोक का बीगरावा ओघट ले जीव भरमावो ॥
ए जग परा काल के हाथा ॥
सतगुरु बीन मोगती नही होइ । सुर नर मुनी सब गेह बीगोई ॥

साषी

सब कु कान चावत्वी ओघट देह धराए ।
आगे से प्रसादेही के फिर पीछे घर बाए ॥

देवदत्त उवाच

असजन बोलो गुरु गोसाई । केसे जीव काल घर वाई ॥
तपसाधन पर भोम सिरानां । केसे जीव जम हाथ बेकाना ॥
तपसाध पर भो वन फल षाई । ताको जीवनी कष्ट नहीं जाई ॥
य अचरज सुनत मोहे न भावे । केसे जीव लोक सुष पावे ॥

अंत— **साषी**

देवदत्त सुनो मुक्ती तप सुना मिले सत्त सबद घर ही लेहो ।
तीरथ ब्रत सब सांझ के जीव को सत की दवा देहो ।
पानचड रमणी जो जीव पावे । सो भवसागर में हंस छोड़ावे ॥
देवदत्त से कहा समुझाई । तब आए नानक के ठांई ॥
इति श्री कबीर देवदत्त की गुष्टी संपूर्ण ॥

काठीयावार मध्ये राजकोट की छाउनीमध्ये लिषते रामानंदी लिषते ।। कबीरपंती थी पठते ।। बाबा रामचरनदास लिषते सिपाई अंगनुर पाठेत ।। वार सुकर दशमी तिथि बसमी ।। सुक्लपक्ष ।।

विषय—ब्रह्मज्ञान संबंधी कबीर और देवदत्त का वार्तालाप ।

संख्या २४ग कुजाला कथा (? कुजल कथा), रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—६$\frac{3}{8}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बाबा रामशरन दास जी कबीरपंथी मठ, उँचगाँव, पोस्ट—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—सत नाम सत सुकीत आदी अवली अज नाम अचीत पुर्स मुनींद्र करुनामें कबीर सुरती जोग संताएनी गुर सुरतीगोपालदास साहेव की दाय सो लीषते ग्रंथा कुजाला काथा ।।

चौपई

प्रथमही सुमीरहु पुर्स पुराना । सुमीरत हंसा होए निर्वाना ।।
अमरलोक मो करें नेवासा । सोहंग सब्द ब्रह्म परगासा ।।
वहुरी न भौ में आवै सोई । साता पुरसान रहे समोई ।।
पहीरें हंसा आंमर चीरा । अजर अमर हैं हंस सरीरा ।।

:o: :o: :o:

साषी

कहै कबीर "कुजाला कथा" देषौ संत वीचारा ।
बाबा कही दुनीया गई सब कहा आइ हार ।।

अंत— **साषी**

तीन लोक सब कोन्होउ लीन्हा सत्य कर मान ।
कहै कबीर मुष भाषेऊ हतौ हमारौ नाम ।।
हम अग्या पानी जब पावा । पौन कहा मुष वोल न आवा ।।

ध्रमदासौ वचन

एक और मुषा भाषहु में नाही पाचठमा ।
जादी .... ।।

:o: :o: :o:

—**अपूर्ण**

विषय—जीव का बधन मे पडने का कारण और उसके मोक्ष का उपाय वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ की लिपि बहुत अशुद्ध है । ग्रथ का नाम वास्तव मे क्या है, विदित न हो सका । "कुजाला काथा" को "कुजलकथा" अथवा "कुजालकथा" भी कह सकते हैं । सभव है अतिम नाम ही ठीक हो । क्योंकि यह सृष्टि आत्मा के लिए कुजाल (दुष्ट जाल) ही है ।

संख्या २४घ. कुर्मावली, रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८$\frac{5}{8}$ × ६$\frac{5}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महत बाबा रामशरणदास जी कबीरपंथी मठ, उँचगाँव, पोस्ट—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—सुकृत कबीर धनी धर्मदास की दया ।। संस बयालीस की दया ।। साहेब सुरतिगोपालदास की दया ।। सकल संत महंथन की दया ।। लिषितं ग्रंथ कुर्मावली ।।

प्रथमहि कुंर्म लीन्ह अवतारा । ताकंह दीन्ह सकल जगभारा ।।
तेहि पीछे पुनि भयो अन्याई । धर्मराय सब दुनिय एसाई ।।
अतिसो चतुर सेवा बहु कीन्हा । तीनिऊ लोक मांगि तेइ लीन्हा ।।

बहुत भांति तें सेवा माडौं । चौसठि जुग एक पग ठाढी ॥
चौसठि जुग सेवा उन्ह कीन्हा । तीनिउ लोक मांगि पुनि लीन्हा ॥
अंत—कहैं कबीर समुझायकै गुर को लेहु विचारि ।
सब्द विना सुति आंधरी नहि जांनिय कहां जाए ॥
सब्द विना जिव भरमै ठांवहि ठांव विलाए ।
सब्द सुरति जब एक भयौ तब को तोरै आए ॥
काके तोरे टूटि है सो मोहि वेहु बताए ।
सुति सिवाणि सुबिन करै गहै सब्द की डोरि ॥
कहैं कबीर धर्मदास सों उतरौ घाट करोरि ॥

एतौ ग्रंथ कुर्मावली संपूरन समाप्तं सुभमस्तु ॥ संवत् १८३३ समय नाम फागुन सुकुल पक्षे ॥ तिथ्यौ चौथि वार मंगल ॥ मोकाम रसूलपुर में ॥ दसषत वरगदास वैरागी के ॥ सुकृत कबीर धर्मदास कों बंदगी सत्यनाम ॥

विषय—निर्गुन मतानुसार सृष्टि उत्पत्ति वर्णन ।

संख्या २४ङ. ग्रंथनाममाला, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—७×४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—३०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८९१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री विंदेश्वरी प्रसाद जायसवाल, ग्राम व डाक–मडियाहूँ बाजार (तहसील), जिला–जौनपुर ।

आदि—श्री गनेसयाये नमः सतनामः लिष्यते ग्रंथ नाममाला

चौपाई

कथा रसाल कहौ कछुवानी । बूझै सोइ ब्रह्म निज ग्यानी ।
ऐहिगुर गम्य संत कै लेखै । प्रगटै ज्ञान तव तत्य परेखै ।
अनभौ आदि कछु कहौ बषानी । सुनौ संत गुर गंम्य की वानी ।
अनंत कोटि जुग कहा चलि गएऊ । अचल अमुनंत तामै रहेऊ ।
साठ कोटि जुग अवर जो वीता । तव सिष्टि करन कह इछा कीता ।
एतौ पुर्ष अचल वे अंता । विन गुर दया न भजै भगवंता ।
कोटि कथै कछु कथन न पावै । जव लगि नहि गुर गम्य वतावै ।
साषो पद कोटिन वहु वानी । पूरुष ऐक सुमिरौ हो प्रानी ।
ज्ञान सूरतो औ सवद अपारा । ऐसा दिप जव किऐ पसारा ।
अचल पुरुष सुमिरै जो कोई । जीवत मुकुत तासु की होई ।
:o: :o: :o:

॥ साषी ॥

आदि नाम निजु सार है बूझि लेव हो संत ।
जिनु जानौ निजु नाम को अमर भऐ ते बंस ।
आदि नाम निज मूल है अवर मंत्र सम डार ।
कहै 'कबीर' निज नाम विनु वूड़ि मुआ संसार ।
अंत—यह नहि तजौ जाइ जो प्राना ।
साकठ को निंदा सम ज्ञाना ।
कहै कबीर सब्द है ऐसा ।
गुर पुर सूरा होई चेला ।

साषी

गुर पूरा सिष सुरा वाग मोरि रन पैठि ।
सत सुकत को देषिकै येक तषत चढि बैठि ॥

इति ग्रंथ नाममाला संपूरन संवत १८९१ पुस सुदी

विषय—भक्ति एवं ज्ञानोपदेश ।

संख्या २४ज. ज्ञान तिलक, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री १० गुरुप्रसाद जी, ग्राम—धरमपुर, डाक—परशेरामपुर, जिला—बस्ती।

आदि—श्री मतेरामानुजाय नमः ॥

ओं प्रथमबंदी चार संप्रदा ॥ श्री रामानुज। श्री निमानंद जी। माध्वाचार्य। विष्णुस्वामी।

जिन निरंजन अपने मुख गाटे। जल थल में कीन्हे रखवारी।
ध्रुव प्रहलाद प्रित्यंग्या पाले। ... ...
ओं आदि जुगादि पवन अरु पानी। ब्रह्मा विष्णु निरंजन आनी।
जोति सरूप कृपा निधाना। अलष पुरुष आविगत अविसाना।
मारग मे मिलिए एक सुरा। जाको सतगुरु मिले पुरा।
पाचौ पकरि ऐक घर लावै। चितके चौहटे न्याव चूकावै।
आसानदि निकट नहि जाई। भेद भ्रम सब दिया मिटाई।
चेतन के घर पै परा जागे। ताको काल कहकर लागै।
है कोई अबली अबल चलावै। नगरि चौर मूसनि नहिं पावै।
बुधि सों कोटि संबल नहिं टूटै। जाकौ मनसा डायन कहाकर लूटै।
कहा 'कबीर' सोई बड़भागी। जाकी सुरत निरंतर लागी।
आद अंत अनहद ऐक वाणी। चौदह ब्रह्मंड रहे भरि पाणी।
जा पाणी में एक अंड उपजाया। तीन लोक प्रकासी माया।
सेवत अंड भए जुगचारी। जहा उपजै ब्रह्मा अरु त्रिपुरारी।
नभि कवल ब्रह्मा चलि गएऊ। जग छतिसो भरमत भएऊ।
पार न पावै गंगन अतिभारी। जीव जंत नहि होते। कहत कबीर विचारी।
आपहि आप करहि विचारा। को हमको सिरजन हारा।
श्री गुरु रामानदजी के चरण पर अरपन करो सरीर।
अबकी बेर उवार लेहु स्वामी कहते दास कबीर।

अंत—आयो षोजो ब्रह्म विचारी सहज पलटे जोती।
काया मंध्ये माणिक निपजै घण घण बरषे मोती।
ज्ञाणगट जोगमति समय करि कोई जूझै बुझै पुरा।
आगम पंथ कू पगधरै जहा बसे गुर पुरा।
काल कूं जीती जंजाल कूं जीती मारलै मनकी चिंता।
जो गुरु वाका हरिभक्ति करो निरभय सुता।
जहां चंदा विना चांदना अग्नि विना उजियाला।
पंच तत्व मिलि परसते जहां वृधा न बाला।
राषि राषि रे मन मृगा वाडी वाई।
मूल छोड़ि हंसा कबहुं न जाई।
पाताले वारी आकासे कुवा। भरि भरि पीवे जो सिद्ध हुवा।
सिद्ध पीवे साधिक पीवे जो नर उतरे पारा।
'ज्ञानतिलक' का मरम न जानै जरिवरि हुवे छारा।

इति श्री गुरु रामानंदजी कबीरजी का ज्ञान तिलक समापत ॥

विषय—ज्ञानोपदेश। कबीर तथा गुरु रामानद जी के प्रश्नोत्तर।

संख्या २४छ. निरनैसार, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—७ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—४५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० सत्यनारायण जी उपाध्याय, ग्राम—नेवढ़िया, डाक—सग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—सतनाम

सत्त शुकृत आदि अदली अपर अचिन्त पुर्स मुनिन्द्र करुनामय कबीर शुर्ति योग संतापन धनी धर्मदास चूरामनि नाम शुदर्शन नाम कुल पत्ति नाम प्रमोध गुरु बाला पीर कवल नाम अमोल नाम शुरत्ति सनेही नाम महक नाम पाक नाम प्रगट नाम धिरज नाम उग्रनाम ।। आरिगुरु वंस वयालिस की दयासो लिष्यते ग्रंथ निरनैसार

।। साषी ।।

बंदनिये गुर परष को बार बार कर जोरि ।
दयाकरन संसं हरन संतरूप प्रभुतोर ।
बंदौ छार दयाल प्रभु विघन विनासिक नाम ।
असरन सरन बंदौ चरन सब विध मंगल धाम ।

चौपाई

सरन सरन कबीर कृपाला । भक्त सहायक दीनदयाला ।
जीव उधारन नाम तुम्हारा । याही ते आप संत तन धारा ।
काल जाल के परदा भारी । मेटि केहेब निज दाश सुधारी ।
तुम सब लायक अंतर जामी । हौ नालायक जीव बेकामी ।
बंदौ पद मैं दुइ करजोरी । सरव संसं मेटो प्रभु मोरी ।
निरनैसार ग्रंथ को भाऊ । कहो जथा उपदेस प्रभाऊ ।
कवन जमा है जक्त मझारा । जापर होत सकल बैपारा ।
बिना जमा बैपार न होई । येतौ विदित जानै सब कोई ।
कोई ब्रह्म ज्ञान बतलावै । कोई जोग समाधि लगावै ।

:o: :o: :o:

गुरु उत्तर

कहहि कबीर शुनु सिषि सयाना । ये सभ भर्म जाल विधि नाना ।
जीव जमा येक सांच है भाई । अवर रावै षरचा ठहराई ।

अंत—सरन सरन गुर राय बहुत शुकी मोको किहेव ।
पूरन बंदत पाय सब अपराध क्षमा करो । १
मैं नालायक प्ररन की नेव तुम समझायव मोहि ।
मोसे बोलत ना बने क्षिमा करो प्रभु सोय ।

इति संपूर्णम् दास साहेब कबीरपंथी विरंचिते गुर सिषि संवादे निरनैसार ग्रंथ संपूर्ण संवत् १६४४ ।।

विषय—धर्मदास तथा कबीरदास के प्रश्नोत्तर (सवाद) । भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या २४ज. निर्भयज्ञान, रचयिता—कबीर, स्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—८५/६ × ६८/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—७२५, खंडित (आरंभ के तीन पत्रे नहीं), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, लिपिकाल—स० १८६२ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—......................सो हस अकार ।।
एक हंस छवी आभा वरनेउ सुछीम भाव ।
तिहुर्पुमध्या वादि साच नही पतिआव ।।

।। चौपाइ ।।

बिरला जन अंकुरी होई । सतनाम कह मनोहे सोई ।।
जीव सोहंगम पुस के असा । बीनु परचै जीव करही विधंसा ।।
जो जीव सुमीरं नीरभं नामा । सो जीव पहुचै अविचल धामा ।।
निर्भे नाम सो तोही लषावा । डोरी ध्यान बीदेह लषावा ।।

मध्य—

सत्त जुग नाम अचींत कहाए । त्रेतानाम मुनींद्र धराए ।।

।। साषी ।।

करुनामय द्वपरजुग कलजुग नाम कबीर ।
प्रथम गएऊ प्रषोतिमपुर प्रगटेउ सागर तीर ।।

।। चौपाई ।।

हरि को देवल तहां अस्थाना । मेटेउ छूति भ्रम मन आपा ।।
पंडा के पुनि गर्भ नेवारा । एक अनंत कला विस्तारा ।।

।। साषी ।।

लछिमी को दल पुरेउ कौतुक लीन्ह प्रसाद ।
तहाते वलष सीधारेउ पंथ मिले एक वाद ।।

अंत—

साह सिकुचि अपने मन रहेउ । सेषतकी कर षंडा कहेऊ ।।

।। दोहा ।।

षेमा करै के कारने सेष घाली तरवारी ।
षंडा वहै सीर ना कटै सेषतकी रहै हारी ।।
वार अनेक सीस धरी अव वहावै सेष ।
अव वहै तन ना कटै नाम प्रताप अलेष ।।
कहै तकी इन्ह जो लहै वाधेउ षडा भोर ।
ताते वेही ना कटै लगै अव होए भोर ।। ३ ।।

:o: :o: :o:

जीअत मुक्ति संत सो जेहि सत नाम सनेह ।
कहै कबीर सो नीरभै वहुरि धरै नहीं देह ।।

इति श्री नीर्भैग्यान ।। ग्रंथ संपुरन ।। संमाप्त ।। सुभमस्तु जो देषा सो लीषा ।। म्मदोष ना दीअते ।। संत साध सों वीनती मोरी टुटल अछर लेव सव जोरी ।। दसषत चेतनदास । समै नाम महीना ।। कुंआर सुदि । चौथी कह तंआर भया ।। संवत १८९२ बंठक नारे मह लीषि दीआ ।। मनसाभगत सेवक कह ।। साहोंपुर

विषय—कबीर का वृत्त और ज्ञानोपदेश वर्णन ।,

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम कबीर है । इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ में अपना जीवन वृत्त दिया है और धर्मदास को उपदेश भी किया है । जीवन वृत्त की दृष्टि से रचना महत्वपूर्ण जँचती है । यदि इसका प्रमाण मिल जाता कि रचना कबीर की ही है तो जीवन वृत्त का महत्व भी निर्विवाद रूप से बढ जाता । परतु जहाँ तक अनुमान होता है यह कबीर की रचना न होकर किसी कबीरपंथी की है । फिर भी प्रामाणिक जीवन वृत्तो के अभाव मे इसकी उपेक्षा नही हो सकती । इसमे दिया गया वृत्त बहुत कुछ जनश्रुतियो के अनुकूल ही है । शेख तकी से कबीर के द्वारा उपदेश लेने के संबध मे कोई उल्लेख इसमें नही । वह कबीर का घोर विरोधी रहा जो अंत मे हार गया और कबीर से क्षमा किया गया । सिकंदर शाह की कबीर के प्रति अच्छी भावनाएँ थी । रामानद का उल्लेख कबीर के गुरु के रूप मे है । दोनो का विवाद भी दिया है ।

संख्या २४क. बारामासा, रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—$6\frac{3}{4}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—प्रथम कातिक मास काया सो रची करतार है ।
स्रवन नयन मुष नासिका छबि सीस कंठ सुढार है ।

भुज डंड जुग्ल प्रमान पूरन कँवल कोमल कर बने ।
मेरु डंड सो जोरि पिंजरा प्रान तंह उह् वासने ।
जुग्ल रूप संवारि भीतर अंगुरी नख लाइके ।
पगु पेडुरी से जोरि बंभा अधर अन्त लगाइकै ।
जुग्लधारा अधर भीतर सचि सुरति सुधारियाँ ।
पांच तत्तु औ तीनि गुन लै सिरा आपु सेवारियाँ ।
घट वज्र कुंडल सरव हृदै लसिय सोभा. . .स्न को ।
कन्त करता करै कीडा दियेरे सब किछु हृत्र को ।
सुवचन वानी सुभग बोली तासु को सिखि लीजिए ।
कबीर करता अन्त ही नहिं निज सरूप हित को जिए ।।

अंत—कुवार मास विलास नृमल सकल सोभा सार है ।
सुष निधान सोइ प्रान प्यारे सोइ सिरजनहार है ।
ताहि लषै कोई सन्त साधु तबहि सस्ने जाइ है ।
कल्प वछ कम फन्द छूटे तब अभै पव पाइ है ।
पाइ हौ निज अभैपद को जञ्जाल सिर सो टारि है ।
कबीर केवल सरूप मैं मिलि अन्त काहु न जाइ है ।।१२।।

विषय—ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २४७ञ. वीजकरमैनी (बीजक), रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—६३, आकार—१० × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१७६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—टैगोर पुस्तकालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—दया गुर की वीजक रमैनी ।
अंतर जोति सब्द एक नारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ।।
ते त्रिअै भगलिग अनंता । तेउ ना जानै आदि व अंता ।।
बाचरि एक विधातै कीन्हा । चौवह ठहर पाठ सो लीन्हा ।।
हरिहर ब्रह्मा महंतौ नाउ । तेन पुनि तीनि वसावा गाउ ।।
तेन पुनि रचिनिषड ब्रह्ममंडा । छौ वरसन छानवे पषंडा ।।
पेटै काहु न वेद पढ़ाया । सुनति कराए तुरुक नहि आया ।।
नारीमो चित गर्भ प्रसूती । स्वांगधरे बहुतै करतूती ।।
तहिआ हम तुम एकै लोहू । एकै प्रान विआपै मोहू ।।
एकै जनी जना संसारा । कौन ग्यानते भये निनारा ।।

:०: :०: :०:

कैसे कै तरै नाथ कैसे कै तरै ।
अव बहु कुटिल भरे ।।
कैसो तेरो सेवा पूजा कैसो तेरो ध्यान ।
उपर उजल देषो बकु अनुमान ।।
भावतौ भुअंग देषो अति विविचारी ।
सुरति सचान तेरोमति तौ मंजारी ।।
अतिरे विकध्र देषो अतिरे वेवाना ।
छौ दरसनं देषो भेष लपटाना ।।
कहहि कबीर सुनो नरबंदा ।
डाइनि डिभ सकल जगबंधा ।।११३।।

:०: :०: :०:

अंत—

बाजा घर घर करै सब कोई । घर घर किए काज ना होई ।।
वावा करै सुनो रे भाई । राम नाम लै जाहु पराई ।।
सासा सरा रचो वरिआई । सर वेधे सब लोग तमाई ।।
सासा के घर सुनगुन होई । एतनी बात न जानै कोई ।।
हाहा करत जीव सब जाई । छेव परेलव कहु समुझाई ।।
छेव परे कहु अंत न पाया । कहहि कबीर अगुमन गोहराया ।।

बीजक संपूरन रमैनी, पद साखी कहरा बसंत बेलि बिरहुली चाचरि हिंडोला विप्रमतीसी संपूर्न चौतीसी समत १८६४ अगहन वदी १० दसखत रघुनाथदास कायस्थ ।।

विषय—कबीर की कृतियो—रमैनी, पद, साखी, कहरा, बसत, बेलि, बिरहुली, चाचरी, हिंडोला, विप्रमतीसी और चौंतीसी आदि रचनाओं का बीजक नाम से सग्रह ।

संख्या २४८. भवतारन, रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६।। × ६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—३७४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १६१८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथदास जी मठाधीश, मठ—बनकेगाँव, डाक—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—सती नाम एक ग्रंथ भवतारन

चौपाई

धर्मदास बीनवै करजोरी । सतगुर सुनीए बीनती मोरी ।
भव दरीआव कवन बीधी छुटै । भव बंधन कैसे कै टुटै ।
भव दरीआव आर नही पारा । तामे अटके सब संसारा ।
सो दरीआव कवन बीधी थाहो । परम पुरुष पद कैसे लाहो ।
करो भक्ती की जोग कमाउ । देउ दान की तीरथ नहाउ ।
करो जोग की काया साधो । करो भक्ती की हरी अवराधो ।
करो अचार की साधन साधो । वाहर फीरो की मनको वाधो ।
जो तुम कहो सोई मै करिहो । बचन तुमारी ह्रीदय मे धरिहो ।
भवसागर दुख मेटो मोरा । छुटै जन्म मरन के डोरा ।
संसे रहीत करो मोही सामी । तुम सब घट के अतरजामी ।

सतगुरवचन

सुनु धर्मदास मै सती वतावौ । भवसागर के भर्म मेटावौ ।
संसे रहीत सदातुम होउ । तुमरी राह न रोकै कोउ ।

अंत—प्रेम पीआला जो पीयै सीस बछीना देई ।
लोभी सीस न देइ सकै नाम प्रेम का लेई ।५४
सतु नाम तीहु लोक मे सत्य नाम नीजसार ।
जनकबीर मस्तक दई सोभा अगम अपार ।५५
आवो ब्रह्म लखो घर करै जीगसीत सब्द रसाल ।
रोम रोम दीपक भयो जब प्रगटे दीनदयाल ।५६

इती श्री भवतारन ग्रंथ संपुर्ण संवत् १६१८

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २४९. मूलज्ञान, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १६२६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथदास जी मठाधीश, मठ—बनकेगाँव, डाक—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—मुलग्यान

मुलग्यान मुल मंत्र अछर पुनी साचा । जाही ते जीव काल ते बाचा ।
आदी नाम वुझै जो कोई । जरा मरा ते रहीत घर सोई ।
नीह अछर वोह नाम अपारा । अछर भेद जो उतरे पारा ।
अछर सार सब्द है भाई । जमराज तेही देषी डेराई ।
जब लगी सार सब्द नही पावै । काल फास कैसे मुकतावै ।
सार सब्द नीजु अछर होई । अछर भेद उतरीहै सोई ।
अछर मुल पुरुष के पासा । तेही मधे सुकीत रहु आसा ।
मुल मंत्र है अवर सब डारा । सार सब्द नीजु अछर न्यारा ।
लीषो न जाई कहो नही जाई । तेही पावै कोई अगम उपाई ।
होई गुरु वहीआ ताही लषावै । सो कोई सुरती सनेही पावै ।

साषी

केतीक पढी पढी पची मुए अवर मुए पुनी गाई ।
कहै 'कबीर' अछर वीना जीव परलै घर जाई ।

अंत—सरब मासु जे न षाईआ पीवै जल का नीर ।
उभै धरी पार न पावई सत गुर कहै 'कबीर' ।

चौरासीभरमावई ।

चौपाई

मोरे जीवक वोह मत देउ । सीष सीषा सेमत कही देउ ।
सीष चलै भजन सीर आनै । साधु सत की सेवा ठानै ।
सत मुक्ती जाकै घट आवे ।

साषी

सेवा करै साधु की आपन अंग बचाई ।
लषी चाल चलै मुल कहै कबीर समुझाई ।
मुलग्यान संपुरन................
सबत् १६२६ फागुन सुदी............

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या २४ड. सारभेद, रचयिता—कबीर, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथप्रसाद जी मठाधीश, मठ–बनकेगाँव, डाक कादीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—ग्रंथ सारभेद

।। चौपाई ।।

पानी पवन का भेव पसारा । ताकर अब मै करो वीचारा ।
पवन पचासी कहौ बषानी । ताकी आदी अंत नही जानी ।
सो ग्रंथन मे भाषी सुनाई । काहु एक वीर लाज न पाई ।
पुरुस एक ते उतपती भएउ । भीनीं भीनीं ग्रंथन मे कहेउ ।

।। सर्म ।।

पानी पवन की रचना जड चेतनी वीसतार ।
जो कोई वुझै भेद को उतरै भव जल पार ।

।। चौपाई ।।

अब पानी का करौं वीचारा । पवन भेद लै उतरो पारा ।
रंग छतीस भए है जलका । एक बुंद सबही मे झलका ।

बोही बुंद ते उतपनी भएउ । ग्रमी बुंद काहु नही लहेउ ।
ग्रमी बुंद का ग्रगम बीचारा । ताको क्या पावं संसारा ।
ग्रमी बुंद जानेगा कोई । पवन भेद पावेगा सोई ।
पानी ब्रह्मा बीस्न महेसा । पानी का रंग रक्ती ग्री सेसा ।
पानी पाच ततु उपजाया । तीनी लोक मे बाही छाया ।
पानी पवन की माणी तीनी लोक बीसतार ।
ग्यानी होई सो पावै पानी पुरुष नीनार ।
:o: :o: :o:
पानी तजो पवन को गहहु । भेदी भेदसार सो लहहु ।
कहै कबीर सुनो ध्रमदासा । भलो भेद कीन्हो परकासा ।

ग्रंत— ।। दोहा ।।
कहै कबीर पुकारिकै मोके दोस न होई ।
कहा हमार मानै नही ग्रपनो चला बीगोई ।
:o: :o: :o:
मुल नाम सम ग्रौर न कोई । मुल नाम मल डारं धोई ।
पानी पवन का भेद ग्रपारा । मुल नाम दुनो ते न्यारा ।
मुलनाम विनु मुक्ति न होई । लाखन ग्यान कथं जौ कोई ।
गुप्त कहौ तौ जग तरं प्रगट कहो न जाई ।
गुप्त नाम तुमको दीम्रा तुम लेहु सीस चढ़ाई ।

इति कबीर साहेब ध्रमदास संवादे सारभेद समाप्त संवत् १९३५

विषय—भक्ति ग्रौर ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ (सारभेद) मे पानी, पवन तथा उत्पत्ति का वर्णन विशद रूप से किया गया है। रचयिता ने ग्रपने शिष्य 'धर्मदास' को ससार के सारतत्वो का भेद बताया है।

संख्या २५. जिनदत्त चरित्र भाषा, रचयिता—कमलनैन (कमल नयव), कागज—देशी, पत्र—८२, ग्राकार—१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—११४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० वि० (?), लिपिकाल—स० १९०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मंदिर (बडा मदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

ग्रादि—श्री वीतरागाय नमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। श्री गुरुभ्यौ नमः ।।
।। छप्पै ।।
वंदौ श्री ग्ररहंतदेव पदसेवत सुरपति ।
वंदौ सिद्ध ग्रनंत सकल गुणवंत विगतगति ।।
ग्राचारज उवझाय साधु वंदौ सुषदायक ।
पंचपरमपद जपौं हृदं धरि सबविधि लायक ।।
ये विघनहरन मंगलकरन तारनतरन सुजानियै ।
जिनके प्रसाद मति होय मुझ तिन चरन कमल उर ग्रानियै ।। १ ।।
।। दोहा ।।
ग्राचारज गुणभद्र के वचन संस्कृत पाय ।
श्री जिनदत्त चरित्र की भाषा करौं बनाय ।। २ ।।

ग्रंत—श्री जिनदत्त चरित्र यह रच्यौ संस्कृत सार ।
प्रथम सिरी गुनभद्र मुनि महाबुद्धि वरधार ।।
ताहीमो ग्रनुस्वार लही कमलनैनि बुद्धिहीन ।
छंदबंद भाषा कियौ सोधौ परम परवीन ।।
:o: :o: :o:

गगन रिखीस्वर रंध्रपुनि चंद्र तथा परमान ।
सब मिली कीजं एकठे संवतसर पहिचानि ॥
सुदि आसाढ़ की पंचमी सूर्यवार सुभयोग ।
ता दिन यह पूरो भयो भविजन परम नियोग ॥११२॥
श्री जिनदत्त चरित्रवर कहत सुनत सुख होइ ।
डारन भविजन के सदा सकल पाप मल धोइ ॥११३॥

इति श्री जिनदत्त चरित्र भाषायां श्री गुण महाचार्यानुसारेण विरंचितायां कमलनैनिकृती नवमस्वर्ग समाप्तम् ॥६॥ शुभमस्तु कल्यानपद ॥ श्री जिनोजयति सर्वथा ॥३१॥ आगरे के सूबे में चकला इटावा वसै जाकी सिरकार कन्नौज एक जानियं ॥ तिसही इटाए के परगने में भोमगांम तिसमैं मैनपुरी जहाराजं राजधानीयं । नृप दलेलसिंघ जाके कोई विगिदेहि सदा दान दीन दुषी पहिचानियं । ताकौ राज करै नीको चालं प्रजासप्जजी के ब्राह्मन मथुरिया और वसैं जैन वानियैं ॥१॥ जाति के बुंदेले लंबकंचुक पहलैं तिनमैं तें अकेले हह मैले रीति जुदी जिवणानियौ । तिन्हही में वसै जहां नंदराम साहु एक दूजे हर चंदराय वैदपरमानीया । तिन्हही के दोय पुत्र छत्रपति कमलनैनि लघुपुत्र कीनी कथा जथासक्ति आनिया । स्यामलाल के सहाइ पुत्र नंदराम गाइ अर्थ जिनछियमताइ नाहि जहा जानीया ॥१॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६०७ वर्षे कार्तिकमासे शुक्ल मावस्यां रविवासरे सुभंभूयात् ॥ श्लोक पाइयं पुस्तकं......दीयते ॥१॥

विषय—जैन धर्मानुयायी जिनदत्त के चरित्र का वर्णन ।

संख्या २६क. शालिहोत्र, रचयिता—करताराम, स्थान—खैरीधाम ग्राम, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—११ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—२६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५४ वि०, लिपिकाल—स० १६३० वि०, प्राप्ति स्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सालहोत्र लिष्यते । दोहा ।

४ ५ ८ १
वेद वान वस भू सहित है सम सम्वत सांच ।
कार्तिक वदि बुध वेदी के सन वारह सै पांच ।१

चौपाई

रायरजाय सीस पर राषो । सालहोत्र भाषा अव भाषों ।
कृपा सिंधु संतन्ह हितकारी । खल रल दहन भूमि भयहारी ।
शिव विरंचि सुर सेवत जासू । ध्रुवकंह दियो अचल पदवासू ।
जासु अंस अवतंस प्रतापी । सुमिरि नाम गति पावहि पापी ।
:o: :o: :o:

कमलापति कमला सहित छीर सिंधु महं वास ।
सेवत चरण विरंचि भव हरि भंजन भवत्रास ।
सिधु सुता सुभ औसर जानी । बोली वचन जोरि जुग पानी ।
नाथ पिता मथि वेत समेता । कहौ वस्तु निकरा पुनि केता ।

अंत— तोमं छंद

इस्वर कृपा जव करै । तव कुर कुरी कों हरै ।
वर वाजि को यह व्याधि । ज्यों शल्यपात असाधि ।
यह कहो सारंगपानि । कमला की रुचि पहिचानि ।
जो पढ़त सहित विवेक । तेहि होत वृद्धि अनेक ।
गुण दोष हय को कहै । तव भूप के मन लहै ।
पुस्तक रहे जेहि गेह । श्री वसत सहित सनेह ।

हरिगीत छंद

कार्तिक चतुर्दसि सुक्ल पक्ष पतक्ष भृगवासर भला ।
"ग्राम खैरी धाम" मो यक जाम प्रगटो रवि कला ।
सालिहोत्र पवित्र घोर चरित्र देव वानी रहा ।
सिरमानि राइ रजाइ को सुपाय कवि "करता कहा" ।

दोहा

सालिहोत्र भाषा लिखौं मम बुधि अलप है थोरि ।
गरिब नेवाज संभारेहु चूक अचूक है मोरि ।

इति सालिहोत्र संपूर्ण सन् १२८१ साल ।

विषय—शालिहोत्र ।

संख्या २६ख. शालिहोत्र, रचयिता—करताराम, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१३॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—२५३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भैया हनुमतप्रसाद सिंह जी, रियासत–अठदमा, बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सालहोत्र लिख्यते ॥

दोहा

कवि दिज करता राम पर प्रेम पर्म सो कीन्ह ।
सालहोत्र भाषा करहु हुकुम आपु करि दीन्ह ।

चौपाई

राय रजाय सीस पर राखों । सालहोत्र भाषा अब भाखो ।
कमलापति कमला सहित छीर सिंधु म्हं वास ।
सेवत चरन विरंचि भौ हरि भंजन भय त्रास ।

सिंधु सुता सुभ अवसर जानी । बोली वचन जोरि जुग पानी ।
नाथ पिता मथि देव समेता । कहहु सो वस्तु निकारेहु केता ।
मनि जो मोहि आपु कह लीना । और कहहु केहि देव न दीन्हा ।
प्रभु कह सिंधु मथ्यौ मै जबहीं । रतन चतुर्दश निकरयौ तवही ।
श्री मनि संष आपु कह लीन्हा । कामधेनु ब्रह्मा कहं दीन्हा ।
कल्पद्रुम रम्भा अहिरावत । दियो देवपति के मन भावत ।
चांप हलाहल शंभु कंह दियो जक्त हित लाग ।
वात जहरहर को भयों नीलकंठ अनुराग ।
वेद इन्दु सुरपुर म्ह गएऊ । जाकर रारि राहु सन भयऊ ।
असुर सुरासुर अमृत पावा । वाजि जानु भानु मन भावा ।
उत्तिम वाहन वाजि विचारी । रवि कह दियो जक्त हितकारी ।
पुनि कमला बोली कर जोरी । नाथ एक विनती अब मोरी ।
जगमह वाहन वाजि अनेका । उत्तिम मधिम अधम विवेका ।
उत्तिम अश्व आपु मुंह भाषे । वरण आदि मध्य मंह राषे ।
दीनबंधु आरत हरण विनय मानिये मोरि ।
विस्तर सहित वषानिए कैसे उत्तिम घोड़ ।

अंत— **तोमर**

ईश्वर कृपा जब करै । तब कुरु कुरी कह हरै ।
वरवाजिक यह व्याधि । ज्यौं सन्निपात असाधि ।
यह कहंयौ सारंगपानि । कमला कि रुचि पहिचानि ।

यह पढत सहित विवेक । तेहि होत बुद्धि अनेक ।
गुण दोष है को कहे । तब भूप के मन लहै ।
पुस्तक रहे जेहि गेह । श्री सहित सकल सनेह ।
रमा विष्णु सवाद मय मकल सुमंगल धाम ।
शालिहोत्र पुस्तक लिखा दास द्विज करताराम ।

इति श्री विष्णु संवादे शालिहोत्र भाषा करता राम कृत चतुर्थमाध्याय संवत् १९२९ चैत्र मास ।

विषय—शालिहोत्र । अश्वों की पहचान, उनके रोग तथा औषधियों का वर्णन ।

संख्या २६ग शालिहोत्र, रचयिता—करताराम, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८॥ X ३॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८७, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० ... नाथ जी शर्मा, ग्राम—पिरकौलिया, डा०—...गा, जिला—बस्ती ।

आदि—......... ... .

नाथ पिता मथि सिंधु सुधा केता । कहो बरतु निकरा पुनि केता ।
मणि अरु मोहि आपु कह लीन्हा । पावर कहो केहि देवन्ह दीन्हा ।
प्रभु कहो सिन्धु मथौ मै जबहीं । रतन चतुर्दश निकरे तबहीं ।
श्री मणिशख आपु कह लिन्ह । काम धेनु ब्रह्मा क दीन्ह ।
कल्पद्रुम रभा अहिरावति । दियो देवपति के मनभावत ।

दोहा

चाप हलाहल शभु कह दियो जगत हित लाग ।
षात जहर को भयो नीलकण्ठ अनुराग ।

चौ०

वैद इद्र सुर पुर मह गयऊ । जाका रारि राहु शन भएऊ ।
असुर सुर सुर अमृत रोपावा । बाजो जानि भानु मनभावा ।
उत्तम वाहन वाजि बिचारि । रवि कह दियो जगत हीतकारी ।
पुनि कमला बोली करजोरी । नाथ सु बीनती अब मोरी ।
जगमा वाहन वान अनेका । उत्तम मध्यम अधम विवेका ।
उत्त अश्व आपु मह भाखे । चरण आदि मध्य मह राषे ।

दोहा

दीनबन्धु आरत हरण विनै मानिए मोर ।
विश्न सहित बषानिए कैसे उत्तम घोर ।

अंत—

तोमर छद

इश्वर कृपा जब करें । तब कुरकुरी को हरें ।
वार वाजि को एह व्याधि । जो शन्निपात असाधि ।
येह कहो शारगपानि । कमला की बुधि पहिचानि ।
जो पढत सहित विवेक । तेहि होत वृद्धि अनेक ।
गुन दोष है को कहे । तब भूप के मन लहै ।
पुस्तक रहे जेहि गेहु । श्री वसत सहित सनेह ।

हरीगी छद

शालि होत्र पवीत्र घोर चरित्र देव वानि रहा ।
शिरमानि गये रजाये को सुपाय 'कवि करता' कहा ।

इति श्री भाषा शालिहोत्र घोर व्याख्यान सम्पूर्णम् ।

विषय—शालिहोत्र ।

संख्या २७. दधि लीला, रचयिता—करताराम, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०॥। X ४॥। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१५४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामप्यारे जी, ग्राम—घोरकटा, डाक—मेहदावल, जिला—बस्ती ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः

सुबुधि सिधि दायक सदा सरन सहायक जपो जै विनायक ... पेहिया ममेश ही ।
गजेंद्र भाल आजहीं विशाल सुंदराजहीं सो चंद मद राजहीं विलोकि दंत सेत ही ।
विनास त्रास रछके सो पछ दछ कक्ष के अनादि देव देव के दयाल दान देत ही ।
पुजं अजं सुरेस को तनं वली महेस को कलेश दूरि जात है गणेश नाम लेत ही । १ ।
वाघंमर धरदा वाहन परसो पिन्न भग अवढर वरदानी सतभवानी निगम वखानी लह रहिये ।
मुंडन माला दीनदयाला गरकाला सिर गंग लिए । गिरिजा के भरता दारिद्र हरता करता के पर ... कीये ।२।

दोहा

एक दिवस राधा हसी बोली सखि ... को लिन्ह ।
आज चलो दधि वेचने हुकुम ... को ... ।
प्रात कृपा करि मजन के दृग अजन ... ।
आज चलो दधि विकन्हीं ... मंडल मह जनए ।
मोद करैं सब गोप वधू ... ।
साजहु अंग सवारहु भूषन ... ।१

:०.   ०   .८:

छलकै छवि हाथन माह भलो ... प्रकास दरसावै ।
चूरी भली कगना हलक ... छवि ... बढावै ।
ऐसो वनी कर कामिनि का ... धावै ।
भूषन भूरि भरो तन को 'करता' मति ... कितिक गावै ।७

अंत—

दंडक

जादु जान्यो मीन जीन्ह पुहुमी प्रसिद्ध कीन्ह जादु जान्यौ कछप जिन धारणी पीठ धारयो है ।
जादु जान्यौ शूकर जी ... वध कीन्हु ... छोनि धरि वेद को उधारो है ।
जादु जान्यौ नरसिंह खंभा ते प्रगट भयो जादु जान्यो वामन जिन्ह बलि को विगारो है ।
'करताराम' जादु छोर सिंधु के बसैया जानै जालंधर रूप होय वृन्दा व्रत टारो है ।

:०:   .०.   :०:

लाल कही हसि बाल सो बैन कही ... मेरे मन भावै ।
हाथ दीजै मधुरो निज हाथन कोमल है कि कठोर जनावै ।
तो मन मेरे होत प्रतीत ... 'करता' ... ललावै ।
वोटन मे मेरे ओट लगै दधि घात किधो कछु जादु नावै ।

भुजगप्रयात—अपूर्ण

विषय—राधा का सखियों के साथ दधि बेचना ... श्री कृष्ण का दधि लेना आदि वर्णन ।

संख्या २८. रसराग, रचयिता—... , ... पत्र—९१, आकार—१०½ X ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (...)—... , पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०६ अथवा १८०० वि०, लिपिकाल—सं० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ रसरंग लिख्यते ।।

।। छप्पै ।।

कमल सुंडि पर चारु मुंडि पर चंद कला इक ।
एक दंत मति बंत सत संतत सुषदाइक ।
अंकुस मस्तक हाथ साथ सिधि अष्ट बिराजै ।
लंबोदर मनि ईस सीस सुर असुर बिराजै ।
भव भय बिघन बिनास कर बानी अगम अपार तुव ।
गननाइक जगदीस धुव सुषदायक जय संभु सुव ।। १ ।।
गिरिजा तन सिंगार चारु रति मधि करुणामय ।
करयौ मदन बिध्वम बीर बीभत्स अस्थिचय ।
अहि भूषन भय रूप तीन लोचन अद्भुत कहि ।
रुंड डमाल सिर जटा करन कुंडल जगमग अहि ।
सम निरषत संसार सब सांति करत कवि जन सदा ।
भस्म अंग सिर गंग नयन वर मन्मथ संकर सदा ।। २ ।।

:o: :o :o:

।। नाइका लछन ।।

जाकौ रूप बिलोकि कै उपजत है अति हेत ।
सोई कहिये नायका बरनत बुद्धि सचेत ।। ४ ।।

कवित्त

तेरे तन तूल है चंपक कौ फूल करै केसरि कबूल कौंन कचन चमेली है ।
सो सनी दुकूल माझ चपक करनफूल नैंन अनकूननि कटाक्ष कलकेली है ।
गोरीगज गौनी अति सुदरि सलौनी कछु औरे दुति हौंनी गल जोबन की सेली है ।
केलो गुन आगर की हेली नटनागर की बेली रूपसागर की नागरि नबेली है ।। ५ ।।

अंत— ।। दोहा ।।

जाकी रचना देषि कै बाढै प्रेम तरंग ।
मनमैं अति सुष पाइकै कियो "कान्ह" रसरंग ।।२८६।।
संबत धृति सत जुग बरस कान्हर सुकबि प्रसंग ।
क्वार सुदी तेरसि ससी रच्यौ ग्रंथ रसरंग ।।२८७।।

इति श्री कान्ह कबि बिरचिते रसरंग ग्रंथ नाइका नाइक भेद संपूर्ण ।।१।। संबत १८९८ ।। मिति आसाढ़ कृष्ण ।। १२ ।। गुर बासरे ।। लिष्यं कृत ब्रज बल्लब स्वात्म पठनार्थ, भरथपुर मध्ये राज्ये बलवंत सिंघ जी सुभ ।।

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

संबत धृति सतजुग बरस कान्हर सुकवि प्रसंग ।
क्वार सुदी तेरसि ससी रच्यौ ग्रंथ रसरंग ।।२८७।।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के साथ घनानंदकृत "सुजानहित" भी एक ही हस्तलेख में लिपिबद्ध है, जो खंडित है ।

संख्या २९. ज्योतिस्सारावली भाषा, रचयिता—कान्ह 'द्विज', कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—७।। × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—७०२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३५ (संभवत), प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामबकस मिश्र, ग्राम—उदयापुर, पो०—सिलविल्ला, जिला—जौनपुर ।

आदि—ज्योतिस्सारावली

।। दोहा ।।

बन्दौ गर्गादिक चरण, भाष्यौ ज्योतिष जौन ।
सोई ग्रंथन देखिकै, भाषा भाषत तौन ।। १ ।।

हरि प्रिय पितु सुत भवत जो, तापति प्रिय जो होई ।।
ताके बन्दौ चरण अब, रसना बैठो सोई ।। २ ।।
५ ३ ६ १
बाण अनल ग्रह चन्द लिखि, सम्वत इकतिस द्वीज ।।
ज्योतिष की सारावली, बयो ताहि दिन बीज ।। ३ ।।
इष्ट लग्न स्वक्षादिपद उच्च नीच खग भेद ।
मित्र शत्रु खगदृष्टि जो अशुभय सदा निषेद ।। ४ ।।
सबो परिगुण लग्न मे ताको करिये सिद्ध ।।
प्रथम लग्न सो कहत मैं यामे नहि निज वृद्धि ।। ५ ।।
:o: :o: :o:

।। सवैया ।।

जो शुभ की तनु होइ बसं शुभ तो शुभ है सुख वृच्छवही को ।
वाबल युक्त बसं रजनीपति जो गुरु दृष्टितु है सुख जी को ।
जो विपरीति परं इनते खग है दुख जाल सवामन घी को ।
मिश्रित को फल मिश्रित 'द्विजराज' वहै मत गर्ग मनी को । ३ ।

अंत—अथ स्थूल फलम् (मंगला फलम्)

दोहा

सुख संपाते बहुधन मिलै यश कीरति विरतार ।
दशा मगला जौन के त्यहि सुख बढे अपार ।१२

सवया

सबदेशन मे नर नारिन मे बहु मोद प्रकाशं ।
यश मान बढ़ै सत मंगल होय सदा...।१३।

—अपूर्ण

विषय—ज्योतिष ।

रचनाकाल

बाण अनल ग्रह चद लिखि सम्वत इकसित द्वीज ।
ज्योतिष की सारावली बयो ताहि दिन बीज ।। ३ ।।

संख्या ३० वैद्यप्रकाश, रचयिता—कालीप्रसाद वैद्य, स्थान—डलमऊ, रायबरेली, कागज—आधुनिक, पत्र—२४०, आकार—१०.६ X ७.६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—७२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१७ वि०, लिपिकाल—सं० १६१७, वि०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवगोपाल जी, स्थान तथा डाकघर—डलमऊ, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री जगणेशाय नमः ।।

।। छपै ।।

सिद्धि वृद्धि विज्ञान परसिफ तिहूपुर ।
अजर अमर भगवंत शंतवन त्राण आदगुर ।
करी वदन छव मदन सदन सुख पाप विभंजन ।
दुःख दोष भय हरन शरन असरन उर ।
रंजन कृपा सिंधु सुत शंभु अंबु बरकेश सुधाधर ।
विनै वचन मम मानि भक्त राम वरदान कर ।।

।। सोरठा ।।

बंदौ सारद ईश सर्व सिद्धि दायक प्रभु ।
नाय बिमल पद शीस बरनौ वैद्य प्रकास शुभ ।।

॥ दोहा ॥

दालिभपुर अस्थान शुभ बसत जान्हवी तीर ।
पंडित काशी प्रसाद नित पियत अमृत सम नीर ॥ १ ॥
तहां ग्रंथ संग्रह कियो सुंदर ग्रंथ विचार ।
शुभि पावैं नरनारि सब जाय रोग खंछार ॥ २ ॥

॥ अथ प्रथम पिंडोत्पत्ति लिखित है ॥

पुरुष का शुक्र और स्त्री रुधिर मिल के एक दिन मा कल्क होत है पांच दिन मां वुद बुद संज्ञा होत है दस दिन मा रुधिर होत है एक पक्ष मा मांस पेसी होत है बीस दिन मा पित्तादिक मांस युक्त होत है पच्चीस दिन मा सब अंग के चिन्ह होत है और मास मा पाच भूत मेदा होति है । पंचये महीना करणं नेत्र नाशा मुख गुदा लिंग दस रंध्र होति है छटये महीना कर उदर पाद होति है सतये महीना रोम के रंध्र सप्त त्वचा दृढ होत है अठये महीना सब अंग दृढ होति है नवये महीना या दसवें महीना वा ग्यरहे महीना जन्म होत है

अंत—अथ छः वस्तु मनुष्य को तत्काल आनंद देहं सो लिखते हैं

तत्काल को मास १ नवीन अन्न २ बाला स्त्री ३ क्षीरिका भोजन ४ नवीन घृत ५ उष्णोदक के स्नान ६ ये छ वस्तु प्राणी को तत्काल आनंदित करे है ॥

इति श्री काशी प्रसाद विरचित [illegible] रोग निवारणार्थ लिखते पएर तक दवायात यूनानी मिलाएँ सरोरक षट ऋतु [illegible] व अस्नान गुण व संध्या काल रात्रि चर्या षट ६ विपरीत षट ६ [illegible] अध्याय ३७ [illegible] प्रकाशो ग्रंथ समाप्यतोय यसोप्त मासे फाल्गुण मास शुक्ल पक्ष [illegible] संवत १९१७ समाप्ता शुभमस्तु श्री सरस्वत्यय नमः श्री गणेशाय नमः श्री गुरुदेव नमः श्री रामचंद्राय नमः श्री राधाकृष्णाय नमः

विषय— [illegible] यूनानी [illegible] का वर्णन । ग्रंथ में ३७ अध्याय है ।

संख्या २५१. [illegible] रचयिता—[illegible], स्थान—[illegible] का पुरा (प्रतापगढ़) कागज—देशी, पत्र—[illegible] आकार—[illegible], पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—[illegible], पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० कृष्णकुमार जी [illegible], ग्राम—[illegible], डाक—[illegible], जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—कवित्त १

श्री गणेशाय नमः ॥

ध्यावत रमेश श्री महेश श्री [illegible] शेष पावत न पार य अपार पार डारती ।
प्रथम प्रजेश प्रवेश [illegible] हृदय में आपु आय आनन ऐनउ उचारती ।
ताते वेद बानी गीरबाक जन जानी सब व मुनि मुख स अनूप रूप कारती ।
'काशीप्रसाद' मतिमंद का विमद कर माय धाय आप गलगाजु आजु भारती ।१
लटको लटक मुखचंद्र त चटक दृग मृग ते सटक शुक मुख अस नासा है ।
बिम्बा धर बरणी कपोल कंठ गदन पे वाहुकर कमर का जन खर वासा है ।
अमित उरोज उर राजत सरोज जस हृद दर मे दरन मित नाभि गासा है ।
उन्नत नितम्ब घन जघन छकितछवि 'कासीपरसाद' वाक तनु तो तमासा है ।२
माग मुकतालो भाल तन पै गुलाल लाली कज्जल कलाली काली दृगन द्विशाली है ।
झल झलाम झाली कान कुंडल कपोल पर चित्रित चित्राली नकबेसर विशाली है ।
कठनि कधाली हिय हारहार हाली भुज बाजूबंद वाली कर ककण कचाली है ।
ताना तमसारी कटि किंकिन पायल पग 'कासीपरसाद' एसी भारती खुसाली है ।३

अंत—शावर शरीर चारु चीर पीर हीरहर
हीरा को हजार हार हृदय हलवती है ।
मजुल मुखारविंद नंदित नैननल भूषित
भुजग भुज भूषण झुलवती है ।

शंख चक्र पदुम गदा सरसरास हाथ
गरुड के गर्दनप गर्जन जनवती है ।
संयुग सयान दैत्य दानव दलनकारि,
कासीपरसाद मिव भजन भगवती है ।१२

विषय—भगवती की स्तुति ।

संख्या ३१ख. भगवती स्तुति (?), रचयिता—काशीप्रसाद शुक्ल, स्थान—रामदयालका पुरवा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१३ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—३०४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्णकुमार जी शुक्ल, ग्राम—रामदयालका पुरवा, डाक—संग्रामगढ, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

चंचल चालु सुचारु कटाक्ष चकोर के लोचन ते मदनंदा ।
निर्मल नीरज नील सुलोल विमीलन मीलन ते कलकदा ।
कज्जल केलि कला विकला सकला सफला विफला फरफदा ।
'कासी' सदा मन मंदिर मे जगदम्ब बसं तुमरो दृग द्वंदा ।१
कज्ज के पज्ज से मजुल है मन मंगल मंडल वंदित बंदा ।
आनद कंद समंद विवाद बुलाक औ बेसर बेम विलदा ।
दंत की पंक्ति विराजित है अधराधर पक्ष व.. सुधास्पंदा ।
'कासी' सदा मनमंदिर मे जगदम्ब बसं तुमरो मुखचंदा ।२
शक्ति त्रिशूल गदादिधरे गुण मंजित भृंग गुलाव के पुंज। :
कंचन कंकण कांच लसै मेहदी रसरग विराजित गुंजा ।
सुंदरि मुंदरि अंगुलि में वहु वेष ते रेष विशेष है पंजा ।
'कासी' सदा मन मंदिर में जगदम्ब बसं तुमरो कर कंजा ।३

अंत—

वैठी अहो निज मंदिर मे तुम काहेते रूप देषावनि नाहीं ।
वैठि अहो निज मंदिर मे तुम काहे ते वैन सुनावति नाहीं ।
वैठी अहो निज मंदिर में तुम 'कासी' को ज्ञान बतावनि नाहीं ।१००
का असि वूढि भइयू जगदम्बि कि आपिनते तुम देषनि नाहीं ।
का असि वूढि भइयू जगदंव की कानन ते तुम सूरति नाहीं ।
का असि वूढि भइयू जगदंव की पावन ते तुम चालति नाहीं ।१०१
पूजा औ पाठ विधानहुके विधि जानत नाहीं ।
मान औ दान औ ज्ञानहुके वलिदानहुके विधि जानत नाहीं ।
—अपूर्ण

विषय—देवी की स्तुति ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मे देवी की प्रार्थना (स्तुति) की गई है। भाषा स्थानीय है। भाषा मे प्रवाह तथा रचना साहित्यिक कोटि की है ।

संख्या ३१ग (कविता) शीतलाष्टक, रचयिता—काशीप्रसाद शुक्ल, स्थान—रामदयाल का पुरवा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—८ आकार—१०।। × ८।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्णकुमार जी शुक्ल, ग्राम—रामदयाल का पुरवा, डाक—संग्रामगढ, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

नीरद नीरज नील सुशील सलील शरीर को धारि रही हौ ।
सुर्य्य पे कुम्भ के अम्भस को कुश मार्जनिते छिछकारि रही हौ ।

बैठी ग्रहै तु खरेश के ऊपर देवि दिगम्बरि दीपि रही हौ ।
कासी के एक तुही ग्रवलम्ब कहा जगदम्बि विलम्बि रही हौ ।
चंचल कुडल मडित गंड कपोल पे चित्र विचित्र रही हौ ।
लोचन लोल कटाक्ष की कोर कृपा करि मोहि निहारि रही हौ ।
चंदन लाल विशाल ललाट पै देवि सिदूर सजाय रही हौ ।
केश कसे पट सूतन से ग्रौ गेदा गुलाब गुथाय रही हौ ।

ग्रंत—

रासभ गर्दभ नाम खराख्य वैशाख मे नंदन म कही हौ ।
देवी के वाहन दूर्वा के कंद निकंदन पे तुम रोज चढ़ी हौ ।
जो खर नाम कहै निशि वासर ताके तपीडा कवो न करी है ।
'कासियराम' कहै यह ग्रष्टक देवी के गर्दभ पे जो चढी है ।
जो जन पाठ करै निसवासर ताके तु ग्रागे श्री ग्रापु खड़ी है ।
रोग कुरोग कवो नहि ग्रावत रक्षा शीतला जी ग्रापु करी है ।

इति श्री सत्य सुकुल कासी राम विरचितं सीतलाष्टक समाप्तम्

विषय—शीतला स्तुति ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे शीतला जी की स्तुति की गई है । रचना साहित्यिक कोटि की है ।

संख्या ३२ हस जवाहिर, रचयिता—कासिम, स्थान—दरियावाद, कागज—देशी, पत्र—१४२, ग्राकार—६॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—४२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—११४६, हि० (स० १७८८), मुद्रणकाल—स० १६५३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पाडेय श्यामनारायण जी, रियासत—जगदीश-पुर, जिला—बस्ती ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ग्रथ हस जवाहर लिख्य

॥ चौपाई ॥

प्रथमहि ग्रलख नाम चितलाऊँ । जेहि चितलाय जीति लखि पाऊं ।
जो इस रतन रचा उंजियारा । तेहि कर प्रीत रचा ससारा ।
सिरजे सात स्वर्ग कयलामा । सिरजय ग्रपसी निरमल वासा ।
:o: :o: :o:
सिरजा गगन पवन जिन ग्रौ विसेख जय टेक ।
तीन लोक जिन सिरज्यौ ग्रलख नाम वो एक ।
:o: :o: :o:
पाप हरै परसै पग पाया । दुख हरय निरमल भय काया ।
तेहि के बस ग्रधिक उजियारा । 'शेष मुहमद' ग्रलख पियारा ।
दरियावाद जो सरकनोल फूल हास लोग ।
किरपा महमद पीर की करै सदा रस भोग ।
:o: :o: :o:
दरियाबाद माझ मम ठाऊं । ग्रमानग्रला पता कर नाऊं ।
तोहिमा मुहि जखम वुध दीना । कासिम नाव जाति का हीना ।
:o: :o: :o:
कहा जो एक कपट मन रहा । सो परघर उघार में रहा ।
हस जवाहिर बुद्ध उतारा । निरमल रूप सो दे ग्रसवारा ।
विलख नगर ब्रह्मा सुलतानू । तेहि घर हंस भये जस भानू ।
ग्रालम शाह चीन पति भारी । तेहि घर जिनमें जवाहेर वारी ।
तेहि कारन वो भये वियोगी । गयो सो छांड देस होय योगी ।

अंत जवाहिर हंस घर आनी । सो जगमां अहि गयो वखानी ।
सो सुन ग्यान खता मैं कीना । लिखू सो प्रेम जगत रहै चीना ।

कथा सुनावों अंतरी जेहि विधि भयो वियोग ।
तौन कथा अब गाऊं सुनो सो ग्यानी लोग ।

:o: :o: :o:

ग्यारा सै उंचास ११४९ जो लागा । तव यह कथा प्रेम कवि साजा ।
वरणौ शाह विलख वरहानौ । जस समरथ तस करौ वखानौ ।
महमद शाह देहली सुल्तानू । कामी गुण वह कौन वखानू ।
छाजै पाट चीर सर ताजा । नार्वाह सीस जगत के राजा ।

वयठा आय सुपाट पर राज करै सुखभोग ।
सुखी भई सव पिरथमी राय रंग जल लोग ।

अंत—

कासिम कथा जो प्रेम वखानी । बूभय सोई जो प्रेम ज्ञानी ।
कौन जवाहिर रूप सोहाई । कौन सवध जो बूझि वढाई ।
कौन हंस जो दरशन लोभा । कौन देस जेहि ऊंचे सोभा ।
कौन पंथ जो कठिन अपारा । कौन सवध उतरय पारा ।
कौन मीत जिन संघ जिय दीना । कौन सो दुरजन अति छल कीना ।
को ग्यानी जिन वरनि सुनावा । कौन पुरुष जिन गुन चितलावा ।
कौन दुष्ट जेहि दरसन सूझा । कौन भेद जेहि सवर्दाह बूझा ।

:o: :o: :o:

वहो किरति कीना सवै वही दोऊ जग सांच ।
कासिम खोजो वहो का नाम जग पांच ।

:o: :o: :o:

कासिम जोवन हाथ है चहय सो काज सँवार ।
सुनि हरतो वल जागयो कौन उठावय भार ।

इति श्री हंस जवाहिर भाषा सपूर्णम् सम्वत् १९५३ ॥

विषय—विलग्र नगर के राजा वहा के पुत्र हंस तथा चीन के राजा (आलमशाह) की पुत्री जवाहिर की कहानी का वर्णन । प्रेम कथानक काव्य ।

रचनाकाल

ग्यारा सै उचांस ११४९ जो लागा । तव यह कथा प्रेम कवि साजा ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे हंस तथा जवाहिर की कहानी (प्रेम कथानक काव्य) का वर्णन किया गया है ।

संख्या ३३ भाषा सम्यक्त कौमुदी, रचयिता—रामीदास, कागज—देशी, पत्र—११८, आकार—१३$\frac{8}{8}$ × ७$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—४३३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७२२ वि०, लिपिकाल—स० १९०४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मदिर (बड़ा मन्दिर), मोहल्ला—चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री जिनाय नमः ॥ अर्थ भाषा सम्यक्त कौमुदी लिख्यते ॥

ऊँकार विंदं संयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनां ।
कामदं मोक्षदं चैव श्री ऊं काराय नमो नमः ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

वर्द्धमान जिन वंदौ पाय । पिता सिद्धारथ त्रिशला माय ॥
कनक शरीर सोभै प्रभु तणौ । सिंघ लछन करि सोहावणौं ॥

:o: :o: :o:

जंबू दीप है अति अभिराम । विस्तर योजन लाष सुठाम ।
षट परवत तामहि अति चग । रमण रचित अति शृंग उतंग ॥१०॥
तामहि भरतषेत अनिसार । षट षंडमडित है अतिसार ॥
गंगासागर वहै दुकूल । विजै नाम करि विहज्यौ मूल ॥११॥
तामहि मगध देस विसतार । पुन्य तीरथ करि सोहै सार ॥
गंगयमन करि सोभित सोइ । सब विधि पावन कीने लोइ ॥१२॥

अंत—

गुरु गुण सील प्रमादै जांन । भई कथा यह सब परवांन ॥
जगतराइ हित कविता करि । रवि ज्यौं भूमंडल विस्तरी ॥७७॥
अग्रवाल है उत्तम ग्याति । सिंघल गोत जगत विख्यात ॥
माईदास मही मैं जानियै । ता तिय कमला सम मानियं ॥७८॥
ता सुत अति सुंदर वर वीर । उपजे दोइ गुण नामरधीर ॥
दाता भुगता दीनदयाल । श्री जिन धरम सदा प्रतिपाल ॥
रामचंद नंदलाल प्रवीन । सब गुण ग्यापक समकित लीन ॥
सहिर गुहारणा वासी जोइ । पाणी पथ आदि है सोइ ॥८०॥
राम चंद सुत जगत अनूप । जगत राय गुण ग्यापक भूप ॥
तिन यह कथा ग्यांन के काज । वरणी आठौं समकित साज ।

:o: :o: :o:

जगत राय सुत अति निपुण टेकचंद सुषगांस ।
गंग यमुन ज्यौं थिर सदा कहि कवि कासीदास ॥८३

विक्रमार्क संवत तें जानि । सतह सैं वाईस षानि ।
माधव मास उजियारी मही । तिथि तेरसि भूसुत सौं लहीं ॥८४
ता दिन ग्रंथ संपूरण भयौ । समकित ग्यान सफल तरु वयौ ॥

:o: :o: :o:

साहिजहा अवनिपति भूप । विद्यमान विधि कृत गत रूप ॥
ता सुत अवरंगसाह सुजान । तिजयराज भु अति बलवांन ॥८७॥
तासु प्रसादि भई यह सही । ईति भीति कोई व्यापी नही ॥

:o: .o: :o:

सहर आगरे मै जु यह भई कथा सुषथांन ।
जगतराय हित जप करौ वढौ जु श्रीय कल्यान ॥
समकित ग्यान समाज कौ यहै कोष गुण षानि ।
कासी कविता यौं कहै पठतै वढै जुग्यान ॥९५॥

इति श्री मन्महराजा श्री जगतराय जी विरचनाथा सम्यक्त कौमुदी कथायां अष्टम कथानकं संपूर्ण ॥ २ ॥

इति श्री सम्यक्त कौमुदी नाम भाषा ग्रंथ समाप्तं ॥ संवत् १९०४ ॥ आषाढ़ शुक्ल पूर्णमायां भौमवासरे लिखित भवानीप्रसाद त्रिपाठी ॥ श्री दिल्ली मध्ये हिसार. . .श्री काष्टासिंह माथुर. . .

विषय—जैन धार्मिक कथाओं का संग्रह ।

रचनाकाल

विक्रमार्क संवत तें जानि । सत्रह सै वाईस षांनि ।
माधव मास उजियारौ सही । तिथि तेरसि भूसुत सौं लही ॥

संख्या ३४ भद्रबाहु चरित्र, रचयिता–किसनसिंह या किसनसिंघ (?), कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—१०⅘ × ५⅗ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—६२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८३ वि०, लिपिकाल—सं० १८६१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ।

आदि—॥६६०॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ श्री भद्रबाहु चरित्र भाषा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

केवल बोध प्रकास रवि उदै होत सुविसाल ।
जग जन अंतर तम सकल छेद्यो दीनदयाल ॥ १ ॥
सनमति नाम जु पाइयौ ऐसे सनमति देव ।
मोको सनमति दीजिये नमौ त्रिबिधि करि सेव ॥ २ ॥

॥ छप्पै ॥

आदि पुरुष जिन वृषभ नाथ त्रिभुवन पति नायक ।
मन वच क्रम करि सीस धारि वंदू सिवदायक ।
लक्षन वृषभ जुतास धर्म तीरथ के कारी ।
सुर नर नाग खगेस चरण पूज अधिकारी ।
वसु भेद कर्म अरि नासिके पहुचे मुकति भए अचल ।
नृप नाभि त्रिया मरुदेवि सुत मंगल कर जग म विमल ॥ ३ ॥

अंत—अथ ग्रंथ करता नाम

॥ दोहा ॥

मूल ग्रंथ करता भय रतन नंदि सुखानि ।
ता परिभाषा किसन हरि कीन्हीं मति परमान ॥१२॥
नागर चाल सुदेस मे वखाडा को गाव ।
माथुर राय वसत को राम पुरो न नाव ॥ १३॥
तहा वसत सगही कला गोत पाटनी जोय ।
ता सुत जाणौ प्रगट सुखदेव नाम तसु होय ॥१४॥
ताको लघु सुत जानियो "किसनसिंघ" वसवान ।
देस ढुढाहर का भया सागानेर सुथान ॥१५॥
तहा करी भाषा यह भद्रबाहु गुणधार ।
सुमति कुमति को परख को द्वेष भाव न विचारि ॥१६॥
किसन सिंघ विनती करै लाष कवितां की रीति ।
यह चरित भाषा कीया बालबोध धरि प्रीति ॥१७॥
:o: :o: :o:
संवत सत्रह सै असी ऊपरि और हे तीन ।
माघ कृष्ण कुज अष्टमी ग्रंथ हमापत कीन ॥२०॥
:o: :o: :o:
मुकति महल के मिलन को निपट नजीक इह पथ ।
साधरमी वाचौ पढ़ौ अवगाहौ जिन पंथ ॥२३॥
श्री जिनवर को छाडि के करै आन देव की जाय ।
जाके मूडै दीजिये नोसावर को नाय ॥२४॥

इति श्री आचार्य श्री रतननंदिविरचिते श्री भद्रबाहु चरित्र कविता श्रोता ग्रंथ प्रमाण इत्यादि व्यावर्णनो नाम पचम सधि: ॥५॥ इति श्री भद्रबाहु चरित्र भाषा संपूर्ण ॥ दोहा कवित आदि सर्व टीका ॥५६॥ सर्वश्लोक वर्णन वतस के हिसाब ॥२७५॥ ई भांति जाणिज्यो ॥ मिती फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां संवत् १८६१ ॥ श्री ॥

विषय—जैनधर्म के श्रनुयायी श्री भद्रवाहु की कथा का वर्णन।

रचनाकाल

१७ ८० ३
सवत सत्रह सै श्रसी ऊपरि श्रौर है तीन।
माघ कृष्ण कुज श्रष्टमी ग्रथ समापत कीन ॥२०॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत १७८३ है। लिपिकाल सवत् १८६१ दिया है।

संख्या ३५ कवित संग्रह बसंत के, रचयिता—किसोरदास द्विज, स्थान—छत्रपुर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ ३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—२३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी। प्राप्तिस्थान—राय अंबिका नाथ सिंह जी (लाल साहब) नाइन स्टेट, डा०—पूर्वी, जिला—रायबरेली।

आदि—अथ किसोरदास कवि छत्रपुर के दिज कृत कवित संग्रह वसत के क० श्री गणेशाय नमः

कवित

रितु बरसन सरसन लागो योन पौन परसन मन सहरान लागे सियरान।
आलस श्रनष होय होय श्रग श्ररसान लागे चदनादि श्रगराई तान लागे जियरान।
कहत किसोर कामसर बरसान लागे लवकउ जान लागे वियोगिन के हियरान।
मान लागे मिटन श्रमान दिन श्रान लागे भान लागे तपन सोपान लागे पियरान ॥ १ ॥
ऊस पूस ही तें श्रवचाहत परी सी श्रोज बर उवरी सौ मत विरह जटी सी है।
धारे करे कर धनुष सिधारे कर पचये परे च पच सरज की भ्रगुटी नटी सी है।
कहत 'किसोर' कज गुजन त कुजन त गुजरन चाहै श्रलपटल पटी सी है।
सब सुष साजवारी विरह श्रकाजवारी योन रितराजवारी पौन पलटी सी है ॥ २ ॥

अत—

श्रति श्रनमद बढ चंद्रिका सुधाकर को पुडरीक पथिक प्रिया कौ श्रनकूल है।
कहत किसोर निसा नार के हिये की सुनि दरसावै कुवरि किसोरी दिनदूल है।
दरदहरन वर परिवा को इद्र सुध सरद सुह दूरा की सुष सुष मूल है।
तारकानि कालिन मकार चारुदुति फूलौ श्रतरिछ कमल तरोवर कौ फूल है ॥५१॥

:o: :o: :o:

चदन चहल चित्र महलहु देस मोहे रम वतियान सौ प्रमोद सषियान मैं।
षूव षस फरस फुहार फुहो फौन्न फौन फौन भरैं सीतल समीर छतियान मे।
गोरैं गात सोहै गरं गजरा चमेलीन के गोहे वर सुघर सहेली श्रति स्याम मैं।
गोद लै उरोजकर परस गुलाब जल छिरकत लाडिली लौ लली की श्रषियान मे ॥५७॥

विषय—वसत, फाग, होरी तथा अन्य फुटकर विषयक कवित्तों का संग्रह।

संख्या ३६ सखी समाज नाटक, रचयिता—कीर्तिकेशव मिश्र, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—८॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—५४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६० वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, जिला प्रतापगढ़, प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सखी समाज नाटक लिष्यते ॥

दोहरा

'केशव' गिरा गणेश गुर वन उपवन थल रम्य। स्याम सखा राधा सखी सबको प्रथम प्रणम्य ॥१
वृंद्रावन विच स्वप्न मोहि कृष्ण रचित रसराग। वीना सजै सरस्वती उघटत केशवदास ॥२

अथ कवित्त केशवदास के वचन

कीन्ही पोथी में सुवेस, पढे नर वो नरेस दिस दिस देस देस पुर पट निन मै।
रचिवे को सुर्भादिन प्रगटत छिनछिन पै सखी समाज विनु सक रही मन मै।

कोन सषी कर्म्म को न सषा उपवन भोन दोइ ध्याइ करो क्यों न करमं यो श्रवन मैं ।
विना लऐं गिरति सो संग संवा श्री रति सो कह्यो मिश्र कोरति सो केशव स्वपन मैं ।१।

दोहा

सात देवस लगि स्वपन मैहि दीनो सुभ दरसाव ।
जो कछु कह्यौ सो मान मैं कीजे दोइ प्रभाव ।४
नाम ग्रंथ को हेतु करि समुझि देषि मनमाह ।
रसिक प्रीया रसवंत को मूढ जात की नाहि ।५

अथ मूढलछन । दोहा ।

सुंदर भट् पंडित धनी केलि कलासो मढ । दज रचना अरि कर्म्म के भेद ज्ञान विन मूढ़ ।६

अथ भेद दोहा

मिटै मूढता होइ रसिक पढं प्रिया यह न्याइ ।
मूढ पढै यह प्रिया जों श्वान सुरसरी न्हाइ ।७

अथ व्रज सम्धा दोहा

इत वरहद उत सोरईत सुरसेन को ग्राम ।
व्रज चोरासी कोन लौं वर्नि वलि केशरनाम ।८

अथ छतीसथ केलि स्थल नाम

अंत—अथ दूती को भेद

मालिनि वरइनि अरु जोनी नायन सिलधिनि धाय । रागजनी सन्यासनी नदी सुनारि सुनाय ।७०
पटवनि और परोसिनी चरहेरनि चित चाहि । एते न्हातिय इतिय । सबै समुझियौ नाहि ।७८
ये दपि ये वचननि कहति प्रियप्रिया दुह अग । तदपिकार जव नत नहो विना अली परसग ।७९
यक प्रभाव मे वरनियौ आगे 'सषी समाज । समैं कोन थल सषी सषी को नाम.. ना
किहि काज ।८०
अली नाम तै कहेकम समं थल वास । अलशार को मार रस कोरति केशवदास ।८१

सोरह कहे प्रभा मं मूलित उ ग ।
नगन जानिकय . . नाट सभ निगार ।८२।

इति मन्महाराज केशव कीर्ति विरचिता । सवत् १७६० पर्जे . . . .

विषय—राधाकृष्ण की सखियों और सखाओं का वर्णन ।

संख्या ३७ मत सहस्र नाम रचयिता—कुबेरदास कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६ । X ४।। इञ्च पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)— ४७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी लिपिकाल—सं० १९७३ मान, प्राप्तिस्थान—श्री जगनाथ दास जी, मठाधीश, मठ—बनकगाँव, डाक—वार्दीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि— शोरठा

वालदाश मतिआहु सभुइ प्रमा तीर ।
शवद शरुपी शहीवी प्रगट भए कवीर ।
वालदाश गुह मीलत ही दोइत हमारो भाग ।
ओपा दोरोहीटी वीलोकते भए वा नाम अनुराग ।
शाहेव जव दाए कीआ नाम धराएव वाल ।
अखंड रुप लषाइआ मेटेव धोख को शाल ।
शत गुर वाल अनुप शशं नेटी घर धीर काये ।
मिटेव महा तम कुप शोल ज्ञान रवी उगव भउ ।

चौपई

शतगुर वालदाश जव आए । शशं रहीत रुप दरशाए ।
आपन रुप चीन्ही जब पावा । तव शतगुर के शीश चढ़ावा ।
शतगुर रुप सकल जग देखा । शवद शरुपी आप पनेखइ ।

तब शतगुर शिवदत यह जाई । शकल हंश गुर बिहा बताइ ।
आदी नाम परवाना पावा । आतम ग्यान मे शकल शमाया ।
गुर कवीर राम दरशन पाई । शतगुर ग्यान मे रहेउ शमाइ ।
राहनी गाहनी गुर दीग्रा बताइ । हशन शहीत परम पद पाइ ।
चारी भेद का भेद बतावा । भेद बताइ अभेद लखावा ।
चारी भेद के भेद मे 'श्री उदत दाश' सहान ।
'वालदाश' शतगुर मीले तब पुरा भै ग्यान ।

इती ग्रत शत शहस्त्र नाम पव उदाशेन वुशर भंम कुवेर दाशेन वीरचिते प्रथम शुमीरने शतनाम १०० शत महीमा वरनन ।

अन—शभ शतन्ह के चरन के सुरती वो होए माल ।
नीसु वासर सुमिरन करै ते न परै भ्रम जाल ।
अगुन सगुन दुइपथ मे जेतने सत सुजान ।
सभका पद वदन करो एही हमारो ध्यान ।
वालदाश शतगुर मिले अनुभो कथी 'कुवेर' ।
जो सप्रेम पढी है सुनै मीटै सकल भरम वेर ।
सत महात्म जानी के सुमीरन करै जो कोइ ।
लोक प्रलोक दुनो मधे आवागमन न होइ ।

इती ग्रन सत सहस्त्रनाम १००० वरनन कुवेर दासेन वीरचीत दसमो सुमीरन सन १२७३ साल

× × × ×

विषय—सत माहात्म वर्णन जिसमें एक सहस्र सतों के नाम आए हैं ।

संख्या ३८क रामरत्नगीता (अर्जुन गीता), रचयिता—कुशलसिंह, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—११½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—५१०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९, प्राप्ति-स्थान—श्री महाबली जी, ग्राम—लिलौली, डाकखाना—बछरावाँ, जिला—रायबरेली ।

आदि—. . . . .

विनती करो आधीन होई । प्रभु भाषौ वचन रिसाल ॥

॥ चौपाई ॥

श्रीकीसन बोले बीहसाहाई । अरजुन कहा सुनौ जदुराई ॥
हाथ जोरि अरजुन भई ठाढो । परम प्रीतीत हीदआ मह वाढो ॥
कहा कहो प्रभु ह जीवन मोरो । कहत ही दोनो करजोरी ॥

॥ दोहा ॥

रामरतन गीता का अरजुन कीन्ह अनुसार ।
बीनती करो आधीन होई । सो भाषो जदुराई ॥
श्रीस्वामी बोले वीहसाई । अरजुन कहो सुनो समुझाई ॥
कवन सो करम किये गत होई । सो मोही कहौ राखौ जिन गोई ॥
असुव आस पल जगत बषानी । कीट पतग जीव चारी षानी ॥
चारी षानी प्रभु तुमही बनाई । सवते कवन सृष्टि जदुराई ॥

॥ दोहा ॥

इनमे कवन सृष्टि है सो मोही कहो बुझाई ।
चरन सरन प्रभु राखहु परसन होहु मुरारी ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

श्रीकीसन अरजुन मीला गुस्ट कीन्ह एक ठाव ।
सो भगतन्ह कह प्रापतो "कुसलसीघ" लीलाव ॥

:o: :o: :o:

जो कोउ सुनै ह्नीदै मह जानी सो प्रानी बैकुंठ नीसानी ॥

॥ दोहा ॥

सब संतो सो जोर कै बीनै करौ बहु भाती ।
लघुता मोरी बीचार कै ग्यानी लेही चेत चेती ॥

इती श्री पोथी रामरतन गीता संपुरनं जो प्रती देषा सो लीषा मम दोष न दीएते पंडीत-जन सै बीनती मोरी टुटे अछर लेवे जोरी ॥ मीती पोष वदी ३० वार शनी संवत् १८६६ पोथी लीषा सीव दयाल पंडीत पंडीत नै पोथी अजराएल का श्री ॥

विषय—अर्जुन गीता का हिंदी अनुवाद ।

संख्या ४८ख. गोपीसागर, रचयिता—कुशलमिश्र कागज—आधुनिक, पत्र—३२, आकार—४$\frac{४}{१०}$ × ७$\frac{५}{१०}$ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—५२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८१ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि— . . . .

रीषी मुनीवर कोऊ पार न पावै । सुरज आदि सुरपति गुन गावै ॥
नारद भगतो सदा उर भावै । . . . .
अग्नी पवन जता रहै क जोरे । सकल नछत्र रहै कर जोरे ॥
कहां लागु कहौ जसोदा माई । सबके प्रान हवे जदुराई ॥
तीनीऊ लोक बने छीन माही । प्रम जोती सबके घट माही ॥
तुमजो कहहु श्रीष्ण मरवारा । तीनका सीरजा सकल संमारा ॥
सब कर चरन कमल की आसा । चौदह लोक प्रभु का प्रगासा ॥
अब तुम सुनौ मोरी सुभ वानी । जेही ते भेटौ सारगपानी ॥
श्रीकृष्ण चरन चीतवै वहु भांती । तब दरसन पायेहु केहु भाती ।

॥ दोहा ॥

भगतीभाव बीनु लावहु मोर उपदेस ।
अधम उधारन स्वामी मोली है कौनहु भेस ॥

॥ चौपाई ॥

येही बीधी ऊधौ धीर जो दीन्हा । समाधान जसोमती का कीन्हा ॥
सुनौ प्रभु वातै भगती बढाई । येही अतर गोपीन सुधी पाई ॥
येकर साषी घर घर फीरि आई । सुनौ सषी येक बात सोहाई ॥
वचन मोर मानो परतीता । आये श्रीष्ण करो जीनो चीता ॥
अव आये नीजु नंद कुमारा । ठाढ हयो रथ सींह दुवारा ॥
वहुतै हरष भई वृज नारी । मथुरा तै आये वनवारी ॥
भई अनद सकल व्रज बाला । चलौ सषी देषै नंदलाला ॥
घर घर ते गोपी सब धाई । नंद दुवारै तुर्त चली आई ॥
देषी न जाई श्रीष्ण ना होई । महा विकल भई तासो सोई ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

स्रवन सुना संदेस हरी चीत दाया प्रभु कीन्ह ।
कुसलसींघ प्रभु चर्न पर तन मन धन नीछावर कीन्ह ॥

॥ चौपाई ॥

गोपीसागर पुंरन भयेऊ । कहत सुनत पाप छै गयेऊ ॥
संत असंत सुनो जो कोई । मोछौ मुक्ता को प्रापती होई ॥
गुरू की दया भा बीस्वासा । तब येह कथा कीन्ह प्रगासा ॥
दुसरे साध सगती बुधोपाई । बांधु ऊतारी सुमति गती आई ॥
नीहचै मै पसु अग्यानी । कीत पावत यह अंमृत बानी ॥

॥ दोहा ॥

गुरु दयाल भये मो पर महा अधम जीये जानी ।
अगम कथा गुरीकी सरस कोंचीत कीन्ह बषान ॥

येती श्री गोपीसागर सपुरन ॥ सुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णामस्तु ॥ पींगला नाम सबंछरे पुस माम सुकल पछ सप्तमीमो इतवारा दीने गम्पत गोपीसागर सुभमस्तु ॥ लीषतं सीवसींघ जैसी देषी तैसी लिषी मोका दोग न दीजे ॥ पडीता जनसो बीनती मोरी ॥ टुटे अछर लीजै जोरी ॥ जो कोई कथा पढे सुनै ब्रह्मन कु पायेलागी पहुंचै ॥ छत्रीना कुं राम राम पहुंचै ॥ साधा सींतन कु कर जोरी डडावती ॥ जो जन कथा नीहचै कै गावै सो बैकुठ सीधावै ॥ नीहचै होई श्रीकृष्ण चीतु लावै ॥ श्री राम नाम सती है और सब झूठ है ॥ पोथी उतारी चीतु राम सीवसीघ जस देषी तास उतारी माम दोष न दीजिये सवत अठारसे इक्यासी ॥८१॥

विषय—भागवतपुराणान्तर्गत गोपी उद्धव संवाद वर्णन ।

संख्या ३९क झूलना, रचयिता—कृपानिवास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—८१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० वंशीधर प्रसाद जी, ग्राम—विश्रामपार, डाक—खलीलाबाद, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री सीतावल्लभाय नमः

झूलत सीताराम हिंडोरे ।
रावनस्याम अभिराम मनोहर रति पति को चित चोरें ।
नील पीतवर वसन लसत तन उठत सुगंध झकोरें ।
सहचरि हरषि झुलावत गावत छवि निरषत मन तोरें ।
मंद मंद मुसुकान छबीलो रमकत थोरे थोरें ।
अति सुकुमारि अंग की स्वामिनि डरपति गहति पट छोरें ।
झूलत राम राजिव नयन ।
जनक जा सनमुख विराजत तडित ज्यों घन गैन ।
अतिहि झूलत झुलावत झूलति ललित तापन मैन ।
लाल के [illegible] शोभा निरखि दरषत अंग ।
अलस परस अनुराग दोउ बदत मधुरे बैन ।
[illegible] रघुनि निरषि दंपति कृ उर सुष दैन ।

अंत—झूलत सीताराम हिंडोरे ।

कंचन [illegible] जटित [illegible] मुकता दाम ।
रेसम डोर सु गहा झुलावै गावत राग ललाम ।
बाजा बाजत विविध भांति के उमगत मद मिलि बाम ।
नाचत मोर कोकिला [illegible] लागत मन अभिराम ।
कृपानिवास अलि गहरैहि झूलत सिखावत पिया जू को नाम ।

विषय—सीताराम जी का झूलना । [illegible] विषयक [illegible] वर्णन ।

संख्या ३९ख सिद्धान्त पदावली, रचयिता—कृपानिवास, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—१०.५ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—९०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री जानकी वल्लभाय नमः ॥ अथ श्री सिद्धांत पदावली लिख्यते ॥

राग ललित मूल ताल

समझ मन मेरे सियाराम जपोरे ।
काहि को मन वन वन भटकत काहे को ताप तपोरे ।

विषै भोग कर जनम गमायो सोवहि सोच चघोरे ।
कृपा निवास मानुष तन पायो योहि जान न फोरे ।। १ ।।
रागमेरों आडताल
हरिभज हरिभज हरिभज भाई ।
जाके भजें सों हुलास होत हैं जनम जनम के दुष मिट जाई ।
जासु भजन सें दाने वाजत जस वितान धुजा फहराई ।
कृपानिवास हनुमंत भजन बल बसि कीन्हे सियपति रघुराई ।। २ ।।
हरि निरमोही मैंडो षवर न लीती । अरज सुनावां ज्वाव न पावां क्या तकसीर मै कीती ।।
तुम सन हितकर सुष नहि पायो उलटि विपत भर दीती ।
कृपानिवास श्री राम बूझ बिन उमर वृथा युंहि बीती ।। ३ ।।

अंत—राग एमन
मम जीवनि धन वल्लभ वानर वंश विभूषण ।
रसिक राज पर भक्त सिरोमणि भजन प्रकास विदूषण ।
सद्गुरु सज्जन सद्गुण सागर संकर सम्यक संकुल पूषण ।
कृपानिवासो जपति सदात सो जन ताप विधूंषण ।। ८ ।।
इति श्री सिद्धांत मुक्तावली संपूरण शुभं......

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के साथ निम्नलिखित दो और रचनाएँ है —
१. नेह प्रकास—वा रकृष्ण कृत ।
२. सिद्धान्त मुक्तावली—जनकिशोरशरण कृत ।

संख्या ४०. चित्रकूट विलास, रचयिता—कृपाराम, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१० × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१५८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३५ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, दाता—श्री पं० रामगुलाम जी, ग्राम–शुक्लपुर, डाक–मानधाता (प्रतापगढ़) ।

आदि—......................सो होई ।६
सोउ कृपा वछु सुगम नहि दुर्लभ दुर्घट सोइ ।
चरन सरन गुरदेव के जो कछु होइ सो होई ।७
पद पंकज गुरदेव के अपने उरमें आनु ।
कृपा करें तव जानकी यह जिय निश्चं जानु ।८
राम चरन रज जानिके मन मै भयौ हुलास ।
ते उर मे आनि है चित्रकूट को विलास ।६
जनक नंदनी जग जनीन करुनानिधि सुकुमारि ।
वरनो रघुवर विपिन को तिनके चरन सम्हारि ।१०
चित्रकूट अवनी वनी सोभा वरनि न जाइय ।
मानौ रवि ससि आनिकें तारा गन सुमदाय ।११
माना रहे वन आनि करि जिय यह उनमान ।
विपिन अलौकिक लोक में असो वन न आन ।१२
रतन जडित कंचन मई तिमिर न आवत पास ।
सदा भूमिका एक रस भानुते अधिक प्रकास ।१३
चित्रकूट छवि निरखि कें भये प्रफुल्लित नैन ।
रवि ससि लखि छवि निदहीं वारौ कोटिक मैन ।१४
चित्रकूट दुति पत्र की उपमा को कछु नाहि ।
सुरपुर नरपुर नागपुर यहि सम कहै न जाहि ।।१५

अंत—पंगु बहुत गिरिवर चढ़यौ कैसे पावै पार ।
कृपा होइ रघुवीर की सहजहि चढ़ै पहार ।१३३
कृपा सिंधु कौसल धनी कोमल चित हित दीन ।
तातें कछु विश्वास मन रामचंद्र परबीन ।१३४
जिनको यह सुख धाम है कृपा तिन्हिं की होई ।
चित्रकूट मं तव हितौ रहन पाइहौ कोई ।१३५
चित्रकूट क वास को जाकै मन मै प्रेम ।
सो चित्रकूट विलास को गावे करि नित नेम ।१३६
:o: :o: :o:
जै गावै सीवैं सुनैं चित्रकूट सुविलास ।
"राम क्रिपा" ता सत को रघुवर पुजवैं आस ।१४४
आठारह सै जु पैंतीस मे धरि प्रभु अज्ञा सीस ।
दोहा बन गथ दाके सत अरु चौवालीस ।१४५

विषय—चित्रकूट वर्णन ।

रचनाकाल

आठारह सैं जु पंतीस मै धरि प्रभु अज्ञा सीस ।
दोहा बनै गथ दाके सत अरु चौवालीस ।१४५

संख्या ४१ राजनीतिशतक भाषा कुंडलिया (अमरराजतिलक), मूलकार—राजा भर्तृहरि, अनुवादक—श्री राम चैतन्य देव "निकुंज", स्थान—काशी, कागज—आधुनिक, पत्र—१८, आकार—६ ६/१० × ५ ४/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—६६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ वि०, मुद्रणकाल—सं० १९३२ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री राधारमणो विजयते ॥ अथ अमरराज तिलकं प्रारभ्यते ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अमरराजतिलक एक विंशोत्तरी शतक नीतिशास्त्र निज कवि कृत नृपभर्तृहरि राजनीत शतक की भाषा लिख्यते ॥ अथात प्रथमस्तिलक ग्रंथ पीठिका तत्रादौ कवि टीकाकारस्य वंश वर्णनम् ॥

कुंडलिया

श्रीजुत माध्व सुसंप्रदा गौडेश्वर आचार्य ।
नैमि कृष्ण चैतन्यप्रभु गौरचंद्र वर आर्य ।
गौर चंद्रवर आर्य तासुसिष भट गुपाल जू । तिन्सिष गोपीनाथ गौड द्विज भाग्यमाल जू ।
ठाकुर राधारमण चरण सेवा गुरुदत्त जुत । राधारमणी गोस्वामि लहि पदवी श्री जुत ॥१॥
श्री राधारमणी तुके वसमाहि अत्तम । रामविहारी जू पिता हरिछवि मानसहंस ॥
हरिछवि मानसहंस भ्रातु मम राधागोविंद । ये मेरे गुरुदेव बताए इहि महि गोविंद ।
कुंजविहारी नाम तनय निज बस इगाधा । मित्र कृष्ण भगवंत इष्ट भगवति श्रीराधा ॥२॥१॥

॥ एव कविवस वर्णन ॥
अथग्रंथ प्रयोजनं ॥ कुंडलिया ॥

आमिषरूपी तिलक यह विरच्यौ राजन हेतु ।
कठिन समकृत भर्तृहरि ब्रजभाषा करिदेतु ॥
ब्रजभाषा करि देतु हेतु नृप सुनहुँ हमारो ।
भेजि श्रीपती निकट उदत मम करहु सितारो ॥
भई जीविका भंग गई संग हरखचंद सिष ।
यही प्रयोजन अमर तिलक विरच्यौ दै आमिष ॥ ३ ॥
उदित सितारे हिंद श्री शिवप्रसाद नृपराज ।
निज कवि विरच्यौ ग्रंथ यह अमर जीविका काज ॥

अमर जीविका काज नीतिराजनि को बरनी ।
नजर लीजिये याहि आप याके आचरनी ।।
हम ना बाबू कहे भूपही सदा उचारे ।
सत्य बैन भम किये राज के उदित सितारे ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

।। टीका कुंडलिया ।।

वरतम नासक सूर ससि तासु प्रकासक कोय ।
श्री राधा छवि जोति को सदा उपासक सोय ।।
सदा उपासक सोय सात वपु जोति सरूपा ।
दिगविभाग पुनि तीन काल तें रहित अनूपा ।।
अलष अनादि अनत सुर कवि निज दया सतपर ।
श्री चैतन्य सरूप नौमि प्रभु गौर चन्द्र वर ।। १ ।।

वार्तिक

राजा भर्तृहरि ने तीन शतक कीने ।। नीतिशतक ।। शृंगारशतक ।। वैराग्यशतक ।। यह तृशती नृपने जा प्रयोजन तें विरची ।। सोई ग्रथ प्रयोजनीय एव प्रथम राजा कहें है ।।

अंत---अथ शक संवतु दिनमासादि ।। कुडलिया ।।

७ ६ ७ १
सागर ग्रह पुनि द्वीप रवि साके सोभित हर्ष ।
ससि गुण नव पुनि एक इमि विक्रमार्क गत वर्ष ।।
विक्रमर्कि गत वर्ष हर्ष जुत ग्रंथ बनायो ।
अमर तिलक धरि नाम नृपति प्रति नजर दिषायो ।
राजा शिवपरसाद सितारेहिंद उजागर ।
अमरहेतु निज नीतिरत्न काढ्यों मथि सागर ।।१२१।।

इति श्री कर्म प्रसमा नाम द्वादशस्तिलक. ।।१२।। शुभ श्री भर्तृहरि कृत नीतिशतक की भाषा अमरराज तिलक नामा श्री गोस्वामी कृष्ण चैतन्यदेवोपनाम निजकवि विरचित राजनीति एक विंशोत्तरी शतकः समाप्तमिति ।। श्री रस्तु ।। वाराणसीप्रसादस्य नियोगेन प्रयत्नतः । काशी संस्कृत मुद्रायामं कितोय शिलाक्षरे. ।।१।।

श्री काशीजी मे ज्ञानवापी के पूर्व फाटक पर श्री विश्वनाथ जी के पास महाराज शिवलाल दुबे जी के मकान मे काशी सस्कृत मुद्रा यंत्र मे छपा जिनको लेना होय उन्होने इस छापेखाने के कार्य सपादक श्री ३ बाबू वाराणसीप्रसाद या कचौरी गली मे भाई प्रताप सिंह जी के दुकान पर मिलेगी ।। मिति पौष कृष्ण ११ गुरुवार सवत् १६३२ ।। तारीख २३ माहे दिसंबर सन् १८७५ ईसवी शुभम् ।।

विषय---राजा भर्तृहरि कृत राजनीतिशतक का 'अमरराजतिलक' नाम से अनुवाद ।

रचनाकाल

७ ६ ७ १
सागर ग्रह पुनि द्वीप रवि साके सोभित हर्ष ।
१ ३ ९ १
ससि गुण नव पुनि एक इमि विक्रमार्क गत वर्ष ।।

विशेष ज्ञातव्य---

कवि वंशवृक्ष

चैतन्यदेव
|
गोपाल भट्ट

गोपीनाथ (राधारमण गोस्वामी नाम से प्रसिद्ध)

रासबिहारी जू (गो० गोपीनाथ के वंश में बहुत पीछे हुए)

गो० राधागोविंद

गो० श्री कृष्णचैतन्यदेव (निजजू)

कुंजबिहारी (पुत्र)

संख्या ४२ रास पंचाध्यायी, रचयिता—कृष्णदास (कायस्थ), स्थान—समसाबाद (रामपुर), प्रतापगढ़ (?), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—१३॥ × ८॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६६८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मनोहरलाल जी कायस्थ ग्राम-जूही, डाक—सांगीपुर (प्रतापगढ़)।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ पंचअध्याइ कृष्णदास कृत लिष्यते ।

चौपाई

हरिहर हरिजन सुमिरन करहू । हरि चरनारविंद उर धरहू ।१
कोटि जग्य जप तप विधि नाना । अमित जोग जप संजम ध्याना ।२
प्रागादिक तीरथ पुनि जेते । नाम तुल्य ह्वै सकहि न तेते ।३
वनको अनल तमिर को भानू । त्यों अघ को हरिनाम प्रधानू ।४
मूल मंत्र हरिनामहि जानो । मुक्ति द्वार कुंजी पहिचानो ।५
:o: :o: :o:

सोरठा

बंदौं बारबार गनपति पद पंकज अमल ।
त्रिभुअन सार विचार बरणो कछु हरिगुण सरस ।

दोहा

नमस्कार करजोरिके करो विनय गहि पाय ।
विमल बानि मम उर सदन कीजे सारद माय ।
बंदौं चरण कमल श्री गुरु को । सुषरासी वासी मम उर को ।
'षेमकरन' गुर नाम सुहायो । सुमिरि जासु जम त्रास नसायो ।
दिजवर मिश्र सोनावढ़ जानो । दयाधाम गुणमय पहिचानो ।
:o: :o: :o:
गुरु पद पंकज अघ हरन सरनागत सुषदाय ।
'कृष्णदास' मन मधुप ह्वै जहा रह्यौ लपटाय ।
एक देवरा हरिजन हरि प्यारे । जलज रूप भव जलते न्यारे ।
मन बच कै हरि पद लपटानो । करत गान पद चरण भुलानो ।
ललित विष्णु पद जानि जोगाई । रास केल हरि कथा सोहाई ।
ताको भूल निपट मन षटको । प्रीति साथ सुधि ता संग अटको ।
सबहिन जैठि सो उदम कीन्हो । ता पूरण करिबे मन दीन्हो ।
'हीरानंद' मिश्र बड़भागी । समदरसी हरिपद अनुरागी ।
जातन दया दृष्टि करि हेरे । पकरि बांह जमपुर तें फेरे ।
तिनके कह्यौ मानि मैं लीन्हो । कछु हरिगुण कहिबे मन दीन्हो ।
महूं सो कछू यक बात बषानो । भलो भलो करि सबहि न मानो ।

सोरठा

कृष्णदास मम नाम हरिजन चरण सरोज रज ।
रहत रामपुर ग्राम समसाबाद प्रसिध्य जो ।

दोहा

करै कृपा पूछै जरण वरणि सुनाउ वोहि ।
सकसेनो कायस्थ कुल जानु दूसरो मोहि ।

चौपाई

करौं सौंह मोहि राम दोहाई । नामे कविता कवि को भाई ।
पढ़ों न पिंगल वेद पुरानो । माहामूढ नहि आखर जानो ।
अंकज वंकज जो वनि आए । सो मैं अपने प्रभुहि लड़यौ ।
चूक अचूक विचार न जन्यौ । कछुक प्रेम के हाथ विकान्यौ ।
कह्यौ प्रेम जो सो कछु गयौ । प्रेम सुतरु ताको निज पायौ ।
सुनि सुनि संत होहि मन मगना । पुलकहि अग समाहि न अगना ।
अपनी दया वोर द्रीग दीजो । मो अपराध छमा पुनि कीजे ।

सोरठा

सुक बोले सुनु राज वड भागो कल्यान मय ।
लीला शचर समाज 'पचअध्याइ' अघहरन ।

दोहा

कर जोरे विनती करो सुनो सत चितलाइ ।
हरिगुण गाउ मुदित मन प्रेम प्रीति के दाइ ।
सुक्ल पछ तिथि पूणवा अस्वनी मास पुनीत ।
वन छायो फूलन विविध अरुण नाल सित पीत ।

अत—

वावं लषो परस्पर ज्यौ ज्यौ । 'कृष्णदास' प्रभु विहसत त्यौ त्यौ ।
कछु परंभ करि तह हरि प्यारे । तनषन जमुन कूल पगधारे ।
तरल तरग सोम अधिकाई । निरषि नयन सुष महिमागाइ ।
हसं हो खरचान धाई । परे कूदि जमुना जल माहीं ।

छद चचरीक

श्री जमुन गिरिधर कू देउ नटज्यौ उघरि किलकारिके ।
गजमत्त मनहु तड़ाग विच धसि वेठ जलज विदारिके ।
वृज वाम सुदर स्याम घन पर अजुली भरि डारहो ।
वरषत छठा घन तन मनो सुषराषि हरषि विचारहो ।
यक भजे यक पाछे परायनहि दोउ पग पग टरे ।
यक उछरितो भ्रम रूप छविहिय हरषि वर अगम मरे ।
जलवुद सिधार गज मनोहरि विथुरि मुष पर मन हरे ।
सोस निसु नवत धरि अमित वपु गात हास मनु ढूढत फिरे ।

सोरठा

करै तहां मन लाइ यहि विधिन लीला विविध ।
पुन प्रभु आयसु पाइ गई वाम निज धाम को ।

..........................अपूर्ण—

विषय—श्रीकृष्ण चरित्र (रासलीला) वर्णन ।

संख्या ४३. सक्षेप तिमिर नाशक, रचयिता—कृष्ण विप्र पंडित, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६ X ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी. प्राप्तिस्थान—श्री प० पुरुषात्तम उपाध्याय, ग्राम—शंखपुरा, डाक—तेजी बाजार (जौनपुर) ।

आदि— सोरठ

वावूलकत इतिहास । तिमिरनास कर नाम यह ।
पढ़े होत अभ्यास । भानु उदै जिमि तम हटै ।

॥ छद भुजगप्रयात ॥

अन्तै वनै बादशाहो फिरिस्तै ।
कहां लो कहो बाद ठिकै दुरुस्तै ।
कुतुबुदिनो नाम प्रथमै सोहायो ।
लियो तख्त दिल्ली को डंको वजायो ।
सनै ऋदसै रसै तख्त लीना ।
गिरेव अस्व से द्वादसै वरसजि छीना ।
शहाबुदिनो गोरिया को गुलामै ।
इसी मे मुसलमान को राज जामै ।

॥ दोहा ॥

अरामशाह याके तन तख्तप...... ।
सन बारह से दसम है बठ गयो उतार ।

अत— ॥ शोरठ ॥

शाहआलम नाम है कादिर अधा कीन ।
मरहठ के दस छोर कै लाईजि पिशन दीन ।

दोहा । विनती ।

पापिन के सूबेदार हो मातमक्षन के ईस ।
वुधजन सो विनती करो विष्णु सहित गोरीश ।
तिमिरनास को देखिक करि लोजे अभ्याश ।
मोर पातखो नाम है मभकृत की नहि आश ।
कृष्ण विष्ण पडित कहे किशुन विशुन अज्ञान ।
जौ वालक टोटो कहे माता ढाढी जान ।

विषय—इतिहास (मुसलमान बादशाहों तथा उनके राज्यकाल का वर्णन) ।

संख्या ४४ शब्द और साखी, रचयिता—बाबा केसोदास, स्थान—भीमदास की कुटी (सुल्तानपुर), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८३/१० × ५६/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—१३५ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत श्री महावीरदास जी, स्थान—बाबा भीमदास की कुटी, पोस्ट—जगेसरगंज, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—भजन सहो गुन ग्यान राम नाम निहकाम ।
"केसौ" सतगुर भाम पद सकल कला गुनधाम ॥

॥ सब्द ॥

मनु मन राम नाम ले लाई ।
सुगम सुनराग पाप पराई । छूटे दुरमति कर्म कलाई ॥ १ ॥
जवन कहत करत विमलाई । गुर पद पकज डिठ सेवकाई ॥ २ ॥
असमत वायेक भजु रघुराई । गगन महल पर सुरति वसाई ॥ ३ ॥
जन केसौ भौ सीधु सुखाई । भवन वरजत गुर ठकुराई ॥ ४ ॥

॥ साखी ॥

गहु मन सतगुर नाम पावें दृढ़ गगन के द्वार ।
"केसौ" राम प्रताप ते कीरति जत पसार ।

॥ सब्द ॥

गहु मन राम नाम मजबूते ।
चित चेतन चौगान सिषर पर सुमिरन संति सनेह समीते ॥ १ ॥

करु अनुराग सुरति सुधि संगम मत विस्वास प्रीति परतीते ॥ २ ॥
भक्त वछल जनपति हितकारी छीन छीन राम सहाइ सबूते ॥ ३ ॥
सतगुर "झाम" धाम के तट पर जन केसौ हित लाव सहीते ॥ ४ ॥ २ ॥

अंत— ॥ होरी ॥

बाजै री गुरु ग्यान के बाजा ।
किंगरी सहस सरगी बाजय लागि जिकिरि मोरे प्रान के काजा ॥ १ ॥
सब बसि करन धमूरी बाजै राम सरन पर चित विराजा ॥ २ ॥
अनहदराग संख धुनि बाजय आसु सञ्ज सकुचे जमराजा ॥ ३ ॥
हरि हरि होरी]।म बोरी जन केसौ जहु संत समाजा ॥ ४ ॥ १२० ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञा।पदेश वर्णन ।

संख्या ४५क कृष्णा चरितामृत, रचयिता—क्षेमकरन मिश्र, कागज—आधुनिक, पत्र—३८, आकार—७३/८ × ८ इन्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६०८ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२६, प्राप्तिस्थान—श्री शंभुप्रसाद बहुगुना, अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ सोहर ॥

गणपति गौरि मनाइ कहौं हरि कीरति ।
हो रामा निजमति की अनुहार जहां लगु सूरति ॥
एक समय बड़भार धरनि अकुलानी ।
कीन्ह गऊ कर वेष तौ रोदन ठानी ॥ १ ॥
तुरत गई विधि निकट कहिनि दुख आपन ।
विधिहु सुना सब भांति धरनि कर तापन ।
धरनि सहित सुर सहित विरंचि सिधाइनि ।
क्षीर सिंधु के तीर हरिहि गोहराइनि ॥ २ ॥
विधि सस्तुति सुनि विष्णु प्रभाव जनाइनि ।
गगन गिरा सुनि ब्रह्म सुरन समुझाइनि ॥
प्रथमहि श्री भगवान कीन्ह दुख मोचन ।
हरेउ धराकर सोक सुनहु सुर शोचन ॥

:o: :o: :o:

रास रचो हरि वृन्दावन मे ।
दुइ दुइ गोप बधून के अंतर । एक एक श्रीकृष्ण निरंतर ॥
नखशिख रूप अनूप सुहायो । पट भूषन सबके अति भायो ॥
यह छबि छाइ रही सखी मन में । रास रचो हरि वृन्दावन मे ॥

अंत—

करि प्रभु चरित द्वारिका बसिकै ।
पुत्र कलत्र मित्र कुल पुरजन परिजन पशु पक्षिन्ह चित कसिकै ॥ १ ॥
दश सुत को जननी सब नारी तिनकर सब परिवार बिलसिकै ।
सब ऋतु सब सुख दुख नहि ब्यापत मुख लखि कृष्ण चन्द्र को लसिकै ॥
जल बन उपवन महल रसौधत लखि हरत सकल मन हांसिकै ।
जासु विभव तकि कलपति सुरपति पसुपति जलपति हरति उससिके ॥
चरित सुधा बसुधा तलभारी डारि दै बसुधा गुनि रसिकै ।
"क्षेमकरण" जेहि पान किये ते होत परम पद प्रभु पद फंसिकै ॥ ४ ॥

इति श्री पण्डित क्षेमकरण मिश्र कृत कृष्ण चरितामृताम् ॥ मिति फाल्गुन वदि ३ सम्वत् १६२६ ॥

विषय—श्रीकृष्ण चरित्र ।

संख्या ४५ख कृष्ण चरितामृत, रचयिता—क्षेमकरन (खेमकरन), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—१०॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१२८४ साल, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ सोहर ॥

गणपति गौरि मनाइ कहौं हरि कीरति ।
निजमति की अनुसार जहां लगि सूरति ।
एक समय बड़भार धरा अकुलानी ।
कीन्ह गऊ कर भेष तौ रोदन ठानी ।१
तुरत गई विधि निकट कहिवि दुष आपन ।
विधिहु सुना सव भांति धरनि कर तापन ।२
धरनि सहित सुर सहित विरंचि सिधाइनि ।
छीर सिंधु के तीर हरिहि गोहराइनि ।
विधि अस्तुति सुनि विष्णु प्रभाव जनाइनि ।
गगन गिरा मुनि ब्रह्म सुरन्ह समुझाइनि ।
प्रथमहि श्री भगवान कीन्ह दुख मोचन ।
हरेउ धराभर सोक सुनहु सर सोचन ।
निज निज जोतिष सहित सकल सुर भूतल ।
ठौर ठौर लहि जन्म जहां जेहि सूतल ।
आगुहि जदुकुल जनमि चरित वहु करिहै ।
माया सहित अनंत विभूति संभरिहै ।

अंत—श्री अनिरुद्ध सुभद्रहि साहत दुरजोधन सग जाई ।
कृष्ण चंद वहि पुनि जाहिते अरजुन के घर जाई ।
मिथिलापुर मा भूप विप्र दोउ साथहि नेवत वनाई ।
साथ समाज रूप उर सबके दुइन कीन पहुनाई ।
'छेमकरण' हरि वोधि दुहुन के प्रभु द्वारिकहिं सिधाई ।४

:o: :o: :o:

दस सुत औ जननी स्व नारी तेकर स्व परिवार विलसिकै ।
सव रितु स्व सुख दुख नहि व्यापत सुष लषि कृष्णचंद को लसिकै ।
जल वन उपवन पलह संधलविहम हरत सकल मनहसिकै ।
जासु विभव लखि कलपति सुरपति जलपति हरति उससिकै ।
चरित सुधा वसुधातल भारी डारि देव सुधा गुनि रसिकै ।
'छेमकरण' जेहि पान किये ते होन प्रमित गुण विनासिकै ।५

इति श्री छेमकरण कृत संपूर्ण । सन् १२८४ साल ।

विषय—श्री कृष्ण चरित्र ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में भगवान कृष्ण के अवतार, उनके चरित्र तथा भक्ति आदि का सांगोपांग वर्णन किया गया है । रचना काव्य की दृष्टि से भी साहित्यिक है ।

संख्या ४६, भक्तसार संग्रह, रचयिता—कवि खुमान, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६॥ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—४४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० हरिहर दत्त दुवे, ग्राम—वहरा, डाक—सियरा (जौनपुर) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

विधि हरिहर के आदि दै वरनत है सब तोहि
दिविमणि दिनमणि देवमणि दीजै बुद्धिवर मोहि १

मेष सीस वृष मुख वसै मिथुन जानु भुज दण्ड
कर्क हृदय केहरि उदर कटि प्रमदा दुख षंड २
तुलावस्ति कहँ जानियै वृश्चिक गृह्य बखानु
अरुधन को वास है कोविद करत बखानु ३
वसति सदा पिडुरी मकर कुंभ तिली भवपाय
सदा अंगमे वसै भाषत पण्डितराइ ४
जहाँ सो क्रूर ग्रह परै कर व्यथा नहिठौर
उत्तम सुषद सरीर कें भाषत कवि सिरमौर ५

:o: :o: :o:

इति श्री कवि षुसाल विरचिते भुवनसारसंग्रहे प्रथमो अध्याय १

:o: :o: :o:

अंत—राहु......

चुगुल महा मैलो रहै जाके नवमे होइ
पुण्यसदा थोरी करै जानि लेहु सभ कोइ ६
अति कामी होवै पुरुष जाके दशये होइ
इछा परधन हरन की जानि अोहु सभ कोइ १०
अौरता रहे घर पर तौ फुर्तीलो जानु
वाता सुन्दर सावरो अवगुनवंतो मानु ११
हय गजेंद्र द्वारे वधै तानर के हित मानु
निवल होइ तौ जानियै थोरो धन तेहि स्थान १२
आरोग्य तनसो रहै षुषी रहै मन तासु
जातक ग्रंथ निहारिकै कवि षुसाल परगासु १३
राहु वार हे जासुके सोनहि दाता होइ
वली निर्वली देषि कैं कहौ वात सभ कोइ १४

इति राहु फलम् इति श्री कवि षुसाल विरचिते भुवनसारसंग्रहे सूर्य्यादि नवग्रह फल समाप्तम् सम्वत् १८६३...

विषय—ज्योतिष। ग्रह, नक्षत्र एवं राशिफल वर्णन।

संख्या. ४७ कवित्त सवैया, रचयिता—खुसिआल, कागज—देशी, खर्रा—१, आकार—८ × ३६ इंच, पंक्ति (प्रति खर्रा)—३८, परिमाण (अनुष्टुप)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि— श्री गणेशाय नमः॥

॥ किरीट सवैआ ॥

सोक सहै फिरि लोक फसावत सिधहि वासन राम विनाजस।
राम रजाय रहै केहि ऊपर क्षंदन में सुभ कौन बहै रस।
दासन के हिय राम चहै अस ये षट वात विचार करै कस।
''सो षुसिआल'' रे हाल कहे सबही जग यैन नयै गजही बस॥१॥
कौन अनोष लषात कहाँ ठहरै नभ के जल काम कहौ अव।
रोगहि भूपति कौन लहै अव तानन मे उपमा केहि जानव।
व्याह अो प्रीति चहै कमकै जग ये सव वातन की सुनिगो अब।
उत्तर सो "षुसिआल" दियो वसरी जग जोर रजोग जरी सब॥२॥
श्री अनुरुद्ध के संग सषी निसि वाँह मिलाइ गरे गर सोई।
काम कलोल भये सपने वहु सो "षुसआल" कहे कछु गोई।

मैं अति हर्ष मनो सत वर्ष महा सुर्पाष सर्व सुष षोई ।
भोर भये तब जागत भै उठि कै बिहसी हसि कै पुनि रोई ॥ ३ ॥
मत्त गयंद्र ॥ छंद चंचला ॥
वंत येक सोभिवंत माथ सिंदुरो लसंत टेसु फूलि जो वसंत नेत्र भंग की संमा ।
नास सांस भीस मास तेज भान ज्यौ तपा निहारि पाप भागिगा पुकारि जाइकै जमा ।
श्रोत को उमंड देषि मेघ को घमंड जात ग्यौम वूद जात षारीड सुंडि के फुहारेमा ।
सर्व है सुभाव दर्द नास होत ज्यौ मसा कहै "षुसाल" भे निहाल नाथ दयालमा ॥ ४ ॥
—पूर्णप्रतिलिपि

विषय—पहेली, उषा अनिरुद्ध प्रेम तथा मत्तगयद वर्णन ।

संख्या ४८क उत्तर पुराण, रचयिता—खुस्याल या खुशालचद, कागज—देशी, पत्र—५३०, आकार—१२६/८ × ८५/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप) —१३२५०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर, अहियागज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ, जिला—लखनऊ ।

आदि—. . . . . .य ॥ ८ ॥ अडिल्ल० ॥
फेरि विचारै दव चित साही जवै ।
देष्यौ अच्युत स्वर्ग भोग विरूरै सवै ॥
अरु नंर भव के भोग नेत्र टमकार से ।
तिनिमै मगन अपार जानि सुषभार से ॥ ९ ॥
॥ दोहा ॥
धिग संसार असार ए भोग नर्क फलदाय ।
जासु उदय इनि नृपति न धर्म्मन वन सुहाय ॥ १० ॥
:o: :o: :o:
संभव के कल्याणपाणि भाषे उत्तर पुराण ।
गुणभद्राचारिज कह्यौ सो "षुस्यालनि" आन ॥७१॥
॥ सोरठा ॥
मो वुधि कै अनुसारि भाष्यौ हम संक्षेप सौ ।
वाणी अगम अपार पारल है को जास के ॥७२॥
इत्यार्षं तृषष्टि लक्षण महापुराणे सग्रह भगवद्गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्री उत्तर पुराणस्य भाषायां सभवनाथ पुराण परिसमाप्त ॥ सधि द्वितीय संपूर्ण ॥

अंत—कलप वेलि नृप की तिय जानि ।
सुष फल लागी अति सुषषानि ॥
नारि वदन पकज परिराय ।
षटपद उत्तरमिहै सुषपाय ॥११॥
ऐसे पर्म्म. . . . .
—अपूर्ण

विषय—जैन उत्तर पुराण का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या ४८ख उत्तरपुराण भाषा, रचयिता—खुस्याल, कागज—देशी, पत्र—३५४, आकार—१४ × ७३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१२३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७९९ वि०, लिपिकाल—स० १८७३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ, जिला—लखनऊ ।

आदि—॥ ॐ० श्री वीतरागाय नमः ॥ अथ श्री उत्तर पुराण भाषा लिष्यते ॥
॥ इश्लोक ॥
श्री मान जिनोजिता जीयात् मद्व चांस्य मलान्पलं ।
क्षाल मंति जलातीव विनेयानांमनोमलं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

श्री मत अमित जिनंद को अजित कहत त्रयलोक ।
मैं करिहुं प्रणिपति सदा करि मन वच तन धोक ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
उत्तर सार पुराण यह कह्यौ रुक्षीस बनाय ।
सो मोसे सो क्यो बर्ण पज्ञा त्वष्ट सुभाव ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
शब्द शास्त्र जानूं नहि अलंकार पहचानि ।
छंद भेद इत्यादि कौ नाहि हमारे ग्यान ॥ ६ ॥
:o: :o: :o:
आगें अजित जिनंद के कहू पूर्व भवसार ।
ले अनुक्रम गुणभद्र कौ महासर्म्म दातार ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

इसहि जंबू दीप मझारि । येक सुदरसन सोभित सार ॥
पूरब दिसि तसु सार विदेह । भव्य समूह जहां वृष नेह ॥१०॥
जामै सीता सरिता जानि । वत्स देस तसु दक्षिण मानि ।
नगर सुसीमा सोभि निधान । भूप विमल वाहन गुणवान ॥११॥

अंत—

तिनि मुनि के अनुक्रम अवथाय । देव इंदु कीरति सुखदाय ॥
भट्टारक पद सोभे जास । पुनि महेंद्र कीरति पठितास ॥६०॥
तिनके गछ विष वुधसार । लिछमीदास भये अधिकार ॥
तिनिढगि सागानेरि मझारि । मै कछू सास्त्र पढौ चितधारि ॥

॥ दोहा ॥

फेरि जिहानावाद मै जंसिहपुरौ सुथान ।
तहा आयकै हम वसे अन्य सुनूं सुवषान ॥६२॥
:o: :o: :o:
फेरि चित्तमै हम इम आनि । सार ग्रंथ इह उत्तर पुरान ॥
गुणभद्रा चारिज कै वैण । भव्यन कू सुणता सुषचैन ॥६३॥
:o: :o: :o:
यातै याको भाषा होय । तौ वहु भव्यनि कौ हित जोय ॥
यू विचारि भाषा इह करी । तब सहायता फुनि चित्त धरी ॥६५॥
जब इक पूरब पुन्य वसाय । कारन मिल्यो सुषाकर आय ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

देस मरुस्थल कै विषै गढ नागोर वषानि ।
जहा मंडलाचार्य की आमनाय पहिचानि ॥६७॥
तहां मंडलाचार्य सुनाम । भए अनंत कीरति गुणठाम ॥
भवन सुभूषन तिति पढि भये । हस्त नगर पुर प्रति आवए ॥६६॥
तिनि जुत संघ चतुर्था आय । तिनि मै पंडित ये अधिकाय ॥
करि करि जात किये इक गए । मंडलाचारिज दिल्ली रहे ॥१००॥
तिनके संग रहे वुध पंच । चंद षुष्याल आदि वर संच ॥
सो षुस्याल जू के गुणसार । सज्जनतादिक के अधिकार ॥

॥ अरिल्ल ॥

साधुस्याल मारोठ नगर माही रहे । राम सिंघ के चैत्य विषै श्रुत सो कहै ॥
ब्रह्मकबरसी नाम तनोवर सिष्य है । गुर भ्राता जगरूप भ्रात को रक्ष है ॥
सोविमंडलाचार्य युक्त करि जात जू । रहे जिहानावाद जिलानय भ्रातजू ॥
कीयौ इहा चवमास पुजि जुत ज्यासही । कुहीगोत मझारि सुराजतु है सही ॥

॥ दोहा ॥

तब षुस्याल पंडित थको मंजु मिल्यौ हितलाय ।
वह सज्जन मुझसा जबै प्रीति करी अधिकाय ॥ ४ ॥
जब वह विद्यावत हम जानै बुध्य निधान ।
तब उनिसौ विनती करी अधिक विनय गुणठानि ॥ ५ ॥
तुम सहाय तै उत्तर पुराण । भाषा पूरण होय सुजान ॥

:o: :o: :o:

कहत भयो यह कारिज सार । करहु वेगि नहि ढील लगार ॥
इम सुणि हम अतिहो सुषपाय । पायौचद षुस्याल सहाय ॥
तब इह भाषा करोय नवीन । जा सुणि सुष पावै परवीण ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

सहर जिहानावाद में जैसिह पुरौ सुथान ।
महावीर स्वामी तनो जहि प्रसाद महान ॥
तहा जुइसई ग्रथ की रचना करी सुभाव ।
पंडित चद षुस्याल तें पूरण कीयौ सुभाय ॥२५॥
सतरासे निन्याणव मार्गसीर सुदि जानि ॥
दसमी रेवति रिक्षि विषे पूरण भयो पुरान ॥२६॥
वुध्य षुस्याल के जोग तै भाषा करी षुस्याल ।
गुणभद्राचारिज तनो ले अनुसार विसाल ॥२७॥

:o: :o: :o:

यातै श्री जिनराय के चरण कमल सिरनाय ।
राषौ भवि उर क विषै सुग्ग मुकति पद पाय ॥७२॥

इत्यार्षे नृषष्ट लक्षणा महापुराण सग्रहे भगवत गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्री उत्तर पुराणस्य भाषायां श्री वद्धमानपुराण परिसमाप्त ॥ सवत् १८७३ ॥ मिती असाढ़ वदी ॥१५॥ लक्ष्मणपुर मध्ये सपूर्ण किया वेनी राम ने अपने पढ़ने निमत्त सुभमस्तु ॥ लखनऊ मो राज नवाव गाजुदीहइदर का ॥ जो इह पुराण पढे सुने तिनके मंगल होइ ॥

विषय—उत्तरपुराण (जैन) का अनुवाद ।

रचनाकाल

सतरासै निन्याणवै मार्गसीर सुदि जानि ।
दसमी रेवति रिंछि विषै पूरण भयौ पुरान ॥२६॥

संख्या ४८ग रामपुरान, रचयिता—खुस्यालचद या खुशालचद, कागज—देशी, पत्र—३६७, आकार—१०⅘ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—६६०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८३, वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगवर जैन मदिर (बड़ा मदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—॥ ५१॥ श्री सर्वज्ञ देवाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यैभ्ये नमः अथरामपुरान भाषा लिख्योते ॥

॥ सवैया तेईसा ॥

पंचकल्याणक नायक श्रीमुनि सुवृंतदेव नमो गुणधामी ।
जाहि सुरेंद फुनेंद नरेद नमै तिनहू महिमा बहु पामी

भव्य समूहनि को सुखदायकहा अधिकाय कहूं सिवगामी ।
ऐसे जिनेसुर के क्रमवंदत मोक्षवधूवर है अभिरामी ।। १ ।।

:o: :o: :o:

।। चौपाई ।।

पुनि ममगुरु के पांवां परूं । आगे रामकथा सुभकरूं ।।२५।।
जोर विषेण कह्यो वरणाव । सो संकोच कहूं करि चाव ।।
गुणभद्राचारज जे भया । तिनका पुनि कछु इक वच लया ।।२५।।
पुनि आगे कहिस्यूं विसतार । सोमसेन मुनि के वचधार ।।२६।।
आगे वर्नन आवसी जोय । मै संखेप कहूँ इतसोय ।।
आदि कुलकराकौ विसतार । वृषभादिक चक्री अधिकार ।।
अरु मारीच त्रिषंडी भए । सो फुनि वरनन आगे थयो ।।२७।।
नम्यराय रूपाचल तनू । ब्रह्मण उत्पति आगे भणू ।।
पुनि विद्याधर वंस बषान । सजयंतमुनि कौतुक थान ।।२८।।
अजितपुरान कहूं अतिसार । चक्रीसागर चरित मनधार ।।
मेघसुवाहन राज सुलयो । वरनन भीम राछसको भयो ।।२६।।
राक्षसवंस वलि पुनि भई । लकाघन वाहन कौ दई ।।
पुनि पाताल लंकामे गये । कोऊ दिन तैठंही ठये ।।३०।।

।। दोहरा ।।

साठ सहस सुत सगर के तिनके भव विरंतत ।
भागीरथ सिवमे गयो कर्मनासि करि अत ।।३१।।

अंत—

।। चौपाई ।।

और सुनौ आगे विस्तार । देस ढुढहा सुजानी सार ।।
तामे नगर अनेक विसाल । जेसिघ नाम जहां भूपाल ।।७५।।
विसनसिघ भूपति को नंद । सज्जन पालक दुष्ट निकद ।।
जाकै राज विषय सुखसार । सवही को आनद अपार ।।७६।।
देस विषै संगावति ग्राम । जहा मनोहर जिनके धाम ।।७९।।
तिनकर नगरी सोभित घनी । जानू सुर्गपुरी इह वनी ।।
सो मेरी वस्ती भवजानि । पढिजै सुनिजे वहु सुखमान ।।
पंडित लक्ष्मीदास पास अभ्यास कियो हम । मो वुधि कै अनुसार वरन कछु अनोपम ।।
ताकरि राम पुरान कियो भवि कौ सुषदाई । मै सुर्दार को नद षुस्याल सज्ञा पाई ।।
मात सुजान मोतनी कालो गोत वषानि कै ।
सुबया विचारि रक्षा करौ सकल जीव हित आनि कै ।।८४।।

।। दोहरा ।।

सतरासैरु तिरासिये पोषन सुकुल तिथि जान ।
वसमी वृसपति वार को पात सुपुरन ठान ।।८५।।
।। ग्रंथ श्लोक संख्या वर्नन ।। दोहा ।। ८९७५ ।।
अष्टसहस सत अंक पनि सात उपर धरि पंच ।
इस संख्या लेषक तनी जानि लेहु भवि संच ।।

इत श्री पद्मपुराणभाषा षुस्यालन चंद कृत समाप्तम: सुपुराणं शुभ कल्याण मस्तु ।। सवैया ।। सुपुरण ।। मेती मह वदी ३ दिन सोकवार वकत ३ वजे दिन को इहराम पुरान . . . षा षुस्याल चंद वनाये होई नेमीचंद श्रावक ने वस्ती सफीपुर मे महीने ३ दिन ५ में लिख्यं ।।

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सतरासैरु तिरासिये पोषन सुकुल तिथि जान ।
वसमी वृसपति वार को प्रात सुपुरन ठान ।। ५ ।।

संख्या ४८घ. रामपुराण, रचयिता—खुस्यालराय या खुशालचंद, कागज—देशी, पत्र—२८८, आकार—१२½ × ६⅝ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—६३६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८३ वि०, लिपिकाल—सं० १८२७, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर) चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री वीतरागाय नमः ॥ अथ रामपुराण भाषा लिष्यते ॥

॥ सवैया तेईसा ॥ २३ ॥

पंचकल्याणक नायक श्रीमुनिसुव्रतदेवन सुगुणधामी ।
जाहो सुरेंद फुनेंद नरेदन में तिनहू महिमा बहुपांमी ।
भव्यसमूहनि को सुषदायकहा अधिकाय कहूं सिवगांमी ।
ऐसे जिनेश्वर के क्रम वदत मोक्ष वधूवर है अभिरामी ॥ १ ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

और सुणो आगे विसतार । देसढुढाहड जाणौसार ॥
तामैनगर अनेक विसाल । जैसिघ नाम जहां भूपाल ॥७३॥
विसनसिघ भूपति को नंद । सज्जन पालक पुष्टि निकंद ॥
:o: :o: :o:
देस विषै सांगावति ग्राम । जहा मनोहर जिनवर धाम ॥
:o. :o: :o:
सो मेरी वसतीभाव जांन । पहली थौ टोडोहम थान ॥७८॥
फेर जिहानावाद मझारि । आय वस्यो जेसिघपुर सार ॥
जहा जिनेस्वर कावरगेह । पूरणग्रंथ कियौ तिएह ॥ ७९ ॥
:o: :o. :o:

पंडित सुलक्ष्मीदास पास अभ्यास कियो हम । मा वुद्धि के अनुसार वरणकछु लयो अनोपम ॥
ताकरि रामपुराण कीयौ भविको सुषदाइ । म सुदरि कौ नद षुस्याल सुसग्या पाई ॥
माता सुजानदे सोतणों कालो गात वषानिके ।
सुदया विचारि रक्षा करी सकल जीव हित आनिके ॥८७॥

॥ दोहरा ॥

सतरासौरु तिरासिए पोष सुकुल तिथि जानि ।
दशमीसुर गुरवार को प्रात सुपूरण ठानि ॥८८॥

इति श्री रामपुराणे आचार्य श्री सोमसेन विरचिते भाषा षुस्यालरायकृत विषैराम-दिक्ष्यांग्रहणसीतेंद्रातके केवलोत्पत्य लक्ष्मणादि सबोधन राम निर्वाण प्राप्ति कथन सधि त्रित्रिंसत्मो समाप्तम् ॥३३॥ इति श्रीरामपुराण भाषासमाप्त लिषत इद्रप्रस्थपट्ट आचार्य श्रीगुलालकीर्तिकाष्टासघी अग्रवाल अम्नाये तत्सिक्ष्य पंडित सेवारामलिपिकृत निजपठनार्थ अन्य भव्य जीवस्य वाचनार्थ सवत् १८२७ ॥ वर्षे चत्रमासे शुक्लेपक्षे तिथौ पूर्णिमायां भौमवासरे ॥ यादृशं......

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सतरासैरु तिरासिए पोषि सुकुल तिथि जानि ।
दशमीसुर गुरवार को प्रात सुपूरण ठानि ॥८८॥

संख्या ४८ड रामपुराण भाषा, रचयिता—खुस्याल, कागज—देशी, पत्र—२८६, आकार—१२½ × ६¾ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—८१५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८३ वि०, लिपिकाल—सं० १८९२ वि०, प्राप्तिस्थान—दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री सरस्वतिभ्यो नमः ।। १ ।। श्री गुरुभ्यो नमः ।। ३ ।। अथ रामपुरान भाषा लिष्यते ।।

।। सवैया ।। २३ ।।

पंच कल्यानक नायक श्री मुनि सुव्रत देवनमो गुणधामी ।
जाहि सुरेंद पुनींद नरेंदन मैं तिंनहू महिमा बहुपामी ।।
भव्य समूहनि कौ सुषदायक हो अधिकाय कहौं सिवगामी ।
ऐसे जिनेस्वर के क्रम वंदत मोक्ष वधू वरि है अभिरामी ।। १ ।।

:o: :o: :o:

अंत—और सुनौ आगे विस्तार । देस ढुंढाहड जानौ सार ।।
तामे नगर अनेक विसाल । जैंसिघ नाम जहा भूपाल ।।७५।।
विसन सिंघ भूपति को नंद । सज्जन पालक दुष्ट निकंद ।।

:o: :o: :o:

देसविषे सांगावते ग्राम । जहा मनोहर जिनके धाम ।।७६।।
तिनकर नगरी सोभित घनी । जानौ सुरग पुरी यह बनी ।।
सो मेरी वसती भविजान । पहिलीथो टोडो हम थान ।।८०।।
फेरि जहानावाद मझार । आप बसै जैंसिघपुर सार ।।
जहां जिनेश्वर के वरगेह । पूरन ग्रंथ कियो तित एह ।।८१।।

।। छप्पय ।।

मूलसंघ भविजानि सुगं सिवकार वषानो ।
आगे भये रिषेस गुनाकर तिन यह ठानो ।
कुंद कुंद मुनिराज जहा धर्म जा माही ।
केते किलकाल व्यतीत भये मुनिवर अधिकारी ।
देवेंद्रकीर्ति अवचित्त धरि ताहि विषे ।
लक्ष्मीसदास पडित तहां विनौ सुगुरु अतिसै रषै ।। ८३ ।।
पंडित लक्ष्मीदास पास अभ्यास कियो हम ।
मोवुधि के अनुसार वरन कछु लयो अनोपम ।।
ताकरि राम पुरान कियो भवि को सुषदाई ।
मैं सुदर को नंद "वुष्याल" सज्ञा पाई ।।
माता सुजानदे मोतनीकाला गोत वषानि कैं ।
सुदया विचारि रक्षा करौ सकल जीव हित आनिकैं ।।८४।।

।। दोहरा ।।

सतरासैरु तिरासिये पौष सुकुल तिथि जान ।
दसमी वृहस्पतिवार को प्रात सुपूरन ठान ।।८५।।

अथ ग्रंथ श्लोक संख्या

अष्ट सहस सत अंक पुनि सात ऊपरि धरि पंच ।
इह संष्या लेषक तनी जानि लेहु भवि सच ।।८६७५।।८६।।

इति श्री रामपुरान भाषा वुष्याल षंडेलवाल कृत समाप्तम् ।। संवत् १८६२ ।। पौष सुक्ल पंचम्यां गुरुवासरे लिषि पूरण किया ।। लक्ष्मण नगरे सुभ स्थाने जिन मंदिरे ।। चंद्रप्रभु मंदिरे । श्री ।।

विषय—जैन रामपुरान का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

सतरासैरु तिरासिये पौष सुकुल तिथि जान ।
दसमी वृहस्पतिवार को प्रात सुपूरन ठान ।।८५।।

संख्या ४९. काशी काड, रचयिता—श्यामदास या खेमदास, कागज—आधुनिक, पत्र—३९, आकार—$६\frac{८}{१०} \times ८\frac{२}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप), —६८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२७ वि०, लिपिकाल —स० २००१ वि० (सन् १९४४ ई०), प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिशरण दास (हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय), ग्राम—कमोली, डा०—गनीकटरा, जिला—बाराबकी ।

आदि—काशी काण्ड ।। बाबा श्यामदासकृत ।।

नमो नमो गननायक सचिता आनंद रूप ।
जा सुमिरे सत सिद्धिता गैबो रूप अनूप ।।
बन्दौ गुरु पद कंज मग जेहि उर अंतर ध्यान ।
ताहि दरस दूषन दहै अघ कटि कटि बिलगान ।।
नमो नमो नी अक्षरं ब्रह्मा विष्णु महेश ।
नमो कहौं कर जोरिकै नित प्रति नमो नरेश ।।

:o: :o: :o:

दो०—थान डीह हरजनापुर मुरई मदन के बीच ।
दास श्याम स्थान करि हरिशंकर के नीच ।।

सो०—हरिशंकर तर वास एक आस दूजी नहीं ।
बिसरी भूख पियास सास सरूपी सुरति मय ।

अत— सोरठा

सदहि सो आनंद रूप वेगि मिलै सन्यास फल ।
निरखै निरगुन रूप अलख ख्याल खेलत रहै ।।

दो०

सम्वत कहिये अष्ट दस सताइस ऊपर लीन्ह ।
अगहन शुक्ला सप्तमी लिषि संपूरन कीन्ह ।।
निजमुख स्वामी भाखि है कहिनि कि भजहु मुरारि ।
सु सुन वेद का भेद यह सुनि सुत लेहु विचारि ।।
सम्बत कहिये अष्ट दस चालिस चारि औ चारि ।
मक्र सेत तिथि सत्तिमी चैते लीन्ह उतारि ।।

सो०

चैते लीन्ह उतारि प्रथम ग्रंथ ते पाठ करि ।
जँह कहुँ चूक हमारि सज्जन सोइ सँभारिये ।।

इति श्री ग्रन्थ काशी काण्ड बानी साहेब समरथ श्यामदास जीव कै । सम्पूर्ण शुभमस्तु ।

दो०—उन्निस सौ छत्तीस जो सबत कहिये सोइ ।
बैसाख शुक्ल तिथि द्वादशी शनि शुभवार समोइ ।।

जो प्रति पावा सो लिखा दसखत गंगादीन कृपा करौ मम जानि जन होइ भजन लौलीन प्रतिलिपि गंगादीन सो लिखि कै कीन्ह तयार माघ मास सित अष्टमी मध्य दिवस कुजवार ।।

४ ४ ३ १

मास फरवरी प्रथम दिन वेद वेद गुण चंद । मति अनुसार सुधारि लिख रामशरण मति मन्द ।।

विषय—काशी का आध्यात्मिक वर्णन और ज्ञानोपदेश ।

रचनाकाल

सम्वत कहिये अष्टदस सताइस ऊपर लीन्ह ।
अगहन शुक्ला सप्तमी लिषि संपूरन कीन्ह ।।

संख्या ५०. अयोध्या माहात्म्य, रचयिता—खैरातीलाल (?), कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—५५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र, ग्राम-भुसौला माफी, डाक-लोटन, जिला-बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अथ अयोध्या महातम लिष्येते ।

दोहा

चंद्र शिषर कैलाशपति रामदेव जगदीश ।
जाहि कृपा भाषा रची रज चरनन धरि सीस ।

मंगला चरणम्

सुमिरौ प्रथम गजानन देवा । मुक्ति भुक्ति दायक बहु भेवा ।
धरम धुरंधर अधरम नासू । विधिकृत जासो परम प्रकासू ।
देव चारि गावं जस जासू । रवि सम करत तिमिर कर नासू ।
एक दंत गुनवंत गुन नायक सुष सिरताज ।
जेहि धावहु गौरी सहित होय सिद्ध सब काज ।
वंदौं सीताराम कमल पद । जासन सिद्धि ज्ञान मंगल निध ।
वंदौ अवधपुरी वरदायक । तहं है राम ग्राम सुर नायक ।
वंदौ मात जानकी सीता । जिनके जस गावत श्रुति गीता ।
वंदौ भरत चरन सिर नाई । नेम धर्म जासे जग छाई ।
वंदौ लक्ष्मन शेश अवतारा । जासु भेद कहै कोटि अपारा ।
वंदौ चरन शत्रुहन नाथा । मुक्ति भुक्ति है जिनके हाथा ।
वंदौ अंजनी कुमारा । राम धाम के जे रखवारा ।
वंदौ सकल अयोध्या वासी । सुर मुनि आदि संत सन्यासी ।

सो०

रज पद धरि गुरु सीस वरनौ महत अयोध्या ।
अति कृपा जगदीस सुफल करं मन कामना ।

प्रथम अध्याय

अंत—

सो०

ऐसन सुख सबसार सबै भूमि है राम के ।
अवधपुरी आधार सुद्ध पुनीत हरिधाम यह ।
राम कृपा ते सुषद पुराना । भयौ समाप्त महातम पाना ।
भाषा भाषो यथा वुद्धि अपने । काव्य ज्ञान नाही मोहि सपने ।
अरज मोर कवितन ते येही । कृपा दृष्टि करि देषे तेही ।
निज निज पद सदरस पद जानी । रामनिहोर तुम वहिका मानी ।
देववान है मुदित नर लोकू । ते प्रसाद भाषा कह जोगू ।
भाषा जिमिन जोग पुराना । ताहि विलोकत मन नहि माना ।
तेहि कारन येह अवध महातम । भाषा लिखौ जानि मै उत्तम ।

दो०

करत खैराती लाल के जिज प्रसाद मुनि संत ।
आपन दास निज जानि कृपा करं गुनवंत ।

विषय—अयोध्या माहात्म्य वर्णन ।

संख्या ५१क. घडी खैंराकी, रचयिता—खैंरासाह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१० X ६।। इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दलपति सिंह जी (पत्नी दलपति सिह), ग्राम–प्रेम का पुरा, डाक–लाला की बाजार, जिला–प्रतापगढ।

आदि—श्री गनेसाऐ नम: अथ घड़ी खैंरासाह लीखते।

घडी पहली बीरह आवन सजन कुछ मैं ना जाना।
लीआ महबूब मेरे नै जभी से हाऐ वाना।
चला था वो लटकर और हाीह्रा क्वर मुस्कुराना।
उसी साअत मेरा जी वड़ा बीना दामो बीकाना।
कीआ था मैं न और मुजरा तेरा मुख फेर जाना।
पडी बारूद आतीस मैं हुवा मुसकील वुझाना।
सजन मै हूँ गदा नादान तुमहो आप दाना।
मेरी करतूत नै खोआ मजे का वो जमाना।
अजाऐबगुल तुही देखा कर्म बीन ना पीछाना।
अजब है इस्क का मारग हुवा जी वड़ा वीराना।
हुवा है रंग जरद मेरा वदन सब नातवाना।
मिले जो मरज कूँ पूछै वताऊं क्या बहाना।
हुसन और जिदंगी जग मै रहट का कारखाना।
हुवा सब खाक से वेतर भला फीर क्या सताना।
कहै 'खैंरा' सुनो पहली घडी का बीच जाना।
हुवा जानी जुदा मुझमे कहां पाउं ठिकाना।१

अंत—घड़ी का सतरवीं आई इसक आसान जाना।
जरा सै वात का सुन लो हुवा कीतना वखाना।
कोई बौरा तुझे कहता कोई कहता दीवाना।
मरज मारज मेरे दील का कीसू नै नाही जाना।
कोई आता कोई जाता लदाऐ ऐसखाना।
कोई यहा ढूढता फीरता यहां रहने का ठीकाना।
नही कुछ जग मे अचरज जखम का ऐखाना।
सरा जी बात फिर पीछे जखम टांके का खाना।
अरे जर्राह जल्दी कर समझ टांका लगाना।
न जानूं ऐकदंम मे कौन सा फरजा जमाना।
सीसे हम सार कहते हैं वही देते हैं ताना।
उन्हों की बोलीआं लागे जीगर मेरा नीसाना।
न देखा आसनाब कोई जो देखा सो बीगाना।
बीछड़ जा जब पीछानोगे लीवासी कारखाना।
घडी क्या सतरवीं बीची नहीं खैंरा पीछाना।
बीना दीलभर दरद दील का किसूनै नाही जाना।

विषय—सोलह घडी का प्रेमात्मक वर्णन, सतहवी (अतिम) घडी मे ईश्वर ही का सहारा रहता है, आदि वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ (घडी खैंराकी) मे आशिक माशुक के रूप मे ईश्वर भक्ति का वर्णन किया गया है। लौकिक प्रेम के द्वारा पारलौकिक प्रेम दर्शाया गया है। विषय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण तथा रचना उत्तम है।

संख्या ५१ख. बारहमासा, रचयिता—खैरासाह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१० × ६.। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दलपति सिंह जी (पत्नी दलपति सिंह), ग्राम—प्रेम का पुरा, डाक—लाला की बाजार, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाऐ नमः ॥

अथ खैरासाह का बारहमासा भाषा लीषतै ॥

॥ दोहा ॥

आखाड़ मैं बीनती करैं "खैरासाह" अधीन ।
तुम बीन व्याकुल नैन है जैसे जल बीन मीन ।

छंद

आषाढ़ मैं सोवैं परी सब ख्वाब देखैं कामनी ।
अवर लवैं बीजुली खवैं दुख देत दूनो दामीनी ।
हर बार मत उठ बोल कोयल पी बीना नैना झरैं ।
काली घटा चहु वोर छाई पवन पुरवा अती चलैं ।
वन मोर बोलैं खुस गुलूसुन के वचन हीअरा डरैं ।
जो सार जानैं इस्क की उसके बलाऐं सीर परैं ।
तेरी जुदाई से पीआ अब मान मेरे तुज गऐ ।
बीतो रोतु असाढ की चली आब मान मेरे मर गए ।

दोहा

आसाढ कहै सुनरी सखी उठी न औसर जाग ।
मेरे दोख बादोख है विछुरन तुमरे भाग ।

:o: :o: :o:

सावन आवन कही गऐ उमगी चले बहु नीर ।
जो अबके पीय दरस द तौ सीतल होए सरीर ।

अंत—

दोहा

वैसाख कहे तुझे होएंगा दरसन अगले मास ।
बैठी रहो सुख चैन सो मती ना होऐ उदास ।

छंद

जैसा ऐह तुमको जेठ आऐ औरन को भी हो जीयो ।
जीनको तलब दीलदार की उनकी वो आसा पूजीयो ।
देखत पीया के चरन कौ कारज भऐ सब जीऐ के ।
नैन बरखत रह रहा वाले जो दीवले घीव के ।
दुख दरद मेरा मीट गआ मीलते ही उस दीलदार के ।
दौलत मुझे ऐसी दई भर गऐ घर घर बार के ।
"खैरा" कहा सब सायरा सैं मैं कदम की खाक हौं ।
गुन तो मेरे मैं है नहीं औगुन मेरे मैं लाख है ।

दोहा

जो समुझै दील पाक कर पाक जान होऐ जाय ।
औगुन तुहा मैं ना रहै जी पीअ कठ लपटाय ।

इती खैरासाह का बारहमासा सपूरन सुभं ॥

विषय—बारहमासो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ (बारहमासा) में उर्दू-फारसी के शब्द भी आए हैं ।

संख्या ५२. महाभारत (शल्य और गदापर्व), रचयिता—कवि गंग, स्थान—मउ ग्राम (उहारा देश) ?, कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—९॥ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—७२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपि-काल—स० १८८६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० पारसनाथ पाठक, ग्राम-पुराना रामपुर, डाक-रामपुर, जिला-जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः सल्य पर्व लीषे

जनमे जै पुनी भुनीसन कहइ। मोरे जीव कछु संसय अहइ।
आदी सभा वन मुनेउ वीराठा। धर्म समुह पाप तीन्ह काठा।
दस दीनमा रह जीषम आहा। सो सव रीरे हम सन काहा।
अरजुन ताही षतावा मारी। दया सींधु पुरु वंस क भारी।
गुरु गरु गुन सो कही रहेउ। अघ समुह पावक मह दहेउ।
धृष्टदुमन ताकर वध कीन्हा। गही कर वल काल सम लीन्हा।
कर्नही समुझी महावल वीरा। वेधं हीरदए वीषम सम तीरा।
महा वीकल पुरवं कस कीन्हे। जनु सरीर वीनु मस्तक चीन्हे।

अंत—वधौवेस पंचालन्ह एक छोहनी सर्व।
सौची एकासक वीख कहेसी गर्जा वहु गर्व।
:o: :o: :o:
कही कवी गंगा उदधी जनु सोषे नीर पीराइ।
अवधीक देवस अठारह एही वीधी गऐ सीराइ।

इती श्री महाभारथे गदापर्व दुजोधन वधनो नाम अष्ट दसमो अध्यय लीषते संमत १८८६।

विषय—महाभारत (शल्य और गदा पर्व) की कथा।

संख्या ५३. राग बारामास का मगल, रचयिता—गगन, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६८/१० × ५८/१० इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—राग बारामासा का मगल

(अ) साढ घटा घन देष के विरहन अत झरै।
स्याम रहे अत दूर तपत तन मैं जरै॥
बहुत बिना गये वीत मीत करी छावनी।
सरवस छोगो कोरोड़ कहै कोउ आवंना॥ १॥
आयो सावन मास अवधपुरी भई।
अजहूँ न आये कान्ह कहै को जु बई।
घर अगना ना सुहाय निर नैन ढरै।
पिया मिलन की प्यास नेक कल ना परै॥ २॥

अंत—जेठ देष कै हाल प्रभु वेगी चले।
गुर छौंना गुरदेव किरपा सु आय मिले॥
सषी "गंगन" आधीन की मनसा सब फली।
हिल मिल कै सुषमान करी अतही रली॥१२॥

विषय—विरह शृगार वर्णन।

संख्या ५४क. गीता भाषा, रचयिता—गगादास, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—६॥। × ५। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गाप्रसाद जी कुर्मी, ग्राम-सेहरी, डाक-ट्टवा, जिला-बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गीता भाषा लिष्यते

दोहा

गीता प्रथम श्लोक मव दोहा विभ्रम तास ।
भाषा किय अरु सोधि दिय बुधवल गंगादास ।१
श्री भगवतगीता जु यह माला मंत्र सुजानि ।
याको वेद व्यास रिषि छंद अनुष्टुप मानि ।
परमातम श्रीकृष्ण जू अज अनादि भगवान ।
भगवतगीता के सोई है देवता प्रमान ।
सोच असौचिन को करत कहत ज्ञान की बात ।
सर्व कर्म को त्यागि कै मो सरनहि तू होइ ।
दूरि करौं सव पाप तव सोच करै जनि कोई ।
यह न कटै हथियार सो पावक सकै न जारि ।
भिजै सकै जल नाहि नै सोषी न सकै वयारि ।
कटै जरै सूषै नहीं और न भिजवन जोग ।
नित्य रहै सव ठौर थिर अविनासी विनुरोग ।
अर्जुन अवतूं देषिले सत सहस्त्र मम रूप ।
बहुत भांति है दिव्य जो नाना वरन अनूप ।

अंत— **।। संजय उवाच ।।**

वासुदेव अरु पार्थ ये बड़े महातम दोइ ।
सुनि अदभुत संवाद तेंहि रोम हर्ष मनहोइ ।
परम दुरयो मत यह जुहा सुन्यौ व्यास परसाद ।
जोगेस्वर श्रीकृष्ण जू निजमुष कियो विवाद ।
वार वार सुमिरत जुहो वा संवादहि राज ।
हर्ष होत मोको महा अति पवित्र के साज ।
अद्भुत रूप जु कृष्णको सुमिरि सुमिरि कै जाहि ।
हरष होत मोको महा अरु विसमय मनमाहि ।
जोगेस्वर श्रीकृष्णजू अर्जुन है जा ठौर ।
तहां विजय अरु नीति है आल संपदा और ।७८

इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास जोगो नाम अष्टादसोध्यायः ।। १८ शुभम् भूयात् संम्वत् १६१८ ।।

विषय—भगवद्गीता का हिंदी छंदो में अनुवाद ।

संख्या ४५ख. पिंगल, रचयिता—गंगादास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—११ × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १२७६ साल, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गाप्रसाद जी कुर्मी, ग्राम–सेहरी, डाक–इटवा, जिला–बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लघुपिंगल लिष्यते ।

दोहा

पिंगल के विनुपठेतें जानन छंद......चार ।
भाषामृदु सव पठत पै विरलहि सुद्ध संभार ।१
सवहि जानि बेहित सरल सु......चि प्रीति ।
'गंगादास' सु छाडी लघु भाष्यौ पिंगल रीति ।२

कवित आदि वै महं प्रथम...च्छर तीनि विचार ।
ताही में गण अगण को भेद जानिए सार ।३
मगन तीनि गुरु गन लघु भगन आदि गुर होइ ।
यगन आदि लघु जानिए चारि सुगन पै सोइ ।४
...न मध्यगुर रगन लघु सगन अंत गुर जानि ।
तगन अंत लघु होत पै चारि अगन पहिचानि ।५
मगन स्वामिछिति देत श्री नगन नाक सुष सिद्धि ।
भगन देव शशि जस...रत यगन ईश जल वृद्धि ।५
जगम ईश रवि देतरुज रगन अग्नि मृतु गुन्य ।
सगन...यु परदेशप्रद तगन व्योमफल सुन्य ।७

अंत—

मरहट्टा छंद

षट चौकला चौकला चंचगुरु लघु अंत जुहोइ ।
यकसो सोरह मत्त जह मरहट कहिए सोइ ।

यथा

जेहि उर बन माला रूप रसाला सोहै पीरो पागा ।
कटि काछनिकाछे गाइन पाछे आवत साझ सुभागा ।
कर कमल फिरावत बेनु बजावत गावत गौरी रागा ।
मनमोहन सुन्दर सबदुख मंदर तासु चरन मन लागा ।

अथ दंडिक छंद

कत उर्जाकिए कत उर्जाकिए कत उर्जतिए ।
अठकल करि अठ पुनिधरि अठ पुनि दिए ।
अंत दहव सुमत्र छिकरस छदो कल भनि ।
दंडको इति चोतन्नये मिति हरि विए मनि ।

यथा

उघटत शिवसगीन सुर सुघटत तान तरग ।
बाजत दुंदुभि बीर धुनि धुद्धुत धुनित मृदग ।
धुनिधर धोषत धरि मुनि । ऊधधुनि समुद धुनिसुनि ।

:o: :o: :o:

इति श्री भाषा पिगल सपूर्ण । सन् १२७६ साल ।

विषय—पिगल विषय वर्णन ।

संख्या ५५ रामायण माहात्म्य (तथा तुलसी चरित्र), रचयिता—गगादास, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—१०३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—६५०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० सूरजनारायण मिश्र, ग्राम—खौंमी मिश्र का पुरवा, पोस्ट—कादीपुर(?), जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीमत् तुलसीदास गुरुवेनमः ॥ श्रीमत्गोस्वामी तुलसीदासकृत बृहद्रामायण माहात्म्य प्रारभः ॥

॥ वसंत तिलकावृत्तः ॥

वंदे सदा तुलसिदास गुरुं कृपालं यत्पाद पंकज कृपाद्गत मोह जालम् ।
ससार सिधु विनिमग्न जनाश्चपार्थं य निर्मितं सुदृढ़ रामकथा सुपोतम् ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

बालमीक मुनि हरि पारायण । जिन रचि सत कोटि रामायण ॥
कछुक दिवस महं बसिगत शोका । कालहि पाय गये विधि लोका ॥ २ ॥

बैठि जाय जब बदन समाजू । आये तहां सकल ऋषिराजू ।।
बिस्वामित्र वसिष्टहि आदी । सनकादिक परमारथ वादी ।। ३ ।।
पुलह पुलस्त्स अंगिरा नारद । अरु अगस्त मरीचि बिसारद ।।
इनहि आदि जे सकल मुनीसा । इंद्र बरुण यम पवन धनीशा ।। ४ ।।
अग्नि आदि दिशि पालक जेते । बैठे ब्रह्म सभा सब तेते ।।
भरी सभा सब बरनि न जाई । जगछवि मनहु देह धरि आई ।। ५ ।।

अंत---तहां रहे कछु कालनि काशिपुरी मैं जाय ।
पाय मरम सियराम सब दीनी बैस बिताय ।।
संवत सोरह से असी अशी गंग के तीर ।
माघ सिताष्टमी वार गुरु तुलसी तजे शरीर ।।

तुलसी चरित्र विचित्र अति परमपवित्र सुजान । "गंगादास" मतिहीन अति किम करिसके बखान ।।
इति श्रीरामायणमाहात्मे तुलसी चरित्रे अन्तवस्था वरणोनाम पंचमोध्यायः ।।

।। दोहा ।।

रामाण तुलसी चरित सब सारन को सार ।
कहो महातम तासुको अपनीमति अनुसार ।।

:o: :o: :o:

रामभक्ति चिंतमनि जोई । तिनकह चिंतामणि सोई ।।
जड निशि निवारण...... । तुलसी चरित्र समतिह रामायण ।।

:o: :o: :o:

---अपूर्ण

विषय---रामायण माहात्म्य एवं तुलसी चरित्र वर्णन ।

संक्षिप्त तुलसी चरित्र

ब्रह्मा की सभा में लक्ष्मण द्वारा श्राप दिए जाने पर वाल्मीकि तुलसी के रूप में अवतरित हुए । काशी के समीप राजापुर ग्राम में हरि शर्मा के पुत्र आत्माराम के ये पुत्र थे । माता का नाम हुलसी था । यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार था, जो शाक्त धर्म का पालन करते थे । तुलसीदास को शाक्त धर्म अप्रिय था । रामभक्ति में लीन इच्छानुसार इधर उधर घूमते फिरते थे । माता पिता के अथक प्रयत्न करने पर भी वे उनके अनुयायी न हो सके । औरंगजेब बादशाह की पुत्री की कब्र खोदकर उसमें से सात लाख रुपए के कफन निकाले जिनका बेचकर साधुओं को भंडारा दिया । बादशाह की पुत्री ने नंगी होने पर उनको विषयारत होने का श्राप दिया । पीछे तुलसीदास की प्रार्थना पर श्राप का निराकरण भी बतलाया । यही बादशाह पुत्री गंगापार लखन तिवारी के यहाँ अवतरित हुई और ममता नाम से तुलसीदास की स्त्री हुई । शेष कथा कुछ कुछ अंतर लेकर आजतक छपे तुलसी चरित्रों से मिलती जुलती है ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रंथ अंत से अपूर्ण है । इसमें तुलसी चरित्र और रामायण माहात्म्य दोनों लिपिबद्ध थे पर माहात्म्य भाग खंडित हो गया । तुलसी चरित्र पूरा है । रचनाकाल का पता नहीं लग सका । लिपिकाल भी ग्रंथ के खंडित होने से अज्ञात है ।

संख्या ५६. नागलीला, रचयिता---गंगाधर, कागज---देशी, पत्र---४, आकार---८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१२, परिमाण (अनुष्टुप)---४८, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ।।

अथ नाग लीला लावनी में लिख्यते ।।

बसत एक जमुना मै काली । नाथ कर लाये बनमाली ।टेक।
चरावन गौवन को धाये । चलत प्रभु कालीदह आये ।
गोप जल पीये और प्याये । पीवत जल सबहीं मुरझाये ।

पीछे सों आए कृष्ण जी सबको लिये जिवाय ।
निर्मल आज करूँ पटहनी चढ़े कदंब पै जाय ।
गिरतहीं जमुना मैं हाली । वसत एक जमुना में काली ।
नाथ कर लाये वन माली ।
गये जव नागिन के आगे । नाग तेरा सोवे है कै जागे ।
लुक्यां कहो किनरो भय लागे । जुद्ध को आये इन आगे ।
यों मन में गरव्यौ घनो का दूं जमुनापार ।
नागिन सुनत हंसत भई मन में कियो विचार ।
जगावत भरता को चाली । वसत एक जमुना में काली ।
नाथ कर लाये वनमाली ।२

अंत—
पजि हरि कालो मुख पायौ । कुटंब लै अपने घर आयौ ।
मिये प्रभु व्रज जन सुख पायौ ।
फिर दावानल आन कर प्रभु दीनो आनंद ।
गंगाधर निरभय कियो कृपाकरी गोविंद ।
गयो भय कृपा जिन पाली ।
वसत एक जमुना में काली ।८।

:o: :o: :o:

द्वारकावासी वे आप हते करुणाकर छाप दई पोया की ।
भारत भारहीं अंडन के प्रभु आपुही आड़ करी घंटा की ।
जव पंडुकी हर नाम पुकारत टेर सुनी या सया सिखरा की ।
भारी भरोसे हतो हरि को जब मेने कही चलु द्वारिका वासी ।

इति गंगाधर कृत नाग लीला संपूर्णम् ।

विषय—श्री कृष्ण चरित्र (कालीदह कथा) वर्णन ।

संख्या ५७. कमरुद्दीन खाँ हुलास, रचयिता—गंजन कवि, कागज—आधुनिक, पत्र—२७, आकार—१०½ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप)—१२१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८५ वि०, लिपिकाल—सं० १९४६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी जी मिश्र, "ब्रजराज पुस्तकालय" गंधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ छप्पै ॥

करहि प्रथम मंगल न वहुरि वहु वुद्धि प्रकासहि ।
जगत सुजश कँह देहि नाम मुख लेत हुलासहि ॥
सिद्धि सिद्धि कँह करहिं ढरहि थोरेहि गुणनिजु जन ।
मान देहि अति सुजन कान मानहिं भूपति मन ॥
संकर सपूत सुखदायकुँ वहित असरन कहँ अति सरन ।
बड़ भागराग "गंजन सुकवि" हितहि धरयौ गनपति चरन ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

नगर हस्तिनापुर भलो सात दीप को भूप ।
"महमदशाह" दिलीश भो लसं काम सो रूप ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

साहि थप्यौ मंत्री सुनिज श्री कमरुद्दी खान ।
वाममान पूरो सुवुध जानत सकल जहान ॥१०॥

॥ अथ वंशावली वर्णन छप्पै ॥

जिन निसु हरवर दियो पंथ भुव भाहु चलायो ।
शेष शहाबुद्दीन नाम जश जगमहु पायो ।
सब शेषन को शेष कुतुब कुतुबन को जानहु ।
कुल पीरन को पीर हुज्जतुल हक बखानहु ।
तेहि असलत सलकेन सबको गंजन जू बरनहु जु इमि ।
बनेहक्क सो आकबति बनी जिल्ल सो जगत जिमि ॥१३॥

अन्यच

शेष अलावुद्दीन जु है कुलदीपकनके ।
श्री ताजुद्दीशेष शेष फतहुल्लह तिनके ।
बहुरि है बतल्लाह शेष फतहुल्ल हसानी ।
शेष जुषाविदशाह सदा समरस्थ प्रमानी ॥
पुनि षाविदशाह सुजान के भये शेष दरवेश है ।
मोमिन शेष सुजानिए बड़े हिदायति के सहे ॥

॥ कवित्त ॥

हजरत अजीजाशेष आलम सिदीकी जू को उलवी है नाम सो नरमधि गायो है ।
रोश कवि एक ताके कुल उजियारो भयो मीर वहाउद्दीन जू बडोई जसु पायो है ।
तिनके नवाव औ महम्मद अलीषाँ भए हजरत औरंगजेव जू के मन भायो है ।
राष्यो जिन क्षत्र और तखत वखत राष्यौ फेरि कै चकत्ता जू को राज पहुचायो है ॥१५॥

॥ दोहा ॥

तिन कमरुद्दीन खान को दई वजीरी चाहि ।
आपु महम्मद अली खाँ भए भिस्ति के शाहि ॥१६॥

:o: :o: :o:

गंजन कवि काशी वसै जाति सुगूजर गौर ।
जिनके पुरिखन को समुझि शाह वधायो मौर ॥१९॥
श्री कमरुद्दीन खान जू दई वडाई आप ।
अपनो करि थाप्यौ जगत तब वरन्यो तरनाप ॥२०॥
रीझत नवल नवाव सुनि गुनि भाषा रसग्यान ।
सब सुष दै करि यह कह्यौ रचौ ग्रंथ परमान ॥२१॥
संवत सत्रह सै वरष बीत्यौ पंचासीत ।
वैशाषी शुदि पंचमी भृगुवासर रचि प्रीत ॥२२॥
ता दिन कागद कलम दै कीन्हो आदर मान ।
आज्ञा दै करि गृंथ की दीन्हे आपन प्रान ॥२३॥

॥ अथ कवि वश वर्णन ॥

बुज कुल उज्जर गुज्जर अवरहुते षटदरशी है जगताके सम आपको ।
करि सनमान मन दै कै सब सब दै कै गाऊ दै कै राष्यौ भाष्यौ वचन सुभाय को ।
बड़ी सरकार दरवार के सिगारहुते चौदहो रतन ऐसे करै समुदाय को ।
अकबर औलिया मुकुट बाँध्यौ जाके शीस नामराय मुकुट मुकुट विराय को ॥२४॥

॥ अन्यच कुंडलिया ॥

राय मुकुट के वंश में मानसिह भे धीर ।
ताके सुत गिरधर भये हरी सकल पर पीर ।

हरी सकल पर पीर भये मुरलीधर ताके ।
दान दये दुज कुलन पुलन गहि सूर सरिताके ।
सुर सरिता के तीर काशि वसि अमिय सुगुटके ।
तेहि कुल गंजन राय बंश है राय मुकुट के ॥२५॥

दोहा

गंजन कवि बरनो तवै जस रस को परकास ।
नाम धरयौ या गृंथ को कमरुदीषां हुलास ॥२६॥

अंत— ॥ अथ कलस छप्पै ॥

चौंसठि कला प्रवीन चौदहौ विद्या जानै ।
सुंदर सुघर उदार दक्ष सबके मन मानै ।
स्वामी काज अनुराग जशी अती तेजवली है ।
रसनिधान गुन वीर वडो जगमाह्वली है ।
सुनि सुजान मरदानमनि आजम उजीर सब जग कहई ।
कमरुदीषान नवाव सों अष्ट सिद्धि गंजन लहइ ॥३२७॥

इति श्री सुकवि गंजन विरचितायां कमरुद्दीषा हुलास संपूर्णम् ॥

॥ दोहा ॥

६ ४ ९ १
रस श्रुति निधि शशि अब्द मुनि शशि शुदि भादौमास ।
स्वहित लिख्यौ निजकर सुकमरुद्दीखान हुलास ॥ १ ॥

लिपि कृति युगल किशोर मिश्रेण ॥ श्री शुभमस्तु ॥

विषय—रस और नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह से वरष वीत्यौ पंचासीत ।
बैशाषी शुदि पंचमी भृगुवासर रचि प्रीत ॥२२॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १७८५ और लिपिकाल संवत् १९४६ है। रचयिता का नाम गंजन कवि है। ये गुर्जर गौड थे।

संख्या ५८. ऋषि पंचमी की कथा, रचयिता—गणपति, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६० वि०, लिपिकाल—सं० १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे जी, ग्राम-निगोहा, डाकघर-निनेरा, जिला—रायबरेली ।

आदि—............जुवती जानि करै व्रतु ताही ।
करै अकास सिध मुनि देवा । प्रगट पाताल व्रत की सेवा ॥
इहु जो वृतु करै मन लाई । ताके पाप अनेक विलाई ।
इस्त्री चतुर सोई हम जानै । अतिहित कथा सुनै वृतु ठानै ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण दुवीस्टिल सो कहै रजस्वला जो होई ।
परसैभंड सो नर्क मह परै नारि मरि सोई ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

तव रिषिराज वचन अनुसारा । "रिषिपंचमी" वृत करहु विचारा ॥

॥ दोहा ॥

सुमति चंद्रावति निवृत कीन्हो मन अनुमान ।
मातुपिता की मुक्ति भै आये गगन वेवान ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

"गनपति" कृत भाषासुनै नरनारि मानु लाई ।
तिनके सकल मनोरथ सिद्ध होई सति भाइ ॥
:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥
सोई सुबुधि सोई चतुरइ जुवती करै सुजान ।
सप्तरिषिन आसिष दई सबके सुष कल्यान ॥

श्रीहोमं कृत्वा ॥ अभिषेकं कृत्वा ॥ सागिता कृत्वा ॥ मंत्रं देई कै समाप्त कृत्वा ॥ संम्वतु १८६० ॥ मिति अस्वनि वदि नवम्या भृगु वासरे कः समाप्तं सुभमस्तु ॥

विषय—ऋषि पचमी व्रत की कथा ।

संख्या ५६. रसवल्ली, रचयिता—गनेस कवि, स्थान—मलामैनगर, कागज—आधुनिक, पत्र—६, आकार—११$\frac{3}{10}$ × ७$\frac{4}{10}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—२७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१८ वि०, लिपिकाल—सं० १६४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्णबिहारी मिश्र, व्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ कवि गणेश कृत रसवल्ली लिख्यते ॥
छंद बरवा
सिर धरि मोर किरीट पिछौरी पीत ।
मगलकर निसि वासर सामल मीत ॥ १ ॥
तनदुति जोति सिघनदुति घनक सुभाइ ।
यह रस बरसो बरसो बरसो पाइ ॥ २ ॥
दिनकर कला कलित करु पुनि मुनि दीप ।
उनइस कला चरन गनि बरवै कीय ॥ ३ ॥
नगरमलामें वसत गनेश अनद ।
किय सुगृथ सुनि छमियो कविकुल चद ॥ ४ ॥
विनती करत कवीन की तुम राव जोति ।
मम कविता षद्योत उज्येरो होति ॥ ५ ॥
सहरमलामे दोशी 'पूरनजोति' (? पूरवजोति) ।
सुरसरि चारि कोस दुति दुनी होति ॥ ६ ॥
सुकृति राजिमनराजे राजैराज ।
पडित कविकुल मडित गुनगन साज ॥ ७ ॥
:o: :o: :o:
भरतमते तियभेद सबै रसपूरि ।
रसिकरसाल प्रवीन समुझि सुषमूरि ॥ ८ ॥
:o: .o: :o:
तिनके काज रची रसवल्ली नाम ।
हित लगाई चित धारौ रसकौ धाम ॥ १२ ॥
रस बस होइ प्रवीन कछुक मन लाइ ।
रसवल्ली रसपूरन सुमति लगाई ॥१३॥
८ १ ८ १
वसु भू करि पुनि वसु भू फागुन मास ।
संवत शुकुल द्वैज गुरु ग्रंथ उजास ॥१४॥
:o: :o: :o:

अंत— वितर्क विभ्रांतिपत्यात्मा
अमरगहे लतिकान वोलन वाल को रूप ।
चंद किरनि नहिं भासिय वदन अनूप ॥२२५॥

पदनि विचारि अकीन सकलरस धाम ।
रचो गनेश ग्रंथ "रसवल्ली" नाम ।।२२६।।

इति श्री मत गनेश कवि विरचितायां रसवल्ली संपूर्ण शुभं श्री सम्वत् १९४१ आश्विनि मासे शुक्लं पक्षे तिथौ पौर्णमास्यां शनिवासरे लिखितमिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण मिश्र जुगुलकिशोरस्य पाठार्थम् श्रीकृष्णाय नमोनमः ।।

विषय—नायिकाओं का भेदाभेद वर्णन ।

रचनाकाल

वसु भू दार पुनि वसु भू फागुन मास ।
सवत शुकुल द्वैज गुरु ग्रंथ उजास ।।१४।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ की समस्त रचना बरवै छंदो मे हुई है। काव्य की दृष्टि से उत्तम रचना है। प्रस्तुत रचना निम्नलिखित ग्रंथों के साथ एक ही हस्तलेख मे है—

१ शृंगार सौरभ—रामजी भट्ट कृत ।

२ रस रत्नाकर—भान कविकृत ।

संख्या ६०. वैष्णव विलास, रचयिता—पं० गणेशदत्त मिश्र, स्थान—बलरामपुर (गोंडा), कागज—देशी, पत्र—१८ आकार—९॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—३६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गुरु प्रसाद मिश्र, ग्राम—हीरानगारा, डाक—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर

आदि—वैष्णव विलास

जिसमें साकार अवतार मूर्ति प्रतिमापूजन तुलसी उर्ध्व पुंड तिलक शंख चक्रधारण मंत्र दीक्षा ग्रहण तथा नाम स्मरणादि ..पुराणादि शास्त्र मतानुसार वर्णित है। जिसको पं० द्वारिका प्रसाद पांडे जमीदार मौजे लखाती परगने बलरामपुर के आज्ञानुसार बलरामपुर निवासी पं० भवानी शर्मात्मज पं० गणेशदत्त मिश्र ने......भाषानुवाद से विभूषित किया।

श्री गणेशाय नमः

अथ श्रुति मतानुकूल अवतार सिद्धी

दोहा

नील कंठ अरु जटाधर आसित ग्रीवं अविकार ।
पशुपति पुनि शिव सर्व को नमस्कार बहुवार ।१
शूकर अरु नरसिंह सरुपा । ह्वै मृग सोई विष्णु अनूपा ।
राम कृष्ण के रूप प्रकासा । देत सोई असुरन कहं त्रासा ।
जलचर कच्छ मच्छ वपु सोई । वेद वचन मे अस्थित जोई ।
पुनि त्रिपाद प्रक्षेप म्हाना । रूप त्रिविक्रम तेज निधाना ।
अस्तुति लहत मुनिज बलभासा । सकल भुवन मह जाकर वासा ।

:o: :o: :o:

निजभगिनी सीतहि हरि लयऊ । अंतकाल क्रोधित अति भयेऊ ।
सन्मुख ह्वैस अपर कुल दीपा । प्राप्त भयो श्रीराम समीपा ।

वेदानुसार साकार होने का प्रमाण व मूर्ति निर्माण

माया माहि गिरौ जबं तेज विष्णु की नित्य ।
सो विराट की आतमा भयो प्रगट आदित्य ।६।

अंत— ॥ दोहा ॥

श्रुतिही स्वतः प्रमाण है सबल शास्त्र उपरान्त ।
ताते ग्रंथ निबन्ध को इतनो ही सिद्धांत ।
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

पुनि दुइ एक पुरुष की करनी । वंश प्रसिद्ध कहौं कछु वरनी ।
प्रथमहिं भे पांडे 'कृष्णागर' । सव गुण आगर जगत उजागर ।
जो निज ग्राम जमीदारी पर । रहेउ 'इंटारडीह' थल सुदर ।
आए इहां जन्म थल त्यागा । देखि देश यह अतिप्रिय लागा ।
वर बलरामपूर मन भावन । भवन बनाइ बसे पुर पावन ।
है अजहूं लग जहां प्रकासा । तिनके वंशन की शुभ वासा ।
तिनके वंश 'वंशमनि पांड़े' । श्रुति पथ चलत सकल छल छाड़े ।
पुनिता पुत्र 'खिरोधर' भयऊ । शोच समय जेहि हरि लै गयऊ ।
:o: :o: :o:

छठें पुश्त कृष्णागर केरे । बकतौरी के सुत वहुतेरे ।
११ ७७
ग्यारह सं सतहत्तरि आई । तिन भाइन मंह भई वंटाई ।
बकतौरी सुत चारि प्रवीना । निज निज अंश वश सब लीना ।
पुनि बलरामपूर जेहि काला । राजत 'नवलसिंह' महिपाला ।
'बकतौरी पाडे' के पावन । भये परम प्रिय पौत्र 'जुड़ावन' ।
जे तुलसी पुर युद्ध मझारी । जूझे जाइ पाइ यश भारी ।
सिरया तट पाटन निकट जानत जाहि जहान ।
ओड़ाझार समीप ही सोहै तिनको थान ।
:o: :o: :o:

भये जुड़ावन के सुवन पांडे 'विरजाराम' ।
मनोदत्त तिनके तनय कीर्तिकला गुणधाम ।
इनके पुत्र पुनीत द्वै धरे धर्म की देह ।
हिय गोकुलप्रसाद के गोकुलपति की नेह ।
:o: :o: :o:

द्वास द्वारिकानाथ के द्विज द्वारिकाप्रसाद ।
:o: :o: :o:

तिनकी आयसु पाइ मैं कीन्हो यह शुभ ग्रंथ ।
जामे विविध विलास मय सुवर वैष्णव पंथ ।
८ ५६ १
नाग शरांक शशी शुभ संम्वत मास असाढ़ सुदी कुजवारे ।
पांडे मनोदत्त पूरण काम अकाम है राम के धाम सिधारे ।

विषय—वैष्णव धर्म संबधी वार्ता ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है । परंतु रचनाकाल तथा मुद्रणकाल का कोई उल्लेख नही मिलता ।

संख्या ६१. बारहमासा, रचयिता—गणेशप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—सं० १९५८ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अथ बारहमासा गणेश प्रसाद का

पिया विन उठी विरह की पीर।
रही में तरस न आये तीर।
लगा जबसे अषाढ़ आली। घटा छाई काली काली।
पिया परदेश उमर वाली। महल मे पड़ी सेजर वाली।

दोहा

उमड़ घुमड़ बरषन लगो घन घमंड चहुं ओर।
दादुर हंस चकोर कोकिला मोर मचावे शोर।
झमक झड़ लगा बरसने नीर। रही में तरसन आये तीर।१
शुरु जबसे सजनी सावन। लगे पिया परदेशी आवन।
खफा हो मुझसे मनभावन। दस्तसे छुडा गये दामन।

दोहा

घर घर मे झूले सखी करे तीज त्यौहार।
दमकि रही दामिनीसी कामिन कर सोले शृंगार।
बदन मे पहिरकसूमी चीर। रही में तरसन आये तीर।२

अत—

छन्द

जिस दम दरख्त की छाया। दिलभर से ध्यान लगाया।
जब नगर माहरू आया। मिल गया सजन मन भाया।
मिल गया सजन मन भाया। जिससे गुल छाया।
गले लिपटाया चली गुनगाती। वालमविन वारहमास नींद नहि आती।

छन्द

पड़ गई महल मे जान इलाहों शानमहल मे आनहू अइ कला से
खुश होकर कामिन अर्ज करे वालम से गुलवदन मदन स भरी हासिल कमाल हो गई जिगर की आसें।

छन्द

वारहमासी विरहिनीहे लेखराज फरकन मे रगल फख्खा वादन की।
वंदिश जोवन की मोहनी मन की कलगी लहराती।
वालम विन वारह मास नींद नहि आती।

इति गणेशप्रसाद का वारहमामा समाप्तम् सवत् १९५४॥

विषय—वारहमामा वगान।

संख्या ६२क. औषधि सुधानरंगिणी, रचयिता—गदाधर त्रिपाठी, कागज—आधुनिक, पत्र—१८८, आकार—६½ × ६⅞ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, मुद्रित, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३१ वि०, मुद्रणकाल—सवत् १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० गगारत्न जी दुबे, स्थान—गाँ।राजई, डाकघर—अवारा पश्चिम, जिला—रायबरेली।

आदि—औषध सुधातरङ्गिणी॥

अंशुमत्फल० सूर्य फलं १ केरावृक्ष २ शमी वृक्ष ३
अंहि० जटा० वृणो की जड़० १ हाऊवेर औषध २
अंह्रिप० वृक्ष०
अकर्ण० सर्प० साँप०
अकाल० जलोदय० नीहार० कुहिरा०
:o: :o: :o:
रुक प्रतिक्रिया० औषध १ चिकित्सा २
रुच० मैना पक्षी०
रुचक० सज्जीखार १ कालानोन २ विजौरा नीबू ३ कपोत ४
रुचिष्य० मधुर०

रुद्रज० पाराधातु०
रुद्राक्ष० वृक्षविशेष०
रुधिर० खून १ केसर २ मरसा शाग ३
रुमेढि ० ओस १ बर्फ २
रुरु० मृगभेद १
रुवथ० मुरगा०
रूव्ह ० वृक्ष १ तरु २ विटप ३ पदप ४ दरखत ५ पेड़ ६
रूक्ष० रुखा १ सूखा २ क्रूर ३ आमवृक्ष ४ अरुशवृक्ष ५
रूप्य० चांदी १ सोना २

अंत—हृक्षादनद्रव्य—जो औषधि शीतकों थांभि मूर्छा कों १ सर्दी को २ क्लेव कों ३ जीतै और सुखकारी है ।।

इति श्री पंडित गदाधर त्रिपाठी वैद्यकृत औषध सुधातरगिण्यां शंकेत औषधि गुरण वर्णनं नाम ४८ प्रवाहे ४८ स्तरंग समाप्तम् ।। १ ।।

(द: महादेव त्रिपाठी खास)

(श्लोक)

अस्यांमत्कृतायां वैतरंगिण्यां यद्यदस्तिव । वतन्यत्री निघंटे वै नास्ति ग्रंथेप कुत्रचित् ।। १ ।।
विवुधंरपितद्ज्ञेमान्य त्वयद्धिऽभातिवैतदस्या सकल भांति विविच्य पुनः पुनः ।। २ ।।

।।टीका।। जो दूसरे निघंटो में नामगुरण लिखे हैं सो इस ग्रंथ में हैं जो इस ग्रथ में गुण हैं सो दूसरे में कम ठहरेगें ।।२।। श्लोक ।। श्रीमद्‌गदाधराख्येन विदुषां प्रमुदे सदा । भाषाया सुप्रबन्धो वैकृतो ग्रंथादनेकशः ।।

।।टीका।। गदाधर त्रिपाठी वैद्य वैद्यक विद्या के जाननेवालो के वास्ते भाषा में ग्रन्थ बनाया ।।

।। सम्पूर्णम् ।।

एण्ड रिटेन वेरी केयरफुली बाइ लाला चिरौजीलाल काशी समानप्रेस सोमवार मिति भादों शुदी ११ सम्वत् १९४१ ता० सितम्बर सन् १८८४ ई०

विषय—आयुर्वेद का निघटु वर्णन ।

रचनाकाल

शसि १ गुण ३ नव ९ (१९३१) भूपाल १ माधवसुदि द्वादशी १२ ।
करि अरम्भ तिहिकाल सम्वत विक्रमराजे ।। ३ ।।
अबपूरो यह जान नवगुण नवशसि शम्वतं १९३९ ।
मार्गशीर्ष पहिचान शुक्लपक्ष तिथि द्वादशी ।। ४ ।।

विशेष ज्ञातव्य—इन्होंने ग्रथ बनाने का विवरण उस प्रकार दिया है —

श्रीमान् सकल गणनिधान ब्रह्ममूर्ति विद्या धिराज पंडित रङ्गीलालाल माथुर निज मित्र के आज्ञानुसार र्वारत श्री वामी नगरे श्रीमन्मुकुट मणि छत्रपति राज राजेश्वर महाराज रामसिंह जी के राज्य मै जिले बस्ती परगने वासी तप्पे चँवर मौजे तिवारीपुर ग्रामस्थ पण्डित गदाधर त्रिपाठी वैद्य ने अपने उक्ति युक्ति और प्राचीन ग्रथो की सहायता से निर्मित करके उक्त श्रीमान् पाण्डिज्जी के शरण मे अर्पण कीया ।।

संख्या ६२ख. औषधि सुधातरङ्गिणी अर्थात् (वैद्यक कोश), रचयिता—गदाधर त्रिपाठी, स्थान—तिवारीपुर (बासीराज), जिला—बस्ती, कागज—देशी, पत्र—१८८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, पूर्ण, रूप— प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३१ वि०, मुद्रणकाल—स० १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामकरन शर्मा (डाक्टर), ग्राम–गभिरन बाजार, डाक–रानीपुर, जिला—

आदि—औषधि सुधातरङ्गिणी अर्थात वद्यक कोश

वैद्यवर श्रीमान गदाधर त्रिपाठी निर्मित जिरको गुणाभिलाषी लाला देवीदास खत्री ने मनुष्यों के उपकारार्थ के निमित्त काशी समान नाम शिला यंत्रालय में लाला हरप्रसाद के प्रबंध से छपा स्थान श्री मथुरा जी में संम्वत् १६४१ विक्रमादि पहली वार १०००

भूमिका

. . . .

:o: :o: :o:

(औषध सुधातरङ्गिणी)

श्रीमान् सकल गुण निधान ब्रह्म मूर्त्ति विद्याऽधिराज पण्डित रङ्गीलाल माथुर निज मित्र के आज्ञा-नुसार-स्वस्ति श्री बांसी नगरे श्रीमन्मुकुटमणि छत्रपति राज राजेश्वर महाराज रामसिंह जी के राज्य मे जिले वस्ती परगने बांसी तप्पे चँवर मौजे तिवारीपुर ग्रामस्थ पण्डित गदाधर त्रिपाठी वैद्य ने अपने उक्ति युक्ति और प्राचीन ग्रंथों की सहायता से निर्मित करके उक्त श्रीमान पण्डिज्जी के शरण मे अर्पण कीया।

:o: :o: :o:

इस कोश के निर्माण का मुख्य हेतु यह है कि प्रायः सव प्रकार के शब्द एक २ कोश में नहीं मिलते और अर्थ में भी प्रकारान्तर पाया जाता है किशी शब्द का किशी कोश में तो कुछ अर्थ और दूसरे में और प्रकार का रहता है और अनेक कोशो से अपेक्षित शब्द के निकालने में अत्यंत क्लेश होता है और यदि वह शब्द भी मिला तो ससके संपूर्ण अर्थों का एकत्र मिलना दुस्तर है सो इस महा परिश्रम को दूर करने और अनायास अपेक्षित शब्द और अर्थों के मिलने के लिए अकारादि क्रम और सपूर्ण अर्थों संमेत अर्थ लिखे गए हैं. . . . .:o: :o: :o:

:o: :o: :o:

सिताभ्र—कपूर

सितापाङ्ग—मोर

सिताम्भोज—सपेद कमल

सिता न—गरुड

अत—नाम सरकृत—गुण भाषा मे

सोधन द्रव्य—खराब—मल १ पित २ कफ ३ का स्थान छुडाय मुख वा चूड़ की राह गिरावै सो। आदि— .. . . ।

इति श्री पडित गदाधर त्रिपाठी वैद्य कृत औषध सुधातरगिण्यांशंकेत औषधि गुण वर्णन नाम ४८ प्रवाहे ४८ स्तरंग समाप्नम्

विषय—औषधि शब्दकोश।

रचनाकाल

भनत लिखत मनक्षीवं जत्ननते पाल्यो सुभग।
१ ३ ६ १
शशि गुण नव भूपाल माधव शुभ सुदि द्वादशी।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ छपा है और पूर्ण है। समस्त एक सौ अठासी पत्रे है। मथुरा शिला यत्रालय म छपा है। रचनाकाल सवत् १६३१ वि० तथा लिपिकाल सवत् १६४१ वि० है। रचयिता पडित गदाधर त्रिपाठी है।

संख्या ६३. सत्य प्रबध, रचयिता—गदाधर शुक्ल, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—६३/४ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४४ वि०, लिपिकाल—स० १८८० वि० (?), प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ सत्य प्रबन्धो लिख्यते ।।

।। छद तोटक ।।

सुमिरे सुखमा गज आनन की । कटि जात महा कज आनन की ।।
पग वंदन ही गुर के धरि के । चष चाहि परै रचना हरि कै ।।
सिव सैलसुता पद पंकज जे । अपने चित मैं नित मैं धरिते ।।
यह सत्य प्रबंध कथा बरनौ । तरिबे हित जो भवसागरनौ ।।

।। दोहा ।।

अलंकार पिंगल पढी नहिं है बल वुधि एहु ।
सत संगीत सागर रतन शंकर चरन सनेहु ।। २ ।।

।। सोरठा ।।

करत मोह मृग भंग बसत जु निसि दिन हिय गुहा ।
भजु किरात सतसंग तजु घर घर डोलवु वृथा ।। ३ ।।
४ ४ ८ १
रवि छठि माधव मास वेद वेद वसु चद्र सम ।।१८४४।।
कीन्हो कथा प्रकास सुकुल "गदाधर" हरि सुमिरि ।। ४ ।।

।। दोहा ।।

बड़ो जुधिष्टर नृप भयो द्वापर मे जग जानु ।
दधि जिमि कौरव दल मथ्यो कृष्ण कृपा मंथान ।। ५ ।।

।। चौपाई ।।

सत्य वचन वकता नृप साधू । श्रीपति भजन सिधु अवगाधू ।।
हरिपूजन रत परम सुसीला । नीति निपुन वुधरावन लीला ।।

अंत—

।। दोहा ।।

भादव कृष्ण चौथि तिथि सुत संपति फल लेषि ।
सोमिल बहुला वाघ व्रत पूजन करी विसेषि ।।
सुरूख होत जब जानुकी पुरुष पुरुष पर आपु ।
कुरुष होत तेहि कौन जग दुरुख दूरि संताप ।
राम सिघ ठाकुर जहा 'पारा' पुन्य निवास ।
तहां "गदाधर" सुकल यह कीन्हो कथा प्रकास ।।
निपट निकामिल सठनि को आमिल मं कलिकाल ।
करौ अजामिल लौ अधम हरिजन सामिल हाल ।।
यह भाषा बहुला कथा पढै सुनै जे लोग ।
उभय लोक सुष पावही होइ न पुत्र वियोग ।।

।। सोरठ ।।

हरिजस सागर माहि जे गहि बूडत प्रेम गुन ।
ते पावत सुष चाहि मुक्ता मुक्ति अमोल पद ।।

इति श्री महाभारते इतिहास समुच्चे सत्य प्रबध कथा समाप्तौ ।। सुभमस्तु सम्वत १९८९ ।।

विषय—बहुला नामक गाय और वाघ की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

रवि छठि माधव मास वेद वेद वसु चद्र सम ।।१८४४।।
कीन्हो कथा प्रकास सुकुल गदाधर हरि सुमिरि ।। ४ ।।

संख्या ६४क. भक्तिविनै दोहावली गिरवरदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१४७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८४८ वि०, लिपिकाल—सं० १९९३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० त्रिभुवन प्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—प्रानपाल का पुरवा पोस्ट—सिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ लिषी भक्तिविनै दोहावली वानी साहेब गिरिवरदास जीउ की

॥ दोहा ॥

जगजीवन सतगुर सुनहु तुम सतगुर औतार ।
गिरवर बरनन पंक्ति है नहि भूलौं संसार ॥ १ ॥
जगजीवन जगजीव है जीवजतु सब माहि ।
गिरवर जानत अंत की प्रलै स्रिष्टि सो आहि ॥ २ ॥
जगजीवन तैं विनै करि मैं लानो यह बात ।
राम नाम वर मागों गिरवर सरन के नात ॥ ३ ॥
जगजीवन निर्गुन अलष पलहि पलक करि ख्याल ।
गिरवर संतन्ह भजि लषा जगबाधा भौजाल ॥ ४ ॥
वै साहेब के लाल है औ साहेब के रूप ।
दास जलाली सत्य सुष गिरवर किरति अनूप ॥ ५ ॥
सरन जलालीदास के गिरवर जानि जो आऊ ।
आसपूजिहै ताहि की यह सति सब्द लषाउ ॥ ६ ॥

अंत—नित्यपाठ याको करै तेहि प्रभु होहि दयाल ।
जगजीवन की कृपासे कटै सकल भ्रमजाल ॥१०७॥
भक्तिविनय दोहावली अष्टम मत कहि दीन ।
सकल मनोरथ होइहे जो चितवन यहि कीन्ह ॥१०८॥
मिति असाढ़ सुदि द्वादसी भौमवार सुभ सोइ ।
संमत अठारह सै तहाँ पुनि अरतालिस होइ ॥ १ ॥
लिषासो अष्टम ग्रन्थ यह कहि गिरिवर महराज ।
जो पढ़िहैं सत प्रीति करि तेहि निकेत सुखसाज ॥ २ ॥
साहेब गिरवरदास कृत दोहावली प्रकास ।
श्रोता सुनिहि जो प्रीति करि नहि रहिहि कछु आस ॥ ३ ॥

इति श्री भक्तिविनै दोहावली वानी भगतसाहेब गिरवरदास जीउ की सम्पूरन सुभमस्तु ।

संवत् वै वसु अंक महि शुक्ल अष्टमी जान ।
शुभ मधुमास पुनीत है ग्रन्थ समाप्त प्रमान ।
नाम भगवतीसिंह शिशु विद्यार्थी सुविनीत ।
लिखि सम्पूरण कीन्ह यहि जानि लेहु अतिप्रीति ॥

द: भगवतीसिंह कक्षा ५ स्कूल नौवी स्थान दुधवन जिला रायबरेली ॥

विषय—स्तुति वर्णन ।

रचनाकाल

मिति असाढ़ सुदि द्वादसी भौमवार सुभ सोइ ।
संमत अठारह सै तहाँ पुनि अरतालिस होइ ॥ १ ॥

संख्या ६४ख. भक्तविनै दोहावली, रचयिता—गिरवरदास, पत्र—६, आकार—८३/४ × ५५/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान—हरिगांव (सिध्यादास बाबा की कुटी), पोस्ट—पर्वतपुर जिला—सुलतानपुर।

आदि—

मैं तेरो दास बिसारो नहि राम जी।
जगजीवन सतगुर सुनो तुम सतगुर अवतार।
"गिरवर" चरननन परि कहै नहि भूली संसार॥ १॥
जगजीवन जग जीव हैं जीवजत भव माहि।
"गिरवर" जानै अंत को प्रलै स्रिष्टि सो आहि॥ २॥
जगजीवन ते विनै करि मैं जानेउ एह बात।
राम नाम वर मागो "गिरवर" सरन के नाता॥ ३॥
जगजीवन निरगुन अलष पलहि पलक करि ष्याल।
"गिरवर" सतन्ह भजि लषा जगबाधा भवजाल॥ ४॥
व साहब के लाल हे औ साहेब के रूप।
"दास जलाली" संतसुष "गिरवर" कीरति अनूप॥ ५॥
सरन "जलालीदास" को गिरवर जानि जो आऊ।
आस पूजि है ताहि का एह सात सब्द लषाउ॥ ६॥
"सभादास" नामा बड़ धर्म भर्म हिय नाहि।
गिरवर मागो भक्ति वर देहु लेहु मनमाहि॥ ७॥
दूलन देवीदास न एतनी अरज हमारि।
सूरति रहे चरनन विष जगपर पच बिसारि॥ ८॥
महाभक्त सत्तनाम क दूलन देवीदास।
गिरवर बद इन्हहि जा ताहु अघ होइ बिनास॥ ९॥
दास गोसाई षम के भज होत उजिआर।
सेव जन अहलाद का गिरवर मिट विकार॥१०
अवर कहा लाहु कहन हम निबत न पाऊ पार।
करी बंदना सभन क जह लागि भएउ पसार॥ ११॥

अंत— निति पाठ याका कर तेहि पर होइ दयाल।
जगजीवन की कृपा त कट सकल भ्रम जाल॥१०४॥
भक्तविनै दोहावली अष्टम सत कहि दीन्ह।
सकल मनोरथ होहिगे जो चित नित एहि कीन्ह॥१०५॥

विषय—भगवद् स्तुति की गई है

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। प्रस्तुत ग्रंथ समग्र रचना का अंतिम भाग (अष्टम सत) है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम गिरवरदास है। समर्थ जगजीवनदास जी के ये शिष्य थे। इन्होंने इस संप्रदाय के अन्य संतों का भी आदर के उल्लेख किया है। उल्लिखित संतों के नाम—१ जलालीदास २ सभादास, ३ दूलनदास, ४ देवीदास, ५ खेमदास, ६ अहलाद दास है। रचना विषय की दृष्टि से सुंदर है।

संख्या ६४ग. बानी या शब्दावली, रचयिता—गिरवरदास साहब, कागज—आधु-

निक; पत्र—३०, आकार—८१/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—५७४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गुरुप्रसाद जी, स्थान व पोस्ट—बछरावाँ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लिख्यते वानी भगत साहेब गिरवरदास की

शब्द

विनती सुनो क्रिपा निधान।
देखि जग की रीति अटपटी विकल होत है प्रान॥ १॥
काम की अरर्थी नहि कछु कीन्ह जात बखान।
क्रोध लोभ औ मोह डारे रहत हृदय कपान॥ २॥
लोभ लालच पर है जग होत बड़ अभिमान।
यह कहत आठौ पहर है प्रभु ज्ञान ध्यान भुलान॥ ३॥
सो नमुझि गिरवर जग जीवन की सरन आनि लुकान।
यह विनती मन परचा न कह मोहि भक्ति दीजै दान॥ ४॥

:o: :o: :o:

लज्या राखिये हनुमान।
सुजस विदित जस उदित है भान॥ १॥
अरु जस रूप ध्यान निरवान। राम के प्यारे भरत समान॥ २॥
भक्तन कह सुखकंद निधान। असुरन धरि तुम मरदे उमान॥ ३॥
यह मन करत रहत अभिमान। देखत सुनत न करत तेवान॥ ४॥
दाया करि करि तोउ ठेकान। अहो अंध सब भाति हेवान॥ ५॥
शिव ब्रह्मा नारद मोहि ज्ञान। वली महा तुम सबको आन॥ ६॥
गिरवर बुद्धि बालक अजान। मागै भक्ति देउ वरदान॥ ७॥

अंत— कहरा

जागुमन मितवा सोवत बहुत दिन बीता रे।
इस नगरी मे पाच पाच नेवाती तिनका कवहु न जीता रे॥ १॥
परमारथ स्वारथ मन आनहु गावत भगवत गीता रे॥ २॥
मानुष तन देवन को दुरलभ पायो परम पुनीता रे॥ ३॥
"गिरवरदास" के प्रभु जगजीवन सुमिरहु रघुवर सीता रे॥ ६॥

कहरा ६

इति श्री शब्दावली ग्रंथ साहेब गिरवरदास कृत॥ समाप्त॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल दिया नहीं। लिपिकाल प्रह्लाद साहेब की 'वानी' के आधार पर संवत् १९५० है।

रचयिता का नाम गिरवरदास है। अन्य वृत्त दिया नहीं। ग्रंथस्वामी के कथनानुसार ये स्वा० जगजीवनदास जी के पौत्र और जलालीदास जी के पुत्र थे। स्वा० जी के निम्नलिखित पाँच पुत्र हुए।

स्वा० जगजीवनदास जी

सभादास | प्रभु अनन्तदास | बल्लादास | पवादास | जलालीदास

जलालीदास
|
गिरिवरदास

गिरिवरदास जी के गुरु श्री देवीदास जी रहे।

संख्या ६५क. भक्त माहातम रचयिता—गिरधारी, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ४॥ इंच; पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—२३०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०५ वि०, लिपिकाल—सं० १८५५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री काशीनाथ पाडेय, ग्राम—खतीरपुर, डाक०—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः

प्रथमहि गुरु के चरन मनावौ। जेहि प्रसाद अछर सुधि पावौ।
पुनि संतन सुमिरौ धरि ध्याना। जेन्ह की वस्य भये भगवाना।
अवरौ कवि जो भये जगमाही। वोन्ह की समसरि कह हम नाही।
पुनि सारद कह विनवं लीन्हा। तेन्ह की कृपा ग्रंथ जेन्ह कीन्हा।
वोन्ह गनपति गिरिजा पति ध्याना। जेहि प्रसाद वुद्धि वल पावा।
हम तेहि सुमिरन...जाना। जेकर करइ सबै मिलि ध्याना।
:o: :o: :o:

मूल एक त्रिभुवनपति तारन तरन मुरारि।
डार पात सब देवता भाखहि 'जनगिरधारि'।
:o: :o: :o:
फागुन सुदि तिथि परिवा वार आहि सोवार।
संवत सोरह सय पाचम सुकुल पच्छ उंजयार।

तेहि दिन कथा कीन्ह गिरिधारी। धर्मवाक्य सब कहहि विचारी।
जन्म भूमि कर करउ वखाना। सुरसरि तट उत्तम इस्थाना।
कर अस्थान मारतहि कर आही। दास मनूक मत तेहि माही।
जन्म भूमि हम वरनौ ताही। गगाराम सरस्वति आही।
जाति गोत कछु वरनो नाही। पचतत्तु कै देही आही।
जाति पाति कुलकर वेवहारा। यह तो है सब लोकाचारा।
अनत कोटि वज्जन वाजे सब कह विनय हमारि।
अछर टूट होइ जे कविजन लेहु सभारि।

अंत— ॥ दोहा ॥

तेहिषन वीन्ह छोडाइ यह लीन्ह वेमान चढाइ।
जन 'गिरधारी' भाषै गा प्रभु धाम सिधाइ।

इति श्री भक्ति महातिमे......त्रयोदसमो अध्याय। शुभ मस्तु संवत् १८५५ की साल :o: :o: :o:

विषय—भक्ति माहात्म्य वर्णन।

रचनाकाल

फागुन सुदि तिथि परिवा वार आहि सोवार।
संवत सोरह सय पाचम सुकुल पच्छ उजियार।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है पर आदि और अंत के पन्ने है। रचयिता "जनगिरिधारी" है।

संख्या ६५ख भक्त माहात्म, रचयिता—गिरिधारी, कागज—देशी, पत्र—१५३, आकार—६ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—११६७, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १६०५ वि०, लिपिकाल—संवत् १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथदास जी मठाधीश, मठ—ग्रनक गांव, डाक—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री सत गुराय नमः श्री पोथी भक्त माहातम लिख्यते

॥ दोहा ॥

गुर गनपति सिव सारदा मागत ही बरजोरि ।
मन बच कर्म रघुवीर पद सदा सुमति मति मोरि ।

:o: :o: :o:

फागुन सुदी तिथि परिवा सुक्रवार शुभवार ।
संमत सोरह सै पचमे १६०५ पछ तवही उजिआर ।

तेहि दिन कथा कीन्ह 'गिरिधारी' । धर्म बाधय सब सत मधारी ॥
जन्म भूमि कर करउ बखाना । सुरसरि तट उत्यम अस्थाना ॥
कउ असनाम ताहिकर आही । दास मलूक सत तेहि माही ॥
जन्म भूमि हम बरना नाही । गंगा नाम पिताकर आही ॥
जाति गोत कछु बरना नाही । पांच ततु कर देही आही ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

तेहि छन दीन्ह छडाइ तेहि लीन्हेव बान चढाइ ।
जन 'गिरधारी' भाषा गौ प्रभु धाम सिधाइ ।

इति श्री माहातमे सकल शास्त्र सारे धर्म पुरान. . . . . त्रयोदशो अध्याय १३ संवत् १९३४ सन् १२८४. . . . .

विषय—भक्त माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

फागुन सुदी तिथि परिवा सुक्रवार शुभवार ।
समत सोरह सै पचमे १६०५ पछ तवही उजिआर ॥

संख्या ६५ग. भक्त माहात्म्य (विनोदसागर). रचयिता—गिरिधारी, कागज—देशी, पत्र—४८, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], [illegible]—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—. . . . . बहोरि ॥
केशव चरण बसै मतिमोरी ॥

॥ दो ॥

फाल्गु सुदी तिथि परिवा वारज भृगु विनोद ॥
सकलसत की अग्यापाइ कहो भगत दोउ ॥

जेहि दिन कथा कीन्ह गिरिधारी ॥ धर्म व्रत सब कहो विचारी ॥
जन्म भूम्य का करौ बखाना ॥ सुरसरि तट उत्तम अस्थाना ॥
कृष्ण को नाममत्र पढिभाई ॥ दास मलुक तत तेहि गाई ॥
जन्मजात हम बरनित नाही ॥ गंगानाथ पिता असताही ॥
जातिगोत्र सब बरनित नाही ॥ पंच तत्व यह देह जु आही ॥
जाति पाति कुलकर व्यौहारा ॥ यह तौ है सब लोकाचारा ॥
आपु तेज भाय सब भाई ॥ तेकरि जाति देह बिनसाई ॥

॥ दो ॥

वैष्णव कोटि अनत है सबते विनय हमारि ॥
टूट वाढ़ जो अक्षर सो सब देव सुधारि ॥

॥ चौ ॥

कहि आगे हरिकथा सुनावौं ॥ जो सतन की आग्या पावौं ॥
विप्र एक अजामिल नाऊ ॥ बस कुधाठि कुबुद्धि क ठाऊ ॥

:o: :o: :o:

इति श्री विनोदसागरे सतसहस्त्र संहिताय उत्तमानुसासने धर्म संवादो नाम प्रथमो अध्याय ॥ १ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

चोर की सासलि जो भई पुनि जम चक्रत होइ ॥
भजु न भक्ति कस नाम को भजे सकल भर्म धोइ ॥

तबही रिषि कहा वचन प्रमाना ॥ यह हरिभक्त कहाते आना ॥
सो यह भेद मोहि समझाऊ ॥ यह तौ रहा भक्त के ठाऊ ॥
तहाते हम एहि कहा लै आऊ ॥
तार चोराई ताहि कर लीन्हा ॥ तवही जमदूतन्ह दुख दीन्हा ॥
तवही हरिभक्तन मह तुलसी ॥ नीर डारिमुख दीन्हा हुलसी ।
यह कहि रिषय कहा समझाई ॥ तुम तौ दूत बडे अन्याई ॥

॥ दो ॥

नारद वचन सुनतही हरिगन तेहि गहि लीन्ह ॥
पुःपजान आरूढ करि सुरपुर डारि सुदीन्ह ॥

कथा समाप्त सुभमस्तु ॥

विषय——भक्तों के माहात्म्य का वर्णन तथा ईश्वर भक्ति की महिमा का फल ।

विशेष ज्ञातव्य——ग्रंथ खंडित है । प्रथम, चौथा तथा पाँचवाँ पत्र नहीं है । समस्त अडतालीस पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल तथा लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता । रचयिता 'जन गिरिधारी' है । इनके पिता का नाम 'गंगा' था । सुरसरितट पर रहते थे पर उसका कोई नाम नहीं दिया । यं सन्त थे । जाति पाँति नहीं मानते थे, यही कारण है कि इन्होने अपने जाति, गोत्र आदि का उल्लेख नहीं किया है ।

प्रस्तुत ग्रंथ मे रचयिता ने ईश्वर भक्ति एवं भक्तों की कथाओं का वर्णन किया है ।

संख्या ६६क. सुदामाचरित्र, रचयिता——गिरिधारी, स्थान——सातनपुर (रायबरेली), कागज——आधुनिक, पत्र——२, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप)——२६, खंडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, लिपिकाल——१६६५ वि०, प्राप्तिस्थान——पं० उमेशदत्त त्रिपाठी, स्थान व डाकघर—गौंरा, जिला—उन्नाव ।

एक ही रदन गजवदन विराजमान मदन कदन सुत सदन सुकामाको ।
कहै गिरिधारी गिरिराज नन्दिनी को नँद आनँदको कंद जगवंद वरनामाको ।
मुंडावंड कुंडली कमंडलीको मोहै मन भालचन्द्र मडली विशाल गुण ग्रामाको ।
ऐसे गणनायक के वृद्धि वरदायक के चरणमनाय कहौ चरित सुदामाको ॥ १ ॥
पंडित परम गुणमडित अखडित है खडित न होत कवो जप तप सामा है ।
कहै गिरिधारी धर्म कर्म अधिकारी वड़ो वेदमतिधारी साधुपतिव्रत वामा है ।
भिक्षावृत्ति कै कै निन भोजन करत हरि भजन भरोसे मन धन कौन कामा है ।
रामही से काम उर सुमिरत रामनाम सदापुर आपने मे वसत सुदामा है ॥ २ ॥
वाम औ सुदामा सदा सुखी विन सम्पतिहू दम्पति नरायन के पायन को ध्याये हैं ।
कहै गिरिधारी घर असन वसनहीन वासन विछौना ना कुशासन विछाये है ।
ऐसो महादीनता वितावै धाम आपनेमें सपन्यो न होत तौन दीनता पराये हैं ।
पेटभरि मिलत अहार कोन अन्न तहू परम प्रसन्न मानो कोटि वार खाये है ॥ ३ ॥
एकदिन वामा को सुदामा कह्यो वामा सुन सुमिरत स्याम कौकि भूप भये भारे हैं ।
कहै गिरिधारी जुरी राजसी समाज सब बड़े बड़े महाराज मरजी निहारे हैं ।
राजन को जीति राज बैठे द्वारिका मे जाय वाजन बजत नित नौमति नगारे हैं ।
प्रात जप जाप नवनीति खाय एकसंग ऐसे हरिमीत बालपन के हमारे हैं ॥ ४ ॥
वार वार कहो तुम हरि है हमारे यार ताके द्वार जात क्यो न सकार काके रोंकते ।
कहैं गिरिधारी गिरिधारीलालजू विन उवारे विपत झंकोरन के झोकेते ।
द्वारिकै जरूर जाव जनि पछिताव कंत और न उपाय तीनो लोक अवलोकेते ।
दारिद के कदन कलेश सब दूरि होइ है देवकीनदन जू के वदन विलोकेते ॥ ५ ॥

जब जब द्वारिका को लागि जक तेरे पै न जात बनै स्याम जू के निठुर सुभावते ।
मीत जो तुम्हारे हैं तो मीत को बढ़ावो बेश नीत है पुनीत यह चारों वेद भाषते ।
कहै गिरिधारी भये द्वारिका बिहारी आप खबरि हमारी कवों नाहीं जो मगावते ।
जोपै यदुनाथ हमैं जानते यहांही तौ जू कवों निजहाथ की न पाती पहुंचावते ॥ ६ ॥
आठोयाम धामही मे वैठे कैसे काम चलै गांठी मैं न दाम औ न कोऊ कहूं चाकरे ।
कहै गिरिधारी आयो दारिद दवाय अब क्योकरि कै जीजिये चवाय कन कांकरे ।
द्वारिकालौं जात तुम काहेको लजात जहां आस कै कै जात बड़े २ भूप आकरे ।
सांकरे में मीत भाई ढिग जाई कंथ मीत अरुभाई तो सहायं होत सांकरे ॥ ७ ॥

:o: :o: :o:

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—सुदामा चरित्र ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना अपूर्ण है । केवल ७ कवित्त मिले है । इसमे लगभग ७० कवित्त बतलाए जाते है ।

रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल दशम स्कध भागवत के आधार पर सवत् १९९५ है । रचयिता का नाम गिरिधारी है । अन्य वृत्त दिया नही । विशेष के लिये देखिए "भागवत दशम स्कध" का विवरण पत्र ।

सख्या ६६ख. भागवत (दशम स्कध), रचयिता—गिरिधारी, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१०४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ वि०, प्राप्तिस्थान—'हिंदी साहित्य पुस्तकालय' मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ कवित्त ॥
येकेई रदन गजवदन विराजमान समदन कदन सुत सदन सुकामाको ।
कहै गिरधारी गिरिराज नदनी को नद आनद को कंद जगवंद वरनामाको ।
शुण्डादण्ड कुण्डलीक मंडली को मोहे मन भालचन्द मण्डली विलाश गुन ग्रामाको ।
ऐसे गननायक के वुद्धि वरदायक के पाँव वदि कहत चरित्र स्याम स्यामाको ॥ ० ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जमुना निकट येक मथुरा नगर वसै तहाँ महाराज कंश राजवर जोरेमें ।
कहै गिरधारी ताके उध को न वारापार असुर अपार वहु वाढे चहु वोरेमें ।
पापकी कलापन ते पृथी गरूवानी नही येतो गरूआई गिरि गजरथ घोरेमें ।
देवकी के आगत अदेवकी अदल देषि देवकी के दयाभजे देवकी के कोरेमें ॥ १ ॥
भादो की अंधेरी अष्टमी के अधरात समै उदै भयो भाग आजु भूतल के भाय को ।
वासुदेव के मदिर मै प्रगट्यो कधैयालाल जगत जोधैया जालमालिक प्रभाव को ।
कहे गिरधारी भयो वंश को मसाल आजु देवकी को लाल भो दयाल दुज गाय को ।
उग्रसेनिपाल मुकुट मान को जंजाल भयो केसी को जवाल अरु काल कंस राय को ॥ २ ॥

अंत—
अंगकी मलीनी अकुनी हम आपुही है ऊधौ आपुही को वै कुलंगना कुलीनी है ।
कहे गिरधारी वैर परी वृजनारी सब जब ते तिहारी मोपै कृपाकोर कीन्ही है ।
बार बार मोहि चेरी चेरीकै चेतावती है मेरेई चबावन सो चावन प्रवीनी है ।
चेरी ह्वैहैं तो कान्ह की कमेरी हे तो कान्ह की न काहू गोपिकान के बाबा की मोल लीन्ही है ॥३३२॥

इति श्री भागवते दशमस्कदे भाषाया गिरधारीलाल विरचितं उद्धो गोपी वृंद सम्वादो नाम ॥ समाप्त संपूरण सुभमस्तु शम्वत् १९११ शाके १७७६ ॥ मास कृष्ण चतुर्दश्यां बुधवासरे सुभ भूयात् ॥ लिष्यतं बेनी कवि सरेनी सुभभूयात् ॥ श्री जानकी वल्लभोजयति ॥

विषय—भागवत दशम स्कध की कथा का सक्षेप मे वर्णन ।

संख्या ६६ग. भागवत (दशम स्कध) रचयिता—गिरिधारी स्थान—सातनपुर (रायबरेली), कागज—आधुनिक, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९९५, प्राप्तिस्थान—प० उमेशदत्त जी त्रिपाठी, ग्राम–गौरा, डाकघर–गौरा, जिला–उन्नाव।

आदि—श्री गणेशाय नमः दशमस्कंध ॥

एकई रदन गजबदन विराजमान मदन कदनसुत सदन सुकामा को।
कहै गिरिधारी गिरिराज नन्दिनीको नंद आनंदको नद जगवन्द वर नामा को।
सुन्दाखंड कुन्डली कमंडली को मोहैमन भालचंद्रमंडली विलास गुणग्रामा को।
ऐसे गणनायक के बुद्धिवरदायक के जांचे यन्दि कहत चरित्र स्याम स्यामा को॥ १॥
यमुनानिकट येक मथुरा नगर बसे तहा महाराज कंस राजवर जोरे में।
कहै गिरिधारी जाके अघको न वारापार असुर अपार त्रहुँ ओढे चहुं वोरे में।
पापके कलापन ते पृथ्वी गरुवानी नाही एतीगरुवाई गिरिराज रथ घोरे में।
देवकी के आरत प्रवेश की अदर देषि देवकी के दयाभए देवकीके कोरे मे॥ २॥

अंत—

अंग कोमलीनी अकुलीनी हम आपुही हैं ऊधो आपुही को वे कुलंगना कुलीनी हैं।
कहै गिरिधारी वैर परी बृजनारी सव जबते विहारी मोपै कृपाकोर कोनी हैं।
बार वार मोहि चेरि चेरि कै चेतावती है मेरेई चवाइनसो चावन प्रवीनी है।
चेरी है तो कान्ह की कमेरी है तो कान्ह की न काहू गोपिकानके ववाकी मोल लीनी है॥

इति श्री भागवत दसमस्कंधे भाषायां गिरिधारीलाल विरचितं **ऊधोगोपी बृंद संवादो नाम संमाप्तं सुभ मस्तु सम्वत १९११ ॥ शाके १७७६ मार्ष कृष्णे चतुर्दस्यां बुधवासरे वेनीप्रसाद कविः सरेनीयां प्रति दृष्ट्वा उमेशदत्त गौरा वासिनः सम्वत १९९५ श्रावण मासे शुक्लेकादशौशनो सम्पूर्णमस्तु**

विषय—भागवत दशम स्कध मे वर्णित कृष्ण चरित्र वर्णन।

संख्या ६६घ. गिरिधारी काव्य (भागवत दशम), रचयिता—गिरिधारी, निवास स्थान—सातनपुर (रायबरेली जिला), कागज—आधुनिक, पत्र—२६ आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—१२४८, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९९९ वि० प्राप्तिस्थान—प० रामशकर जी त्रिपाठी, ग्राम व डाकघर– उत्तरपारा, जिला–रायबरेली।

आदि—गिरधारी जी कृत ॥ गिरधारी काव्य ॥

वन्दना

येकई रदन गज वदन विराजमान मदन कदन सुत सदन सुकामा को।
कहै गिरधारी गिरराजनंदनी को नंद आनन्द कंद जगवद वरनामा को।
सुण्ड वण्ड कुण्डली कमण्डली को सोहै मन भालचंद मडली विलासगुन ग्रामा को।
ऐसे गणनायक के बुद्धिवरदाय के पांव वंदि कहत चरित स्याम स्यामा को॥

:o: :o: :o:

लोचन विशाल गोरोचन तिलक भाल गरे मणिमाल जाल जगुति जगी रहै।
कहै गिरधारी सिरधारी मुकुटाभरन कुण्डल करनवारो प्रभा उमगी रहै।
यक कर गदा एक पदुम विराजमान एक कर चक्र एक शख शुभगी रहै।
कृष्ण अवतारी अवतरे देवकी के घर जाके हेत तारी त्रिपुरारी की लगी रहै॥

:o: :o: :o:

मंगल अपार मचो गोकुल में जय जयकार कृष्ण अवतार की किहानी सुनि सांचकी।
कहै गिरधारी भीरभारी गोप अंगन में मंगन उमाहे को गनावें देस पाँचको।

महर मुदित ह्वै कै मन्दिर लगाय दीन्हों जाकी लूटि भये जग जाचक अजाचकी ।
कामरी लकूटि रही नंद जू के हाथन मे यशुदा के हाथन में रही चूरी कांचकी ॥

:o: :o: :o:

अधम उधारन के मारन के कारन को कमराय दूतिका बनाय विदा कीनो है ।
कहैं गिरधारी गई गरल लगाय उर सरल सुभाय छल लोगन्ह सो कीन्हो है ।
कोरे लीन्हो कान्हही पै पान करवायवे को पेन दियो पान प्राण पान करि लीन्हो है ।
पूतना तो हूती महा पापिनी यशोदापूत पूतना तो मानिके अभूतगति दीन्हो है ॥

:o: :o: :o:

पीवत न दूध ठाढे दूध डारि डारि देत जीवन को यशुदा मनावतु महतु है ।
कहैं गिरधारी मेरो ललान दुखारी ह्वैगो काहू व्रजनारी की नजर उमहतु है ।
गोद मे गरे मे लाय पलना प्रमोद भरे पलना पराय नेक पलना गहतु है ।
मेरो जिय खोवतु है सोवत न रेन दिन थन सो न जोवत औ रोवतु रहतु है ।

:o: :o: :o:

परम विचित्र बालपन के चरित्र देखि शदभुत गति वृजपति की न भाखी जात ।
कहैं गिरधारी जगभारहि सभारयो जेहि तासो तन कुलही अगूली नही राखी जात ।
मीठ मान सेवरी के जूठे फल चाख्यो जेहि तासो नवनीत गौ पुनीत नाहि चाखि जात ।
तीनिये चरन करि तीनोपुर माथो जेहि तासो नद मदिर की देहरी न नांघी जात ।

:o: :c :o:

बाजै मंजु पायन की घुघरू जरायन की लटे मनहरनि घनकारी दुति गात की ।
कहै गिरधारी मन वरानि हसनि रासी किलकनि सी चारु चितवनि दान की ।
श्याम डगमगे पग भूपर धरत जात धरेकर खाशी लवलाशी महाघात की ।
शीलधरे कूलही अंगूली धरे अगन प मद मद चलन अगूरी धरे मात की ।
भोर उठि मन्दिर मे अतिही अनन्दभरी गोरसमथति फिरीनन्द मन भावती ॥
कहैं गिरधारी खेलें आखिन अगारि श्याम ता छिन की शोभा नाहि भाखे वनि आवती ।
ज्यों ज्यो नद नन्दन नचत करतारी दै दै धमकि मरोरी त्यो त्यो नद को घुमावती ।
बार बार हाथन मथानी गहि गहि रहे कान्ह सो यशोदा दधि मथन न पावती ॥

:o: :o: o:

वारलीला

करम करम स्याने होन लागे नद नद नद औ यशोदा को अनद उपजावें लगे ।
कहै गिरधारी गाय गाय सुर भलिसानि गोकुल की गली २ मरली बजावे लगे ।
शोभा की सदन बर वदन देखाय श्याम व्रज की अलिन को मन ललचावे लगे ।
मोर के पखनधरि सखन के सग जमुना के कछरा मे धुनि बछरा चरावे लगे ।

:o: :o: :o·

दधिलीला

यशुपति माई तेरो कुवर कन्हाइ मेरो माखन मलाइ रोज रोज हरि हरि जात ।
कहै गिरिधारी घेरि पकरि न पैये नाहि निज चपलायन पलायन यो करि जात ।
चोर विद्या आवत की चेटक चलावत कि केहू विधि हाथ नहीं आवत बिछुरि जात ।
छेंके जो दुवारे तो कढत पिछवारे होय के छेके पिछवारे तो दुवारे ह्वै निकरी जात ।
कहां भजि जैये काहि विपति सुनैये आहि बननपैये वृज रावरे किशोर सो ।
कहैं गिरधारी कहां धरियै छिपाय कौन करिये उपाय महा मरिये मरोर सो ।
खींचि खात छीके सो मही के बीच बचै कहां कोठरी ते काठहू ते काढि लेत जोर सो ।
ताखन में पाखन मे राखेहू न रहे माई माखन धराये कहां माखन के चोर सो ।

:o: :o: :o:

दानलीला

ाति गजराज सी है वाजी सो है घूँघट औ शीशा सों कपोल पान वेनीपान करे हो ।
कहै गिरधारी हीरा मोती सो दसन ओठ विद्रुम से दाख से वचन अनुसारे हो ।
रेशम से बार रंगदार है नारंगी चारु चरण अनार से उरोज उरधारे हो ।
कहत गोपाल कोतवाल वनि गोपिन सो देहु न जगाति जोपै येते माल धारे हो ॥

:o: :o: :o:

गोचारन

माखन सों कहत उठि आँखिन उनींद श्याम चाखन को दाखन दे माखन दे रोटी दे ।
कहै गिरधारी दही दोना दै खिलौना दरी मात दे मुकुट दे विशाल लाल मोती दे ।
गायन को छोरि दे बहोरि दे बछरून को गायन चरायबे को साँटी बडी छोटी दे ।
वेन दे विषन दे वमन देरी बाँसुरी कामरी दे काँधनी दे काछनीक छोटी दे ॥
धूमरी हैं धौरी है सो पाटली पटोरी है गोरी है मुवोरी चारु चौरी है उमंग की ।
कहै गिरधारी तन चित्तनी विचित्रनी है झापरी है माँभरो है तामरी उत्तंग की ।
कजली है कपिला है नकुली है वकुली है नीला है सुपोली है रंगीली अंग २ की ।
हरे तृण पागे है पनारीपगी पोखिन में गैमी है कन्हाई जी की गाई रंग रंग की ॥
येरे मोर पखन के मुकुट हमारी सुन कपला निहारी वारी निवही निखोटि है ।
कहै गिरधारी मनमोहन के शीश चढि काहे को करत अभिमान कोटि २ है ।
जबलौं न श्याम सो रिमानी बृजरानी तबलौं अभिमानी तेरी मरजाद मोटी है ।
छोडि के गुमान आय मान के समय ताहू गर्व ठकुराइन के पाइन पै लोटि है ।

:o: :o: :o:

काँध पर कामरी है कर में लकुटी चारु शशि पै मुकुट धर गरे बनमाल है ।
कहैं गिरधारी मुख गोरज लपटि रही लट लपटानी तैसी लटपटी चाल है ।
आली अवलोकु आज गोकुल की गली माँझ साँझ के समय शोभा निपट निराल है ।
बाँसुरी बजावत सुगारी राग गावत है गायन के पाछे आछे आवत गोपाल है ॥

:o: :o: :o:

गोधन चराय श्याम आये साँझ समै धाम देखी बृज अंगना अनंग मदमाती है ।
कहे गिरधारी एक आगी के उतर एक पानी के उतर आनि आनि मँडराती है ।
कान्ह प्राण प्यारे को निहारि गार बलि न बदन पीयूषपानि करि न अघाति है ।
नंद जू के मंदिर को भावरा सी भौंर भरि बदन गोविंद जू को देखि देखि जाती है ।

॥ चीरहरन लीला ॥

मेरे इन सखान को सखर बैर कौन कहत कन्हाइ सुर तरवर नीचे हैं ।
कहै गिरधारी परकाज देहधारी जिन विहग बटोहिन के आनँद उलीचे हैं ।
फूले फले हरे हरे रहत हमेशा धरे तरेपरे फूल मानो मदन गलीचे हैं ।
परसि मयंक को मयूष को भगावै भूष रुख बृंदावन के पियूष के से सींचे हैं ॥

:o: :o: :o:

॥ रासलीला ॥

बृंदावन बीच कैसी चंद्र कीरी मरीचन की चहूँ ओर चाँदनी विराजी चारु चूजा की ।
कहै गिरधारी अलि गुंजै मंजु कुंजन में कुंजें पेखि पुंजै उठै पवसर पूजा की ।
मची कल कूकति कपोतनि कलापनि की कलित कुहूकनि त्यो कोकिल के कूजा की ।
त्रिविध समीर फूले तरवर तीर तीर लहल तरंग तैसी तरनि तनूजा की ॥
रूप की जमासी है अनूप उपमा सी चारु तिलोत्तमा रमा सी छमासी छवि छाई है ।
कहै गिरधारी कलाधर की कलासी भई कमला सी बनी काम अबला सी भाई है ।
संग बृजराज के विहार करिवे के काज वशी सुन बृंदावन राज दिसिधाई है ।
बारहौं विभूषण औ सोरहों शृंगार करि सोरहो हजार गोपि बनि बनि आई है ।

:o: :o: :o:

ग्रानन की पाली वनमाली तुम विन हाथ भई विन मोल हलुकारी हम गुंजते ।
कहै गिरधारी बृजभूषण दिखावो मुख ना तो तन विरह विभूषन ते भुंजते ।
ग्राज जौ न एहौ ग्रत कौने काज एहो यह ग्रारत ग्रवाज कढी गोपिन के पुंजते ।
कुंज के विहारी हम शरण तिहारी सुनि कुंज को विहारी ग्रायो निकरि निकुंज ते ।।
वसन सुरंगन मे भोहन के भंगन मे ग्राभा ग्रंग ग्रंगन में कुँवर कन्हाई की ।
दिये द्युति दानन मे मुखच्छात बातन में शोभा श्याम गातन मे गुंज ग्ररुणाई की ।
बाँसुरी की तानन से रसभरि मानन में झलकनि ग्रानन में झलक जोन्हाई की ।
कुंडल की डोलनि मे लोल दृग कोननि मे उठत कपोलनि में लहरि लोनाई की ।।

मान

मानिनी न मान्यो तब तरुणी सुगेह गई तरवर तेह केसो ग्रधिक हरे भये ।
कहे गिरधारी गये ग्रापुहीं मनावन को जान्यो जब सबके मनावन तेर भये ।
जानि वे प्रमान मान भानुनंदिनी को मान मोहन सुजान के गुमान पैतरे भये ।
वंक देखि भौंहे जाय गकत न सौहै संकि पीछे महारानि के खवास से खरे भये ।।

:o: :o: :o:

मल्लयुद्ध

इत नंद जू को नंद उत कंस जू को भट भिरे दोऊ चटपट झट लपटान मैं ।
कहै गिरधारी झकझोर झोकी झोका मच्यो झुरमुट जोर छल बल को छतान मैं ।
डारि गल वाही कान्ह ऊल मे चढाय फेंक्यो येती गति नाहीं बाजी गढ़ के वटान मै ।
शीश चानूर जू को शीशा सो चटकि गयो पीत पटवारे गहि पटक्यौ चटान मै ।।
ताल दै के माल ग्रोर भिरचो वलिभद्र जू सो जोधा जो विशाल महिपाल के ग्रखारे को ।
कहै गिरधारी दोऊ क्रुद्ध करि मल्ल युद्ध करै लागे भारि कै विरुद्ध बल भारे को ।
केते छल छदन ग्रो फदन चलायो मूढ पायो फल रोहनि के नंदन प्रहारे को ।
करचो वार कुदुक सो ऊपर उछारचो फेरि भूपर पछारचो गहि मुष्टिकहि मोछारे को ।।

:o. :o: :o:

गोपी उद्धव सवाद

जा दिन ते गोन करि ग्राये मथुरा को हम ता दिन ते गोकुल की खबरि न पाई जू ।
ताते तात वृज को सिधावो वार लावो जनि तुरत तयार करो स्पंदन सवाई जू ।
कहै गिरधारी मेरी ग्रोर ते चरन गहो नद यशुदा से कहो विनती बड़ाई जू ।
गोपिन के उर को थहाग्रो प्रेमसिधु ऊधो वेगि फिरि ग्रावो यह कहत कन्हाई जू ।

:o: :o: :o:

जाय कहूँ जगल मे जोगिन सिखाग्रो चलि ब्रह्म की उपासना की वासना विशेषा है ।
कहैं गिरधारी एक नेम नंद नदन को घर घर मही ग्रौर दूसर न लेषा है ।
वारे कोटि कोटि काम ग्रग ग्रभिराम श्याम सुन्दर की शोभा सोई जाने जिन देषा है ।
उधौ तिन ग्राँखिन के ग्रागे कैसे ग्रावे वह ग्रलख ग्रनूप जाके रूप ग्रौ न रेषा है ।

:o: :o: :o:

वृंदावन चवही के हाथन विकानी हम वृंदावन चवही के रंगरस वोरी हैं ।
वृंदावन चवही की गुनही गुलामी हम वृंदावन चंदही की गहेगुन डोरी है ।
कहै गिरधारी हम जनम जनम भईं वृंदावन चंद पद कंजन को भोरी हैं ।
वृंदावन चंद ही को चाहत हमारो चित्त ऊधौ हम वृन्दावन चद की चकोरी हैं ।

ग्रंत— कूबरी वाक्य

भेजी हम चिठी न वसीठी मन मोहन को ग्रापुही ते कीन्ही कृपा जानि निज दासिनी ।
कहै गिरधारी भागि प्रगटी हमारी ताको कहा करैं नारी कोउ नेह की निवासिनी ।
ग्रवै ते न जाय लै मनाय हरि ग्रापने को मने करती ना हम होती न उदासिनी ।
कहा करति हे देहदाहक वचन ऊधौ नाहक हमारे वैरपरी वृजवासिनी ।।

अंग की मलीनी अकुलीनी हम आपुही है ऊधौ आपुही को वे कुलंगना कुलीनी हैं ।
कहैं गिरधारी पैर परी बृज नारी सब जबते बिहारी मोपै कृपा कोर कीन्ही हैं ।
बार बार मोहि घेरि चेरी के चेतावती है मेरेई चवावन सो चवाइन प्रवीनी हैं ।
चेरीहैं तो कान्ह की कमेरी हैं तो कान्ह की न काहू गोपीकानकी बवा की मोल लीन्ही हैं ॥

श्री गिरिधारी :०: समाप्त :०:

:०: शान्ति शान्ति शान्ति :०:

हस्तलिखित सेवक—बाबा दीनदेव वंशीपटहार ॥ सम्वत् १६६६ वि० यह कापी के उतारने में सम्पूर्ण १५दिन लगे है—समाप्त दिन गुरुवार तारीख ३१ दिसम्बर सन् १६४२ ई०

विषय—निम्नलिखित कृष्णलीलाओं का वर्णन —

१ कृष्ण जन्म, २ शिशु लीला, ३ बाल लीला, ४ दधि लीला, ५ दान लीला, ६ नाग लीला ७ ब्रह्म माह और गोचारन, ८ प्रेम लीला, ६. चीरहरण, १०. रासलीला, ११ राधिका उपालभ, १२, राधामान, १३ राक्षस वध तथा कस वध, १४ मथुरा प्रवेश और १५. गोपी उद्धव सवाद ।

संख्या ६७. भक्ति मजरी, रचयिता—गुरुदत्त (?), कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—१२ × ६॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—४६८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १२७७ साल, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—.................... ।
गावहु राम चरित अति भिमला । रोमठाठ नयनन वह पजला ।
सुनहु राम के गुण अति सुन्दर । मगन होहु जस रक के मुन्दर ।
रामहि गावौ रामहि भजौ । विश समान विषया कह तजौ ।
राजा भरत भर्तृहरि जोगी । विषय त्यागिये भये वियोगी ।
नौनी द्रोपदि मीराबाई । हिल्या सोना वहु समुदाई ।
नन्द व्रज के गोपि गोपाला । काह पठौ रोप्यौ धर्ममाला ।
तीर्थ व्रत कवन येन्ह कीना । भक्त जान प्रभु दर्शन दीना ।
वेद पुराण कहा पढिआए । रोए गाए के हरि अपनाए ।

दोहा

द्वारावति रण छिग नाचो मीरा वाय ।
प्रेम वश्य भगवान मे हरि लीन्ही अपनाय ।
:०: :०: :०:

अंत— दोहा

ज्योलहा धुनिआ तरि गए तरे डोम धरिकार ।
जनम कसाई तरि गए तरे वीच चमकार ।
रामभजन अैसे अहै नहि कछु वरण विचार ।
जोग जज्ञ व्रतनेम नहि नाहि विद्या आचार ।
सुनु 'गुरुदत्त' मूढ़ जड़ भूसुर तन तें पाय ।
कस न भजसि रघुनाथ कह श्रुतिपुराण जेहिगाय ।
:०: :०: :०:
भक्ति मंजरी कोपकै वोली वचन कठोर ।
बार बार सिष देत हौं मानसि न मतिभोर ।
विश्णुदत्त के तनय तुम दिनमानी के पूत ।
राम भक्ति करती सुनहि देऊं लात मजबूत ।
:०: :०: :०:

भक्ति मंजरी भक्ति पंह तुरत गई हरषाइ ।
गावन लागी भक्त जस गई चरण लपटाई ।
भक्ति मंजरी को वचन जो माने नर कोइ ।
मानि वचन चालो चलै भव आवै नहि सोइ ।
रामरामकहु रामकहु चारि वेद यह गाय ।
भवसागर के तरन को रामनाम है नाव ।

इति श्री भक्ति मंजरी भक्त जन प्रिय प्रथम पटल । सन् १२७७ साल ।

विषय—रामचरित्र तथा भक्ति और भक्तों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में रामचरित्र (संक्षिप्त) तथा भगवान की भक्ति और उनके भक्तों का वर्णन है । यह प्रथम पटल है । इससे प्रतीत होता है कि 'भक्ति मंजरी' के और पटल भी है, जो अब तक उपलब्ध नही है ।

संख्या ६८. शालिहोत्र, रचयिता—गुरुदीन पांडेय (कवि), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप)—३५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन १२८० साल, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सालिहोत्र लिख्यते ॥

मंगलाचरण दोहा

गज आनन सुमिरन करौ सुलभौ वरनन आजि ।
सालिहोत्र गुरुदीन कवि दंत मुछदन साजि ।१

अथ ग्रंथ उत्पत्य । मालिनी छद ।

प्रथम तुरग भारी पंषधारी सुखारी ।
गगन गति विहारी इंद्र के लोकचारी ।
तव गुन मघवाने सालिहोत्रैं बनायो ।
पगगहि मुनिपति के अश्वपंषा छिनायो ।२

। मोतीदाम छद ।

भये जव पंषहीन तुरंग । नए मुनिरायन आठों अंग ।
विनय सुनिभै मुनिराय कृपाल । दियो वरदान तिन्हे ततकाल ।३
तुम्है वल पायन मे गति पौन । दुषी महिपालन सो निप जौन ।
करौ अव भूतल मध्य विहार । रहे न दहै पसु जान निहार ।४
तुम्है चढि के रन जूझत वीर । लहै गति ते रवि मडल भेदि ।
दियो वरदान अनेकन आनि । कियौ तव ग्रंथ तुरग वषानि ।५

। अथ तुरग उत्पत्य ।

अंत—

। वरवै ।

दोजन तीनि टका भरि सांझ सवेर ।
अनोपान सुनि लीजे षानेकेर ।१७३
दारू जीरा सेंधौ सग जु षाइ ।
सव सूतन को नासै भूंष वढ़ाइ ।१७४
गऊ मूत्रसो षाए रोग कफादि ।
हरै पेट को पीरा दवान वादि ।१७५

चौ०

घी संग षाए पाचक करै । रक्त षाजु वातादिक हरै ।
दारू सेंधवके संजोग । अतीसार रसनागर रोग ।१७६

इति श्री पांडे गुरुदीन कवि कृत सालिहोत्र समाप्त सन् १२८० साल ।

विषय—शालिहोत्र विषय वर्णन।

संख्या ६६. पिंगलमात्राप्रस्तार, रचयिता—गुरुदीन, पत्र—३, आकार—१२$\frac{४}{८}$ X ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप)—४०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० देवीप्रसाद मिश्र, स्थान व पोस्ट—मोहनलालगंज, जिला—लखनऊ।

आदि—अथ पिंगल मात्रा प्रस्तारः॥
यह पिंगल मात्रा प्रस्तार। आदि गुरुतर कला उदार॥
अंध सम ऊर्ध्व गुरु लघु जोय। जौलौं सकल कला नहि होय॥
॥ नष्ट॥
कलन सीस लिषु अंक उदिष्ट। पूछे अंक धरै भज दृष्ट॥
वाकी अंक जो वाटे पावै। सकल कलालै गुरू बनावै॥
॥ पिंगल मत उद्दिष्ट यथा
एक एक द्वै द्वै एक तीन। गुरू सिर अंक अगुर सिर कीन॥
अंत करे कम गुर सिर अंक। रहय सो जानो भेद असंक।
॥ इति प्रसार नष्ट उदिष्टं पिंगल मत यथा॥
॥ अथ अगस्त म (त) प्रस्तार यथा॥
धरि अवसान आदि तर वक। उग्धसम कवि करौ असंक॥
पूरण अध केवल कल चही। पिंगल को उलटोमत यही॥
अथ नष्ट
उलटे सीस अंक धरि जाय। पूछे माधक देइ घटाय॥
तिन करि वार सीसलै कला। करि गुरू जानु भेद कवि लला॥
उठ यामे उलटी लिखनि कवीसा। गुर सिर अक अगुर के सीसा॥
गुर सिर अंक मिलै यक आन। रहै सो जानव भेद निदान॥
॥ इति॥

अंत—॥ उभै प्रकारांतर प्रस्तार॥
सिर गुर नीचे लघु सम अन। ऊर्ध्व गुरु लघु कहत महंत॥
यह कवींद्र भाषा गुनि चीत। कुरु प्रस्तार अरथ लहि मीत॥
॥ इति॥
॥ उभै प्रकारांतर नष्ट॥
सरल अंक मत्तन सिर जानु। पूछे अत घटै अनुमानु॥
परकल मिलत गुरू "गुरुदीन"। नष्ट चेति चित निरनै कीन॥
॥ इति॥
॥ उभै प्रकारांतर उदिष्ट यथा॥
अस उदिष्ट कवि जान बनाय। सूध सूची अंक षचाव॥
गुरु सिर अक अंत मैं हीन। जानु भेद भाषत 'गुरुदीन'॥
॥ इति॥

विषय—पिंगलान्तर्गत मात्रा, प्रस्तार, नष्ट और उद्दिष्ट आदि का वर्णन।

संख्या ७०. सुमेर (? समेद) सिखर माहात्म्य, रचयिता—गुलाबराइ मोतीराइ, कागज—देशी, पत्र—८२, आकार—६$\frac{१}{१०}$ X ६$\frac{४}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४१, लिपिकाल—सं० १८४१, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री गुरुभ्यो नमः ।। परमगुरुभ्योनमः ।। परमपराचार्य गुरुभ्यो नमः ।।
अथसम्यर सिषर माहात्म्य लिष्यते ।।

वानी जू के प्रनमिके प्रनमो श्री अरिहंत ।
गुर सुदिष्ट तिनकों नमों मनबचकाय जपंत ।। १ ।।
महावीरस्वामी कही गौतम सो विरतंत ।
लोहाचार्य ने कही सुनो भव्वि गुनवंत ।। २ ।।
भूषन श्री जिनेंद्र करि उपवेस बनाई ।
ताही मारग जानियो कहत गुलाब सुराइ ।। २ ।।
बंदौ सिद्ध समूह कों अरु वंदों गुरुपाइ ।
सिषिरि समेव विलास की कहों कथा सुषदाई ।। ३ ।।
ताही सिषिर समेविषें बीस कूट है नाम ।
तीर्थंकर हैं बीसहू तिनको सदा प्रनाम ।। ४ ।।

अंत—

श्री मूलसिघ के पटट सुहाए । बलतकारगन में सुषदाए ।।
सरसुतीगछ सदाही जानो । कुद कंद आचार प्रमानों ।।४३।।
आमनाति यह तिनकी कहीये । वेसविदेसनि में जस लहिए ।।
भट्टारक सी जक्त जूभूषन । तिनतें प्रगटें विसु सुभूषन ।।४४।।
:o: :o: :o:
तिनके प्रगटे अतिसुग्यान । श्रीजिनेंद्रभूषन गुनवान ।।
दयावंत अरु क्रोपा जुवान । सीलवंत दातव जसवान ।।४६।।
तिनजह सुभ उपदेस जुदीयो । सिषिर महातम तब हम कियो ।।
फेरि कछु निज वंम वषानो । वासी सहर इटाए जानो ।।४७।।
प्रथमहि कवि बसीधर भए । तिनके कवित्त पोहोमि पर छये ।।
तिनतें अठमलराइ अमान । साहिनि के पावे सनमान ।।
वहुरिराइ लछीराम जुभए । तिन्हें सारधा वहुवर बए ।।
तिनते दुर्गादास सुजान । तिनके इष्ट जिनेसुर जानु ।।४६।।
तनसुत लहुराइ वुधिवंत । तिनके गुन गामे गुनवंत ।।
तिनके प्रीति जिनेसुर धर्म । दया छिमा संजम सुभ कर्म ।।५०।।
तिनकें पुत्र गुलाब सुराइ । लघुभाई है मोतीराइ ।।
मो लघु वुधि सुमहा अयान । छंद कवित्त को नेक न ग्यान ।।५१।।
ग्रंथ उक्ति मे जेसी सुनी । ता माफिक मे तेसी गुनी ।।
:o: :o: :o:

।। सवैया ।।

केतिक साधसंत सोभित द्विज केतिक वेद उच्चारे हैं ।
केतिक देवी देव दोहरें केतिक पुंन्य सचारे हैं ।
केतिक कवि कोविद वेदकहू जोतिक प्रष्ण विचारे है ।
तषत एटाए नग्र वीच लषि सोभा सकल अपारे हैं ।।५५।।

।। दोहा ।।

संवत अठारह जु सें कहे जु इकतालीस ।
भादो सुदि तिथि षष्ठमी ग्रंथ रचो जगदीस ।।५७।।
:o: :o: :o:
पुन्य वढ़ें पातिग गलें वाढें अधिक हुलास ।
भव्वि जीव सुषपाइहें सुनिकें सिषिर विलास ।।६१।।

इति श्री संमेरसिषिरि महापरवे लोहाचार्जानु अनुचर ने जनेंद्र भूषन संबोधाइ गुलावराइ मोतीराइ विरचिते एकोनविंशोध्याय :।।२१।। लितं हरिपरसाद मिश्र ।। शुभंसवत् सं० १८४१ ।।

विषय—सिखर समेद माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

संवत अठारह जु सें कहे जु इकतालीस ।
भादो सुदि तिथि षष्ठमी ग्रंथ रचो जगदीस ।।५७।।

संख्या ७१. भाव रसामृत, रचयिता—गुलाब सिंह पत्र—३५ आकार—७ X ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३४ वि० ?, लिपिकाल—सं० १६०१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गाप्रसाद जी कुर्मी, ग्राम-सेहरी, डाक-इटवा, जिला-बस्ती ।

आदि—**श्री गणेशाय नमः अथ भाव रशामृत ग्रंथ लिष्यते ।।**

सवैया

सेत करे जिन सागर पें सब देवन के दुख दूर मिटाएं ।
रावन के दस सीस कटे सुविभीषन के सिर छत्र फिराएं ।
गौतम नारि उधार करी मिथिलापति के जिन्ह भौन सुहाएं ।
सीय समेत नमो तिनको यक आसन बैठ महा हरषाएं ।
कलि के सब दोष निवारन को भवतारन को जग भीतर आएं ।
जग औरण साधन दूर करे दिढ़ साधन रामहिं नाम बताएं ।
तजि भोगरमे हरिमाह भले सब देवन के दुख दूर मिटाएं ।
करण निध नानक के पद पंकज बंदत हों मम नीत सहाएं ।२
जिह्न नाम उचारत दुष मिटें सुष संपति होहि सदा ग्रह वासी ।
कृत पूरव पाप मिटें सवही अरिकेवल होहि सभै षिण नासी ।
हित मानव देह धरी जग में प्रपूरण रूप सदा अविनासी ।
गुर गोविंद के पद कंजन से सुभ जो उर म नित जोत प्रकासी ।३

दोहा

विद्या सांत सुज्ञान सुषदाईक फल सुभ चार ।
मानसिंह गुर के सदा बंदौ पाद उदार ।१
कंठ अचै जिह दुष मिटें पावें सुष अंसार ।
'भावरसामृत' ग्रंथ यह भाषे हरि उर धारि ।

अंत—

दोहा

गौरी राइ आमात पित सेषव नगर उदार ।
गुलाब सिह कुलदीप सुत करयौ ग्रंथ निरधार ।१२५
बंदौ सीतापति सदा चितघनु ब्रह्म मुरारि ।
लंक राज दयो भगत को रावण कों रणमारि ।
गुरनानक गोविंद के मंजल पाद उदार ।
निस दिन बंदौ जोरिकर भव मोचक सुषकार ।१२७
जापद पंकज हेर कै हरयौ निषल संसार ।
विद्यागुर उदार के बंदौ संत.........र ।१२८

सवैया

भो भवका छर लोहद गामल सम कवी उरमाहिं न धारो ।
राह अबो सषि वै मद पंधम माव सदा उरते नहिं टारो ।
क्षामुभवे सुसपंचइ नीति रजोदनि बावल नेत सभारो ।
जो इनते हरि नाहिं मिले तव जामनसिंह गुलाब लिहारो ।
सति अस्ट दसा सुभ संमति भो पुनि त्रिसत चारि भए अधिकाई ।

घन पूरि रहे दिसि चारि घने पुनि मंद समीर सुबंद सुहाई ।
ससि पूरनमा रविवासर थो सुभहाउ समापति को हित आई ।
दिनताहि समापति ग्रंथ भयो हरि के पद पंकज भेंट चढ़ाई ।१३०

इति श्री मतिमान सिंह चरण सिष्यत गुलाब सिंह व गोरीराये आतमजेन विरचितं भावरसामृत संपूरण संमत १६०१ ॥

विषय—ईश्वर भक्ति ।

रचनाकाल

सति अस्ट दसा सुभ संमति भो,
पुनि छिमत चारि भये अधिकाई ।

संख्या ७२. सृष्टि की उत्पत्ति (?), रचयिता—गुलाब हसन 'पीर', कागज—देशी, पत्र—१३१, आकार—८॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१५७२, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री मुहमद इस्माइल, ग्राम व डाक—लमुआ बाजार, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—....................
तैंएतीस कोटी जुरो वरी अरा । तव मथी चौवह रातन नीकरा ।
देवतन बटी सो रातन नीकरा । तव सव चलेउ जगत वेवहरा ।
सतजुग सत वचन वेवहर । अमत वचन नही केउ पुकरा ।
वीधी क अस्तुती जेही न भवै । चल कुपंथ मलीछ कहवै ।
सुरा पनो नीती करइ पीयरी । कुकुरम करु सधुन सतई ।
सहसवहु एक भव रीआर । अती दुख देइ सकल बेवहरा ।
तव वीधी परसराम अवतर । सहसवाह तेही मरी पछरा ।
......त्रेत जुग अएउ तप सधै सव सरा ।
......लकराज भाए सदकरौ अपकर ।

:o: :o: :o:

मऊ महरा का तरीफ

मऊ सहरा वनारइ सव सरा । पय पीरा कै जहव आखरा ।
वडे पीरा कै परा सीधई । मन वंछीत फल तुरतहीपर ।
सेखराइ के कदम मनावउ । जो मन होछं वेगी सो पवउ ।
चीत दे सेउ सहीद वहउ । हीछ फल पावही रंक राउ ।
अलसहीद कै सेवहु वरा । सकट कटी देही सुखमारा ।

:o: :o: :o:

सीरीनी मलीव जगत लीहीधवा । अंग दुख हरा ही सद सुखपवा ।
उजीराम मुलुक अमपती दौला । सुख औ राज तेन्है दीन मवला ।
हेम सेत लहु फीरोउ दोहाई । दुखीअन क कज चढ़वई ।
पाच जून नीती पढ़ही नामजा । नीसु दीन सद करही सुख रज ।
जेही पगु पनही न दीहेउ वीधता । गज चढइ तेही कीह मुखराता ।
जदीन अरा नीमक अहेरा । वद्य सीध पकराही वहुतेरा ।
...टडल के सीकराकं धवही । हस्ती वहुत वधी लेइ अवही ।
टहल इमम के नीसुदीन धवही । मीस्त्रीत नीरानन वहुववही ।
"नीअज हुसेन के नीसुदीन" दुखियन भोजन दीन ।
इममवउ जह देखही दराव देही जस लीन ।

अंत—

रानम मुएउ सो दोजक गएउ। कलीम पटेउ पक से माएउ।
वहल ग्रामीव सहलइ ग्राए। सुरोइना फतहना पढए।
"ग्रबदुल समद जो ग्रसकहु सुनु हलीम चीतलइ॥"
जो नर पढ़ही कोरान क राजी होही खोवइ।
'गुलबहसन पीरा कहु समुझई'। मके नगरा चहु ग्रासी ग्राई।
सुरंत उमरा ढही ग्रव समारा। बघेउ कमराउ समन पीग्ररा।
:o: :o: :o:
गुरु कहेउ 'खलीब' सुनि लेहु। पुछेउ सच उतर मोही देहु।
'खलीब' कहेउ नबी उजी ग्रारा। सच सबद सब कहै सरारा।
'खलीब' कहेउ सच एही बल। रोद नील जल भरीउ बीधल।
मूसनबीक फीरा उनजे घेरा। रोद नील भुरान तेही बेरा।
:o: :o: :o:
'खलीब' कहै समुझै भाई। ....।
खलवि कहेउ कोनीतो तुम देखो। कवहु न मनाम नीहचै लेखो।
सुरुज एक गगना चटीधवा। जग चहुदीसी धरा धम देखवा।
सुरा ग्रकेल गगन परा ग्रवुज जलम ग्रवर।
कवल सोरा बीदग्रासन लखी सबकेहीं एव...ग्ररा।
.... ग्रपूर्ण ....

विषय—सृष्टि वर्णन एव नबी, रसूल ग्रादि का वर्णन तथा (ग्रादम) मनुष्य की उत्पत्ति ग्रादि का वर्णन।

सख्या ७३. रस प्रबोध, रचयिता—गुलाब नबी (रसलीन), निवास स्थान—बिलग्राम, (हरदोई), कागज—देशी, पत्र—६०, ग्राकार—६ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—१७३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७९८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत लाल श्री कंठनाथ सिंह जी, धेनुग्रावा (बस्ती)।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः॥

ग्रथ रस प्रबोध लिख्यते॥

दोहा मे यह ग्रथ को कीनो तिहि रसलीन।
ग्रपने मन की उक्ति सो रचि रचि जुगुति नवीन।१
नवहू रस को जब भयो यामे बोध बनाइ।
रस प्रबोध या ग्रथ को नाम धरयो तब लाइ।२
सत्रह सै ग्रठ्ठानवे मधु सुदि छठि बुधवार।
बिलगराम मे ग्राइके भयो ग्रथ ग्रवतार।३
बोधि ग्रादि तै ग्रत लो यह समुझै जो कोय।
ताहि ग्रौर रस ग्रथ को फेरि चाह नहि होय।४
कवि जन सो 'रसलीन' यह विनती करत पुकार।
भूलि निहारि विचारि क दीजौ ताहि सवारि।५

ग्रथ रस बरनन दोहा

:o: :o: :o: (प्रथम पत्र का ग्रंत भाग फट चुका है)

ग्रंत—लिख्यौ ग्रंथ यह ग्रागे हूं लोकन करि हित वृद्धि।
पै ग्रब यासो सोधिके ताहि कीजिये सुद्धि।११५४
ग्यारह सै चौवन सकल हिजरी सवत पाइ।
सब ग्यारह सै चौवने दोहा राखे ल्याइ।११५५

इति श्री हुसैनी वासती बिलगिरामी सैयद बाकर सुत सैयद गुलाम नबी विरचितायां रस प्रबोध ग्रंथ समाप्तम् । बनारस लाइट छापेखाने में गोपीनाथ पाठक ने छापा ।

विषय—नवरस वर्णन ।

रचनाकाल

सत्रह सै अट्ठानवे मधु सुदि छठि बुधवार ।
बिलगराम मैं आइकै भयो ग्रंथ अवतार ।३

संख्या ७४. ज्यो[ति]ष (?) रचयिता—गैवा, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१०॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ग्रीसराव जी, ग्राम—उसका खुर्द, डाक—खलीलाबाद; जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ द्वादश भावफलम् ॥

यदामाहतावो भवेन्मालखाने मिरीखोऽथवा मुस्तरीवन्वखाने ।
उतारि द्विलग्ने नरो वन्व पूर्ण भवे दुमि अदारोऽथवा पातिसाहः ॥१
यदा चस्मकोरो भवे दोस्तखाने ततो मुस्तरी दोस्तखाने विलग्ने ।
उरिद्ध नस्ये वृहत्साहवी स्या द्वृहदपञान्मालखाने स्वपूर्णः ।२
भवेद्वाफतावो यदावष्ट खाने पुनर्दैत्य पीरोऽथ केन्द्रे गुरुर्वा ।
याते मुतर्फी लता जीह याढयो राजर्प्यरा वश्यवाताचिरायुः ।३
तृतीये भवे द्वाफतावेस्य पुत्रो यदा माहतावस्य पुत्रो विलग्ने ।
भवेन्मुस्तरी केन्द्रखाने नराणा वृहत्साहवी तस्यताले गुरुस्यात् ॥४
यदा मुस्तरी पचखाने मिरीखो यदावत् वखाने रिपौदाफतावः ।
नरो सुदरो भवेत्कुजराशो वृहद्दोशनो वाहिनी वारणाढ्य ॥५
उतारि द्विलग्ने सुखे माहतावो गुरुःखयरखाने तमो लाभखाने ।
जहानस्पधूरो भवेत्वेषवन्धः खजाना गजाढ्यो मुलुक साह बीस्यात् ।६
यदादेवपीरो भवेद्वन्वखाने पुनर्दैत्य पीरो यदा खयरखाने उतारि तृतीये मिरीखोथभाग्ये ।
निलोभखाने तरः कवि लक्ष्यात् ॥७
हमल माहतावो ऽव्यये आफतावी यदा मुस्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवेन्मालवोद वते लस्कराद्यो वृहत्साहवी वत्व खूबी कमालः ॥८
खजाना गजाढ्यो भवे लस्कराद्यो जहान प्रिये मुस्तरी पंचखाने ।
मिरीखो थलाभ्ये वुधः पचखाने शनि शत्रुखाने नरः कावि लस्यात् ॥९
कमर केन्द्र खाने शनि शत्रुखाने त्रिकोणेपिका मुस्तरी चस्म कोरा ।
जातो वाहिरो रोशनो वायश्रो भवेत्सापरो मालदारोऽथखूबी ॥१०
या इलाही चस्म कोरा योभि आवै सामने ।
शिरकटा यदा भी आवै क्या मनै "गैवा" "भनै" ॥
भइ मुदत ताहि कोनजूम मे दीम जानिये ।
जिलहिज्जमे जिल कादि मे सौ आलजु मन जानिये ॥११

अंत—

लग्न खाने चस्मकोरा मालखाने मुस्तरी ।
सहवाज खाने चंद्र दीदम बादसाहे 'ववंरी' ।१२
धनस्थे कुमुद वन्धुष्षष्ठे रविस्सुखे व्योम्नि केचितु विद्वतकवी ।
वृहत्यामरी सुष मखमल कनात वृहत्पीलखाने तम्बू अकनात् ।१३
यदाभागमाक भले घरपरैं कमायकैं खजाने को दौलत करै ।
जंग वकसागली मे सफर वोजीरी अमीरी करैं बेफिकर ।१४

अंनर पशुपयं मीतषानै परै संमरमो औतिमाल घरनं घर ।
अही आठ ये आर जानी परै कबुर को पयाल करै छो करै ।।१५
—आद्योपांत उद्धृत

:o: :o: :o:

विषय—ज्योतिष विषय (द्वादश राशिफल वर्णन) ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। रचनाकाल तथा लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। रचयिता 'गेवा' का भी नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता।

संख्या ७५क. कृष्णदत्त भूषण, रचयिता—गोकुलप्रसाद कायस्थ, निवासस्थान—बलरामपुर (गोंडा), कागज—देशी, पत्र—२७१, आकार—६॥×६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—७११४, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संभवतः स० १९३७, लिपिकाल—स० १९५१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० लालताप्रसाद जी, पाडेय, ग्राम–सदहा, डाक–रेडीगारापुर, जिला–प्रतापगढ ।

आदि—.....................

दोहा

पाप श्राप संताप रुज कलिमल हरितन ताप ।
दरस परस असमरन करि देव आयगा आप ।१२

मत्तगयंद छंद

धोय कमंडल मांह धरे विधि बावन पावन पावन पानी ।
दीन्ह भगीरथ को महि आइ कहावत पाप पहार को मानी ।
पापिन को शिव शैल चढ़ावत तापिन के तन ताप की हानी ।
गंगतरंगन को महिमा महिमा वृज कौन से जाइ बखानी ।१३

भारती बंदना दोहा

आगम निगम पुरान विद कोविद सबगुन होइ ।
रहै न आरत आरती भजै भारती सोइ ।१४

:o: :o: :o:

इति श्री मत्सकलकला गुन धाम राजा कृष्णदत्त बहादुर जीव कृष्णदत्तभूषण मंगलाचरन प्रथम प्रकाशः ।। गोकुल कायस्थ विरचिते

अंत—

दोहा

पंचदेव रक्षा करै कृष्णदत्त महिपाल ।
जस प्रताप प्रतिदिन बढ़ै बाढ़ै बुद्धि विशाल ।१४८

सोरठा

कवि कोविद के पाय नाइ सीस वीनती करौ ।
दूषन दूरि दुराइ भूषन...रति सचि सदं ।१४९

दोहा

संवत रिवि गु...उ शशि सावन तिथि सित पांच ।
तादिन पूरन ग्रंथ यह पंथ वाक्य श्रुति सांच ।१५०

इति श्री मत्ससकल कला गुण निधान श्रीमान वत्स' 'वंसावतंस पांडे रामकिसुन राम आत्मज राजा कृष्णदत्त बहादुर की आज्ञानुसार गोकुलप्रसाद कायस्थ विरचिते कृष्णदत्त भूषण ......द्वादसमो सं० १९५१ साल ।

विषय—नृप वंशावली, राज वशावली, वर्णादिक धर्म, धर्म के लक्षण, नीति वर्णन, आदि विषयो का वर्णन किया गया है।

संख्या ७५ख. कृष्णदत्त भूषण, रचयिता—गोकुल, निवासस्थान—बलरामपुर (?), कागज—देशी, पत्र—२३०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण, (अनुष्टुप)—५१७५, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० हरिमंगलप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम–कोटिया गड़ौरी, डाक–पथरावाजार, जिला–बस्ती।

आदि—.................... ।

दोहा

वंदाई पाषान कृत सेवकाई अरु व्याज ।
गोरक्षा षेती वनिज भिक्षादिक दशकाज ।६३
धर्म न्याय अजन नैन दान मान कर सोइ ।
सवको देष एक रस तौ नृप दोष न होइ ।६४
जन पद रतनाकर निकर मंत्री त्रिदश समाज ।
मंत्र गुनन तें मथन करि रतन पदारथ काज ।६५
निरषै आमद षर्च को चर्चि सचिव को काज ।
जो ज्यहि लायक होइ लषि त्यहि करि मानद राज ।६६
रीझि देइ लाषन लहै षीझि निकार देश ।
गोप षवरि सवके लहै सोई निपुन नरेश ।६७
भानु और हिमिमानु सम करैं नीति को रीति ।
दुष्ट दमन तम को करैं कोर चौर चित भीति ।६८
दिन सोवैं जागैं निशा न्याय पक्ष करि वश ।
कहा कुशल त्यहि प्रजन को जो यहि भाति नरेश ।६९

अंत—कृष्णदत्तनर नाह के सासन धरि निज माथ ।
रचना कीन्हे ग्रंथ को श्रुति के पथ सगाथ ।१३५
नृप कीरति मिसु कथव यह मथन अगम निधि मोइ ।
उभयहेत अवलोकि नर चित्र चातुरी होइ ।१३६
'कृष्णदत्त भूषन' ललित भूषन कला प्रकास ।
भूषन कवि कोविद करैं तम भ्रम होइ विनास ।१३७
उर उमगैं उतपल नयन प्रफुलित मन आनंद ।
'कृष्णदत्त भूषन' पढ़ैं वढ़ैं वुद्धि सुषकंद ।१३८
:o: :o: :o:
वुद्धि विमल गाहक गुनी सील सहज चित चाह ।
दान दया पालत प्रजा 'कृष्णदत्त नरनाह' ।१४२
कृष्णदत्त नरनाह के लषि रुचि रुचिर दिनेस ।
प्रफुलित पंकज नयन निधि मनमुद वास सुवेस ।१४३
महाराज 'दिगविजय सिंह' राजन मे महराज ।
लषनपति अति आदरित पदवी दई दराज ।१४४
ताके कृपा कटाक्ष सो 'गोकुल'......... ।

—अपूर्ण

विषय—राजनीति काव्य तथा विविध विषय वर्णन ।

संख्या ७६. अष्टछाप के कवियों की वार्ता, रचयिता—गो० गोकुलनाथ जी (?), कागज—देशी, पत्र—१७८, आकार—८¾ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत डा० दीनदयालु जी गुप्त, अध्यक्ष हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

श्रादि—श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। अथ श्री गुसांई जी के सेवक चत्रभुजदास कुंभनदास जी के बेटा तिनकी वार्ता लिख्यते ।।

सो ऊन कुंभनदास जी के पांच बेटा भये ।। तिनकों मन लौकिक में बोहोंत श्रासक्ति हतों ।। सो कुंभनदास जी ऊन बेटान कों लौकिक में बोहोत श्रासक्ति देषि कें मन में बोहोंत चिंता करी ।। जो मेरे कांम को इनमे एकहूं नाही ।। श्रोर कुंभनदास की स्त्री श्री श्राचार्य जी महाप्रभून की सेवक हती ।। सो वह भगवदीय हती ।। श्रोर एक बेटी हती ।। सोऊ बडी भगवदीय ही ।। सो वा बेटी कों व्याह होत ही वाकों पुरुष मरि गयों ।। सो वह बेटी कुंभनदास जी के घर रहती सो तीन्यो जाने जमुनावते गाम में रहते ।। ता पाछें एक बेटा कुंभनदास जी कें श्रोर हूं भयों ।। ताको नाम कुंभनदासजी नें कृष्णदास धरचो ।। सो कृष्णदास ने श्री गोवर्द्धननाथ जी की गाय कों बचाई ।। श्राप नाहर के मुष में जाय कें प्राण दीयें ।। सो कुंभनदास जी की वार्ता में विस्तार करिकें लिख्यो हें ।। प्रसिद्ध सब लिख्यों हें ।। श्रोर फेरि कुंभनदास जी के मन में श्रोर मनोर्थ भयो ।। जो मेरें कोऊ पुत्र एसों न भयो ।। सो जासों श्रपने हृदय को व्रतांत भाव कहों ।। श्रोर श्रहर्निस भगवद वार्ता करों ।। एसें करत को इक दिन में होइवें को समें भयों ।। तब एक दिन श्री गोवर्द्धननाथ जी श्राप श्री मुष सों कहे ।। जो कुंभनदास तू मेरे संग चलि ।। तब कुंभनदास श्री गोवर्द्धननाथ जी के संग गये ।। सो एक व्रज भक्त के घर श्री ठाकुर जीप धारे ।। सो वा व्रज भक्त नें वही माषन दोऊ की मथानी उंचे छीके ऊपर धरि कें श्राप कछू काम कूं गई हती। ता समें श्री गोवर्द्धननाथ जी श्राप कुंभनदास को संग लेके भीतर घसे ।। तब तहां देषेंतो वही माषन उचे छीके ऊपर धरचो हें ।। तब श्री गोवर्द्धननाथ जी छीके के नीचे ऊषल धरे ।। ताके ऊपर श्राप चढे ।। तहां कुभनदास ठाढे रहे ।। तहां श्री गोवर्द्धननाथ जी श्राप श्रीहस्त में एक दही की मथांनी लीनी ।। श्रोर एक श्री हस्त में माषन लीनो ।। तहां श्री गोवर्द्धननाथ जी को पीतांवर कटि सो खुलि गयो ।। सो भूमि में गिरन लाग्यो ।। तब ताही समें श्री गोवर्द्धननाथ जी श्राप तत्काल दोय भुजा नीचें प्रगट करि पीतांबर को बाधे श्रोर दोय भुजामें माषन वही लीयें रहें ।। सो वासमें चत्रभुज स्वरूप को कुंभनदास को दर्सन भयों ।। सो कुंभनदास श्रपने मन में बोहोंत श्रानंद पाये ।।

:o: :o: :o:

ताहि समें कुंभनदासजी को स्त्री कें पुत्र श्रोरहूं भयो ।। तब कुंभनदास जी नें सुन्यों जो लरिका भयो ।। तब कुंभनदास जी नें कह्यो ।। जो श्राज मोकों रसात्मक चत्रभुज स्वरूप को दर्सन भयो हें ।। ताते या लरिका को नाम चत्रभुजदास हे ।।

श्रंत—तब कृष्णदास को दिव्य सरीर भयो ।। श्री नाथ जी की लीला में प्राप्त भयो ।। श्रोर श्री गुसांई जी नें कहो ।। जो कृष्णदास ने तीन वस्तु श्राछी करी ।। एक तो श्रीनाथ जी कों श्रधिकार कीयों ।। जो श्रद्भुतकीयों ।। सो फेरि कोऊ दूसरो ऐसो न करेगो ।। श्रोर कीर्तन कीये सो श्रद्भुत कीये ।। श्रोर तीसरें श्री श्राचार्य जी महापभून के सेवक होय ।। सेवा हू एसी कीनी ।। जो दूसरों न करेंगो ।। ताते कृष्णदास श्री श्राचार्य जी महाप्रभून के एसे कृपापात्र भगवदीय हें ।। ताते इनकी वार्ता कों पार नाही ।। इनकी वार्ता श्रनिर्वचनीय हें ।। ताते इनकी वार्ता कहा तांई लिखीयें ।। वार्ता नवम ।। ६ ।।

इति श्री श्राचार्य जी महाप्रभून के श्रष्ट काव्य के तिनके पद गाईयत हें तिनकी वार्ता संपूर्णम् ।। श्री ।। श्री ।।

विषय—अष्टछाप के कवि चत्रभुजदास, नददास, छीतस्वामी, गोविदद स्वामी, सूरदास जी,, परमानददास जी, कुभनदास जी और कृष्णदास जी की वार्ता वर्णन की गई है। इनके अतिरिक्त कान्हबाई (गोविद स्वामी की बडी बहिन) और सूवा (तोता जो महाप्रभु वल्लभाचार्य जी का सेवक था) की भी वार्ता कही गई हे।

उपर्युक्त अष्टछाप के कवियो मे प्रथम बार श्री गोसाई जी के सेवक रहे और शेष चार महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य के शिष्य रहे।

संख्या ७७. रामचद्राभरण, रचयिता—गोप कवि (ओड़छा), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६।।। × ४।।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० कपिलदेवप्रसाद जी, ग्राम—विश्रापार, डाक—खलीलाबाद, जिला—बस्ती।

आदि—श्री सीतापतये नमः। अथ श्री रामचंद्राभरण लिख्यते

।। सोरठा ।।

गुरु गणपति मतिदानि आनि बसो मो मन सदा।
अंकुश पुस्तक पाणि भाल चंद्र जत मज बदन।१

दोहा

लछिमन तें दीक्षित प्रगट नंदनाथ अवतार।
रामकृष्ण तिनको तनय गोकुलस्थ सिरदार।२
तिनके सुद (सुत) बलभद्र जू जप तप यज्ञ सुभाइ।
वल्लभकुल प्रभु जगत गुरु पूजे जिनके पाव।३
कचन पचहंडिया दई अरु लदाव को ठाम।
भट्ट निमनि सबतें सरस् महापात्र नव नाम।४
तिनके सुत यदुनाथ क पंडित परम प्रवीन।
रास विलास प्रकास कर सदा भागवत लीन।५
तिनके प्रगटे तीन सुत जेठे केशवराइ।
मझिले सुत कबि गोप जू बालकृष्ण लघु भाइ।६
नगर ओड़छे आइकें पृथ्वी सिंह नृप पास।
बठि यक्ष (यज्ञ) साला सरस कीन्हो ग्रंथ प्रकास।७
भुक्ति मुक्ति जातें बनें उक्ति युक्ति जश ओप।
रामचंद्र आभरण कौं वरनि कहै "कविगोप"।८

अथालंकार लक्षणम्

दोहा

भाव भेद गुरि रूपतें प्रगट होत है आनि।
प्रथम कहत उपमेय कों बहुरि कहत उपमानि।९

अंत— सुद्धापन्हुति लक्षणम्

जह निषेध उपमेय करि आरोपित उपमान।
सुद्धापन्हुति कहत सो गो (प) सुकवि बुधिमान।४२

यथा

भारी भुजा न हौ हिये निरषत नैंन सिराहिं।
राम न होये काम तव तिहि की सावा आहिं।४३

हेतु अपन्हुति लक्षणम्

गोप कहैं जह जुक्ति सो वस्तु दुरावे कोइ।
हेतु कहै तिहि संगही हेतु अपन्हुति सोइ।४४

यथा.........अपूर्ण—

विषय—अलकार (लक्षण ग्रंथ)।

संख्या ७८. रामरसिक रागमाला, रचयिता—गोपाल या दास गोपाल, कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—$४\frac{४}{१०}$ × $४\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री युत जगदीशनारायण दीक्षित, ग्राम—चिलौला, डाकघर—ब्रहाई, जिला,—रायबरेली।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथरामरसिक रागमाला लिषते ॥
॥ राग स्यामकल्यान ॥
बुधि सिधि तादार गनपति ॥ टेक ॥
चारिभुजा सिर छत्र विराजे सुंड दंड आकार ॥ १ ॥
जो मागे सोई देत दयानिधि पूरन भरत भंडार । २ ॥
चारि पदारथ करतल जाके भगति मुकति सुषसार । ३ ॥
दास गोपाल प्रभू यह वर मागे तुम सबके करतार ॥ ४ ॥
येरी पीया प्यारी पीया को मनाई लेरी ।
चोवा चंदन और अर(गजा) गुलाब लगाई लेरी ॥ २ ॥
उरझि रहौ मोतीन के बेसरि चित सों तू सुरझाई लेरी ॥ ३ ॥
दास गोपाल कों रावरों भरोसो हित सों तू अपनाई लेरी ॥ ४ ॥
येरी लषि लेरी मोहन आमदा ॥ टेक ॥
मोर मुकुट पीतांवर सोहै मुरली मधुर वजामदा ॥ १ ॥
स्याम सरूप सरोहरु लोचन केसरि तिलक सुहामदा ॥ २ ॥
बाजूबंद कर कंकन राजै बेजंती मन भामदा ॥ ३ ॥
सुंदर वदन पर रज लिपटानी गऊअनि पीछैं धामदा ॥ ४ ॥
लें अचरा झारें नंदरानी पुनि पुनि प्रभूहि निहारदा ॥ ५ ॥
ग्वाल वाल संग षेल रचो है जमुना तीर सुहामदा ॥ ६ ॥
पैठि पताल काली नाग नाथे फन पर निरत करामदा ॥ ७ ॥
दास गोपाल को सरना दीजें निसदिन तब गुन गामदा ॥ ८ ॥
अंत—सीया राघो जी षेलत होरी ॥ टेक ॥
स्यामसुंदर रघुवर ईत राजे ईत मिथुलेस किसोरी ।
प्रेम प्रीति को रं(ग)वनो हे तन मन केसरि घोरी ।
चलो जहां मचि रहि होरी ॥ १ ॥
रंगभरो रघुवर इत ठाडो संग सषान की जोरी ।
सीता जी साथ लई सब सषीया वलभा ऊर मिला गोरी ।
तहां यह षेल मचोरी ॥ २ ॥
रंगभरो केसरिया जमाऊ परपति पिछोरी ।
नष सिष ते आभूषन पहिरे ऊपरि चूनरि कारी ।
मनहु रस रंग मे बोरी ॥ ३ ॥
यह छवि देषि लालप्यारी की मुनि मन मोहि रहो री ।
दासगोपाल निरषि या छबि को सरने आनि परो री ।
लगो चित चरन निको री ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
अब कीजें कवन सो प्रीति गोपी वावरी ॥ टेक ॥
प्रीति लगाई चले कुंजनि मे छोडि चलोरी वीर ।
हाल विहाल देषि राधा को पूछत हे सगरी । १ ॥
जब बोली वृषभान नंदनी धीरज मन मे धरी ।
नंदनदन नेननि भरि देषो मोको समुझि परी ॥ २ ॥
कुंज वोही जमुना वोही हे वोही पुलिन के बीच ।
षोजत षोजत सषी सयानी अति सो विहाल भई री ॥ ३ ॥
निकसि कुंज सो मोहन आये सषीयनि द्रष्टि परी ।
दास गोपाल प्रभू तुमरी गति यह काहु न जानि परी ॥ ४ ॥
विषय—राम कृष्ण की शृंगारमय क्रीडाओं का वर्णन ।

संख्या ७९. सबदी, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—११ × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—५०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भैया हनुमत प्रसाद सिंह जी, रियासत अठदमा (बस्ती)।

श्री नाथय नमः अथ श्री गोरखनाथ कृत लिष्यते

।। प्रथम सव्दी ।।

बस्ती न सुंन्य सुन्य बस्ती अगम अगोचर अैसा ।
गगन सेषर में बालक बोलै ताको नाम धरोगे कैसा ।।१
अदेष देषि वा देषि विचारि वा अदिष्टि राषि वांचिवा ।
पाताल की गंगा ब्रहमंड चढ़ाई नार तहां तहां विमलविमल जल पीया ।२
इहाही आछे इहाही अलोय इहाही रचिले तीनि त्रिलोक ।
आछे सगे रहे जूवा। ता कारण अनंतसिद्ध जोगेस्वर हूआ ।३
वेद कितेवण खाणी न वाणी सुभटा की तलि आणी ।
गगन सिषर चढ़ि सव्द प्रकास्या तहं वुझौ अलख विनाणी ।४
अलख विनाणी दुइ दीप परचिले तीनि भवण यक जोती ।
ताहि विचारत त्रिभुवण सूझै चुणिले माणिक मोती ।५
वेदेन सास्त्रेण कुतुवेण पुराणे लिषा न जाई ।
ते पद जाणत विरला जोगी और सब धंधे लाई ।६
हंसिवा षेलिवा रहिवा रंग काम क्रोध ना करवा संग ।
हंसिवा षेलिवा गाइवा गीत दिढ करि राषिवा आपुणाचीत ।७
हंसिया षेलिया धरिया ध्यान अहिनिसि कथिवा ब्रह्मज्ञान ।
हंसै न षेलै न करै मन भंग ते निश्चल रहै सिध के संग ।८

अंत—जे धानी बानी को विचारै ते निराकार बोलिये ।
तूमे ऊँकार मध्ये जोति जाणिये ।
उरम धूरम जोति ज्वाला ।
भेदौ रवि की चारिउ कला ।
मन करि हरनी विमल जल पीवै ।
द्वै पष चीन्है तो सोरह कला जीवै ।।
बारह कला सूरज सोरह कला चंद ।
गुरु जिसको लषावै नही चेला तिसका धंध ।

बारह कला सूरज की ताको गुण व्यापै घट भीतर ते कौण कौण चिंता, तरंग, दंभ, माया, परिग्रह, परपंच, हेतु, कुबुद्धि, काम, क्रोध, लोभ, द्वेष सोलहकला चंद्रमा की ताके गुण घट भीतर ते कौण कौण—अमृत, साति, निर्विति, क्षमा, निर्मल, निश्चल, ज्ञान, स्वरूप, पद, निर्वाण, निर्विषै, निरास, निर्लोभ, अचित, निर्माह, नि.प्रपंच, आहार, निद्रा, मैथुन और बाय यह चारि कला सूरज कै साधै तो सोलहकला चंद्रमा की पावै ।

इति श्री गोरखनाथ कृत 'रोमावली' ग्रंथ सपूरण श्री गुरु मछंदरनाथ के चंदारविंद नमस्ते नमस्कारं ।। शुभ संवत १९२६ वैशाख कृष्ण ।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ २५ पत्रों में पूर्ण है। जिसमें गोरखनाथ जी की शब्दी, शब्द, महादेव गोरख गोष्ठी ग्रंथ लै मात्रा तथा रोमावली ग्रंथ युक्त है।

संख्या ८०. कवित्त, रचयिता—गोविंद कवि, पत्र—१ खर्रा, आकार—१५ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति खर्रा)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवमंगलप्रसाद जी, ग्राम—भकरासी, डाक—मुंशीगंज, जिला—रायबरेली।

आदि—

वेर वेर कहौं जो कुवेर तो न वनि आवै आपनो षजाने देत वेऊ ललचात हैं ।
कहौं जो सुमेरु तो सुमेरु के सकति कहा काम तरु काठ धाले मन मे सकात हैं ।
आपने हिए ने विचारि देष्यो कायमषा समता तिहारी कौन कोऊ ठहरात हैं ।
केतिके कवित्त हम झूठे करे रावरे के आगे के पढ़े ते सबै साँचे ह्वैह्वै जात हैं ॥ १ ॥
ऐसो अद्भुत हम देष्यो है अमीर यह याको समताकौं कोऊ वीर न लहतु है ।
कैसें यासो कोऊ सेग करि सकै अकस कै सूवा मनसूवा कै कै पगनि गहतु है ।
महाबली महाबाहु महा मरदानो यहै गुण का दरयाऊ कवि गोविंद कहतु है ।
वंगस को नंद ऐसो साहसी है कायमषा दीवो दिन राति याके दिल में रहतु है ॥ २ ॥
डगमग्यो धराधर धसिक्यो पताल व्याल डमाडोल दीपयतु बलिहू के घर मे ।
खाने भए पाने भए दुग्रन देवाने भए तजि अभिमाने भरदाने महाउर मे ।
यह सुनित्रासतो उदास भयो लकपति, तागति न रही कछू नरपति नर मे ।
गोविंद सुकवि कहैं वगस को कायमषा नेकहूँ तमकि तेग गहति जो कर मे ॥ ३ ॥
विद्या को विलासु भयो नीति को निवासु भयो पुण्य को पकाशु भयो सुदर सुजान को ।
धन्य मात तात भयो यशु अवदात भयो पूरण प्रताप भयो तेग वलिदान को ।
भुव को सुहगा भयो देस दस रागु भयो दुहुन को भाग भयो हिंदु मुसलमान को ।
शत्रु हिएँ सालु भयो भिक्षुक निहाल भयो कायमषा सूबा भयो है जहान को ॥ ४ ॥

अंत—

याके द्वार आवै सो तो विमुष न जान पावै याही भाँति नूपो एँहि क्षिति को सवावु है ।
याको अद्भुत रीति कहो न परत मोपै शत्रुन को कुल गोत कियो गरकावु है ।
बड़े बड़े डालन के पीलन दै राजी करै जैव को न देत काहू कबहूँ जवावु है ।
एक जाहु कोउ करि सकै न वषानि सव गुनन की षानि यह कायमषा नवाबु है ॥ ५ ॥

—प्राप्त अंश की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—किसी कायम खां का यश वर्णन किया गया है ।

संख्या ८१. वंशविभूषण, रचयिता—गोविंद कवि, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप)—१३८, अपूर्ण (खंडित)—रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० शिवकुमार जी द्विवेदी, ग्राम, डाकघर—अनगढ़ रायासन, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—

गौरि नंदन मगल सदन कृपा सिंधु गणनाथ ।
करहु कृपा शंकर सुअन, करिये ग्रंथ सनाथ ॥१
कुंडली
गुन नायक जाको तनय जग मगलमय रूप ।
तू असि चाहे तो करै रकहु ते सुर भूप ॥
रकहु ते सुरभूप भूप कर रक समाना ।
त्वहि सम नहि तिहुलोक और मे काहुहि जाना ॥
करहु अरज करजोरि चूक कछु लायहु मन ना ।
करहु कृपा मोहि दहु ग्रंथ करिवे की गनना ॥२
नाम पढेरी जासु को नहि रजगत पवित्र ।
कासीराम नरेश तंहि वशत सहित निज मित्र ।३
धरम धुरधर जग विदित तासु वंस विस्तार ।
श्री 'गोविंद कवि' हरषि हिय वरनत विविध प्रकार ।४
९ ६ ८ १
संवत नव रस वसु मही माघ मास गुरुवार ।
'बंश बिभूषन' नाम यह लियो बंस अवतार ।५

ब्रह्मा के नंदन भयो चित्रगुप्त यह नाम ।
परम सुंदरी शील भए भई तासु द्वैबाम ।६
जेठी घरनी के भए भटनागर बलवान ।
माथुर श्रीवास्तवव्य पुनि सकशेना गुनवान ।७

घनाक्षरी

छोटी घरनी के भए जेठे है सुरछिन ग्रोहू जो ग्रंवष्ट त्यौ सुगौर तीजौ जानिए ।
करन समेत वाल्मीकि ए प्रसिद्ध जग तैसे ऐठान निगुम आविक ए मानिए ।
तेज के प्रपुंज दयावंत बलवंत सबै भारी जसवंत शीलवंतन में ठानिए ।
साही भाति अतिही उवारे के विचार चित्रगुप्त महाराज के सुपुत्र ए बखानिए ।

अंत—

जो है अति वलवंत दानी ज्ञानी शीलनिधि
आवत है जाके द्वार जाचक अनेक ते यै
पावत है संपति जो जोके मन भायो है ।
ऐसौ है प्रसिद्ध महीमंडल मे जाको जसु
जाइके जनिन देश दर्शन में गायो है ।
लाज को जहाज शिरताज है नरेशन को
केते रक दान दै कुवेर लो बढ़ायो है ।
आठो जाम मांगत के पूरिबे को मन काम
मेरे जान कासीराम काम तरु आयो है ।
सोहत प्रचड भुजदड है अखड जाके
तेज मार्त्तंड कंशो फलो देश देश है ।
शील को समुद्र ओ प्रसिद्ध महि मडल मे
देषि द्वरिहीते जाहिर मति नई ही है ।
अस अवतार नरनाह कासीराम
वस अवतस वृजपाल ज्यो रमेश है ।
मोज में नरेश तेजज्ञान में दिनेश
मान मे सुरेश औ दान में महेश है ।

विषय—काशीराम नरेश के वश का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत नव रस वसु मही माघ मास गुरुवार ।
वंस विभूषन नाम यह लियो वंस अवतार ।

संख्या ८२. महाभारत (विराट पर्व), रचयिता—गोविंद कवि द्विज, कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—७॥ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१२१८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० सत्यनारायण उपाध्याय, ग्राम—नेउढिया, डाक—सग्रामगढ, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—

.... चालिये पुरी विराट की तवहीं ।
अर्जुन भीम कहेउ मृदुवानी । चलिये नृपति भली मति ठानी ॥
पूछत का तु अहौ गोसाई । हम सेवक हन चारिउ भाई ।

दोहा

चारिउ भाई कहेउ तब चलिये वेगि नरेस ।
वारह मास बिताइये जाइ विराट के देस ।४

चौपाई

सुमिर केसव हिया चौभाई । सहित द्रोपदी मन हरखाई ।
वासव के सभ रूप दुराये । आपहि के बस सोक वढ़ाये ।
पूछत मग लोगन्ह कह बाता । कह बिराट पुर थाकेउ गाता ।
थकी द्रोपदी ओहत भारी । तवही भीम कथा अनुसारी ।
कहै द्रौपदी नगरी काहां । विश्रामहि हम कीजे ताहां ।
भीम कहा तवही मृदुबानी । निकट अहै तिनकी रजधानी ।
अर्जुन कहेउ द्रौपदिहि बाता । वेगे चलहु नगर नियराता ।
वेह तहौ जह वृथा गभीरा । तहा नगर है धरु मन धीरा ।

दोहा

सुनि द्रोपदी आगे चली श्रमते विकल सरीर ।
कथा कहानी कहत तव चले जात मति धीर ।
:o: :o: :o:
पांडव रहेउ विराट पुर नाम रूप कहं गोई ।
कवि गोविंद द्विज भाषेउ हरि इक्षा स्वं होई ।

इति श्री महाभारते विराट पर्वणियां जे विराटपुर प्रवेसनो नाम द्वितीयमोध्याय २ ॥

अंत— दोहा

प्रगट भये इमि पांडवा तेरह वर्ष विताई ।
नृपति विराटहि सुष दियो कवि गोविंद कऊ गाई ।

इति श्री महाभारते विराट पर्वणियां पाडव प्रगट वर्णनो नाम त्रयोदशमोध्याय १३ ॥
:o: :o: :o:

चढ़े सुषासन रिषि समुदाई । चले युधिष्ठिर संष वजाई ।
विप्रन्ह सकल वेद उच्चरे । वदीवान विविध कन कारे ।
येहि विधि राज दुवारहि आये । दूनौ दिसि आगवन सिधाये ।
—अपूर्ण

विषय—महाभारत कथा (विराट पर्व) वर्णन ।

संख्या ८३. क का वत्तीसी, रचयिता—गोविददास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७ × ४॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री राम अनुजय नमः ॥

क का कर रण गुरु कह बुझी पै भई ।
जम की भव सकल मिटी जाइ ।
करान कवन जीव वृथा पर्व ।
फीरी फीरी फीरी चौरासी मह अर्व ॥ १ ॥

स्वरि स्वय रकहि विजे स्वामी । त्रिभुवन तीन काल गति गामी ।
सदा चिरंजिय रहजी भाइ । सो माया वस वहु दुख पाइ ।
गरी न वाकी कर्म गरुवाई । ताते यह जीय भुल्यो भाई ।
वेद शास्त्र वहुज्ञान वतायो । सो यह मुरख कवहु न धायो ।
घसे न वाकी कर्म कसोटी । विखें आस तें भई अति मोटी ।
धरौ नाथ सो कहहु उपाई । मैं सेवक तुम जन सुखदाई ॥
नामहि सब सास्त्रनि को सारा । ता सुध सेवहु पाप पहारा ।
एक वूंद अग्निकि पारें । तुल सुमेरु कोटिन्ह जारो ।
चात्रिक जेव एक रटना लावै । रसना नाम नामी को धावै ।

अंत—

सास सास सोहं इति भाखो । ओंकार हृदय धरि राखो ।
बंकनाल को गहहु समुला । तहा चढि देखो अद्भुत फुला ।
फुल एक तहा सहस्र वनाको । सिघासन तहा अमल रतनाको ।
बहु प्रकास सो वरनि न जाई । सुख आसीन तहा रघुराई ।
स्याम सरूप नील इंवी ओभा । वालक एक महा सुचि सोभा ।
सो सिसु राम सकल जाग ईसा । सुरनर मुनि सब नावहि सीसा ।
हरिहर आज ताको नित धावे । वेद पुरान तासु गुन गावें ।
सोई सारूप प्रकृति कर पारी । जोगी जन मन देषु वीचारी ।
क्षुद्र जीव मैं मुढ़ गवारा । वरनउ किमि जस अगम अपारा ।
श्रीगुर कहो हृदय मोहु अई । गोविंदास वतीसा गाई ।

इति श्री गोविंदा कृता क का वतिसी संपुर्ण सुभ भावंतु ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ८४. गोविंदस्वामी के कीर्तन या पद, रचयिता—गोविंद स्वामी (अष्टछाप के कवि), (स्थान—आतरी, महा वन और गाकुल), कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—७८ $\frac{3}{8}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५ परिमाण (अनुष्टुप)—८४०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० दीनदयालु जी गुप्त, अध्यक्ष हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः अथ गोविंद स्वामी के कीर्तन लिख्यते ॥

राग विभास

जागो कृष्ण जसोदा जू बोले इह ओसर कोऊ सोवैं हो ।
गावत गुन गोपाल ग्वालिनी हरषित दह्यो विलोवें हो ।१॥
गोदोहन धुनि पूरि रह्यो व्रज गोपी दीप सजोवें हो ।
सुरभी हूक बछरुवा जागे अनमिख मारग जोवे हो ।२॥
वेन मधुर धुनि महूवरि बाजे गोप गहे कर सेली हो ।
अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हें तिहारी गाय अकेली हो ।३॥
जागे कृष्ण जगत को जीवन अरु न नेंन मुख सोहें हो ।
गोविंद प्रभू दुहत धेनि धोरी व्रज गोप बधू मोहे हो ॥४॥

राग विभास

भवन मोहन पीय भयो न भोर ।
प्राची दिस नही अरुन देषियत ओर सुनीयत नहो खगवन रोर ॥१॥
ग्रहित कंठ परस्पर दपति पीय विश्लेष कातार अति जोर ।
गोविंद प्रभू पीय जानि सिरोमनि प्यारी के वचन लियो चितचोर ॥२॥

अंत—

राग मलार

तेंसोही वृंदावन तेसीय हरित भुमि तेसीयें वीर वधू चलत सुहाई माई ।
तसे ही कोकिला कलि कुहूं कुहूं कूजत तेंसेही नाचत मोर निरखत नेंना सुखवाई ॥१॥
तेंसीये नवरंग नवरंग वनी जोरी तेंसेही गावत राग मलार तान मनभाई ।
गोविंद प्रभू सुरंग हिडोरे झूल झूलें आछे रंग भरे चहुं दिसि न घटा जुरि आई ॥२॥२४६॥

:o: :o: :o:

झूलन आई. ब्रज नारि गिरिधरन लाल जू के सुरंग हिडोरना ।
सुभग कंचन तन पहरे कसूंभी सारी गावत परस्पर हसि मृदु बोलना ॥१॥

—अपूर्ण

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति और व्रजलीला वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। केवल २४७ पद हैं। २४८वां पद मलार का अपूर्ण है। रचनाकाल और लिपिकाल दिए नही।

संख्या ८५क. कहरानामा, रचयिता—गोसाईंदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—९८/१० × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—९३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरणदास जी, ग्राम—कमोली, डाक—रानी कटरा, जिला—बाराबंकी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ लिषि कहरानामा श्री गोसांईदास जीउ कृत ॥

॥ दोहा ॥

दास कछु जानै नहीं संतहु करहु प्रमान।
जो कछु किये सो गुर किये जन के कर कछु नाहि ॥
कीरति भाखेउ नाम रस बैठि दास मनमाहि ॥ १ ॥
जग जीवन प्रभु सर्व मैं और दोसरो नाहि।
गुर की महिमा अमित है जो चाहै सो होहि ॥ २ ॥
:o: :o: :o:

अथ कहरा नामा

सतगुरु साहेब ताहि मनावौं देहु ग्यान गुन गावौं रे।
करहु कटाक्ष कृपाल कृपा करि चरन कंमल चित्त लावौं रे ॥ १ ॥
दाया करहु दयाल अँचल मोहि अनत न कतहु बहावहु रे।
वार वार करजोरि कहत हौं मुरतिम सुरति मिलावहु रे ॥ २ ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

न्यारे निमिष न कीजिये दीजिये दरसन दान।
गोसाँई दास विनती करैं प्रभु राषौ जन को मान ॥ १ ॥

इति श्री प्रथम कहरानामा सपूरन सुभमस्तु ॥ राम राम राम ॥

अंत—**श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कहरानामा दूसर साहेब गोसाँईदास कृत लिष्यते ॥**

सरब देव दीन दयाल अविचल गुर पूजन सबहिन कियो।
गोसांईदास भजि नाम निसु दिन चितु चरनन्ह मे दियो।

सतगुर समरस्थ सांई जगजीव (न) दास गुर ॥ पुरनवासी नछत्र पुष्य मकर मास का रामचंद्र भरत जी लक्षिमी सिव सकती ॥

॥ कहरानामा ॥

कहरा कीरति नाम कहहु गुर सरन दास को आनहु हो।
मेटि हराम राषु मोहि हाजिर नाजिर नाम बषानहु हो ॥ १ ॥
करहु कटाक्ष कृपाल कृपा करि अवरदेव नहि जानौ हो।
ग्रह वस्ती औ जंगल माहो सर्व मई गुर तुमही हो ॥ २ ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

विस्वास सो गावै लावै मन मे नेह।
सो तनमन सुष वेलसै पावै अविचल गेह ॥ १ ॥
सिद्धिवाकि साँई करैं टरै नही विस्वास।
गोसाईदास के सतगुर सांइ समर्थ करहु मोहिदास ॥ २ ॥

इति श्री कहरानामा दूसरा साहेब गोसांईदास कृत संपूरन सुभमस्तु ॥ जेठ मासे सुक्ल पक्षे तिथौ ॥ १५ ॥ पूरनमासी श्री संवत ॥१९६८॥ दोहा ॥ रमई नाम सुग्राम है धरम धाम के पास। लेषक राम अधीन कवि श्री सत्यनाम के आस ॥ १ ॥ राम राम राम राम।

विषय—गुरु भक्ति और ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना निम्नलिखित रचनाओं के साथ एक हस्तलेख मे है—

१ परम ग्रंथ—स्वा० जगजीवनदास जी।
२ महा प्रलै कहरानामा ,, ।
३. लीला ,, ।
४ कहरानामा ,, ।
५ अस्तुति महावीर जी ,, ।
६ गुरु उपदेश गुरु वदना—स्वा० देवीदास जी।
७. भक्ति बोध—बोधदास जी।
८ दोहा—गोसाईंदास जी (प्रस्तुत रचयिता)।
९ रामगीता—नवलदास जी।
१० अस्तुति श्री बजरग जी की—नवल दास जी।
११ तीरथ के पत्रा ×

संख्या ८५ख. दोहा, रचयिता—गोसाईंदास जी, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—९३/१० × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१६५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२२ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम–कमोली, डाक–रानी कटरा, जिला–बाराबकी।

आदि—श्री गणेसाय नमः ॥ लिष्यते दोहा साहेब गोसाइदास जीव के ॥

॥ दोहा ॥

साँचे समरथ साँवरे मोहि निजु नेकु निहारू।
भवसागर एह प्रबल है गहि पिय बाँह उबारू ॥ १ ॥
अमीरस प्याला दीजिए विषै किवारि उजारि।
चरन कवल की सरन लै हिय सो नही विसारि ॥ २ ॥
सब लायक तुम ए पिया याही अरज हमारि।
वार वार विनती करौं सूरति लेहु सभांरि ॥ ३ ॥
गोसाँईदास लघु दास है सरवस अयव नेवारि।
सदा सरवदा पास लै देहु अमीरस गारि ॥ ४ ॥

अंत—

सुमिरन जोग होइ दिढ ताही। सतगुर चरन सुरति रहै जाही ॥
सतगुर चरनन्ह सुरति समोई। सुमिरन जोगी भा दिढ सोई ॥
निरभे रहै भर्म नहि ताही। सुमिरन जोग सदाँ मन माँही ॥

॥ दोहा ॥

नारद जोगी बहुत है बहुत जोग विस्तार।
सुमिरन जोगी विरल कोउ नाम निहंग अपार।

—अपूर्ण

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या ८६. गुंजा कल्प रचयिता—गौरा (?) कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९ × ३। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१८ वि०, प्राप्तिस्थान—भिन्ना मिश्र, ग्राम व डाक–बेलहर, जिला–बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गुंजा कल्प लिष्येते ॥

गुंजा की गति कहत हौं कौतुक चरित अपार।
गौरा से शिव कहत हैं सब कल्पन्ह को सार।
मारन भारन वसि करन जग मोहन अस्थंभ।

उच्चाटन सिरसी वचन सिधि सबै दल थंभ ।
भूत प्रेत अरु डाकिनी जक्ष वीर बेताल ।
गुह्यक रूद्र पिशाचिनी कौतुक माया जाल ।
बहु चरित्र अगनित कहौ सकल सिद्धि की खानि ।
जो चाहै सोई करै गुंजा भेद गुरु ज्ञान ।
अब याको शाधन करै जथा जोग उपदेस ।
जो साधै वह सिद्धि है कछू न रहै कलेस ।
पुष्य होई आदित्य को तब लीजै यह मूल ।
सुक्रवार की लोहिणी ग्रहण होइ अनुकूल ।
कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जब होइ ।
चतुरदशी के पुनरवसू वा सतभीषा होइ ।
अर्द्ध निशा कारज करै मन कै संका खोय ।
धूप दीप दै आनिये धरै दूध में धोय ।
अंत—जौ मुरगा कै विष्टा सो अंजन आजे कोई ।
सप्त दिन आजै दृष्टि चौगुनी होई ।
जौ कस्तूरी सो आजिये प्राप्त समै लौ लाइ ।
जौ नर होय कुरंगी देषत बसौ होइ ।
जौ घसिये यह मूत्र सो शुक्ल रागिनी राति ।
तीर तुमक लागै नहीं जस वर्षे वहु मेह ।
गंगा जल सो आजिये घसि पिवै येह मूल ।
कहै गौरा यह सिद्धि मिटै देह को सूल ।

इति गुंज कल्प समाप्त शुभ संवत् १६१८

विषय—गुंजा कल्प वर्णन । मारण, मोहन , उच्चाटन आदि ।

संख्या ८७. पक्षी विलास, रचयिता—घासीराम, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—१२$\frac{3}{2}$ × ८$\frac{3}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—२५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१६८८ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण विहारी जी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गँधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

नागिनि सी लटै कहौ कसे बढै हाथ निज कैसे मुष चंद भरै भसम भरीन मे । अंजन कवित नैन करिये निरजन क्यौ वरिय अयान किमु कान मुदरीन मे । घासीराम सुकवि बसैये सेली कंठ किमु कंचन जडाउ जेब जडित तरीन मैं । सुलभ सलोने लक मूठीन समात ताहि कैसे को बसामै हम आजु गुदरीन मे ॥ १ ॥

कचन की छरी सी वियोग विष भरी हम यक बेरि बहुरि गोविंद फेरि दिषते । फिरि प्रभु चहँते तौ विलगु न औते वह चेरी की सिषामनि करेरी वहु लिषते । घासीराम सुकवि बनाइ समुझाइ हरि कपट हथ्यौटी की पठवनि के तिषते । सजन हमारे उधौ ऐसे तौ न हूते निरमोही भये जैसे वा षवासिनि के सिषने ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

दाडिम न होइ उडि जाउ वेगि कहो मानु यहि मे बनाइ कछु भूषहू न छूटैगी । फेरि पछितहै पैहै पक्षिन मे बंठन न काहे को गमैहै मात पामर न जूटैगी । घासीराम सुकवि अधीर कीर धीर धरु फेरि यह तिसना बनाइ करि छूटैगी । फेरि फेरि काहे को बधावत लगाइ लोभ नारिअर भीतर तिहारी चोंच टूटैगी ॥३२॥

अंत—विधि प्रतिकूल भये गुनन गरेरे कहा काम बनिजैहै जो जुगुति उपजावै रे । हेरत सुमेरु त्यों कलंक ठहराइ उहां केतिक विसाति जो न तरन जरावै रे । 'घासीराम' सुकवि

विचारि देखु हिरदे मे राज को प्रसंग निन रोय कै न पावै रे । चौंक जनि चकवा मनोरथ बढ़ाइ निशि चकई मिलावै जो विरचि उलटाव रे ।।७१।। श्री राम

विषय—गोपी ऊधो सवाद ... चम्पक, मदन, बबर, मेघ और कोकिल, मराल, चातक, कीर आदि पक्षियों के सबंध मे ... ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के साथ निम्नलिखित रचनाएँ एक ही हस्तलेख मे है :—

१ काव्य सरोज—श्रीपति ।
२ शक्ति चिंतामणि—भानन ।
३ रस रहस्य—कुलपति ।
४. काव्याभरण—चदन कवि ।

संख्या ८८क. कवित्त रचना—बाबा घिस्यावनदास, कागज—आधुनिक, पत्र—२१, आकार—७½ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—३३१, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण) पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महादेवप्रसाद जी, ग्राम—जैतूपुर, पो०—रायबरेली, जिला—रायबरेली

आदि—.. ....

.........रि छार भरि दीन्हे त्रिणावत आइ सो ।
लैगा कान्ह का उठाइ गगन चलाले उडाइ ... मही महि जाइ गिरा भहराइ सो ।
बहुरि "घिस्यावनदास" हरि वाको गति दीन्हे जसोदा कारन कीन्हे रोट हाइ हाइ सो ।।६६३।।

।। सवैया ।।

गोप उठाइ लै आये श्री कृष्णहि कृष्ण कीन्हेउ आजु विधाता ।
लैगा उठाइ त्रिणावर्त स्यामहि नयन निहारत स्यामल गाता ।
आयुतु धेनु दिये नन विप्रन जन्म नया जनु अब माता ।
'दास घिस्यावन' आसिष दै बाभन भे विदा जुग जीवै ताता ।।६६४।।

।। घनाक्षरी ।।

भोर सखा जुरे आइ स्यामहि लीन्हे जगाइ रस हरष केमार गोकुला की खोरी है । गये सबही भुवाल गोपन के घर जाइ माखन दीन्हे खवाइ कीन्हे ऐसी चोरी है । छीका ते उतारे छाक छाके बोलहि न वाक दिए पै पाक फोरि डारे वे कमोरी है । बहुरि "घिस्यावनदास" ग्वालिनी चली रिसाइ बोरहन लाइ कहे बाट पारे मोरी है ।। ६६५ ।।

अंत— ।। सवैया ।।

पोचहु के मन सोच भई बछरा अरु बालक मैं हरि लाये ।
आदि निरजन देव विरचि कीय मनसा पछिताये ।
वर्ष बीते बछरा वै बालक दिये आइ स्यामहि परे फिरि पाए ।
दास घिस्यावन जोरि कै हाथ कीये विनती दीन बैन सुनाये ।।
—खडित

विषय—श्रीकृष्ण लीला और भक्ति वर्णन ।

संख्या ८८ख. रामचरित नाम ... रचयिता—घिस्यावन (घिस्यावन) दास बाबा, निवासस्थान—जमिली ... (जि० रायबरेली), कागज—आधुनिक (पीला), पत्र—२५२, आकार—६¾ × ६⅞ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—४०६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९६८ के लगभग, प्राप्तिस्थान—महत श्री प्रेमदास जी बाबा, स्थान—घिस्यावनदास बाबा की कुटी, खिखरुआ (गगापुर), डाक—समरोता, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

सुमिर गणेश गौर वदि कै महेश पद राम नाम गढ सुमिरन ध्यान भरे है ।
साबर बनाए कलि कपट दहन हेत पोई भवसागरमा भक्ति सेतु करे है ।

उनही कृपाल अब मोपर दयाल सदा शंभु परताप हरिकथा अनुसरे है। गावत "घिस्यावनदास" राम कृष्ण कीरति को सांवरे गोरे किसोर मन मोर हरे है ॥ १ ॥

बंदौ दशरथ वारे राम श्री लषन प्यारे मुनि मष रखवारे अहिल्या उधारे है। शंभु धनु भंग करे पर्श जू को गर्व हरे जनक सुता को वरे अवध पधारे है। तपि वेष वनवासी चित्रकूट के बिलासी माया मृग हति रण रावण को मारे है। उनही घिस्यावनदास बृज अवतार लीन्हे मुरली बजाय प्रेम मोहनी को डारे है ॥ २ ॥

वेई मनमोहन दोहन किए धेनुन को वेई नद जसुदा के लाल जू कहाए है। वेई सब ग्वालन को माषन चाषन किए वेई कुंज कुंज टेरि वेनु को बजाए है। नाग नाथि लाए औ गोवर्द्धन उठाए थोई थोई बृजबालन को मडल नचाए है। उनही "घिस्यावन दास" निरतत थेई थेई उनही को ध्यान हरिभूषन बनाए है ॥ ३ ॥

बंदौ गुरु चरन सरोज रज शीश धरि उनही के नाम ध्यान हिए स्याम आए है। मोर को मुकुट दीन्हे केशरी तिलक कीन्हे लोचन कमल श्रम कुडल सोहाये है। अंगद वलय कर माधुरी अधरधर तिरछी नजरि सर मद मुसकाये है। पीत पट अभिरामपाद पद्म सुख धाम ध्यान मा "घिस्यावनदास" मन ललचाए है ॥ ४ ॥

अंत—

राम कहे रतनावलि के हित दुष्ट दिवानहि नाहर मारे।
राम कहे शिव पिल्लउभे वाइ जाहर दे सुत फेरि जियारे।
राम कहे ते नौ नारद ह मडलोक म तीनहु लोक मझारे।
दास घिस्यावन तूं भजु रामहि राम अनेकनहू षल तारे ॥१६॥
पढ़ै सुनै गुन गुनै मनहि मन रहहु मगन प्रेम रस छकि छाय कै।
हाट बाट घाट मध्य निकट मारग अरु वर षट दश कवित कहे जो नित गाइ कै।
ह्वै जावै निहाल छूटि जाहि सब जम गब दास्य नाम पावै भक्ति भाव लाय कै।
जाय के घिस्यावनदास कर रघुकुलनाम ह्वै के हरिदास हरिपद सुख पाय कै ॥१७॥
॥ इति ॥ श्री राम जी सहाय ॥
विषय—राम और कृष्ण का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल दिया नहीं। लिपिकाल भी नहीं लिखा है। परन्तु इसमें मुद्रणकाल सं० १९४८ का उल्लेख है।

संख्या ८८ग. रामरस, रचयिता—घिस्यावनदास (बाबा), निवासस्थान—जमिली, कागज—आधुनिक, पत्र—४, आकार—५ ¾ × ४ ½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत श्री प्रेमदास (बाबा), स्थान—नागापुर कुटी, डाक—ममराला, जिला—रायबरेली (उ० प्र०)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ रामरस।

॥ कवित्त ॥

बन्दो दशरथ वारे राम वो लक्षण प्यारे मुनिमष रखवारे अहिल्या को उधारे हैं। शंभु धनु भंग करे परशु जो को गर्व्व हरे जनक सुता को वरे अवध पधारे है। तप वेष वनवासी चित्रकूट के विलासी मायामृग हत रन रावन को मारे है। उन्हो घिस्यावनदास बृज अवतार लिन्हें मुरली बजाय प्रेम मोहनी को डारे है ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

राम कहे गनिकागत पाये हु राम कहे अजमील सुधारे।
राम कहे सेवरी भई पावन राम कहे गजराज उबारे।
राम कहे भरुही बचे चिगन राम ते अंगद पावन टारे।
दास घिस्यावन तूं भजु रामहि राम अनेकनहुं खल तारे ॥ २ ॥

राम कहे नरसिंह धरे तन राम कहे देव लोक नियारे ।
राम कहे ते सुरेस के कारण बावन ह्वै हरि भीख पुकारे ।
राम कहे हरि राम भये अवधेश नरेश के बालक बारे ।
दास घिस्यावन तू भजु रामहि राम अनेकन हूँ खल तारे ।। ३ ।।

अंत—

राम कहे रतनावति के हित दुर्ग दवानहि नाहर मारे ।
राम कहे शिल पिल्ला उर्भ बाई जाहर दे सुत फेरि जिया रे ।
राम कहे तेनी नारद मडली कहु तीनिहु लोक मंझारे ।
दास घिस्यावन तू भजु रामहि राम अनेकनहुँ खल तारे ।।१७।।

।। कवित्त ।।

पढ़ै सुनै गुन गुनै नहि मन न करि रहहि मन न प्रेम रस छक छाप कै । हाट बाट घाट मिटि जाहि अब चट घट दश कवित्त कहे जौ नित गाय कै । ह्वै जावै निहाल छुटि जाहि जग जाल सब दशरथ लाल पोषै भक्ति भाव लाय के । जाइ के घिस्यावनदास करैं बैकुंठ बास ह्वै हरिदास हरिपद सुख पाय कै ।।१८।। ।। इति ।।

विषय—राम की महिमा वर्णन ।

संख्या ८९. घोडा चोली गुटिका, रचयिता—घोडा चोली (?), कागज—देशी पत्र—४, आकार—११ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० आद्याशंकर जी त्रिपाठी, ग्राम—रुधवली, डाक—सरपाहा, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ घोडा चोली गुटका लिखिते ।।

रेडी के तेल मा देइ ता जुलाबु होई ।।१
इलाची मॉ देइ ता भूष बद ।।२
नीबी का रस मा देइ ता सर्प निरबिस होइ ।।३
अदरख समा देइ ता बीछी उतरि जाइ ।।४
खाली गोली षाइ बद षुसाव होइ ।।५
गोली षाली षाई पुष्ट बंद होइ ।।६
सभालू रस सो षाइ ता मुष दुरगध जाइ ।।७
छेरी के दूध मा षाय ता प्रमेह जाइ ।।

अंत—त्रिफुला तोला ३ त्रिकुटा तोला ३ घमिरा केर समाषल्ल करना प्रहरा १ गोली मूंग प्रमान लीजै छाह मा सुखाय अथ सोराषार का तेजाक लिष्यते ।। पानी मे देइ ता ताप जाय १ दिन भरे मा चारि बखत देना प्रहर प्रहर पर पानी मा षाइ ता शूल जाइ पानी मा देइ ता जीऊ उताख बंद होय ३।। पानी मा देइ ता अन्न हजम होइ ।। ४ ।।

विषय—वैद्यक ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । केवल चार पत्रे उपलब्ध हैं । रचयिता संभवत घोडाचोली ही है । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता ।

संख्या ९०. काव्याभरण, रचयिता—चंदन कवि, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—१२$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप)—३१९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४५ वि०, लिपिकाल—सं० १९४४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गंधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मंगलाचरण

।। दोहा ।।

महादेव देवी तनै गणनायक वरदानि ।
पब बंधन विधि जानिए चंदन सब निधि खानि ।। १ ।।

भ्रमरी मुखरी कृत सदा भ्रमरी कवरी भार ।
गौरी पद पंकज दुरित दूरी करन विचार ॥ २ ॥
:ङ: :०: :०:
नमस्कार गुरु देव को करि चंदन बहु बार ।
काव्याभरण कियो प्रगट भाषा कवि आधार ॥ ४ ॥
कवित्त शक्ति श्री राधिका कवित्त कृष्ण यक संग ।
सुवरन मय चदन करौ अलकार त्यहि अंग ॥ ५ ॥
संवत ठारह सै जहां पंतालीस विचार ।
चंद वार तिथि द्वैज शुदि मार्ग ग्रंथ विस्तार ॥ ६ ॥

॥ अथ उपमा अलंकार ॥

दोय पदार्थन की जहाँ शोभा लसत समान ।
उपमा तासौ कहत है पडित परम सुजान ॥ ७ ॥
महाराज यदुवंश मणि सुनौ कृष्ण सुरनाह ।
हंसीइव तव कीति की सुर गगा अवगाह ॥

अंत— अथ द्विविधि हेतु

कारन कारज सग जह वर्णन कहिये हेतु ।
मन क्षेद सो सुश्रवा चद उदै के हेतु ॥६५॥
दूजो कारन कारज ए दोऊ जह एकै ठहराय ।
जन सपत्ति विलास है तुव कटाक्ष यदुराय ॥६६॥

॥ इत्यलकार समाप्ति ॥

दोहा

अथ संस्कृत देखिमै समुझि अलकृत अर्थ ।
जथा तथा ही मैं कह्यौ जनिहै बुद्धि समर्थ ॥६७॥
अधर मधुरता कुच कठिन दृग तीछनता योग ।
कविता के परिपाक को जानत विरले लोग ॥१६८॥

इति श्री कवि चंदन विरचिते काव्याभरणे अलकार निरूपण समाप्तं शुभम्

॥ सज्ञ दोहा ॥

संवत शशि निधि वेद श्रुति माधव वदि ग्रह मद ।
निज कर युगुल किशोर लिखि यश श्रीहरि सुख कंद ॥ १ ॥

संवत् १९४४ वैशाख कृष्ण ९ शनौ श्री राधारमन की जं ॥

विषय—अलकार वर्णन ।

रचनाकाल

संवत ठारह सै जहां पैतालीस विचार ।
चंद वार तिथि द्वैज शुदि मार्ग ग्रंथ विस्तार ॥ ६ ॥

संख्या ९१क. प्रश्नोत्तर विदग्ध मुख मडन, रचयिता—चदनराम कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ प्रश्णोत्तर विदग्ध मुख मण्डन लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमै गनपति वन्दि पद टेक उमा पद माथ ।
श्री गुनविधि हरिहर सजन वन्दि अमर दिन नाथ ॥ १ ॥
प्रश्णोतरा विदग्ध मुषमंडन कियौ उचार ।
श्री गुर के परताप ते सर्व ज्ञान को सार ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

मातु पितादि पिता दुहिता सुत सोदर मोदर पोष विडम्बन ।
श्री गुरुदेव कृपा करिके भनि बूडत हौं भव सिंधु अलंबन ।
ताको उपाय कहा जन "चंद" सो मोहन जोहन साह विलम्बन ।
श्री गिरिजेस रमेस पदाम्वुज वोहित दीरघ है भय सम्बन ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

चंदन सो जो विचारि कहो अब सूर तें सूर महा अति को है ।
जो सरपंच जु पंच सरान सो वेधत नेकु व्यथा न छुयौ है ।
प्राज्ञ औ धीर महा अति को जो न नारि कटाक्षन तें मन मोहै ।
जाके विषै असधार तिन्है लखि पारसहि मोक्ष वडे मुष जोहै ॥१२॥

अंत--

कौन अनुक्षन चिंतन को नित सतन सतन जो यह गाई ।
सत्य सु सत्य सदा हरि एक मृथा भव रूप लखै सुसगाई ।
कौन सुकर्म कहौ कवि चंद मुरारि पदाम्वुज प्रीति दृढाई ।
केवल कौन कुवासन काज को या भवसागर के वस नाई ॥४६॥

॥ कुंडलिया ॥

विद्यापति सुक मुनि रचित सुखानी मे दोइ ।
प्रश्नोत्तर मणि मालिका ताको सारक होइ ।
ताको सारक होइ चन्द कवि रचि नर भाषा ।
विरद ए प्रश्नोत्तर विदग्ध मुष मंडन राषा ।
राषाभरि नृप अज्ञ ह्रिदय गृह कीच अविद्या ।
ताहि प्रछालन हेतु सलिल वर रचीय सुविद्या ॥४७॥

॥ दोहा ॥

कविवर श्री हरिकृष्ण सुत साहब राम कवीस ।
तत सुत चंदन राम यह ग्रंथ द्वितीय रचीस ॥४८॥
गिर ऋतु धारन वसुमती सम्वत माधव मास ।
शित तिथ प्रतिपद भृगु दिवस भयो ग्रंथ परकास ॥४६॥

श्री राम राम. . । इति श्री चन्दन राम विरचितायां प्रश्नोत्तर विदग्ध मुख मण्डण ग्रंथ संपूर्णम् शुभमस्तु १

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

संख्या ६१ख. जलहरण दण्डक, रचयिता—चंदनराम, कागज—देशी, पत्र—१२५, आकार—६$\frac{6}{10}$ × ८$\frac{4}{10}$ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप) —५०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ जलहरण दण्डक ॥

अमल अलख अग अछत जघन जग अजगवधरमपरम अगवर घर ।
अग वर रमण समन अघ अरचत अषत पतर धन रहत अधर तर ।
अनल ज्वलन धर जनक अनल भय असम नयन असमय जग छय कर ।
मगन मलय भव मनन श्रवन कर दरद न रहत कहत हर हर हर ॥ १ ॥
कमलज पद कर कमल लसत वर कदन मयन मद सह दन मत शर ।
खल गण खलन दलन मख दछ वर गरल अशन गण जनक गहन गर ।
घट घट रमत धराप जश रटत समन घटे पदत उठत अघ छय कर ।
मगन मलय भव मनन श्रवन कर दरद न रहत कहत हर हर हर ॥ २ ॥

अंत— :o: :o: :o:

अशरण शरण शरद शशधर शर वदन धवल बर शमन व्यशन हर ।
घर षग हर षट बदन प्रटन बव सकल सरल मन सरबग सहचर ।
हरष करण हर अमरष हर वर छमन छलन छल मष हर मष पर ।
मगण मलय भव भनन श्रवण कर दरद न रहत कहन हर हर हर ॥
इति श्री चंदन राम विरचितं अमात्रिक हर स्तुति संपूर्णम् ॥ श्री रामो विजयतेतराम ॥

विषय—शिवस्तुति ।

संख्या ६२. पिंगल (?), रचयिता—चतुर्भुज, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०$\frac{6}{10}$ X ४$\frac{6}{10}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—अकबरकालीन, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

गुण गणपति चिति चित अविगत अकह अपार ।
देहि वुद्धि प्रभु जगत गुरु करउँ छद विस्तार ॥ १ ॥
अकबर साहि जगतगुरु मानहु । इहहि बात मनहि अनुमानहु ॥
सरद सुधाकरि कीरति मानहु । निमि दिनु षिनु नाही सनमानहु ॥ २ ॥
अकबर साहि प्रवीण भुअ कह्यो कहहु सब छद ।
सुगम होहि महि मडलह पढतहि वढ़त अनद ॥ ३ ॥
चतुर "चतुर्भुज" सुनत यह कह्यो वुद्धि अनुमान ।
सुनहु साधु सब सुचित होइ करउ ग्रंथ सनमान ॥ ४ ॥
संभु भरत सं तव गरुड कश्प सेसु विचारि ।
षटु पिग ए जिदिअ भुअ कहौव तिन्हहि निहारि ॥ ५ ॥
पिछिमिति तरकेउ मत्त विनु ए तीनिउ लघु जानि ।
प्रगट ताहि बुध जन कहत औ.......... ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—पिंगल ।

सख्या ६३क. वृजचरित्र, रचयिता—चरनदास कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ X ४॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—५१, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० वच्चन गोस्वामी ग्राम—ताहिरपुर, डाक—सिकरारा जिला—जौनपुर ।

आदि—

......र हरि की विभो सात दीप नव षंडा ।
चरनदास कहै सुनि आंधरे किन राच्यौ ब्रह्मंड ।५३॥
भक्ति विना दीषौ नहीं इन नयनन हरि रूप ।
साधन कूं परगट भयो विना भक्ति हरि गुप ॥५४॥ चौ ॥ ३ ॥
साध संत की निन्द्या करिहैं भजन करें तासें बहु तरिहैं ।
करि अभिमान आप मं जरीहे गुर को कहौ नंक नही करिहै ॥
पथ षडे करी है छतीसा ॥ भरम पूजी तजीही हरि इसा ॥
डिभ झूठ की सेवा करीहै ॥ झूठे पथन मं जा रली हैं ॥
गउ ब्राह्मण मिठल होइ ॥ बाप पूत मै परीहै द्रोइ ॥
विद्या दान कपट ब्यौहारा ॥ राजा दुष्ट दुषी संसारा ॥
वेद पढ़ै करीहै अभीमाना ॥ हम पंडीत और सभ अज्ञाना ॥
पढ़ी पुरान भेद नही जानं ॥ साधन सो झगरौ बहु ठानं ॥५५॥

अंत—

.........(अपठनीय).........

उंही हाथ कूबरी को कूब काटी सीधो कीयो उंही हाथ मस्तक गज बंची मुठी मारी है ।।
उंही हाथ बांह चरनदास कहैं आप गही उंही हाथ जमुना मैं नाथे नाग कारी है ।।६५।।

इति श्री मथुरा मंडल परम पवीत्र सकल सीरोमनी धाम बृज चरीत्र बरनते श्री सुषदेव गोसाईं का गोलाम ।

इति श्री चरनदास जी कृत बृजचरीत्र संपुर्ण समाप्तं अमरलोक अषंड धाम बरनने दोहा :

विषय—बृज चरित्र वर्णन ।

संख्या ६३ख. ब्रह्मज्ञान, रचयिता—चरनदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१३ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३०७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० बद्रीप्रसाद द्विवेदी ग्राम—इटौंगा डाक—मानिकपुर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ ब्रह्म ज्ञान दशा

।। दोहा ।।

जंशे है शुषदेव जी जानत शब शंशार ।
भगवत मत परगट कियो जीव किये वहु पार ।१
तिन मोपै किरपा करी दियौ ज्ञान विज्ञान ।
शो शिष तुम सूं कहत हू छुटै शव अज्ञान ।२
शिष्य सुनो अव कहत हू परम पुरातन ज्ञान ।
निगुरो को नहि दीजे जाकै तप की हान ।।३

कुंडलिया

मोछ मुकुत तुम चहत हो तजो कामना काम ।
मन की इच्छा मेटि करि भजो निरंजन नाम ।
भजो निरंजन नाम तत्व देह अध्याश मिटावो ।
पचन के तज श्वाद आप मैं आप शमावो ।
जव छुटै झूठी देह जैशे के तैशे रहिआ ।
चरनदाश गति मुक्ति गुरु नै हम शो कहिआ ।

दोहा

देह मरै तू है अमर पारब्रह्म है शोय ।
अज्ञानी भटकत फिरै लषै शो ज्ञानी होय ।५

अंत—

दोहा

जनक गुरु शुषदेव जी चरनदाश शिष होय ।
आप राम ही राम है गइ दुतिय शव षोय ।१८६
'ब्रह्मज्ञान' पोथी कही चरनदाश निरधार ।
शमुझै जीवन मुक्त होय लहै भेद ततशार ।।१६०

इति श्री ब्रह्मज्ञान सागर नौमवानी गोशाई चरनदाश कृत शमापत शंवत् १८७२ ।।

विषय—ब्रह्मज्ञान वर्णन ।

संख्या ६३ग. स्वरोदय, रचयिता—चरनदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८ X ६।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० चंद्रभान जी मिश्र, गाँव—पोखरकत, डाक—मेंहदावल, जिला—बस्ती ।

आदि—.......................।
जब बरसै एकै येक मेघ यह सबै तिहारौ।
डार पात फल मूल सौं सवी निहारौ।३
स्वासा सो सोह भयो सोहं सो ओंकार।
ओं अं सोहं रा भयो साधो करो विचार॥
साधो करो विचार उलटि घर अपने आवौ।
घट घट ब्रह्म अनूप उलटि करि ताहि समावौ।
चारि भेद कौ भेद है गीता को है जीव।
'चरनदास' लखि आपकौ तोमे तेरो पीव॥
सब जोगन को जोग है सब ग्यानन कौं ग्यान।
सर्व सिधिनि को सिद्धि है तत्व सुरन को ध्यान।
अंत—जो कोइ पूछै आइ करि जाको गरभक नाहिं।
वहिनो वायो सुर लखौ साधि स्वास के माँहि।
वंध ओर जो आइ करिहै बूझै जो कोई।
वंध और तो गरभ है वहते सुर नहि होई।
स्वास बानावैं किरोडिकि आव जानि नर लोय।
ईकईस हजार छ सै चलैं रातिदिना जो सोय।

विषय—स्वरोदय विषय वर्णन।

संख्या ९४. वैद्यकविलास (?), रचयिता—चरपटनाथ, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—६॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१५६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), गद्य पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्णशरण जी शुक्ल, ग्राम–भादी, डाक–मझउडा मीर जिला–वस्ती।

आदि—वैं० वि० श्री गणेशाय नमः अथ नाडि चिकित्सा॥
विनु स्त्री दीअरा घर करै हरै पुत्र धन नारि।
अपठ होई वैदकी करै हतत ब्राह्मण मारि।
प्रथम वाल नाड़ी को लीजै। औषध साधि ताहि को दीजै।
जोक साँप नाडी पावै। वाइ क रोग ताहि वतावै।
कुलिंग कौ अस मेंडुक नाडी जौ चलै। पित्त रोग ताहि सो कहय॥
हंस परेवा नाड़ी जो पावै। कफ रोगी ताहि बतावै।
लावा तित्तिर वटेर नाड़ी पावै। सन्निपात ताहि वतावै।
कवहुंक मंद तेज नाड़ी होइ चलै। वाय पित्त तवही जे कहै।
जागह छुटै रोगी मरै। शीतलि नाड़ी जेहकी चलै।
राम तेज जो नाड़ी पावै। ज्वर क्रोध ताहि वतावै।
मध्यम नाड़ी जेहकी पावै। क्षीन रोगी ताहि बतावै।
गरम नाड़ी जेहकी जानै। रकत वहुत छुधा पहिचानै।
एतनी वाधल नाड़ी को पावै। चतुर होइ शो वैद्य कहावै।

इति नाड़ी परीक्षा

अथ काया कल्प पुष्ट की औषधी शोपारि पाकः॥

अंत—अथ तरक उकवत की ओषधी॥
करुआ तेल ताहि लै आवै। राल की बुकनी ताहि करावै।
पहिले जे करुअतिल लगावै। पीछे बुकनी ताहि भिजावै।
सात दिवस जौ लावै जो धोअे दुइ बार।
उकवत रोग जे न रहै सत्य वचन एह आहि।

अथ छुधा जागरण की औषधी

वजखार लोन सेंधौ सांभरि नोन सोचर नोन जवाषार नोन साजीषार नोन पागा नोन कंचा नोन सोहागा भुजा नवसादर सोरा समुद्र फेन एह सभ वस्तु पैसा एक एक भरि लेना। षारा पानी सों पीसावैं हांडी भरैं तव हांडी का मुष मूदैं गज पुट की आंच देइ। जब स्वांग सीतल होइ तब हांडी के सो नीकरि लेइ। वाकी वुकनी करैं कपरछान करैं। तव मरिचि डारैं। औषधि कैं त्रिफला पैसा एक भरि चित्रैता अधेला भरि। पीपरा मूल अधेला भरि। जवाइनि अधेला भरि। धनीआ धेला भरि। कृष्ण जीरा अधेला भरि। अनार के वीआ अधेला भरि। गज पीपरि अधेला भरि सोआ अधेला भरि। संफु अधेला भरि। सभ वुकनी कपरछान करैं पार मो मीलावैं। मात्रा षाने की देइ पथ वता प्रानहि भुष जागैं अगिनी मद जाइ।

इति श्री चरपटनाथ कृतौ समाप्त शुभमस्तु ॥ श्री राम कृष्ण ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या ६५. ब्रह्ममाला और योगसिध (?), रचयिता—चितामनि (ऋषिचितु), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८६/१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १७७५ के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

चेला चित की चातुरी मन के तजौ विचार।
रिष सयाने मानि ले गुरगति अगम अपार॥
गुरगति अगम अपार सिषु केतिक वीरा।
कहां षद्युत कहां सुर कहां चदा कहा तारा॥
कहा हार कहां गुज कहा पारस कहा लोहा।
कहां मलय कहां वेनु होत सरवर नहि सोहा॥
लघु दुतिया ससि जानि क ताहि नवै संसार।
चितामनि चित चेति कै सुगुर गति अगम अपार॥ ३॥

विधि नंदन प्रमान छपै

तासौ षलकु ब्रह्मा कहै अठरमुषी नाही।
ब्रह्म ब्रह्म षोडसमुषवाहो ब्रह्म चौसठि मुषवाही।
षटविसै अठआह भएते मुष जाके।
सो पुनि ब्रह्मा नही चेति चितामनि भाषे।
सहश्रमुषी ब्रह्मा सोई सहज समाधि लागी रहै।
वदन चारि भयो वापुरो सौ तासौ षलक ब्रंह्मा कहै॥२३॥

इति ब्रह्म माला संपूर्ण

अंत—तथायोग संसिध

॥ दोहा ॥

एकाएकी एक रस जुगल मिले जुग होइ।
जोगै जुगति मिलाइकै चितामनि कही सोइ॥ १॥

:o: :o: :o:

गाथा

रह्यो जग जोवन जीति जमारो।
सोंधि सरीर दसौ दिसाधार निरंतर नाम अलेष उचारो।
निसि वासर लगि लगा रहै जुग नैनन्हि को मिले कै नहि तारो।
मोछ की मोछ को ससै नही माही वैकुंठ कोटिक लारो।
कहै रिषिचितु मिलै हरि मितु रह्यो जग जोवन जीति जमारो॥६४॥

शुभमस्तु शुभं भवत्

विषय—ब्रह्म ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ६६. गणेशकथा, रचयिता—चितामणि दुबे, कागज—देशी, पत्र—४१, आकार—६$\frac{६}{१०}$ × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—३६६, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७३, लिपिकाल—सं० १८७३, प्राप्तिस्थान—श्री शंभुप्रसाद जी बहुगुना, अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ।। अथ गणेश कथा लिष्येते ।।

।। दोहा ।।

बंदि चरन रवि हरिहर गिरिजा चरन मनाइ ।
सैलसुता की कथा कहौ सुनौ सुचितु लाइ ।।
राम कृष्ण भ्राता सहित सिया रुक्मिनि मनाइ ।
बुद्धि बढावहु सकल मिलि पुनि पुनि करौ प्रनामु ।।
कथा कहौ गननाथ की परसि चरन मति दीन ।
तति के सुमिरो हनुमानहि देहु बुद्धि मतिधीर ।।

।। जुधिष्ठिरौ वाच ।।

।। दोहा ।।

येक समै पूछत भये हरिः जुधिष्ठिर राइ ।
आइ महा संकठ परौ केहि उपाइ सो जाइ ।।

।। चौपाई ।।

सुनौ कृष्ण देवन के देवा । निगम सेस विधि पावै न भेवा ।।
ऐसे प्रभु तुम दीन देयाला । सदा करौ दासन्ह प्रतिपाला ।।
विपति हमारि त्रिलोकहु स्वामी । कृपासिंधु तुम्ह अंतरजामी ।।
छल कीन्हा दिरजोधान राजा । जीति लियो है राज समाजा ।।

अंत—

नारी पुरुष करइ ब्रतोई । सकल सिद्धि फल पावै सोई ।।
जो यह कथा सुनै अरु गावै । अंतकाल सुर पुर सुष पावै ।।

।। दोहा ।।

गण नायेक की कथा यह समय कर मध्य विसाल ।
जथा बुधि भाषा रचि डारा चितामनि दुबे स्थान तामउरा ।।
गणेस कथा समाप्त सुभमस्तु चौपाई ।।
कातिक मास और पछ उजीआरा । तिथि चातुर्दसि औ दिनु यतवारा ।।
सम्वत १८७३
लिष्यो विचारि सक्ति भरि आनी । दोषु न दीजै मोहि मति यानी ।।

।। दोहा ।।

गणपति तु कथा क विचारी ।
अबकी बड़ संकट परा लीजै मोहि उबारि ।।
जनमे ज्ञान व्याकुल भये अब कछु करहु उपाई

संवात १८७३ सम्वते १८७३

विषय—गणेशकथा का वर्णन ।

संख्या ६७. वृत्त रत्नावली, रचयिता—चिरंजीव भट्टाचार्य, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—९ × ४।। इंच, पंक्तियां समस्त—११, परिमाण (अनुष्टुप)—११, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९०५ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—शशुद्ध प्रवृत्तक वुद्धि प्रकास प्रवृतं वृत्तवृत्त शास्त्रेपि नित्यं तथा ॥९८॥

प्रधानंग शेखर प्रताप ताप तापित प्रतीय भूयतं शरन निशा निशाकर प्रभाल सद्य शोभना स्वधान वारिधाया दरिद्रतानल जलद्रिजालि तापहारक स्वभाव शोभन भुजंग मंगलोविलः प्रसंग संग संगतेः सभान्तरे निवेशितो विधायकः कवि श्रेयः क्रमाल्लघौ गुरौ या राजनिवेशिते भववेदेनंग शेखरः शुधाशुखेर प्रियः ॥९९॥

अथ कवित्व कामः

मण्डित भरत खण्डे दण्डित प्रचण्ड दण्ड खण्डित विपक्ष पक्ष लक्ष लसितातानते । पारावार पस्यात यशो राजित मान दानमान मासावधान मानस महीयते । गौड वंस हंस धीर यशवन्त वीर वीर युद्ध सुद्ध भाव भावित महामते । लब्ध भाग नाग माग नग विराज विराम धामक कवित्व काम नाम को विराजते ॥१००॥

द्वैताद्वैत मतादि निर्णय विधि प्रोद्बुद्ध बुद्धिः श्रितो भट्टाचार्य शतावधान इति यो गोडोद्भवो भूत्कविः नाना शास्त्र विधा तदात्मज चिरजीवे शगदि तामुदे गौड श्री यशवन्त सिंह नृपते संद्वृत्त रत्नावली ॥१०१॥

इति श्री चिरंजीव भट्टाचार्य विरचिता वृत्त रत्नावली समाप्तम् शम्वत् १९०५ माघ सुदि १४ सन् १२५६ राम

—आद्योपांत उद्धृत

विषय—काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ का केवल एक ही पत्र मिला है जिसे आद्योपात उद्धृत कर दिया गया है । लिपिकाल सं० १९०५ है ।

संख्या ९८. प्रसंग पारिजात, रचयिता—स्वामी चेतनदास, कागज—आधुनिक, पत्र—१८०, आकार—७½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—३८२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य और पद्य, रचनाकाल—सं० १५१७ वि०, लिपिकाल—१९९९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० केवल बहादुर जी श्रीवास्तव उप० 'मलूक', ग्राम—पूरे विधाप्रसाद दीवान, डाकघर—निलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री रामोजयति ॥ श्री स्वामी चेतनदास जी कृत प्रसंग पारिजात ॥ श्री मौनिक महाराजोक्त अनिल नामक हिन्दी अनुवाद सम्वनित (समन्वित) ॥

॥ मंगलाचरण ॥

राम नामामृत पेय ध्येय सीतापतिर्विभुः ।
ज्ञेयो विशुद्ध तत्वज्ञो रामानन्दो जगद्गुरुः ॥

॥ अदना छंद ॥

हिम हिम हमम्रा हौलडी । मद माघ मघवा मौलड़ी ॥
तल तडित ताड़ण तौलड़ी । घर घर घुरता धौलड़ी ॥

अर्थ—राज्य मद रूपी माघ का महीना है । जड़ता रूपी जाड़ा यौवन पर है । द्वैष रूपी इन्द्र का हिंसा भाव रूपी श्याम दून मेघ अत्याचार की वर्षा कर रहा है । धर्म ध्वसनी ताड़ना रूपिनी विजली के प्रयोग से प्रजा त्रस्त है । घर घर हाहाकार मचा हुआ है । कोई किसी की सुधि नहीं करता ॥ १ ॥

वत्स्या करींदी सरसइ । गङ्गा गलोला गड़रई ॥
तिङ्गन्ति तलछा मदमइ । आमार साणे वंथई ॥

अर्थ—वत्स्या (प्रयाग) तीर्थराज की पृथ्वी त्रिवेणी की तरी से उर्वरा होकर सस्य सम्पन्न है । सुहावनी मालूम होती है । पवित्र गंगा तट पर बूढ़े बूढ़े ब्राह्मण वेदपाठ करते हुए ध्यान मे मग्न हो रहे है । उनके तप से मुक्ति का उदय हो रहा है ।

सारङ्गधर टिप्पणढिया । वाजन्ट विभुवैगुण विया ॥
माघूम मत्सर मौलिधा । चिर छै भजारण जाजिया ॥ ३ ॥

श्री मन्नारायण ने करवट वदली लक्ष्मी ने चरन चुंवन किया । शेष तो सजग थे ही । भूभार से व्याकुल हो रहे थे । पावजन्य वजा राम नाम की धुनि गूंज उठी । मत्सरादि पक्षी उड़ गए । भगवान ससय नाशक वचन बोले ।

मवतूल सारी डत वाहुणी । ग्रमुल मलेच्छ मथा गुणी ।।
ग्रण फागुणी तण पारुणी । तरकान बलदल दारुणी ।। ४ ।।

धर्म रक्षक राज्य वर्ग मलेच्छों के अन्याचार से त्रस्त होकर अपने भुजबल को हार बैठे हैं । वह एक (?) भी भूल से गये है कि विधाता के वाहुवल से उनकी उत्पत्ति हुई है । तुरकी का दल धन धरती हरण कर चुका है और उन्माद रूपी घोडे पर सवार कलि रूपी करवाल हाथ मे लिए धर्म रूपी वैल के पीछे पडा है ।। ४ ।।

मडमी सुमी जाकिड़ बुकी । ग्रमधूह पचण सवा चुकी ।।
लक भेव लिपुहा पब धुकी । पसही मधि कुटा राम की ।।

५ ० ५ १

तत्वाकाश प्रागमन अर्थात् स० १५०५ के मधुमास की शुक्ल प्रतिपदा शनिवार को प्रात काल हवण कुड की प्रतिष्ठा हुई और तारक महामत्र का अनुष्ठान आरभ हुवा । अच्छे अच्छे कर्मकाण्डी उपस्थित हुए । १ ।।

ग्रतवार ग्रठमी पाइचिण । दी दी दुमोदी ग्राहरिण ।।
विप्पां मुचंसा माहकिण । ति सुधा मुधा थालाइ लिण ।।

अष्टमी रविवार के दिन अनुष्ठान की समाप्ति पर शिष्यों सतो और विप्रो को सबोधित करिके महाराज ने कहा । सब शास्त्रों का सार भगवन स्मरण है । जो सतो का जीवन आधार है । शिष्य सूत्र का आधार पादज और अन्त्यज है ।। ६ ।।

लुहु वाच लुपिग घासुमू । वतखाछ भाडिस भासुमू ।।
णवमी ग्रयोध्या टासुमू । सेगा उगाढिहु गासुमू ।।

भाई ।। पैरो को कटाकर रामाज को पगु न बनाना । कल को रामनौमी है । अयोध्या जी जाऊगा । सब यहीं रहेगे और उत्सव मनावेगे ।। ७ ।।

वारिष वु चटा पेमगी । चिद्धाम वगणी देमगी ।।
लकहिम वुभटा तेमगी । महुसिण जुम्रारिस लेमगी ।।

कदाचित मै न लौट सकू क्योंकि उस चिद् धाम मे जो जाता है सो लौटता नही तो आप मेरी त्रुटियो अविनय आदि को क्षमा करेगे । यह सुनते ही सबके नेत्र सजल हो गए ।

दहदोहुण थप ग्रचण वसु । इस जाण वामू वणि चसु ।।
मकवह मुहला दणस जसु । ठुक्मास सिभण तपस रसु ।।

इतने मे वडे उच्च स्वर से शख धुनि हुई । माना किसी ऊंचे पहाड पर गूजती हुई वह ध्वनि आ रही हो । सुनकर सब स्तब्ध हो गए । यह अतिम ध्वनि थी इसके मर्म को केवल मुख्य शिष्य ही समझ सके ।

पमभवण ववण मचुली सवण । फौसार लिसुषारी लवण ।
लम होत थपुहा तवण । वियरा कुबल सारण फवण ।।

गुफा का द्वार खुला हुवा था । मुख्य २ शिष्यो ने उसमे प्रवेश करके देखा उसमे दैनिक कृत्यो के लिए सब वस्तुएँ ज्यों की त्यों धरी थी । चरण पीठ भी थे । केवल शख और उसके फूकने वाले स्वामी जी नही थे ।

वसु बीर किम्र्मा सभुकं । वधि वेहु खुर भम्सत रूकं ।।
उचहां चुमण सी जाणुकं । हिचुहर हिमर थाण पुकं ।।

तब सतो की आज्ञा हुई ।। कि इन गुप्त प्रकट वृतान्तो को लिखा जाय विचित्र छद और विचित्र भाषा मे जिसे बिना समझाए कोई समझ न सके सिद्ध जानुक द्वारा रक्षित है ।

पलु पंभिरा सप चालुली । मछु वेहरा गिरण वाकुली ॥
अक्करणं वुअर्रा छामुली । मकुमिह कृपा टुह धामुली ॥

क्योकि इसमे कुछ वृतान्त ऐसे है जो प्रगट नही किए जाने चाहिए और कुछ ऐसे हैं जिनको उस समय तक छिपाना है जब तक यह घटना घटित न हो जाय । इसका निश्चय तत्कालीन सिद्ध ही करेगा ।

अंजाम मरण वासी लूपू । देश वाडि आकृत सुभु तुपू ॥
पैशाच छवदा चिधु छुपू । छंदासु अदरण लिभु रापू ॥

इसी विचार से यह वतान्तमाला देशवाडी प्राकृत मे पिशाच भाषा के साकेतिक शब्दो के योग से अदरणा छद मे दिव्य माहात्म्य से सग्रथित की गई ॥

लौभारणु तासभ जपुतहो । थिहभिपु वतावि भुटिषतही ॥
मचुकं रिवा सुह सुतही । कप छरण पिरण रचाइ बुतही ॥

उस समय मे पहले जो इन प्रसगो को पढेगा । वह पागल हो जायगा । परतु प्रगट होने पर जो इसका पाठ करेगा उसको तत्वज्ञान की प्राप्ति होगी । चतुवर्ग जनित कामनाए सिद्धि होगी ।

वास सिव आसिरण वुगी । दिति और साहित मिह चुगी ॥
छुप सग पारी जा लुगी । हिहरणे थु राम चु पालुगी ॥

ज्ञान भूमिका चद शिवमुख सच्चिदानद अर्थात १५१७ (पद्रह सौ सत्तरह) गुरु जन्म दिन माघ कृष्ण सप्तमी गुरुवार का यह प्रसग पारिजात राम नाम लेकर समाप्त हुवा । ॥ इति ॥ ॥ रामायण समस्तु ॥

लेखक—केवल बहादुर (मलक) श्री वाम्राव मु० पूर्णवियोधा प्रसाद दीवान पो० ग्रा० तिलोई जिला: रायबरेली अगहन कृष्ण सवत १९६ ॥

विषय—(पूर्ण विवरण सहित प्रारम्भ से अत तक) । स्वामी रामानद जी का जीवनवृत्त वर्णित है ।

रचनाकाल

वास सिव आसिरण वुगी । दिति और साहित मिह चुगी ॥
छुप सग पारी जा लुगी । हिहरणे थु राम चु पालुगी ॥

ज्ञान भूमिका चद शिवमुख सच्चिदानद अर्थात १५१७ (पद्रह सौ सत्तरह) गुरु जन्म दिन माघ कृष्ण सप्तमी गुरुवार का यह प्रसग पारिजात राम नाम लेकर समाप्त हुवा ।

ऋषिकेश मे एक सारस्वत दपति रहते थे जो भरत मदिर मे पूजा किया करते थे । इन्होने बदरी वन मे जाकर भगवान विष्णु की तपस्या की । भगवान प्रसन्न हुए और इनसे वर माँगने को कहा । इन्होने वर माँगा कि आप (भगवान) हमारे पुत्र हो और हमे प्रसन्न करे । तथास्तु कहकर भगवान ने इनकी मनोकामना पूर्ण की । परतु केवल १२ वर्ष तक ही जीवित रहने का वचन दिया । कालातर मे ये दपति कान्यकुब्ज वाजपेयी वश मे उत्पन्न हुए और प्रयाग मे रहने लगे । समय पाकर भगवान इनके पुत्र रूप मे प्रकट हुए । यही स्वामी रामानद थे । जन्म से ही इनके अलौकिक कार्य प्रसिद्ध रहे । १२वे वर्ष इनका प्राणात हो गया पर स्वा० राघवानद के आशीर्वाद और प्रयत्नो एव इनके माता पिता और इष्ट मित्रो के अपनी अपनी आयु का कुछ अश देने पर ये फिर जीवित हुए । अपने जीवनदाता राघवानद जी के ये शिष्य हो गए । माता पिता ने इनके लाख मना करने पर भी इनके विवाह का प्रबध किया पर सयोग मे जिस कन्या के साथ विवाह निश्चित था, उसको विवाह होने पर वैधव्य प्राप्त था । अत उसने विवाह नही किया और जीवनपर्यन्त कुमारी रहने का प्रण किया । स्वा० रामानद जी से उसने दीक्षा ले ली और तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगी । थोड़े ही समय पश्चात् वह स्वर्गधाम मे भी सिधार गई । इस प्रकार स्वा० रामानद जी की विवाह न करने की इच्छा अपने आप पूर्ण हो गई ।

ये काशी में रहने लगे और बहुत ही शीघ्र चारो ओर प्रसिद्ध हो गए। उन्होंने अपना अलग सप्रदाय चलाया जिसमे जातियों के ऊँच नीच और छूत अछूत का कुछ भी भेदभाव नही था। वह ससार के सभी मनुष्यों के लिये खुला हुआ था। जो उसमे दीक्षित होता था वह आनद और शाति से जीवन व्यतीत करता था। उनकी आध्यात्मिक शक्ति भी पूर्ण रूप से विकसित हो जाती थी। कबीरदास जैसे जुलाहे और रैदास सरीखे अछूत स्वा० रामानद जी के प्रौढ़ शिष्यों मे से थे। पहले तो बड़े बड़े पंडितों और कर्मकांडियों ने उस विचारधारा का विरोध किया। परतु जब स्वामी रामानद ने उन्हे अनेकानेक युक्तियो और चमत्कारो द्वारा निरुत्तर कर दिया तब वे लोग चुप हो गए। दक्षिण के विद्यारण्य मुनि इनके समर्थक थे। इन विद्यारण्य मुनि पर स्वामी जी ने भविष्य की बाते प्रकट की, जो इस प्रकार है—

दक्षिण मे काजीवरम् (जहाँ विद्यारण्य मुनि रहते थे) के लोगो ने स्वामी जी की जमात का कोई स्वागत नही किया। जो श्रद्धालु थे उनको भी नही जाने दिया। इसका मूल कारण छूत अछूत आदि जाति पाँति ही थी। जमात मे रैदास और कबीर के रहने से लोग रुष्ट थे। इतना होते हुए वहा के राजा विद्याधर प्रजेश ने स्वामी जी का अच्छी तरह स्वागत सत्कार किया। इस पर उसकी रानी सीता अनुपीता का गुरु पत्नी गोदादेवी ने 'जुलाहे (कबीर से अभिप्राय) की जोय जा रही है छू न जाना' कह कर अपमान किया। रानी ने, जो पतिव्रता थी तुरत ही श्राप दिया—'जुलाहे के रूप मे भागवत की निंदा करने के कारण समस्त देश मे वस्त्र निर्माण के उपकरण नष्ट हो जायँ। तेरे समान विचार वाले म्लेच्छ योनि मे पतित हो जाय और तू पृथ्वी मे समा जाय। तुरत पृथ्वी फटी और गोदा देवी उसी मे विलीन हो गई। दूसरे दिन भोजन बनाते समय सबके चौके पर कबीर दिखाई देने लगे। चारो ओर हाहाकार हो गया। अब सब लोग स्वामी जी के पास दौड़ पड़े। आगे राजमती और विद्यारण्य मुनि थे। स्वामी जी ने सबको आश्वासन दिया और कहा कि अब किसी के चौके मे कबीर नही दिखाई देगा। इसलिए सब लोग शातिपूर्वक भोजन करो श्राप निवारण के सबध मे कहा कि भविष्य कल्याण के लिये था। श्राप के प्रभाव से इसी किनारे से वणिक समाज आएगा और करघा चरखा घर घर से मिटाकर सब व्यवसाय हस्तगत करके देश को महा कगाल बना देगा। जब दरिद्रता के कारण चारो ओर धर्म ग्लानि उपस्थित हो जायगी तब कबीरदास जी की ज्योति मोहनदास नाम से उतरेगी। चरखा का प्रचार करेगी और राम नाम के प्रताप से सब दुख दरिद्र भगावेगी।

एक ऐतिहासिक वर्णन इस प्रकार है—

दिल्ली मे तैमूर के हत्याकांड और लखनौती के उपद्रव एव हिंदुओ पर जजिया कर लग जाने के पश्चात् लोग स्वामी रामानद जी की शरण मे आए। उस समय अजान के समय मुल्ला मौलवियों का कठ अवरुद्ध हो गया। सबने इसका कारण कबीर को समझा। दिल्ली से इब्न नूर और तकी आदि मौलवी राजाज्ञा के साथ मेरे और उपहार लेकर कबीर के पास आए। कबीर ने सब वस्तुएँ गगा जी मे फेकवा दी। अनुनय विनय करने पर कबीर ने उन्हे स्वा० रामानद जी के पास जाने को कहा। वे कबीर के साथ स्वामीजी के पास गए। स्वामी जी ने उनको उपदेश किया और हिंदुओं पर अत्याचार न करने को कहा। देव मदिरो को न ढहाने, शख बजाने की आज्ञा देने, स्त्रियो के साथ बलात्कार न करने, जजिया कर रोकने, मस्जिदो के सामने से बारात जाने देने के लिए कहा। गाय की कुर्बानी न करने को भी कहा। उन लोगो ने इन सब बातो को स्वीकार किया और इनको लिपिबद्ध करके राजा की मुहर लगवा दी। तब से मस्जिदो मे नियमपूर्वक फिर नमाज पढी जाने लगी।

कविवर खुसरो भी श्री स्वामी जी से मिलने आए थे। स० १५०५ वि० मे श्री स्वामी जी का साकेत वास हो गया।

संख्या ६६. हरिजस, रचयिता—चोपसिंह, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—७ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—६६, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० श्रीराम जी पाडेय, ग्राम-वराछा, डाक-प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः

दोहा

वार वार पद बन्दो विनय करो परिपाइ ।
विद्या सह हरि भक्ति मोहि देहि सुषद गरा राइ ।१
तव जपि जपि प्रति स्वमति गति पायो पतित अनेक ।
विरद समुझि मम दोष तजि दवसि दयाल सदेक ।२
हातृप्यमसि विहार निति नेको चित थिति पाइ ।
दया कुरु हरिजस कहत सुनत दिवस निसि जाइ ।३

सोरठ

गिरिजा रमत कृशानु कुमति कुटिल अति सघन वन ।
कहत सुनत जस ध्यान कुमति कुजन सुभगति लहत ।४
चन्द्रमोलि सुष खानि हानि हरिक जेहि जानु जग ।
जन हिय खेद गलानि मृगी सिंह ताके प्रवल ।५
:o: :o: :o:

वसन लीजो मेह नेह पियन गहत गहि वहि विरह वीति अति तीछि तपनि हिय विच लहकंरि ।
भुरकि झुकि झपकि झपकि धन दहु दिसिनि लषि न परत आतपगत झिमिक झिमिकि झरलगहि रहतनकंरि ।
अनिल भटक लतिका झकोर चहुओर सोर अति घोर सुनत मन कलित गलित विसि सिसि वहकंरि ।
केक कूक हिय हूक कर चातक पिय रति पद वहत खदत जिय कहि न जात उर आप आद्धितन एहि विच हरिविन जियन हकंरि ।।
तकि तकि रितु गति दुष नग चढि मुष नमित लिषत पग नष करनष सखि सेज भवन परिवार 'चोपसिंह' नहिं सोहात कोधर वियोग प्रचारि वहकंरि ।।

अंत—मोरि मृग लगुहि रहत नित हगसे ।
अतिहि निडर वृज उरग कहुकी उर भलन करत एह कम्धर नग से ।
जव मोहि डगर वगल करि पावत अवत करत मग गति क्षिणसग से ।
अपन रोकि कर छयल नंद को मंद हसनि द्युति मनहर अग से ।
'चोप' न चेत रहत नहि देषत किनि करि धराकुल लाज सुभग से ।२

बधाई

आजु वधावरा श्री दशरथ जी ।
गजमनि रतन धेनु हय संधन जाचक रहि मुद जावरा ।१
पुर नरनारि हरित ममन वहु विधि रतन लुटावरा ।
मानहु सोजल जान म.न करि विहरत अति सुष सावरा ।२
वहुतक नटिक नटित गति अति सुभताल मृदग वजावरा ।
लटकि लपित ललित अति झुकि झुकि ताल तर्क करि गावरा ।३
अतिसे भीर गभी(र) अवधपुर प्रेम सुथिल सभ वावरा ।
योइ कर परत सोइ जचकन्ह तन देतन करत बेरावरा ।४
व्रह्मादिक सुर चढि वेवान नभ निज रथ ठहरावरा ।
अति मोदित पुर उद्धव सज लषि 'चोप' जन्म फल पावरा ।५।

—अपूर्ण

विषय—भक्ति विपयक स्फुट छद ।

संख्या १००. पदरत्नावली, रचयिता—छत्रनृपति, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार—१३$\frac{3}{8}$ × १०$\frac{3}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—३६४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबू नवलकिशोर, ठिकाना—मुरारीदास बुकसेलर, सुलतानपुर।

आदि—वंदो गणनायक के चरना ॥ टेक ॥

आनन्द रूपी सब गुन आगर कृष्ण अंस जानि मन भावना ॥ १ ॥
लंबोदर सुंड छबि छाजै गिरजा संभु नंदना ॥ २ ॥
एक दंत छवि लसै मनोहर सकल विघ्न के करहि नेवारना ॥ ३ ॥
चारि भुजा अति जोति बिराजै मूस है जाके बाहना ॥ ४ ॥
नखसिख भेष सोहै अतिसुंदर भालसेंदुर जो अधिक विराजना ॥ ५ ॥
सूप कर्ण गनेस के छाजै कुंडल मुकुट नागना ॥ ६ ॥
बुधि सुधारन कुमति नसावन अमंगल हरन मंगल करना ॥ ७ ॥
छत्र नृपतिपर करहु कृपासोई वुधि मन रहै जो कृष्ण के चरना ॥ ८ ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

मैं संतन से करौ निहोरो ॥ टेक ॥
दास पद सब भांति निपुन अति नृप पद नीच जो बहुतक टोरो ॥ १ ॥
जाके स्वामी देहि जो ताहि दुराए अघ नहि थोरो ॥ २ ॥
नृप करी दीन्हो नाथ नाममोहि तासे अभागन मे पद टेरो ॥ ३ ॥
छत्र नृपति एह बिनै जो गावै बालक जानि कृपातन हेरो ॥ ४ ॥ २३ ॥

इति श्री पद रतनावली वंदना संपूरन अथ प्रथम राग भैरो लिख्यते ॥ अथ छ राग छतीस रागिनी आठ आठ पुत्र लिखते अथ प्रथम राग भैरो लिख्यते ॥ बाजा भृंगी ॥

अंत—ललित हिंडोलवा झूलत आजु ॥ टेक ॥

ललित पाग साज सब साजे मोहन प्यारी विराजु ॥ १ ॥
ललितादिक सब ललित साज किहे डुलावति बृजराजु ॥ २ ॥
गावति हिंडोला मधुरे सुरते लेलेतान............ ॥ ३ ॥
......सुमन लिहे सखिया कर पिय प्यारी तन साजु ॥
सीतल मद सुगध पवन वहै लागतन आनंद राज ॥ ३ ॥
मधुरे मधुरे मेघ वर्सै नभ सुदर छवि छाजु ।
गगन धनुक सोभित अति नीकी चपला चमकत आजु ॥ ४ ॥
पिय प्यारी छवि लखिकै सुंदर मधुर गरजि घन आजु ।
हरित अवनि तृन लता सुहावन द्रुमन लटक छवि छाजु ॥ ५ ॥
रति पति लखि छवि स्याम सुंदर के मनही मे अति लाजु ।
छत्र नृपति सुर सुमन वरखि कै सेवत निजहित काज ॥ ६ ॥ २४ ॥

इति श्री पदरत्नावली राग अनहृद सम्पूर्णम् ॥ अथ सतवा पुत्र चिंतामनि बाजा काम्क ।

विषय—राग रागिनियां एवं उनके पुत्रों के उदाहरण दिए गए हैं।

संख्या १०१. जोखूराम यश वर्णन रचयिता—छत्रपाल सिंह 'नृप', कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गुरुप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—हीगन गौरा, डाक—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ दोहा ॥
दिशि दिशि जोखूराम यश विलसत शशि से वेश ।
नहिं खण्डित नहिं राहु उर नहि कलंक को लेश ॥ १ ॥

कवित्त

तीषण सो भानु जोष्यो तेजसो कृशानु जोष्यो श्रोज सो जोष्यो रितु ग्रिषम को धाम है ।
आभा सो मनोज जोष्यो कीरति सो भोज जोष्यो वृद्धिमो गणेश जोष्यो मंगल को धाम है।
धीरनमैं ध्रु जोष्यो गभीरता पयोधि जोष्यो योगकरि दीननको साध्यो सन काम है ।
गुनन को सागर उजागर द्विजोशनमैं याही ते कहायो जसी 'जोषूराम' नाम है ।२।

शेश गणेश महेश मदा निशिवासर मंगल धाम भरे रहैं ।
भूपति वृन्द समोप खरे निति वैरी विनीत ह्वै पाइ परे रहैं ।
जोषू राम की कीरति चन्द की जोति दशहू दिशि में पसरे रहैं ।
कंश विनाशिनि वामिनि विन्ध्य की चारि भुजान सो छाह करे रहैं ।३।
सेवक विन्धवासिनि को अरु दन्दत वेद यथा द्विज नीति है ।
प्रीति लसै सतसंगनि मैं अरु अगनि मैं जो बसै गुन रीति है ।
देत सवा गुन नागर को सुख सागर शील सुशील विनीत है ।
यशी जोषू राम जी कीरति चन्द्र मे नंदह की दुति लीन्यो जीति है ।४।

॥ दोहा ॥

करत दीन पर दया नित सकल सुमंगल धाम ।
'जोषूराम' द्विजीश को निशिदिन करो प्रणाम ।५।
जाको पाटन दीन द्विज शिष्य सुसेवक राम ।
तेहि ममेत वदौं चरण 'छत्रपाल नृप नाम' ।६।

इति श्री मद्राय छत्रपालसिंह विरचितमिदपुस्तक समाप्तम् सवत् १६५७ आसाढ कृष्ण ८
—प्राप्त प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—द्विज गोखूराम का यश वर्णन ।

संख्या १०२. लगनसुदरी, रचयिता—छट्टूराम, (स्थान—सिद्धपुरी), कागज—देशी, पत्र—७६, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१२८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० वि०, लिपिकाल—सं० १६१७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामहर्ष जी, ग्राम—गोड़वा, डाक—कैथौला, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ सरस्वति तोहि मनाई ॥

छंद

राम चरन गुरु वदि के लगन सुदरी गाइ ।
श्री धरनीधर सुत कहे मसुख राम प्रवीन ।
तिनके लघुभ्राता छदुमति अनुसार कीन ।२
नगर सिद्धपुरी नाम है सुभ धामन को धाम ।
सुंदरवाग तड़ाग है छदुराम यह गाम ।३
अठारहे से सतरि दुइज फागुन वदि गुरवार ।
'छट्टूराम' तेव वरनियो लगन सुदरीसार ।४
एक हजारि सत्तरि कहो दोहा छदु कवित्त ।
तिमिरि हरनु को भानुहि पढ़ै गुनै दै चित्त ।५
मकरंद आदि जौतिस सवौ सूछिम कथा प्रसग ।
पडित वुधि अधिकार उर हृदय कपट घुलास ।६
अथ वालक जन्म को विचार

दोहा

वालक जन्म के भेद कहत सलगन समुझाई ।
जाके जैसे ग्रह परें तेह फल देत वताई ।७

राहु परै जाही बिसा सिरहानो तेंहा मानु ।
मंगर बिसा पायो फठो गुरु भूमि मंद पहिचानु ।८

अंत—भानु केंद्रहि जानिए बुध नमए घर भुक्त ।
कुजयम 'छदूराम' कहि मुष्ठि मं जानियं वुद्ध ।२६
पांचमे स्त्री मरि पुघरि चंदा भृगुन अरि 'छदूराम' कएग्राम ।
हरित सेत पिग्ररी कही ग्रोषधि मुठि वखान ।
सौरी रिपुस्थानमे भुग्रसुतनमयो जान ।२८
रक्त सुदम तिल वरन कहि गुरु केंद्र घर देषि ।
सो वरन चनकादि उलदास 'छदूराम' करलेषि ।२६
सुकल राहु अथवा सनी वंस्थान मे जानु ।
पुगीफल जग मुष्टि मं 'छदूराम' पहिचानु ।

:o: :o: :o:.........सवत् १९१७ माघ शुक्ल.........

विषय—(लग्न सारिणी) ज्योतिष विषय वर्णन ।

रचनाकाल

अठारहे से सतेरो दुइज फागुन वदि गुरवार ।
'छदूराम' तेव वरनियो लगन सुदरीसार ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। रचनाकाल संवत् १८७० तथा लिपिकाल १९१७ वि० है। रचयिता 'छदूराम' हैं। ये सिद्धपुरी ग्राम निवासी, धरनीधर के पुत्र तथा मसुखराम के लघुभ्राता थे। अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या १०३. जपजी, रचयिता—छीतम जी, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—४। × ३। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२६ वि० प्राप्तिस्थान—श्री पं० सुखनंदन (महेशप्रसाद) जी, ग्राम—आंभा का पुरा, डाक—कैथौला, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—।। श्री रामाय नम ।।
सुख को सागर राम काय बीसारीयो जी ।
तेरी भक्ति विना भगवान जनम जुहारीयो जी ।
एक जनम जुहारयौ राम विशारयो चेत्यो नहीं अभागे ।
पल पल आव घटै तन छीजं वं दिन आवन लागे ।
एक आवा गमन रच्यो वनमाली यहाँ नही कोई तेरा ।
दासमदास कहै 'जन छीतम' राम सुमरि मन मेरा । १
अत को लोभ निवारी ममता मोडिएजी ।
हरिस्यो प्रीति लगाय जुगस्यो तो जिएजी ।
एक हरिस्यो जो जो जमस्यो तो जो छाड़ो सकल विकारा ।
यो ससार चेहर की वाजी जात न लावै वारा ।
जो वाछो सो लुगिरै प्राणी करिलं जो कछु करण ।
दासमदास कहै 'जन छीतम' रहो राम की सरण । २
एक तरणी अरु ज्वानि जोवन बालियाँ जी ।
बिषिया को रस चाषि भई मतिवालीयां जी ।
एक जोबन बाली भई मतिवाली विषिया को रस चाषि घना ।
घूमत फिरे नैन नहि सूझे भूलि रही माया रसना ।
एक साईं सेत नेह न कीयो जन्म गुमायो हिलीयां जी ।
'छीतम' कहै जागि बउ सुंदरि हरि जी को नाव संभालीयांजी । ३
अमर नहीं कलिकोय सुनौ नरनारीयां जी ।
तेरी भक्ति बिना भगवान जन्म धर भारीयां जी ।

एक जम घर भारी जयो मुरारी पिउपजत नहीं बारा ।
धन जोबन दारा दौलतिया मै कहा तुम्हारा जी ।
एक निरभै नांव जपौ नरहरि को ग्रमर नहीं कलिकोई ।
वासमवास कहै 'जन छीत्म' बहौरी संजोग न होई । ४
काम क्रोध ग्रहंकार कांइ न जालियो जी ।
तेरै गलै पड़यो जम जाल पसुज्यौ पुकारियो जी ।
पसुज्यौ पुकारयौ मुदगरि मारयो केतो बीती ग्रंगा ।
भाई मात पिता सुत बंधू कोइ न चातौ संगा ।

ग्रंत—एक चहूं दिसि.................... ।

:o: :o: :o:

......की भक्ति विना जनछीत्म कहा जुगि ग्राय कीजे ।१०

इति श्री छीत्म जी की जषजी सपूर्ण ।

—ग्राद्योपांत उद्धृत

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ बीच से खंडित है । अंतिम पत्र नहीं है । समस्त दस छंद है, जिनमे आदि के चार और अंत का दसवां छंद मिलता है ।

रचनाकाल का उल्लेख नही, पर इसी से युक्त ग्रंथ पांडव गीता के आधार पर लिपिकाल संवत् १८२६ वि० है । रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता ।

संख्या १०४. छंदबंधसूत्र, देवपूजा, पद, रचयिता—छोटेलाल, स्थान—मेडूग्राम (अलीगढ), कागज—देशी, पत्र—८३, आकार—१०½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—६०२, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३२ वि०, लिपिकाल—सं० १९५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ छंदबंध सूत्र जी लिख्यते ॥

॥ छंद विजयावर्ण ॥ २३ ॥

मोक्ष को राह बतावत जे ग्ररु कर्म्म पहाड़ कर चकचूरा ।
विश्व सुतत्व के ज्ञापकहे ताहीलब्धि के हेत नमो परिपूरा ॥
सम्यक् दर्शन चारित ज्ञान कहे यही मारग मोक्ष के सूरा ।
तत्व को ग्रर्थ करो सरधान सो सम्यक दर्शन नाम जहूरा ॥ १ ॥

ग्रंत— ॥ कवि व्यवस्था वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

जिलो ग्रलीगढ जानियो मेडूगाम सुधाम ।
मोतीलाल सुपुत्र है छोटलाल सुनाम ॥ १ ॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान ।
वंश इक्ष्वाक पहान में लयो जन्म भूग्रान ॥ २ ॥
काशी नग्र सु श्रावकै सैनी सगति पाय ।
उदयराज भाई लखो सिखरचंद गुणकाय ॥ ३ ॥
छंद भेद जानो नही ग्रौर गणागणसोय ।
केवल भक्ति सुधर्म्म की वसी सुहिरदयमोय ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

छंद बंध श्री सूत्र के किये सुबुधि ग्रनुसार ।
मूल ग्रंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदय धार ॥ ७ ॥
क्वार मास की ग्रष्टमी पहली पक्ष निहार ।
ग्रडसठि ऊनसहस्र दो सम्वत् रीति विचार ॥ ८ ॥

इति छंदबंध सूत्र संपूर्ण ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

आदि—अथ देव पूज भाषा लिष्यते ॥

॥ छंद रमावल ॥

प्रथम नमं अर्हंत सिद्ध आचार्य नामी ।
उपाध्याय अरुसाधपंच परकार नमामी ॥
हे परमेष्टि उत्त भृष्ट तिष्टो इहां आई ।
मो भवबाधा हरो चरन पूजो सुषदाई ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

ॐ ह्रीं श्री कृत्य कृतमजिन मंदिरन मे श्री जिन विराजमान तिनके चरणारविंद कूं अर्घं निर्वियामीति स्वाहा ॥ इति श्री देवपूज भाषा सपूर्णम् ॥

:o: :o: :o:

पद

जय जय जिनराज आज पूजत भये सिद्धि काज पायो सुषको समाज जानि परि धनि घडी ।
जय...... ॥ १ ॥
पूजन अभिलाष धारि आवत सुर नर अपार पावन फल व्यक्त चारि कटत कर्म्म थिति वडी ।
पूजत भविछकत होत भव्य जनमन वढत जोति एसो द्युति को उद्योत मिथ्यातम गति टरी ।
जय जय ॥ ३ ॥
चेतन चिद्रूप रूप जान्यो अद्भुत स्वरूप निजपर आकृति अनूप आज मोय लखिपरी ॥
जय जय ॥ ४ ॥
वरषत समतासुवार आनंद की धार धार हर्षत "छोटे" निहार चहुदिशि सुख की झडी ॥
जय जय ॥ ५ ॥

अंत—क्या सोचे ससार अवस्था है असार नही सार रे ।
सार एक सत्व धर्म बतायो सो परमौ तेरी लार रे ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

इत्यादिक महान पुरुषो की "छोटे" दसा निहार रे ।
रत्नत्रयका धारण करि तू बेडा तेरा पार रे ॥
क्या सोचे ॥ ६ ॥ इति पद ॥

इति श्री सूत्र जी देवपूजा पद छद दोहा सोरठा चापई मे सपूरणम् ॥ संवत् १९५० ॥ मार्गशिर मासे कृष्ण पक्षे तिथौ १० रविवासरे ॥ लिखी द्वारिका प्रसाद शुक्ल ने फर्राबाद में लहाई के पंचायती मदिर मे लिखी गई ॥ लिखाई छोटेलाल जी के पुत्र बनारसीदास लाल वा सुधारसीलाल मेडूवाले ने ॥ लखनऊ के पचायती मदिर मे चढाई.........

विषय—१ मोक्ष के सबध मे ज्ञानोपदेश वर्णन । २ जिन देव की पूजा का विधान वर्णन । ३ जैन मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

प्रथम रचना मे रचनाकाल इस प्रकार है—

क्वार मास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार ।
अडसठि ऊन सहस्रदो सवत् रीति विचार ॥ ८ ॥

संख्या १०५क. अघविनास, रचयिता—स्वा० जगजीवनदास, कागज—आधुनिक पत्र—६२१ आकार—१२.६/१० × ८८/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१७०७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८७ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री रामनाथ हलवाई, स्थान व पोस्ट—इन्हौना, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेसायनमह अथ अघ वि(ना)स ग्रथ लिप्यते ॥
ईसुर अज्ञा पावऊं गुणदास होइ के गावऊं ।
मन प्रतीतग जानि के गुर चरन ते चित लावऊं ।
कहतहौ कर जोर सुनिए मोरि तुम्हें सुनावऊं ।

सदा राखौं चित्त तुम्ह से कबहुं नहि बिसरावऊं ।
ज्ञान तुम्हीं ध्यान तुमहीं तुम्हें मन औराधऊं ।
सत्य रूप सरूप तुम्हरो सोइ मनमैं साधऊं ।।
"अघ विनास ग्रंथ" करहु जब तुम ज्ञान तंत्वंग आवई ।
होइ दया लग दास परतौ ज्ञान ते गुन गावई ।
"जगजीवनदास" विनती करि कहैं सरन अपनी आनहू ।
ऐगुणंग अनेक करमंग मेटि दास कै आपनो जन जानहूं ।। १ ।।
"अघविनास" हरिगुण कहै जेहिते उपजे ज्ञान ।
"जगजीवनदास' ध्यान धरि करैं तुम्हारो बषान ।।
ईश्वर शिउ ते कहत है सुनै जो कोऊ चित्त लाइ ।
अनेक जन्म के कर्म अघ सुनत षंड होइ जाय ।।
सुनिए सेव यह अकथ कहानी । सो ईश्वर काहै असवानी ।।
ब्रह्मासुत का सर्स भएउ । चेत अचेत बिसर सब गएउ ।।

अंत—
"जगजीवनदास" विनती अनुहारी । सुनहि सो संत करैं मनुहारी ।।
कूर कुटिल जोजम दोही । तेहि यह कथा न भावै कोई ।।
कवितन का गुन एकौ नांही । राम प्रताप प्रगट एहिमांही ।।
जो कोऊ हितू राम का होइ । सुनै कथा चितदेई सोई ।।
यही जगत महं साधुन गावा । परम चतुर जे सुन मन लावा ।।
हीरा रतन भरा यहि सागर । पावहि सोइ जो होइ मति आगर ।।

।। दोहा ।।

राम कृपा की षानि यह जो मन देहु सो लेहु ।
सब सुष होइहि हरिहि दुष पावहु राम सनेहु ।।

इति श्री पोथी अघविनास सम्पूर्ण भई ।। दसषत रामप्रसाद हलवाई इन्होंना घास में जन्म लिया ।। जब सब संतन की दाया भई तब अघविनास ग्रथ लिषकर तय्यार किया ।। मिती कार्तिक वदी पंचिमी सम्वत १९८७ दिन अवतारक सम्पूरण भई ।। बकता श्रोता से बिनै करकै कहतौं की जो कुछ भूल चूक होइ सो सभारि कै पढ़ंउ जो कुछ भूलै से लिषै का रहिगा होइ सो संभारिकै पढ़ंउ ।। जो कुछ भूलै से लिषैका रहिगा होइ तौन लिषकै सुद्ध करि बिहेउ ।। और मैं चेला गांउ भोषीपुर रसतामऊ के पुरुब है तहा पर बाबा पहलवानदास की गदी है ।। सीताराम ।।

विषय—नारद मोह और भक्ति वर्णन ।

संख्या १०५ख. अघविनास रचयिता—बाबा जगजीवनदास (स्थान—सरदहा तथा कोटवा (बाराबकी)) कागज—देशी, पत्र—२२६, आकार—१२½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८० वि० लिपिकाल—संवत्—१९०३ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान—हरगाँव, (बाबा सियादास की कुटी), पोस्ट—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः लिष्यते अघविनास ग्रंथ कृत शाहेब जगदीवनदास ।।

।। छंद ।।

ईस्वर अग्या पावौ गुनदास ह्वै कै गावऊ ।
मन प्रतीतें जानिकै मैं चरन तें चित्त लावऊं ।।
कहत हौ कर जोरि सुनियें मोरि तुम्हहि सुनावऊ ।
सदाराखौ चित्त तुम्हतें कबहुं नहि बिसरावऊं ।।

ग्यान तुम्हही ध्यान तुमहि तुमहिमन अवराधऊ ।
सत्य रूप सरूप तुम्हरा सोईमें मन साधऊँ ।।
अघविनासं करहु जब तुम्ह ग्यान तत्वं आवई ।
होहु दयालं दास परतौ ग्यान ते गुन गावई ।।
"जगजीवनवास" बिनती करि कहै सरन अपनी आनहू ।
अवगुनं अनेक करमं मेटि दास कै जानहू ।।

।। दोहा ।।

अघविनास हरिगुन कहै जेहितें उपजै ग्यान ।
"जगजीवनदास" ध्यानधरि करै तुम्हार बषान ।। १ ।।
ईस्वरसिवतें कहत है सुनै जो कोउ चित्तलाइ ।
नेगजनम के करम अघ सुनत षंड होइ जाई ।। २ ।।
सिव सुन सत्य म वासु करि कथा करौं परगास ।
करि विस्वास सुनै जो करै सत्यमह वास ।। ३ ।।

अंत—

।। दोहा ।।

राम कृपा की षानि यह जो मन देहु सो लेहु ।
सब सुष होइहि हरहि दुष पावहि राम सनेहु ।।९४१।।

।। चौ० ।।

संवत सत्रह सै कहि आए । ऊपर असी सोर लगाए ।।
मिती माघ सुदि तेरसि आही । सुभ दिन भई सो पूरन चाही ।।
लिषी सो बिदनदास मुलतानी । लेहु सुधारि चूक जँह जानी ।।
हमरी चूक सुधारहि कोई । तब जानव चतुरा जगसोई ।।
पोथी लिषो वैठि जेहि ठाँऊँ । मुह मिठाइ जो लीजै नाँऊ ।।
सरदहा है गाँउ अनूपा । देस देस के जानहि भूपा ।।
वसहि चंदेल सकल जग जाना । पत्थरपुर परगना बषाना ।।
पीर बड़े जहँ सो सरकारा । सुवा जहाँ राम औतारा ।।
तहँ एक पुरुष सिद्धि है सोई । तिन्ह का भेदु न जानै कोई ।।
अवर तीरथ तहाँ सोहावा । सव दुष हरन सो वाग लगावा ।।
सिद्धि पुरुष वह तहाँ विराजै । जगजीवनभगत देषि दुष भाजै ।।

।। सोरठा ।।

अलष षेलु जेन्ह पाम अलष अमूरति अलषगति ।
सो जगजीवनदास तेन्ह यह ग्रंथ वनायऊ ।।

।। दोहा ।।

आपुहि वैठि लिषाएन्ह अवरन तीरथ तीर ।
तहाँ वाग दुषहरन है छाँही सुषद गँभीर ।।९४३।।
लिषत लिषत कछु जाना एह गरंथ सुषषानि ।
जो चाहहु सो लेहु अव अवरन दोसर दानि ।। ९४४ ।।
मुकुति आदि जे सुष अहै तेहै सब एहि माहि ।
केते चतुरा होइ गए एहि गरंथ सम नाहि ।।
जेन्ह यह पोथी लिषाई धन्य जगत सो जीव ।
जो निहचै कै मानिहै सो अमृत रस पीव ।।
मास वमोदर धवल तिथि इंद्री दिन गुरवार ।
नाथ मुक्ति वसु सुन्य लिषि सवत करव विचार ।।
संपूरन भयो समै तेहि "अघविनास" सुष मूल ।
सिद्धिकरन भौजल तरन हरन करम भवसूल ।।९४८।।

विनती जन सरदार की मोहि ज्ञान बल नाहि ।
चूक देव जनि पढि समुझि लिखेउ जथा प्रति माहि ॥ १ ॥

संवत् १९०३ अस्वनि मासे सुक्ल पच्छे पुर्नमासी रवि वासरे तिहि दिन लिखि संपूरनं सुभ मस्तु ॥

साखी जगजीवन जगदीनरहु काहु न करु अपमान ॥
आपन कीन्ह सो भुक्ति है तें धरु चरनन्ह ध्यान ॥ २ ॥

विषय—ईश्वर, शिव और ब्रह्मा, नारद के संवाद के रूप में अनेक भक्ति तथा ज्ञानोपदेश पूर्ण कथाओं का संग्रह ।

रचनाकाल

संवत् सत्रह सै कहि आए । ऊपर असी सोर लगाए ॥
मितो माघ सुदि तेरसि आही । सुभ दिन भई सो पूरन चाही ॥

संख्या १०५ग. अघविनास, रचयिता—जगजीवनदास, (स्थान—कोटवां, बाराबकी), कागज—आधुनिक, पत्र—१७८, आकार—१०½ × ७ ५/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—११६७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८०, लिपिकाल—सं० २००० वि०, प्राप्तिस्थान—मुंशी बोधप्रसाद श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर टढेई, डाक०—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री अघविलास लिख्यते वानी समरथ श्री सतगुरु जगजीवन साहेब की ॥

॥ छंद ॥

ईश्वर अज्ञा पावऊ गुनदास ह्वै कै गावऊ ।
मन प्रतीत जानिकै मैं चरनन चित लावऊं ।
कहत हों कर जोरि सुनिये मोरि तुम्हें सुनावऊं ।
सदा राखों चित तुम्हते कबहु नहिं बिसरावऊ ।
ज्ञान तुमही ध्यान तुमही तुमही मन आराधऊं ।
सत्यरूप सरूप तुमरा सोई मैं मन साधऊ ।
अघ विनाशं करहु जब तुम ज्ञान तत्वं आवई ।
होई दयाल दास पर तौ ज्ञान से गुन गावई ।
जगजीवनदास विनती करि कहै सरन आपनी आनहू ।
औगुन अनेक करम मेटि दास कै जानहू ॥

॥ दोहा ॥

अघविनाश हरिगुन कहै जेहिते उपजै ज्ञान ।
जगजीवनदास ध्यान धरि करै तुम्हार बखान ॥
ईश्वर शिवते कहत है सुनै जो कोउ चितलाय ।
नेग जन्म के कर्म अघ सुनत खंड होइ जाय ।
शिव सुनि सत्य मां वास करि कथा करौं परगास ।
करि विस्वास सुनै जो करै सत्य मां वास ॥
परमारथ कारज कंह संतन्ह कीन्ह प्रगास ।
सुनि प्रतीत जे मानिहै तिन्हकी पूजी आस ॥
ईश्वर आज्ञा करिये विनती करौं कर जोरि ।
होउ दयाल दास पर स्तुति गावौं तोरि ॥

॥ चौ० ॥

ज्ञान ध्यान प्रभु अहै तुम्हारा । मन क्रम तुमहि अहौं आधारा ॥
कृपा करी कीरति कछु भाखी । चित हमार चरनन्ह ते राखी ॥
सीस नवावौं तोहि मैं जानी । देहु ज्ञान मैं कहौं बखानी ॥

जानि मोंहि प्रभु आसा दासा । सदा राखु चित चरनन पासा ॥
चरन कमल बिसारो नाहीं । राखु मोंहि प्रभु आपुहि मांही ॥

अंत—

संवत सत्रह सं कहि आये । ऊपर असी सो और लगाये ॥
मिति माघ सुदि तेरस आही । सुभदिन भं संपूरन चाही ॥
लिखी सो बिसुनदास सुलतानी । लेहु संभारि चूक जंह जानी ॥
हमरी चूक सुधारिहि कोई । तब जानब चतुरा जग सोई ॥
पोथी लिखो बैठि जेहि ठांऊ । मुहु मिठाइ जो लीजं नांऊ ॥
सरदहा गांउ सो अहै अनूपा । देस देस के जानहि भूपा ॥
बसहि चंदेल सकल जग जाना । पक्खरपुर परगना बखाना ॥
पीर बड़े जह सो सरकारा । सूबा जहा राम औतारा ॥
तह एक पुरुष सिद्धि है सोई । तेहिका भेद न जानं कोई ॥
अवरन तीरथ तहा सोहावा । सब दुख हरन सो बाग लगावा ॥
सिद्धिपुरुष वह तहा विराजं । जगजीवन जगत देखि दुख भाजं ॥

॥ सो० ॥

अलख ख्याल जिन पास अलख अमूरति अलखगति ।
सो जगजीवनदास जिन यह ग्रंथ बनायऊ ॥

॥ दोहा ॥

आपुहि बैठि लिखाइहि अवरन तीरथ तीर ।
तहा बाग दुख हरन है छाहीं सुखद गंभीर ॥

:o: :o: :o:

जिन यह पोथी लिखाई धन्य जगत् सो जीव ।
जो निहचं कै मानिहै सो अमृत रस पीव ॥

इति श्री कथा अघ विनाश बानी माई समरथ सुभमस्त सपूरन ॥ दो० ॥ सन बारह सं एकसठि मास जेठ परमानु । कृश्न पक्ष तिथि एकादशि लिखि सपूरन जानु । बसषत हरिप्रसाद के भुमिवार परधानु । श्रोतहि वकर्ताह......राजा बहादुर श्रीवास्तव १० जनवरी सन्—१९४३ ई० रविवार ॥

विषय—रामभक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सं कहि आये । ऊपर असी सो और लगाये ॥
मिति माघ सुदि तेरस आही । सुभदिन भं संपूरन चाही ॥

संख्या १०५घ. अघविनास, रचयिता—स्वा० जगजीवनदास, (स्थान—सरहदा और कोटवाँ, बाराबंकी), कागज—देशी, पत्र—३४५, आकार—१२ ५/८ × ९ १/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—३२४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८० वि०, लिपिकाल—सं० १८४९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण मिश्र ग्राम—सँवसी, पोस्ट—शाहिमऊ, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गनेसाय नमः लिष्यतं अघविनास कृत जगजीवनदास कै ॥

॥ छंद ॥

इस्वर अघ्यापावऊ गुनदास होइकं गावऊ ।
मन प्रतीतं जानिकं मं चरन तें चितु ध्यावऊ ।
कहत हौ कर जोरि सुनियें मोरि तुम्हहिं सुनावऊँ ।
सदा राष चित्त तुम्हतें कबहु नहि बिसरावऊ ।

ग्यान तुम्हही ध्यान तुम्हही तुम्हहि मन औराधऊ ।
सत्यरूप सरूप तुम्हरा गोई मे मन साधऊ ।
अघविनास करहु जब तुम्ह ग्यान तत्वं आवई ।
होहु दयाल दास परतो ग्या।तें गुन गावई ।
"जगजीवनदास" विनती करि कहै सरन अपनी आनहू ।
औगुन अनेक करम मेटि दास कै जानहू ।।

अंत—

संवत सत्रह सै कहि आए । ऊपर असी सोर लगाए ।।
मिती माघ सुदि तेरसि आही । सुभदिन भई सो पूरन चाही ।।
लिषीसो विस्नदास मुलतानी । लेहु सुधारि चूक जह जानी ।।
हमरी चूक सुधारिहि कोई । तब जानब चतुरा जग सोई ।।
पोथी लिषी बैठि जेहि ठाऊ । मह मिठाइ जो लीजै नाऊ ।।
सरदहा है गांउ अनूपा । देस देस के जानहि भूपा ।।
वसहि चंदेल सकल जगजाना । पाथरपुर परगना बषाना ।।
पीर बड़े जहँ सो सरकारा । सूबा जहा राम अवतारा ।।
तह एक पुरुष सिधिहै सोई । तिन्ह का भेदु न जानै कोई ।।
अवर तीरथ तहा सोहावा । सब दुष हरन सो वाग लगावा ।।
सिधि पुरुष वह तहा विराजे । जगजीवन भगत देषि दुष भाजै ।।

।। सोरठा ।।

अलष षेलु जेन्ह पास अलष अमूरति अलषगति ।
सो जगजीवनदास तिन्ह यह ग्रंथ वनाएऊ ।।

।। दोहा ।।

आपुहि बैठि लिषाएन्ह अघरन तीरथ तीर ।
तहा वाग दुष हरन हे छाही सुषद गभीर ।।८६३।।
लिषत निषत कछु जाना यह गरथ सुष दानि ।
जो चाहहु सो लेहु अब अछर न दोसर दानि ।।८६४।।
:o: :o: :o:
मास दमोदर धवल तिथि इन्द्रीदिन गुरवार ।
नाथ मुक्ति वसु सुन्य लिषि सवत करव बिचार ।।
:o: :o: :o:
विनती जनसुखलाल की मोहि ग्यान वल नाहि ।
चूक देव जनि पढि समुझि लिषेउ जथा प्रति माहि ।।

विषय—नारद ज्ञान और भक्ति वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सै कहि आए । ऊपर असी सोर लगाए ।।
मिती माघ सुदि तेरसि आही । सुभदिन भई सो पूरन चाही ।।

संख्या १०५ङ. अस्तुति महावीर जीव जन्म की (जन्म की ?) रचयिता—स्वा० जगजीवनदास जी, (स्थान—कोटवा बाराबंकी) कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् हरिशरणदास जी, एम० ए०, ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबंकी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। लिषि अस्तुति महावीर जीव के जन्म की ।। बानी साँई जगजीवन महाराज जीव की ।।

कछुक कहि कृपाते जन्म कम गावौ ।
पं महिमा समुद को कहाँ पार पावौ ॥ १ ॥
जबं सिव असुर को कगन दान दीन्हेउ ।
धरंकर पहिर सिर चहै भस्म कीन्हेउ ॥ २ ॥
उठी मन तरक सक्ति पायो मुरारी ।
करौ भस्म हर को हरौ दिव्य नारी ॥ ३ ॥
भगेभव भर्मार भ्रम सतीलं लुकाने ।
सकारे अनन नाम ओरे ठेकाने ॥ ४ ॥
महादुष पायो फिर सिव दुराने ।
कृपा सिधु हित जानि चित मे छोहाने ॥ ५ ॥

अंत—जो चाह विद्या पठिन पुरान ।
भजन सो ग्यान माग जो ध्यान ॥१०६॥
जगजीवनदास विनं हनोमानं ।
विलव न कांजे दे करौ मनोमान ॥११०॥

इति श्री महावीर जिउ की सपूर्ण ॥ सुभमस्तु ॥ समत १९२२ जेठ मासे सुक्ल पछे तिथौ पूर्णमास्या सुक्रवासरे लिषत्वा मुनु पडित मुकाम श्री अस्थान कोटवा ॥ श्री सतगुरजी सहाइ ॥ राम ॥

विषय—हनुमानजी का अस्तुति ।

संख्या १०५च. कहरानामा, रचयिता—स्वा० जगजीवनदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरण दास जी एम० ए०, ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बारावकी ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ लिषि कहरानामा जानी माई समरथ्थ सतगुर जगजीवन महाराज जीव की ।

ॐ वह साहेब समरथ्थ आहै जिन सब साजि बनावा रे ।
पलहि एक महँ सब रचि लीन्हेउ नाहि बेलंब लगावा रे ॥ १ ॥
नाना विधि सबहां सा नाचे धरि धरि रंग सुवागा रे ।
कहु भूतल कहु राह बनावत कहू रहत रस पागा रे ॥ २ ॥
मामाया यह नाच नचावत मन मानं तस करई रे ।
आवत जात सो नाचत आपुही जस भावं तस फिरई रे ॥ ३ ॥
सिसिर विना नाम वह आहै पुरुष कंसेहु होई रे ।
एहि माया रसमाति भुलानेउ चलउ सरवसो षोई रे ॥ ४ ॥

अंत—

कहेउ ककरहा कहरानामा समुझ बिरला कोई रे ।
समुझि कै करं साधु होइ निपटइ अतर ध्यानी होइ रे ॥ ४४ ॥
सत कै वचन प्रमान करं जो समुझि ताहि कछु परई रे ।
जगजीवनदास तब ग्यान होइ कछु सुमिरन मनमँह करई रे ॥४५॥

इति श्री कहरानामा यवछर्द सपूरनम् ॥ सुभमस्तु ॥ समत् १९२३ ॥ सन् १२७४ ॥ लिषत्वा मुन पडित मुकाम श्री अस्थान कोटवा ॥ रामराम ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या १०५छ. ज्ञानप्रगास, रचयिता—जगजीवनदास, कागज—आधुनिक, पत्र—२६, आकार—६ ७/८ × ४ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१६ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। पोथी ज्ञानपरगास लीषते ।।

।। दोहा ।।

सतगुर समर्थ तुमही दाया जब तब होइ ।
जन कह ज्ञान होइ जब कही भावा तब सोई ।।

।। चौपाई ।।

सतगुर अहही सिधि के दाता । आपुही करता आपुही विधाता ।।
आपुही सत के भजन करावत । आपुही सतन्ह मते गावत ।।
आपुलेत......चत औतारा । आपुही आप रहत है न्यारा ।।
आपुही कीन्हा जीमी असमान । आपुही आइ तीहुलोक समान ।।
आपुही करत है दीनराती । दुसर कहै केही भाती ।।
दुसर आपु आपु पहीचानो । स्वेम सेत मह आपु समान ।।

।। दोहा ।।

"जगजीवन" बाल आगम तब ग्यान नीगम कही देत ।
अंत—नयन बीहुन नीरषीछबी नर बीहुन आंग ।
"जगजीवनदास" गुरु मुषभगे सतन के परसंग ।।
ग्यान परगास सपूरण दुष सुष चार बीचार ।।
नाहो नोर पोन ना पारे जगजीवन मन समुझी के कीयो आंतराध्यान ।।

इति श्री जगजीवनदास कीती ज्ञान प्रगास संपूरण सामप्त साके सके १७८१ समत समत १६१६ आषढ मसे बदी ३ देवस सुक्रवार लीषत देवीसीग चदल छाउनी आदन जल अरबस्तान गोबीदसींग

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १०५ज. ज्ञानप्रकाश, रचयिता—जगजीवनदास, कागज—आधुनिक (नीला), पत्र—२६, आकार—६ ७/८ × ४ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—२६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १६१६ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। पोथी ग्यान परगास लीषते ।।

।। दोहा ।।

सतगुर समर्थ तुमही दावा जब तब होइ ।
जन कह ग्यान होइ जब कही भावा तब सोई ।।

।। चौपाई ।।

सतगुर आहा सिधी के दाता । आपुही करता आपुही विधाता ।।
आपुही संतन के भाजन कारावत । आपुही संतन्ह मते गावत ।।
आपुलेत सत औतार । आपुही आपु रहत है न्येर ।।
आपुही औ कीन्हा जीमी आसमान । आपुही आई तीहु लोक समान ।।
आपुही करत है दीनराती । दुसर कहै केही भाती ।।
दुसर आपु आपु पहीचानो । खेम सेत मह आपु समन ।।

।। दोहा ।।

जगजीवन बाल आगम तब ग्यान नीगम कही देत ।

।। चौपाई ।।

आपुही ग्यानी के मन आपर । आपु आगम को करं बीचार ।।

आपु आपु ही रह रह बातवं । दूसर आपु संसार कहावं ।।
सब घट आपु करत है वास । काहु घट न होइ बीस वास ।।
काहु क मन ना औरे वासई । काहु के मन बेषी नीरासाई ।।

अंत— ।। दोहा ।।

तत्वसार नाम भाजी आमर भयौ जन सोइ ।
कहत हो प्रगट पुकारी के यहीते मंत्रन कोई ।।
नबन बीहुन नीरषी छबी नरा बीहुन आंग ।
जगजीवनदास गुरु मुष भये संतन के पारसंग ।।

ग्यानपारगस संपूर्ण

दुषसुष चार बीचार नाही नीर पीड नापारे ।
जगजीवन मन समुझीके कीयो आंतरध्यान ।।

इती श्री जागजीवनदास क्रीती ग्यान प्रगास संपूर्ण सामप्त साके सके १७८१ समत समत १९१६ आषढ मसे वदी ३ देवम मुग्रवार लीषतं देवीसींग चंदल छाउनी आदन जल अ।रबस्तान गोवीदसीग

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

सख्या १०५क. परम ग्रंथ, रचयिता—स्वामी जगजीवनदास, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—९३/८ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप)—६३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ वि०, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरणदास जी, ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबकी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। लिषिते पोथी परम गरथ कीनी माई सतगुर जगजीवन साहेब जीव की ।।

।। दोहा ।।

परमनाम गरथ है पठेते सुमिरन होइ ।
साधु करहि परसन्य मन जोग ध्यान दिढ सोइ ।। १ ।।
साहेब मं सेवक अहो कृपा करहु जन जॉनि ।
सूझि ग्यान ते सब परं कीरति कहो वषानि ।। २ ।।
वदौ सखदेव मुनि अलष वास सबमाँहि ।
सो सुमिरौ मनजाँनि मं और दूसरौ नाहि ।। ३ ।।

।। सोरठा ।।

और दूसरो नाँहि व्यापि रहेउ जल थल महीं ।
बसि रहेउ संतन माँहि सब जगते न्यारे रहौ ।।

अंत— ।। दोहा ।।

संमत अठारह सं बारह लिषि संपूरन कीन्ह ।
परम गरंथ नाम अस सो कहि परगट दीन्ह ।।६८।।
मास परम वैसाष हित सुदि नौमी सोमार ।
जगजीवनदास लिषि ग्रंथ कहि समुझि करहु अतिवार ।।६९।।

।। सोरठा ।।

सुमिरन केवल नाम दुइ अछर परमाँन कहि ।
तबहूं अब सोइ राम सतन के अंतर बसहि ।। चौ०

इति श्री कथा परम गरंथ बाँनी साँई सतगुर जगजीवन महराज जीव की संपूरनम् संमत् १९२३ सन १२७४ कातिक माँसे कृष्ण पछे द्वादस्यां रविवासरे लिषत्वा मुनू पंडित मुकाम श्री अस्थान कोटवा ।। श्रीराम ।।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

संमत अठारह सै बारह लिषि संपूरन कीन्ह ।
परम गरंथ नाम अस सो कहि परगट दीन्ह ॥६८॥
मास परम बैसाष हित सुदि नौमी सोमार ।
जगजीवनदास लिषि ग्रंथ कहि समुझि करहु अतिवार ॥६९॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सं० १८१२ वि० है । लिपिकाल सं० १९२३ है । रचयिता का नाम स्वा० जगजीवनदास है जो सत्नामी पंथ के प्रवर्तक थे । ये कोटवां, बाराबकी मे रहते थे । सरदहा इनकी जन्मभूमि थी ।

इस बार इनके निम्नलिखित ग्रंथ और मिले है —

१ महाप्रलै कहरानामा ।
२ लीला ।
३ कहरानामा ।
४ अस्तुति महावीर जी जन्म की ।

संख्या १०५ञ. महाप्रलै कहरानामा, रचयिता—स्वा० जगजीवनदास, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१८९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम—कमाली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबकी ।

आदि—**श्री गणेशाय नमः ॥ लिष्यते ग्रंथ महाप्रलै कहरानामा ॥**
अजपा जाप जपहु दुइ अछर घट मँह जिभ्या नाहि डोलावहु रे ।
दंउ उपदेस मंत्र यह साँचा सोइ मन महँ गावहु रे ॥ १ ॥
साधउ समुझि विचार गहौ मन और सबै विसरावहु रे ।
रहहु सुचित मंत्र वह जानहु दुविधा दूरि वहावहु रे ॥ २ ॥

परि दुविधा दुई दिसिते जइहो एकहि ते मन लावहु रे ।
लाइ रहहु कहि प्रगट न भाषहु तवही सो सुष पावहु रे ॥ ३ ॥
जन्म पाइ विन समुझे सुष है समुझे से दुष होइहि रे ।
सुष परि सुधि ग जहाँ त आयेउ चले सरब सो षोई रे ॥ ४ ॥

अंत—**जगजीवनदास के मत गुर साहेब दियो चरन पर माथा रे ।**
अपनी सरन राषि तुम लीन्हा कीन्हेउ मोहि सनाथा रे ॥
मन दिढ होइ सुमिरत रहउ अनत नचि चलाउ ।
जगजीवनदास तब भक्ति होइ तिन्हके अलष लषाऊ ॥

इति श्री महाप्रलै नामा कहरा ग्रंथ सपूरन ॥ संमत् १९२२ ॥ लिषत्वा मनु पंडित ॥ मुकाम कोटवा राम ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—विशेष के लिए देखिए परमग्रंथ का विवरण पत्र और गोसाईदास कृत "कहरानामा" । ये एक ही हस्तलेख मे है ।

संख्या १०५ट. लीला, स्वा० जगजीवनदास, (स्थान—कोटवा, बाराबकी), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम—कमाली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबकी ।

आदि—**श्री गणेसाय नमः ॥ लिष्यते लीला वानो सॉई समरथ्थ सतगुर जगजीवन महाराज जीव की ॥ लीला ॥**

विनै सुनौ हनिमंत दरस मोहि दीजिए ।
पवन ते अधिक प्रचंड चहहु जहँ तहँ उठि धावहु ।
तीनि लोक जे भवन गवन करि होइ होइ अवहु ।
जहँ जहँ इछा करतहहु तहँ तहँ जात तुरंग ।।
ऐसे वली अवलन को बलदै जानत ना कोइ अंत ।। १ ।।
सुनियत कहत गरंथ सिया हरी जब रावन ।
राम कटक लै संग तहाँ को भयो है आवन ।।
सायर तीर कटक रहि तुम कहँ अग्या दीन्ह ।
सीस चरन पर नाइ कै तुम तुरत पयाना कीन्ह ।। २ ।।

अंत—बोधरूप कलि भवो जगत का दरस देषायो ।
जेहि जस भा विस्वास दरस ते तैसै पायो ।।
जलथल पानी पवन महँ घट घट जोति तुम्हारी ।
संतन पास वास है भाँई जिन गहि डोरि सभारि ।। ६ ।।
मंकेतानिको आज अहौ केहि गनती माही ।
दाया कृपा करौ और कछु जानौ नांही ।।
जगजीवनदास विनती करैं सुनिए सांई सोई ।
एतना हमका दीजिए प्रभु विलग न कबहूँ होइ ।।१०।।

इति श्री लीला वांनी जगजीवन साहेव जीव की संपूरन ।। संमत् १९२३ ।। सन् १२७४ ।। लेषक मुंन् पडित मुकाम श्री अस्थान कोटवा ।। सतगुर हो ।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १०५ठ. वाणियाँ (२४ ग्रंथ), रचयिता—जगजीवनदास, (स्थान—कोटवाँ, बाराबंकी), कागज—देशी, पत्र—२५८, आकार—१३ $\frac{७}{१०}$ × ८ $\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—७४५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ वि० (परम ग्रंथ में दिया है), लिपिकाल—सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवराम मिश्र, ग्राम—चिलौली, पोस्ट—इन्हौना, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः लिषी श्री ग्रंथ मन पूरना वानी सतगुर जगजीवन महराज जीव कै मतनिर्गुन ।

।। दोहा ।।

कथा प्रगट मन पूरना पूरामन सुनि होए ।
जगजीवनदास सत मूरति मब्द कहत निजसोइ ।।

।। सोरठा ।।

दाया करिए मोहि कीरति तुम्हारी गावऊँ ।
कहौं विनैकै तोहि तुम्हते ध्यान लगावऊँ ।
मनहि विसारौ तुम्ह कँह नाही । चित्त राषौं मै चरनन माहीं ।।
दाया जब तुम्हारी मोहि होई । तब तुम तजि जानौ नहि कोई ।।
:o: :o: :o:

परम ग्रंथ से—
संवत अठारह सै बारह लिषि संपूरन कीन्ह ।
परमनाम गरंथ असलो कहि परगट दीन्ह ।।
मासपरम वैसाष हित सुदि नौमीवार ।।
जगजीवनदास लिषि ग्रंथ कहि समुझि करहु ऐतवार ।।
:o: :o: :o:

अंत—श्री गनेसायेनमः ॥ लिषि दोहावली बानी सत गुरु जगजीवन महराज की

विसेसरपुरी गुर गुरसडी तहँ समाधि अस्थान ।
मतेमंत्र मोहिदीन्ह तिन्ह अंतर लाग्यो ध्यान ॥
जगजीवनदास मनरोदा करु सूरति पंचु कमान ।
कर चीत सोलागीर है निरषहु नाम निसान ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

वलगंजनसिंह कों लिषागा वजुरी के ।
अवध की बाजारमा दुवा सुपारी लीन्ह ।
एक पैसे की दुई मिली एक आपुका दीन ॥५६९॥
दीन भए मरजादगा गर्ब किहेगा धर्म ।
जगजीवनदास ऐसी कहैं करी राम कसवर्म ॥५७०॥
ऐंठि चले अहंकार करि छिनमों गयो विलाइ ।
जगजीवनदास आधीन ते जनपर राम सहाइ ॥५७१॥
सुत उपजेते सूलभा सो हम देषा नैन ।
जगजीवनदास अब का कहै कहि नहीं आवत बैन ॥५७२॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल (परमग्रंथ से)

संमत अठारह सै बारह लिखी संम्पूरन कीन्ह ।
परम नाम गरंथ अस सो कहि परगट दीन्ह ॥
मास परम वैसाष हित सुदि नौमी वार ।
जगजीवनदास लिपि ग्रंथ कहि समुझि करहु ऐतवार ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख बृहद् आकार का है जिसमें स्वामी जगजीवनदास के छोटे बड़े २४ रचनाएँ संगृहीत हैं और जिनके नाम निम्नांकित हैं—

(१) ग्रंथ मन पूरन, (२) परम ग्रंथ, (३) ज्ञानप्रकाश, (४) महाप्रलै, (५) कहरानामा तीन, (६) चरम वरगी, (७) सरन वरगी, (८) विवेक ज्ञान, (९) उग्रज्ञान, (१०) छंद विना (११) बारहमासा, (१२) विवेक मत्र, (१३) बुद्धि वृद्धि, (१४) दृढ़ ज्ञान, (१५) ग्रंथ गन्याग, (१६) ग्रंथ अघोर, (१७) अस्तुति महावीर जी की दो, (१८) शब्द, (१९) लीलावती बानी (२०) दोहावली ।

संख्या १०५ङ. शब्दसागर, रचयिता—बाबा जगजीवनदास, (स्थान—कोटवा, बाराबंकी), कागज—देशी, पत्र—७३६, आकार—१३-७/८ × ११ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—७४३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ के लगभग (परम ग्रंथ बानी में यह संवत दिया है), लिपिकाल—सं० १९४० वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री रामप्रसाद जी, स्थान—हरिगाँव (बाबा मिठ्यादास जी की कुटी), पो०—पर्वतपुर, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ लिषि शब्दसागर बानी श्री सतगुरु समर्थ जगजीवन महाराज जीव की

॥ सब्द ॥

मन रहु आसन मारि मढी ते न डोलहु रे ।
राते माते रहहु प्रगट नहि षोलहु रे ।
निरषत परषत रहहु बहुत नहि बोलहु रे ॥ १ ॥
रजनि के दीन केवार सत कुंजी ते षोलहु रे ।
तेहि उजियारे बैठि निर्भै ह्वै षेलहु रे ॥ २ ॥
गुरु के चरन दे सीस आस सब त्यागहु रे ।
जहाँ तहाँ तुम रहहु इहे वर मागहु रे ॥ ३ ॥

चौक बनी चौगान चकमकी बिराजै रे ।
रवि ससि छवि तेहि वारि संग तोहि गाजै रे ॥ ४ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेस निर्गुन अस्थूलता रे ।
तेहि हिलिमिलि परसंग फिरहु नहि भूला रे ॥ ५ ॥
चमकत निर्मल रूप झलक बिन हीरा रे ।
"जगजीवनदास" रहु मगन बैठि तेहि तीरा रे ॥ ६ ॥

॥ ग्रंथ दोहावली से ॥ आरंभ ॥

॥ दोहा ॥

बिसेसर पुरी गुर गुरसड़ी तहँ समाधि अस्थान ।
मते मंत्र मोहि दीन उन लागेऊ अंतरध्यान ॥ १ ॥
'जगजीवन' मन रोदा करू सूरति बैंचु कमान ।
कर चित सो लागी रहै निरषहु नाम निसान ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

॥ परम ग्रंथ बाँनी से ॥ ग्रं ॥

॥ दोहा ॥

संमत अठारह सै बारह लिषि संपूरन कीन्ह ।
परम गरंथ नाम अस सोइ कहि परगट दीन्ह ॥
मास परभ बैसाष हित सुदि नौमी संवार ।
"जगजीवनदास" कहि ग्रंथ लिषि समुझि करहु अतिवार ॥

॥ सोरठा ॥

सुमिरहु केवल नाम दुइ अक्षर परमान करि ।
तबहूँ अब सोइ राम संतन्ह के अंतर बसहि ॥

इति श्री परम ग्रथ बाँनी साँई सम्रथ सतगुर जगजीवन महाराज जीव की संपूरणं शुभमस्तु ॥

:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

रटहि नाम निरषहि निरबानी । भरम छूटि रहि जोति समानी ।
निरगुन निरमल सो निरकारा । बिरलेन्ह कोउ जन निरषि निहारा ॥

॥ दोहा ॥

जगजीवनदास सब्द ते कहा है सुनि मानै बिस्वास ।
मन की दुबिधा जाइ सब सदाँ सत्य माँ वास ॥

॥ सोरठा ॥

सदा सत्य माँ वास समुझि कथा मन पूरना ।
कहि "जगजीवनदास" संत हेत परगट कहेउ ॥१३० ॥

इति श्री ग्रंथ मनपूरन बाँनी साँई समरथ सतगुर जगजीवन महाराज जीव की संपूरणं शुभमस्तु ॥ अश्विन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ १२ द्वादस्यां भौम वासरे ॥ श्री संवत् ॥ १९४० ॥

॥ दोहा ॥

लेषक परमानद कवि बसे सरैयाँ ग्राम ।
जो प्रति देषा सो लिषा सिद्धि करैं श्री राम ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

परम ग्रंथ के आधार पर कवि का समय—

॥ दोहा ॥

संमत अठारह सै बारह लिषि संपूरन कीन्ह ।
परम गरथ नाम अससोइ कहि परगट दीन्ह ॥

मास परम बैसाष हित सुदि नौमी संवार ।
जगजीवनदास कहि ग्रंथ लिषि समुझि करहु अतिबार ।।

विशेष ज्ञातव्य—वर्तमान हस्तलेख का नाम शब्दसागर है । इसमे निम्नोक्त छोटे बडे ग्रंथ हैं—

१ ग्रंथ शब्दावली, २ दोहावली, ३ लीलावली, ४ बुधिविधि, ५ दृढ ध्यान, ६. विवेक मत्र, ७ कहरानामा, ८ कहरानामा दोसर ९ कहरानामा तीसर, १० चरन बदगी, ११ सरन बदगी, १२ विवेक ज्ञान, १३ उग्र ज्ञान, १४ छद विनती, १५ छद दोसर, १६ छद तीसर, १७ वारहमासा, १८ सन्यास जोग, १९ अघोरमत्र, २०. अस्तुति महावीर जन्म, २१ अस्तुति दोसरि, २२ अस्तुति तीसरि, २३ परमग्रथ, २४ महाप्रलै, २५ ज्ञान प्रगास, २६ मनपूरन ।

सभी ग्रंथों के रचयिता स्वा० जगजीवनदास (कोटवा बाराबंकी) है ।

संख्या १०६क. भारती कंठाभरन, रचयिता—जगतसिंह (स्थान—भिनगा बहराइच), कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—१०॥ × ७॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—६०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६३ वि०, लिपिकाल—सं० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० मगलाप्रसद जी द्विवेदी, ग्राम—गोगहर, डाक०—ढेगुर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—......................चद ॥१६॥

द्वै कल गुर लघु एक कल मात्रा के प्रस्तार ।
वरन रीति कछु मिनहे लघुगुर एक विचार ।१७।
वंक रूप गुर होत है प्रस्तारक क्रम लेषि ।
सूधरेष लघु जानिए दीप सिषालो पेषि ।१८।
वंक रूप सम होन को लिख्यौ जहाँ विस्तार ।
जगतसिंह तासो कहत कवि कोविद प्रस्तार ।१९।
अथ मात्रा प्रस्तार विचार ॥ दोहा ॥
आदिहि गुर तरु लघु धरो फेरि बराबरि देहि ।
घटे पूव गुर लघु करो कला पस्त लषि लेहि ।२०।
अथ वरन प्रस्तार लछन ॥ दोहा ॥
प्रथमहि गुर तरु लघुधरौ पाती सम करि सोइ ।
घटे पूर्व गुर धरिय पुनि जव लग सव लघु होइ ।२१।
जेतनो निकसं भेद इमि सोई छंद प्रमान ।
गहे पहे मात्रा वरन वरने सेस सुजान ।२२।

इति श्री मन्महराज कुमार विसेन वंसावतंस दिग्विजैसिघात्मज जगतसिंघ कवि क्रिते भारती कंठाभरन प्रस्तार स्वरूपनं नाम प्रथमोध्याय ॥

अंत—अथ महाघनाक्षरी छद

फूले सेत कंज जुगविवि वडे ताके बीच राजित ललित अलि मोदरस परसत ।
दीरघ विसाल गज मोती विधिताके बीच दोई नील मनि विंदु जरे सोभा सरसत ।
वीररस ससिविवि ताके बीच फोरि भरयो जुगल सिंगाररस कामरूप वरसत ।
सिता सितता रे तेरे राजित कटोरी विवि बीच धरे सालिग्राम मानो दोइ दरसत ।१९१।

॥ दोहा ॥

३ ६ ८ १
गुन रस वसु ससि माघ सित तेरसि अरु कविवार ।
छव भाष्य मति देषि सव भाषा किये विचार ।१९२।
तेइतिसते अरु साठिलौ गंद्य छंद परिमान ।
या क्रम सो सव जानिये निजमति के अनुमान ।१९३।

जमतन भाषा काव्य में ताते करयौ न सोइ ।
एक आदि बत्तीस लौं वरन छंद कवि लोइ ।१६४।
पंचावन अरु पांच सैं सकलछंद परिमान ।
से समतो उर आनिकैं भाषा कियौ विधान ।१६५।

इति श्री मन्महाराज कौमार विसेन वमावतस दिग्विजैसींघात्मज जगतसींघ कवि कृते भारती कंठाभरनो वरन वृति छंद लछनानिनें चतुर्थो अध्याय ।। ४ ।।

छद तोमर

६ ६ ८ १
रस अक वसु अउ इंदु । सम्वत रह्यौ परसिंदु ।
सित पछ जेठ पुनीत । कविवार दसमि सुनीत ।

दोहा

सिवप्रसाद कायथ रहै सदाराम रसलीन ।
पंडित देवी दीन हित यह पिगल लिखि दीन ।।

विषय—पिगल ग्रथ ।

रचनाकाल

३ ६ ८ १
गुन रस वसु ससि माघ सित तेरसि अरु कविवार ।
छद भाष्य मत देषि सब भाषा किये विचार ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है । केवल प्रथम एक पत्र लुप्त है । समस्त तेईस पत्रे उपलब्ध है ।

प्रस्तुत ग्रथ मे पिगल विचार वर्णित है । चार अध्याय और पाच सौ पचावन छदो मे ग्रथ समाप्त किया गया है । सभवत रचयिता का यह ग्रथ अब तक अप्राप्य रहा है । विषय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है । प्रस्तुत ग्रथ सभा के निमित्त प्राप्त कर लिया गया है ।

संख्या १०६ख. साहित्य सुधानिधि, रचयिता—जगतसिंह (कवि), कागज—आधुनिक, पत्र—१६, आकार—१२$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{3}{4}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप)—७८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५८ वि०, लिपिकाल—स० १६८३, प्राप्तिस्थान—प० युगलबिहारी जी मिश्र, "ब्रजराज पुस्तकालय" गधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

छद वरवै

शिवसुत एक रदन जप छवि उदोध ।
निकस्यौ मनो मेरुते सुरसरि सोत ।। १ ।।
ससि मुकुट श्रुति कुंडल केसर भाल ।
पीत वसन तन मुरली कर उरमाल ।। २ ।।

:o: :o: :o:

श्री गुर चरण सरोरुह पुनि सिर नाय ।
रचत भेद साहित्यक काव मति पाय ।। ६ ।।
श्री सरजू के उत्तर "गोंडा ग्राम" ।
तेहि पुर बसत कवि गनन आठौ याम ।। ७ ।।
तिनमे एक अल्प कवि अति मति मद ।
"जगतसिंह" सो वरनत वरवै छंद ।। ८ ।।
विरति जहा द्वादसपै पुनि मुनि अत ।
रीति यहै बरवै की कहैं अनंत ।। ६ ।।

चंद्रालोक आदि दै भाषा कीन ।
कहि साहित्य सुधानिधि बरवै बीनि ॥१०॥
संवत वसु शर वसु शशि अरु गुरुवार ।
शुक्ल पंचमी भादौ रच्यौ उदार ॥११॥

साहित्य सुधानिधि काव्य ललाम । अमर होत जे चाखत कवि मति धाम ॥
जलधारक धन करकसि सुनि मुख दानि । दुखदायक दायक सिष तिय सम मानि ॥१३॥

अंत—
नायकादि संचारी स्पतिहाव । रसमृगांकते जानो सब कविराय ।
भरत ओज अरु मम्मट श्री जयदेव । विश्वनाथ गोविंद भट दिक्षित भेव ।
भानुदत्त आदिक मत करि अनुमान । दियो प्रगट करि निषाद कवित्त विधान ॥
कहू छरसै छंतिसय धुनि बरवै बीनि । दसतरंग करि जानो ग्रंथ नवीन ॥

इति श्रीमन्महाराज कुमार बिसेन वंसावतंस दिग्विजैसिहात्मज जगतसिंह कविकृते साहित्य सुधानिधि सकल बोध निरूपनो नाम सप्तमस्तरंग ७ श्री संवत् १९४३ आसाढ़ शुक्ल सप्तम्यां गुरु वासरे समाप्तम् शुभभूयात् ॥

विषय—बरवै छंदो मे साहित्यशास्त्र वर्णन ।

रचनाकाल

८ ५ ८ १
संवत वसु शर वसु शशि अरु गुरुवार ।
शुक्ल पचमी भादौ रच्यौ उदार ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८५८ है। लिपिकाल सवत् १९४३ है। रचयिता का नाम जगतसिंह है। सरयू के उत्तर गोंडा ग्राम के ये निवासी थे। सभवत यह गोंडा ग्राम आजकल का गोंडा नगर है, जो जिला भी है। पुष्पिका के अनुसार ये बिसेन वश के महाराजकुमार दिग्विजसिंह के पुत्र थे।

प्रस्तुत रचना बरवै छदो मे की गई है और चद्रालोक के आधार पर रची गई है। इसमे सदेह नही कि कविता और विषय दोनो दृष्टियो से ग्रथ उत्तम है।

प्रस्तुत ग्रथ निम्नलिखित ग्रथो के साथ एक हस्तलेख मे है—

१ छदो विचार—सुखदेव मिश्र।

२ शृंगार शिरोमणि—यशवतसिंह।

संख्या १०७क. गुरुमहिमा, रचयिता—जगन्नाथदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६९° × ५¾° इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६० वि०, लिपिकाल—स० १९४४ वि०, प्राप्तिस्थान—माई रामदास जी कुटी, ग्राम—महेरू, डाक०—बेलाखारा, जिला—रायबरेली।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्री गुरुभे नमः ॥ अथ श्री गुरु महिमा लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट अंग से दंडवत प्रथम कीन्ह परनाम ।
श्री जगन्नाथ कर है गुरू सब विधि पूरन काम ॥

श्री गुरुदेव चरन चित लाऊ । हृदय ध्यान धरि सीस नवाऊ ॥
करि अस्तुति परकरमा दीजै । तनमनधन सब अरपन कीजै ॥
गुरू है ब्रह्मा सुर तेतीशा । गुरु बिन को जानत जगदीशा ॥
गुरू है नेम धर्म सब कीरा । गुरू है आवागमन निबेरा ॥
गुरू है ज्ञान ध्यान मम स्वामी । गुरू है सब के अंतरजामी ॥
गुरू बिन सब सूझत है धंधा । गुरू बिन जग भटकत जिमि अंधा ॥
गुरू तप तीरथ जप व्रत पूजा । गुरू बिन अवर नही हरि दूजा ॥
गुरू त्याग अवरे गुन गावं । सो सूधो जमपुर को जावं ॥

गुरू के मंत्र ह्रिदै नहीं धरई । सहजही जाई नर्क मह परई ॥
गुरू मंत्र कौ करै जो त्यागा । निकसै कोठ सो मरै अभागा ॥
अंत—
संध्या प्रात दिवस मध्याना । गुरू चरित्र को करै बषाना ॥
ग्यारस वार समावस पूनौ । पडै सुनै फल पावै दूनौ ॥
:o: :o: :o:
संवत सत्रह सै अरु शाठ । माघ मास उजियारी आठ ॥
भरती इंड अरू मंगल वारा । गुरू चरित्र भाषा विस्तारा ॥

इति श्री स्वामी तुलशीदाश सिष्य जगन्नाथदास विरचिते श्री गुरू महिमा सपूरनं शुभं-मस्तु संवत् १६४४ ॥ मार्ग शुक्ल प्रतिपदाया या वुधवासरं ॥

विषय—गुरु की महिमा का वर्णन ।

रचनाकाल

१७ ६०
संवत सत्रह सं अरू शाठ । माघ माम उजियारी आठ ॥
भरनी इंड अरू मगल वारा । गुरू चरित्र भाषा विस्तारा ॥

संख्या १०७ख. गुरु चरित्र (महिमा), रचयिता—जगन्नाथ कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० वलभद्र पाडेय, ग्राम—दादोपुर, डाक०—वरसठी, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गुरु चरित्र लिष्यते ॥ १ ॥
॥ दोहा ॥
अष्ट अग से दडवत प्रथमहि कीन प्रनाम ॥
जगन्नाथ करिहे गुरु सब विधि पुरण काम ॥ १ ॥
॥ चोपाई ॥
श्री गुरुदेव चरनचित लावो । ह्रदै ध्यान धरि शीश नवाउ ॥
करि अस्तुति परिक्रमा दीजे । तन मन धन सब अरपण कोजे ॥ २ ॥
गुरु हे ब्रह्मा सुर तेतीसा ॥ गुरु बिन को जानत जगदीसा ।
गुरु हे नेम धरम सब केरा । गुरु हे आवागमन निमेरा ॥ ३ ॥
गुरु हे ग्यान ध्यान ममस्वामी । गुरु हे सबके अतरजामी ॥
:o: :o: :o:

अंत—
संध्या प्रात दिस्य मध्याना ॥ गुरु चरित्र को पढे सुजाना ॥
इग्यारसि वारस मावस दूनो ॥ पढे पून फल पावे दूनो ॥ ३०
अश्वमेध दस सहस करावे ॥ वाजपेय शतकोटि करावे ॥
तीरथ सकल भूमि फिरि आवे ॥ सो फल गुरु चरित्र पढ़ि पावे ॥ ३१
संवत सत्रसहेसे अरु साठे ॥ माघ मास उजियारी आवे ॥
भरणी नक्षत्र अरु मंत्र वारा ॥ गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ॥ ३२
गुरु गुरु राह विधि दिन प्रति कहो ॥ नागो गुणो कवहूँ न रहो ॥
गुरु चरित्र महिमा निधि पाई ॥ भ्रम मिटि गए उत्तरन गति आई ॥
ईति श्री जगन्नाथ विरचित गुरु चरित्र सपूर्ण ॥ १ ॥

विषय—गुरु महिमा वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रसहेसे अरु साठे ॥ माघ मास उजियारी आवे ॥
भरणी नक्षत्र अरु मंत्र वारा ॥ गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। समस्त तीन पत्ते हैं। रचनाकाल सं० १७६० वि० है। लिपिकाल दिया नहीं। रचयिता 'जगन्नाथ' है।

संख्या १०८. हरिश्चंद्रकथा, रचयिता—जगन्नाथ या जन जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—९ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपिकाल—१९२० वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री राम जी सहए श्री गणेसन्मह ॥

पीत के बचन राम बन लीन्ह। ब्रह्म बरख जोग तप कीन्ह।
सोचतराम आए चलिताहा। मुनी आगस्त के आसरम जाहा।
लछीमन सहीत कीन प्रनमा। हे रिखी हरेहु जानकी बमा।
नही जानो केहि पंथ सिधरी। कोहरी लीन दीन दुष भरी।
औग मरन को हम उठीधए। तेही पाछे लछीमन बली भ्रए।
राही अकेल कुटी सिआ रनी। रीपु हरी लीन कोइ अभीमनी।
ए रीषं अब हमका करं परं दुरगम दुष आजु।
जीअनते मरन भल एक पथ दुइ काजा।
:o: :o: :o:
मुनि अगस्त कही रघुनथ सुनए। कामुक बीपती परी अधिकाई।
सतजुग बीपती परी हरीचद। पनी मारं डोमघर मंद।
मदनवती रोहीतास कुमरा। तन बीक्री जी कीन्ह भुअरा।
मरघट अगोरही निसुदिन ताहा। गगा पतित पावनी जहां।
सुनी रघुवश धानो रघुनदा। कते बीपती परी हरीचदा।

दोहा

कहहु मुनी मोहि सो सब कथा एक एक समुझाए।
बीपती कालमह दुपसुनं नोजदुष जाए मिटए।

झुलना

दोहा

कहा चंडाल न्रीपतिसो काटु जाए एही मांथ।
हार चोराएसी भूपके लेहु खर्ग गही हाथ।

छंद

अंत—हरीचंद राजा खग लै तब पर्कार झोटा. . . की मारन चहै।
तहां कीन्हेउ मदनावती नही न्रीपती कीछु कहै।
तुम्हसे अस नही भइ रानी विधि लिखा सोई भई।
अब सीस नवबहु खर्ग मारही संती अजहु नहीं गई।
तब दीन्ह सीस नवाएरानी ख्रग लं मारन चहै।
तब भएउ जं जै देव बानी बाजु बाज नगा रहै।
चढी रंथ सकल सुर देवता हरीचंद पतीका आएऊ।
ताही ख्रग न्रीप को छोरि लेहि वधत आनि छोड़ाएऊ।
धनी धनी न्रीप हरीचद साचे सती सुक्रीत सब रहा।
सुरदेवता मिलि जं जं उचारे धनी भूपति सब कहा।
गही चरन विस्वामित्र मिलेउ करी विनय बहु आरती।
छीमा सब अपराध कीजं धनी तुम धरमारथी।
अब अतरीछको राजपाएउ सब पलटे रघुनाथ जी।
जो सुनं हरीचद को सत सुषहोए ताकह दुष हरं।
जनी जगरनाथ अनाथ हरी बीनु सती सो बिनती करं।

इति श्री हरिचन्द संती संपुरम समात १९२० ॥

विषय—राजा हरिश्चंद्र की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है । रचनाकाल दिया नहीं । लिपिकाल संवत् १६२० वि० है । रचयिता 'जन जगन्नाथ' हैं । इनका अन्य परिचय नहीं मिलता ।

संख्या १०६क. जुद्ध ज्योतिष, रचयिता—जगन्नाथ सिंह बिसेन, (स्थान–धनगढ, प्रतापगढ) कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—६⅘ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—३१५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८७ वि०, लिपिकाल—सं० १६१४ वि०, प्राप्तिस्थान—राय अंबिका नाथ सिंह जी (लाल साहब), नाइन स्टेट, डाक०–सूची, जिला–रायबरेली ।

आदि—....................

त्रै अफल त्रै झटित एक गुद कीन ॥३५॥
त्रै राजस त्रै तामस वृद्ध नषत पुनि चारि ।
तीनि मृत्यु दस अंग यह क्रमते लिख्यौ सुधारि ॥३६॥
जिह्वा मे ससि होइ जौ होइ भयंकर रारि ।
पुष्पित मे जाई जई लाभ छेम अधिकारि ॥३७॥
फन्नित लेइ गज वाजि धन जाई सत्रु संघारि ।
मध्यम फल कछु अफल को अस्थाई कि हारि ॥३८॥
झटितहु मे जाई जई कोय सिद्धि सब होइ ।
गुद मो जाई को मरं कन्या सुद्धिरि सोई ॥३६॥

अंत—चयन सिंघ के लघु तनय जासु नाम अवसान ।
ताके देवी बकससुत जाहिर जोरु क्रपान ॥३१७॥
लासु लाल रघुनाथ सुत सुचि उदार रन हर्ष ।
जगरनाथ ताको अनुज रच्यौ ग्रंथ उपकर्ष ॥३१८॥
:o: :o: :o:
एक हजार आठ स सै सात असी के वर्ष ।
स.........षाढ सुदि रच्यौ ग्रंथ उत्कर्ष ॥३२०॥

इति जुद्ध विजय जोतिस संग्रह ग्रंथ जगन्नाथ सिंघ बिसेन तालुकदार धनगढ परगणे ठिगवस के संमपूर्णम् सुभंभूयात् ॥ मीती एगहन सुदी ६ वार बुद्ध क सम्वत् १६१४ ॥ लिखा राम रतन मिसिर

विषय—जुद्ध ज्योतिष वर्णन ।

रचनाकाल

एक हजार आठ स सै सात असी के वर्ष ।
स.........षाठ सुदि रच्यौ ग्रंथ उत्कर्ष ॥३२०॥

संख्या १०६ख. जुद्ध जुजोत्सिव (युद्ध ज्योतिष) रचयिता—जगन्नाथ सिंह, (स्थान–धिंगवग, प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—६ × ४। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—३६७, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० मंगलाप्रसाद जी द्विवेदी, ग्राम–गोमहर, डाक०–देगुर, जिला–प्रतापगढ ।

आदि—....................

॥ इति राशिया ॥

नषत घटी गत नवगुणहु भाग बीस कर देहु ।
लब्धा जोरी शशि नषतमोतत्कालिक करि लेहु ।११।
यही भांति सो सकल ग्रह निज नक्षत्र परिमान ।
साठि विभागे होइ जो सोई घरी विधान ।१२।
राहु नक्षत्र कर्त्तरी सो ताजि तेरह सो जीव ।
पुनि तेरह मृतु एक गुद नषत पंचदश शीव ।१३।

जाई की जय जानिये जीव पक्ष शशि भानु ।
दुवो होई मृतु पक्षमो स्थायी जिय जानु ।१४।
भानु मृत्यु शशि जीव शुभ अशुभ भए विपरीत ।
मृतु ते भलगुद भल गुदाते है कर्त्तारी पुनीत ।१५।
नषत एम मुष सप्त उर षष उदर गुद एक ।
षष्ट पुक्ष अरु सप्त शिर क्रमते करो विवेक ।१६।
मुष मो रवि शशि होहि जौ दूनौ सैन्य संहार ।
मुषमो रवि उर निशाकर जाइहि लाभ अपार ।१७।

अंत—रामपुरा डेरवा विषे नृप वहु भये महान ।
वढै ग्रंथ वरनत चरित करौ न तासु बषान ।४२।
१ २ ३
राय होम काशीतनै तासु तनै सुलतान ।
जिन वनयो 'ठिधवस' रुचिर अलकापुरी समान ।४३।
४
भरथराय ताके तनय सोमवंश नृपसंग ।
तनु त्यागो सग्राम मो विविध भांति करि जंग ।४४।
५ ६
कनकसिंह ताके अनुज वनसिंह तासु किसोर ।
जिन दलि शत्रु समूह निज भूमि कियो एक ठोर ।४५।
७
भरथराम के लक्षनसिंह तिनजायो षटवाल ।
८
हुलास १ सेर अरु तेज ३ मनि ४ मोहन ५ नयन ६ विसाल ।४६।
तासो वाढे वहुत सव पांच पुत्र को वश ।
चयनसिंह लघु सुत भए कुल विशेन अवतंश ।४७।
तिनके जिए किशोरदुइ ठाकुर जेठ रिसाल ।
चारिपुत्र उपजाइकै कियो प्रजा प्रतिपाल ।४८।
सुमतिभवानी बकस अरु झामसिंह गभीर ।
कामसिंह हरिभक्ति दिढ़ मेहरवान रनधीर ।४९।
झामसिंह तामे वियो उद्धत कर्म अनेक ।
तासुलाल महिपाल सुत निपुन महीप विवेक ।५०।
चयनसिंह को लघुतनै तासुनाम अवसान ।
ताके देवी वकससुत जाहिर जासु कृपान ।५१।
तासुलाल रघुनाथ सुत सुवि उदार रन हर्ष ।
जगन्नाथ ताको अनुज रच्यो ग्रथ (उत्कर्ष) ।५२।
वत्सगोत्र वंशावरी वरन्यो ग्र........(अपूर्ण)

विषय—युद्ध ज्योतिष तथा वत्सगोत्र वंशावली वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है । केवल तैंतीस पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल तथा लिपिकाल का उल्लेख नहीं ।

संख्या ११०. अनन्यसार, रचयिता—जनलाल, (?) कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—८½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—७८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

आदि—

श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ अनन्यसार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

सुमिरौं श्री हरिवंश कौ पिय प्यारी सुख रासि ।
धर्म अनन्य जु कठिन है राजत विपिन विलास॥

:o: :o: :o:

श्री हरिवंश कृपा मुकुट सीस आपने धारि ।
अनन्यसार के करन कौं कीनौ मनहि विचारि॥ ३॥

॥ कवित्त ॥

प्रथम विलास माहि हित जू को रूप कह्यौ द्वितीय विलास माहि बंसावलि गाई है ।
तृतीय विलास माहि जन्म औ जनेऊ ब्याह प्यारी जू कृपा करि वृंदावन आईयें ।
चतुरियें विलास माह वृंदावन कुंज कुंज नई नई भांतिन सौ सोभा मन लाईयें ।
पंचमविलास माहि सिष्य सबै हितजू के तिनकी वह कथा कही सुने मन लाइयें॥ ६॥

:o: :o: :o:

अंत—ललितादिक हित सखी कुंज रंध्रनि दृग राखें ।
मंद मंद मृदु बचन सुनत पूजत अभिलाखें ।
कबहुक साज मिलाइ कहत कीनी तांनन कौ ।
सेंन समें आनंद होत दंपति प्रानन कौ ।
मगन होत तन विवस ह्वै सूचत सुष स्रक रहत जब ।
गोर स्याम सुर्षाराधु में सुरत मीन ह्वै तिरत सब॥३१॥
श्री वृंदावन कुंज सुख कापें कह्यौ जु जाय ।
श्री जतनलाल हित कृपा तें कछु बरनौ हुलसाय॥३२॥

इति श्री वृंदावन सोभा वर्णनं चतुर्थ विलास॥४॥ शुभमस्तु श्री राधाकृष्ण॥

विषय—इसमें निम्नलिखित चार अध्याय है—
१ श्री हितजू रूप वर्णन—१ से ४ पत्र तक
२ श्री हितजू की वंशावली—४ से ८ पत्र तक
३ श्री हितजू को जनेऊ औ ब्याह ८ से ३५ पत्र तक
४ श्री वृंदावन की शोभा वर्णन ३५ से ५६ पत्र तक
पाँचवाँ विलास नहीं है जिसमें श्री हित हरिवंश जी के शिष्यों की कथाएँ हैं।

संख्या १११. सिद्धांत मुक्तावली, रचयिता—जनकराजकिशोरीशरण, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—१०$\frac{१}{१०}$ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—२६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७, वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित (हिंदी विभाग), विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री जानकीवल्लभोविजयते॥

कृधिय किरीट मणि कवि विकसित पद नरवर धुते श्री मन्महाराजा सर्व भौमस्य पंक्तिरथस्यात्मजस्य सर्व सऊण सम्वेष्टितस्य श्री मिथिलेसात्मज वल्लभस्याति वल्लभायतत्पादांबुज मधु पद्मणये श्री मन्मारुतनंदनाय नम.

निज गुरु पदरज बंदि पुनि सुमिरय बन सुतपाय ।
करौ सिधांत मुक्तावली गति अनन्य दरसाय॥ १॥
जगद दुखद जिय जानिके त्यागे जग व्यवहार ।
राम मिलन हित षोजही सो पुनि संत उदार॥ २॥

कलि पाखंडी वेष बहु लोभेण ते नहि वेषि ।
इनमें हरिजू ना मिलें वैष्णव मे हरिलेषि ।। ३ ।।
वैष्णव ते सौगुन अधिक रामभक्त जिय जानु ।
जिनके सरनागत मिले राम सिया दृढ मानु ।। ४ ।।
तिलक मधुर माला जुगल भुज अंकित धनुवान ।
राम सिया जुत नाम निज रामभक्त तेहि जान ।। ५ ।।

अंत—पुनि वशिष्ट आदिकन के निकट दास्य अनुभाव ।
करि आनंदत करत अति दिए बढ़ावत चाव ।।१५५।।
रसिक सिरोमनि रसन गृह रघुनंदन अति एव ।
रसिक संग विनु नेकहू जानत नहि यह भेव ।।१५६।।
यह सिधांत आदित्यइ वसै जासु उर व्योम ।
अति अनन्यता होत गति मिश्रित मत राम सोम ।।१५७।।२५०।।

इति श्री सीताराम सिद्धांत मुक्तावली श्री जनककिसोरीसरन कृत उत्तर भाग समाप्तं । शुभमस्तु मंगलंददात भादो सुदि ८ सं० १९०७ मुः टहरौ ।

विषय—वैष्णव भक्ति सिद्धांत वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १९०७ है । रचयिता का नाम जनककिशोरीशरण है जोकि पुष्पिका में दिया है । अन्य वृत्त दिया नहीं ।

प्रस्तुत ग्रंथ निम्नलिखित ग्रंथों के साथ एक हस्तलेख में है—

१ सिद्धांत पदावली—कृपानिवास ।

२ नेहप्रकाश—बालकृष्ण कृत ।

इनके भी विवरण ले लिए गए हे ।

संख्या ११२. प्रश्न मनोरमा भाषा टीका, रचयिता—जनज्वाला, स्थान—हजरतगंज, लखनऊ), कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—७, आकार—$5\frac{1}{2} \times 3\frac{7}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्रो श्री गणेशाय नमः अथ प्रश्न मनोरमा भाषा टी०
सुमिर शारदा को हृदेय गणपति शेष मनाय ।
मनोरमा भाषा करो तुमहीं करौ शहाँय ।।

श्लोक

प्रणम्या नन्दरूप तमानन्दैक निकेतनम् ।
गर्गो वुद्धिःमताप्रीत्यै प्रश्नविद्यामाथाकरोति ।। १ ।।
वदौ प्रमात्मानन्दमय आनन्द रूप अधार ।
जाके पलक कटाक्ष तें प्रगट भयो संसार ।।
वन्दौ गर्गो के चरण जिन्ह की वुद्धि अपार ।
पण्डित जन के प्रीति हित प्रश्न कीन्ह प्रचार ।। १ ।।
वर्ग वर्णं प्रमाणं च सस्वरं ताडितं मिथा ।
पिण्ड सज्ञा भवेत्तस्य यथा भागेस्तु कल्पना ।। २ ।।

दो०

वर्ण व्यजन के अंक को स्वर वर्णो कह देहु ।
उभय आंक के गुणनफल पिण्ड जानि तेहि लेहू ।।

अंत— मू०

स्वारादौतु स्वभवांके व्यञ्जनादौत् वर्गतः ।
पूरितेहृतशेषेण फलं विद्या विचक्षणः ।।२३।।

स्वरादि स्वाभाव के व्यञ्जनादि वर्णत् ।
हतो परस्पर दुहुन को बहुविधि फल वर्णत ।।
सम्वत मुनि युग नंद शशि माघ शुक्ल भृगुवार ।
मनोरमा भाषा भयो तिथि एकादशी मँझार ।।
लक्षमणपुर प्रशिद्ध है सबजो लइन वखान ।
हजरतिगंज के निकटहि जनज्वाला गो स्थान ।।
नहिं पिंगल नहि छंद गति नही वर्ण को ज्ञान ।
पण्डितजन के कृपा से दोहा कीन्ह प्रदान ।।

इति श्री प्रश्न मनोरमा भाषा तिलक समाप्त भूयात्

विषय—प्रश्न द्वारा शकुन विचार किया गया है ।

रचनाकाल

७ २ ९ १
सम्वत मुनि युग नंद शशि माघ शुक्ल भृगुवार ।
मनोरमा भाषा भयो तिथि एकादशी मँझार ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवन् १९२७ है, लिपिकाल भी यही जान पडता है । अतः प्रस्तुत प्रति, मूल प्रति विदित होती है ।

संख्या ११३. वैराग बारहमासा, रचयिता—जन बेगम, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९⅞ × ५⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—३९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—वैराग बारहमासाय लिष्यत ।। छंद ।।
(अ) साढ़ सिरजन हार भज लै जगत कू विसराइयैं ।
मनष देही अधिक जानो वड़े भागन पाइयैं ।
जत सत सील संतोष दिढ वृत अमि प्रेम वढ़ाइयैं ।
तज काम क्रोध और मोह लोभा सरन गुरु की आइयैं ।। १ ।।

मध्य—सावण सिर पं काल ठाढा चेत क्यों न संभारही ।
तज देह झूठी वासना कर साध संगति प्यारही ।
छिन छि तेरी आव छीजें समझ मूढ गवारही ।
अंत समै पछतावगे जम देह अधिकी मारही ।। २ ।।
:o: :o: :o:

अंत—जेठ जिव की दुई नासी सीतलता अंतर भई ।
गुर छौंन गुर क्रिपा करी यह कथा करनी रसमई ।
वैराग बारहमासिया सिष मोइ दीनी नित नई ।
जन बेगम आधीन के यह सकल अंतर मै छई ।।१२।।

इति वैराग बारहमासा संपूरन ।।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम "जनबेगम" है । इन्होंने अपने गुरु का नाम गुरु छौना दिया है ।

संख्या ११४. भ्रमरगीत (भवर गीत), रचयिता—जनमुकुंद, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१७९, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९८ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—।। श्री गोपाल जी ।। अथ भवरगीत संलीषिते ।।

ऊधौ कौ उपदेस सुनो वृज नागरी ।
रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी ।
प्रेमधुजा रस रूपनी उपजावत सुष पुंज ।
सुंदर स्याम विलासिनी नव वृंदावन कुंज ।।
सुनो वृज नागरी ।। १ ।।
कहन स्यांम संदेस एक मै तुमपं आयो ।
कहन समै सकेत कहूं औसर नही पायो ।
सोचत ही मन मै रह्यो कब पाऊं एक ठाव ।
कह संदेस नंदलाल को बहुरि मधुपुरि जाऊ ।
सुनो व्रज नागरी ।। २ ।।

:o: :o: :o:

अंत—गोपी आप दोषापइ एक करिकं बनवारी ।
ऊधौ को भ्रम निवारि व्यामोहक जारी ।
अपनों रूप दिषाय कं लीनो बहुरि दुराय ।
जन मुकुंद पावन भयो सो यह लीला गाय ।
प्रेम रस पुंजनी ।।७५।।

इति श्री भवरगीत संपूर्णम् ।। श्री कृष्ण जी यावत पुस्तकं दृष्टा ।। तावत लिष्यते मया ।। अथवा सुध असुधं वा ।। मम दोसो न दैवतं ।। १ ।। भाद्रपद कृष्ण २ ।। मंगलवार ।। सवत ।।१८६६।। का लिषतं कृतं बलदेव सिघ विराम्हरण पाटरण का ।। पठनार्थं शुभं भूयात् ।।

विषय—गोपी उद्धव सम्वाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल दिया नहीं । लिपिकाल सवत् १८६८ वि० है ।

संख्या ११५. ज्ञानार्णव (भाषा टीका), रचयिता—जयचद, कागज—देशी, पत्र—३५२, आकार—१३½ × ८½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—७४८०, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दिगबर जैन मदिर, अहियागज, टाट पट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—...............तैः कुशास्त्रे कि प्रयोजनम् ।। यैर्मनः क्षिप्यते क्षिप्रं पुरन्ते मोह सागरे ।।२८।।

अर्थ—उन शास्त्रो के पढने से मुनने से वा जानने मे कहा प्रयोजन (लाभ) है ।। जिनसे जीवो का चित्त (मन) दुरन्त तथा दुर्निवार मोह समुद्र मे पड़ जाता है ।।

:o: :o: :o:

मध्य— ।। सोरठा ।।

जो गृह त्यागी होय सम्यक् रत्न त्रय विना ।
ध्यान योग्य नहि सोय गृह वासी की का कथा ।। १ ।।

इति श्री ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे शुभ चन्द्राचार्य विरचिते चतुर्थ सर्गः ।।

:o: :o: :o:

अंत— ।। श्लोक ।।

कल्याण विभव श्रीमान् सर्वाभ्युदय सूचकं ।
समासाद्य जगद्वंद्यं त्रैलोक्याधिपतिर्भवेत् ।।४०।।

अर्थ—बहुरि सो भगवान् .

विषय—जैन धर्मानुसार ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ११६. जुगलानंदसुधा समुद्र, माधुर्यलहरी सिकरावली, अष्टयामसेवा प्रकरण, कागज– देशी, पत्र—४२, आकार—१३॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण—(अनुष्टुप)—१५५६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० भिक्षा मिश्र, ग्राम व डाक०—बेलहर, जिला–बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ छप्पै ॥

श्री गुरु चरण प्रकाश वृद्धि कुमुदिनिहि सुधाकर।
उदंकमल कल्याण निविडतम कुमति विभाकर।
मनवांछित तरु कल्प चित्त चितक चिंतामनि।
मोह विघनं तृणपुंज नासिबे प्रबल अग्नि गण।
शरणागत पालक दीन जन जुग पद भव भय हरत।
जै जै दयाल दंडवतधरि अष्टअंग नै नै करत। १
श्री गुरु कृपा निधान सुजस सब वेद बखानै।
कृष्णदास गुणरूप प्रगट इतिहास पुरानै।
सोई ममगुरु होइ कृपाकरि रीति बताई।
मै निज मति अनुसार हिए धरि मति सम गाई।
पद युक्त सकल माधुर्य की वर छंद प्रबंध रचाइ।
माधुर्य लहर सिकरावली यह नाम धरी मनभाइ। २
श्री राधापद पदुम परम सुंदर सुषदाई।
कोमल परम पुनीत पूज्य ब्रह्मादिक गाई।
सुरुचि सुवास सुशील सरस शोभा सुखधामा।
सदा एक रस रहत स्याम अलि मन विश्रामा।
सेवत दयाल मन क्रम वचन लहत मनोरथ चारि फल।
जै जैति जैति कीरति कुअरि वदत कुरु मम आस अल। ३

छंद हरिगीत

कुरु आस पूरन चरन विमल सु आनि दे कीरति लली।
जाते मिले मतकार सज्जन सभामह सुंदर थली।
नहि पढ्यो भाषा ससकृत अति चाह हरि जसगानकी।
विरदावली वर वरनिहौं श्री मदन मोहन ध्यान की। ४

अंत— छप्पै

गीत मधुर धुनि सुनहि गुनहि चित नैन झपावत।
बिथुरी अलक सवा. . . . . ।
:o: :o: :o:
अष्ट जाम सवा कछुक स्वल्प अल्प मति भाष।
सुधासिंधु अलकावली जानिपरत कन चाष।१०

छप्पै

जुगलानंद समुद्रसुधा अंग अंग छवि गहरी।
अति अथाह अनपार अगम माधुर्य लहरी।
उठत प्रेम झककोर अंगजापाय हलोरै।
सिकरावलि प्रगटाय रसिकहिय परि चहुँ ओरै।
श्री कृष्णदास गुरुको कृपा हिय परि प्रगटी जगत।
श्री राधा मदनमोहन चरित होय छंदमय जगमगत।७६।

इति श्री जुगलानंदसुधा समुद्र माधुर्यलहरी सीकरावली अष्टयाम सेवा प्रकरण समाप्त संवत् १८७३ ॥

विषय—श्री राधाकृष्ण की अष्टयाम सेवाविधि वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मे राधा कृष्ण की अष्टयाम सेवा का विस्तृत वर्णन है। रचना काव्य की दृष्टि से उत्तम तथा साहित्यिक कोटि की है।

संख्या ११७. सतसई, रचयिता—(रायराजा) जयसिंह (रायराजा जैसिंगराय), कागज—आधुनिक, पत्र—२६, आकार—७¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६५७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् हरिशरणदास जी (हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय), ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबंकी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ संतसई लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

अंकुसधर ध्वज कुलिशधर सुषद कमलधर जोइ।
धरौ हृदं कमलाधरो हृदय कमल मम सोइ॥१॥
जै गुर जै गोविद जै सत विष्णु जग त्रात।
जै गनपति पति गौरि जै सिंघ बाहनी मात॥२॥
पार न पायो सेस से रहेउ सहस मुष बाय।
यक मुषिया दुषिया मनुज कहा सकै गुन गाइ॥३॥
रसना पाटी पर लिषत हैं अक्षर जो कोई।
डारत अक्षर धोइसो हैं चालीस हैं दोइ॥४॥

:o: :o: :o:

चलत चलत पथीन के आवत निकट मुकाम।
रटत रटत त्यो हरि जनन निकट होत हरि धाम॥६॥
अवर उपाउ न पाउ विन नाउ नाउ विन नाउ।
तरे तरत तरिहै जितै येही नाँउ उपाउ॥१०॥

अंत—सतसई सतन करी श्रवन सही करि दीन्ह।
अनलोनी भाजी विदुस मनु हरि भोजन कीन्ह॥३१०॥
संसकृत बानी ब्रह्म सम साषा हरि औतार।
ग्यानी विग्यानी लिये मोदन करै विहार॥३११॥
ससकृत भाषा द्वो परे काम धेनु अरु बाछ।
हरि चरित्र मिश्रित मिलि मीठो दूधो छाछ॥३१२॥
सतसइया प्रति दोहरा सोन विहारी लीन।
जै प्रभु अक्षर अर्थ सब संत नेवछावरि कीन॥३१३॥

इति श्रीरायराजा जैसिहराय कृत भाषा सतसई नाम ग्रंथ संपूरन सुभमस्तु॥ जेठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ शुक्र वासरे श्रीसम्मत १६५७

विषय—हरिभजन और ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या ११८. नासिकेतपुरान, रचयिता—जवाहिर, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१० × ४॥ इंच, परिमाण (अनुष्टुप)—३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० श्रीधर जी दुबे, ग्राम—वैष्णवपुर, डाक०—कलवारी, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री दुर्गा सहाय ॥

दोहा

प्रभु त्रिवेदी दत्त सुत नाम जवाहिर तासु।
नाकेत इतिहास वर भाषा कीन्ह प्रकास।

चौपाई

प्रेम पुलकित वरनि न जाई। तव नृप कहा सुनहु मुणिराई।
मष एह धन्य मुनीश हमारी। भएउ धन्य मैं कृपा तुम्हारी।

चरण प्रछालि भवन छिलकावा । अति विशाल आसन बैठावा ।
आए चढ़ि चढ़ि देव देवाना । महिमा एक सबका सनमाना ।
तब महिपाल जोरि जुग पानी । कहत व्यास मुनि ते मृदुबानी ।
नाथ नीति य थ रीति रशाला । कहहु शो कथा...प्रशाला ।
मुनि मुनीश तब कथा चलाई । सावधान सुनु नृप चितलाई ।
रिषय एक उद्यालक नामा । भजन भक्ति केर सुष धामा ।

दोहा

सघन वन विपट अति लसत सरोवर तीर ।
तथा मुनि अस्थान कीन्ह निज विमल ग्यान मति धीर ।

अंत—

दोहा

प्रभु इस्माके चरित वर प्रभु गृह जानि न जाई ।
महाधीर मुनि ताहिको मरणशि व्यापेउ आई ।

चौपाई

जागये जौमुनि नायक गवहीं । मनसिज वान हतेउ उर जवहीं ।
भएउ छोभ वहु मुनि मन माहीं । उद्यालक मुनि कछु थिर नाहीं ।
सुक्र सोषलित भए मुनिकेरे । तनभ चेत चहुदिसि हेरे ।
तव मुनीस समज्जन कीन्हा । वरिज...व तुरत सो लीन्हा ।

—अपूर्ण

विषय—उद्यालक मुनि की कथा (नासकेत कथा) का वर्णन ।

संख्या ११६. तीरथ के पडा (सत्यनामी पथ) रचयिता—जवाहिरदास, अहलाददास और गिरवरदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८७६ और १८८४ वि०, लिपिकाल—संवत् १९०२ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम-कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबंकी ।

आदि—**श्री सतगुर सहाइ ॥**

दोहा दसषत किहिनि मथुरा म जवाहिर साहेब के माँता ॥

दोहा

श्री जगजीवनि जग विदित चद्रवंस औतार ।
ग्राम सरदहा भूमिमहँ साहेब अधम उधार ॥ १ ॥
तिन्हकेसुत आसन अचल नाम जलालीदास ।
तिनके सुत धौकल भए गिरवर सधन प्रकास ॥ २ ॥
नाम जवाहिर प्रगटमे गिरवर सुवन प्रवीन ।
तिनके सुत जसकरन जू प्रगट भजन लौलीन ॥ ३ ॥
जननि जवाहिरदास की मथुरा दरसन हेत ।
आई प्रीति समेत अति दरसन करि सत चेत ॥ ४ ॥
झुंन झुंन फुंन फुंन विप्र को अस्थापन हम कीन ॥
सत्यनाम के पंथमाँ एह अग्याह म दीन ॥ ५ ॥
परगनव दौसराइ को कोटवा म अस्थान ।
संमत अठारह सै रहे उपर छिहतरि जान ॥ ६ ॥
कातिक सुदि जम दुइज को करि जमुना अस्नान ।
मथुरा विदावन सहित दरसन कियो प्रमान ॥ ७ ॥
दसषत मथुरा म कीन्ह जवाहिर साहेब ।

॥ दोहा ॥

सत्यनाम के पंथमा मथुरा आवै कोइ ।
माँने झुंन झुंन फुन फुनै अग्या सतगुर सोइ ॥ १ ॥

जो कोऊ आवइ भेष मा सो मांने परमान . .
दछिनह चौवे दीजिए ससत्य नाम को जांनि ।। २ ।।
दसषत जवाहिर दास के लिषि सतमारग हेत ।
सो प्रमान सब मिलि करब सुमिरन सत्य समेत ।। ३ ।।

अंत—संमत अठारह सं चौरासी मिती चंत्र रविवार ।
दसषत पंचमी को कियो सतगुर सरन विचार ।। ४ ।।
दसषत अहलाद साहेब के
दसषत जन अहलात के जगजीवन को दास ।
कहिने झुंन झुन विप्रको चौवे मथुरा वास ।।
दसषत भगत साहेब गिरवरदास जीवके

।। दोहा ।।

सत्यनाम के पंथमा जो कोउ अवधहि जाइ ।
दछिना सहित सो प्रेम सो देइ रिषिनाथ बोलाइ ।। १ ।।
सत्यनाम के पथमा प्राग जाइ जो कोइ ।
मानै जंगवहादुरहि अग्या सतगुर सोई ।। २ ।।

विषय—झुन झुन फन फन, रिषिनाथ और जगबहादुर नाम के व्यक्तियों को क्रमशः मथुरा, अयोध्या और प्रयाग, तीर्थों में सत्यनाम। पंडाओं के रूप में चुना गया है।

संख्या १२०क. शब्दप्रकाश, रचयिता—जवाहिरपति, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—६६, आकार—८३/४ × ६६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—८४०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—सत सुक्रित आदि अदलि अजर अचिन्ता पुर्स मुनिन्द्र करुना मैं कब्बीर साहेब की दया सो लिष्यते ग्रंथ सब्दप्रकास ।।

सब्द रूप विग्यान मैं सतगुर सत्य "कबीर" ।
ज्वाहिर पति तेहि सरन को पावैं मति गभीर ।। १ ।।
चिन्ता मिलन अपार मोहि सार सब्द विग्यान ।
वानी आई गंब से तजु चकपक कल कांन ।। २ ।।
"रत्नपति" सतगुर मिल्यो भेद ग्यान समुझाए ।
जीव भर्म सब मेटि के सुरति सब्द मिलाए ।। ३ ।।

शब्द चजरीक

गुरु के चरन सरन पाये अमर पद सिताना
जाहि सतगुर ह्वो दयाल ताहि छिन मे करैं निहाल ।
मूल भेद पाये रतन मुक्ति मनमाना ।।
सरन सरन कर पुकार जाते होवे जिव उवार ।
काल प्रवल सिर पै ठाढ रैन दिवस बांना ।।
:o: :o: :o:
रहनि गहनि मति भाषि नांम अमृत फल का चाषि ।
ज्वाहिरपति गुरुदया से सब्द मो समाना ।। ८ ।।
:o: :o: :o:

अंत—पाप पुन्य जम जाल पसारा फँसे जीव सब आई ।
देई देवा आसन कीजैं सतगुर का गुन गाई ।। ३ ।।
कर्म सुभासुभ जग मै फांसी पांके फंद अरुझाई ।
ज्वाहिरपति सतगुर की दाया आदि नाम सुधि पाई ।। ४ ।।१४०।।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १२०ख. साखी, रचयिता—जवाहिरपति, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—८३/१० × ६४/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—अथ लिष्यते साखी ॥

सतगुर दया से पाइये नाम निरंतर मेल ।
प्रेम प्रीत मिलि पावै साँचा सब्द अकेल ॥ १ ॥
अछर सब्द अषंड है सकल सब्द है षंड ।
वोहं सोहं छर कही छरं जोति ब्रहमंड ॥ २ ॥
ररंकार अज्या कहै चारि अवस्था भर्म ।
पाँचो मुंद्रा थिर नही अस्थिर पद निह कर्म ॥ ३ ॥
चारि वेद षट शस्त्र जो वावन अछर जोये ।
न्यारा ब्रह्म अषंड है ज्वाहिरपति लषु सोये ॥ ४ ॥
इंगला पिंगला सुषमना भृकुटी सबको धाम ।
निःअछर स्वाँसा रहित ताको भिन्य मोक़ाम ॥ ५ ॥
:o: :o: :o:

अंत—सावन चौथि अंजोरि तिथि नावासी सन्बुधवार ।
दूलनपति तन त्याग करि जग तजि सब्द अधार ॥१२५॥
सब्द प्रकासिक ग्रंथ येह मति अनुरूप विचारिकरि ।
जवाहिर पति गुरु पथ कहि संन्त सुषी षल परही जरि ॥१३६॥

समाप्त हुवा ग्रंथ येह ॥ लिष्या अदेनपति साधू अपने वास्ते ।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १२१. अढाई दीप की पूजा, रचयिता—जवाहरलाल, कागज—देशी, पत्र—३७४, आकार—१४८/१० × ७१/२ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१००९८, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८८७, लिपिकाल—सं० १९४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाट पट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ ऊँनमः ॥ अथ अढ़ाईदीप की पूजा भाषा लिख्यते ॥

॥ दोहरा ॥

प्रथम नमो अरिहंत को सिद्ध सूरउ आय ।
साध सकल बंदौं चरन मन वच सीस नवाय ॥ १ ॥
वृषभ नाथ जिन आदि दै अंतिम वीर जिनंद ।
नमन करौं कर जोरि कै हरौं जगत को फंद ॥ २ ॥
दीप अढाई के विषै वर्तमान जिन वीस ।
भव समुद्र तारन तरन नमो नाथ जस सीस ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:

अंत— ॥ घना ॥ ९ ॥

अरिहंतादिक पंचपद माला परम रसाल ।
जे भविधारैं कंठ मैं पावैं सुर सिव हाल ॥
:o: :o: :o:

॥ गीता छंद ॥

जिन राज जग्य विधान जे नर करहि अतही प्रीत सो ।
पुनि गीत नृत्यं बजाइ बाजे महा मंगल रीति सो ।
ते होय इंद्र धनिंद्र चक्री तीर्थ पद पावैं सही ।
संसार के सुष भोगि उतिम अंत सिव थानक लहीं ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहरा ॥

नृपति विक्रमादित्य कौ एक सत (ह) स सत आठ ।
ऊपर सतासी विषै पूरन किनौ पाठ ॥
जेठ सुकल तिथि त्रयोदसी सुक्रवार सुषकार ।
सुभ नक्षत्र पूरन कियौ बीतराग हिय धार ॥

इती श्री अढ़ाईदीप को चैत्या लै पूजा सपूर्ण ॥ मिती आसाढ सुदी ५ संवत १६४० यह पुस्तक करोडमल जी पाटनी की वहू ने लिखाई पुन्पांजल का वर्ष श्री ठाकुर जी के भंडार मे धरल जव चढाई । लिखतं सामलदास खत्री सोधी टोले वाले लखनऊ निवासी लिखाई के रूपये २०) कागज ३॥)

विषय—जैन धर्मानुसार पूजा का विधान वर्णन ।

रचनाकाल

नृपति विक्रमादित्य कौ एक (१) सहस सत (८) आठ
ऊपर सत्तासी (८७) विषै पूरन किनौ पाठ

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल के सवत् मे कुछ अस्पष्टता है पर विचार करने पर वह १८८७ वि० विदित होता है । लिपिकाल स० १६८० है । रचयिता का नाम दिया नही ।

संख्या १२२. सहस्रनाम पाठ, रचयिता—जवाहिरलाल, कागज—देशी, पत्र—१२५, आकार—११३/४ × ६७/८ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३४३७, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०५ वि० (अनुमान से), लिपिकाल—स० १६४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मदिर, अहियागज, टाट पट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—श्री चतुर्विंसताय नमः ॥ अथ सहस्रनाम पाठ भाषा लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री रिषभ जिन कौ नमौ सिद्धि सिद्धि दातार ।
मंगलमय मगलकरन वृषभ चिह्न सुषकार ॥ १ ॥
क्रम कोर जिनते ईस कौ वदौ सीस नवाय ।
जाके नाम प्रताप सौं होत सुवुद्धि अधिकाय ॥ २ ॥
:o: :o: :o:

॥ अथ दस अतिसय जन्म की तिनके नाम वर्ननं ॥

॥ अडिल्ल ॥

नमो स्वेद करि रहित सुमल नहि तन कह्यौ ।
प्रथम सार संहनन सरूप महाँ लह्यौ ।
सम चतुर संस्थान सरीर सुगंध है ।
एक सहस वसु लक्षन सहित सुबंध है ॥ ८ ॥
स्वेत नरन तन रुधिर सुवच हित मित कहे ।
वल अनंत संयुक्त जिनेस्वर तन लहे ॥
वालपने सुभ अतिसय ये दस जानियें ।
केवल ज्ञान उद्योत तहाँ दस मानियें ॥ ६ ॥
:o: :o: |o|

कवि लघुताई देस नाम वर्ननम् ॥

॥ दोहरा ॥

अंत—नग्र अजोध्या की कही दिसा वारुनी माँहि ।
नगरी सरस सहावनी जैनी लोग वसाहि ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

पश्चिम दिसा मभार वसै पैते पुर सार पारस जिनंद सौध सरस सुहावना ।
पूजा जिनराज जी की करत सुभव्य नीकी अतिही उदार चित्त भावं सुभ भावना ।
त्रिसठि बलाका महा पुरुष की होय कथा पर द्रव्य सप्त तत्व नव पद बतावना ।
श्रावक आचार जहां मुनि को वषान तहां नित प्रति होत तहां धरम प्रभावना ॥

॥ दोहरा ॥

सोभा चंद वसै तहां पक्षिक श्रावक जान ।
दया धर्म हिरदे धरै सतोषी गुनवान ॥
ताको तनुज जवाहिर लाल । भाषा ग्रथ पढ़ै सुरसाल ॥
संस्कृत को पाठ निहार । देषि जवाहिर कियो विचार ॥
:o: :o: :o:
नृपति विक्रमादित्य जो सार । सवत अष्टादस निरधार ॥
येक सतक अरु पंच सुकहे । रतनलाल लिषि बहु सुष लहे ॥

॥ दोहरा ॥ ८ ॥

चैत शुक्ल तिथि पचमी रोज शनीचर वार ।
ता दिन सपूरण कियो पठन सुपर हितकार ॥
:o: :o: :o:
मन वच काय लगाय कं पढ़ै सुने जे जीव ।
नर सुर के सुष भुजिकं लहे मोक्ष सुष सीव ॥

इति श्री सहस्रनाम पूजा पाठ जवाहिरलाल कृत भाषा सपूर्ण ॥ शुभमस्तु संवत् १६४० चैत्रे मासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दश्या बुध वासरे समाप्तोय ग्रथः अग्रवाल लाला नगूमल तस्यात्मज लाला विश्वेश्वरस्य पठनार्थ दीर्घायुर्भयात् देवद्विज प्रसादात् इष्टदेवाय नमः लिषितं शिवचरण पाठकेन श्री राम ॥

विषय—जिन सहस्रनाम का वर्णन ।

रचनाकाल

नृपति विक्रमादित्य जो सार । सवत अष्टादस निरधार ।
येक सतक अरु पच सुकहे । रतन लाल लिषि बहु सुष लहे ॥

॥ दोहरा ॥

चैत शुक्ल तिथि पचमी रोज शनीवर वार ।
ता दिन सपूरण कियो पठन सुपर हितकार ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल स० १६०५ है और लिपिकाल स० १६४० । रचयिता का नाम जवाहिरलाल है ।

संख्या १२३क. भक्तिब्बावनी, रचयिता—उपगारी जसराम, कागज—देशी, पत्र—१३७, आकार—८६/१० × ६६/१० इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१७८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४१ वि०, लिपिकाल—स० १८७१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामेश्वर जी दुबे, ग्राम व पोस्ट—खीरो, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ श्री रामकृष्णायनम. ॥ श्री मुनि सुकदेवायनमः अथ श्री महाराज चरनदास जी के दास उपगारी जसराम जी कृत भक्तिबावनी लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

पर्म गुरु सुषदेव कूं प्रथमै मम परनाम ।
बिघन हरन मगलकरण तुम सरनं जसराम ॥ १ ॥

चरनदास रणजीतगुर पदबंदौ कर जोरि ।
जुगल चरन हिरदे बसो बुद्धि सुद्ध हो मोरि ॥ २ ॥
नमस्कार श्री भागवत बहुरि ईस करतार ।
मम हिरदे अभिलाष इह जन जस कहूं उचार ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:
नारद ध्रू प्रहलाद मिवर नृप पुरुरवा भिछक कहे ।
अजामेल कूं आदिए जन सतजुग भागवती लहे ।
बालमीक बलि रुक्मांगद हरिचंद सिवरी नल सुनौ ।
ए त्रेता के भक्त है अब द्वापर के नीके गुनौ ।
अंबरीक सुषदेव मोरध्वज रिष सुदामा उद्धव भये ।
बाललीक अक्रूर पांडव चंद्रहास द्वापर ठये ।
बिलमंगल भया सूर नरसी जैदेवादिक गाइया ।
रामानंद कबीर पीपा रैदासा हरि भाइया ।
माधोदास नींवादित्त स्वामी निर्हकिचन कूवा धना ।
सैन सदना नामदेवा त्रिलोचन तुलसी जना ।
लालाचार्ज व्यास नर्पति मोही जीत जैमल सही ।
रतनावती मीरा जु कर्मा कर्मेती नाभा वही ।
मलूक और चरनदास स्वामी कलजुग पहरे औतरे ।
रामप्रसादादिक भए जन जसरामा गाए वरे ॥२६॥

अंत—यह प्रसंग पूरा भया कथा राम पर्साद ।
सब संतन को दास मै भाषूं अपनी आद ॥३५॥
झाझर नगरी परगनै जहा सुवारणगाम ।
मात अनदी नाम है तात जु सीताराम ॥३६॥
बाल अवस्था षेलत जबही । वैराग लहरि उपजै मन तबही ॥३७॥
गैब सब्द भया रैनि मझारी । महापुरस अब है अवतारी ॥
:o: :o: :o:
उनका सब्द लिषा इक आया । सो मै पढ़ि पढ़ि फिर फिर गाया ॥
श्री चरनदास नाम तब जाना । जब औरन सूं पूछन ठाना ॥४३॥
इक इंद्रप्रस्त के माहीं । अब छानै चरनदास गुसांई ॥
जिनका कहा सब्द इह जानौ । उनकूं औतारी पहचानौ ॥ ४ ॥
सुनत ही गुर धरये मन माही । और सकल्प दूजी रही नाही ॥
चाह लगी गुर दरसन आसा । जैसे चात्रक बूंद पियासा ॥४५॥

॥ दोहा ॥

मनमैं रहै माता पिता बेगि दोउ मरि जांहि ।
भक्ति करैं निरबंध होय गुर चरनन के मांहि ॥४६॥
कोइक दिन मैं पिता पधारा । मोमन उत्सव भया जु भारा ॥
लोग कहैं तुम व्याह करावो । अपने कुल मै नाम चलावो ॥४७॥
मो माताकूं बात चलाई । मोमन भेष लैन की आई ॥
मात कहै सुत भली विचारी । इहतौ बात लगी मोहि प्यारी ॥४८॥
:o: :o: :o:
बहुरि गुरू के दरस कूं पगौं चली संगधाय ।
जाय दरस परनाम करि दीना मोहि चढ़ाय ॥५१॥
:o: :o: :o:
माता अपने ग्रेह पधारी । पुनि कोई दिन मैं स्वरग सिधारी ॥
मै रहा गुरु चरनन के पासा । सब विधि पूरण कीनी आसा ॥ ५ ॥

फिरी कही साधू संग ले विचरो जगत मझार ।
आप भक्ति करते रहे, औरन करि निस्तार ॥५६॥
विचरे उत्तर पूर्व देसा । बहुरि कियो दखिन पर्वेसा ॥
नगर बृहानपुर तापी गंगा । तहां रहे बहु साधू संगा ॥
इक दिन सब संतन मन आई । जबही मोसू बात सुनाई ॥
तुम जसराम नाम उपगारी । अद्भुत कथा सुनावो प्यारी ॥
मोकूं हरि के जन अति प्यारे । जब इह गाथा कही उचारे ॥
संमत अठारह सैं इकताला । आषाढ़ महीना वरषा काला ॥
कृष्ण पंचमी मंगलवारा । कछूक वा दिन करी उचारा ॥
क्वार महीने पूरणभई । सब संतन नीकै सुनि लई ॥
:o: :o: :o:
वस्त्र सिघासन सहित जो पूजा करि सनमान ।
मावस पून्यौ द्वादसी वा दिन करियें दान ॥७४॥

इति श्री भक्तिवावनी उपगारी जसराम जी कृत वावन भक्त जन जस वर्ननो नाम चतुर्थो षंड समाप्तं ॥५२॥ ४ ॥

विषय—निम्नलिखित बावन भक्तों की कथा वर्णन की गई है—

सतयुग के भक्त

१ नारद, २ ध्रुव, ३ प्रह्लाद, ४ भिवरनृप, ५ पुरुरवा, ६ भिलक, ७ अजामेल।

त्रेतायुग

८ वाल्मीकि, ९ वलि, १० रुक्मांगद, ११ हरिश्चंद, १२ सिवरी, १३ नल।

द्वापर

१४ अवरीक, १५ सुषदेव, १६ मारध्वज, १७ सुदामा १८ उद्धव १९ बालनीक, २० अक्रूर २१ पांडव, २२ चन्द्रहास ।

कलियुग के भक्त

२३ बिल्वमंगल, २४ सूरदास, २५ नरसी, २६ जैदेव, २७ रामनंद, २८. कबीर, २९ पीपा, ३० रैदास, ३१ माधोदास, ३२ नीवादित्तस्वामी, ३३ कूबा, ३२ धना, ३३, सैन, ३४ मदना, ३५ नामदेव, ३६ त्रिलोचन ३७ तुलसी, ३८ लालाचार्य, ३९ व्यास, ४० नर्पति, ४१ जैमल, ४२ रतनावती, ४३ मीरा, ४४ कर्मा, ४५ मलूक, ४६ चरनदास, ४७ रामप्रसाद ।

रचनाकाल

समत अठारह सै इकताला । आषाढ महीना वरषा काला ॥
कृष्ण पंचमी मंगलवारा । कछूक वादिन करी उचारा ॥
क्वार महीने पूरण भई । सब संतन नीकै सुनिलई ॥

संख्या १२३ख भक्तिबोध, रचयिता—उपगारी जसरामजी, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८$\frac{4}{5}$ × ६$\frac{3}{5}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—५०४ रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३४ वि०, लिपिकाल—सं० १८७१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वर जी दुबे, स्थान व पोस्ट—खीरो, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः श्री मुनि सुकदेवजी सहाय अथ श्री महाराज चर्नदास जी के दास उपगारी जसराम जी कृत भक्तिबोध लिखते ॥

॥ दोहा ॥

पर्म गुरु पर्नम करू व्यास पुत्र मम ईस ।
अघमोचन तुम चरन है तुमहि निवांऊ सीस ॥ १ ॥
दादा गुरु दयाल तुम श्रीसुकदेव सुजांन ।
तुम किर्पा बुधि हीन कूं हिरदै उपजो ग्यांन ॥ २ ॥

चरनदास गुरदेव जी राषो चरनन मांहि ।
भवसागर में बूडतें काटो गहि करि बांह ॥ ३ ॥
पार ब्रंम्ह ईस्वर तुम्ही तुमही बस औतार ।
सगुन वपु धरि जगत मै पापी कीन्हे पार ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
बार बार बंदन करूं चरन कमल परनाम ।
मो विनती सुनि लीजियै अरज करै जसराम ॥१४॥
जनम मरन के दुष सुने लष चौरासी ठांहि ।
पीछे जमके दूत गहि डारें नरकन माहि ॥१५॥
मम हिरदा भतीत है अरज सुनौ गुरदेव ।
कैसे इनसूं छूटियै सभी बतावो भेव ॥१६॥

गुरबचन

भाषत हैं रनजीत यौं धन्न धन्न जसराम ।
जज्ञासा तुमकूं भई ह्वैहै पूरन काम ॥१७॥
जस्सराम तोसूं कहूं मुक्तिहोन भेद ।
लष चौरासी जबम दुष छूटें जम के षेद ॥१८॥
अंत—रिष मुनि जेते सत जन अरु सब संत महंत ।
सब मोपै किर्पा करो बंदन करू अनत ॥७१॥
अठारह सै चौतीस का संमत नीका जान ।
हरिगुर के परताप सूं उपजा अनभौ ज्ञान ॥७२॥
कातिक बदी दुवादसी सुभदिन मंगलवार ।
जा दिन यह पोथी कही भक्ति बोध ततसार ॥७३॥
जै जै श्री मुनि व्यास जी जै जै श्री सुकदेव ।
जै जै श्री रणजीत गुर गाए चारौ भेव ॥७४॥

सोरठा

मन मैं बढ़ी हुलास भक्तिबोध बानी कही ।
चरन कमल मैं वास दीजे जन जसराम कूं ॥७५॥

इति श्री भक्ति बोध गुर सिष्य संमादे उपगारी जसराम जी क्रत संपूर्ण समाप्तं ॥
विषय—ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह सै चौतीस का समत नीका जान ।
हरिगुर के परताप सूं उपजा अनभौ ज्ञान ॥७२॥
कातिक बदी दुवादसी सुभदिन मंगलवार ।
जा दिन यह पोथी कही भक्तिबोध ततसार ॥७३॥

संख्या १२३ग. शब्द, रचयिता—उपगारी जसराम, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—८$\frac{४}{१०}$ × ६$\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—५६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८७१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वर जी दुबे, स्थान व पोस्ट—खीरो, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ श्री चरनदास जी के दास उपगारी जसराम जी कृत सब्द लिष्यते प्रथम श्री गुरदेव का अंग वर्नंते ॥

दोहा

सतगुर समदाता नही तीन लोक मैं और ।
जस्सराम अघ दूरि करि पहुंचावैं निज ठौर ॥ १ ॥
सदा संगाती सतगुरू लोक और परलोक ।
जग मै रक्षक जस्सराम अंत समैं दे मोष ॥ २ ॥

राग आसावरी वा गौरी

सतगुर बड़े दयाल निहारे ।
पर्मार्थ हित सब जीवन पर हेत करैं इकसारे ॥
उरझि रहे सब ही नर नारी षोटे कर्म मझारे ।
नेंकहूं सरन गहैं जो उनकी करि दें भो जल पारे ॥
तीरथ वर्त बहुत तपकीने चहूं दिसा पचिहारे ।
छिन इक माहि दयानिधि स्वामी तीनौ ताप निवारे ॥
मेटि दिया अज्ञान अंधेरा दीपक ज्ञान पजारे ।
सूझि परे आनंद ही आनंद गए मर्म भ्रं सारे ॥
चरनदास रनजीत गुसाईं ऐसे गुरु हमारे ।
जन जसराम लगा चरन सूं जन्म मरन दुष टारे ॥
:o: :o: :o:

अंत—होरी षेलत सुंदर सांवरो हो अहो मोरे ललना ।
संग सषा बहु ग्वाल । मना मन......षा ॥
सवल संतोषा भरि भरि फेंट गुलाल ॥
कर लीयें सोरन पिचकारी धाए मदन गोपाल ॥
:o: :o: :o:
वैठि विवांन आये स्वर गधर्व देषन फागुन... ।
...सजसराग मगन हो गावत राग धमाल ॥२०॥

इति श्री महाराज चरनदास जी के दास उपगारी जसराम जी कृत शब्द संपूर्ण समाप्तं ॥
समुच्याय ॥ दोहा ॥१५॥ शब्द ॥१०४॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या १२३घ. हरि गुर स्तोत्र, रचयिता—उपगारी जसराम, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८४/१० × ६३/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वर जी दुबे, ग्राम व पोस्ट—खीरो, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ हरिगुर अस्तोत्र लिप्यते ॥
॥ पधड़ी छंद ॥
नमो सतगुर स्वामी । तुम्हो अंत्रजामी ॥
तुम्ही सर्व एकं । तुमी हो अनेकं ॥
अवगति अविनासी । पर्मानंद रासी ॥
अलषं अभेवं । देवादि देवं ॥
अभेदं आ...वं । अमलं अषेदं ॥
व्यापक अरूपं । पर्म अनूपं ॥
जोती सरूपं । हो पर्गट रूपं ॥
निरंजन निरोतम । पूरन पुरुषोत्तम ॥
निर्गुन अपारं । अद्भुत सर्वसार ॥
परमातम प्यारे । सवके आधारे ॥
अजर अनंता । सकल घट बसंता ॥
:o: :o: :o:

अंत—नमो संत सहाई । मुक्ति वरदाई ॥
हूं सरनं तुम्हारं । करो मोहि पारं ॥
घट उरम निवारो । तीनो ताप टारो ॥
राषो निज चरना । मेटो जनम मरना ॥

काटो जग जालं । टारो काल व्यालं ॥
करूं बहुत बंदन । हरौ दुष्य दंदन ॥
नमो गुरदेवं । दीजै चरन सेवं ॥
नमो गुर अभिरामं । तुम सरनं जसरामं ॥ १ ॥

इति श्री हरिगुर अस्तोत्र उपगारी जसराम जी कृत संपूर्ण समाप्तं ॥ पढंते गुणंते भव पाप मुच्यंते श्री कृष्ण जी कूं अर्पनं ॥ संमत ॥ १८७१ ॥ मिती भाद्रपद शुकल पक्ष्ये । ॥ १३ ॥ रविवासरे पुस्तिका लिषतव्यं वैरणवन को दास नारायन दास ॥ पठतव्यं श्री वैष्णव ईस्वर दास ॥ जो कोई पढै श्रवन करै तिनकूं दंडवत ॥ इदं पुस्तिकं सुभं भवेत ॥ ग्रामे बिहारी पुर देवस्थाने मध्ये समाप्तं ॥

विषय—हरि और गुरु की स्तुति वर्णन ।

संख्या १२४. राजनीति, रचयिता—जसुराम, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—$८\frac{३}{१०}$ × $४\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—अथ राजनीति लीख्यते ॥ दोहरा ॥

अछर अगम अपार गल किनहु पार न पाई ।
सो मोतूं दीजे सकत जे जे जे जगराई ॥ १ ॥

॥ छपै ॥

बरनी उजल वरन सरन जग असरन सरनी ।
करनी करुनाकरन तर सब तारन तरनी ।
शिरपर धरनी छत्र भरन सुष संगति भरनी ।
करनी अमृत झरन हरन दुष दारीद्र हरनी ।
धरनी त्रिशूल षप्पर धरन भव भो हरनी सकल भय ।
जगदंब आद बरनी "जसू" जै जग धरनी मात जय ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

जे जगधरनी मात जै दिजै बुद्धि अपार ।
करि प्रनाम प्रारंभ करु राजनी (ति) विस्तार ॥ ३ ॥
जिन बषतन मै पातिसा राजा आलमगीर ।
तिन बषतन पैदा कियो गुन गुनिग्रन गंभीर ॥ ४ ॥
सोलकी जगमाल सुत उदयासग अनेक ।
गुन दीने ताते दीनी बाधों ग्रंथ अनेक ।
गुन दीने ताते दीनी बाधों ग्रंथ विसेक ॥ ५ ॥
जैसे वेद विरचीकू अपरम दीये उपाय ।
राजनिति राजनकू ऐसे देइ बनाय ॥ ६ ॥
प्रथम अग भूपाल राजरानी अंग दुजे ।
तीजे राजकुमार मंत्री चोथे गनी लीजे ।
पचमु साहिब अग अंग षट राउत मानू ।
सातो रहियत (? रय्यत) अंग कवि आठ अंग वषानू ।
"जुगजीत" रीत जानु जगत विविध विवेक विचार एह ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

याको अबे उदाहरन प्रगट करत परमान ।
राजनीत गुन चातुरी सुनि सुनि लेहु सुजान ॥ ८ ॥
सबको वष(त) बनाइवो जो सोह "जगजित" ।
कबहू वषत न चूकीयें राजनित की रीत ॥ ९ ॥

अथ राज अंग वर्ननं ॥ कवित्त ॥

बषत के लाये झांझ नोबत टकोरा बजें बषत के लीयें बाजें घरी घरीयाल की ।
बषतके लीयें देवपूजनके बाजें घंट बषत के लीयें उबरात बरहाल की ।
बषत लीयें रोज बेठवो अदालतको बषन के लीयें रागरागनी रसाल की ।
कामकाज अरजी अनेक भांत "जयुराम" बषत को बांधवो सो निति छत्रसाल की ॥१०॥

अंत— ॥ दोहा ॥

राजनीति सबही पढो साब सौं करे सनेह ।
जो किम्मत नाही "जसु" बडी कुलछन एह ॥२६॥

॥ सवैया ॥

जीनके दुआर हंस जैसे तो धरेई रहे वंगहुं तो बहुत बषानी बात गही है ।
जिके दुआर गज तुरंगन सें ठाढे रहै बनाय के सुवारी साध लही है ।
जिनके दुआर फुल चंपक सें कुमलात सामल अकुवढाय एसी सोभा बही है ।
ऐसी हैं अनीत वाको कबहुंन चल ज.................... ।

—अपूर्ण

विषय—राजनीति विषय वर्णन ।

संख्या १२५क. कवित्त, रचयिता—जानकीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६॥ × ३॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१००, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—....................

कारण तें सो नायेक भूदन विविधिभये करताकरन घेल जैसी जो चहतु है ।
माटी सेती घट जैसे सूत सेती पट भयी नीर सेती वुल्ला बहुविधि लहियतु है ।
काठ सेती आगि जैसे वीज सेती तरु जानो पावें घृत दूधसेती जब महियतु है ।
कहै 'दासजानकी' भनतभेद सतमत तेंगे एक ब्रह्मसेती जग कहिअतु है । ३
स्वान को पकरि राषे काच के मंदिर महै देषि प्रतिबिंब भूकि तनको तजत है ।
केहरि निरषि कूप आपनो सो देषि रूप भूल्यो रूप सारभ्रम कूप में परत है ।
मर्कट गहत आपु छाडै नहीं है तथापु तैसे नर मोह फास क्रम लपटात है ।
कहै "दास जानकी" भ्रमत अज्ञान नर राम नाम छोड़ि झूठ बात को गहत है । ४
काम क्रोधहंकार लोभमोह है वेकार लषि लीजै सारासार तजि विषा वासना ॥
दुष्ट मित्र येक जानु अस्तुति निंदा नाहि मान् दुष सुष सम आन् संत के यह लक्षना ।
सादी गमी किछु नाहि सत सोइ धन्य अहि हर्ष सोम नाहि ताहि जक्त कौन आसना ।
कहै दास जानकी चहत सतसंग निति रहै सम भाव निति हियमे कछु चाहना । ५
उनि मुनि नाडी लागी आतम उलटि जागी अरध उरध बीच सुरति दिढ़ाया है ।
पान आपान मिलि सुरति गगन पिलि तरिया अतीत वह्मड वीच छाया है ।
हठ जोग चित्त दियो अभीरस पान कीयो त्रदे बीच जानो मव समुद समाया है ।
'कहैदास जानकी' परमि गुरु पदरज मुरा सरुप सोई आपु लषि पाया है । ६

अंत— कवित्त झूलना

घरको त्यागि भयो वेरागी सिरपर जटा रषाया है ।
मनकासोध कभी नहि कीन्हे वनाना भेष बनाया है ।
कामक्रोध पद्द दुदि मचाव घर छोडे क्या पाया है ।
'कह दास जानकी' राम नाम विनु नाहक जन्म गवाया है ।२६
वैठिय कत पघन को सोधे आसन पदम लगाया है ।
चंद थीर करु सुरति विहगम सूरज उलटि चढ़ाया है ।
अजपा जाप जपे रसना विनु सोहं सब्द लषाया है ।
'दास जानकी' गगन गोफा में अनहद डंक बजाया है ।३०

गगनगुफा बंशी धुनि सुनिकै मन गयंद मतवाला है ।
लषि सरुप सुरभूप छकित भै ब्रह्मरूप उजियाला है ।
उलटि पवन षट चक्र छेदिकै पिया नाम का प्याला है ।
'दास जानकी' सत्यरूप लषि छोड़ि जक्त जंजाला है ।३१
भाव भक्ति की मर्म न जानै भेष बनायो चोषा है ।
काम क्रोध मो माति रहे है.........(अपूर्ण)

विषय—भक्ति विषयक काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे ज्ञान वैराग्य विषयक छद लिखे गए हैं। संत साहित्य की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है । अन्य सतो की भाँति प्रस्तुत रचना साहित्य की दृष्टि से भी उत्तम है। भाषा सरस तथा ओजपूर्ण है ।

संख्या १२५ख. छाया जोग, रचयिता—जानकीदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८॥। × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि,—नागरी लिपिकाल—स० १९१० वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः । अथ छाया पुरुस ध्यान ॥ चौ० ॥
श्री गुर पद सिरनाय विनय सादर कर जोरी ।
काल ज्ञान को भेद कहौ राषो नहि षोरी ॥
छाया पुरुष को ध्यान गगन मे दृष्टि लगावै ।
छठये मास प्रमान रूप सोइ नजर मे आवै ।
सोहं सोहं सब्द ध्यान के वीच उचारै ।
पहर येक परमान द्रिष्ट अंतै नहि परै ।
प्रथमै धुआ समान प्रगट होय जात छपाई ।
तव कछु दै नैवेद्य ताहि को सीस नवाई ।
पलक न लागै दिष्टि धारना असी धारी ।
सकल अंग ठहराय नित्य यहि भांति निहारी ।
अंग अंग को भेद ताहि को करौ विचारा ।
जौन अंग होय छीन ताहि तस कष्ट प्रचारा ।
प्रथम वाम पद वीच छागुली नजर न आवै ।
तवहि त्रिया को कष्ट ग्रंथमत प्रगट वतावै ।
दूसरि परै न देषि तवहि अस जानो भाई ।
वाम पिता के ध्यान कोई होवै दुषदाई ।
तीसरि अंगुलि हीन पुर्स मो जब लषि पावै ।
वाम पिता गृह माह आपुम्ह कलह वटावै ।
:o: :o: :o:
जांघ नजर नहि आवई तव अस करो विचार ।
वाम पिता के वंधु को तव जम करै संघार ।

अंत—तहवा पुरुस विदेह रूप जगमग उजियारा ।
दास जानकी आपु आपुमह करो विदारा ।
काल रहै सिर नाय जो होय असा जोगी ।
विना जोग अभ्यास जक्त सम भया वियोगी ।
पहर येक परमान काल की औधि मिटाई ।
लियो समाधि जगाइ अभै होइ डंक वजाई ।
जोग ध्यान वल पाय कै जीति काल को मीत ।
जोग ध्यान जाके नहीं काहू सकै वह जीति ॥ ६

निजानंद सतगुर मिले दियो जोग सुष धाम ।
दास जानकी तेहि चरन वार वार परनाम । ७

इति श्री गोसाईं जानकीदास कृत छाया जोग संपूर्ण । शुभ संमत १६१० ।

विषय—ध्यान योग विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ में काल ज्ञान तथा जोग ध्यान विषय का सक्षिप्त वर्णन है। विषय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण तथा रचना साहित्यिक कोटि की है ।

संख्या १२५ग. ज्योतिष, रचयिता—जानकीदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

मानुष नगन दृष्टि म्ह परई ।
सूषा तरु कटक जो जोवै ।
अवसि रोग ताके तन होवै ।
भीति ढहाई कूप जो गिरई ।
ताके कुल म्ह कोउ इक मरई ।
पान्नग बहुत विलोकै आगे ।
जोव आपके तन म्ह लागे ।
महिषा गोसुत मारन धावै ।
ताहि दुष्ट भै अधिक सतावै ।
केस दंत सपनेन्ह षसै ।
व्याधि सरस सब सपति नसै ।
रद वृषान पसु मारन धावै ।
कपि सियार भै भूमि देषावै ।
ताको मन निति रहै उदासा ।
धन को विघ्न राज को त्रासा ।
षर महिषा पर होइ सवारा ।
वसन हीन तन सकल उघारा ।
नंगी षर्ग आपु कर लीन्हे ।
दछिन दिसा पयान कीन्हे ।
अैसा स्वप्न विलोके जवही ।
जानेहु मरन दिवस दस तवही ।

दो०

भंदारक ऐसे सपन देषहु चतुर सुजान ।
प्रात होम करि अन्न को देइ विप्र कह दान ।१०
सिद्धि मंत्र कह जाय करि पावक आहुति देइ ।
मिटै विघ्न को दाष सब जानि चतुर नर लेइ ॥

अंत— अथ तारा विचार

जन्म नछत्र से सुनिये भाई ।
दिन नछत्र लै गनि ठहराई ।
नौ कै भागहु हरहु सुजाना ।
बचै लब्धि सोइ जानै तारा ।
येक मिलै तौ सुष अधिकाई ।
दुजे संपति बढ़ै सहाई ।

तीजे सोक रोग मैं होई ।
चौथे सब सुष संपति कोई ।
पचवा तारा चित भरमावै ।
छठये सुभ कारज कह पावै ।
सतयें मृत मैं होय अपारा ।
अठयें नययें सुष अधिकारा ।
तारा नाम देव अलगई ।
प्रथमहि जन्म नाम सुन आई ।
दूजे सपति तारा जानो ।
तीजे विपति नाम पहिचानो ।
चौथे छेम पाय पुनि जानो ।
साधन नाम षष्ट मो मानो ।
निधन सप्त बधु मैत्र सुजाना ।
नवमे परम मैत्र पहिचाना ।

दो०

तारा भेद जो सुन असुभ जथा ग्रंथ मनगाय ।
दास जानकी सास्त्र मत भाषा भनित वताय ।

विषय—स्वप्न विचार, तारा विचार आदि ज्योतिष विषयक वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है । केवल ३२, ३३ और ३४ (तीन) पत्रे उपलब्ध है ।

संख्या १२५घ. बालबोध (ज्योतिष), रचयिता—जानकीदास, कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—११ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—४४४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री भैया हनुमतप्रसादजी सिंह, अठदमा रियासत, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ बालबोध भाषा ।। दो० ।।

बंदौ प्रथमहि गज वदन मदना अरि को वार ।
येक रदन सुभ गुण सदन दलन दोष दुष भार । १
पुनि वंदौ गिरिजा रमन समन दीनता द्वंद ।
व्याल माल मृगधीस चाम भाल वाल सुभचंद । २
चरण चारु वंदन करौ धरौ रेनु पर सीस ।
हृदै पंकरुह अलि सरिस वसहु कौसलाधीस । ३

वंदौ देवि संभु सुभ चरना ।
दलित दोष दुष दारिद हरना ।
सुर सुरेस वंदित पद रेनू ।
दास आस कह कामद धेनू ।
मंगल मूल चरन उर जाके ।
टरत मोह तम दारिद ताके ।
सैल सुता संकर अर्धंगी ।
सवा सो गुजा तासु परसंगी ।
कर त्रिसूल डामरू विराजै ।
दलि दल दैत सिंह चढ़ि गाजै ।
रक्तबीज महिषासुर मारे ।
चंड मुंड वधि कटक संहारे ।

जाकी जोति प्रकास जग सकल चराचर वास ।
भुवन चारिदस जासु बस प्रगटि पालना नास । ४
सो पाली कल्यानमय मो पर कृपा करेहु ।
'वालवोध' भाषा करौ वुधि विवेक वर देहु ।
वर कन्या मैत्री कहौ नाडी प्रथम प्रकास ।
वेध अभेद विचारि सब लिष्यौ जानकी दास ॥ ६

अस्व और आद्रा कह लीजै ।
सतभिष उत्रा फाल्गुन कीजै ।

:o: :o: :o:

अंत— दो०

भद्रा भेद वतायउ आदि अंत ठहराय ।
सुभ कारज के करत ही वुध जन देहि वराय ।१२४

चौ०

करकच जोग कहो सुनु भाई ।
परिवादिक तिथि बह गनि आई ।
रवि आदिक जो वार प्रमाना ।
दूनो जोरि एक मह आना ।
वारह लै सभ.......... ।

—अपूर्ण ।

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत से खंडित है । केवल ग्यारह पत्रे उपलब्ध है । प्रस्तुत ग्रंथ मे (बालबोध संस्कृत ग्रंथ) ज्योतिष विषय का सविस्तार वर्णन किया गया है । रचना काव्योचित गुणों से युक्त है ।

संख्या १२६. झूलना, रचयिता—जानकीदास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६ ६/८ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—११५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत जानकीदास जी स्थान व डाक—लालगंज बाजार, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री महाराज अजवदास स्वामीजी सहाइ ॥ झूलना लिष्यते ॥ जानकी दास कृत ॥

॥ दोहा ॥

दास अजव गुरु कृपा निधि तिन चरनन्ह को रेनु ।
दूनउ दिसि मंगलकरन सेवक को सुरधेनु ॥

काक चिह्न करतार को मूढ़ क्या भटकता अवरि उपाइ नहि पार तोरा ।
गुरु के शवद की जिकिरि लागी रहे रइनि औ देवस नहि तार तोरा ।
करम औ भरम को नाश तबहि भइ सुरति ते गगन गढ करत फेरा ।
जानकीदास तब काल सिरदा करै लिया जब सत ही सरन डेरा ॥ १ ॥
था वेल करु उस रोज की जब भरम में बांधा रहा ।
तहा जाइ दिन देवल तेरो निमिष मे सव दुष दाहा ।
विसराइ तेहि करतार को सठ भूलि तुम जग में रहा ।
चेतु आ चेत अब सुमिरु तोइ नाम को जात केउ वहा भवसिंधु धारा ।
जानकी दास तेहि लागु निहसंक होइ वेद पूरान जेहि वदत सारा ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

ए ए कहि नाम सिध्यांत चहुवेद को संभु सनकादि अरु सेस गाई ।
ताहि की सरन मन होहु तुम छाडि छल मिलि नर देह भल चेत आई ।

नारि सुत धाम धन काम नहि आइहै देषु देवान जग चला जाई ।
दास अजब गुर देव दयाल के चरन पर जानकीदास पाई ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

पढं ग्रथ समुभं सुनं नितहि प्रीति बढाइ ।
तीनि ताप ताको मिटं आतम हरि दरसाइ ॥
जे मन मुष अभिमान रत फंसे करम जग कीच ।
ताको यह न सुनाइए ज्ञान रहित मति नीच ।
पूरा सतगुर जोहि मिलै सो पावं यह भेद ।
अभिमानो निगुरा हटि सो सु करिहै षेद ॥ ३ ॥

कातिक मासे एक दश्यां कृष्ण पक्षे शुक्र वासरे

विषय—प्रत्येक अक्षर पर भूलना छंदों की रचना कर ज्ञानोपदेश दिया गया है।

संख्या १२७. कीरति विलास, रचयिता—जानकीदास, निवासस्थान—सरदहा (बाराबंकी), कागज—देशी पत्र—५६ आकार—६३/४ × ८३/४ इंच. पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२०३०, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरणदास (हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय), ग्राम—कमाली, डाक०-रानीकटरा, जिला—बाराबंकी।

आदि—श्री गणेशाय नमः पोथी श्री समर्थ साहेब जवाहिरदास जीव कं।

॥ दोहा ॥

अनि विचित्र रचना विविधि रची तरस त्रिपुरारि ।
सकल कामना हर पुरी दानी सग उदारि ॥

गदीदार बरठउ बरिअाई । दर्शी दूलन दास गोसाई ॥
षेमदास सिवदास नरायन । नवल मनसा माधौ गायन ॥
कृपादास सिवदास भवानी । साधू मिठन मनसा ग्यानी ।
जीआ टोहिवे बोधे रपन । डला कुमली अवर मरूपन ।
मीठन सीतल वेचू प्यारे । रामदास सिवदास वुलारे ।
गेधि वलदी दूलभ षेदू । लषमी उधो जानत भेदू ॥
नृप अजीत दलगजन फते । भगतन माथ वइठ सोहते ॥
अनन्द उपध्या प्रमानद । उदेराम कीरति सुषकद ॥

॥ दोहा ॥

इस हेत आये सकल गदी प्रम प्रवीन ।
द्रवि फूल प्रसाद बहु गुर चरनन लौ लीन ॥
:o: :o: :o:

अंत—

जोगी मरहिगे जती मरहिगे मरहि पडित अभिमानी ।
सूर साधू सभ माटी मिलि हे रहिहे नाम नीसानी ॥ ४ ॥
सभ साधू औ तुलसीदास हे ब्रह्मा सिवहू बखानी ।
जगजीवनदास प्र किरा कीन्ह हे तव ते निरभं जानी ॥ ५ ॥

इती श्री कीरतिवीलासे सत्य मत प्रकासे महासुषरास कीरति अघविनासे भगत्य बीलासे कित जानकीदासे श्री सरदहा नेवासे सवाद षेमदास वा गोसाईदास वा गीरवरदास वा बोधेदास वा प्रहलाददास वा देवीदास जीवक सतीसमो प्रकास ३७ जगजीवनदास बीचारि आपूकहु सौ सागर तव तरीये दोहा जगजीवन मन रीदा कम सूरति पई चिकमान कर चितते लागी रहै निरषहु नाम नीसान ॥

इति श्री कीरति बीलासे सत्यमत प्रकासे महासुषरासे कीरति अघ विनासे भगत्यबीलासे कीत जानकीदासे श्री सरदहा निवासे सवाद साहेब गीरवरदास वा बोधेदास बसवत भगत साहेब

गिखरदास जीव लीखितं भवानी बकस सुक्ल तासीदुर के मीति मार्ग पुरनावासी संम्त १६७ श्री सीताराम जीव की सराम राम राम राम राम राम

विषय—स्वा० जगजीवनदास जी का जीवनवृत्त वर्णन।

संख्या १२८क. ज्ञान कहरा, रचयिता—गो० जानकीदास, कागज—आधुनिक (पीला), पत्र—२, आकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बाबू शिवप्रताप सिंह जी, ग्राम—मोहनगंज, डाक०—सलोन, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री जानकीदास का ज्ञान कहरा लिख्यते ॥
कं काया बीच करतार छप्यौ। खं ख लख खोज नहि पाता है।
ग ज्ञान गुरु को याद करो। तब रूप नगर मे आता है।
घ घुट तर तन दीस भयो। न नाम बिना पछताता है॥
कहैं दास जानकी जीह जपु। और झूंठ सब बाता है॥
च चकृत चित्त को धीर करो। छ छकित जबहिं छकि जावैगा।
ज जपत जाय बिनु जीह सदा। झ झलक रूप को पावैगा॥
टं टखे बताय त्रियताप महा। ठं ठौर ठीक हहरावैगा॥
डं डारि दिया सब लोक लाज। ढं ढाढ़स जक्त न भावैगा॥
:o: :o: :o:

अंत—यं यक ब्रह्म प्रकास भयो जब सतगुर ताको भेद दिया।
गं ज्ञान के कहरा तत्व भेद का दास जानकी पूर किया॥

इति गोसांई जानकीदास के कहरा संपूर्णम ॥ शुभ मस्तु मिती फागुन वदी १३ दिन शुक्रवार शुभं भूयात संमत १६४४ हस्ताक्षर रमादाश कुनवी

विषय—ज्ञानोपदेश।

संख्या १२८ख. पाखंड दलन, रचयिता—गो० जानकीदास, कागज—आधुनिक (पीला), पत्र—६६, आकार—८¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—५७३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बा० शिवप्रताप सिंह जी ग्राम—मोहनगंज डाक०—सलोन, जिला—रायबरेली।

आदि—.........मुझको बड़ा अंदेशा ॥१००॥
चारि वेद षट शास्त्र का जौं पै वक्ता होय।
रामानुज के सड़े (शरण) बिनु मुक्ति न पावै सोय॥
:o: :o: :o:
जानि बूझि गुरु न करै सो पीछे पछताय।
आश करै बैकुंठ को बाधा जमपुर जाय॥
तुलसी धारण कीजिए कहे सुने मति मूल।
पाप दहन को जानिए तैसे पावक तूल॥
:o: :o: :o:
परसन खूब कर अपने मन में ख्याल।
पर पिंड कहि भक्ष से और कौन चंडाल॥
कोई गौ हिंसा किया ताको जानो खोट।
कोई भैंसा मारता सो क्या उससे छोट॥
हिंदू भैंसा मारत तुरुक पछारे गाय।
झूंठा वर्ण विवेक सब यह वाही का भाय॥
:o: :o: :o:

अंत—
सोरठा

यह हिंसा त्रिसकार नाम सुनत या ग्रंथ को ।
छूटैं अमित विकार विदा करैं बेकार जो ॥
कहा जानकी दास परसन मुनि परसन भए ।
दया धर्म प्रकास विदित हृदय में हो रह्यो ॥३७४॥

॥ दोहा ॥

कियो डंडवत जोरि कर वार वार प्रनाम ।
सतगुर तुम्हरी कृपा ते मोहि लहेव विश्राम ॥

इति श्री गोसाइ जानकीदास कृत पाखंड दलन संपूर्णम् ।

विषय—कंठी पहनने और मास मछली न खाने का उपदेश दिया गया है ।

संख्या १२६क. रामचंद्रिका तिलक वा रामभक्ति प्रकाशिका, रचयिता—जानकी प्रसाद, कागज—आधुनिक, पत्र—१८५, आकार—१०$\frac{3}{8}$ × ६$\frac{6}{8}$ इंच, प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—६३४८, अपूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७२ वि०, प्राप्तिस्थान—लाल अंबिकानाथ सिंह जी (लाल साहब), नायन स्टेट, डाक०—सूची, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ कवित्त ॥

कुंडल सुंड गंड गुंजत मलिंद भुंड वदन विराजैं मुंड अदभुत गति को ।
बाल ससि भाल तीनि...वन विशाल राजैं फनि गन माल शुभ सदन सुमति को ।
ध्यावत विना ही श्रम लावत न वार नर पावत अपार मोद भार धनपति को ।
पाय गन नदन को विघन निकंदन को आठौ जाम वदन करत गनपति को ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

जानकी प्रसाद जग हरित करन मीठे बैन रस बैरी.. ......त है ।
राज सभा विपद विराजैं छवि धाम नित राम घनश्याम को प्रनाम करियत है ।

o: :o: :o.

॥ दोहा ॥

ता परिपाक अघाइ मन चचलतानि विहाइ ।
रामचंद्रिका को तिलक लाग्यो करन बनाइ ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

चचला छद

२ ७ ८ १
नै नै सूरज वाजि सिद्धि निसीस संमत चारु ।
शक्र सजुत शुक्ल पक्ष सुरेश पूजित वारु ॥
तारु रिक्तिथि हस्त तारा वरिष्ट योग नवीन ।
राम भक्ति प्रकाशिका अवतारना दिन कोन ॥१०॥

:o: :o: :o:

लक नायक को विभीषन देव दूषन को दहै ।
मोहिं जीवत होहिं क्यों भग तोहि जीवत को कहै ।

पाछे अगद कह्यौ है कि हम लका नायक के दूत हैं सो रावन पूछ्यो की लंका नायक को है जाके तुम दूत हो तब अगद कह्यौ की विभीषन लंक नायक है कैसो है विभीषन जो देवतन के दूषन कहे पीडा करनहार हैं तिनको दहे कहे जारत है यासो या जनायो की तुमहूँ देव दूषन ही तुमहूँ को दहि है ॥ ८ ॥

अंत—

चारिहु ओर तीनि तीनि राजमंडल सब द्वादश राज मंडल जानौ ।
...तेरह...मंडल प्रसिद्ध है तिनसों मुक्त जो भूतल है ताको या प्रकार क्रम...

:o: :o: :o:

अपूर्ण

विषय—रामचंद्रिका पर तिलक दिया गया है ।

रचनाकाल

नैनै सूरज ईजि सिद्धि निसीस संमत चारु ।
शुक्र संजुत शुक्ल पक्ष सुरेस पूजित वास ।
ता विक्रिय हस्त तार वरिष योग नवीन ।
'राम भक्ति प्रकाशिका' अवतारता दिन लीन ।

संख्या १२६ख. रामचंद्रिका सटीक या राम भक्ति प्रकाशिका, रचयिता—जानकी प्रसाद, कागज—आधुनिक (सफेद), पृष्ठ—३८६, आकार—११ X ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, मुद्रित, परिमाण (अनुष्टुप)—६७८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० चन्द्रपाल जी, ग्राम—नूरुद्दीनपुर डाक०—करहिया बाजार, जिला—रायबरेली ।

आदि—रामचंद्रिका सटीक ॥

बालक मृणालनि ज्यो तोरि डारं सब काल कठिन कराल त्यो अकाल दीह दुख को ।
बिपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम पक ज्यो पताल पेलि पठवे कलुष को ।
दूरि के कलंक अंक भवशीश शशि सम राखत है केशवदास दास के वपुष को ।
सांकरे की सांकरन सनमुख होत ही तो दशमुख मुख जोवें गजमुखा मुख को ॥ १ ॥

बालक पांच वष को हाथी सो जैसे मृणाल पौनारो को सब काल मे तोरि डारत है तैसे गणेश कठिन औ कराल भयानक औ अकाल कहे अमसय को जो दीह कहे बड़ो पुत्र मरणादि दासन को दुख है ताको तोरत है औ बालक जैसे पद्मिनी कमलिनी के पात को हरत तोरत है तैसे ये बिपति दरिद्रादि को हरत है औ बालक जैसे पग सो दाबि पक कहे कीच को पेलि के पाताल को पठावत है तैसे ये कलष जे पाप है तिनको पठावत है इहा गजराज को त्याग करि बालक सम यासो कह्यो पद्मिनी पत्रादि तोरन मे बालक को उत्साह रहत है तैसे गणेश जूको विपत्यादि विदारण मे बड़ो उत्साह रहत है कौतुक ही विदारत है औ गणेश जू दासन के कलङ्क को अङ्क कहे चिह्न को दूरि करिके जैसे भव महादेव के शीश को शशि है कलङ्क रहित ताही विधि दासन के वपुष शरीर को राखत है औ जिनके सम्मुख होत ही सांकर राजभयादि ताको सांकर बधन कही जजीर सो नही रहति एसे जे गजमुख गणेश है तिनके मुख को दश मुख जे ब्रह्मा विष्णु महेश है तिनके मुख जोवे रहे निरखते है स्तुति करत है अथवा दशमुख जे दशो दिशा है तिनके ते मुख है अर्थ यह दशौ दिशन के प्राणी स्तुति करत है ॥

षट पद—अरुणगात अति प्रात पद्मिनी प्राणनाथ मय ।
मानहु केशवदास कोकनद कोक प्रेममय ॥
परिपूरण सिंदूर पूर कैधो मंगल घट ।
किधो शक्र को छत्र मढ्यो माणिक मयूख पट ॥
कै शोणित कलित कपाल यह किल कपालिका काल को ।
यह ललित लाल कैधो लसत दिग्भामिनि के भाल को ॥ १ ॥

पद्मिनी प्राणनाथ सूर्य अरुणता मे तर्क है कोकनद कमलन को फुलावत है कोक चकवान को संयोगी करत है तासो मानो तिनके प्रेममयी है अर्थ तिन प्रति जो प्रेम है सो ऊपर छाइ रह्यो

है सिंदूर की पूर प्रवाह अर्थ सिंदूर ही सो भरयो अथवा सिंदूर सों रंग्यो के मंगल विवाह आदि का घट पूजन कलश है माणिक रत्न की मयूख किरणि तिन को लीन्यो घट वस्त्र औ कोकिल कहे निश्चय करि यह कपालिका कालि यं शोणित रुधिर कलित काल को कपाल शीश है अथवा कपालिक का व काल को शोणित कलित कपाल हैं काली को रुधिर मांस भक्षक तासों काल को सर्व भक्षक तासो कालो जगद् भक्षक इति प्रमाणा: ॥ १ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

राम भक्ति उर आनि के राम भक्त जन हेतु ।
रामचंद्रिका सिधु मे रच्यो तिलक को सेतु ॥ २ ॥
जो सुपंथ तजि सेतु को चलहि और मगओर ।
रामचंद्रिका सिधु को लहहि कौन विधि ओर ॥ ३ ॥

इति श्री मज्जगज्जननि जनक जानकी जान की जानि प्रसादाय जन जानकी प्रसाद निर्मितायां राम भक्ति प्रकाशिकायामेकोन चत्वारिंशत्प्रकाश: ३६ ॥

॥ कवित्त ॥

तूरयो सम्भु धनु भृगुनाथ को गरव चूरयो ऊरयो निज राज पूरयो विनु को बरन है ।
वन बरवास कीन्हे निशिचर नास कीन्हे रवि सुत आस कीन्हे आवत शरन है ।
कपि कर लंक जारयो पारयो सेतु सिंधु महँ मारयो दशशीश वधु धारयो नृपधन है ।
ख्याल सम कीन्हे जिन अद्भुत काम वंदियत अभिराम नृप राम के चरन है ॥ १ ॥

इति श्री रामचंद्रिका सटीका समाप्ता

विषय—रामचंद्रिका पर टीका की गई है।

संख्या १३०क. भगवती विनय स्तुति—जानकीप्रसाद या जानकी सिंह (पवार), कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—८, आकार—१०३/४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, आकार रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—सं० १९७३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ श्री देव्यास्तुति: ॥

॥ हरिगीत छंद ॥

महत तेज प्रकाम अम्बे पूर्ण अर्क विचारि कै ।
जोग विधि इन्द्रादि गावं वेदह तनधारि कै ।
त्रिगुण रूप अनादि माया सर्व आदि सदा जये ।
पूर्ण इन्दु सुवारि बिन्दु अनंत इन्दु प्रभा मये ॥ १ ॥
नीलाब्ज कांति स्वरूप सुंदर सर्व सौभाइहि लये ।
त्रैलोचने भव मोचने त्रैलोक्य जन त्राता भये ।
दीर्घ वर परचंड दंड उदंड खल दल त्रासिका ।
प्रभा मंडल गौर द्वै कुच उच्च दीप्त प्रकासिका ॥ २ ॥
जघा प्रथुल पवित्र कदली पत्र सम छवि सर्वदा ।
तापर विचित्र सुस्निग्ध अम्बर कुसुमवन सोभित सदा ।
शुचि अरुण अति बंधूकवन रमणीक मध्य पदाम्बुजं ।
जय अंबिके जगदंबिके तुव चरण जन चित्तहि भजं ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

अंत—क्षत्रेश्वरी छाया हि रक्षत किये छाया छोह सो ।
दास को नित दूरि राखत क्रोध सो अरु मोह सों ।
मन बुद्धि ममता धर्मचारिणी स्वच्छता जन सर्वदा ।
जानकी प्रसाद जन पर अम्बिके दाया सदा ॥२३॥

:o: :o: :o:

अयति...त्यहे बगलामुखी कल्यान मेरो सर्बदा।
प्रभु कीजिए अरु दीजिए वर भक्ति पद पंकज सदा।
तुव मंत्र सुभ्र प्र...करें अस्तोत्र शुचि तुवलक्षता।
पवि शत्रु के रन मध्य जे................
—अपूर्ण

विषय—देवी की स्तुति वर्णन की गई है।

संख्या १३०ख. श्री रामनौरत्न विनय, रचयिता—जानकीप्रसाद पवार, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—६६, आकार—१०½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१८१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०८ वि०, मुद्रणकाल—सं० १९७३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

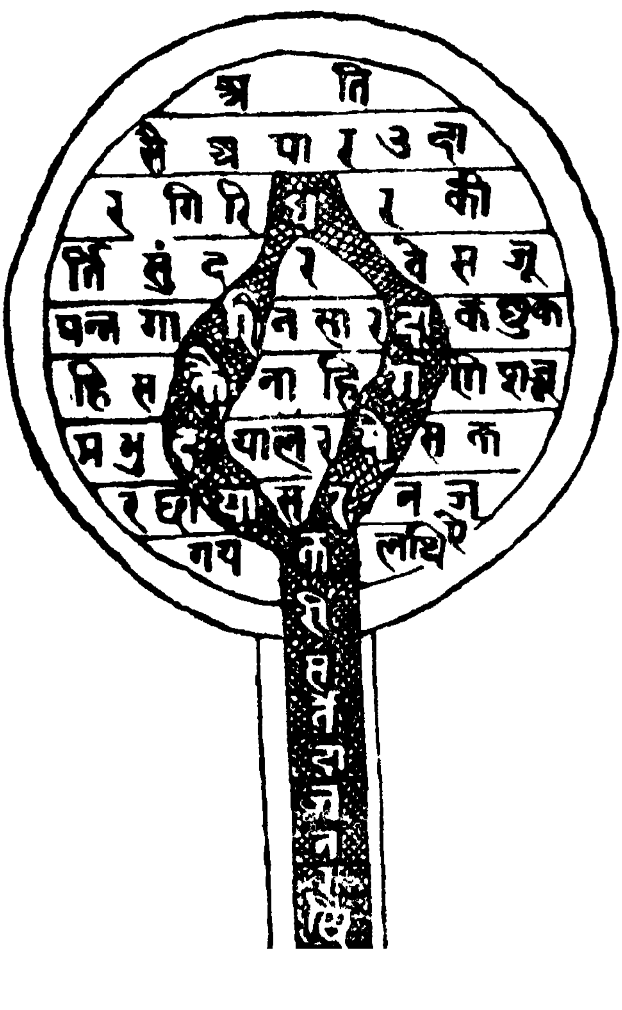
आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ श्री रामनौरत्न विनय लिख्यते॥

छप्पय

जय गणेश यक रदन महा अघ ओघ निवारण।
विघ्न हरण सुख राशि पतित कोटिन्ह भवतारण।
कंकण कर शशि हार नमो रिधि सिधि बुधिदायक।
महाभाव गजशीर्ष नमो तिहु लोक विनायक।
जय परशु पाणि सिंदूर धर लम्बोदर अघहरन।
वर बुधि विवेक विद्या सहित, देहु कृपा करि मुद करन॥ १॥

:o: :o: :o:

॥ अथ गदाबध चित्र चक्र॥ ॥ हरिगीतिका छंद॥



अंत—राम कृपा ते पद रत माते जिमि दार पुर जोहवं ।
दक्षिन गंगा डेढ़ कोस है परगन डलमऊ सोहवं ।
मति अनुमानी विनय बषानी सारंगपानी हेतू ।
जो नर गावं हरि पद पावं भव सागर सुचि सेतू ॥११३॥

:o: .o: :o:

॥ चौपाई ॥

प्रथम विनय रस अमृत सानी । अवधपुरी भाषा मृदुवानी ॥
इंद्रवान कर छंद पुनीता । २५१ । बरनिविनय भगवत सुभगीता ॥
नाम चेतावनि विनय द्वितीया । छंद इदु सरविच कथनीया ॥५१॥
नाम महातम विनय तृतीया । ससि सर छंदनि विच बरनीया ॥५१॥
कृष्ण विलास चतुर्थ बषानी । यक सत एक छंद मृदु वानी ॥१००॥
पंच विनै चित्र विच भाषौ । यक सत एक छंद रचि राषौ ॥१०१॥
यकसठि छंद सुधा रस ताषा । षष्टम विनै वर्णण वृज भाषा ॥
सप्तम विनै इन्दु सर छंदहि (५१) । वर्रान गुनायो रघुकुल चन्दहि ॥
पुनि पंजाबी विनै बषानी । एकसठि छंद वर्रान मृदुवानी ॥
शिव दृग कर ससि छंद सुहाने । विनय पूरबी मध्य बषाने ॥

बरन झूलना छंद

कहे अष्ट स छंद इक्यावन मई जोड़ विन मध्य गती प्रतीता ।
महा सिद्धि दा जानकीनिह वर्णा विन रामनारत्न विन्तो विनीता ।
भई पूर्ण ज्यो पूर्णिमा चंद आनंद मे जोति श्रीराम निर्भेद गीता ।
तिथौ कातिकी पूर्णिमा विक्रमादि वर्तमान स अष्ट सवत् पुनीता ॥
॥ १८०८ स० ॥

नाम निहाल सिंह जग जाहिर । भाऊ सिंह तासु सुत माहिर ॥
तासु भवानी सुवन सुजाना । ताके भ मतिमद अजाना ॥

॥ सोरठा ॥

पली यह करि नेम पाठ करहि जे नर सुजन ।
लहे सो हरिपद प्रेम सिद्धि मनोगति प्रभु कृपा ॥१२३॥

८५१ छंद या विनै मध्य मब हे ।

इति श्री राम नवरत्न विनया पवार ममोद्भव वानी प्रमादात्मज श्री रामचंद्र पादानुरागी जानकीप्रसाद कृत पूर्वी भाषाया नवम विनय. ९ ॥ श्री संवत् १९२३ कार्तिक शुक्ल १ भौमवार ॥ शहर लखनऊ मुल्ले निवाज गंज मतबय ग्रामफो मे एहतमाम मुंशी बेनी प्रसाद से छपी ॥

विषय—(पूर्ण विवरण सहित प्रारंभ में प्रथकार) रामभक्ति वर्णन ।
ग्रंथ में नौ 'विनय' (अध्याय) है, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१ भगवत्गीता विनय अवधी में है, जिसमें २५१ छंद हैं।
२. चेतावनी विनय, जिसमें ५१ छंद हैं।
३. नाम महात्म्य विनय, जिसमें ५१३ छंद हैं।
४ कृष्ण विलास विनय, जिसमें, १०१ छंद हैं।
५ चित्र विनय (चित्र काव्य में है), जिसमें १०१ छंद हैं।
६ सुधारस विनय—व्रजभाषा में है, जिसमें ६१ छंद हैं।
७ सप्तम विनय में ५१ छंद हैं।
८. पंजाबी विनय—पंजाबी भाषा में, छंद ६१ हैं।
९. विनय पूर्वी भाषा में, छंद १२३ है।

रचनाकाल

भई पूर्ण ज्यों पूर्णिमा चंद आनंद मैं जैति श्री राम निर्भेद गीता ।
तिथी कातिकी पूर्णिमा विक्रमादित वन्नसि सें अष्ट संब्रत पुनीता ।।

संख्या १३१क. जानकीप्रकाश (व्याकरण ग्रंथ), रचयिता—जानकी बाई, निवास-स्थान—वृंदावन, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—१०, आकार—६$\frac{६}{८}$ × ६$\frac{६}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, प्रकाशित, पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सम्भवत सं० १६३५ वि०, मुद्रणकाल—सं० १६३५ वि०, प्राप्ति-स्थान—पं० हजारीलाल जी द्विवेदी, वैद्य, ग्राम—कुकहा रामपुर, डाक०—शिवरतन गंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ।।

व्याकरण विद्या में प्रवेश होने के लिए जान्कीबाइ ने बनाया नाम इस्का जान्की प्रकाश ।

ा ा ि ी ु ू े ै ।। मात्रा ।। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ ।। स्वर ।। क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न प फ ब भ म ।। स्पर्श ।। य र ल व अन्तस्थ श ष स ह ऊष्मा विसर्ग. अनुस्वार. अयोग वाह. अ इ उ ऋ. ह्रस्व. आ ई ऊ ॠ. दीर्घ. इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ लृ ॡ गीता मे वहीं नहीं इस वास्ते उन्हें नहीं लिखा लृ न सस्कृत में आवे न भाषा में मन्त्र शास्त्र में आती है । ऌ वेद मे आता है क्ष त्र ज्ञ ये संयोगी है, क् ष, त र ज ञ ा ज्ञ.

:o: :o: :o:

अंत—सप्तमी का मे पं पर विशेष तो ऐसे ही अर्थ होता हे परन्तु कुछ नियम नहीं चिह्न तो यही हे जो लिखे परन्तु अर्थ मे नियम नहीं जसे चतुर्थी का चिह्न को. अर्थ लिए लिखा जो विशेष आता है किसी जगं उसप्रकार को. अर्थ नहीं भी होता जैसा भगवता पार्थय बोधिता भगवान ने अर्जुन से कही यहा चतुर्थी का चि ।। .. ।। ह्न ।। सं ।। हुवा ।।

हस्ताक्षर ठाकुर मिश्र

संख्या १३१ख जानकी प्रकाशिका, रचयिता—जानकी बाई, निवासस्थान—वृंदावन (मथुरा), कागज—आधुनिक, पत्र—५८, आकार—६$\frac{६}{८}$ × ६$\frac{६}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१७६०, पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य पद्य लिपि—नागरी मुद्रणकाल—सं० १६३५ वि० प्राप्तिस्थान—श्री हजारीलाल जी द्विवेदी, ग्राम—कुकहा रामपुर, डाक०—शिवरतन गंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाडवाश्चैव किम कुर्वत संजय ।। १ ।।

धृतराष्ट्र बोला हे संजय मेरे संबंधी और पांडव धर्मभूमि कुरुक्षेत्र मे मिले हुए युद्ध की इच्छा वाले क्या करते भये ।।१।।

:o: :o: :o:

अंत—यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।७८।।

जहा योगेश्वर श्रीकृष्ण चंद्र भगवान हे और जहा धनुषधारी अर्जुन हे वही अचल लक्ष्मी, जीत, ऐश्वर्य न्याय है यह है मेरी समझ ।।

टी० हे राजन भगवन से विमुख कौरवन की जीत न होगी इत्यभिप्राय

इति श्री जानकी बाई परम विरक्त श्री वैष्णव की बनाई हुई श्री भगवत गीता उपनिषदो की टीका जानिकी प्रकाशिका मे अट्ठारवा अध्याय समाप्त हुवा ।। १८ ।।

हस्ताक्षर प्यारेलाल सर्वानन्द सिद्धान्ती सम्वत् १६३५ ।। इस पते से यह पोथी मिलेगी श्री वृन्दावन चन्द्र परमधाम मे जहां जानकी बाई का निवास है अठ खम्बा बाजार चौक मे लाला

मक्खन लाल सराफ की दुकान पर मिलेगी मोल २) जानिकी बाई वे मोल देगी ॥ और दिल्ली मे मुन्शी उम्मेद सिहा बहादुर मरहूम के मकान के पास दसो के मुहल्ले में प्यारे लाल सर्वानन्द सिद्धान्ती के पास से मिलेगी.

विषय—गीता का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—यह पता नही चलता कि जानकी बाई किस सम्प्रदाय की थी । अन्य वृत्त भी उपलब्ध नही है ।

संख्या १३२. जबू स्वामी की कथा, रचयिता—जिनदास (पाडे), कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—१०$\frac{६}{१०}$ × ६$\frac{४}{१०}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—७२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—स० १६४२ वि०, लिपिकाल—स० १७५१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री गुरुभ्यो नमःश्री वाग्वादिनिभ्यो नमः लि जंबू स्वामी की कथा ॥

॥ चौपही ॥

प्रथम पंच परमेष्टिहि नऊ । दूजे शारद को वीनऊं ॥
गणधर गुरनि चरन अनुसरो । होइ सिद्धि कवित्त उच्चरो ॥
हीन वुद्धि मेरी मति अधु । प्रगटो कथा चोपही बांधु ॥
जबू स्वामी अंत के वली । ताकी सरश कथा यह चली ॥
जबू दीप भरथ हे षेतु । मगध देश उत्तिम वशे सेतु ॥
राजग्रह तह नगर अपार । वरनत कथा होइ विस्तार ॥ ३ ॥
शेनिक राइ तहा परचड । जाकी आग्या चारिहू षड ॥
सभा जोरि कर वेटो राई । वनमाली सिर नायो आइ ॥
छह रितु के फूल के आगे धरं । हाथ जोरि कर विनती करं ॥
श्री वर्द्धमान स्वामी अरहतु । समो सरन आइयो तुरंत ॥

:o: .o. :o:

अ ं—

सवत शोरह स जे भए । वयालीस ता ऊपर गए ॥
भादौ वदि पचमि गुरु वारु । ता दिन कथा किए उपचारु ॥६०॥
अकबर पातिसाहि के राज । कीनी कथा धर्म के काज ॥
भूल्यो विसरयो अछर जहा । पडित गुनिहु सवारहु तहा ॥६१॥
करं धर्म सो दीपा साहु । टोडर शुत आगरे सनाहु ॥
ताके नाम कथा यह कहो । मथुरा मे जिन निसही करी ॥
रिषभदास अरु मोहन दासु । रूपचद अरु लक्ष्मणदासु ॥

:o: :o: :o:

ब्रह्मचर्य भए मंतीदास । ताको शुत पाडे जिनदास ।
सो तिन कथा करी मन लाइ । पुन्य हेतु उपचार कराइ ॥

:o: :o: :o:

जब लगि तारागन अरु चद । जव लगु सूर उद्योत मंकरंद ॥
जवलो जेन धर्म्म अव लोई । स्वामी कथा पढे सव कोइ ॥६६॥

इति श्री जबू स्वामी की कथा पांडे जिनदास विरचिते संपूर्ण भवति शुभं भवतु ॥ सवैया तेईसा ॥ संवत सत्रह मे स इक्यावन फागुन है जथुधौ वदि आई । अंतभ केवली केरी कथा रचि के कहै जिन दास बनाई । सो यह लाल विनोदी लिषी अपने हित वाँचन को मनलाई । तद्यपि भव्यन के भव को उपदेशन हेत महा सुखदाई ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

अंत केवली की कथा बरनी परम पवित्र ।
चोर न ले आपुन तरे पावन परम पवित्र ॥ शुभ ॥

विषय—जैन भक्त जंबू स्वामी का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

संवत शोरह से जे भए । बयालीस ता ऊपर गए ॥
भादो वदि पंचमि गुरुवारु । ता दिन कथा किए उपचारु ॥६०॥

संख्या १३३क. पुण्याश्रव कथा कोस भाषा, रचयिता—जियराज, भावसिंह, कागज—देशी, पत्र—४१८, आकार—१०$\frac{2}{8}$ × ६$\frac{1}{8}$, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—७७६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६२ वि०, लिपिकाल—सं० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ अथ पुण्याश्रव कथा कोस भाषा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री वीर जिन मानम्य वस्तु तत्व प्रकासकं ।
वक्ष्ये कथा मयं ग्रंथं पुण्याश्रव विधानकं ॥ १ ॥
वर्धमान जिन वंद्य कै तत्व प्रकाशन सार ।
पुण्याश्रव भाषा करु भव्यजीवन हितकार ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
जंबू द्वीप सुहावन आरज षंड प्रधान ।
जिहि विदेह पूरब दिसा सोभित अति सुष थान ॥ ८ ॥
पुखलावती देस में नगर सुसीमा जोइ ।
राज करै वरदत्त जिह चक्रवर्त है सोई ॥

॥ चौपाइ ॥

एक दिवस नृप सभा मंझार । वैठयो रतन सिंहासन सार ॥
वस्त्राभर्न आधक अनूप । पहर रवि सम सोहै रूप ॥१०॥
तिहै अवसर वनमाली आइ । करी वीनती सीस निवाइ ॥
इसहि नगर बारह सुभ गाम । गंध मादन पर्वत कौ नाम ॥११॥
:o: :o: :o:

अंत— ॥ चौपाई ॥

पुन्याश्रव इह कथा रसाल । पूजादिक अधिकार सिसाल ।
षट अधिकार परम उतकिष्ट । छपन कथा जास में मिष्ट ॥ ६ ॥
:o: :o: :o:
तास वचनिका रूप सुधार । दौलतराम कथा बुधसार ॥
तासैं भावसिंह निज दंव । आरंभ किया चौपाई मंद ॥
सोल अधकार तई उन जोड । भेज दियौ लिखना हम ओड ॥
भली कथा लषि कै हम लिख्यौ । ते तैं कालसिंह वहा भख्यौ ॥ ६ ॥
भैरो दास पुन्य परकास । देषा ग्रंथ अधूरा पास ॥
मोसे मना संपूरन करौ । आरत कछू न मन में धरौ ॥१०॥
मैं भाषा भाषू सुष मान । जोकर लगैं पुराण पुराण ॥
तब उन कछुक एसैं मैं षोज । मो पैं भेज दियालह चोज ॥

॥ दोहा ॥

हुयो कर्म संजोग सैं पर सेवा मैं लीन ।
जा छिन थिती चिनगही वित जुत रचना कीन ॥११॥
ग्रंथ वड़ो मोमत तनुक ऐसा वना नियोग ।
हास निवार सुधारियो विनऊँ पंडित लोग ॥१२॥

॥ अडिल्ल ॥

एक हजार सात सैं वानमे जानिये ।
चैत सुदि द्वितीया दिन नीरा मानिये ॥
तादिन पूरौ कीय ग्रंथ जिय राजनैं ।
मंगल करौ सकल सैली सामाज नैं ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

जैसौ लिष्यौ वचनिका लषौ । तैसो छंद माहूं मैं रच्यौ ॥
जो कुछ यामैं परैं संदेह । तो तामैं देषौ धर नेह ॥१७॥

:o: :o: :o:

प्रभु कौ सुमिरन ध्यान कर पूजा जाप विधान ।
जिन प्रनिति मारग विषैं मगन होहु मतमान ॥५६२२॥

इति श्री पुन्याश्रो कथा को समाप्त ॥ शुभम् ॥ संवत ॥ १८६४ ॥ मिति भाद्र शुक्ल ॥ १३ ॥ सौ वार ॥ शुभम् ॥ रिषव दास अर्थं ॥

विषय—इसमें छप्पन कथाओं का संग्रह है जिनमें पुण्य और पापों का फल वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

एक हजार सात सैं वानवे जानिये ।
चैत सुदि द्वितिया दिन नीका मानिये ॥

संख्या १३३ख पुण्याश्रव कथा कोश भाषा, रचयिता—भावसिंघ जिनगन, कागज—देशी, पत्र—१०६, आकार—१२३/४ × १० इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनष्टुप)—४३३०, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९२ वि०, लिपिकाल—सं० १९१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—

... .जननी मान ॥५७॥
पूरन भद्र प्रथम परमान । मानभद्र पूजो दुतिवान ॥
एक दिवस जिन थानक गए । मारग मे इमि देषत भए ॥५८॥
इक चंडाल कूकरी जहा । देष मोह अति उपजो तहां ॥
जाय जिनेस्वर पूजा करी । फिरि वंदो मुनिवर वह घरी ॥५९॥
ता सेनी पूछो मन लाय । जूं चित उपजो संसय जाय ॥

:o: :o: :o:

अंत—

तास वचनिका रूप सिधार । दौलत राम कथा वुध सार ॥
ताते भाव सिघ निज छंद । आरंभ कियो चौपाई वंद ॥६१॥
सील अधिकार ताई उन जोड । भेजि दिया लिखना हम ओर ॥
भली कथा लिषि कैं हम लिष्यो । ताकू कवि भावसिंघ भष्यौ ॥ ६ ॥

भैंरोदास पुन्य परकास । देष्या ग्रंथ अधूरा पास ॥
मोसे भना संपूरण करौ । आरत कछु न मन मैं धरौ ॥
मैं भाषा भाषूं सुष मान । जोकर लगं सपूर्ण पुराण ॥
:o: :o: :o:

॥ अडिल्ल ॥

एक हजार सात सै वानजै जानिये ।
चैत सुदि दुतिया दिन नीका मानिये ॥
ता दिन पूरो ग्रंथ कियो जियराज ने ।
मंगल करौ सकल संघी समाज नें ॥
:o: :o: :o:
प्रभु कौ सुमिरन ध्यान करि पूजा जाप विधान ।
जिन प्रनीत मारग विषै मगन होहु मतिमान ॥६३॥

इति श्री पुण्याश्रव कथा कोस भाषा चौपई बंद भाव सिध जियराज कृत समाप्तं । संवत १६१३ ॥ मिती आषाढ वदी ॥ ६ ॥ सनिवार का पूरकारण करी ॥ पोथी लिषी जुग्गी मल्ल श्रावग पल्लीवार इष्वाकवंशी कास्यपगोत्री नवाबगंज के वसेरी ने लिषी मंदिर जी के वास्ते लिषी ॥

विषय—इसमें पुण्य पाप प्रदर्शक कथाओं का संग्रह है ।

रचनाकाल

एक हजार सात सै वानजै जानिये ।
चैत सुदि दुतिया दिन नीका मानिये ॥
ता दिन पूरो ग्रंथ कियो जियराज ने ।
मंगल करौ सकल संघी समाज नें ॥

संख्या १३३ग. पुण्याश्रव कथा कोश, रचयिता—जीयराज या जीवराज, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—१३½ × १० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—८०७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६२ वि०, लिपिकाल—सं० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगम्बर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ी वाली गली, चौक लखनऊ ।

आदि—॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ अथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिष्यते ॥ श्री विरेंजिनमाभ्य । वस्तु तत्व प्रकाशक । दक्ष्येककथा मय ग्रंथ पुण्याश्रव विधानकं ॥ १ ॥

॥ दोहरा ॥

वर्धमान जिन वंदि कैं तत्व प्रकाशन सार ।
पुण्याश्रव भाषा करूं भव्य जीवन हितकार ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:

अंत—

आचारज जिय धर्म अभिलाष । कीनो तास सस्कृत भाष ॥५०॥
तास वचनका रूप सुधार । दोलत राम कथा बंध सार ॥
तानैं भावसिंघ निज छंद । आरंभ कियौ चौपाई बंद ॥५१॥
सोल अधिकार ताई उन जोड । भेज दिया किषवा हम औड ॥
भली कथा लष कैं हम लिष्यौ । ताकूं काल भाव सिघ भष्यौ ॥
भैंरोदास पुन्य परकास । देख्या ग्रंथ अधूरया पास ॥
मोसे भष्या संपूरण करौ । आरत कछू न मन मै धरौ ॥
मैं भाषा भाषूं सुख मान । जो कर लगं संपूर्ण पुराण ॥

:०: :०: :०:

॥ अडिल्ल छंद ॥

एक हजार सात सै वानवे जानियें ।
चैत सुदि दुतीया दिन नीका मानियें ॥
ता दिन पूरो ग्रंथ कीयौ जीयराज नैं ।
मंगल करौ सकल संघी समाज नैं ॥५७॥

:०: :०: :०:

प्रभु कौ सुमिरण ध्यान करि पूजा जाप विधान ।
जिन प्रणीत मारग विषै मगन होउ मतिमान ॥६३॥

इति श्री पुन्याश्रव कथा कोस भाषा चौपई बंध मात्र संघ जीयराज कृत समाप्तम् संवत् १८३६ वर्षे माघ मासे सुक्ल पक्ष्ये तिथौ दशम्यां भौम वासरे ॥ सवैया इकतीसा ॥३१॥

विषय—जैन धर्मानुयायी पुण्यात्माओं की कथाओं का वर्णन।

रचनाकाल

एक हजार सात सै वानवे जानियें ।
चैत सुदि दुतीया दिन नीका मानीयें ॥

संख्या १३४ दोहावली रचयिता—जीवदास आचार्य, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—८३/४ × ४७/८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० वि० लिपिकाल—सं० १९१० वि०, प्राप्ति स्थान—श्री महंत जानकीदास जी, ग्राम—गढ़ी मलेमपुर डाक०—रायबरेली, जिला—रायबरेली।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ दोहावली लिषिते जीवदास कृत ॥

वंदौ सी गुरचरन नष जड़ता जाड कृसानु ।
करन सुमगल मोक्ष पद मोह तिमिर को भानु ॥ १ ॥
सुन्य तुर्ज्य वसु इन्दु पुनि सवत मोद परमान ।
जीवदास दोहा रचे जानहि संत सुजान ॥ २ ॥
तून सरासन वान गहे केसरि तिलक विसाल ।
सीस मुकुट कुंडल श्रवन जीवदास उर साल ॥ ३ ॥
सीतापति रघुनाथ जी अरु बंधु सहित कपिराज ।
वसो अचल अवधेस प्रभु मम उर सहित समाज ॥ ४ ॥

:०: :०: :०:

अगम निगम जुग जुग भने दीनबंधु इमि नाम ।
होत हसाई जगत मे सत्यकरो अब राम ॥५०॥
गरजे घुमरे मेघ बहु अबु परे नहि नेक ।
दीनबंधु वेदन भने निठुर भए करि टेक ॥५१॥
विरद रावरो हरि लषे जथा अरभकुन ख्याल ।
करन पूय लगाइ मुष चाचै हसो वमाल ॥५२॥
लषै न औगुन साधु के सुनी रावरी वानि ।
तजे विरद तारन पतित महा अधम मोहि जानि ॥५३॥
डारो नर्क मे मोहि जो करो पय अति दूरि ।
तुम्हहि वतावत तर्क बहु परी परश्रम भूरि ॥५४॥

:०: :०: :०:

अंत—जहां सब्द नहि रूप नहि ना माया नहि सुंन्य ।
नेम अचार विचार नहि नहिं पाप नहि पुन्य ॥११०॥
नही निसा नहि देवस जह नहीं सूर्ज नहि चंद्रा ।
नहीं नारि नहि पुर्ष तह वहा अषंड अमंदा ॥११६॥

नही जन्म नही नासतह बरन भेद नहि जाति ।
नही सीत नहि उष्णतह उच नीच नहि पाति ॥१२०॥
आवागमन भवन नहीं नहि रेषा नहि रूप ।
ब्रह्म निरामय एक रस निर्गुन अलष अनूप ॥१२१॥

इति श्री दोहावल्यां जीवदास आचार्य कृत संपूर्ण शुभं भूयात् सं० १६१० ॥ श्री राम ॥

विषय—भक्ति वैराग्य और ब्रह्मज्ञान वर्णन ।

रचनाकाल

सून्य तुर्ज्यं वसु इद्र पुनि सवत मोइ परमान ।
जीवदास दोहा रचे जानहि सत सुजान ॥ २ ॥

संख्या १३५क शत्रुसंहार, रचयिता—जोखूराम द्विज, निवासस्थान—हीगनगांरा-ग्राम (सुल्तानपुर), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गुरुप्रसाद जी दीक्षित, ग्राम—हीगनगांरा डाक—कादीपुर, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—लहरी अस्तुति प्रथमोध्याय: १ दोहा ।

विन्ध्याचल की गली मे मुक्ति फिरे बिललाय ।
जोखू ऐसो देषि क यमुना आई धाय ।
गंगा को स (म लिये चरण परी अकुलाय ।
भक्त तुमार प्रबल है यम का दिहो बबाय ।

कबित्त

हाथ लेहु खड्ग साध जोगनी कराल सहित भरव बिसाल पहिरे मुण्डन की मालिका ।
विन्ध्याचल रानी महारानी अभैय दानी ऐसे ज्ञान को मारने को रूप धरो कालिका ।
रोरतम को मारु इन्द्रजीत उदर फारु द्रिग पाप परायारु मानु देरी आजु कालिका ।
देह अलसानी कीधो गोठिल कृपानी सिंह भूलिगं उछालिका ॥ १ ॥

:o: :o :o:

अंत—

षाय डारु शत्रु को डबाय मारु चोमरि सो रुड डारु भवन जहा करत वह वासा है ।
दरा सो बरैरि डारु कोल्हू मे पारि डारु जाको तन फेरु डारु फारु जैसे षासा है ।
पुष्ट रतन पात्र लिहा चहे भू हमार मार वेग करवाल जम जोहि रहा आसा है ।
दवरु वनदुर्गा ववाइ देहु चुगुलन को नाष प्रण बरणत कं कहत पव दासा है ॥ ७ ॥

:o: .o. .o.

विषय—शत्रु के संहार के निमित्त दुर्गा की प्रार्थना की गई है ।

संख्या १३५ख. वनदुर्गा लहरी, रचयिता—जोखूराम मिश्र, ग्राम—हीगनगांरा, डाक—कादीपुर (सुल्तानपुर), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६५८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गुरुप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—हीगनगांरा, डाक०—कादीपुर, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

अशुभ अंक मेटि देत शत्रु को दपेटि देत
दारिद चपेटि देत लक्ष्मी बहुधानी है ।
भव मे अभीति देत सुगति सुनीति देत
राम पद प्रीति देत संतति सुदानी है ।

ऋद्धि देत सिद्धि देत कविता नव निद्धि देत
जग माह जोति देत करत शत्रु हानी है ।
निज पद मे नेह देत द्विज में सनेह देत
जोषू करुणाकर वनदुर्गा भवानी है ।१।
सुवर्ण पद्म आसी औ त्रिनेत्र रूप राशी
विधु छटा सी प्रकाशी चन्द्रकला धारण सी है ।
विंध नगवासी अमल कमल दृग लासी
देत्य दल नाशी अभय वरद देत खासी है ।
देव वधू दासी उर संग अविकासी
महारानी महाराजन की चरण परी भासी है ।
दुर्गा वनवासी सदा हृदय मे निवासी
जोषू राम अविनासी के वाम अग भासी है ।२।
करत दुष दूरं भरत कामना जरूरं
मेट दाप के कसूरं दुष्ट धूर के हेतु है ।
चण्ड मुण्ड सो गरूर ताहि डारो कर चूर
वेगि मारी शत्रु सूर मगरूरं मदि के तहे ।
देव दनुज भूरं रहत आजर हजूरं
देवतानी मद पूर करूर लिहे देत है ।
ब्रह्म इन्द्र वो कुबेर 'जोषू राम' करजोरं
विंध्यवासिनी का छोरं अघ घोरं मेटि लेत है ।३।

अंत—सेवक की विनती सुनि कै ... ... पट छोरन तें ।
सम पाप व ताप हरो जन के ... ... वान कठोरन तें ।
द्विज जोखू गणेश की मातु सुनो अब देपहू नयन के कोरन तें ।
जननी जननी को प्रतीति जव सब रोग हरो निज जोरन तें ।१९।

इति श्री जै कृष्णात्मज जोषू राम पूर्ण कृत वनदुर्गा लहरी ।

। दोहा ।

महामहोपाध्याय के सेवक जोखूराम ।
सूर्य नारायण नाम ह लक्ष्मण पुर है ग्राम ।२०।

इति श्री जै कृष्ण मिश्रात्मज जोखूराम सूरि कृत वनदुर्गालहरी समाप्ता शु० श्री संवत् १९५४ । आश्विनमासे कृष्णपक्षे नवम्यांतिथौ चन्द्रवासरे । लिखित कृष्णानद मिश्रेण ॥ शुः

विषय—दुर्गा जी की स्तुति वर्णन ।

संख्या १३६. पंचमुद्रा, रचयिता—जोगजीत (?), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—६ २/१० × ६ ७/१० इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—५२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री देवगिरि, स्थान व पोस्ट—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—सत सुकीत अर्ज अचीत मव कार्ज महपुर्स आवीचल अवनासी ॥ नीर्गण पुर्स नाम ॥ जोगजीत नाम गुरु ॥ पुरुम पुरातन पुर्स नीगुण आस औतार सु सुभ वेद वोनी ॥ अथ ग्रंथ पंचमुद्रा ॥ लीषतं ॥

॥ सुकीत उ वचन ॥

सुकीत कहै सुनो गुर ग्यानी । आगम भेद प्रभु कही वषानी ॥
सर्व सीस्टी की ऊतपती भाषो । मोसो गोई कछु जनी राषो ॥
ब्रह्मजीव कैसें उतपानी । तीनभेद गुर कहो वषानी ॥
मुक्तीभेद गुर देहु बताई । जाते हंसा लोकही जाई ॥

॥ जोगजीतउ वचन ॥

जोगजीत तब बोलै बानी । सुक्रीत सुनी आद सहीवानी ॥
जाको मर्म न जानै कोई । तुमसो भशी कहौ मैं सोई ।
उतपत को सब भेद बताऊ । आगम नीगम सब तुम्हें लखाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

ग्यान पंच मुद्रा कही मुल जोग को सार ।
रीषी मुनी देवन को मता ताते आगम आगर ॥
प्रथमही आद पुरुस वीस्तर । ताते भयो ब्रह्म आकारा ॥
आकार ते आहं तात उपजाई । ताते वड वीस्तार वनाई ॥
सोहं स्वासा पुर्स ऊचारा । तामे भाय आछर ओकारा ॥
ओकार ते त्रीगुन रूपा । ते पुनी भयो सीस्टी के भुपा ॥

अंत— ॥ साषी ॥

जीआत समानो लोक मे नही मरने की आसा ।
जीव मुक्त हो रहे मत नाम प्रकासा ॥
सींध समानो बुंद मे बुंद ही सींधु समाना ।
सींधु बुंद ऐकै भायो फीर न आयै जाना ॥
आगम ग्यान आछंत मता आद रूप वीग्याना ।
ऐ सुक्रत आनभै कथा तुमसत कहो वषान ॥

ईती स्त्री जोगजीत नाम नीर्गुण ग्राम आंतार ॥ सतगुर श्री सुकीर नाम गुरू सीष सब्द महावानी वीचारा ॥ आद बुध लीना आछतमत कथा ॥ आनम प्रमानम को वीवार ॥ आलषपीड ब्रह्मड को प्रकासा ॥ जीवनमुक्त मर्ग नीगुण ॥ ग्यान वीग्याना अजर अमर आषंड वानी ॥ का जोग वीवार ॥ सुनुम वेद वानी ग्रथ स्त्री पच मुद्र सपुण ॥ महीन कुआर पहील-षषा तीथी ४ गरथलीषा गीधानदास ब्रगी मोकम दोसमहमद षान कर पुरवा जील परतापगढ़ ॥ जो पत्री देष सो लीषा मम दोस न दीजिए पंडीत जानसे बीनती टुट आछर लेव बानए ॥

विषय—ज्ञान पंचमुद्रा का, जो योग का मूल सार कहा गया है, वर्णन किया गया है ।

संख्या १३७. नाम शब्दावली, रचयिता—बाबा झामदास, निवासस्थान—बाबा झामदास की कुटी, सुलतानपुर, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८$\frac{१}{८}$ × ५$\frac{६}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३१ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—महंत श्री महावीरदास जी, स्थान—झामदास बाबा की कुटी, पो०—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ साषी ॥

मथमहि सतगुर गाइ जिन रचो सकल जहान ।
पानी से पिंड सवारिवे अलख पुरुष निर्बान ॥ १ ॥
राम नाम सुमिरत बढो 'झाम' हृदय अनुराग ।
पाये भक्ति अनपायनी महित विवेक विराग ॥ २ ॥
भक्ति की महिमा को कहै नाम प्रभाव अपार ।
सिव अज नारद सेस श्रुति झाम प्रान आधार ॥ ३ ॥
हीरा नाम अमोल है मानि मोति को खानि ।
झाम मोदू केते पचे सतन लियो पहिचानि ॥ ४ ॥
बसै नाम जाके हृदय सो जाने वह भेद ।
झाम राम है प्रेम बस जेहि निरूपहि वेद ॥ ५ ॥

झाम नाम करी जतन जौ खोजै सहीत सनेह ।
तव पावैं निरवान पद मिटै सकल संदेह ॥ ६ ॥
विना भक्ति सो गति नही सिधि न विन गुर ज्ञान ।
झाम प्रेम विनु भजन नही तरै न विनु भगवान ॥ ७ ॥

:o: :o: :o:

संवत् अठारह सै यकतीस भादौ मास पुनीत ।
पूरनवासी है ताहि दिन 'झाम' मिलै हरि मीत ॥१०॥
हरद्वार सुरसरि निकट अर्ध राति प्रमान ।
प्रथम गयेव वानी भई झाम मिले निर्वान ॥११॥

:o: :o: :o:

॥ जाजपति ॥

कान्हा हम जानी हो ।
जब ते दिस्टी परे मनमोहन घर वन की मोहि गैल भुलानी हो ॥
लोक लाज कुलकानि विसरि गै स्त्रोवे नहि मुष वानी हो ॥ २ ॥
सुर औ असुर नाग मुनि वसि करि वसि किएव मूरुष ग्यानी हो ॥ ३ ॥
अमित रंग वहु वाज वाजै सुनि सषि झाम देवानी हो ॥ ६ ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १३८. रागमाला, रचयिता—तारानाथ, कागज—आधुनिक, पत्र—२६, आकार—८¼ × ५¼ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—शारदा सदन पुस्तकालय, रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम. १

॥ दोहा ॥

चरण कमल जगवद के मङ्गल सुमंगल धाम ।
विश्वाधार विरंचिसुत ताको करों प्रणाम ॥
लीन्हो सूर्ज वश में रामचद्र अवतार ।
निश्चर कटक सघारिकें हरयो धरनि का भार ॥
ताको पुत्र प्रसिद्ध जग कुस नृप परम प्रधान ।
दीन्हो ताहि कुशावर्ता रामदेव भगवान ॥
ताके कुल में प्रकट भे कछवार रनधीर ।
"श्री भगवत" नरेश मनि सागर सम गभीर ॥
"मानसिह" ताको तनय भयो अखंड प्रताप ।
धोयो वङ्ग समुद्र मह मेटचो अरि को दाप ॥ ५ ॥
"जगतसिह" ताको सुवन अति प्रचंद भुजदंड ।
जीत्यो फाज इरान की लीन्हो वहु विधि दंड ॥
"महासिह" जू तासु सुत दाता क्षाता वीर ।
नृप जाहिर रनभूमि में अरिगन धरत न धीर ॥
ताको सुत "जयसिह नृप" सकलगुणन को धाम ।
लियो सवाई को विरद जीति दुष्ट संग्राम ॥
"रामसिह" ताको तनय दाता शील समुद्र ।
जाकी धाक प्रचंद ते रहे न अरिगन क्षुद्र ।
औरंगजेव उदार वल दिल्ली को अवनीश ।
देखत जाके नामते तुरत नवावें शीश ॥
सो नृप "तारानाथ" सो भाष्यो प्रेम बढ़ाय ।
रुचिर "रागमाला" हमैं दीजै सुकवि बनाय ॥११॥

जो सुरभाषा ग्रंथ मैं लिखे राज को ख्याल ।
सोई नर भाषा करौ जनिहै सुमति विशाल ॥
राग बिराग प्रकार द्वै दोऊ मन की वृत्ति ।
उभय प्रबोधक ब्रह्म के संत जननि की कृत्ति ॥
तातें बरनौ राग को लक्षन समय स्वरूप ।
प्रेम भरै मंगल करै लखि रीझै सब भूप ॥
:o: :o: :o:

अंत—

सारंग लक्षण

मिलि विहाग अरु ललित पुनि ताहि कहत सारंग ।
जाहि सुने जन तजहि धान (? ध्यान) विराग प्रसंग ॥
अर्द्ध दिवस दिन के चढे सारंग राग उचार ।
गान सुने मृग आपुही आवत निपट सुठार ॥१५॥
सूक्ष्म वसन सुढार तनु गौर वरण सुकुमारि ।
जानहु सारंग रागिनी भाष गुनिन विचार ॥१६॥

इति श्रीमन्महाराजधिराज रामसिंह प्रोत्साहिते नरहरि कुल प्रसून तारानाथ विरचितायां मेघनार्घ्य निरुपणो ॥ शुभम् ॥ इतिशुभम्

विषय—छह राग और तीस रागनियों का वर्णन किया गया है ।

संख्या १३९क. कोकशास्त्र, रचयिता—ताहिर कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—१०$\frac{६}{८}$ × ५$\frac{२}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—५५८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० वृजनदन जी पाडे, स्थान व पोस्ट—लालगज, जिला–रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय न्मः ॥ कथा कोकशास्त्र ॥

॥ दोहा ॥

नैण हीरा के हाथ कै दीवै दीपक वारि ।
हिवै जोति प्रगट नहि मरै सबन से मारि ॥

ईति राय लछण समाप्त ॥ दुतियषड अथ दंपति लक्षण ॥ अथं चारि जाति ल (छ) ण कुल वेशर छंद षंड ॥

चौपाई

पहिला पुरुष शशा तु जानहु । दूजे पुर्ष शो मृगा वषाणहु ॥
तीजे पुर्ष वृषभ जो गान । चौथे पुर्ष तुरंगम मान ॥

अथ सशापुर्ष लक्षण

॥ पयंगम ॥

कोमल मूरति अंग सो कोमल बोलै वैण ।
वाकै भौह विशाल सो लैये हरणहि पैण ॥
थोरे काम कलोल बहुत सुष पायेय ।
शीलवंत गुणवंत शो चतुर कहावै ॥
रूपवंत अति चतुर लिनसे रस ।
गीत अर्थ सो हेदु रहै चित प्रेम वस ॥
लघु भोजन लघु रोस वीनौ दिण भाये ।
कामिनि बात रसाल.........पावै ॥
:o: :o: :o:

अंत—   ।। गीत छंद दोहा ।।

स्याम वरन वसै परतिय गमन सिय करैं कहा उपाई ।
गहै अकलंक सुभाय शो कर प्रसन कछु तन लाई ।।
बूजि को आवे नैन मो तव डीठ जोरी पीय ।
अधर धरैं पलकं परत विहसी शो चुंबन कीय ।।
तीय को त्रिय अधर मा काम वसै निप आई ।
करैं शो चुंबन असपरश अधरपाण अघाई ।
चौथे या.......................
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—कोकशास्त्र का वर्णन ।

संख्या १३६ख. गुनसागर, रचयिता—ताहिर, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—११०० खंडित (केवल प्रथम पृष्ठ नहीं), रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७८ वि०, लिपिकाल—सं० १८६६ वि० प्राप्तिस्थान—ठा० भवानीदयाल सिंह जी, ग्राम—ऐंतवारा, डाक०—ससिन (सत्थिन), जिला—सुलतानपुर ।

आदि— :o: :o: :o:

चारि चक्र सर्वविधि रचे जैसे समुद गंभीर ।
छत्र धरे अविचल सदा राजै साहि जंहगीर ।।
धन्य जनम जीवन सुफल मिटी जगत की सक ।
चतुर चकत्ता छत्रपति मानौ जगत अतक ।।
चारि वेद चितहीं धरैं राज रक दिन रैन ।
सपने दुष देषै नहीं सदा जगतचित चैन ।।१८।।
:o: :o: :o:
काम कुतूहल सब कथा चतुर अगोरे चाय ।
कवि ताहर तेहि देस मे वरनै वरनैं चरित बनाय ।।२०।।
कियो ग्रंथ नवखड रचि जेंव ब्रह्मड सुभाये ।
ठौर ठौर के भाव सो चढत होए चित चाए ।।

।। सोरठा ।।

प्रथम खड ये जानि राज खंड दूजै कहै ।
दपति खड बपानि ता पाछे सुभ खड कहि ।।
गुन विद्या पचम कहे पष्टम पुरुष मिलाय ।
सात षंड सजोग रचि सुति विलास मम थाय ।।
कर्म खड नव षड पुनि इक इक रस की षानि ।
जब लगि येह जानै नही तब लगि रस की हानि ।।
सवत सोरह सै गने अठहतरि अधिकाए ।
वदि अषाढ तिथि पचमी कहि कहि सुकवि सोहाय ।।२१।।
:o: :o: :o:

अंत—

काम कला निज तिय सो करो । कोक भेद जित हम उच्चरो ।
गोपय त्यागि आक पय गहै । जगत मांह सो मूरष अहै ।
जो ग्यानी नर जगत कहै है । सो येह मारग कवहु न जैहै ।।

।। दोहा ।।

अभिलाष: सतसग की परगुन करैं प्रकास ।
गुरजन नति विद्या विसन निज तिय सुरति विलास ।।

रावहिं जग अपवाद मैं भक्ति त्र्यंम्बिका स्वामि ।
इंद्रोजीत बल ते विगत ताहिर ताहि नमामि ।।
इति श्री अष्टम खंडये ताहर कते समाप्त ।
ग्रह रितु वसु छिति सम्वतो माधो पंचम आस्त ।।
मंगल दिन मंगल करन धवल धवरुआ पास ।
सासन न्रिम रनजीत के लहि लिखि देवीदास ।।

विषय—कोकशास्त्र का वर्णन ।

रचनाकाल संवत्

संवत सोरह सै गने अठहत्तरि अधिकाए ।
वदि असाढ़ तिथि पंचमी कहि कहि सुकवि सोहाय ।।

संख्या १३६ग. गुणसागर कोकसार, रचयिता ताहिर (?), कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२४४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० केदारनाथ जी मिश्र, ग्राम—हुलासपुरा, डाक०—भदोही, जिला—वाराणसी ।

आदि—श्री गणेसायेन्मः श्री गरवे नमः अथ पोथी कोकसास्त्र ।। करत की करनी अधीक ।। या संग ऐक रंग रचै ।। महमद दीन वाचारी ।। **अंग ऐक संग**

।। दोहा ।।

एक एक वरनौ कथा कर्म अधीकाई ।
जुग बीतं नाही मीटं रहै न चीत मे चाय । २
करी करी सभा जोरी कं कीन्हौ गन्त वनाऐं ।
ते सुभाव ते चारीगन दीन्हौ चारी जनाऐ । ३
चारी चकवं चारी जुग सदा रहत गंभीर ।
इम धरं अवीचल सदा राज साहगीर ।
चारी वेद गुन जन जनम सुफल मेरी जन्म कं पीर ।
चतुर विद्या छत्रपती नुरदीन जाहागीर ।। ५
:o: :o: :o:
काम कुतोहल रस कथा चतुर लोग करं चाव ।
कवीती करे जाही देसमह वरनी कथा नीती जाहि ।
कीएउ ग्रंथ नवषड रचि जो व्रहमड सुभाउ ।
नारद आदी वदीन करौ कहौं कथा सीरनाइ ।।
:o: :o: :o:
समत सोरह सं वरम अठहतरी अधीकाई ।
बदी असाढ तीथी पचीमी कही कथा स... ।
:o: :o: :o:
रचना रचो जो आदी पर्गट करी सो वेद मुष ।.
अहमद गुरु प्रसाद कछु एक जोतिष पं सीषौ ।।२५।।
:o: :o: :o:
वीनु पींगल जो छद रचं वीनु गीतकर ज्ञान ।
कोक वीन जो रती करं सो नर वृषभ समान ।।३०।।
चतुर सुनं चितलाइ कं तौ चीत के चींता हरं ।
अंध हाथ जो दर्पन दीजं प्रानी कं देखं न ।
आपनो वदन गहे सो लोहा जानीकं ।३१

ईती श्री मुष वंदन अर्थ दंपतीषड । :o: :o: :o:

अंत—पहुचे मेरेषा चलै मीलै तर्जनी म्राइ ।
की मध्यम अगुली वसै जानहु राजा भाइ ॥१४२॥
सोई रेषा जो उपर चलै उपर लबी भंडार ।
महाधनी नर जानीअै सेवै सकल संसार ॥१४३॥
जाकी अगुरी पास की वीसुल मध्यम रासी ।
तेही ववीचारी जानीअै पर तीरीआ की आस ॥१४४॥
उहै रेषा विसुल की कनगुरिया पर होइ ।
महातपसी तेही जानिअै ज्ञान प्रगासै सोई ॥१४५॥
—अपूर्ण

विषय—कोकशास्त्र का वर्णन ।

संख्या १४०. अद्भुत विलास, रचयिता—ताहिर (?), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—७ X ४॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी रचनाकाल—सं० १६५५ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री पं० पौहारीशरण जी चौबे, ग्राम-मलौली, डाक०—हैसरबाजार, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गनेसय नमः श्री गुरुदेवानयमः ॥
अथ इंद्रजाल की टीका अदभुत विलास लिषते ॥

ग्रंथ दोहा चौपाई

कोई ब्रह्मचर्य देषलावै । कहू नाटक चेटक भावै ।
काहू इन्द्रचाल लै आया । काहू काया कल्प देषाया ।
कोई मोहन सुकाज न करै । कोई चित्र की मूरति करै ।
कोई रूप सछूट करि रहै । देषै ओर ओट किछु कहै ।
कोइ इन विध्या उडि चलै । कोइ कल विन रित इकलै ।
कोई अगना सेजलै डासी । कोइ निरजीव देषावै हासी ।
कोइ निरजीव सजी विषावै । कोई चतुर रोवै अरु गावै ।
सवैगुनी मिलि कौतुक कीन्हा न जीन्ह देषा सो अचरज भीन्हा ।

दोहा

ऐ अचिरजि मिलि देषै लगै कौन क ग्यान ।
ऐक ऐक वरनै कहै रीकै चतुर सुजान । २

चौपाई

जो चाहे कौतुक जो करै । धीरज धरि मन में नहि डरै ।
सो जोगी जुगुतुहि जानै । पंडित सो जो वेद बषानै ।
जुगुति न चूकै तो सिधि होय । नातौ जोग अकारथ होय ।
चूकै जतन काज न होऐ । मोको दोस न दीजै कोय ।
पूरी जूति पूजै काम । तव वंदा का लीजो नाम ।
अवसुनु कहो सकल को अगा । एक एक जैसा प्रसगा ।
जैसा गुन मै कहो वषाना । एक एक सब लीजो जाना ।
मेरा वलु अरुभेद वषाना । 'ताहर' ऐ सभु भेजु जाना ।

दोहा

संमत सोलह सै गनै श्रो पचानवे राषि ।
अतकाल गिनि लीजिए वेद भेद की साषि ।

अथ वसीकर मां । चौपाई ।

कालो पषि चौदसि की रैनि । पुष्य नक्षत्र होसो....
—अपूर्ण (आद्योपांत उद्धृत)

विषय—इद्रजाल (कौतुक) विषय वर्णन।

रचनाकाल

संमत सोलह सै गनै औ पचानवे राखि।
अंतकाल गिनि लीजिए वेद भेद की साखि।

संख्या १४१. नवधाभक्ति विधान, रचयिता—तुरसी, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—५१/२ × ५३/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२७०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौगावाँ, जिला–उन्नाव।

आदि—....................

वेद विधांव ॥ ॥ २० ॥

तुरसी तनं मन आत्मा ॥ करहु समर्प्पन रांम ॥
जाका ताहि देउ रनि होहु छाडहु सकल सकांम ॥ १ ॥
ज्यौ बंचे पसु का धनी ॥ लेनहीर होइ सोइ।
तुलसी यो आया अरप्पई ॥ ज्यौ चित प्रभु की होइ ॥ २ ॥
तुरसी चिता सोई करैगा ॥ जाकौं सौप्या भार ॥
तूं चेरा होइ रहु चरन का आदि अंति इक तार ॥ ३ ॥
ज्यौं बेवट् की नाव विचि ॥ ताल्आ ताह आइ ॥
तुरसी आइकत्र भये ॥ तास भरोसा लाइ ॥ ४ ॥
तुरसी घर जाये जु गुलांम कौं ॥ काधौं चिता होइ।
चिता ताव तूहीं जुहैं तावतू मैं तैं सोइ ॥ ५ ॥
:o: :o: :o:

॥ अथ सुमिरन विधांन ॥

जब लग देही सावती रोग न कछू सरीर।
तब लग गोव्यंव भजन करि बदि गुर चरन कबीर॥

अंत— **॥ अथ सषाभाव विधान ॥**

तुलसी सषाभावहुं हरि भज ॥ सोऊ सदगति होइ।
मनसा बाचा कर्मना ॥ सत कहे सब कोई॥

॥ चौपएं ॥

जा सेवग होइ सेवाकरै। सौ तौ अवसिनं उधरै॥
तुरसी ब्रह्महि मितहू जांनि। भजै सूनाहू की ले मानि॥ १ ॥
तुरसी पारस अरू परमेस्वर साइ। कंसीहू विधि परसौ कोइ॥
:o: :o: :o:

॥ साषी ॥

तुरसी प्रभुत जांनिकं ॥ प्रभु कौ भजै जुकोइ।
ताकी महिमां को कहै ॥ जौ भौरंहु तारै सोइ॥
ऐसे पतित पावन प्रभु ॥ जैसेहू कैसे होइ।
:o: :o: :o:

—**अपूर्ण**

विषय—नवधाभक्ति वर्णन।

संख्या १४२क. जानकी मगल, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—३ × ३५/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक', फैजाबाद।

आदि—संवत् १६३२ कथा किय भवा

गुर गरणपति गिरिजापति गौरि गिरापति ।
सारद सेष सुकवि सुति संत सरल मति ।
हाथ जोरि करि विनइ भवहि सिर रगावौं ।
सिय रघुवीर विम्राह जथामति गावौं ।
शुभ दिन रचेउ सुमंगल मंगलु दायक ।
सुनत श्रवरण हिये वसहि सीग्र रघुनायक ।
देश शुहावन पावन वेद वषानिम्र ।
तह वस नगर जनकपुर परम उजागर ।
सीग्र लछि जह प्रगटी सब सुष सागर ।
जनक नाम तेहि नगरी वसैं नरनायक ।
रूप सील वय संस विरिद वल दल भले ।
मनहु पुरदर निकरि उतरि श्रवनी चले ।
दानव देव निसाचर किन्नर श्रहिगरण ।
सुनि धरि धरि मुनि भेष चले प्रमुदित मरण ।
एक चलहि एक बीच एक पुर पइठहि ।
:o: :o: :o:

अंत—नारि उघारि श्रोहार दुलहिनिहि देषहि ।
नयन लाहु लेहि जनम सुफल कै लेषहि ।
भवन श्रानि सनमानि सकल मंगल किए ।
वसन कनक मनि हेम दान विप्रन्ह दिए ।
जाचक किए निहाल श्रसीसहि जह तह ।
पूजे देव पितर सब राम उदय कह ।
नेगचार कहि दोन्ह सबहि पहिरावनि ।
समधी सकल शुग्रासिनि गुर तिय पावनि ।
जोरी चारि निहारि श्रसीमत निकशहि ।
मनहुँ कुमुदिनी उदय देषि विधु विगशहि ।

छद

. . .सहि कुमुदनी देखि विधु भए श्रवध शुष सोभामइ ।
एहि विधि विवाह जो राम गावहि सकल शुष कीरति नइ ।
सुभ चरित व्याह उछाह जो सियराम मंगल गाइ है ।
"तुलसी" सकल कल्यान ते नर नारि श्रनुदिनु पाइ है ॥

विषय—राम जानकी के विवाह का वर्णन ।

संख्या १४२ख. रामाज्ञा, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—३२, श्राकार—८॥ × ४। इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (श्रनुष्टुप)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० केदारनाथ पाडेय, ग्राम—हुलासपुर, डाक०—भदाही वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्रथ रामाज्ञा लिषते ॥ श्रथ सगुन प्रस्न ॥ श्री तुलसीदाश विरचिते । हनुमान जी सहाय । भवानी जी सहाय । श्रथ प्रथम सर्ग १ राम राम

॥ दोहा ॥

बानी विनायक श्रंब रवि गुर हर रमा रमेस ।
सुमिरि करहु सब काज सुभ मगल देस विदेस । १ ।

गुरु सरस्वति सिंधुर बदन ससि सुरसरि सुर गाइ ।
सुमिरि चलहु मग मुदित मन, होइहि सुकृत सहाइ । २ ।
:o: :o: :o:

अथ प्रथम सर्ग १ तीसरी सप्तक ३
भूपभवन भारन्ह सहित रघुवर बाल विनोद ।
सुमिरत सब कल्यान जग पग पग मंगल मोद । १ ।
करन बेध चूड़ा करन श्री रघुवर उपवीत ।
समय सकल कल्यानमय मंजुल मंगल गीत ।। २ ।।

अंत—अथ सप्तमो सर्ग ७ सप्तमोसतक ७ दोहा ।।
सुदिन सांझ पोथी नेवति पूजि प्रभात सप्रेम ।
सगुन विचार व चारु मति सादर सत्य सनेम । १ ।
मुनि गनि दिन गनि धातु गनि दोहा देषु विचारि ।
देस करम सरता वचन समय सगुन अनुहारि । २ ।
सगुन सत्य ससि नयन जुगन अवधि अधिक तवान ।
होइ सफल सुभ आस जस प्रीति पतीति प्रमान । ३ ।
गुर गनेस हरि गौरि सिय राम लषन हनुमान ।
तुलसी सादर सुमिरि सब सगुन विचार विधान । ४ ।
हनूमान सानुज भरत राम सिया उर आनि ।
लषन सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचार वषानि । ५ ।
जो जेहि कारज अनु जो जेहि कारज अनुसरहि सोइ दोहा जव होइ ।
सुगुन समै सब सांत फल कहव राम गति सोइ । ६ ।
सगुन विश्वास विचित्र मनि मगुन नाम हर हार ।
तुलसी रघुवर भगनि उर विलसत विमल विचार । ७ ।

इति श्री रामाज्ञा तुलसीदास विरचिते सगुन प्रबधे सप्तमसर्ग संपुर्ण सुभमस्तु...... संवत् १८३० ।

विषय—शकुनविचार वर्णन ।

संख्या १४२ग. वैराग्य संदीपनी, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६५/८ × ७१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७ वि० (सं० १९८० वि०) प्राप्तिस्थान—श्री साहित्य सदन सार्वजनिक पुस्तकालय, गू०, डाक०—खजुरो (बछरावां), जिला—रायबरेली ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ।। श्री महापुरुषेभ्यो नमः ।।
राम बाम दिसि जानकी लाखन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्यानमय तुलसी सुरतरु तोर ।। १ ।।
तुलसी मिटै न मोह तम कोटि करौ गुन ग्राम ।
हृदय कमल फूलत नहीं विन रवि कुल रवि राम ।। २ ।।
सुनत लखन श्रुति नयन बिनु रसना बिनु रस लेत ।
बास नासिका विन लहै परसत विनं निकेत ।। ३ ।।

।। सोरठा ।।
अज अद्वैत अनाम अलख रूप गुन रहित जो ।
मायापति सोइ राम दास हेत नरतनु धरयौ ।। ४ ।।

।। दोहा ।।
तुलसी यह तन है तवा तपत सदा त्रिय ताप ।
सांति होइ तव सांति पद पावै राम प्रताप ।। ५ ।।
तुलसी यह तन खेत है मन बिच कम किसान ।
पाप पुन्य द्वै बिज है बोवै सो लेइ निदान ।। ६ ।।

अंत—फिरी दोहाई राम की गे कामादिक भाजि ।
तुलसी जिमि रवि के उदं तुरत जात तम भाजि ॥१८॥
यह विरागसदीपनी सुजन सुचित सुनि लेहु ।
अनुचित वचन दिचारि कै सो सुधारि तेह देहु ॥१६॥

इति श्री वैरागसंदीपनी मोहधाकारने विध्वंसिनी शांति वरनं नाम तृतिय प्रकासह ॥

॥ सोरठा ॥

० ६ ८ १
संवत् भयविव्यतीत व्योमं नाग वसु भूयत ।
ज्येष्ट सुदी सुपुनित तीथि पुर्णमिसे दिन सुभ ॥ १ ॥

राम राम राम । मीती कुवार वदी परेवा पोथी लीषी हरि परसाद सुकुल आगे सुभ ॥

विषय—वैराग्य विषय का वर्णन ।

संख्या १४३क तुलसी शब्दादिप्रकाश, रचयिता—तुलसीदास (?), कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—८॥ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप)—६७४ पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० आद्याशकर जी त्रिपाठी, ग्राम—रुधउली, डाक०—सरपतहा, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ जोतिष लिष्यते ॥
सुमिरि राम घन श्याम उर धरे धनुष वर वान ।
अव जोतिस के सिधु को वरणत विदु समान ॥ १ ॥
अचरज अज कमलज करत कमलज अज ते षर्व ।
सिधु वुंद अरजुद तें सिधु सुगम सुष सर्व ॥ २ ॥
जोतिस जाको रूप है रेष निमेषरु दड ।
तिथि दिन योग नक्षत्र शिर छत्र रुड ब्रहमड ॥ ३ ॥
प्रथम तिथि नाम सज्ञा नदा भद्रा अरु जया रिक्ता पूर्ण होइ ।
जानो सज्ञा तिथिन की क्रम से फिरि फिरि जोइ ॥ ४ ॥

नक्षत्र नाम—समस्त नक्षत्रों के नाम ।

अंत—पौष्टिक मगल यज नृप वाहन कचन नारि ।
रत्न विभूषनि तह लता गुरु को शुभद विचार ॥७६॥
वाजन भूषन भूमि दय गोकरि रत्न दुकान ।
नारि अन कचन सुषद भृगु काष्ठ नृत्यरु गान ॥ ७७ ॥
लोहा सोसा या पतिष मिथ्या वास्तु प्रवेश ।
हठ धरना थिर कार्य शुभ शनि को जानि विशेष ॥७८॥

इति श्री तुलशी शब्दादि प्रकाशे जोतिस विचारे अष्टम भेद संपूर्ण शुभ ॥

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

संख्या १४३ख. ज्योतिष, रचयिता—तुलसी, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—१० X ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री उदरभागि शर्मा, ग्राम—चवजीतपुर, डाक०—सुजानगज, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ जोतिष लिष्यते दोहा
सुमिरि राम घनस्याम उर धरे धनुक वरवान
अव जोतिष के सिधु को वरनत वुंद समान १
अचरज अज कमकज करत कमलज अजते षर्व
सिंधु वुंद अम वुंद ते सिंधु सुगम सुष सर्ब २

जोतिष जाको रूप है रेष निमेषरु दंड
तिथि दिन जोग नक्षत्र सिर छत्र मंड ब्रह्मंड ३
प्रथम तिथि नाम संज्ञा
नंदा भद्रा अरु जया रिक्ता पूर्ण होइ
पांचो संज्ञा तिथिन की क्रम सो फिरि फिरि जोइ ४
नक्षत्र नाम २७

अंत—लोहा सीसा पाय विष मिथ्या वस्तु प्रवेस
हठ धरना थिर काज सुभ सनि को जानि विसेष
अथ सिवोक्त मुहूर्त
वार न जोग नक्षत्र तिथि करण जोग बलवान
सूल जोगिनी सकल ये त्यागु सकल अंजाल ८४
सिवा लिषित अवलोकि के निश्चै मन मे राषि
किए काज सिधि होय सब पंडित जन की साषि ८५
अश्वनि कार्तिक मार्गशिष पौष एक क्रम जानि
ज्येष्ठ अषाढ़ सुएक पुनि सेस त्रितीय बषान ८६
माहे रुद्र अमृत कहत वक सुन्य पुनि होर
विजयरु सोभन विलवगहि चौथे मरन गनोर ८७
इति तुलसीदास कृत सब्दस्य संपूरन शुभमस्तु १६०६

विषय—भाषा ज्योतिष वर्णन ।

संख्या १४३ग. तुलसीदास शब्दादि, रचयिता—तुलसी, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—६१६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० वटेश्वरप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—बरवरिया, डाक०—व जिला—बस्ती ।

आदि— .... ।
हरतरु चित्रा स्वाति गनि पुनि विशाष शिर मौर । ६
अनुराधा ज्येष्ठा अपर मूल पूर्वाषाढ़ ।
उत्राषाढ उ श्रवन पुनि कहत धनिष्ठा वाढ ।
सतभिष पूर्व भाद्रपद उत भाद्र पद जानु ।
अंत रेवती नषत ए सताईस परमान ।
र नक्षत्र तिथिन की त्यागघटी तिथि नक्षत्र के अंत तीनि घटी कहि देत ।
वर्जनीय शुभ काम मे इनमे रहै न चेत ।
आद्रा ते बसना दिन र मूलाहिक ते जान ।
सेष नपुसक मानिए जोतिष करे बषान ।
:o: :o: :o:

पचक भेद

अंत धनिष्ठा अर्द्ध सो और नषत गनि वेद ।
पंचक ताको जानिए एतने का जात वेध ॥
अथ पंचक वर्जनीय काज
पाठ न छाजिन काथ ये तृन संचन मृतक दाह ।
सेल विनन..... दिसा भूलि चलिए वाह ॥
जात्रिक नक्षत्र

अंत—सिवा लिषित अवलोकि कै निश्चै मनमो राषि ।
किए काज सिधि होहि सब पंडित जन की साषि ।६१

अस्वनि कार्तिक मार्गसिर्ष पौष एक कर्म जानि ।
ज्येष्ठ अषाढ़ सुऐक पुनि सेष तृतीय बखान ।६२
माहेन्दर अमृत कहत वक्र सून्य पुनि होइ ।
विजयए सोभन विलव कहि चौथे मरन गनोइ ।।६३

इति श्री तुलसीदास शब्दादि संपूरन सुभमस्तु ।

सम्वत् १६१२ आस्विन सुक्र ।

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

संख्या १४३घ. वृहस्पति काड, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—७ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—३५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य. लिपि—कैथी. रचनाकाल—स० १६०६ वि०, लिपिकाल—स० १६३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठा० रामकिशुन सिंह. ग्राम—सुरेरी, डाक०—मारिखपुर, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गनेसाग्राए नमह ।। दोहा ।।

जै जै श्री रघुवंसमनी दीन दआल कीपाल ।
अस कही गंरीर वरन वोलेव वन रसाल ।

।। चौपाई ।।

सुनहु उमा अती वचन प्रासंग । सुमती वोलासु सकल भ्रम भागु ।
सुर गुरदास केर फल जैसो । दवदस रासी बखानौ तैसो ।
मेष रासी पर जव ग्रह रहही । वरखाए तव अस वुध कहही ।
नर सुअन्न संग्रह तव करीहै । प्रथम मास भौनन्ह नर भरी धरीहै ।
ताही समै सावन के मासा । वरमत सभ गथ प्रगासा ।
वोको होही सुअनन केरी । तेही अग्र दुरभिछन फेरी ।
तेही अवसर बरखा परमाना । कतौ जो स्रुतीचारी बखाना ।
नौव वासर असाड सोहाए । तो अम वहो वारीध सचु पाए ।

।। दोहा ।।

पाव देवस स्रवन मह वरखही वारिध नीर ।
भादो मे दीन दवदस सुकुल इमती धीर ।

:o: .o. :o:

उतर देस होइ कछु पीरा । समयभूमि निसु दिन रन क्रीड़ा ।
मीथुन कै के माघ से तव छत्र भाग कहू ग्राथ ।
रही वीमुख नर नारी ते भ्रमही महा मैं पाथ ।
कर नाटक कुरुछेत्र विसेखी । नीज पर नही कोउ सकहा नीरोधी ।

अंत— छंद

नीरमै सहीत परीवर होहि अनेक मै सुख पावही ।
तीहु भाति कपट वीहाइ जे नर वेद मत मन लावही ।।
खट षस्ट दस सनमत इहै दीज चरन रती प्रीआ चाही के ।
तुलसी प्रीआ कीपा गीरा जेसहरो करी अमदर सपद जग ताही के ।
देही सयद भगवन वार ही वार वेद कहू ।
वमहु ह्रीदै श्री कांत सुखमा सिधु कीपा अएन ।

इती श्री वृहस्पती कांड संपुरन तुलसीदास कीते संवत १६३६ साल मीती फागुन सुदी २ :o: :o: :o:

विषय—द्वादश राशिफल विचार (वृहस्पति के अनुसार) वर्णन ।

संख्या १४४. मोहमुग्दर, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १६३६ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—श्री महादेवप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—मिसरवली, डाक०—रुद्रनगर, जिला—बस्ती।)

आदि—अथ मोह मुग्दर लिख्यते दोहा मूल ।।

श्री गुरपद रज बंदिए जनहित का हेतु।
विश्य विष्टि उघरे विमल जो रजे दृग रेनु।
श्री गुर कृपा कटाक्षसे विमल बुद्धि वर पाए।
'ग्रंथ मोहमुग्दर' रच्यौ पद पंकज सिरनाए।

यह कथा धर्म को सेतु। सजन सुनें करि हेतु।
जेहि रामपद अनुराग। हरि भक्ति पथ मन लागु।
तेनके सुनत मन चैन। उघरे हियके नैन।
निगुड़ो के हिय दरार। सुनि होइ जरि बरि छार।
जो मोहमद कियो पान। सोकहै आन कि तान।
हरिहर में दुरमति कीन्ह। हिमा अमिष मह लीन्ह।
नहि बात श्रवनन सुनें। सुनि चित्त इत उत करें।

दोहा

मत्स कुर्म अरु लिंग पुनि अग्निपुराण सुजान।
मर्कंड षष्टम सुनो ए तामसी पुरान।
ब्रह्म औ ब्रह्मांड जो ब्रह्म वैवर्त भाविष्य।
सैव वावन एराजसी निश्चै मानो सीष्य।
नारद विश्णुराणपुनि श्री भागवत सुजाना।
गरुड वह्म वराह कहि एन्हूमं सात्वकी मानु।
सात्वक प्रभुको भक्ति जुत सदा मोक्ष पद देत।
राजस देता स्वर्ग को तामस नरक निकेत।

अंत—मुन मनोहर

दान दीजे जानि विष्णु हेतु विश्णु भक्ति देखि निगुडा के दिहे दान सो तौ सत्यानास है।
दोनहुं में भेद दुइ एक मतो गुनि कहि दूजे मोगनी मुढ करै ताकी आस है।
विश्णुही के नाते देषु ब्राह्मन को पूजा होत विश्णु से विमुष ताको कीजै नहीं पास है।
"कहै दास तुलसी" बीचारि गुर ज्ञान सेती एक दान धाम देत एक नर्क वास है।
षाते मासु मछी पाए धर्म देह ब्राह्मन को सोतो सत्यनाम कही प्रेम रूप जानिए।
ताके पुजे को पुन्य विश्णु मे विमुख शठ दानहु मे हानि ए वीसेष उर आनिए।
विष्णु भक्त कोई सोतो विश्णु से अधिक जानु उच नीच मध्य भेद रंचक न मानिए।
'कहै दास तुलसी' बीचारी गुर ज्ञान रूप जहाँ सद सभा तहा ऐसो पद मानिए।

साछी रामायने

भक्तिहीन *वीरंचि समहोई। सभ जीवनमम प्रिय मोहि सोई।
भक्ति वंत अति नीचहु प्रानी। मोहि प्रानमम असमोहि वानी।

इति भागवत वाक्यं पुनः—

श्लोक (संस्कृत)

इति पद्मपुराणे पुनः..................
इति कत्यायिनी संहितायां...............
:०: :०: :०:

मुल मनोहर

याते मासु मछी अंस विष्णुको संकल्प लेत विष्णु से विमुष करै तुलसी पै तक है।
ब्रह्मकुल जन्म पाए कर्म ब्रह्मरछ सोको जन्न वीषे त्याग कियो योंही फल है।

मोती कुआर वदी ६मी संमत् १६३६ ।। इती मोहोहमुग्दर समप्त इति गोसाई तुलसी-दास कृत पूरएम ।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १४५. हनुमान टीका, रचयिता—तुलसी (?), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८६⅞ × ३६⅞ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—३८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ।।

वीर बषानो पवनसुत जानत सकल जहान ।
धन्य धन्य अंजनितनै संकठहर हनुमान ।।

।। चौ० ।।

जै जै जै हनुमान अडगी । जै जै महाबीर बजरंगी ।।
जै कपीश जै पवन कुमारा । जै जगवंदन सील अगारा ।।
जै उधवत अमल अविकारी । अरिमर्द्दन जै जै गिरधारी ।।
अंजनि वोद्र जन्म तुम्ह लीन्हा । जैजैकार देवतन कीन्हा ।।
वाज दुंदभी गग(न) गंभीरा । सुर मुनिहरष असुर भैपीरा ।।
काँपे सिंधु लंक संकाने । छूटी वंदि देवतन जाने ।।
ऋषै समूह निकट चलि आए । पवनतनै के पद सिर नाए ।।
वार वार अस्तुति करिनाना । निर्मल नाम धरा हनुमाना ।।
सकल ऋषै मिलि अस मत ठाना । दीन बनाइ लाल फूल बाना ।।
सुनत वचन कपि अति हरषाने । रविरथ गुमत लाल फल जाने ।।
रथ समेत रविकीन्ह अहारा । सोर भए तह अति भयकारा ।।
विनु तमारि सुर मुनि अकुलाने । तव कपीश की अस्तुति ठाने ।।
सकल लोक विनति सुनावा । चतुरानन तव रवि उगिलावा ।।
कहेउ वहोरि सुनो बल लीला । रामचन्द करिहहि बहुलीला ।।
तव तुम्ह तेन्ह कर करव सहाई । अवहि रहो कानन मे जाई ।।
अस कहि विधि निजलोक सिधारा । मिले सषा संग पवन कुमारा ।।
षेलहिं षेलु महातरु तोरी । गली करहि गहि पर्व्वत फोरी ।।
जेहि गिरि चरन देहि कपिधाई । बलसो तमकि रसातल जाई ।।
कपि सुग्रीव वालि के त्रासा । निर्भत रहेउ राम मग आसा ।।
मिले राम औ पवन कुमारा । अति आनन्द समीर दुलारा ।।
मणिमुंदरी रघुपति सो पाई । सीता षोज चले कपिराई ।।
सत जोजन जलनिधि विस्तारा । अगम अपार देव मनहारा ।।

अंत—

विनु स्रम गोषुर सरिस कपीशा । नाघि गए कपि कहि जगदीशा ।।
सीता चरन सीस तेन्ह नावा । अजर अमर की आसिष पावा ।।
रहे दनुज उपवन रषवारी । एक ते एक महाभट भारी ।।
तिन्है मारि उपवन करि षीमा । दहेउ लंक काँपे दससीसा ।।

सिया बोध दै पुनि फिरि आए । रामचंद्र के पद सिर नाए ॥
सेत बिसाल आनि पलमाहो । बांधासिंधु निमिष नहि जानी ॥
मे पुनीश सकती बस जबही । राम बीलाप कीन्ह बहु तबही ॥
भवन समेत सुबेनहि लाए । लेन सजीवनि को तब धाए ॥
मग मह कालनेम को मारा । सुभट अमित निश्चर संघारा ॥
आनि सजीवनि शैल समेता । भरि दीन्ह्यो जह कृपानीकेता ॥
फनि बृत केर सोक हरि लीन्हा । बरषि सुमन सुर जै जै कीन्हा ॥
महिरावन हरि अनुज समेता । लंगे जहा पताल निकेता ॥
तहा रहेव देवी अस्थाना । दीन चहै बलि काढि कृपाना ॥
पवन तनै तब कीन्ह प्रहारी । कटक समेत निसाचर मारी ॥
रिक्ष कीस पति तहा बहोरी । रामलषन कीन्हे एक ठौरी ॥
सब देवन की बन्दि छोडाए । सो कीरति नारद मुनि गाए ॥
अक्ष कुमार दनुज बलवाना । स्वान केतु कह सब जग जाना ॥
कुम्भकरण राव......... । .... ।

—अपूर्ण प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—हनुमान यश वर्णन ।

संख्या १४६. हजारा, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—८७, आकार—१३ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—११६३, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कुँवर सुरेश सिंह जी, कालाकाँकर, प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ लिष्यते हजारा तुलसीदास कृत

॥ दोहा ॥

राम वाम दिसि जानुकी लषन दाहिनी वोर ।
ध्यान सकल कल्यान मे सुर तरु तुलसी तोर ।१।
सीता लषन समेत प्रभु सोहत तुलसीदास ।
हरषत सुर बरषत सुमन सकल सुमगल वास ।२।
पचवटी वट विटप तर सीता लषन समेत ।
सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमगल देत ।३।
चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय लषन समेत ।
राम नाम जप जाप कहि तुलसी अभिमत देत ।४।
पय नहाइ फल खाइ जपु राम राम षट मास ।
सकल सुमगल सिद्धिजग करतल तुलसीदास ।५।
राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर वाहिरे जो चाहसि उजियार ।६।
हिय निर्गुन नैननि सगुन रसना राम सुनाम ।
मनहु पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम ।७।

अंत—देस काल करता करम बचन विचार विहीन ।
ते सुर तरु तर दारिदो सर सरि तीर मलीन ।९९७।
सहसहि सीधे कोपबस किये कठिन परियाक ।
सठ संकठ भाजन भये हठि कुजाति कपिकाक ।९९८।
राजकरं विन काजही ठाटहिते कूर कुठाट ।
तुलसी ते कुर राज ज्यो जैहै वारह वाट ।९९९।—२
राज करं विन काजही करं कुचालि कुसाज ।
तुलसी ते दसकंध ज्यों जैहै सहित समाज ।१०००।—१
सभा सुयोधन कौसकुल सुमति सराहत जोग ।
द्रोन बिदुर हरिहि कहहिं प्रपंची लोग ।१००१।

आदि—.....................

सब देवतन कंह बंदी में दीन्हा ॥
तब नारद मुनि रचा उपाई ।
रामहि वन बीग्रावहु जाई ॥
जब लगी राम बनहो नहि जाही ।
तब लग देवता छुटही सब नाही ॥
सवती के सुता होइहै भुग्रारा ।
अनुचर होइहै पुत्र तोहारा ॥
उनही राज तुमही सुष नाहो ।
सोइ करो जो राम वन जाही ॥
दुग्रादस वरष राम वन जाही ।
तुम सुत राज करो ग्रह माही ॥
एही मंत्र रिषी दीन्ह सीग्रा हरन जो होए ।
त्रीभुवन दुसट जो रावन वधन करें प्रभु सोए ॥
कही नारद सुरलोक सीधाए ।
एही मंत्र कंकही मना ग्राइ ॥
आधा रिषी के परे सरापा ।
तब राजा के ग्रागुठा कापा ॥
देस देस के वैद जो ग्राएऊ ।
रा(ज) के पीरा बहुत के भंएऊ ॥
केकही के मुष ग्रात्रीत बसेऊ ।
तेही मुष ग्रागुठा नीरपती के गहेऊ ॥
दोउ वीष म भेट भौ जबही ।
वेदन से सुष पाएउ तबही ॥
मागु मागु ते केकाही मान इछा जो होइ ।
मानही ग्रीचारी के राजा तुरत देउ मै तोही ।

:o: :o: :o:

एतनी वचन सुनी रामजी वन के कीन्ह पग्रान ।
तुलसीदास मन गहवरा लीष होए परवान ॥
रामचदर वन कीन्ह पयाना ।
राजा दसरथ मन पछिताना ॥
राम चंदर छाडल ग्रसथाना ।
रोवही नगर सकल परधाना ॥
रोवही सीता सती कुमारी ।
राम लषन विन ग्रवध उजारी ॥
रची रची केकही पत्र लीषाई ।
दूत हाथ देइ नइहर पहुचाई ॥
जाहु दूत भरथ के पासा ।
ग्रवधपुरी के भए नीरासा ॥
चोथे दुत वीता जब भयेऊ ।
ग्रंतर वास जोजन सठि गएऊ ॥
जहव भरथ चतरगुन रहेऊ ।
जाइ दूत डंडवत कीएऊ ॥

ग्रंत—कीरीग्रा सपती वहुत करी मोसे कहे वुझाए ।
द्वादस बरष के बीते तबही ग्रजोध्या ग्राए ॥
मोही कहकर धरो दीन्ह पठाई ।
पुनी बीन्ह मोही राम बोहाई ॥

तुलसीदास भजु राम पद नीसु दीन राम मन लाए। एती श्री पोथी भारथ मीलाक संमपुरन सही जो देखा सो लीखा मम दोष नी दीजीए पंडीत जन से मीनती मोरी टुटल अछर लेख ओरी संमता सल सन् १८६६ महीन बइसाख दीन बुधवार ता० ८ मुकम केरची बंदर बसवत सफरी राम लीखनो माल के राम राम राम

विषय—रामकथा अंतर्गत रामवनवास और भरत मिलाप वर्णन।

संख्या १५०. कुंडलिया या शत चौतीस, रचयिता—तोवरदास, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—६, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{4}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—१५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गुरु प्रसाद जी, स्थान व डाक०—वछरांवा, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री सत्यनामाय नमः अथ तोवरदास कृत कुंडलिया लिख्यते ॥

कुंडलिया

का करणधार केवट मिला भौजल खेवनहार।
सतगुर दूलन शाहेवा माथे मणि उजियार॥
माथे मणि उजियार झलक जस अनगण भाना।
तोवर अजर अमर देषु जोगी निर्वाना॥
मन वच लाय शनेह शीस धरि लीन्हे चरणा।
शहजे उतरे पार करै जेहि का जस करणा॥ १॥

खा खाटी घुट चाल गा खतरा रहै न कोई।
बैर भई दूबी भई शुरति शतै शमाइ॥
शुरति शतै शमाइ शरण शतगुर की आए।
मिटि गौ जम को त्राम वास चरणान तर पाए॥
प्रभु दूलन परताप नाम रस पीवै घोटी।
तोवर भे मस्तान मंगन मन रहा न खोटी॥ २॥

अंत—यह पर्मारथ विनती आत्म जोग कहत।
जन तोवर विश्वास ते जो नित पाठ करंन्त॥
जो नित पाठ करन्त भक्ति तेहि शतगुर देहै।
शत्यलोक मा वास वास आपन कै लेहै।
प्रभु दूलन शत मंत्र अंत जो करी शनेहा।
तिनका शब कल्यान मुक्ति आनंद फल एहा॥४१॥

इती श्री ग्रंथ शत चौंतीस संम्पूरण शुभमस्तु॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन। कुंडलिया अकारादि क्रम से रची गई है।

संख्या १५१ वसंत राजभाषा, रचयिता—त्रिविक्रमदास कागज—देशी, पत्र—३० आकार—६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{2}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०७ वि० (संभवत), प्राप्तिस्थान—पं० रामसुंदर जी वाजपेयी, स्थान—वाजपेयी खेड़ा, डाक०—केहटाकलां, जिला—रायबरेली।

आदि—

..........................वेद पुरान सास्त्र सब इतहास स्मृति और जितने सास्त्रनी के ये प्रयोजन सो सकुन सास्त्र भीतर है २५ यामे जो जो वुष्ट बलु होइ सो सकुन सास्त्र न मानै ताते जो कोई विघ्न होइ सोउ भेद देषि कै कार्ज आरम्भ करै॥२७॥

इति बसंतराज भाषायां प्रथम वर्ग॥ १॥

वर्ग के नाम वर्ग की संख्या क्रम करिकै विस्तार और संक्षेप ते कहूंगो १ वर्ग में सकुन

की महिमा श्लोक ३० दूजे वर्ग में शास्त्र सं......कह्यौ आपु श्री महादेव मनुष्य के हित सकुन शास्त्र कहै है श्लोक १३

:o: :o: :o:

जात्रा प्रस्न में श्यामा दरसन वं कं दुर जाइ तौ विदेसी जहा गयौ होइ तहा माही और जो दाहिनौ सब्द करं तौ ताकौ आपदा लाग्यौ है १० जात्रा प्रस्न मे बाराही वुरि जाइकं तारा गति करं तौ विदेसी आवं और निकट कं तारा गति करं तौ विलंब सो आवं ११

इति वसंतराज भाषायां गमन प्रकारनं त्र्योदसं १३

अंत—अथ व्रांह्यी गमन मं......मं व्राह्यी की गति वाइ दाहिनी सुभ और वन का जीव......म कौ वेस्टनि करिवौ लं तौ सत्रु की सेना ग्राम कौ आइ घेरं और ग्राम विषं अथवा पुर विषं वन कं जीव रात्र मं प्रवेस करं और दिन कौ देषं तौ ग्राम पुर कौ उजर करं स्वामी कौ मृत्यु दिखावं

इति वसंतराज भाषायां साकुन चतुप्पद विचार चतुर्दस वर्ग १४ संवतु १९०२ वि० (?) माह सुदि ८ सीताराम......भग्न पृष्टि कटि ग्रीवा वध दृष्टिरधो मुष कष्टेन लिषितं ग्रंथं यत्नेन परिपालयेत् १

विषय—शकुन विषय का वर्णन।

संख्या १५२ दलेलप्रकाश, रचयिता—थानकवि, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—२९, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप)—१३४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४८ वि०, लिपिकाल—सं० १९४९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी जी मिश्र, व्रजराज पुस्तकालय गंधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥

॥ छप्पै ॥

जै लंबोदर शंभु सुवन अंभोरुह लोचन।
चर्चित चदन चंद्रभाल वंदन रुचि लोचन॥
मुख मंडल गंडालि गंड मंडित श्रुति कुंडल।
वृंदारक वर वृंद चरन वंदन आखंडल॥
वर अभय गदा अंकुश धरन विघनहरन मंगलकरन।
कवि थान नवासं रिद्धिवर एकदंत जं तुव शरन॥१॥

:o: :o: :o:

॥ कविवंश वर्णन कवित्त ॥

वासी वैसवारे को चिलासी खेरे डोंडिया को
गिरिजा गिरीश को विरद करो गान हौं।
पोता महासिंह को परोना लालरायजू को
सुत तौ निहाल को भजन भगवान हौं।
नाती तौ धरमदासजू को कवि चदन को
भैनो शिष्य सेवक कहावों कवि थान हौं।
साहेब मेहरवान दानिश्री दलेल जू को
गृंथ बरनन करौं विविध विधान हौं॥२४॥

१८ ४८
समत अठारह सं जहाँ अरनालीस विचार।
शुक्ल पक्ष दशमी सुतिथि माघमास गुरुवार॥२५।
दानि दलेल प्रकाश यह तब लीन्हो अवतार।
मुद मंगल कल्यान में रच्यो गृंथ सुषसार॥२६॥

॥ अथ नृप वंश वर्णन ॥

प्रथम मल्ल कीटो भए सुकृती परम उदार ।
गौर वंश के मुकुट मनि जानत सब संसार ॥२७॥
तिनके चारि तनै भये जिमि चारौ दिशि राज ।
भोप सिंह ही जानिए राम सिंह सिर ताज ॥२८॥
अरु धन सिंह महाबली हिम्मति सिंह सुबीर ।
बली विक्रमी शूरवर अति उदार मति धीर ॥२९॥
जीति जगत चउरा नगर कीन्हो राज सुदेश ।
तहा राजधानी रची आनंद थान सुवेस ॥३०॥

:o: :o: :o:

भोपनसिंह के पांच सुत उपजे परम पुनीत ।
दाता ज्ञाता साहसी सुचि संतन के मीत ॥३२॥
नृप अनूपसिंहहि कहौं उदैसिंह पुनि जानु ।
पानसिंह जू वीरवर बाघराय बलवानु ॥३३॥
हरजू मल्लहिं कहौं पुनि सब लायक गुनिमंता ।
पांचौ सील सुभाय सुभ सील सराहत संता ॥३४॥
बाघ राय को सुवन वर कहि केसरी नरेस ।
दाता शूर भलो भगति मूरति मदन सुवेस ॥३५॥
रामसिंह के तन वर तीनि ज्ञान वर वीर ॥
नृप दल गजनसिंह जू जवर सिंह रनधीर ॥३६॥
औ बखतावर सिंह जू बखतावर मतिमान ।
दाता ज्ञाता सूरमा साधु साहसी जान ॥३७॥
नृप दल गजनसिंह के तनं डालसिंह शुभ नाम ।
शील शूरता साहसी आनद आठो जाम ॥३८॥
जवर सिंह नरनाह के चारि सुपुत्र विचित्र ।
जिन्हे सराहे सुजन जन सुचि सतन के मित्र ॥३९॥
नृप गयद जठो तनय अति आनद सरूप ।
अरि खडन मडन अवनि वीर धीर वर भूप ॥४०॥
दानि दीवानी सिंह जू गौर वंस अवतंस ।
जीते जग अनेक अरि ज्ञानमानसर हंस ॥४१॥
को करनी बरनै जात दीरघ दानि ललेल ।
जगनी पर लीयो गुजगु यहे रैनि दिन खेल ॥४२॥
कुमनसिंह लहुरे तनय दया दान गुनवान ।
सज्जन के घातक परम मित्रन के प्रिय प्रान ॥४३॥

:o: :o: :o:

चारौ सील सुभाय सुचि सूर बली मति धीर ।
तामे एक दलेल नृप धीर वीर गंभीर ॥४४॥

अंत—प्रथ दलेलप्रकाश को पढै गुनै चित लाय ।
वाचक कारक अर्थ की शक्ति होय सुष पाय ॥ ८ ॥
राधा राधारमन के वर्णन यह शृंगार ।
नाना भांति सुभाव गुण नाना भांति विहार ॥ ९ ॥
लहै सकल कल्याण पद औ संतन को संग ।
पढै दलेल प्रकाश को बढै सुमंगल रंग ॥१०॥

इतिश्री कविथानराय विरचिते दलेलप्रकाशे चित्रकाव्यवर्णनोनाम एकादशोल्लासः ॥११॥

॥ दोहा ॥

रस श्रुति निधि शशि वर्ष अरु आश्विन कृष्ण सुमास ।
वर्स कुजहि विन पूर्ण भो सिंह बलेल प्रकास ॥११॥ श्री राम ॥

विषय—काव्यरीति, नवरस नायिका भेद सहित और चित्रकाव्य वर्णन ।

रचनाकाल

समत अठारहे सै जहां अरतालीस विचार ।
शुक्ल पक्ष दशमी सुतिथि माधव मास गुरुवार ॥२५॥

संख्या १५३ अश्व चिकित्सा, रचयिता—दयानिधि, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८६/१० × ४५/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—७३, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

॥१९॥ घंटी वाजी वदन की अंगी अशुभ वषानि ।
इन घोरेन कों तजतु है शालिहोत्र पहिचानि ॥२०॥

॥ चौपाई ॥

घटी अश्वस्वामी कों नावौ । वाजी देइ दुःखहू निवसै ॥
ववनीधन को तुरत घटावै । अंगी तुरत सो देश भजावै ॥
जाकौ छवि षट सम पद होइ । वृक्ष तालु दूखित नहिं सोइ ॥
शंख समान पाद मुख होइ । निवित भ्रमर सहित शुभ सोइ ॥२१॥

इति श्री अश्वचिकित्सिते दयानिधि कृते.........ध्याय ॥ ४ ॥

॥ अथ दंत वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

दंतन को अब भेद मैं क्रमते कहत वषानि ।
जाते वाजिन को तुरत आवु परत पहिचानि ॥ १ ॥

अंत—अथ शूद्र घोरे के लक्षण

धुआँ को आकृत वरण होइ ॥
माथे मा गोउरा अम टीका होइ ॥

गोम होइ ॥ सांपिनि होइ ॥ आंषी छोटी होइ ॥ स्वामी धर्म मा लगन न होइ ॥ वाना घास बहुत................

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—शालिहोत्र विषय वर्णन ।

संख्या १५४क अग्रज्ञान, रचयिता—दरिया साहब, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—३६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सन् १३४२ साल, प्राप्तिस्थान—श्री प० हरिहरजी, ग्राम—सरपोका, डाक०—इटवा, जिला—बस्ती ।

आदि—सत्यनाम । गरंथ अग्र ग्यान कृत दरिया साहब ।

साषी

अर्ज मिन्त सिरनाए वाबा निधि सुनि लीजिए ।
सार शब्द समुझाए बहुरि नाम बजल आवहि ।

जुक्ति मुक्ति औ भुक्ति विरागा ।
सब गुन कहेउ प्रेम अनुरागा ।

जाते जीवन नष्ट नहि जाई।
जो कोई प्रेम मगन होइ आई।
संते सापिनि बहुत बेकारा।
डसेवो सकल मुनि होहि ना पारा।
त्रिगुन तीनि ताप तन भेऊ।
आवागमन दुष दारुन सहेऊ।
ब्रह्म कहि सभ सगुन भुलाना।
एह घर थापि नहि पहिचाना।
एह विधि देवा सभे अनुरागा।
जोगी जती अवभेष वीरागा।
जीव जीव ब्रह्म सभ कहई।
उलटि पलटि भवसागर रहई।
झूठी बात झूठी गहि राता।
कर्म कोस है भने वीधाता।
सांचेकहु जग मारिया मरना सांझ विहान।
झूठी मोटरी माथ पर पढ़ते गीत पुरान।

अंत—

कहैं दरिया धन भाग हमारा।
धन्य धन्य सत्य करतारा।
भाग भतार जो तुम कहं पाया।
दरसन दाया अमृत फल आया।
अगम अगाध अगोचर देषा।
सब विधि करता दिष्टि मे पेषा।
करहि भक्ति जीव होहि सनाथा।
विना भक्ति भव होहि अनाथा।
करे अकृक अकिलि जो आवे।
छाया सनदि मोहर सो पावे।
छाया पाप कपट जो त्यागे।
नीरमल ग्यान हस गुन लागे।
एहि विधि कहिय साच सफाई।
उजल दसा नहि मइलि समाई।
हस वस गुन गहिर गभीरा।
भावा प्रेम ज्ञान मतिधीरा।
वेवाहा पुरुष अमान है दरसन दीन्हो आय।
साहिजावा सुकृत है सब विधि कहा बुझाय।

ग्रथ अग्रग्यान लीखल भइल १३४२

विषय—संत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन।

संख्या १५४ख ज्ञानरत्न, रचयिता—दरिया साहब, कागज—देशी, पत्र—१ आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१४८८, पू रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सन् १३१२ साल, प्राप्तिस्थान—नाग प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—सत नाम। जिदा साहब। सत ग्रग साहब। नाम नीसान सुकीत स दरीआ साहब गरंथ ग्यान रतन अगम भाष न बदीछोर हस उवारन।

साषी

ग्यान रतन मनी मंगल बोमल सुधा नीजु नाम।
करो बीबेक बीचारी कर जाए अमरपुर धाम।

चौपाई

बीमल नाम मनी मस्तक टीका ।
बीना बीबेक भेष सभ फीका ।
नीरखी नाम नीजु प्रे समेता ।
काटि क्रम कलि मग लहेता ।
पुरन ब्रह्म पंडित सो ग्याता ।
निरालेप पुरइनि जेवो पाता ।
पुरुष नाम नीजु आरस अहई ।
भौ मुकुताहल जग मे लहई ।
बीमल नाम नीजु प्रेमही पाम्रं ।
सुरति षगा मह जाए समोम्रं ।
पुरुष नाम नीजु बीमल बीरागा ।
ग्यान जुक्ति जन छीजं ना जोगा ।
टीका मूल नीज नाम है रही चरन चीत लाए ।
हंस बंस मुकुता इहै जिन्ह जग मे आए ।

साषी

अंत—
भक्ति ग्यान का इहमता सुनो सर्व चीत लाए ।
भाव भगति ग्यान रस बीबरन कीया बनाए ।
चरन कमल पद पंकज लहो ।
माहामोह दुष कबहुं ना पहो ।
आनंद मंगल पूरन कामा ।
अछै बीछ लीला सुष धामा ।
:o: :o: :o:
सतगुर चरन बीमल पद गहि लीजे नीजु नाम ।
भगति भाव दृढ ग्यान करि जाए अमर पुर धाम ।।
:o: :o: :o:
भादो बदी बारसुक गौन कीयो छय लोक ।
जोजन सब्द बीबेकियो मेटेवो सकल मम सोक ।
समत् अठारह सं सातम भादो चौथि अधार ।
साव जाम जब रइनि गौ दरिया गौन विचार ।

सोरठा

दरिया सतगुर सार तत्त्व 'ग्रंथक' य कीन्हो ।
सत पुर्ष नीजु सार ओनिम करो सीषाए के ।
:o: :o: :o:

साषी १२६ चौपाई १८७० सब २०६१ ग्रंथ ग्यान रतन लीषल भइल सपुरन सन् १३१२ साल

विषय—सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या १५४ग दरिया स्वरोदय. रचयिता—दरिया साहब, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री हरिहरजी, ग्राम—सरगाका, डाक०—इटवा, जिला—बस्ती ।

आदि—सत्यनाम

गरथ दरिया सरोदे कृत दरिया साहब ।
दरिया अगम गंभीर है लाल रतन की षानि ।
जोजन मिले जवहरी लेंहि शब्द पहिचानि ।
सुछममेद महिमा अगम चारि वेदको मुल ।
कहों सरोदे ज्ञान गहु कवल मानसर फुल ।

चौपाई

गरंथ अस्ट दस कहा बखानी । तव सरोदे कै दिल अनुमानी ।
ग्यान सरोदे कहेवो कबीरा । अपरम साधु नीज ज्ञान गभीरा ।
साहब मम अंत्र गतिजानी । बोले विहसि मधुर मृदु वानी ।
दरिया करहु सरोद उचारा । हस बस गमि करहि विचारा ।
आदि अंत मध्य तुम जानी । निर्गुण सगुण दीच सत सहिदानी ।
बाहर भीतर देह देहु देखाई । जीव दौढ़ होइ भक्ति मन लाई ।
करे विचार सुबुधि जन सोई । जाते आवा गमन न होई ।
चीन्हेउ सतगुर लेहि मुकुताई । लोक जाप जीव कालन पाई ।
अंत्र गति मन जानिके करता आयसु दीन ।
दरिया सरोदे ग्रथ मम तवहि अरथन कीन ।

अंत—है खुसबोई पास में सुभि परै नहि सोय ।
भरम लागा भरमत फीरे तीरथ बरत सभकोय ।
अमर लागा कथा मे महि मंडल के पार ।
सुरतिडोरी रहू चेतिये जेत मकरी मे तार ।
:o: :o: :o:
दरियादिल दरियाई है अगम उपार बे अन्त ।
सभमे तें तोही में सर्भ जानु मरमकोइ सत ।
दरिया नामा फारसी पहिले लिखा किताब ।
सो सुदा कहा सरोद मे गहिर ग्यान गर काव ।

गरंथ दरिया सरोदे सपुरन भइल ।

विषय—संत मतानुसार भक्ति तथा आत्मज्ञान विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है । रचनाकाल तथा लिपिकाल दिया नहीं । रचयिता दरिया साहब ने अठारह ग्रंथों की रचना की थी । तत्पश्चात् दरिया सरोदय नामक उन्नीसवाँ ग्रंथ रचा । सर्वप्रथम रचयिता ने दरियानामा नाम का फारसी में एक ग्रंथ लिखा था जिसका अनुवाद यह दरिया सरोदय उत्तम है । संत साहित्य की दृष्टि से यह ग्रंथ महत्वपूर्ण तथा रचना उत्तम है ।

संख्या १५४घ. भक्ति हेतु, रचयिता—दरिया साहब, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—६०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—ग्यामत शोहरत-गढ़, जिला—बस्ती ।

आदि—सतनाम । भक्ति हेतु कृत दरिया साहेब ।

साखी

ग्यान भक्ति निजुसार हे सुनो सरवन चीत लाए ।
बोक्ती वोक्ती वखानिए सब्द अनुप देखाए ।
भक्ति हेतु इह ग्यान के मूला । बंगसीत कमल सहस दस फूला ।
सत सरन प्रीति लौ लावे । नीगुन नीरखी विमल जस गावे ।
गहे टेक सतनाम संनिधा । दुर्मति दुरि दूरि दिल कमल अनूपा ।
कवल भँवर जेवो वास सुवासा । रहत रहित रस करत वेलासा ।
वासर मैं बीलसो बीहराही । फिर फेरि वास उलटि लपटाहीं ।
फनि मनि गनि जिमि धंत उतारी । चरत चरादि विद्रिस्टि न टारी ।
फिरि नाहीं एक पलक बिसवासा । लिन्ह उठाए अर्ध मूष ग्रासा ।
ग्यान छुरी निश्चै गहो काटो क्रम कली पाप ।
संत सरन सत गुरुसेवा मेटे कलीमली ताप ।

अंत—जो कोइ पढ़े विवेक करि सुनें स्रवन चीतलाए ।
मुक्ति पदारथ पाइहै सदारहै सुष पाए ।
संमत् अठारह सै सैतिस गर्वा वृष के पास ।
जोजन शब्द विवेकिया मेटी जाए जम त्रास ।
भादो वदी चौथ दिन गमन कियो छ्यलोक ।
जोजन समुझि विचारहीं मेटे सकल सभ सोक ।

ग्रंथ संपूरण भक्ति हेतु भाषल दरिया साहब का संमत १९६४ साल ।

विषय—संत परंपरानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या १५५. दोहासार सग्रह, सग्रहकार—दारा गाहि (दारा शिकोह), स्थान—आगरा, कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—७½ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१६८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१० वि०, लिपिकाल—सं० १७६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—सिंध श्री गणाधिपतेन्मः ॥ श्री भवानी संकरया नमः ॥ अथ श्री सार संग्रह के दोहरा लिष्यते ॥

॥ श्लोकु ॥ परमारथ भाव ॥

सार समुर्धत्य कथ्यते भाव संग्रह ।
सर्वदा ज्ञान दानाई सिवद सुष मोछिदः ॥ १ ॥

दोहरा

असुर कदन मोहन मदन वदन चंद रघुनंद ।
सीया सहित बसिवौ सुचित जै जै जय आनंद ॥ २ ॥
नैन निकट काजरु बसै पै परपन दरसाइ ।
ज्यौं सांधन सतसग विनु नाहिन आन उपाइ ॥ ३ ॥
जगत जाायौ जिहि सकल सोहरि जान्यो नाहि ।
ज्यौ आंषिन सबु देषिये आंषि न देषी जाहि ॥ ४ ॥
सबही घट मैं रामु है ज्यों गिरि सुत मैं जोति ।
ग्यान गुनी चकमक विना कैसे परगट होति ॥ ५ ॥
है हिय मैं पंयतु नहीं करियतु बहुत उपाइ ।
जसे अपनी देह कौ छाह न पकरी जाइ ॥ ६ ॥
बसि बसि हित सज्जन सेज म निकट टरे नहि जोट ।
लष्यौ परैन "हुसनि" अब घट घूंघट की वोट ॥ ७ ॥
करि घूघट जगमा हियौ बौहत जु लाऐ लोग ।
दरसन तिन्हे दिषाइयै जेहे दरसन जोग ॥ ८ ॥
तिहूलोक निहु पूरियो एक जोति सब ठाउ ।
जोतिहि अन अनरूप है मूरति अन अन नांऊ ॥ ९ ॥

अथ गूढ़ अर्थभाव दोहरा

मुकुट साहि अबला मकुचि सकल लूटि लीय साज ।
मुकुताहल तज्यौ नासिका कहि पंडित किहि काज ॥ १ ॥
दधि सुत कामिनि करह पर हंस चुगन ब्यौहार ।
उडि गए हम चकोर चंनि कारन कौन विचार ॥ २ ॥
वषावत भई मुंदरी गई मरवर तिहिकाल ।
सर सूक्यौ आनदु भयौ कारन कौन "जमाल" ॥ ३ ॥

अंत—मोसौं पूछति है कहा जीय ही जानि न लेहि ।
वे सज्जन धरतो मिले ऊपर बरसे मेह ॥४१॥

इक भीजे चहलै परे बूडे बहे हजार ।
कितेन औगुन जग करत बै नै बढ़ती बार ॥४२॥
चाना तौक तरुनी गरै पूत हथ्थ करि हाथ ।
पाइ निवेरौं कुटमकी तुम षोलौ ब्रजनाथ ॥४३॥
सत्रह सै दस साल मै प्रफुलित फागुन माहि ।
दोहासार कढाइयौ दिन मनि "दारा साहि" ॥४४॥

इति श्री मनि पंडित दिल्ली दिनेस श्री दारासाहि करित दोहासार संग्रह संपूर्न समाप्तः ॥ सुभं भवत् ॥ बैसाष सुदि ६ गुरौ संवतु १७६४ राज्यं श्री महाराज कौमार ॥ श्री राव इंद्रजीत जू देव ॥ सुभ स्थाने दलीप नगरे ॥ पुस्तक महाराइ श्री लाला प्रथीसिंघ जाट ढवरा के ॥ लिषतं श्रीप्रधान गुमानराय भडेरिहा

॥ सोरठा ॥

करी बिनती सिरु नाइ प्रति माफिक पुस्तक लिषी ।
बिसरयौ लेहु बनाइ भूलचूक छमि बांचिबौ ॥ १ ॥

दोहरा	भावइकसठि	पनायेकुसंयेकतीस
१७७२	६१	१३१

विषय—निम्नलिखित विषयों पर नाना कवियों के दोहों का संग्रह किया गया है—१ परमार्थभाव, २ वैर्मधिभाव, ३ जोवनभाव, ४ अंगभाव, ५ अलकभाव, ६. तिलभाव, ७ नैनभाव, ८ सिंगारभाव, ९ चेष्टाभाव, १० नैनलर्गान, ११ नैनमिलन, १२ नैनभाव, १३ नैनगजभाव, १४ मनगजभाव, १५ मर्नसिकार, १६ प्रेमलगनि, १७. सजोगभाव, १८ रतिसंयोगभाव, १९ अनपभाव, २० मानभाव दूति, २१ दूतीवचन, २२ सषीवचन, नाईक प्रति, २३. सषी वचन, नायिका प्र०, २४ रमतरकभाव, २५ सषी-नाइक प्रतीकार, २६ नायिका नाइक प्र०, २७ विछुरनभाव, २८ नाइकविरह, २९ नैन, विरह भाव, ३० नाइक विरह, ३१ साधारन विरह, ३२ गुपनभाव, ३३ मिलनभाव-३४ मन प्रकिति, ३५ विवेक भाव, ३६ सजनभाव ३७ दुर्जनभाव, ३८. कपटभाव, ३९. सठभाव, ४० सिछाभाव, ४१ कुचवर्नन, ४२ मित्रभाव, ४३ ग्यानभाव, ४४ परस्थान-भाव, ४५ अस्फुटभाव, ४६ रितुवर्नन, ४७ वायवनन, ४८ बमनवर्नन, ४९ हास्यवर्नन, ५० चातकभाव, ५१ चकोरभाव, ५२ भवरभाव, ५३ पतगभाव, ५४. चद्रउकति, ५५. कर्मभाव, ५६ मनविस्वास, ५७ गरग्रथंभाव, ५८ चौबोला, ५९ विरोधभाव, ६० हरि-लीला, ६१ वैराग्यभाव ।

जिन कवियों के दोहे है, उनके नाम नीचे दिए जाते है—१ हुमैन, २ तुलसी, ३. दयाल, ४ मोहन, ५ सिवदास, ६ मल्ल, ७ अहमद ८ बिहारी, ९ जमाल, १० समन, ११. जगत, १२ केसव, १३ नवल, १४ हरिवस, १५ कल्यान, १६ सेऊ, १७ कासिम, १८ निहाल, १९ तुलाराम, २०. वाजू, २१ कान्हर, २२, गेरव, २३ नवलराम, २४ आलम, २५. बाबू, २६. सकर, २७ गुपाल, २८ हमीद २९ जमला, ३० नद, ३१ नाथ, ३२. जगन, ३३. ताहर, ३४ चद, ३५ गदिल, ३६ रजना, ३७ व्यासदास, ३८ रहीम, ३९. जादौ, ४०. अकबरसाहि, ४१ कविसाहि, ४२ काल्, ४३ पूरनदास ।

रचनाकाल

सत्रह सै दस साल मै प्रफुलित फागुन माहि ।
दोहासारु कढाइयौ दिनमनि दारासाहि ॥४४॥

संख्या १५६. भक्ति उक्ति कृष्ण आज्ञा, रचयिता—दासराम, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—५॥×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० केदारनाथ जी मिश्र, ग्राम—इमिलिया, डाक०—बाघानारा, जिला—बस्ती ।

आदि—

.........फल सकल करैंगे राम ॥ १

आ ॥ अभिराम पुरुष पूजैं नहीं, पूजत डोलैं भूत।
कस बस ज्यो जाहिगे दुष दारिद्र कुऊत। २

इ ॥ इत उत परिपूरण सकल जानि कृष्ण गुण गाई।
भुक्ति मुक्ति संतोष सुष देहे राम अघाइ॥ ३

ई ॥ ईश्वर सगरी सृष्टि कों बरदाइक दातार।
ताहि भजें सुषराम जो मिलें पदारथ चार। ४

उ ॥ उत नित ढूंढ तु बावरे शोक दोष दुष जोर।
बहुत दिवस भटकत फिरें अब भजि नवकिशोर। ५

ऊ ॥ ऊसर विनवी जे फलें मीत मिलें गोपाल।
रंक राइ छिन में करे जो हरि होहि दयाल। ६

ऋ ॥ ऋद्धि सिद्धि मन कामना सुफल फले सब काज।
कियो विभीषन लंकपति राम गरिब निवाज। ७

ॠ ॥ ॠति नीति हरि सो भली भीति न व्यापे कोई।
काज सवारे कृष्ण सब जो धीरज मनहोई। ८

अंत—हरि हरि हरि हरिहि रटि करि करि दृढ़ विस्वास।
व्याह विधि आनद नित राधा कृष्ण विलास। ४९

क्ष ॥ क्षत्र लिए ब्रह्मा रहे पवन ढुरावै चौर।
निगम भाट साटचौ करें जगन्न कुअर सिरमौर॥५०

अक्षर अक्षर भेद वह 'दास रामजी' गूढ।
पडित गुण मदित लखें मे कहा जानो मूढ।५१

एक महस अरु सात में इकहत्तरि आषाढ।
सुदी द्वेज अरु शुक्र दिन कृष्ण कृपा भई वाढि।५२

इति श्री भक्त उक्त कृष्ण आज्ञा समाप्तः॥

विशेष—कृष्ण भक्ति विषय वर्णन।

रचनाकाल

एक सहस्र अरु सात से इकहत्तरि आषाढ।
सुदी द्वेज अरु शुक्र दिन कृष्ण कृपा भई वाढि।५२

संख्या १५७क अन्योक्ति कल्पद्रुम, रचयिता—दीनदयाल गिरि, निवासस्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—[illegible], आकार—[illegible] × [illegible] इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९१२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री लाल श्री रघुनाथ सिंह जी, धौरहरा (बस्ती)।

आदि—अथ अन्योक्ति कल्पद्रुम ग्रंथ लिष्यते॥

यह कल्पद्रुम बुध सुषद ग्रन्थ अनूप उदार।
विरचो दीनदयाल गिरि अभिमत फल दातार।

कुंडलिया छंद

बंदो मंगल मै विमल वृज सेवक सुष दैन।
जो करिवर मुख मुकती गिरा नचाव सुखैन॥
गिरा नचाव सुषन सिद्धि दायक सब लायक।
पसुपति प्रिय हिय बोध करन निरजर गननायक।
बरनं दीनदयाल दरसि पद द्वंद्व अनंदौं।
लंबोदर मुदकंद देव दामोदर बंदौ॥

इति श्लेष मय मगलम्।

वानो हो सब जगत मे एक तुम मंदार।
दा.........दुषियान कै अभिमत फल दातार।

अंत— दोहा

कुंडलिका सुघनाक्षरी सुखद सुदोहा वृत्त ।
हरं सवैय मालिनी मिलि पचामृत चित्त ।
यह कल्पद्रुम ग्रंथ मैं मधुर छंद सुचि पंच ।
पंचामृत हिय पान करि जड़ता रहे न रंच ।७८
२ १ ९ १
कर छिति निधि सांस माल मैं माघ मास सिति पछ ।
तिथि बसंत जुत पंचमी रविवासर सुभ स्वच्छ ।७९
सोभित तेहि औसर विषे वसि कासी सुखधाम ।
विरच्यौ दीनदयाल गिरि कल्पद्रुम अभिराम ।८०
सोभित अति मति थल सुयह सुमन सहित सब काल ।
अरप्यो दीन दयालगिरि वनमालिहि सुरसाल ॥८३

इत्यन्योक्ति कल्पद्रुम ग्रंथ संपूर्णम ।

विषय—अन्योक्ति वर्णन ।

रचनाकाल

कर छिति निधि ससि साल मे माघ मास सिति पछ ।
तिथि बसंत जुत पंचमी रविवासर सुभ स्वच्छ ।

संख्या १५७ख विश्वनाथ नवरत्न, गंगाजी पंचरत्न, काशी पंचरत्न तथा फुटकर रचनाएँ, रचयिता—दीनदयाल गिरि, निवासस्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—९॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—अथ विश्वनाथ नवरत्नम् ॥

कोउ एक रंक जाहि फटो एक चीरऊ न
ताहि कों कहूँ ते काहूँ भूप देषि पायो है ।
कह्यो नृप तापं यह दसा दीनभई कहा
आकऊ धतूरो तव देस मैं न जायो है ।
कैधो हर लिंग कों न पायो तुम ढूंढत कैं
जाकी कृपा हम गजरथ कों नचायो है ।
हाल है बिहाल तुम्र कुटिल कुत्रान पागे
गालहूँ अभागे संभु आगे न बजायो है ॥ १ ॥
कोऊ एक रंक महा पंक सो निपटि रह्यो
लोगऊ निसंक हँसैं देषि तेहि साज पैं ।
विधि को लिषो न सीस स्पनि की रेष तासु
कहूँ मिल्यो है सो सिव सेवक समाज पं ।
वेद की अगानी मुनि पाई है उदारताई
काहू विधि गयो दीन दानी सिरताज पं ।
जौंलौं दीनन को निज हाल कह्यो चहै दीन
तौंलौं भयो दीन को दयाल देवराज पं ॥ २
कोऊ एक आरत पुकारत महेस नाम
गयो दीन भेष प्रभु धाम धरि ध्यान कों ।
लष्यो दीन ताकी ओर दीन बंधु कृपा कोर
बढ़ो करुना को जोर करुना निधान कों ।

श्रीपति सकाने सिसिकाँने विधि वासवऊ
धनद डराने संक मैं मयंक मान कों।
देवैं दीन दृग कोरें धोरें धरे प्रेम जोरे
करत निहोरें मागिए जू निरवान कों॥ ३॥
:o: :o: :o:

॥ भगवती पंचरत्नम् ॥

उतपति पालन प्रलय की करनिहारी
तुहीं देवि दासन के दुष की विनासिनी।
भजें देव मंललोक मंडली कमंडली तें
आदि तोंहि तुहीं चिदानंद रूप जग की प्रकासिनी।
तुहीं दीनद्याल रछपाल होंति गढि दिन
तुहीं संभु ह्रदें कंज मंजु की विकासिनी।
पावन कैं पावन की पादुका छुआइ मोहिं
दीजें अवलंब अब विंध्याचल बासिनी॥ १॥

अंत— ॥ अथ काशी पंचरत्नम् ॥

सोभित अनंग अरि भूषित भुअंग अग
जासु संग मैं उमग गंग की लहर है।
होत हर हर जहाँ आठहुँ पहर माहिं
ऐसी कहूँ नाहि गूढ गति की डहर है।
धुज की फहर सजें दीप को उदोति जोति
ठहर ठहर होति घंट की घहर है।
छवि की छहर जमराज कों जहर,
गाज कलि कों कहर साज संकर सहर है॥ १॥
:o: :o: :o:

कूजन न पावें पिक मोर बन बागन में
ठोर ठोर गोपी गन कागन कों आदरें।
पथी मधुवन के नृपन के समान
व्रज मुंदरी करन को विभूषन बनी गरें।
रावरी उपासी भई बावरी कला सी स्याम
दछिन निदरि बाँम बाँम की विनें करें।
आचरज भारी एक सुनिये बिहारी अब
वेद की रिचाहूँ जोतसी के पाय पें परें॥ १॥
:o: :o: :o:

अथ मुकुरी

एरी जग प्रान प्रानपति को बषान कियो
जात नहिं हियो रम्यो देषि तेहि साज कों।
हस्यो सब ताप कों मिलाप करि मेरे संग
अवर उघारत रही मैं गहिलाज कों।
सीतल सुभाइ महासुमन सनेह सानो
हिए लपटानो कहा कहों सुष आज कों।
मंद मंद गौन सों मिल्यो है कुंजभौन आय
कौंन हो बताय प्यारी पौंन रितुराज कों॥ १॥
:o: :o: :o:

अथ विप्रलब्धा

कोकिल षंजन कीर जिते उपमान विलोकत ही हियहारे।
दर्पन दर्पहि दूर किए जें कपोल सुगोल हुते छवि वारे।

सारद चंदहिं मंद कियो मुसकानि मयूषन के मद दारे।
हारे बिचारे सरोजनहूँ मुष बाल को आज बिजै करि डारे॥ ८॥
यह कबित्त सिंगार के बिरचे दीन दयाल।
सुनि सराहि प्रमुदित भए "मार्नासह भूपाल"॥ १॥

विषय—विश्वनाथ नवरत्न, भगवती पंचरत्न, काशी पंचरत्न, फुटकर कवित्त, मुकरी, चित्रकाव्य तथा शृंगार के नूतन कवित्त आदि कविताओं का संग्रह है।

संख्या १५८ फलग्रथ (पिंगल), रचयिता—दीनदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१४४, अपूर्ण (खंडित), रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० देवराज जी, ग्राम—शुकरांवां, डाक०—जगदीशपुर, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः फलगरन्थ दीनदास कृत॥ प्रथम स्तुति श्री गणेश जी की छन्द बरवा॥

..............गणनायक ध्यावहुँ तोहि।
बिमल बुद्धि............दायक दीजै मोहिं। १
स्तुति गिरिजा छंद चतुरानन।
करत दया जाय र. ....गर जा हरत सकल दुख दापै।
बरत दुरित उर......रत मोद बहु परत दीठि धनि जापै।
गहत सरन त......चरण चोपि चित दहत 'दीन' तन तापै।
चहत चारु छंदन की रचना लहत बुद्धि कर जापै। २
स्तुति श्री महादेव जी की। दोहा।
द्रवहु 'दीन' पर तुरित हीं दाया सिंधु गिरीश।
ध्यावत मन वच कर्म ते धरि तव चरनन सीम। ३
:o: :o: :o:

बरवा छंद
......कल करहु चरन मैं द्वादश मात।
भूपति छंद......सु बरवा भल दरसात। ८
दोहा छंद
तेरह पर कल कीजिए पुनि ग्यारह पर 'दीन'।
याही विधि नित करत ह दोहा छंद प्रवीन।
सोरठ छंद
दोहा को वि...उलटि पढ जब सुकविजन।
सोरठ छंद ल... ..प्रगटै भूपति तुरित हीं।११

अंत—
प्रिया छंद
दोहा
एक सगन द्वै जगन पर ल....वरनहिं आनि।
प्रिया छंद को 'दीन जू' रीति ल...जानि।२०८
हाकलिका छंद
दोहा—पंद्रह मत्रा को चरन वरन धरै गुरु आदि।
हाकलिका है जात तह बरनै कवि जन वादि।२१७
देखहि वन अरु उपवन हरे।
पुलकि प्रसंसहि मोहत खरे।२१८
आभीर छंद
दोहा—ग्यारह मत्रा को चरन करै अदि लघु आनि।
छंद बनै आभीर सुभ सुकविन को सुखदानि।२१९
:o: :o: :o: १९४०

विषय—छंद रचना के नियमादि का वर्णन। पिंगल विषय।

संख्या १५६क. बानी, रचयिता—दीनदास बाबा, निवासस्थान—बछरावाँ (रायबरेली), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१६८, आकार—१३$\frac{3}{10}$ × ८$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—६४०२. पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गुरुप्रसाद दास जी, स्थान व डाक०—बछरावाँ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री हनुमानजीआय नमः श्री सतगुर साहेब सहाय श्री जगजीवन साहेब सहाय श्री लीखते बानी साहेब दीनदास जीव चित विनती आरंभ ॥

शुनौ सतगुर अर्ज मेरी गर्ज अपनी मै कहों।
जक्त आसा त्यागि कै मै लाग चरननन ते रहों।
चूक मेरी माफ करि मै राखु अनत नां दहों।
दरद आनों मानु साई दरस तेरो मै चहों।
नां अवरि चित में चाह जागं भक्ति तेरी मै लहों।
दिन भक्ति जीवन जक्त मांथ्या अस करि काले रहों॥ १॥
रहत निकट नयन पासे नाहि भासे सार है।
नहि भागि ऐसी करें कयसी दरस सस पार है।
:o: :o: :o:
तहं आपु राखि सनाथ जनका भेटि अघअभ छार है॥ २॥
:o: :o: :o:

अंत—राम सहाय गुर दाया कीन्हा निकसन कै तब जुक्ति बनाई।
दीनदास वोई ठँहरे नाम ते रगर रहै सिर नाई॥ ७॥
शब्द ॥१४०॥

इति श्री शब्दसागर साहेब दीनदास कृत समाप्त ॥ फागुण मास शुक्ल पक्ष तिथि चतुरदसी दिन सनिस्चर ॥ सं ॥ १६३४ ॥ समाप्त ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १५६ख. अघनासन, रचयिता—दीनदास साहेब निवासस्थान—बछरावाँ, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—७२ आकार—१०$\frac{3}{10}$ × ७$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—२१७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४२ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान व डाक०—बछरावाँ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुर चरण कमलभ्यो नमः ॥ श्री सतगुरआय नमः। श्री लिष्यते ग्रंथ अघनासन दीनदास साहेब कृत:

॥ दोहा ॥

शतगुर मरजी मागऊ गावो जस मैं तोर।
लागौं तुमरे भजन मा चित बगदे ना मोर॥ १॥
हनोमान लायक शकल लीजें मोरि वो नाइ।
बिगरी मोरि शुधारिए भक्ति दियो अपनाइ॥ २॥
शाई जगजीवन भेत्र तू लागत मोहि पियार।
तेहि के जोगवा लाज अब करो मोर निरधार॥ ३॥
चारिव पावन का शरिरि चउदा शिद्धि मनाइ।
लागै चित तू चरण में अनते बहकि न जाइ॥ ४॥

॥ चौपाई ॥

मोरे मन अस व्यापी शांई। अघनासन सो ग्रंथ बनाई॥
शतगुर घट मा करा निवासा। कहत बनैं तब करौ प्रगासा॥

तुमही चहेव शुजस जग दीन्हेव । तुम्ही चहेव कूटि सब कीन्हेव ॥
राम कुमार भेव को पावैं । तिर देवा जेहि ध्यान लगावैं ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

मन चंचल ना हरि भजे मात्यो गर्व गुमान ।
दीनदास हारत नही कतहुन लगा ठेकान ॥
चित चचल घातन विखै करै को हरि का ध्यान ।
हरि मान्यो दीन जो तिनका लाग ठेकान ॥
शुरति न ठहरत शुरीय मे मिल्यो न शुनि वोकार ।
दीनदास बिन शीस का पहुचै गुर दर्बार ॥

शमाप्त

इती श्री ग्रथ अघनासन बानी साहेब दीनदास कृत शमाप्त ज्यो प्रति देखा सो लिषा मम दोख ना दीजिए । शंम्बत् १९४२ मिती जेष्ट शुदी तिथि परीवा १ गुरवासरे दोहा लेखक इश्वरदास की अर्जी लेहु वोनाइ । मेहनत लिखनी ग्रथ की अविचल भक्ति दिढाई ॥

विषय—सत्यनामी संतों का चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम दीनदास साहब है । ये सत्यनामी पंथ के अनुयायी थे । जाति के कुर्मी थे । महन्ती की गद्दी उन्हीं से आरम्भ हुई । इनका वंशवृक्ष इस प्रकार है—

दीनदास साहब
|
ईश्वरदास जी
|

उधोदास (गत हो गए) | परमानन्ददास (गत हो गए) | गुरुप्रसाददास (वर्तमान महंत) | मनप्रसाददास (वर्तमान)

संख्या १६० रामायण राम लघु चरित्र, रचयिता—दुनियापति या नाथ (?), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ३-७/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८७ वि०, लिपिकाल—सं० १९११ वि० प्राप्तिस्थान—श्री हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामाय नमः ॥ श्री हनुमते नमः श्री गुरभ्यो नमः अथ रामयण भाषा लघु चरित्र लिष्यते ॥

॥ कवित्त ॥

शुड के दड सुधाकर दावि कै सम्भु के शीश सुधा को निचोरैं ।
मुण्ड क माल उतारि गरे कर नाग हराहर को किरि छोरे ।
बाल विनोद करैं पितु गोद कबौं पुनि आगन में उठि दौरे ।
मोदक लै करिमोद महा पुनि जात गणाधिप गौरि के कोरे ॥ १ ॥
कारन आदि कहै जहिका सदु दीन हितू करि कै जेहि चीन्हे ।
राकस जे रन मारे अनेकन निभ्रम देव सदा जेहि कीन्हे ।
वस्त्र विभूषन भूषित अगन मेदुर विदु ललाट मैं दीन्हे ।
सो गिरिजा बस मेरे सदा उर मोद सो गोद गणेशहि लीन्हे ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

औधपति दशरथ भूपति भूरि भागी कहा ।
रामचद्र कृपाल तिन करि पिता पदवी लहा ।

येक दिन दुचिताइए जा गहे गुरपद जाइ ।
गिरा गद गद नैन जलभरि कहा सब दुष गाइ ॥ ३ ॥
चौथपन चलि तुरत आयौ पुत्र हीन समाज ।
कौन काजे आइहै धनधाम धरनी राज ।
कहा गुर कर सीश धरि कै नपति धीरज धरौ ।
ब्रह्म तेरो तनय ह्वै है तौन सुष अब करौ ॥ ४ ॥

अंत—

स्याम गात सरोज आनन पीत पट कटि कसं ।
हाँथ धनुशर साथ लछिमन नाँथ मन विच वसं ॥२२५॥

॥ दोहा ॥

राम चरित्र लघु हम कहा पाप हरं के हेत ।
गावं तकि हाँथ हरि चारि पदारथ देत ॥२२६॥
महावीर मारुत तनं करं दुःख सब दूरि ।
मेरी जीवन मूरि है ताके पग की धूरि ॥२२७॥

इति श्री रामायन राम लघु चरित्र समाप्तं संपूरण ॥ सभं भूयात् ॥ अथ सुभ संवतसरे० संवत् १६११ शाके १७७६ मार्ग मासे सुक्ल पक्षे तिथौ पूर्णिमाया चंद्रवासरे लिष्यत बेनी प्रसाद कवि शरेनी के सुभंभूयात् श्री रामोजयति

शम्वत ध्रति सत अधिक सतासी १८८७ शेमरी ग्राम शुहायो दुनियाँपति हित जानि राम लघु चरित मोद करि गायो । पर पोते जगनाथ बक्स नृप मन प्रमोद अधिकायो । लषि शम्वत् उनविंश विस त्रै तेहि छापा करवायो ॥२२८॥

१६२३

विषय—संक्षेप में रामचरित्र वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

शम्वत ध्रति सत अधिक सतासी १८८७ शेमरी ग्राम शुहायो ।
दुनियाँपति हित जानि राम लघु चरित मोद करि गायो ॥

संख्या १६१ वैद्य दर्पन, रचयिता—पं० दुर्गादत्त द्विवेदी, निवासस्थान—उतरपारा (रायबरेली), कागज—आधुनिक, पत्र—१६७, आकार—८$\frac{6}{10}$ × ६$\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मार्त्तण्डदत्त द्विवेदी, स्थान व डाक०—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

नमस्कृत्य गणेशानं महेशानं महेश्वरीं ।
वैद्यदर्पन मावष्टे वैद्यानाहित काम्यया ॥

:o: :o: :o:

टीका—एक पत्र सोने के पत्र कटक वेधी आठ पत्र करै ॥ एही भांति रूपे के ॥ एही भांति तांवे के ॥ औ लोहे के टुकरे के लेइ ॥ सो आगिमा धौकि २ बुझावै ॥ बार तीनि ॥ प्रथमं तेल मा फिर माठामा फिर गोमूत्र मा फिर काजीमा फिर कुरथी के काढामा केचिल्केला के पानी मा वुझावै सात बार तो सातो धातुइ शुद्ध होई ॥

अंत—सब मानि कै एक घीहा आमन मा राखि कै मोहरा वंद कै कै सोरा दिन घामे मा राखै ॥ सत्रह दिन ते तोला तोला दूनौ जून षावा करै तौ आम वात औ वात ना रहे ॥ लहसुन १६। वकला अकुरा निकासि कै राति भर माठा मा भिजै राखै ॥ प्रातः काल धोइ कै बाटै ॥ फेरि

तिल के तेल मा भूजि कै औवर्द मिलावै ।। पावबे भाग लहसुन की १६ । सोचर । २५ यवा-इनि । २५ हींग । २५ सेंधौ । २५ पीपरि । २५ मिर्च । २५ सोठि । २५ जीरा । २८ चूर्ण कै मिलावै लहसुन मा ।। धेला भर खाइ तौ सर्व वात विकार जाइ । अपसमार उन्माद जाइ ।। सोंठि । २६ पीपरि । २५ पिपरा मूठ । २५ चाव । २५ मिर्च । २५ चीत । २५ हींग भूजी । २५ अजमोदा । २५ सेरसें । २५ जीरा सपेद । २५ जीरा स्याह । २५ रेनुका । २५ इंद्रजव । २५ पाढी । २५ विडंग । २५ गजपीपरि । २५ कुटकी । २५ अतीस । २५ भरंगी । २५ वच । २५ मुहरेटी । २५ वेच पत्रज । २५ देवदारु । २५ कूट । २५ रासनि । २५ मोथ । २५ सेंधौ । २५ इलाची । २५ ।।

विषय—धातुमारण और रोगोपचार वर्णन ।

संख्या १६२ अजीतसिंह फते ग्रथ, रचयिता—दुर्गाप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५३ वि०, मुद्रणकाल—सन् १९०२ ई० प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, किला प्रतापगढ़, जिला–प्रतापगढ़ ।

आदि—अथ अजीतसिंह फतेग्रंथ प्रारम्भः ।।

कवित्त घनाक्षरी

कोमलाई कोलनि लोनाई पाई पापन की आई अरुणाई मण्डि मण्डल दिनेशको ।
मोरवान जानु कौन बनक बखानी जाति क्योंकरि बखानै कवि भुजन सु भेषको ।
उदित उदंड सुंड रक्षक स्वपक्षिन को राक्षमान भक्षक औ तक्षक कलेश को ।
अदिन अदेश को है सुदिन सुदेश को है सदन धनेश को है बदन गणेश को ।।१।
चंदन चढाये अंग वदन शसुंड भरे गरे धरे माल भाल सोहै सुधाकरु है ।
दसन विभूषण पियूष वपु पूषनसे जीति सब दूषण को मंगल को घरु है ।
वाही के प्रसाद ते निहाल होत लोकपाल दीनको दयाल ऐसो नाम काम तरु है ।
गावैं एक चारु पंच षट औ सहस्र मुष लोक पितु अम्ब अवलम्ब लम्बोदरु है ।२।

दोहा

गणपति गौरि गिरीश गुरु गिरा चरण शिरनाय ।
वरनौ नृपति अजीत की फते परम सुख पाय ।३।

सवैया

भूपनको शिर भूषण भूप अजीत सुनीतिहि मे रतमानो ।
तेगऊ त्याग जगे जगमध्य अनेक महीपन को मद भानो ।
जंग जुरे यशवंतहि जीति फतूहकरी सिगरो जग जानो ।
वीरन को सुखदायक ग्रंथ 'अजीतफते' तेहि हेत बखानो ।४।

दोहा

बांधवदेश नरेश जहं वीर बघेल अजीत ।
रीवा रजधानीधनी धर्म्म कर्म्म सुपुनीत ।५।
ब्याहि लई रिपु जीति रण सहित कीर्त्ति तरवार ।
विन्ध्य नरेश अजीत जेहि प्रजा पुत्र सम प्यार ।८।

अंत—

दोहा

यहि विधि भूप अजीत तब आए रुचिर निकेत ।
भये सुखारे लोग सब सूरन आसिषदेत ।२११

:o: :o: :o:

दोहा

यहि विधि भूप अजीत तब आए रुचिर निकेत ।
भये सुखोर लोग सब सूरन आसिष देत ।२१२
नृप अजीत की जीति को कियो इतो विस्तार ।
'दुर्गादास' अशेष कहि को कवि पावै पार ।

अष्टादश सम्वत समय तिरपनहूं के साल ।
मध्य चोरहटा खेत में गल्यो सतारे वाल ।
अगहन सुदि भृगुवार अरु गौरी तिथि अनुकूल ।
भयो वघेले को सुदिन नायक को प्रतिकूल ।
कह्यौ ग्रंथ को फल वरणिकं ग्रंथन को पथ पेखि ।
लिखै पढ़ै यह सुनै जो ताको विजय विशेषि ।

:o: :o: :o:

इति श्री दुर्गादास कवि बिरचिते श्री अजीतसिंह फतेग्रंथ समाप्तम शुभमस्तु ।

विषय—रीवा नरेश श्री अजीतसिंह तथा यशवतराव पेशवा के युद्ध का वर्णन ।

रचनाकाल

अष्टादस सम्वत समय तिरपनहूं के साल ।
मध्य चोरहटा खेत में गल्यो सतारेवाल ।

संख्या १६३क कवित्त, रचयिता—दूलनदास बाबा (स्थान-धरम), कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—८½ × ६⅞ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—१६३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६५३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रताप श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर ठेहै, डाक०—शिवरतनगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ कवित्त ।। अस्तुति महावीर जीऊकी ।।

नमामि राम भक्त सामरथ पवन नंदन । कपिद तेज पुंज दुष्ट दत्य दल निकदनं ।। १ ।।
प्रचंड वाहु दंड स्वर्ग सैल सोभित तनं । मृगेंद्र नाद रावना गयंद गर्व गजनं ।। २ ।।
सरीर वज्र नष विपक्ष वपु विदारनं । महाजती नमामिदीन जन लगन सुधारनं ।। ३ ।।

:o: :o: :o:

शब्द

तुम कहँ अरुझे निज नाम को सुरति बिसारि हो ।
मन गयद आँकुसदै हरकहु चढत ग्यान का गारी हो ।। १ ।।
ऐंचि सुमारग आनहु मनवाँ सब्द को माँगिनि मारी हो ।। २ ।।
परतप्रीति रम रीति कसहु मन सूरति सत्य अवारी हो ।। ३ ।।
"दूरनदास" चढेउ चित चरनन कबहु नर्याह संसारी हा ।। ४ ।। ८ ।।

:o: :o: :o:

सुनु सुनु बभना तोर जनम वृथा हरिभजन बिना ।
काहै लागे धोती जनेऊ उपरना काहे लागे तिलक दिहै चदना ।। १ ।।
पढेउ मराध व्याह गौना नाम भजन विन कछु न बनाना ।। २ ।।

:o: :o: :o:

बूढि है आषिर अठारह वरना समुझि इमान कसहु अपना ।।१०।।
कहे जन दूलन लागि चरना आजहु आऊ नाम सरना ।।११।।३३२।।

इति श्री साहेब दूलनदासकृत सब्दावली सपूरन सुभमस्तु क्वार मासे सुक्ल पक्षे ।१५।। सम्मत ।।१६५३।। दो० दसवत राम अधील कहि वसे रमई ग्राम । जो प्रति देषा सो लिषा सिद्धि करहि श्रीराम । १ ।।

:o: :o: :o:

श्री गणेशाय नमः ।। अथ दोहावली लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

दूलनप्रेम प्रतीत ते जो वंदे हनुमान ।
निशुवासर ताकी सदा सब मुश्कील आँसान ।। १ ।।

:o: :o: :o:

अंत—सर्बस दूलनदास के केवल नाम प्रसाद ।
यह सत सिद्धि सर्व सुभ सुफल आदि औलाद ॥१४८॥
इति श्री दोहावली संपूरन सुभमस्तु ॥

फुटकर कबित्त

सेवक राम कृपा निधि के गुन ग्यान निधान अहो सब लायक ।
सम्रथ बीर बली रन बाँकुर सील समूह सुमंगल दायक ।
दूलनदास के प्रमहित सुमिरौं हनुमान जती कपिनायक ।
अंजनिनंदन दुष्ट निकंदन पवन तनै तुम भक्त सहायक ॥३०॥
इति श्रीकबित्त साहेब दूलनदासकृत संपूरन सं०

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १६३ख नहछूर निर्गुन, रचयिता—दूलनदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९$\frac{4}{10}$ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१६२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिशरणदास जी (हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबकी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लिख्यते नहछुर निर्गुन श्रीस्वामी दूलनदास कृत
शगुन सुमंगल दायक यह वडि कुशलछेम ।
नित नव बाढै शगुन पल अषडित चरन कवल दिढ प्रेम ॥ १ ॥
दुई कर जोरि मनायो शतगुर शत सिद्धि दानि ।
शुफल मनोर्थ कीन्हेहुँ चूक छमेहुँ जन जानि ॥ २ ॥

मध्य— नहछुर चला
प्रभु जग जीवन विनवो चरन मनाई रे ।
शमर्थ सत सिद्धिदायक होहु सहाई रे ॥ १ ॥
करहु क्रिया मन बाढै सत्य सनेहु रे ।
वरनौ निरगुन नहछुर सुधि वुधि देहु रे ॥ २ ॥
कंचन नगर बखानौं मति अनुरूप रे ।
जहं सिर शंग अजायव महल अनूप रे ॥ ३ ॥
गुरु प्रसाद लगन तहं लागि मोरि रे ।
चति चढेउ मन गहि सत सुमिरन डोरि रे ॥ ४ ॥
चौक सो मंदिल नित नवल गुलजार रे ।
तुम तुम्ह तुम सत दूलह भौ नेवछार रे ॥ ५ ॥

अंत—वरनेउ नाम सुमंगल शब्द सुहावन रे ।
जन्म सुफल भा अपन तन मन पावन रे ॥५७॥
यह सुभ निर्गन नहछुर मंगल गीत रे ।
दूलनदास बखानेउ सहित सो प्रीति रे ॥५८॥
जो यह नहछुर प्रेम सहित नित गइहि रे ।
तिन्है सुमंगल सोहिल सतगुर देहि रे ॥५९॥
नहछुर संपूरन

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १९०७ के लगभग है । यह रचना जानकीदासकृत कीरतिसागर के साथ एक हस्तलेख में है । कीरतिसागर मे लिपिकाल सं० १९०७ दिया है । इसी आधार पर इसका भी संवत् माना है ।

रचयिता का नाम दूलनदास है जो स्वा० जगजीवनदास जी के शिष्य थे ।

संख्या १६३ग. रतनमाल (?), रचयिता—दूलनदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६॥×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप)—६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री पं० सुखनंदन जी, ग्राम—बाभनगाँव, डाक०—मानिकपुर, जिला—प्रतापगढ़) ।

आदि— . . . . ।
एक टेक तजि दुविधा चित दै करु जन्म सुफल अहिवात ।८
सकल सबै बिसरावहु चित दै एकतै लावहु नात ।९
चलहु महल सिर संगम चितवैं जाहा कमल सुबास बसात ।१०
जह बसैं संत सखी सब चिन दै जह सुष मेनि चवर ढुरात ।११
अमल अमैं अचल पद पावन चित दै जहा जरामरन मिटि जात ।१२
'रतनमाल' सत सुमिरन चितवैं सखि पहु रहु होहु सनाथ ।१३
सखि 'दूलन' सुष बेलसहु चितवैं सत सेज्जा सत पिय्र साथ ।१४
—आद्योपांत उद्धृत

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १६४ उत्तम पुराण, रचयिता—देवदत्त कवि (अटेर निवासी), कागज—देशी, पत्र —३५३, आकार—१५$\frac{6}{10}$ × ८$\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—१४५६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—॥ ५ ॥ श्री गणात्पतये नमः ॥ अथ अज्जिपुराण उच्यते ॥

॥ दोहा ॥

निगम सदा गम गीत जो निरमल जोति अनंत ।
कछु सुविमल प्रकास मो हृदय भजत जिहि संत ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

नमहु प्रथम गणराज दुरित निकंदन गुण जलधि ।
मोमन चिंतित काज करन सहज समरथ्थ जो ॥
पुनिसारदहि प्रनाम करहु सेइ जाके चरन ।
लहिउ परम बिसराम विधि उचारि चारिउ निगम ॥

:o: :o: :o:

॥ सवैया ॥

आदि पुरान सिरोमनि सोजिन सेन रच्यो सुभ अंका ।
उक्तिस जुक्ति मई बहुरत्न भरे गुन जोति महा अकलंका ।
छाया कछू अब ताकी लये सुठि उत्तर ग्रंथ रचौं तजि संका ।
छाया परं सुचरित्र धनीतु की होतु धनीयं प्रसिद्ध जो रंका ॥२०॥

:o: :o: :o:

मध्य— ॥ चौपाई ॥

श्री जिनसेन बोध गंभीरा । आचारज चूड़ामनि धीरा ॥
अब मैं तिनहि नमहु बहु बारा । जिन प्रसाद मो वचन प्रसारा ॥
भानुरूप मो उर दिनराती । उदित होउवे तिमिर अराती ॥
मोह तमहि ग्रसि निज सुभदया । विकसावहु हिय पंकज सुदया ॥
अंधहोहु कामादि उलूका । मिलन फेरि नहि चंद बधूका ॥
जिनके धरम तेज अघ पंका । सूक जाइ कछू रहइ न संका ॥
सूक्ति परहि गुन रतन अनेका । जुत सदभाव सजोति विवेका ॥
हृदय कमल अति होइ पुनीता । तापर बसहि देव अति प्रीता ॥

अंत—इनमध्धि भट्टारक पदवि जिन इंद्र भूषण पाइयौ ॥
गनि पुन्यपेत अतीव मूरीपुर उमहि ते आइयौ ॥२५॥

आमच्छि पछिम बाहिनी जमुना दिवाकर नंदिनी ।
संततवहै सुभरूपधीर पातक समूह निकंदनी ।।
:o: :o: :o:
इक समय देव जिनेंद्रभूषन विश्व के उपकार कों ।
उर चिति करुना बाढिमन महँ माँडि विमल विचार कों ।।
अटेरपुरवासी कवीसुर देवदत्त बुलाइयौ ।
श्री वरधमान पुरान भाषा पवनिसो बनवाइयौ ।।२८।।
उपदेस तिनकौ पाइ श्री कवि देवदत्त सुधारिकें ।
श्री वरधमान पुरान इमि निरमयौ उर्माहि विचारिकें ।।
भगवंत श्री गुनभद्र जो कछु कह्यौ निज कृति मैं सही ।
भाषा पवनिसोई अरथ मे कह्यौ उर सुखनिधि लही ।।२९।।
:o: :o: :o:
पोहन वारो बुधि विधान । देवदत्त कविवर गुनमान ।।
ता पुरान रूपी यह हार । विरचि भव्यजन आगेंधार ।।३५।।
:o: :o: :o:

।। श्लोक ।।

सद्बुद्धि स्वपादांभाजे भक्ति दत्व दढीयसी ।
जिनेंद्र भूषणाभीष्ट क्रियाद्वीरो जिनेश्वरः ।।३८।।

इत्यार्षे श्री भगवद्गुणभद्राचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारक विश्वभूषण पदाभरण श्री ब्रह्महर्ष सागरात्मज श्री भट्टारक जिनेंद्रभूषणो प्रदेसात् श्री भट्टीक्षित देवदत्त कृते श्रीमहावीर पुराणे श्री भगवत्र निर्वाण कल्यान वर्णनोनाम एकविंसतिमोऽधिकारः ।।२१।।

शुभंभूयात् ।। समाप्तिमिदं पुराणम् ।।

विषय—श्री अजितनाथ जी, श्री सभवनाथ जी, श्री अभिनदन जी, श्री सुमतिनाथ जी, श्री पद्मप्रभु जी, सुपार्श्वनाथ जी, श्री चद्र प्रभुनाथ जी और श्री महावीर स्वामी नामक तीर्थंकरों की कथाओं का वर्णन ।

संख्या १६५क करीमा का हिंदी अनुवाद, रचयिता—देवीदास कायस्थ गाजीपुरी, स्थान—गाजीपुर, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—९।। × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बैजनाथ प्रसाद हकिम, ग्राम व डाकखाना–मड़ियाहूँ, तहसील–जिला–जौनपुर ।

आदि—

दयावंत करु मोहिंपर दायो । मै अरुझाए रहा जगमायो ।
तोही तजी काशो करो पुकारा । तुम जन यक नेवारन हारा ।
मोहि कुमारग चलत बचाउ । यूक नेवार सुपंथ देखाऊ ।
जबलगि मुखमे रशना हुउ । अमतुत शिये पुरुष कर गाउ ।
शाई मीत शव रिख शउताजू । जेहि बैकुंठ शिघासन छाजू ।
ज्ञान तुरग जाकी असवारी । जाहि नेवास अकास अटारी ।
चालिस बरिस बीत गौ आई । अजहु न छूटि तोरि लरिकाई ।
हंसी खेलि माहि चित दीन्हा । छन एक मनहि बिचारी न लीन्हा ।
जीवन अस व जान्ह जगमाही । रहे निशोच मसाइ नाहीं ।
जिवन दरय भरोश जीव न्हू निशोच संसार ।
'देविदास' तोहिराम बहुत पास जीन्ह भार ।

अंत—

कटक भरोस राखु जिन भाई । तोहि राम गए बहुत जग आइ ।
देश वख के भरोश न करना । एक दिन जोपे निशचं मरना ।

शुख शेवक वस करहु न हासी । एक दिन होए धूर की राशी ।
करहु न वद जो मिलै ववाइ । वीज जो बोवँ शोइ कश खाइ ।
वहुत चंद मुख सुंदर रूपा । दुलहि भूप शरूप अनूपा ।
वहुत वीर रन वीर जो गाढ़े । वहुत वली लोहे वस वाढे ।
:o: :o: :o:
मनन बांधु इहि भवन उजारी । जेइ वाधा शोभयो भिखारी ।
मनन बाँधो एहि भवन विशेषी । जेहिम्ह एक मन शूखी न देखी ।
मनन बाधु शआरहि थिर न रहै जो अंत ।
'देवीदास' को वचन एक चेतराखु बुधवत ।

.........ब तर्जुमिक हजरत मखदूम शेखशादी शीराजी की देवीदास कायस्थ हिंदी तवतवाश मुफ्ता.........सबत् १९०६ मिती भादो वदी सत्तमी.........

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १६५ख मामकीमा का हिंदी अनुवाद, रचयिता—देवीदास कायस्थ, स्थान—गाजीपुर, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बैजनाथप्रसाद हकीम, ग्राम व डाक०—मड़ियाहूँ बाजार (तहसील), जिला—जौनपुर ।

आदि—

प्रितम गली कीन्ह हम वासा । दुनहूँ जगकी करिन आशा ।
हम पंछी विधि वश जग आए । फुलवारी तें परे भुलाए ।
भेद शीप मोती उजियारी । प्रम मान शर ढाव हमारी ।
प्रीतम चँवर धूर को आशा । चहै न अगर कस्तुरी वासा ।
मीत प्रीत मन मोहि चाहि । पसट परान हम वैर विशहि ।
कवहू होए तो दरशन पावो । तेहि सग नैन रकत प्रशावो ।
मीत मीत मन करे पुकारो । गुपत भेद मैं प्रगट निहारो ।
हम चेरा मत वारन्ह केरा । ताके चेरन्ह के हम चेरा ।
वहुत विनन ते मीत निहोरे । नित उठि शवद सुनि हम भोरे ।
हिऐ नैनन ते मीत तजो और कछू जिन्ह देख ।
देविदास जो देखशु मीत रग शो लेख ।

अंत—............................

प्रेमीन के सवदोन झलकावैं । धरम्प्पय जनु प्रगट देखावैं ।
मोहि देखा हसि निकट वोलावा । ते कछु बोल वो वचन शुनावा ।
प्रशमें चकित भवो तहि ठावां । मोहिम्ह रहान वुध कै नावा ।
तेहिछिन मै जाने नहि पावा । कहि सदेश वहि मोहि पठावा ।
हिऐ नैनते मित तजि और कछू जिन देख ।
'देविदास' जो देखशु मित रंग शो लेख ।

मामकीमा मिन तर्जुमिक अलाउद्दीन अवधी कि तवतवाश देवीदास कायस्थ गाजीपुरी हिंदी वयान करदा......संवत् १९०६......... ।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १६६क गुरु उपदेश और गुरु वंदना, रचयिता—बाबा देवीदास जी, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६३⁄८ × ६१⁄४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२० परिमाण (अनुष्टुप)—७०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिशरण जी एम० ए०, ग्राम—रमौली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबंकी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ लिष्यते गुर उपदेस वानी साहेब देवीदास जीव की ॥

गुरु शब्द गुर उपदेस हृदय लिषा बार बार ।
परवाना परतीत सात दीप नांवकार ॥ १ ॥
कृपाछत्र अष्ट जाम अभैतत्व दल ग्यांन ।
तहाँ सत धर्मराज मुलुक मगन अवादान ॥ २ ॥
भरे भवन औ भंडार जौन चहा तौन लीन्ह ।
दायासमं सनौमांन जाँहि चहा तौन दीन ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:
जे संसय नाँही टरैं वसि ऐसे अस्थान ।
देविदास का देषिए का फिरि सुनिए कांन ॥ ६ ॥
सवै वनाए रामजिउ सबै विगारैं कर्म ।
देवीदास तबही बनैं जोंनि बहै आपन धर्म ॥ ७ ॥

गुरु उपदेस संपूरण ॥संमत्॥ १८२२ ॥ राम ॥

अंत—गुरवंदना

श्री गणेशाय नमः ॥ लिषिते गुरवंदना वांनी साहेब देवीदास जीवकी ॥ समरथ्थ गुर जगजीवन साँई देविदास जीव की ॥

समरथ्थ गुर जर्गाजवन साँई देवीदास चरन परैं ।
निरमलं निरवांन रूप हृदयदीप कंवरैं ॥
नमस्तगुरू चरनकमल सकल सिध्धि दायकं ।
प्रसिद्धि सिधि तिनिलोक सरब गुनन्ह लायकं ॥
:o. :o: :o:
श्रौतार लीन्ह मदरहा भयो सुयस मंगल ।
कोटवा सरूप गुप्त भे समाज सुष सदाफल ॥
कहा प्रतीति धरीलाह भाग्य आपनी लहै ।
प्रभु जगजीवन देविदास चरन कमल गहि रहै ॥

इति श्री गुर वदना समाप्त ॥ समत् १८२२ ॥

विषय—गुरु उपदेश महिमा और गुरु वदना का वर्णन ।

संख्या १६६ख लीलावतीवानी, रचयिता—देवीदास साहेब, निवासस्थान—देवीदास का पुरवा (बारावकी), कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—३०, आकार—८¾ × ६¾ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप)—१०३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४९ वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान व डाक०—वछरावां, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लिखि पोथी लीलावती बानी साहेव देवीदास कृत ॥

साधो निरगुण उपजा ज्ञान कहां गुण पाइए ।
निरगुण शब्द अधार सुन्य दिढ़ आसन मारा ।
जहां न दिसा दुवार नाम दीपक तहं वारा ।
निरवानी सो ज्ञान भा मन तेहि मद्धि भुलान ।
दं उपदेस कीन वसि अपनी तेहिका और बयान ॥ १ ॥
गैवी सुन्य सरूपा न पुरुष वह इक्ष्याचारी ।
को जानै को आहि कहा ते सिष्टि सवारी ॥
तीन लोक बिस्तार मा अंस दीन छिटकाई ।
मरै न जीवै गैवि पुरिस वह नहि आवै नहि जाइ ॥ २ ॥
चौथ अचल अस्थान तहा ते तत निकारा ।
शब्द भयो निरवान एक अक्षर रंकारा ।

तेहि मति तत हित तमा मो मन भा मस्तान ।
तेहि लौ लाइ संत कोउ पहुचे जह निरगुण गलतान ॥ ३ ॥

अंत—नाम निसानी जाहि के...हि भावे...हजाइ ।
देविदास निहकर्म सो सुखनिधि धाम समाइ ।
राम नाम दुइ अक्षर सुमिरि भए निहसंक ।
देविदास जग जन्मधा...मिटिगे सब अकलंक ॥ २ ॥

इति श्री पोथी लीलावती बानी साहेब देवीदास जीवकी ॥ सम्पूरनम् सम्वत १६४६ कुवार वदी ७ ॥ सतिमी शुक्रवार को समाप्त ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १६६ग. लीला, रचयिता—देवीदास साहब, कागज—आधुनिक (गुलाबी), पत्र—१३८, आकार—८३⁄१० × ६३⁄४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१४४६, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवनप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—प्रान पाड़े का पुरवा, पोस्ट तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ लीला साहेब देवीदास जी कृत ।
साधो निर्गुन उपजा ज्ञान कहाँ गुन पाइये ।
निर्गुन शब्द अधार सुन्य दृढ़ आसन मारा ।
जहाँ न दिशा दुवार नाम दीपक तहँ बारा ॥
निर्वानी सो ज्ञानभा मन यहु शब्द भुलान ।
दै उपदेश किये वश अपने तेहिका और बयान ॥
कहाँ गुन पाइए ॥ १ ॥
गैवी सुन्य समान पुरुष वह इच्छाचारी ।
को जाने को आहि कहाँ ते सृष्टि सवाँरी ।
तीन लोक विस्तार मा अंश दीन छिटकाइ ।
मरै न जीवै गैबि पुरुष वह नहिं आवे नहि जाइ ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
ह्वै निशङ्क सुरगवास करि केवल नाम पुकारि ।
देविदास के प्रभु 'जगजीवन' गे हम शरन सिधारि ॥ ८ ॥

अंत—साधो भक्तन्ह ज्ञान गरीब चलहु मिलिहि देखिये ।
गुरु दाया गुरुमुखी शील सतोष सँवारे ।
छिमावन्त परवीन चालु जग चलहि विचारे ।
नहिं उतपातन कुटिलता नहिं कछु अनुचित भाउ ।
:o: :o: :o:
तीरथ वरत जप जोग नेम औ धर्म्म न कोई ।
केवल नाम अधार सहज मिलि रहे समोई ॥
जग सब जानै ह महिमा सतगुर जानै मोर ।
देवीदास के 'प्रभु जगजीवन' धनि तुम बन्दीछोर ॥ ८ ॥४६॥

इति श्री लीला समरथ साहेब देवीदास जी कृत ॥ संपूर्णम् शुभमस्तु ॥

विषय—निर्गुन मतानुसार ईश्वर की लीला का वर्णन ।

संख्या १६६घ लीला, रचयिता—बाबा देवीदास, निवासस्थान—पुरवा, तहसील—हैदरगढ (बाराबंकी जिला), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—१३१⁄२ × ६३⁄१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—७७०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान—हरिगाँव (मिधादास बाबा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—सतनाम सहाइ ॥ लीला साहेब देवीदास के लिख्यते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

साधो निरगुन उपजा ग्यान कहा गुन पाइए ।
निरगुन सब्द अधार सुन्य विह आसन मारा ।
जहाँ न दिसा दुवार नाम दीपक तहँ बारा ।
निर्वानी सो ग्यान भा मन यह मध्य भुलाना ।
दै उपदेस कियो बस अपने तेहि कों और बयान ॥ १ ॥
गैबी सुन्न समान पुरुष वह इच्छाचारी ।
को जानै को आँहि कहाँ ते सिष्टि सँवारी ॥
तीनि लोक बिस्तार भा अस दीन छिटकाइ ।
मरै न जीवै गयव पुरुष वह नहि आवै नहि जाइ ॥ २ ॥
चौथ अचल स्थान तहाँ ते तत्व निकारः ।
सब्ब भयो निर्वान एक अछर रंकारा ॥
तेहि मन तत्वहि तत्व मा मामन भा मस्तान ।
तेहि लौ लाइ संत कोउ पहुँचे जहँ निरगुन गल तान ॥ ३ ॥
पहुँचि दिप्ति वह देषि वचन मैं त्वँ नहि आवै ।
आपुहिमा सो आप अपन पौ आपुहि गावै ॥
जब चहै तब हिलिमिलि रहै जब चहै तब बिलगाइ ।
प्रीति डोरि परतोत लाग रहै ताते अनत न जाइ ॥ ४ ॥
सुमति सुमारग चलनि बहुत अचलनि बिसरायो ।
गति बन अगम अपार हंस मैं पार न पायो ॥
सात दीप नवखंड मा दै बाहिन फिरि आऊँ ।
बिन गुर ग्यान हिए नहि उपजै करै कों अलष लषाऊ ॥ ५ ॥

अंत—मैं पापी अग्यान जानि मैं मन बिसरावा ।
इत उत करम कमात दुष्ष मैं बहुतै पावा ॥
सिरजनहार बिसारिकै कुसल कहहु कब होइ ।
चारिहु जुग परसिद्ध देषिए नरक सो रहेउ समोइ ॥ ७ ॥
नरक के बरन सदाँ सदाँ वै जन हितकारी ।
जब वै दाया करहि तवहि मै कहौ बिचारी ॥
और न मोहि अधार कछु रहौ नाम की आस ।
देविदास के प्रभु 'जगजीवन' रहौ चरन के पास ॥ ८ ॥३८॥

॥ साषी ॥

तन कागद मन रोसनी सुरति कलम गहि षांचु ।
देविदास दुइ अच्छर राम नाम लिषि बांचु ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १६६ङ सुखसनास, रचयिता—बाबा देवीदास, निवासस्थान—देवीदास का पुरवा (रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—३२६, आकार—१२$\frac{1}{10}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—६३५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, रचनाकाल—स० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० गुरुप्रसाददास, ग्राम—रमई, डाक०—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—इति श्री गनेसावा नमः लीः पोथी सुषसनाथ गरंथः ॥

॥ छंद ॥

गुरचरन बंदित गुरमुषी गुर कृपा जन्म सनाथ है ।
गुर ग्यान उदित बिबेक बल जन चरन दीन्हे माथ है ।

उपदेस पारस परमपद सत सबद संगी साथ है ।
मैं ताहि बल परतीति करि यहु जन्मु तिन्ह के हाथ है ।
:o: :o: :o:
समरथ्थ जगजीवन साईं भक्ति मूल सिषाएऊ ।
जन देविदास निहाल मे दुइ राम अछर ध्याएऊ ।।

।। दोहा ।।

विनती ग्यान प्रगास करि करत हौं सीस नवाइ ।
तीनि लोक जो जस चहै सो तस करै सहाइ ।।
सिव ब्रह्मादिक नारद गिरिजा और गनेस ।
सुर मुनि जन जो जहा लगु देहु सत्य उपदेस ।।
फिरि विनती संसार तें जीव जंत नर नारि ।
हिदं करहु दाया सबैं सतमत कही विचारि ।।
सुष निधान के नाम भजि 'सुख सनाथ' कहि ग्यान ।।
समुझि पर तैसैं कहा भगत करहिं परमान ।।

अंत—

संवत अठारह सै गुरवानी । सैंतालीस ऊपर पहिचानि ।।
पूस परम सुदि दुइज बषाना । सतगुर मंगल पूरन ध्याना ।
'सुख सनाथ' गरंथ कहि गावा । भगति पुरान भेद जस पावा ।।
:o: :o: :o:

।। सोरठा ।।

गगत चहै विस्राम राम अछर दुइ गहि रहै ।
देवीदास सतधाम सतगुरु तेहि पहुँचाइहि ।।
:o: :o: :o:

लिखा ग्रंथ बैठि जेहि ठाऊ । कहा लिलंबरपुर अस गाऊ ।।
परगन कहि नगराउ बषाना । तहँ भगतन्ह का रहेउ अस्थाना ।।
सुमति सुसील भगत तहँ आए । कृपा तें सतगुर जानि पठाए ।।
मिलि चलि कीन्ह परम सतसंगा । भगति परम पद लिषा प्रसंगा ।।
लिषि हम लीन्ह जन्म कालाहू । मिटिगा संसै सब दुष दाहू ।।
लिखि पढि हमहूं भइन्ह सनाथा । अब तौ दीन्ह चरन तर माथा ।।
कृपा करहु जन जानहु मोही । विनती करौं समुझि कहौं तोहि ।।
अब नहि कबहू मोहि विसरावहू । जनकरि आपन जग निस्तारहू ।।
आस भरोस और का करऊ । करहु कृपा नामहिं चितधरऊ ।।
नामहि भजि भगतन्ह बनिआई । अविचल कृपा सुजसु कहि गाई ।।
करता हरता तुमही साईं । दोसर षोजि और नहि पाई ।।
तुम समान दोसर नहि कोई । हम मन वसी समुझि कै सोई ।।

।। दोहा ।।

समरथ दीनदयाल तुम्ह धरो चरन तर माथ ।
विनती "दास अनूप" कै अब मोहि करहु सनाथ ।।

।। सोरठा ।।

अब मोहि करहु सनाथ सुमिरि सुमिरि निर्भै रहौं ।
मिलि चलि भगतन्ह साथ गतिमति सुमिरन कै सिषौ ।।

विषय—सतनामी पथ के सिद्धान्तानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

सवत अठारह सै गुरवानी । सैंतालिस ऊपर पहिचानि ।।
पूस परम सुदि दुइज बषाना । सतगुर मंगल पूरन ध्याना ।।

—o—